[illegible] ने ऊनाव
[illegible] मेघावन रर
[illegible] काकमीरा
[illegible] बीज चारच
[illegible] रा
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

छरितहरडे आवलि विधि

जेठ प्रसाद हरडे पीदूनी मणका दाष मिले गोली टं
सावण भादवै हरडे सोंधी लूण टं १ प्रमाण लीजे
आसोज कातीहरडे साकर टं १ प्रमाण लीजे
मागसिर पोस हरडे सूंठि टं १ प्रमाण लीजे
माह फागुण हरडे पीपलि टं १ लीजे
चैत वैसाष हरडे टंक १ सहत याकर लीजे

नावरागर औषधतथा फुलफल बीजे

पाठोज बीदक्रय [illegible]

वीगत

दीतवार

मेरागल [illegible]

देवदोन्दा कंदु

जेरीमह वाल्लो

पाकर फुवाष

नबनील मोतीकरोसा

फुल

वाहरागतबोरी

सोमवार

इंद्रगायरी इंद्रगायरी

मयरागायरी गोमुत्रगायरी

कृष्णीरोमह खघर

मोतीपाकर कलगारीरी

गोयेल जन

कमुंहाकरी

कुकुर रीठी

वाहरागतबोरी

मंगलवार

वाल्लो रजन

वालोकाली जाकुलफाकुल

याच्यामीमाह हीगल

नागबारामीर बोहरीमीजी

मोरमामह वाहरागमरी

बुधवार

मयूरागहुरी खागीवेष नागरी

गायमो गाडवंद खोलमी

बोलमुलमी कैममाह वाहरा

मारी

मारीरी वाहरागयीखोनर

खगलाग्येलनखानमी

कानवारागमनजन

कमरागुमरागमोहरा

मोगडेमाह [illegible]

वाहरागमी [illegible]

[illegible]

गुरुवार

कोकापुरबी मेरागल

वाल्लो बीजोरो

मुलाफल केवर

उपाममयीनोवा

खनीवार

[illegible]

कालीमाह [illegible]

नरारमोय [illegible]

[illegible]

माउखनन

कोद मोब [illegible]

पतरज मोय कामय

कपुर वाल्लो [illegible]

योमरोकलगयीखनन

केतखनन

[illegible] कुलदर मोषा

मोर

डरवा कोद मोमह

खागीख जवमीह खरुह

कपुर

वाल्लो [illegible]

[illegible]

॥ दोहा ॥ श्रीरामो जयति ॥ श्रीसारदायनमः ॥ श्रीगणेसायनमः ॥ श्रीवाल्मीकि
यनमः ॥ श्रीसरबदेवायनमः ॥ अथ श्रीअवतारचरित्र चौबीस अवतारकी क
थाबरननं ॥ नाथाकारहटनरहरदासेनबिरचितं ॥ व्यासस्वरूपं ॥ ॥
॥ ॥ ॥

अप· समतानहीपावतदुष बियापा॥कलिरहेसानिकरुमोंनथांना॥बिनुसम
यहथाकरिबोबिधाना॥ ६६॥ कलिकेसंगीकलिबिनां॥हीमबिष्मदुनि
हीना॥तरफरातअतिजिनहितिता॥जोंबिनुनीरहिमीन॥१॥ छंदपधरी॥तब
नएघीनदुनिदुषितपापा॥बयरोगउपजिउरसहिनदापा॥उतमदवारपाव
हिनजोना॥उरपारंसलबाटेअमोना॥अकुलदपापनयेसोकलीना॥कलिस
नजोउयहमंत्रकीना॥ ६६॥ जिहिरांनीनिरलजता॥जाकेअपजसपू
ता॥कलिसोरजाओरके॥मंत्रीकपटअनूत॥१॥ यहसमाजकलिकोसमु
गि॥अरुआपनोसुनाश॥सफलकरनअतिलाषसबा॥कीनोगवनबजा॥
॥छंदपधरी॥कलिहारपुकारयोंनिपापा॥सरनागतपावेअनयछापा॥
तिहारतबहिगुरुप्रमाना॥कोउदीनपुकारतहारथाना॥लीनोहकारिति
हिथलसमीपा॥थितसिंघासनतहकलिपृथीपा॥सादरनिहारअवतजुपा
पा॥नहराहसनासमउगेआप॥ ६६॥ कलिकोअयबंदनकरो॥बेगक
रईबतास॥सनानिहारिबिचारितब॥अंतरबेगआर॥१॥ कलिरुयाच
छंदपधरी॥कोदेसबंसबलनामकर्मा॥मनतजकुसोकअरुकहुमर्म
पापउ॥कास्योअकासअरुथस्योजूमि॥अबकविनजूमिअरुषेअगमि
उरसहिनजातनोदुषअसेसा॥करहिनजूमिकीजेप्रवेसा॥अरिहृथदेषि
सुनिअप्रमाना॥कछुअजकुओषिफूटेनकाना॥कलिरु॥ निजमरमनि
वेदकुबेगिमित्र॥इहिकालआहियेईचरित्र॥पापउ॥जोपूछतहोमो
हिदुःषजेव॥छिनकीजेदिष्टप्रसादेव॥मनराजनयेबलअप्रमाना
सुनअसुनहेतबेतानिदाना॥तिहिबरीउनयबामांअनूपा॥निरहस
प्रवर्तिइतनामरूपा॥प्रीयप्रीयापरसपरमिलिप्रकृति॥रसरासिरमे
मनरेतिबिरति॥मनतेजनयेदेउदयबंसा॥करमांअकर्मइहिनामअ
सा॥करमअकरमनएउनयत्राता॥निरहृतिप्रवर्तिमनमातताता॥त्राता
सुधरममोपित्रीयजाता॥मातासबिद्यदुःकरमताता॥पूछीजुदेवममम
रमबाता॥मातअबिद्यदुःकरमताता॥करमाहिनएधरमाधिकारा॥दुःक
रमबाता॥मातअबिद्यदुःकरमताता॥करमाहिनएधरमाधिकारा॥दुःक
रमआदिहमपापसारा॥बलवंकबीरमोहिपापनामा॥करुनाबिरोधधी
मित्रकांमा॥प्रभुहोरजहामेरोप्रचारा॥छिनमांकरांसोदेसछारा॥इहि
नोतिनईजबबेसदृथा॥एकयेहबासबिगस्योप्रसिध॥हमवेनवसहि
ऐकंत्रथाना॥मनतनएबिरुधबलअप्रमाना॥हमथपहितहिवेउथपिदेहि
तैतजहिताहिहमरांबिलैहि॥पितुदेहिदुषवेअतिअसंका॥हमसिलेच

लहिसेवहिससंका॥स्वछंदजातमनकरुसुनाश॥करमादिकेरोकतनबहिंआ
श॥लैमेल्सोकारागारमांझ॥निकसननहीदेहीनेरसांझ॥मनपावतनहिंअ
वकासकोरा॥पुनिमारनकाजेजतनहोश॥पितबचननगवेकरतपूत॥अ
नससत्रबधककहियेअकूत॥मनपेरमहासंकटसषेदा॥करमादिपुत्रपु
निलसोनेदा॥पित्रघातजानिकरमादिपूत॥उरत्रासमनहिउपजो
अकूत॥ मंन बाच॥ सुनसारकलोमनमनिसंदेहा॥करमादिबसकुछिज
हीनयेहा॥उपधानपत्रफलनहमांना॥स्जलपत्रसरितसजापषांना॥क
रपत्रयहकुतुमपंचयासा॥सबदिवसअसनलगिरहिनिरासा॥त्रिनक
सनआसनउरधपासा॥पुनिग्रेहपरनसालसुनारा॥नेरासरहकुसंप
तिबिहीना॥गतमोहमांनजहाअधीना॥समब्रहमचर्यअंतरअकामा॥ब
नमांझअकेलेरहतबासा॥नषबालहृयछुरकरमहीना॥नितअंगरगनस
मीनवीना॥हिमससिरकालनिरबसनजाकु॥पुनिग्रीषमपंचनलतप
कु॥बरषाबसेषजलधारसीसा॥यहदृढीपितपुत्रनिअसीसा॥रिषिनग
नदंडधारीअनाथा॥सबुजनमहेकुतुमउनहिसाथ॥ ६ ॥पाएउ॥
करमादिकनसत्रासकेा॥दीनेपितानिवासा॥तबेअकरमादिकनहम
कीनोमंत्रप्रकासा॥१॥छंदपध री॥एकसमयदेषिमनमोहलीना॥
कछुदेकुबासहमप्रनितकीना॥सबअनिअकरमादिकसुनाश॥कर
जोरिरहेपितएकपाश॥अबिबेकअसंगतअनाचारा॥अतिसयअनी
तिअनरथअपारा॥इत्यादिसबेलेबेसंभारी॥आपाअधीनपितुहेत
कारी॥पितनऐसनहमअनुजदेषि॥सुतहोकुरुधिकलिजुगबिसे
षि॥इहिनांतिहिताहमप्रसनकीना॥दिगबिजयहेकुबरहमहिदीना॥
मनकलरबदतदेषेअमांना॥पितकरेपुत्रतबउनयधांना॥इहिनां
तिपिताकीनोबिभाग॥कछुहमहिउनहिनहिलगजाग॥सतकर
मगयेतबरिषिनिवासा॥उनलएमांतिहितचितप्रकासा॥सादरहिरह
हिरिषिकरमसाथ॥गावहिसप्रेमहरिचरितगाथ॥परचारकरेहम
जूप्रदेसा॥सुषबासहेतदेसनिबिदेस॥अतिपुरुषनजेजगजनपु
नीता॥तेकरहिनेकहमसोंनप्रीति॥दीजहिकपारहमजाहिद्वारा॥
सबथानकुनयाबहिसंचारा॥निसबसेसुनतहमपंथजाता॥पुरजा
रिछारसोईकरतप्राता॥बिपरीतचरितकेगएबिहाला॥सहिरहिन
सकेहमपरमसाल॥निसचयबिचारहमयहकीना॥पेसमयपाए

बरतेप्रबीन॥सा॥हारहीनहमप्रबलसत्र॥तबमैंनिसानिउग्चिलेअत्र॥हमन
जतटेरियोकलोरजा॥कलिजीतिआहिरजायिरजा॥तबदईचुनोतीतुम
हिटेरि॥हमकहिनसकतलघुमुषहिफेरि॥यहनईबिपतिहममांफेद
वा॥सोलजप्रभुहिमकरहिसेवा॥ कबिरुबाच॥ रूहा॥करतुअकरतु
समर्थहरि॥अरुअमथाप्रकरा॥आवनिरेअरुत्रिनबुरो॥सोकारनकर
तार॥१॥छंदपधरी॥उरसोककछुनिनकरुमित्र॥रहिकालआहि
येरचित्र॥सुषहोतनिनहिफिरिहोरदुषा॥यहजानिसोकतजियेबिदु
ष॥ चंद्रायणी॥जहारबिहोतउदोततहांतमनाहिबल॥बसुरनरे
बितीतसुनिसचयरात्रितल॥भोरगहेउरबीरनदुषहेरचनं॥परि
हांअपनीअपनीबारसुनाहिकनचनं॥१॥ज्योंयीबमकेअंतसुब
रषआरहो॥बरषाहोतबितीतसीतसमदारहो॥येंहीजुगअनुसार
अनुक्रमलेषिहो॥परिहाकबहुसुप्रिष्टदरीबहमकुतेदेषिहो॥२॥
जोनषितावकुमोहितोआपबिचारियो॥सुषकेगयेनिदानसदुषनि
हारियो॥फिरिमोहिनयासबकुरिसुषपारीयो॥परिहाक्रोधबिरो
धनिवारिनिसोकबडारीयो॥३॥ छंदचुगीस्रातु॥ नयोदुषतोकेंहु
मेंदुषपायेंगे॥बहुतगमेरेरहतजआयो॥सदाहेतकारीसुस्वान
चतेरे॥करुंतोहिमोसोफिरेद्वोसमेरे॥ पापउ॥बलीबिक्रम
उदमीमोहिजानो॥सदाधरमद्वेषीकुकरमेसयानो॥यहनैमुसा
चोसुनोदेवमेरे॥तकोदेहआबेकुकाजतेरो॥बहुसत्रुसंघटतेजो
बंधोहो॥सुतोस्वामिकेकाजदेहीसंधोहो॥ कलिबाच॥बजेबा
युजेसोगहेओटतेसे॥सोईसरसामरथसंदेहकैसे॥छंदमुखि
॥ येकबातहमसुनीअनेसे॥सुनियेमित्रकुतोहितेसे॥सो
अबकेहैंकहतसमूला॥सुधिआयेबाढतउरसूला॥ पापउ॥प्रछी
पापजुबिसतरबातो॥कअनिष्टतवतमसुतातो॥कलिरु॥फेरि
कहतकलिसुनोअघमित्रा॥जोकछुहोनेअहितचरित्रा॥कैहैमहाव
तारप्रबोधी॥धरमसहाइकपापबिरोधी॥तेसबदुष्टमारिसंघरिहो
परमनिरंतररिष्याकरिहो॥मायारहतनिरंजनस्वामी॥अषिलचर
चरअंतरजामी॥१॥रूहा॥निसकतनिरजितनिगमहित अतुलि

तजोतिअषंड।येकयेककचकूपजिहि।कोटिकोटिब्रह्मंड।। छंद मुरिला।
नतअषिलब्रह्मंडनिवासी।।रोमकूपब्रह्मंडप्रकासी।।रोमकूपब्रह्मंडसमे
हि।तेअवतारउदरकिहिलेहि।। कलि रु।।दीननचावतसोसोंनांचे।सिवकसं
गफिरेहितसांचे।।कारनपारसुदेहहिधारे।।काजनयेनिजलोकबिहारे।।प
पउबाच।। कलिअवनीपकृपायहकीजे।।दासजानिमोसोंप्रिगदीजे।।से
प्रसंगसबिसेषनिदानें।।अनुक्रमसेंअवतारबषानें।। कलि रु।।मो
हिनसकतिहतीसुनिमित्र।।जिहिबरनेंअवतारचरित्र।।नेतिनेतिजिहि
निगमबषानें।।कहिताकोअनुक्रमकोजानें।।नहीअवतारअनुक्रमदी
नें।।कारनपारसुरूपसेहीकीनें।।आदिमध्यअवसाननजाकें।।कैसेंकहुं
अनुक्रमताकें।।जगहीमांझजगततेन्यारा।।पलहिसमेटेपलहिपसा
रा।।कीटगयंदएककैतोलें।।बाहरिनावेंनीतरिबोलें।।आहिप्रगटपेकों
इनपावें।।जोपावेसोफेरिनआवें।।जाकीमायजगतनुलांनें।।सिवबिरं
चिकुपारनजानें।।कीटीकुंजरसाथपुकारा।।प्रथमकीटकीहोतसंना
रा।।निसनदीनजाकोजसगावें।।सेषसहसमुषओरनआवें।।अगमअगाध
निरंतरलेषें।।जोकछुहोइचरित्रसुदेषें।। कबि रु बाच।।दुहा।। कलिअरुप
पत्रसिधकें।।इहिबिधिकेरेकंत्र।।मनमनसामरमनमिलें।।सहजसुहायेमित्र
।।इति कलिजुग पाप संबाद।। कुंडलीया।।बासकीयोअगातमहि।।कलि
संजुतपरिवार।।जबजेसीकछुदेषिबे।।तेसोतबहिबिचार।।तेसोतबहिबि
चार।।कछुअवकासजुपेहोंजी।।तिसबेसंसार।।महामनमोदबढेहैं।।सुन
दबंधुसुतत्रीया।।साजसेवकसंगलीनों।।सहचरिसमृधसमेत।।बासअग
तनुकीनें।।दुहा।।चारनगातिसुबारहा।।नरहरमतिअनुसार।।मेसागर
पेरनलयो।।कहनचरितअवतार।।१।।रुद्रसपंचबिरंचिचवा।।सेषसहस
मुषसंग।।नितरसनांजसकहतनवा।।ओरनलहतअनंग।।२।।रसनाएकसु
स्वादरता।।सबदिनरहतसषेद।।कितकतिहिहरिजसकहुं।।बरनतनेतसु
बेद।।३।।जोअपनअसमथहोंकहियेमतिअनुसार।।पावनदीनदयाल
प्रभु।।कृतमानतकरतार।।४।।जथासकतिनरहरसुकबि।।कहिअवतार
सरूप।।जिहिजिहिग्रंथनिजेसुने।।रिषप्रनीतअनुरूप।।५।। नरहरप्र
भुबारहनें।।अवनिउधारनहेत।।निरमलनिदितिजातकुल।।देहस
समथसेत।।६।।अथ श्री आदिकी बारा ह।। अवतार चरित्र बा
र हट नरहरदासे नबिरचित।।बर्नन।। छंद पधरी।।परपु

रूपकालरूकचितप्रकासा॥बपुधरनचलेमायाबिलासा॥हरिप्रीयाअरुतवतिहि
निकेता॥हरिचरनलीनहरिदरसहेता॥जुगद्वारपालजयबिजयनामा॥करजोरि
रहतनित्यसहतकामा॥करकससुनावप्रतिहारकर्मा॥कीनोनिषेदजानो
नमर्मा॥मुसकाइकलोतवजगतमाता॥करकससुनावकुलहकुनात
पुनिनएकालजबकछुबितीता॥पगधारिसनकादिकपुनीता॥कृतगमन
मध्यदरसीत्रिकाला॥छटिकानिरोधकीयद्वारपाला॥थितहोकुछिनकइ
हिगंरिषीसा॥जोलोसुधिद्यावहिजगतईसा॥मुनिनएनबेकोधारमा
ना॥पुनिदियेश्रापदुसहनिदाना॥कृतदुष्टजाकुतनूनिकेता॥अवतरकुजे
निअसुरअचेता॥मायाअजीतनवप्रभुमुरारी॥सनकादिकसनमुषप
धारी॥आदरअसेषकीनोअनंता॥सुनदरसदयोलषिपरमसंता॥अर
थादिकबेदनप्रसनकीना॥अभिलाषपूरिप्रभुबिदादीना॥दारनसरापनो
द्वारपाला॥भयेचितभ्रमतबपुअतिबिहाला॥ प्रतिहार उ॥ जयबि
जयआनिहरिप्रनयकीना॥अवतरनकूमिहमआपदीना॥सुनछूटत
हैप्रभुचरनसाथा॥अपराधबिनाहमभयेअनाथा॥जगदीसकरकुगतिदि
नजानि॥जिहिहोइनहीप्रभुदरसहानि॥ श्रीभगवानोबाच॥ सन
कादिदयोजोकैसदापा॥सोभयेबिनामिटिहैनआपा॥अवतरकुयेहक
सिपरिषीसा॥दितगरभहोकुआसुरअधीसा॥सुधिलेकुगरभसथानमी
ता॥पुनिदेकुदरसनजगपुनीता॥भवलोकजाकुअवतरकुआपा॥तुमछेद
जनमहमसोंमिलापा॥अतिनबिरोधकुजपेमोहिनीसरेजनमतोमिलन
होहि॥ कबिकुबाचा॥दहा॥ होनीहोइसुकैरलोनोहिनटरैनिदाना॥भ्रत
नवष्मतबरतमना॥प्रछकुबेदपुरांना॥१॥छंदपधरी॥यहकहतजो
तिनिकसीअनंता॥सअंतरीपसरेहसंता॥कसिपप्रजापउरसानकूल
सोजोतिअनिप्रगटीसमूला॥दितिनामदहपुत्रीसुदेसा॥सुनप्रीयाप्रान
कसिपरिषेसा॥अतिभयोप्रीयाब्याकुलितअंगा॥उरछिदेजबहिवाननि
अनंगा॥अकुलाइआइतीयपीयसमीपा॥रतिजाचिउरीअसमयरिषीपा॥
होसंध्याजदपिअसुरकाला॥रतिदानदयोप्रीयकैकृपाला॥दितिदुष्ट
रभसिसुधरेदोश॥सतबरषबीतिपुनिप्रसवहोइ॥तिहिकालदयेदरस
नअनंता॥निजबाचाप्रतिपालननिमंता॥हिरनाछहिरनकसिपबलिष्ठ॥
जोरुवाअसुरप्रगटप्रतिष्ठा॥सोभयेदेहपरबतसमाना॥अतिदुष्टकरम
बलअप्रमाना॥राजाभिषेकहिरनाछिकीना॥निजधरेछत्रचामर
लिवीना॥थितराजभयेआसुरअजेया॥तिहिसमयअनयप्रगटेअमे

यः तीरथ सुतप बृत्त होमदाना। मष बिप्र बेद सुनि येन कांना। औषधी अनसु
रगो अदिष्ठ। निरबीज गर्छि तिसम निष्ठ। तब कोपि असुर मूलक सतूल
स बल ही कादि पृथी समूल। थित करी रसातल रूप चेम। जल बिंब न
येति हिग अषम। सुरसाल सीये असुर समाज। तल लोक क्रिअ निसं
कराज। मष नागर हत नये सुर रिषेस। उरबदीत बे चिंता असेस। पु
निगऐ सबै मिलि ब्रह्म थांना। दुष कहे दुसह आपुन निदांन। बिधि क
रत जोग धारन सबेया। उधि पृष्ठ कुरि रोमाउ देवा। सुत्र आनद हृन सूछि
म सरीरा। अंगुष्ठ मात्र बाराह बीरा। निज रूप ब्रह्म बाराह नांम। अवतार
नयो प्रभु धरम थाम। बेद मय जग्य बाराह बीरा। सुत्र पृथ नयो अनुक्र
म सरीरा। नपु बदमन कुपर बन बिथारा। संजुकत रोम नी छन सुदारा। स
सि है जउ नयन दा सरूप। चल नेत्र नांनि घुर घुर सजूप। स्वांन बसि
थ सूकर प्रकासा। नव फिरहि करत आघांनि नासा। तब गंथ ग्यांन ग्यांन
निसचय सुनाश। जल मगन नही पृथी सुपाश। षर नष प्रलय बारि
थ बिहारा। आछोट छुरा जल सुर उधारा। तल लोक जाइ बाराह देव। उर बी
उधार कीनो अजेव। सित दंत अग्र नय हु प्रमांन। गज दंत अंत कर दमस
मांन। हिरनाछि जुरत बग्रा निजुध। क्रीडा अवतार हरि नये क्रुध। प्रतिबुद्ध
होत हरि असुर प्रबा। संग्रमत नये तब लोक अबा। जुध करत सहस्र ग
त सा कि कलप। यह नही क्रोध क्रीडा अनलप। निग्रह दैत माया अनूप
रहे अर हीनु वतिल सरूप। उधारि देव बल अप्रमांन। थित कीन रत
न गरन्ना सथांन। मह सकत ध्यांन कृत तह मुरारि। जय सब दसि धव
रन उचारि। आछादित नो सुर रथ अकास। सुर पुह पवृष्ट कीनी सहास। की
नो पुरांन बाराह देव। अध्यन करत नरे रिष सनेव। बिधि आरथ ह
ब्यक ब्यो बिलासा। संतोष पोष पित्र गन प्रकासा। अनादि बीज औष
ध अपारा। सो कीये प्रगर आसुर संघारा। पूजा हरि तीरथ मष प्रसार
बिधि जुकत होत सब निरबिघ्न सार। इहि हेत आदि बाराह आप। सुरथ
पे अषिल असुर उथप। बाराह तब निज पुर बिहारा। प्रभु करत न
येलीला अपारा। छंद। बिमल बिहार बराह प्रभु। सागर पे सिह
सा हत्थे असुर हिरणाछि रन कीनी पुह बिप्रकास। कबित। बिस
द रूप बाराह बिसद बल तेज बिराजित। बिमल ह्यक ब्यो दि अ
गति गति हेत उपाजित। सुर सुधार षिनि हरष थार अवतार अ
जोनीया। तप बिधान मष होमदान पुहवी पर कासीया। अय असु

रग्रसितमानुषअवनि-कोउसहारनाहिनकरन-उधारमूलनरहरसुक
बि-सितबराहअसरनसरन॥ इतिश्रीश्रीआदिबाराहअवतारना
मबारहनरहरदासेनबिरचितेः॥ ॥अथश्रीसनकादिकअ
वतारबरनन॥ छंदपधरी॥सनकादिआदिउतपतिसरूपानैष्ठक
ब्रहमचारीअनूपा॥सिष्टासनतपकृतब्रहमसंता॥अबिलेसपुत्रन
येतबअनंता॥बिग्रहबिनागकीयचवप्रकार॥सनकादिकउपजेजे
गसार॥ ६॥सनक सनंदनसनातनजेसननकुमारा॥चौथेनयेस
नातनं॥आदिपुरुषअवतार॥७॥आतमततअनष्टनै॥पहलेहोसं
तासो॥बिचारकरिबिसतस्वे॥ब्रहमचर्यअधिकारा॥२॥पांचबरष
केबालसम॥मतिअबिकारसरीरा॥उपजेउतपतिमानसी॥अष्टि
बिहारसधीरा॥३॥तीनलोकअणमनिगमा॥ऋतनवष्मतपोना॥न
रहरप्रभुअवतारने॥सनकादिकभगवान॥४॥इतिश्रीचतुरबी
सतमीअवतारचरित्रनाभाबारहनरहरदासेनबिरचितं॥सनक
दिकअवतारसपूरन॥अथजज्ञअवतार॥ मनुसुतानरश्रीकृति
नाम॥रुचिपानियहनकीयधरमधाम॥तिहिउदरजग्यअवतारल
ना॥मषकरमअबिलबिसतारकीन॥ऋतारजग्यदहनाजज्ञ॥सं
तोषपोषमषसुरसमाज॥सुरगनसमेतकीयतपविसेष॥इंद्रायि
कारपायोअसेष॥ ६॥ स्वायंभुमनुराषीयो॥कीनोअसुरसंघ
रा॥निजइछालीलाकरी॥जग्यपुरुषभगवान॥७॥इतिश्रीभाषा
बारहनरहरदासेनबिरचितं॥श्रीजग्यअवतारसपूरन॥अथ
नरनारायनअवतारबरनन॥ ६॥ ब्रहमाकेसुतमान
सिक॥तयोधरमयहनाम॥दक्षप्रजापतिकीसुता॥मूरतिनईति
हिनाम॥७॥छंदपधरी॥ पितुतयेधरममूरतिसुमाता॥उपजेनरनारा
यनबिष्याता॥तेबेगिबदरिकाश्रमप्रबीन॥तबऋतहेतुतपउग्रकी
न॥नरनारायनतपबलप्रभाव॥आनंदतयेत्रयपुरअभाव॥समसं
हअवरषउपवाससिध॥फलमात्रकीनपारनप्रसिध॥सोउग्रतप
सासुनिसुरेस॥इंद्रासनकंपतभोअसेष॥इहिसमयइंद्रपठयो
अनंग॥तयदरमोहतपसिधभंग॥मिलिमदनमित्रमाधवसमाज॥
आरंभचमूसजिअप्रमान॥अनमेषबधूधरिअनुराग॥बनिसेन
बिबिधिमारुतबिभाग॥इहिभांतिबदरिकाश्रमसमीप॥मनमुदित
अरमनमथमहीप॥बनफूलिलतानरपुरपपात॥मारुतसुगंध

चलि अकसमाता। इहि रूप नयो अगम अनंगा। उदीपन उपजे अंग अंग। दि
दमुष्टि धारि कारदीना। कोवंबान संधान कीना। आकरषन बसकारक
अनंता। उनमादक मारण सोषअंता। येबान लगे प्रभु अंग अंग। षालीज
नयो रति पति निजंग। लेइ निकरा छि अरु हावभाव। सुररमनि थकी
करि करि सहाव। निरनी जगये उहि मअनेका। उपचार मारन हि फुरत
येका। अकुयो मनोज करि करि उपाधि। धारना ध्यान न हीदरि समाधि। उ
रकाम त्रास उपज्यो अनंता। मत क्रोध दिष्टि जारे महंता। तब नये षि सानेम
दन जानि। आदर प्रभु कीनो ये हम्रानि। करजोरि कोमल वचन नितकीन
अषिलेस अषिलमाया अलीन। जितकाम क्रोध तुम नितजयंत। अविक
रघुरूष बिनु आदिअंत। उतपत्ति हेत धन वन्त अंत। सब इछा रावरी पर
म संत। तुम करहु क्रोध किहि पर कृपाल। बिनु हेष पितन हीहत तबाल
जे तिरहि काम सागर सुजान। गो परग क्रोध बूकहि अपान। तिहि दीन देषि
प्रभु नये दयाल। करुना सरूप संतत कृपाल। संभ्रम सहस्र बनिता सरू
पा। अषिले ससंग देषी अनूपा। अपछरा सहस बिसमत अनंग। अदभुतर
स उपजे अंग अंग। उरबसी नाम अपछरा एका। बासव कहे पर हीकरि बि
बेका। सो करे बिहा उरबसी संग। इंद्र कहे आनि दीनी अनंग। इंद्र उरउप
जि आनंद अपारा। सो नरेंद्रीय सुरपुर सिंगारा। सुरराज लिये अव
तार सिध। परब्रह्म पुरुष पूरन प्रसिध। इह जानि इंद्र प्रभु पास आस। स
बिसेष इंद्र वतकीय सुनाय। मैं मूढ देव जानो न मरम। सो छमहु न
याम तेअकर्म ॥ इहा॥ नर हर प्रभु अवतार नो। नरनारायन देव।
दुसतर तप बल जीति जग। आपुन रहे अजेव॥१॥ इति श्री अवतार
चरित्रे नाम बारहट नरहरदास सेन बिरचितो। नरनारायन अवतार
चरित्र सपूरन। अथ कपिलदेव अवतार। कबित। ब्रह्म सुवन तप तज
नयो करम द्विज मुनिवर। मनु तनया इक देव सुति। कृतता सत्य हन
कर। कपिलदेव अवतार। तयो अवतार सु पंचम। सांषि जोग सथ
यो कवि जिन जितयो काल क्रम। उपदेस ब्रह्म बिद्या अषिल। कलो
मानु कारन करन। उतपन सिध पुरसरस्वती। प्रभु नर हर असरन
सरन॥१॥ अगर देषि पुहवी प्रसिध। सो रे पुर बिसमल। देव देव क
पिलावतार। तहा करे तप पोथला। बेग तप यो कलो। बिघन जो क
रहि ध्यान महा। सो मम दिष्टि कसान। तसम कै हैं तछन तहा। त

पकरत बिती तो सत्त जुग अरु त्रेता आरंभ भये॥ दिवसे सब सरा जा सगर॥
तब हि अजोध्या तप पये॥॥॥ नृप बाहु कर नचिरत पिसन सो भये परज
या भुवन छाहि लेन भंग बिकल चित गहन बास गय॥ तहां भये पंच त
त्रीय सह गमन बिचारीया॥ सा सुंगर नृप पति बृत्त नियत सब गुरहि नि
वारीया॥ गरल नी जानि सो तिन गरल देष बाहता कहृदये॥ जनमो सुपुत्र
ता गरल जुत सगर नाम ताते भये॥२॥ छंद पध्र॥ ब्याही सुसगर तब उ
नय बाम॥ निज प्रीया के सनी सुमति नाम॥ संतति हित सेये तिन रिषी सा
अति प्रसन उर बहीनी असीसा॥ उचरे बचन के सनी ये फु॥ दुव बंस तिन
कम सम पुत्र देहु॥ बर मागि सुमति तहां करि बिबेक॥ अब हो हि पुत्र मेरे अने
क॥ संतान हेत स सिस रस साषि॥ नवतथा असन भये उर बाषि॥ जुग ज
ग रुथित त्रीय निज जानि॥ मुनिवर प्रसाद मन मोद मानि॥ उपजे असमंज
स पुत्र एक॥ केसनी फले बंछित अनेक॥ तहां भये गरल पूरन सजीया॥ दस
मास प्रसव बस मुवद्दईया॥ तूंबरी सुमति इक जनी तत्र॥ उपजे सब हि न
संदेह अत्र॥ आराध हि जु हि मागे अनेक॥ तिहि ठौर न पाये पुत्र एक॥ सो फु
टी तुंबरी यां बहि सनेह॥ देषे सुबाल तिल मात्र देह॥ सुत साठि सहस संष्य
पुनाम॥ तेथ रेमांझ घृत कुंभ तम॥ प्रति कुंभ पुत्र तिहि ठौर पाय॥ सा हसी स
उपजे सुनाय॥ बिक्रमी बली अति करह बीर॥ नित कूप षोदि काढहि तनीर
नृप सगर सुकृत अनेक कीन॥ सत बाजि मेध संकल्प लीन॥ कृत होन
लगे आरंभ काज॥ संचार सार मुनिवर समाज॥ परजज्ञ बांधि छूटहि पवं
ग॥ अनुसर हि जग्य रक्षक अनंग॥ इछा सु फिर हिय अवनि अंत॥ प्रति जज्ञ
थान आवहि परंत॥ जब भये निमान जज्ञ जानि॥ मन रंग करे अति त्रास म
नि॥ कृत सतम काज आरंभ कीन॥ मष पर बांधि हय सुकि दीन॥ कीय
अस्व तासर रक्षक कुमार॥ सुत साठि सहस सन थ धार॥ तिहि अस्व हर
न कहं इंद्र आय॥ बन संग फिरत मन दुष बियाप॥ यों तक तहं इंद्र इक दि
वस आय॥ पूजयो दाव तहां समय पाय॥ करि बेष बिप्र जय हस्यो बा
जि॥ भय टरे सक्र लेगये ताजि॥ गहन बन गरत दुरगम गुहीर॥ धरि कपि
ल देव तहां ध्यान धीर॥ लेअस्व तहां बांधे लुकाय॥ पुनि गये इंद्र निज पुर
पलाय॥ सेवक पुकार कवरनि सुनाय॥ आजीन लहत मनु गो बिलाय
सब काल कहत यों परम साध॥ बलवान देव माया अबाध॥ उग्चि
लेक वर मन क्रोध आनि॥ जरते कुसांन घृत दये जानि॥ कबित॥ क्रो
ध वंत दिग अंत सो धली सो बसुमती या॥ कहुन बाजि कर चढ्यो

छोहहाहन तिहिछतीया॥ षोजन षिनिहयषनत करेसागररत्ननाकरा॥ षारनी
रगंभीर गहरहनुरेवनिदुसतर॥ परिबेषषोदिष्ट थीप्रबल नवोउदधि
जनुनिरमयो॥ पुरतिकुप्रसिध नुजबलप्रबल नृतनवषतलौनयो
॥ छंदपधरी॥ संक्रमोसेनषोजतसुनाश॥ पुहमीपवंगपदचिन्हपा
शनवकवरआइतिहिबिवरतीर॥ नयछांडिगरतपेगंभीर॥ सबहिन
लैआयोकालसंग॥ तिनलौतहाबांधेतुरंग॥ तहादेषिध्यानजुतकपि
लदेव॥ नतिगहेगहेपायोनसेव॥ अखिचेरिबिवरअंतरअगाध॥ सजि
मौनिमूदिचषनयेसाध॥ पदलातहन्योमुनिनेषबोध॥ कालानलउ
पजोदिष्टक्रोध॥ उठिअगनिनेत्रजनसांअसेष॥ सबकरेकवरनसमो
बिसेष॥ कबितातहाबिन्नेवऊकाल पुत्रहयसोयनपायो॥ जग्यसम
यपरिजात राजमनसंभ्रमछायो॥ कीयसंकलपबिकलपं कछुनउ
दिमबनिआवत॥ किकुनयानथितहोतचित्त दसकुदिसिधावत॥ सब
सुचरमंत्रिषिराजसों॥ करिबिचारनिरधारकीया॥ किजयेसोयकारनक
वन कवरसेनकहासंक्रमीया॥ ॥ छंदपधरी॥ बरबीरसगरसुतजुतबिबे
क॥ असमंजसजेगे पुत्रएक॥ असमंजसकेसुतअंसुमान॥ गुनवतसरब
ऊचित्तगंमान॥ सोकपिलदेवपहसुकिसाध॥ अतिदीनभाषिकीनोअराध॥
तहानयोदेवसुप्रसनतास॥ परिपारअस्वनाचेप्रकास॥ लैअस्वअजोध्या
पुरीआइ॥ सबिसेषकरहकारनसुनाइ॥ सुनिबदेसोकनहीउरसमात॥ जुग
जुगसमांनछिनएकजात॥ सुतजरेजग्यबिगरेसमूल॥ सुनिसगरनृपति
उरउग्रतसूल॥ बिधिबेदधरमजुतकृतबिबेक॥ नृपसगरदानमषकी
यअनेक॥ असमंजसकवरउरबढिबिराग॥ निहिपितासंगकृतराजत्या
ग॥ दिनसोधिपौत्रकहंराजदीन॥ कुवरजुतसगरबनवासकीन॥ योंक
रतराजनृपअंसुमांन॥ प्रगटोदिलीपतासुतप्रमांन॥ तबलयोनगीरथ
पुत्रतास॥ पावनजलकीनेनप्रकास॥ प्रतप्योसुनगीरथपुनिरूपा॥ ज
गजेभूपथुरथरमरूपा॥ कबित॥ नृपतिनगीरथएककाल हयजा
नजातजहा॥ गलीमध्यपनिहारिधकालगिकुनगिस्योतहा॥ ति
हिचेरीदुरमुषा मरमछिदजचनसुनाये॥ जरेपितामहअनलज्व
लसोगतिनमिलाये॥ दुरबचनबानलागेदुसह मनसंभ्रमहिअरु
कये॥ अंतरबिष्यादउपजेअमित तबहीतपोबनतकयो॥ ॥ बैठि
तपोबनराज ध्यांनबिसंभरधरयो॥ मनबाचाकाएकसमेत तहांत

अनुसरयेपा कछुककाल बितयो॥दिव्य रसनतहपायो॥उरअतरअनिल
॥अकसोप्रभुहिसुनायो॥प्रभुकहिबाहुगंगाप्रगटा॥जोतिहिथलजल
बिथरहि॥अपमृतुमरेपुरुषाअबिलासतोअधोगतउधरहि॥॥पुनिरा
जासुरसरितहेत॥कीननतपकिनो॥तहामहाकनिप्रसनहोइ॥बंछितवर
हिन्हो॥मातत्रिपथगामनी॥मेत्रसकरपाउधारहु॥ममपुरुषाजेअगतिप
त्र अबसेवउधारहु॥अतितेजपतनआकासतें॥कोसमधाराधारिहो॥जो
जाहिरसातलतेहिजल॥कहिकिहिभांतिनिकारिहो॥रावकुरिराजबन
बेनि॥उग्रतपकरेअषंडिता॥संतुहेतसबिसेष॥छद्ममायाछलछंडिता॥त
वद्यालत्रिपुरारि॥दीनलागीरथदेषे॥अगमगंगतरंग॥बिस्वहितकाज
बिसेषे॥सिवद्योबचनअनिलाषसुनि॥इंछाजुतजलअनुसरहु॥प
बनप्रवाहममसीसपर॥आनिस्वरगतेउतरहु॥छंद॥राजासंतुप्रसन
करि॥परमहृष्टबरपायाप्रगटप्रतिगंगासोप्रगट॥कीनीसबसमग्रा॥१॥
माताहरजटजटमहा॥परहुप्रवाहपुनीतासो॥हिमदनारिसंतुष्टमनाव
बाहरीबिनीता॥२॥हेजननीतवतेजजल॥सकोबसहनसमथ्या॥इकां
पिनाषीबिनुअवराउहिमसबेअकिथा॥३॥गंगात्रयपुरगामनी॥सिवसि
रकरहुप्रवेसा॥मातरयेबरदानमुहि॥सोसबफलहिअसेसा॥४॥कबिक
गंगतरंगअनंगगति॥अतिआवरतअथाह॥परेआनिसिवसीसपरा॥प
सरेपुनिप्रवाह॥५॥भ्रमतरहेकछुकालतवा॥जटाजूटजलजाला॥
वतनहीप्रवेसपथ्या॥भ्रमतजटीअयसाला॥६॥अनंगारिसोंनृपतिय
ह॥बिनतीकरीबिसेसा॥पातकहरनपुनीतपया॥पुहमीहोहिप्रवेसा॥
॥७॥गंगाउ॥ जिहिकारनकीनोजतना॥जलपावनलेजाहु॥अगेन
पतुमअनुसरहु॥पाछेचलेप्रवाहा॥कबित्त॥जटछोडिजनहेत सुक
तकीयजटमहेसरा॥तिहिपथगंगतरंग॥प्रगटबिथुरेपुहवीपरा॥नृप
नगीरथअगनाग॥पाछेजलपावना॥जनुकरतजहाजग्यजाप॥वहि
थलतेआवना॥मिलिजलअपारसंनारमेष॥बिमलधारजानोबह
ना॥सबमुनिबिचारिरिषराजसों॥करिपुकारलागेकहना॥१॥तबेज
नुकृतकोप॥गंगकरअंजुलिआनीलिमेलीमुषमांह॥रहेअवसेषन
पांनी॥करजोरेकारनसुनाइ॥नृपरीनतिकीनी॥जानिजगतउधारहे
त॥मुनिअगपादीनी॥निकसेतरंगगंगातहिन जयाफारिपवित्रजला॥
जगतयोनामजाहंनवी॥बेरबिदितभवतेबिमला॥२॥सुरसरिता
लीयसंग॥रजचालेसुनगीरथ॥परेहाउजलपरसं॥आनउथरेजात
पथ॥इहिबिधिपुनिप्रवाह॥करतपावनपृथ्वीतला॥जहासगरसु

वधूत मायाअतीत॥ अमोहअछोहअमोहअनीत॥ अनामअकामअगमअजे
य॥ अनाधारआकारमहिमाअमेय॥ पसुहतलीनेनषेषानपानी॥ बिचारप्र
चारबिहारबिमानी॥ कबित॥ रिषभदेवआतमा नयेअवधूतअसंग॥
मोहमानमदमारि अंगनेनयेअनंग॥ बरजितबिषयबिकार सीलसं
तोषसहजसम॥ दयारूपनिजदेह दीनबछलआतमदम॥ परब्रहमपर
मपावनपुरुष अबिकारीआनंदमय॥ तरनप्रसिधनरहरसुप्रभु जयजय
जयरिषभेसजय॥१॥ इति श्रीरिषभदेवअवतारचरित्रसंपूरन॥ ज्ञा
नारहटनरहरदासेनबिरचिते॥ अथध्रुवदअवतारचरित्रबरन
नं॥ दहा॥ कबित॥ आगमनिगमनितेअगम॥ अषिलउदारअपार॥ सुन
हुकहतनरहरसुकबि॥ धूवबरदअवतार॥१॥ स्वयंभूमनुब्रहमसुत॥
नयेप्रतिष्ठप्रजापा॥ तासुतनृपउत्तानपद॥ राषीपुहमिप्रतापा॥२॥ रानीसेय
मछिनाहिता॥ नरसुनीतियहनाम॥ तासगरभसंभूतधुव॥ नयोनगत
बिश्राम॥३॥ परमसुहागनिलयुनीया॥ रानीसुरचिसरूपा॥ तासनकेतो
पुत्रनो॥ उत्तमकवरअनूप॥४॥ कबित॥ एकसमयउत्तानपद सीहास
नबैठे॥ सुहागेदेऊकुवार बेलतलघुजेठे॥ रानीसुरचिसमीपराज
अतिप्रानपीयारी॥ तीनोउगरहउत्तमकुवार नृपनरिअंकवारी॥ धुवनि
करअरतबआपते पितागोदबैठनभयो॥ करिकुटिलभ्रकुटिदुरब
चनकहि तबहीसुरचिनिवारीयो॥५॥ छंदप धरी॥ पितगोदहे
षिउत्तमकुवार॥ तहाकरे धूवबैठन बिचार॥ तबनिकटसिंघासनग
योबाल॥ जननीसपत्निउरउठीज्वाल॥ सुरचि॥ करिभ्रकुटिबंकबो
लीकरूर॥ दुरसगासुवनधुवरहुमूर॥ उपजेदुरसागनिउदरदीन॥
हुतछत्रजोगकोउतैंकीन॥ जोहुतोधुवममउदरजात॥ बनिबै
ठतसिंघासनबिष्यात॥ तिहिकषिनयोतवजनमजानि॥ षितिपरि
नवलांजनदुःषषानि॥ जरपिकुलउत्तमछित्रिजाति॥ राजपदजोगि
नहीजनमराति॥ कबिरुबाच॥ यहसुनतधूवपरजरेअंग॥ नोक्रो
धमनहुचांपेतुजंग॥ निस्वासबदनजलधारनैन॥ उपजोक्रोध
नलउरअचैन॥ इहदसाअवतपिगअधार॥ जननीपहआयोधुव
कुमार॥ देषेसुनीतिधुवसुषमलीन॥ अहिनुजाप्रेमजुतगोदलै
न॥ सुनीतिधुवप्रबोध॥ मतकरहुरुदनदुषहोतमोहि॥ सिर
परहुबज्रजुनसहेतोहि॥ किहुदुष्टकहेदुरबादकोय॥ सोईकहहु
पुत्रराषहुनगोय॥ जेकहेसुरचिदुरबादजाल॥ सबसेषसुनायेहु

रथसाल॥१॥ सुनीति बाच॥ दोहा॥ मातातबैसुनीतिधुव॥ सुतकहंकरतिप्र
बोध॥ सुषदुषअपनेकरमफल॥ करहिनिरथककोध॥१॥ पुत्रनमेतैसे
नजो॥ दीनानाथदयाल॥ ताते येपरितवअसरा॥ सहीयतअंतरसाल
॥२॥ बिनुबदलेउपकारहरि॥ करतदीनसोदेव॥ करिहैदुषनिरमूल
सोई॥ सुषनिधानप्रभुसेव॥३॥ करिधीरजमनबचक्रमना॥ निजसरू
पधरिध्यान॥ आपतिकालअधीरहो॥ करतरहनअपान॥४॥ कबित॥ सु
रअसुरादिकसिध॥ जेहगधरबमहामुनि॥ जपतपसंजमनियम॥ कर
तमषदानपानगुनि॥ अपनेकरयहिसत्र॥ सीसकरतसंकरहित
भैरवादियहनंग॥ करतअवरोअंगीकृता॥ जिहिकीयासकलनवनत
जग॥ जाचतदिषप्रसादजीय॥ सोनजकुपुत्रजाकेसरन॥ संततचरन
निवासश्रीय॥१॥ दोहा॥ जातेपरमनिधानपद॥ पावतहैसंसार॥ से
प्रभुकारनकरना॥ अनंतनजकुअधिकार॥२॥ छंदपधरी॥ उत्तानप
दतवपितुनरेस॥ इहिनजननयेआषंकलेस॥ मनुस्वायंभूपितुपि
तुमहीप॥ प्रथीप्रभुतपायेप्रदीप॥ प्रपितामहतेरेबिधिबिनी
ता॥ पदलहेप्रजापतिअतिपुनीता॥ तुवजनमजयोतिहिंऊंचबंस॥ पदलह
ऊंचपृथीप्रसंस॥ धुवसुनेजबहिजननीप्रबोध॥ करिनिसचयनि
कसोबिगतक्रोध॥ धुवचलेतबहिबनहितबिसेस॥ मगमांहमिले
नारदमुनेस॥ परिक्रमनधुवकीनेप्रमाना॥ मुनिपूछिकहेनिजबंस
नाम॥ नारदउ॥ सेवकसहाइबिनुमातताता॥ क्योंबालअकेलोब
नहिंजात॥ धुवबाच॥ कुंजातबनहितपकाजदेव॥ नृपसुत
कहेदुषरोषतेव॥ सबकहेमातलघुबचनसूल॥ तिलगेहृदय
बिषबानतूल॥ श्रीनारदउ॥ कबित॥ पंचबरषबयपेषि धुव
सोकहेब्रहमसुत॥ अलपदेहबयअलप॥ अतिहिअमरषकतउप
जत॥ समयनआतमरमन॥ देहपोषनकेयेदिन॥ लाकजननिपि
तुलहनि॥ बललीलासुषसेवन॥ देषकुमुनिनतपसाबिषम॥ अ
तिदुरंततिहिअनुसरन॥ बयबुधिसुबलगुरगम्यबिनु॥ किहिबि
धितिहिचाहतकरन॥१॥ यहदेषीबीगतिअगम॥ देवरिषमुनि
नकुदुन्नरा॥ अतिसूक्षमअप्रमेय॥ बचनमनकरमअगोचरा॥ अ
हमकुसनकाहि॥ सकलषोजतेनहीपावत॥ इंद्रियनिग्रहकर
तोतुरतपनिरधारनआवता॥ जिहिनेतिनेतिभाषतनिगम॥ अ

बलो कोउ अग्र अनुसरे॥ नाग तिहि लहहिं किंहि नांतित दृथा बाल हठ हि
परे॥२॥ पंच अनल जल पंच सीत पंच नित पसाधत॥ ग्रीषम बरषा
ससिर ऐक आसन आराधत॥ कोउ अधोमुष उरध पाइ तं बित धूमासन
जुत पिपासन यरहत रहत केवल पवनासन॥ इहि दृसा कलप बीतत
अनंता॥ उन हीं दरसत जोति तिहि॥ अति दुरारा धित पसा अगम कहिसा
धहि गो जतन किहि॥३॥ कहा जोग जुग गति अति कठिन हौं तपसाधन दुपार
ताते फिरि यर जाऊ युव॥ नारद कहे बिचार॥४॥ बाल अवस्था पो षित तन
बल बिक्रम जब होइ॥ समय पाइ उदिम करत॥ तब फल पावत कोइ
॥५॥ सुष दुष करम धीन सब॥ रे बालक अग्यान॥ मो बिनु जुग तेनारदो
यहे जु निगम निदान॥६॥ ध्रुव बाच॥ मैं अब छाडे नेम करि॥ क्यु फिरि जा
ऊ यहे॥ बचन तुम्हारो सीस पर॥ मन उरझो संदेह॥७॥ प्रानी तन पो
षन करत॥ आसा बदन बिसाल॥ आं निअ चांत कबीच ही॥ ऊपरि जात
लै काल॥८॥ छत्री यग्र हग्र अवतार सम॥ स्वायंभू मनु बंस॥ करी प्रतंग
क्यों तजो॥ सुनि मुनि जग त प्रसंस॥९॥ तुम जानत छत्री यधरम॥ मह
क्रिन बिबहार॥ बचन संग तै देवरिषि॥ कै उपहास संसार॥१०॥ मेरे
करम उदोत तै॥ दरसन पाये आज॥ तुम बियंग जित बिस्व हित॥ बिग्र
मो हरिषराज॥११॥ निंदत करम जु आचरो॥ जि हि बरजे संसार॥ मो हि बि
जित सुन कृत करत॥ यह ननी ति बिबहार॥१२॥ कबि रुबाच॥ जब दे
षे बालक सहित॥ उरग्र अंक बिस्वास॥ नारद पर सप्रसन भये॥ साधसाध
कहि तास॥१३॥ नारदी बाच॥ छंद पधरी॥ सप्रसन भये नारद रिषीस
हि दे हे कुल गति दीनी असीस॥ श्री बासदेव मंत्रो पदेस॥ रिष कहे ध्रु
व हि कहनां बिसेस॥ हे मधुबन पावन जमन कूल॥ तह बसत कृष्ण आनंद
मूल॥ ध्रुव कर कुंभ न तुम उहा जाइ॥ निज रूप सम दीनो बतार॥ कबि त
ऊं नमो भगवते॥ बासदेवाय बिस्वंभरा॥ द्वादस अक्षर मंत्र॥ करे उपदे
स मुक तिकरा॥ नारद अंतर ध्यान॥ भये ध्रुव आये मधुबन॥ तरनि सुता
कीनो॥ देषि बेद तपसाधन॥ तरलता पुंज गुंजत मधुप॥ नाचत मत्त
मयूर जंह॥ भरि निज सरूप उर ध्यान जुत॥ कीनो जोग रंभंह॥१॥ प्र
थम बेरि ऐकाय चित॥ इक मास फल असन॥ पुनि गढेर हे उतय पाइ
पल्लव कृत भुंजन॥ द्वितीय मास जल पान॥ रहे इक पाइ निरंतर॥ चो
थे पवन अहार॥ चरन पल्लव दे के धरा॥ पंचवे मास सो ईत जि पवन॥
पद अंगुष्ट अधारये॥ धसि गई धरनि इहि ओर जब॥ द्वितीय ओर कल

लयें॥२॥ सहिनतारबसुमतीय होतअधउरथमनकुतुल॥ तिहिनिहरि
लोकेस नयेनयसंकुलआकुल॥ सुरसमाजसुरराज गयेहरिसरनतत
छन॥ रूमिचालनचरूत हालसबकरेनिचेतन॥ ब्रह्मंकोलकगमगंत
यह पवनरुधबिथकेगवन॥ अद्भुतचरितउलरतअवनि॥ कहिनजात
कारनकवन॥ श्रीनगधानेवाच॥ छंद॥ देषिदसायहसुरनिकै॥ हसि
बोलेबिसेस॥ मैपायोनयहेतसब॥ नयनकरकुलोकेस॥१॥ छंदपध
री॥ इकराजपुत्रतपकरतबाल॥ सहिनहिनिसकतलोरूमिचाल॥ बिथि
वतबिधनेतिहिसकलकीन॥ मनबाचकरमनयेमोहिलीन॥ तजिचि
तनावथिरकरकुचेत॥ हिनाहिअवरकेउनीतहेत॥ सबकरिकुताकेअ
रथसिध॥ तपसाफलदेकुजगप्रसिध॥ निजलोकजाकुतुमलोकनाथ॥
सबलोककरकुरहासनाथ॥ करिदरसनबंदनकैसकाज॥ स्वसथान
पधारेसुरसमाज॥ कबिकै॥ श्रीनारायनकरुनानिवास॥ परब्रह्म
पधारेधुवपास॥ कमलारतलोचनकमलपानि॥ जगदीसकरीसुधि
हासजानि॥ धुवदेहदमतदेष्योसधीर॥ परब्रह्मसहतनहीहासपीर॥
मनलगनमगनभयेकृस्नमाझ॥ सिसुसमझिपरतनहीतोरसाझ॥
इहिदसानयोबालकबिदेह॥ समभावसहतहरिसोसनेह॥ द्वैदीप
कआनाएकदीस॥ इहिभातिमिलेमनदासईस॥ गरुडाधुजगदेअ
यआनि॥ धुवध्यानमनहिनहिपरेजानि॥ धुवमुषहरिफेरेसंषसुध
गतजोगसुनिद्राजोप्रबुध॥ अनुपरेदिष्टतबनुजाचारि॥ बनमाल
मुकटकुंडलतुलसीमाल॥ आनंदमगनधुवदरसपाय॥ बिधिजुकतकरीकरु
नाबनाय॥ अधुवबाच॥ कबित॥ सतुति॥ ॐकारअपार अषिलअ
धारअनामय॥ आदिमध्यअवसान असमसमआतमअव्यय॥ एक
अनेकअनंत अजितअबेधुतअनोपम॥ अनिलअनलआकास अबन
वनीमयआतम॥ उतपतिनासकारनअतुल ईसअधोगतउधरनअ
धमध्यउरधव्यापतअमित तुमअनंतअसरनसरन॥१॥ परमधाम
परजोति परमआनंदपरमेसुर॥ परहितपरकृतपरमपुरुष परब्रह्म
जोगपर॥ परआतमपरप्रीति परमपदप्रीतिपरोदय॥ परमारथपर
श्रेय परमरिधप्रकृतिपराश्रय॥ परनिधिसिधि परबृधपुन॥ परमपु
रुषपरधामपति॥ परध्यानग्यानपरहेतप्रीय परमपतितकुपरमग
ति॥२॥ निरकारनिरलेप निगमफिरनिकट निरंतर॥ निरबिकार

निरधार॥निसनवधाबसनरहरा॥निरालबनिरगुननिरीहा॥निरबिषयनिरं
जना॥निरबिग्रहनिश्चलनिदाना॥निष्कलनारायनानरबोधनिराकृतना
थनिजा॥निगमहेतनरनाथनिता॥नियहननागनगउधरना॥नमसकारन
वरूपनित्या॥१॥जयतिजयतिजगदीसा॥जगतकारनजोगेस्वरा॥जगजित
जगहितजगनाथ॥जगजोतिजगतगुरा॥जगनिवासजगअजन॥जगत
पोषनजगनासन॥जगततरनजगसरन॥जगतमोहनजोगासना॥जगबं
धजगतपतिजगतनिधि॥जयोजगतकारनकरना॥जगपोषनजगतनि
धानजस॥सहासुकबिनरहरसरना॥२॥श्रीहरिजाच॥ इहा॥श्री
भगवतप्रसनहोबालेदीनदयाला॥जिहिइछातपसाधयेसोफलमांगु
बाला॥१॥ध्रुवबाच॥हेसनाथतवधुवकहा॥करेअकमकलेसा॥मन
इछापूरनकरीदीनबंधुदेवेस॥२॥सुरसिधनिदुरलभदरसा॥सोमेपा
येआजा॥सबमनोरथसिधईयेनयेसमंगलकाजा॥३॥भगवानोफिरि
करेकहनाउदयो॥दीनबंधुजगदीसा॥लीजेबंछितराजसुषाआषंड
लआचनीसा॥४॥ध्रुवबाच॥राजश्रीयकेबंधतो॥छूटतहेहरिनामा॥सो
हरिदरसनपाइकरुं॥बंधनपरोनसांमा॥५॥राजश्रीयाबिलासमोंसुध
रहैनहीचेता॥देवदेवपतिराजहो॥सबअनरथकोहेता॥६॥भगवानो
सबदिनरहिहोसुधमति॥मनगतिमिलिहोमोहि॥राजकरतकुराजके
बंधनपरेनतोहि॥७॥दिब्यबरषनवचोकतुमा॥सहसकरुगेराज
पाछेलहिहोउरधगति॥सबसरिहैमनकाजा॥८॥होतदसाजोमुनि
नकेरा॥तपबलनयेबिदेहा॥कैदसासुराजमहा॥तवधुवनिसंदेहा॥९॥
कबिकु॥ ध्रुवकेसबसाधनफले॥दयेदरसभगवाना॥मनबंछितब
रदानदो॥हरिभयेअंतरध्यांन॥१०॥ध्रुवचलेजबघरकोंबीचपंथम
हजाता॥आनिमिलीतहाराजश्री॥मनबंछितसबबाता॥११॥राजथा
नउत्तमकवरा॥गोआषेटकहेता॥तहाजहनसोजुधभयेआपपरे
रनषेता॥१२॥रानीसुरचिकुमारदुषा॥करेअगनिपरवेसा॥तबराजउ
तानपदा॥भयोबिरागबिसेसा॥१३॥ध्रुवआयेतेहीसमय॥राजामिले
प्रहासा॥तिलकछत्रपुत्रहिदयेआपगयेबनवासा॥१४॥बरषअग
रहसहसदुवा॥ध्रुवकीनोजुवराजा॥नुगतेकोटिकइंद्रसमा॥सब
सुषसाजसमाजा॥१५॥अवधपारनिरबानपदा॥पायोप्रगटनरेस॥स
बलोकनिकेसीसपरा॥दृष्टीपुनिप्रदेस॥१६॥सोध्रुवदेषकुबिस्व
सबा॥बहुकलपंतरबिस्वा॥करजोरेबदनकरता॥नमसकारकरे

नित॥१॥कबित॥ सहसबरषछतीस-राजनि हकंरकरयै॥जाकेनीति
प्रतापधरमचकुपदअनुसरयै॥राजजोगसधयो कछुअनुरागनकि
नौं॥जोजतजतसंजोग चरनपंकजचितदिन्नौं॥सुरगनसहस्रनरहर
मुकबि॥जयजयजयजगदीसजय॥ ध्रुवबरदनामजगउधरन इहिकार
कअवतारनय॥१॥ इतिश्रीध्रुवबरदनामअवतारचरित्रसंपूरन॥ताषाब
हरनरहरदासेनबिरचित॥अथश्रीपृथुअवतारबरनन॥कबिसबाच
हा॥ अथआरंभअनंतप्रभु॥कहिऊपृथुअवतारदीनदयालषयाल
गता॥सुषदाइकसंसारा॥१॥ स्वायंभूमनुबंसमहा॥भयोअंगअवनीसाज
कैतेजप्रतापजगासासनमांनतसीसा॥२॥पटरानीनृपअंगके॥नईसुनीथा
नांम॥पतिबरतालावमजुता॥सकलगुननिकेथासा॥३॥ताकेउदरहिऊ
पजे॥अघमयबेनकुमारा॥सातोसेवतदुरबिसना॥नीतिरहतसबिकार
॥४॥येकसमयनिहबापसे॥मिथ्याभाषनकीन॥जोनिअधरमीपुत्रकै
नृपमनभयोमलीन॥५॥ छत्रीयकुलअवतारलै॥मिथ्याबादीहोयबिद
पुरांतनिमेकलै॥नरकबिलासीसोयदृ॥ राजोबाबापुत्रहिदेष्याउष्ट
मति॥राजाकहेरिसाइ॥जापापीयादेसतै॥मोहिनबरनदिषाश॥७॥क
बिकहाव॥बेननिकासोदेसतै॥कस्योअनादरराजा॥सुहलैनिकस्योति
हिसमय॥सबेनजेसुषसाज॥८॥गयेबेनकछुबनगहन॥तहातपसा
धनकीन॥प्यासभुष्यानिद्रारहता॥भयोध्यानलोंलीन॥९॥राजाअंग
हिकालबहु॥राजकरतगएबीत॥उपजोतबबैराग्यचित॥छुटीराज
सोप्रीति॥१०॥येकसमयगतअरधनिसि॥निकस्योराजाअंग॥कछुनूज
सोंकितगयो॥सबैग्रहतजिसंग॥११॥सेवकमंत्रीसुनरजो॥षोजतरह
हिंतो॥कछुनपयोसोधसो॥मनभयोमलिनसुसंतो॥१२॥भईअराज
कजूमितहा॥भयत्रासितनवजूतो॥यसेसोकसोंबसतयहा॥सबैबिग
नसुषसतो॥१३॥लोकरसाअवलोकिकै॥रानीपरमकृपाल॥भयुहिंअ
दिदेश्वरषिया॥बोलिलयेतनकाल॥१४॥कीनीपूजाजोरिकर॥बं
दनबारंबार॥इसअराजकलोकदुषा॥कहेसबेबिबहार॥१५॥साचिव
बधसामंतसब॥उतमअतिजिलोग॥रिषिनिकसोयेपूछिसबा॥पुनिबि
तवकुप्रयोग॥१६॥इनसबहिनकेलेकुमता॥करकुमंत्रनिरधारा॥पाछे
षोजकुबेनकहा॥बकुदिसिपरवकुचारा॥१७॥सबकेसंमतसोमिल्यो
कीजेकाजबिसेस॥रानीसोपैहोतहिला॥यहेनीतिउपदेस॥१८॥पिता
निकास्योदुष्टगनि॥यहजाननसबकोश॥पापीराजाकेभयो॥सबैअ
निष्टहोइ॥१९॥अंगबंसमहअवरकोअ॥छत्रीरलोनआहि॥सहज

सुनावसु बेनको। तुमकु जांनतता हि॥२०॥ अरथी दोषन देषहु॥ अनहित गिनैन
कोरः नौ आतुरयो हीकहो। जो नवतब्ब सुहेउ॥२१॥ दुषी जहां हा ऋतसबा लि
कु निकरी पुकारा। कोऊ साध असाध्य॥ नृपकी जे निरधारा॥ तो कु बा सु
सब मिलि कीनो मंत्र यहा। रिषि सों जोरे हाथ॥ ते अवे कु नृप बेनकरा। कीजे
नृ मिसनाथ॥२२॥ कबित्त॥ जिहि बन साधत बेन तप॥ नृगुतह गये रिषि
सा। रनबंदन कीने बिबिध। उन सुनदरी असीस॥२३॥ बेन करे उपदेस रिषि। ते
आये ग्रह बांह। मात सुनीथा सो मिले। अरथ ग्रहन ऐ उछाह॥२४॥ बेद मंत्र जुत बेन
कहो। नृगु कीनो अभषेक॥ परजा गन नृप ता प्रगट। अवनि तप्यो छत्र एक॥२५॥
छंद पधरी॥ पयो सुपीत पत्तन प्रदेस॥ इक छत्र तप्यो अवनी नरेस॥ सेना सम
थ चतुरंग साजि॥ बरबीर सुत्त दरथ सजब बाजि॥ अनुसरत उग्र सासन अ
षंड॥ दीजीयत अनहित अपराध दंड॥ लुटक चोर लंपट कुलोक॥ जहतह मिल
नसत्र बस सोक॥ बिषबदन गंध मूषक बिलात॥ इहि नांति गए षल षय अरा
ता॥ रिथ पार निकंटक करत राज॥ संगरु षृ नृत सेना समाज॥ मरग्रंथ नए अ
कुस अमांन॥ रीसन मांनि आपहि अग्यान॥॥ छंद॥ सुरापान पल भोजनं
बिसांऽत बिलास॥ आषेटक दुरनृत सक्रम॥ परत्रीय सेव प्रहास॥२७॥ छंद पध
री॥ सब करत सात दुर बिसन सेव॥ द्विज मानत ना हि नगुर नदेव॥ अति उग्र
ते नृते अहंकार॥ बिपरीत चरित बुद्धि अति बिकार॥ छल बचन उचारत मर
म छेद॥ सबनां हि साध अनसाध नेद॥ चित बसत कु नृ ह ग्र अनाचार॥ अबिबे
क अ संगत सुष उचार॥ निकसे पुर बाहर जिब नरेस॥ सुनि होत सब द
हाहं बदेस॥ निरयो षपट कृत धरम नास॥ सजि तउ पायि निसनवस हास
मष होम मिटे पूजा महंत॥ सुर बिप्र सुर चिसन मानसंत॥ बलि अनल नै
मत पन ऐ बाध॥ सब नृ मि करम प्रगटे असाध॥॥ छंद॥ जे कृत निरत नृप
ति कहो। ते सब सेवत राज॥ ता ते हाहा ऋत जग। बाढत सोक समाज॥२
॥२९॥ छंद पधरी॥ निसनेम अगनि होत्री द्विजात॥ बिपरीत करम नित सु
नत बात॥ द्विज गए ते बे मिलि नृगु निकेत॥ अवनी सक हे अनरथ हेत॥
नृगु आदि अवर सब रिषि समाज॥ जुत सोक तये गत द्वार राज॥ प्रति
हार इ॥ प्रतिहार कसो नृप सो प्रमांन॥ थित राज द्वार मुनि मुष मलांन॥ त
बतये बो लि नीत रिषीस॥ द्विज निकट आइ दीनो असीस॥ बेण बाच॥
नृप करे प्रसन अंतर कुचेत॥ द्विज राज कहु आगमन हेत॥ रिष बाच॥
छंद॥ बेद प्रणीत जु नृप धरम॥ सो पे सुनु नृ नरेस॥ कहत तिहारे श्रेय
लगि। ऐ रिषि हित उपदेस॥२९॥ सुर मुष कहीयत अनल सों। यह जांनत
सब कोइ॥ ताम हहवन जु होत है। सुर निपु कुचत सोइ॥३०॥ हयमेधा

कजइजो॥होतपुरुहितपरराजा॥तबसबसुरसंतुष्टकै॥करतराजहितकाजा॥१॥
बरनचारिनृपदेहनय॥तजतनहिनआचारा॥तिनकेपुत्रिहसंसफल॥नृपपावै
तनिरधारा॥२॥बादतपुत्रप्रतावतो॥कोसदेसबलकिन्ना॥राजअकंटकलोगव
तानृपपूरनतानित्या॥३॥आयुरबलकुलउग्रता॥सुषसंपतिजयजुध॥येसब
पवतधरमतो॥सदारहतचितसुध॥४॥होतप्रसनसुधरमतो॥ब्रह्मविष्णुम
हिस॥तातेमनबचकरमकरि॥धरमनतजुतनरेस॥५॥जपतपतीरथजोग
मषा॥बिमलबिष्णुबिस्वास॥इनकेकीयेनिषेधतो॥होतनृपतिकोनास॥६॥
राजोबाच॥राजापूछेरिषिनिसो॥कहियेकरिनिरधार॥किहिनिमंतुमम
षकरता॥सहतकलेसअपार॥७॥रिषउवाच॥ब्रह्मबिष्णुरुद्रादिसुरा॥जिनहि
तकीजतजाग॥होतसंतुष्टसुबासना॥अहिसंतोषतिजत्याग॥बेणब
चकहित॥ससिनिवासआकास॥नकुटिलबरविद्विगरजीया॥नासदेस
अखनिकुमार॥मुतिअनतसुसजीया॥बाहुरंदजलबरन॥स्वादरसना
अतुरतीया॥इद्रीयब्रह्मनिवास॥प्रानसबअंगप्रवरतीया॥आपाअनंतस
बरंगअमरावसतजनमतेअतबया॥मुनिजानतबेस्रनीतमु॥महीपालब
पुदेवमया॥८॥ह॥तुमजानतनरनाथके॥अंगअंगसुरबास॥तातेराज
देवमया॥कहतपुरानप्रकास॥९॥जग्यकरतजोसुरनिकहां॥सोहिसमर
पकुआनि॥लेजारतहोअगनिमहां॥कोनपरीयहवांनि॥१०॥नृजोबीजन
अकुरो॥जस्योनपवेकोग॥तसमनऐतैकाजकहा॥हमहिबतावकुसो॥११॥
रिषिउ॥फेरिकहेरिषिबेनसो॥अंतरउपजीज्वाला॥अपनेपर्यंगतधर्मा
नहीछांकतनुबपाल॥१२॥आगेनृराजानणो॥अबलोसुनहुनरेस॥तिनजो
अंगीकृतकस्यो॥सोईकरमबिसेस॥१३॥अरथकामनोधरमकरि॥साधेसुक
तिबिसेस॥चारिपदारथतिनहिलगि॥ततपररहतनरेस॥१४॥बेणबाच॥
रेपटपसुब्रह्मरिषा॥मोनतनाहिनबेथ॥फेरिफेरिसोईकहत॥अपुनन
ऐसुमेथ॥१५॥आपाजगनरेंद्रको॥हिंअसमत्रबधपापा॥दिषहुनीतिबि
चारकरि॥पंडितहोपुनिआपा॥१६॥राजाकैतेहीसमया॥आंनिचदेउरके
थ॥मारिनिकासहुद्वारतो॥हमकहकरतप्रबोध॥१७॥बेणउ॥बेणकलेस
प्रतिहारसो॥पापीकाढोयेरि॥इहबिधिद्वारलआईयो॥सुहनदिषावै
हिफेरि॥१८॥कस्योअनादरद्विजनके॥नृसप्रतुआपपापा॥कीनेबेत्रप्र
हारतहां॥मुनिवरउठेरिसाय॥१९॥रिषिबाच॥तबेरिषीस्वरकोपजुता॥ला
गेकरनबिचारा॥राजाहिदीनेआपको॥
हदीनोराजहमा॥याहिप्रबे

रे दोषन हो। यह बेद बिबहारा॥१॥ ब्रह्म बिरोधक पापन्प। अपनयो नग
वंता। आपद्यो नृपुयो कलो॥८ हिंछ नया कोअंता॥२॥ सियासन तेन्प गिरयो
आनगयो तजि देहा। करे सुपावे करम फला। निसचय निसंदेह॥३॥ नृपु मुनि
निकसे आपदो। बेलमरे सब बिकारा। ता हो छन नरनिवास महा। केरसो हाह
कारा॥४॥ मात सुनी आ बेनको। करि करि कहे बिलापा। प्रानी पावत करम फ
ला। हो सन सिष्य आपा॥५॥ मृतक कलेवर लेध्यो। तेल द्रोण का महि रा
नी बिद्या जोगतो। क्रम गत बिग्यो नो हो॥६॥ कबित्त॥ छंद पधरी॥
नृप मस्यो राज कलयो देसा। अवनी अनरथ प्रगटे असेसा। परत्रीया सक
त बिन्न पहारा। जन हत कपत्र धरे कुवारा। बिसवास यात बेसा बिहार
पर निंदक तसकर पापचारा। निसिदिवस ने दन हो परत धारि। गो हरनक
रत पुर दे तजारि। बालिज कृषी पसु पालो का। मुनि देषि चराचर जे ऐस
सेका। बसन ए दीन सी दत साध। आचार नृष्टु उमग अराध। कृषि हत त
मि बन बरि बिसाल। निरुरन निकरे बकुष लनाल। अतिबृष्टि होत जहं तह
असेषा। बन नदी नई सरिता बिसेषा। हा हा पुकार संसार होइ। करतार बिन
न हि रक्षक कोइ। कुछ काल दस सहि ने अतीत। नय त्रिसत बरन चार्यो
सनीत। इक समय लोक सब जुरे आनि। मिलि मंत्र करे मन त्रासमानि।
नृपु सरन चलहु करि दास नाव। सुनि दुषित लोक करि हे सहाउ। सरस
ती रषि ति पुनि षेत। नृपु करत जग्य जहां मुनि समेत। जन नए दीन रिष
अअजाइ। बंदन प्रनाम कीने बनाइ। करत उसास रो दत दुषारा। करि त्रा
हि त्राहि कीनी पुकारा। लोक बाच। नय सो कउ दधि बृक्त बिहाल। दुष
नये सरन आये दयाल॥ छंद॥ नरीस सा जो देसक॥ बिना राज रिष राज
आनबिना जो देहये। को ऊ सरतन काज॥ रिष उ। रलो नराज अग
को। संतति छत्री को इ। अवर बरन क हं राज को। हम पे तिलक न होइ॥ बि
नपतन नो करम बसा। करिये कवन उपाइ। पुत्र न राजा के नये। दयो स
रीर जराइ॥ लोक उ। लिरा ष्यो रे ते जम हा द लो न अग नि सरीर। पर
मसाध पाउ धारीये। हरिये जन की पीर॥ लोक बिलोके दुषित ज बा
मुनि बरन ए दयाल। कृत निवारन बिस के। आए ते ही काल॥ न
गुपाउ धारे राज अह। रानी करे प्रनाम। मुनि बर तुम ही तेरे हो। यह
रतध न धाम॥ आप अनुग्रह जो ग्य तुम। यह देवत अधिकार
दुरदया करि करत हो। यह बेद बिबहारा॥ कबि॥ नृपु मु
रानी के बचना। समझि लोक की त्रासा। ज ह कलेवर बेनको। आए
हा सहासा॥ छंद पधरी॥ जुवसो यिज या बिधि बेद जानि

सतदरसनादिकरचेओनि॥बपुमृतकधरेतापरबिसेषा॥उचारमत्रकीनेअसेषा॥ह
ह॥जथामथतजुबेनकी॥उपजेबाहुकराजा॥तिहितेबेसनिषादने॥करतज
याकुलकाज॥१॥करेजुबेनअक्रमकृता॥अयमयतिनकेअंसा॥पहलेहीबाहुक
तथा॥प्रगटेपापप्रसंसा॥२॥छंदपधरी॥रिषिमथतप्रथमजुघानरेसा॥प्रगटे
निषादपतिनृप्रदेसा॥लघुअंगथूलमसतकलिलाटा॥कचकपिलअंगकारे
कुघाटा॥बैगंधदेहचषअरुनबोना॥बानीकरालकरकसबिधाना॥परहिंसक
परबित्तापहारा॥परदोहमानघातकजुबारा॥बिपरीतकरमगतधरमबाध्य॥
रहिरूपउपजिअंतजिअगाध॥कंदरागूटपरबतप्रकासा॥रिषदयेतिनहि
बनगहनबासा॥प्रथमहिअक्रमजेकृतप्रमाद॥नृपपापअंसउपजेनिषाद॥
षिप्रिअधमजेचांडालषाती॥जगनरेउनहितेनीचजाति॥अयनिकसिबेन
नेसुअंग॥अन्हवरदेहसोउदिकगंग॥कबित॥दहनजुजमथानन्क
रजबबेनकलेवर॥अतिउदारअंसावतार॥पृथुनरेपुरुषपर॥बांमबाहु
केमथन॥अरचिप्रगटीत्रीयअरचुता॥पतिबिरतालछमीप्रसछ॥लछनगु
नसंजुता॥अंगअंगबिन्हदेषेअसम॥कीयबिचारनिसचयकरो॥नवनरत
सकलमानुअनय॥अषिलरीसपृथुअवतरो॥१॥छंदपधरी॥प्रजुच
रनपदमरेषाप्रकासा॥करसंषचक्रअरुगदातासा॥प्रतिपालनलोकयेरिष
प्रसंसा॥बिस्वेसप्रगटअंगबंसा॥निसचयजुतदरसनकरुनेमा॥परब्र
हमनजकुजुतसहतप्रेमा॥नरीदेहदृष्टपूरनप्रमाना॥महिमायहदेवी
अप्रमाना॥पृथुअरचिअंगपूरनप्रतछि॥लषिकीनेबंदनबिस्नुलछि॥
रहिसमयबजेदुदुनिअकासा॥पुनिनईपुहपबरषाप्रकासा॥ब्रह्म
रिदेवरिषपितरआग॥गंधरबगानकीनेंसुनाग॥सुरकंन्यानारक
कृतप्रसिध॥जयसबदकरतचारनसुसिध॥ब्रह्मादिकबंदनकृतबि
सेषा॥दांहनेहसतनहागदादेषा॥नुजबामसंषचक्रादिनावा॥पदम
कृतरेषामध्यपावा॥सुरनिसचयकीनेमांनिसीस॥अवतारनयोत्रय
लोकईस॥सुरमुनिकरेराजानिषेका॥बिधितिलकछत्रचामरबि
बेका॥सुरआनिआनिअपनेसुनाग॥परब्रह्मनेटिकृतबंदिपाग॥
सिंघासनहिमयसहतसाजा॥बैअवनदयेबिद्धिबिधिबिराजा॥न
लपूरनतायरुछत्रजाला॥बिधिजुकतबरनदीनेबिसाला॥कीरतिम
यमालाधरमदेवा॥बिजनादिकचामरदीयसबेवा॥कृतनीतिदंडमय
धरमकाजा॥रतनमयमुकटदीयदेवराजा॥सरसतीमालमुकतासु
रेषा॥दीयब्रह्मकवचब्रह्मबिसेषा॥दीयचक्रसुदरसनचक्र
पानि॥अभयश्रीलछमीदईआनि॥दीयरुद्रषड्गदसचंद्रहास॥

अबिकाषड्गमतसमिप्रकासा।तारथबिस्वकरमासतेजा।ससिसुधाषीरसाग
रसुसेजा।दीयअगनिधनुषअजगवअनूपा।रबिदयेकिरनिमयबानरूपा।सद
ग्रानजोगमयरूपकासा।सुरसुमनबृष्टिकीनीअकासा।जलचरनिचरमअन
नेदिजानि।अतिगंधबनसपतिदयेआनि।अनदिष्टगमनआकासचारि।रथ
मारगसरितादीयनिहारि।मनिदईप्रकासबिसमुषनिमानि।अनेदिक्क
रथगिरनिआनि।कामनासकलतकामगवा।सबसिधकलपतरमनिसु
नावा।दरबिनदयेरबिनिप्रदीपा।मुनिदयेमित्रआसिषमहीपा।इसादिनेद
हीयसबनिआनि।मनबाछकरसपृथुलईमानि।स्वसथानगयेब्रहमादिदे
वा।पृथुकरतराजअवनीअजेवा।समधरमनीतिजुतबिधिबिसेसा।इहिन्ना
तितपतआषेकलेसा।दिनएककृषीमिलिराजमारा।सबकहन्तपहिउरबीचक
रा।षितिरहीअराजककछुककाला।बनगहनबृछबादबिसाला।रजबृष्टबा
नबसहोतरेना।सबनयेषेत्रजलमयसुषेना।जलबरषिनिरंतरजलदज
ला।षितनयेतयानकनयेषाला।इहिहेतरहीअवनीअजाता।हमनएनि
रुदिसकछुनहोता।पृथुराजसुनीजबजनपुकारा।आरंभकरेलीलाउदार
गिरकंदरनिरुरबनगहीरा।नदबिसदनिरंतरबहतनीरा।दिगबिजय
काजप्रभुकीयप्रयाना।समरूमिकरोसबथानथाना।कबिताडुगमदे
षिथलदिष्य नयेआचिजअवनिपति।बिमलषातसरिताबिसाल
मरलतासरीषिति।धनुषअयपरबतदिहार नदनयेनिरंतरथलबि
थारतिहियान पूरिकीयषेतसुपधरा।समकरषेतबनकाटिसब उप
जिअनअषधअतला।पसुपालकृषीनिजबृत्तपर सुगमजथाउदि
मसफला।१।।कृतबिभागबसुमतीय षेरुबकुदेससुपत्तना।नगरग्राम
अनेक बिसदबाटिकागहनबना।आषेटकउद्यानथान कीनेगिरकं
दरा।जलनिधानसरबरसकूप बापीसोभाबरा।बनधातरतनआकर
बिमल बिधिअपारबिबिहारबिधि।संसारजथाअभिलाषसुष सेव
नयहयहअबृसिधि।२।। जिहिजिहिथलमिलिडुष्टजाति उतपात
उपकीय।जगपबाधसंतारसाध संजारछीनिलीय।दीनत्रीयाद्विज
गउबछ बालहत्याजिहिकिनीय।अवनिभारआक्रांति नरीतिन
ओणितनीनीय।हयमेधआदिदेमषहवन नयेपुनिमयअषिलतुव
पृथुनृपतिसोयिजबसुधकीय पृथीनामतहासगटकुव।।३।होरअस
नवपृथीय कलोपृथुसंयहकारना।तुमअनंतअवतार अषिलतुव
रउतारन घेनरूपकुधरो प्रगटनवरछापूरना।करकुबछकोऊपे

क सबै होस्कज्ञसपूरन॥करिबिचारनिरधारकीय जगतहेतदोहारजब॥
संसारसुषदसंसारसिधि अउरतनमयहिब्रिसब॥२॥ नयोबछसुरराज
पृथीमिलिधेनदयापर॥ दुहनहारसबदेव तहारिषिजदातपेसुर॥पितर
जहगंधरब जोगसाधक द्विजदानव॥रकसअसुरपिसाच नगनर
नृतसुमानव॥सतपुरुषसूरजेसाधनर बरनचारिनिजकृतकरा॥ऐ
दुहतरतनगरस्तअवनि पुरुषसिधउद्योगपरा॥३॥छ॥जथाकामन
सिधसुष सबपायेसंसार॥ पृथुप्रसादपृथीदुही पुनिप्रकारअपार
॥१॥सुनतपृथाचीसरसती ब्रह्माबरतसुषेत॥पृथुप्रजुराजसथानत
हां नयोसुधरमसमेत॥२॥ दंडअसाधनिसायसुष॥दीनेजथाअक
रा॥बेदप्रनीतजुधरमबिधि॥कीनेपृथीप्रचारा॥३॥ होतअवधिकालां
तकम॥जानेपृथुनरेस॥सुगतेपूरनराजपद॥अरुदईवत्रअसेस॥४॥न
पउपजेबेरापत ब॥तोबनवासबिचार॥पुत्रहिदीनेतिलकतब॥
अपनेहृथउदार॥५॥ नयोनृपतिबिजतासतहो॥राजश्रीयपदप
शारणीअरचिसमेतपृथु॥बासकीयोबनआसु॥करीतपसाउग्रत
हा॥दंपतिसंजुतनेमा॥इंद्रीयनिग्रहदृढमापरंब्रह्मसोप्रेमा॥१॥राजा
जोगअभ्यासजुत॥नएजोतिमहलीन॥रानीअग निप्रवेसकरि॥धरम
पतिहृतकीन॥८॥ अगमजोगअभ्यासकरि॥कीनोप्रानप्रयान॥पृथु
परलोकप्रवेसनो॥रानीअरचिसमान॥९॥ बाजेगगननिसानजब॥सुम
नवृष्टिआकास॥आनदेब्रह्मादिसुरानृपबैकुंठनिवास॥१०॥कबिना
दिवनावनृपदाव दासमत्रुनसोदषीय॥प्रजुप्रनावअवचिंत बयर
बसक्रोधबिसेषीय॥स्यादेऊअनुसार देवदानवप्रमानकीय॥ऐ
कारनअसावतार तुवतारबिनासीय॥जिहिआदिनसभनअंतक
ऊ कबिनरहरदहिबिरदकहि॥पृथुनएदेवत्रयलोकपति महा
राजअवतारमहि॥११॥छ॥इति श्री पृथुअवतारचरित्रसंपूरन॥
आगेबारहनरहरदासेनबिरचित॥ अथहयग्रीवअवतारबर
नन॥कबित्त॥छ॥ अबकहिबोहकरमजुतसुषदसाधसंसारजि
हिकारनतुवलोकनो॥हयग्रीवअवतार॥१॥ब्रह्माकोबासुर
प्रलय॥नयोअवधिबसआनि॥रजनीसुषकीनोसयना॥समयकमल
नजानि॥२॥ पृथीप्रसरेप्रलयजल॥नासनुयेजगजंता॥ज्योंनटस
जसमेटिसब॥सोइरहतदिनअंत॥३॥बादकेनतरंगबसा॥मिलिज
लमलसबिकार॥तातेउपजेअसुरदुष॥असवाननआकार॥४॥जिहि

रि॥ इरननयोप्रमांन॥१॥ अरम बिरोधकपापमय॥ नयो बिग्रह बिसत
र॥ बुधि बिक्रम बिवसायजुत॥ मायारचत अपार॥२॥ छेद पधरी॥ इकसम
ऋच है अ सुरअसंत॥ सुष निद्रगत जहा ब्रहमसंत॥ बिधि आननसो आ
ननमिलाइ॥ सो बेद स्वास पीते सुनाइ॥ जब नये उदरगत निगम चारि॥
लेगये दुष्ट सब हिनसंनारि॥ बेदाप्रभाव असुर बिसेष॥ अभिलाष सिध्य
वत असेष॥ बिचित्र प्रलयनी रमंदिर बिसाल॥ सो बसे असुर तहा सुर निस
ल॥ नही निगम समावत अप्रमांन॥ निस्वास उदर चढि आ समांन॥ मुष
उगलि बेद तब असुर मूढ॥ ब्रहमांड धरे करि जतन गूढ॥ बिधि निसा जी
ति जागे बिनीत॥ दिन प्रलय अवधि बसत्तो बितीत॥ अहकलप अष्टि उ
पराजि देव॥ मष करत नये महिमा अमेव॥ पितकरे जबे आपा प्रसाद॥
मिलि पुत्र नये तब अप्रमाद॥ अधिकार जथा क्रम नाम अंक॥ आरंभ ज
ग्य कीनो असंक॥ मुनि नये बिधि हि पूछत बिधान॥ धित नये पुत्र सब
थांन थांन॥ निःसेष निगम लेगो निलाज॥ दिग मूढ ब्रहम नये सरनि क
ज॥ बिनु बेद बतावै कहा बिधांन॥ मष बाध नये चिंता अमांन॥ पाषानम
ई प्रतिमा प्रमांन॥ यो नये ब्रहम सुरै न आंन॥ उरम अबेद षोजत अ
नंत॥ पावत न लेस कछु परम संत॥ नये ब्रहम बिकल चित बार बार
करतार त्राहि कीनी पुकार॥ तुम दीन बंधु देवाधिदेव॥ नव भूत तत षूत
इछा न लेव॥ सब काल करन कारन समर्थ॥ तिहि नांर न जे जिहि ल
तथ॥ रिषपाल बेद राजाधिराज॥ अनसहन अवसथा परी आज॥ तुम ब
नि ब्रहम जब सुनी देव॥ इहि समय आनि प्रगटे अजेव॥ कृत अरचपू
जा कमल जात॥ बिधि बार बार बंदन बिष्यात॥ देवाधिदेव दीनन नि
दयाल॥ करुना निधान बोले कृपाल॥ सब बिधि बिरंचि तुम धरम सेत
कीनो सो हि सुमरन कवन हेत॥ बिधि बाच॥ भगवंत हम न कछु ल
हो न देव॥ बिस्वेस बिष्नु कहगये बेद॥ दिग अंध नये कछु जथा जेत॥ करि
ये सहार अब रमाकंत॥ तहा नारायन करुना निधान॥ धरि दया चि
त कृत जोग ध्यान॥ अप्पान उदधि महा असुर एक॥ अस्वानन अधक
रक अनेक॥ लै गये बेद सो हरि निलाज॥ यो कहे बिष्नु मे लिष्यो आ
ज॥ बिधि उ॥ बिधि कहे जो रिकर बिवस हेत॥ तुम ते अगम्य नही मे
रकोइ॥ कृत कारन करन जु रमाकंत॥ असथा करन तुम ही अनंत॥ उ
मदये बेद मो कहे दयाल॥ पुनि करि हो तुम ही प्रनितपाल॥ नही
होत निगम बिनु करम नाथ॥ असमथ नये द्विज बरअनाथ॥ बिध
जुक त सुनी बिधि दीन बांनि॥ अषिलेस बदी उर दया आनि॥ अह

बुतसरीरआकृतअनूप॥हरिनयेतहाहयग्रीवरूप॥प्रभुकरेअंबनिधिमहत्र
बेस॥सामुहेअसुरआयेबिसेस॥जातीसुनावकीयंनाकजोर॥कछुकाल
नयेसंग्राम घोर॥बिग्रहोदुष्टमारयोबिसेष॥हयग्रीवदेवकृतबिजयहेप
प्रभुकरेअसुरमंदिरप्रवेस॥आकरषिबेदलीनेअसेस॥निरघोषदेवदु
दुंभिनिनाद॥परपुरुषदयोदरसनप्रसाद॥अंबजमूदीनेनिगमआनि
बिसतारबिबुधजयजयतिबानि॥मषजोगजापतपकरमतंत्र॥सबि
सेषकरतमुनिगनसुतंत्र॥दृष्टीसधरमप्रगटेप्रकास॥बैकुंठनाथबैकु
ंठबास॥ कबित॥इहिप्रकारअषिलेस पुरुषहयग्रीवप्रगटीयाहु
ष्टमारिसंघारि असुरमारयोहरीयो॥अमरबृंदआनंद निगमहितर
हतनिरंतर॥बिधिसनाथकृतबिस्वनाथ परब्रह्मसदयापर॥इति ह
यग्रीवआसुरहित नयेअविजत्रयलोकनुव॥उधारनिगमनरहसु
कबि हयग्रीवअवतारकुव॥१॥इति श्री हयग्रीवअवतारचरित्र
मधुरनाम नाषाबरहटनरहरदासेनबिरचितं॥ अथश्रीकूरमअवत
रबरननं॥ कबित्त॥ छंद॥ येकसमयसबदेवमिलिकी
नोमंत्रबिचारा॥सुक्रहमारेकुलगरु॥तपबलबुधिअपार॥१॥जिहिबि
द्यासजीवनी॥मूरनमंत्रप्रकास॥गुरुप्रसादहमअमृतपुतो॥अनयत्नरेबि
नास॥२॥ अबपोरुषकरियेप्रगट॥सुरसुरराजसंघारि॥बासकरहि
तिहिंगबिमल॥इंद्रलोकलेमारि॥३॥ सबेदनुजसनधेरो॥आनिलगे
सुरधाम॥तहामहादुसहलयो॥देवासुरसंग्राम॥४॥जोईदानवरनमह
गिरो॥सुक्रजिवावेताहि॥सोईआनिनिवारयनिरो॥ससत्रासमत्रसंब
हि॥५॥महाजुधकछुकालतो॥आसुरघटेनकोइ॥घटनलगेसंग्राम
सुरा॥रहेसोचबसहोइ॥६॥ सुरनिकसेसंग्रामतो॥लयोसरनबिधि
जाइ॥कस्योब्रह्मउपदेसजब॥करिहैबिष्नुसहाइ॥७॥ देवगयेह
रिकैसरना॥दुषनिवेदोतथा॥तुमदयालत्रयलोकपति॥कारनकरन
समथा॥८॥श्रीहरिबाच॥ मंत्रसजीवनसुक्रपहि॥तातेबलवांन॥त
धिउचितबलवानसो॥मंत्रकस्योभगवान॥९॥ अमृतपयोनिधिमांझ
हो॥कदकुकरिमथांन॥सुधातुम्हारेकरचढो॥तोतुमउनहिसमांन॥१०॥
उनकेबलसजीवनी॥तुमहिसुधाबलहोइ॥जाइकरहुयहमंत्रअब
सिधिकाजतोहोइ॥११॥कबित्त॥ स्वामीदैतनिकोकुतो॥जहाबिरो
चनराज॥इतपठायेसुरजितहि॥संधिकरनकेकाज॥१२॥छंद॥ इतबि
रोचनसोंकहो॥तुमउनरेकुलीवंस॥तातेअपनेबंसमहि॥नाहिबिरोधप्र

प्रसंसा॥१॥ अबतो करियेसंधियह॥ दोउ मिलिबलअप्रमान॥ सुधापयोनिध
मांऊ है कादऊ करिमथान॥२॥ मानिबिरोचनमंत्रयह॥ उतरदयो बिचारि
जो कछु निकसेउदधितो॥ लेसमताग सनारि॥३॥ हमहितुमहिसमव
गसमा॥ बलबिक्रमबिबहारा॥ जहायटऊगेकाजतो॥ जहाजुधनिरधा
रा॥४॥ दिवदनुजयोकरिकरी॥ संधिप्रबलमतगानि॥ आपमांऊमिलिएक
ठो उदिमकीनोंआनि॥५॥ मिलिसबदेवमहाबली॥ मंदरलयोउगाइ
अरधपंथमहलेधरयो॥ करिकरिचितकबार॥६॥ देवरहातेचलै॥
मंदराचलअनमानो॥ अरधलागहमतुमसकल॥ करिबोबचनप्रमान
कह्यो॥ लाहिनकोउसमुतल॥७॥ आयेदीनदयालप्रभु॥ तिहिछनदे
वसहाइ॥ मंदरराषेउदधितरा गरुडदृष्टिधरिआइ॥८॥ गिरमेषलजोज
नसहस॥ सहसउरधचालीस॥ मंदराचलपरमानयह॥ सोनाअमितसु
दीस॥९॥ नेतकाजमनुहारिकरि॥ आन्यो बासुकिनाग॥ सुरासुरनितासे
कलै॥ लीजऊअमृतबिभाग॥१०॥ छंदपधरी॥ पुनिसुनऊकमग्र
वतारहेता॥ कतरूपअतुलबलधरमकेता॥ इहिसमयदेवदानवबलि
ष्ठ॥ मिलिकरतभएकीजप्रतिष्ठा॥ सामुद्रमथनकीनोसमथा॥ उधरहिरत
नचवदहसुतथा॥ नितोसुकह्यो बासुकिनिहारि॥ मंथानदंडमंदरबिच
रि॥ पयमांऊधरेपरबतबिसेषा॥ सोनयोलीनदेषोअसेषा॥ जातीसुरव
रापैनिधिअगाधपावहिनतेवा॥ सुरअसुरनयेआतुरसषेदा॥ करजो
रि करेकरुनालिवेदा॥ कीजेसहाइराजाधिराजा॥ केलंगहोतहैदेवक
जा॥ सबकालभयेतुमसुरसहाइ॥ जोतीसरूपप्रभुजानराइ॥ हरित
येतहाकमगवतारा॥ बपुरूपमहापयनिधिअपारा॥ प्रभुधारिमहापयनि
धिपहारा॥ उधरेदेवकूरमावतारा॥ आवरितअंगबासुकिसमूल॥ सोज
योकूटकरबंगतूल॥ धरिपुंछदेवसमदेवराजा॥ बलिआदिमुषहिआसुर
समाजा॥ बिषज्वालनागमुषतेबिसेसा॥ अतिधूमजुकतनिकसीअसे
सा॥ तिहिजरेअसुरतनभएस्यामा॥ तेसुकजिवायेमंत्रतामा॥ परचंडज्व
मतमंदरप्रकासा॥ उछलहिपयोनिधिपयअकासा॥ ऊषचदिजुषस
तषैगोलमांऊ॥ पिरूधअरकजनुतरसांऊ॥ कतदृष्टिमनऊकंकूय
मांना॥ निरगतभएकरुनानिदाना॥ सुरअसुरकरतकीजसमांना॥ म
थिकरेषीरसागरमथाना॥ प्रगटेजुहलाहलप्रथमकाल॥ त्रैलो

नयेनीलकंठतबतैंनवैसा॥पुनिकढीमंथत
॥लाभतछो॥मूरकलसलयोसोईसुरअपछि॥पुनिनिकसिकनकघटअ
॥निअसुरनिसमूरि॥संग्रामउदितनयेउनयसथा॥स
सत्रजुधसंजुतनटसमथा॥निरयोषपरवासंघनादा॥बिपरीतबिरुधबादे
बिष्यादा॥तहाकरेसुरनिसमरनससोक॥तुमहोसहारस्वामीत्रिलोकआ
कासबांनिप्रभुकलोएहा॥मायाप्रपंचरचिहोंसदेहा॥योकहतमात्रकत्रीय
आज्ञा॥सुदरसरूपसोतासुतारा॥ दो न ब बा च॥ मिलिकलोतबेदानवस
माज॥करांबसतकोंनतुमकहाकाज॥ श्रीमोहनीबाच॥निसमेरोरबिमंड
लनिवास॥कंन्यास्वइंछबिहरतअकास॥त्रिलोकगमनमेरोस्वतंत्र॥महिदे
षतकोलतमारमंत्र॥फलनाएकरेपहलेप्रमांना॥मिलिकरेषीरसागरमथ
ना॥लालचबसद्वेसबलागलेहुदेषकुबिचारिनहीनीतियेहु॥उपजेदे
ऊकसिपबसआदा॥हनुदेवबिहतनाहिनबिबादा॥बंसजबएकबादेबि
रोध॥कुपुहमिआरकारनप्रबोध॥बिसवासकरकुमेरोबिचारि॥समन्न
गसबनिदेकुसंजारि॥ दो त ज॥ सुनिदेतपहाबोलेसहांसा॥तुमबरोह
महिउपजेबिस्वास॥कंस ज॥ कंमातबबोलीसानकूला॥ममबचनतंग
नहीकरकुमूला॥तोबरोतुमहिकुकैस्वतंत्र॥मेरैयहइंछामूलमंत्र॥क
बिक॥निरधारबचनकीनैसनेम॥प्रगटेबिस्वासहुकुयासप्रेमा॥मोहनी॥
तबकहेमोहनीबचनतासा॥दोऊकलसदेकुउपजेबिस्वास॥कबिकबाच
॥असुरनिदयेदोउकलसआगा॥सोईसुराअमृतपूरितसुनाग॥जहांसरे
काजमोहनीजांनि॥मृतकाकनकघटलयेमांनि॥मोहनीरूपअद्भुतमु
रारि॥सुरहेतदेतमनमोहकारि॥मुषदेषिअसुरभएमोहलीना॥तंथ
केकलहपुनिप्रनिसकीना॥ मो ह नी॥ अमृतबिभागकुकरतआज
थितथानहोकुदोऊसमाज॥कबिक॥भएअसुरनिनपंकतिप्रमांना॥
गतमोहमनकुप्रतिमापषांना॥सबकीयेबिधसमायासमथा॥सुरलेहि
सुधामदेतसथा॥इकराहनामअसुरअमांना॥हरिकपटतिमोतिहिंगि
धपांना॥सुररूपकरेतिहिसुरसमांना॥थितभयेदेवपंकतिसुथांना॥जबपी
योराहअमृतसुजांनि॥मिलिदयेसोधससिसूरमानि॥प्रभुअसुरजानि
कीनेप्रहारा॥सिरछेदिचक्रअनदिष्टसारा॥तबदेतजीयेकैषंकदोश॥सि
रभयोराहधडकेतसोश॥पैमस्वोनहीअमृतप्रभाउ॥भयोसूरचंद्रसो
बैरभाव॥सुरअसुरमुधासबपांनसंगा॥अभिलाषपूरिरसरतरंग॥सा
गरमथानफिरिकरतसोश॥हितआपआपउनमतहोश॥सुरभएप्रब

लपट्ट अमरपाश। धनरतन लेहि अमृत निधकाश। निकसे पिनाक ससि सिवनि
हारि। सोई धनुष तिलक लीने संवारि। श्रीपंकज कौस्तुभ मनि समेत। हरि
धरतन्तये प्राचीन हेत। आरू पुनि आयुध जीय आरि। उरबामपानि अंगध
रि अनारि। मातंग तुरंग मधेनु कांम। लहरंत धनंतरि बैद तांम। षटरतन
हये इंद्र हि बिसेष। इंद्रासन नृपति लोक असेष। पुनि निकसे बाडवप्रलयस
पा। यह दैव चरित माया अनूपा। नुवगगलधर हि बाडवनयांन। प्रजलहि
ज्वालजल अप्रमांन। सुरअसुर गिरा प्रति प्रनितकीना। कहधर हि बिष
म बाडवनवीन। सरस्वती बाच। बांनी सुदयाउ तर बिचारि। सुकवे
कि पय निधि मंथ करि। सब लसकि उदधि महधस्यो सोय। कृतकरम देव
मेटै न कोय। प्रजलहि ज्वाल तप अधिक जंत। उरउदधि ताप बाढे अनंत।
तब उदधि गिरा प्रति प्रनितकीना। नहीं सहो पडत बाडवनवीन। बिधि
सुता प्रसन्न ह्वै बिचारि। दीय सागरसु हकुठ लसुरारि। इहि मध्य
गजल जीव आश। सोई तहां तगदहै हैं सुनाश। सरस्वती आपकी दी
य सहास। हम तुम हि न हीऐक्त्र बास। कबित्त। छुट्यो पयो निधि
नयो छाछि। सब लये रतन सुर असुर साछि। उधरे रतन क्रीडा उदार।
हरि करे तहां कसग्रवतार। सो अमृत कछु उबरे जु सेष। लै चले इंद्र नि
जपुर बिसेष। असुर निइंद्र रोके अमांन। हम जीयत लेइ को अमृत आंन।
जाजुल सुरासुर सनै जुधा। कछु काल अमृत कारन सक्रुधा। असुरी बिरोचन सु
ता ऐक। अति कारउ पद्रव जुत अनेक। त्रीयदीरय जि ज्ञान मता सा। गजइंद्र
हि घाई करन आस। गजसक्र सहत तिहि असत जानि। प्रनुदुसह चक्र मेषि
सुपानि। उतमंग छिद्र परि सिंधु आश। सो करे जसम बाडवसु नाश। रन
अजिर बिरोचन परे राज। बलि कवर सहत दानव समाज। करि सक्र समर
असुर संघारि। लै गये सुधा सुरपुर संनारि। तिहि काल सुक्र आये रिषी
स। सुर हीन सजीवनि असीस। रन नृप मिन पायो सीस राज। परलोक बि
रोचन करे काज। सबल हे संग्राम गैरा। बलि कवर जीये पुनि असुर औ
र। मिलि सुक्र तबै असुर समांन। लै गये बलि हित बसुतल थांन। तब
हयो बलि हि लै तिलक छत्र। तिहि समय राज बलि करत तत्र। सुर असुर
गये निज धाम तांम। क्रीडा निवरत नई लिबध कांम। तहां कथे कमग्रकू
रमपुरांन। कृत सनुति सिध चारन समांन। इहि कारन कछु परूपकीन।
निज रतन चतुर दस लीय नवीन। प्रनुत्तये तबै जोतीप्रवेस। सुरलोक
बजे दुंदुभि बिसेस। ॥ दूहा ॥ आपुन कछु परूपकरि। नर हर प्रनु बि
सतार। अद्भुत माया छिपर। पय निधि मथ्यो अपार। ॥ कबित्त। चार

सिंधुप्रसिंध जपत जिहि किति निरंतर। कमठ पृष्ठि कठिन चमन कू
तकूट चक्रवर। उदधि रुगध उछलीय अनिल बल मिलत अचगल। जनु
मषेद करुना निवेद कारन दिअमंकल। अद्भुत चरित विक्रम अतुल।
कैत्रिसुक बिनरहर करीय। सबकाल बिजय पंजर सरन मागत चरन नि
सश्रीय।।१।। इति श्री कूरम अवतार चरित्र सपूरन।। जाप बारह ट चर
हरदास सेन बिरचित।। अथ श्री महामछ अवतार बरनन।। कबि सबाच।
।।दूहा।। नरहर प्रभु कारन निषल। सुनहु जथा क्रम संत। इथ राषीप्र
थमो। नयेमीन भगवंत।१।। द्रावडि देस नरेस जो। सत्यव्रत यह नाम।
दप्रनीत बिधान मय। सकल धरम कोयाम।२।। राजनीति जुत नियत व्रत।
ब्रह्म परायन बीर। छित्रि धरम मरजाद छिति। बिजई समर सधीर।। बिप्रु
बाच।। ब्रह्मा के बासुर प्रलय। समय निकट नयो आनि। नृपत पत्र बयि
सुहरित व। प्रभु चित चिंता मानि।४।। नावी बस ब्रह्मा प्रलय। कब हरेन
सोश। जगति परायन सत व्रत। सुकेयो प्रलय बस होइ।५।। जो कैहै मिथ्या स
कल। व्रत संजम तप दान। अरु उपहास जुत जगति के। निसचय होइ नि
हांन।६।। नावी मिथ्या कैन ही। जगति न निंदे कोश। अबतो यह करि बोउ
चित। नृपति हिरदा होश।७।। कारन करन समर्थ हरि। कीनो य हरि निर
धार। जिन ते दुःकरना हि कछु। बेद धरम बिबहार।८।। सरिता द्रावडि दे
स महा। कृतमाला तिहि नाम। करत नृपति तह नित सकृत। बिधि नीति
आम।९।। तहा कीय मंजन सत व्रत। नृपत पकरे सने हात रपन ज
लकर गत नयो। सफर स्वयं ह देह।१०।। अति सूछम तन कनक मय। पु
ष्ट अंजुलि गत तास। रहा रहा बार हो। बोलो सफर सत्रास।११।। बालस
बिलोकित हा। कैद्दयाल नरनाथ। ले मेलो जल पात्र सो।।हित क
रि अपने हाथ।१२।। मीन अनुक्रम बृध बस। नहि तिहि पात्र समात। तब बे
कलस सो।। तह पे बृध बिसाल।१३।। लिरा प्रो जल सरित मंह।
बिग्रह बढे बिसेस। कहु समात न सफर से।। बिसमय नयो नरेस।१४
राजो बाच।। नहि पराकृत जंतु यह। कछु कारन रहि और।
बिकल पन्न उपजत है कछु और।१५।। श्री मीन बाच।। बोले
नृपति सुनहु निरधार। अब बयि दिन सात वो। कैहै प्रलय सं
सार।१६।। अब नृप यह करि बो उचित। मीन देव कहि मर्म। बिस्व बीज रा
खो। औषध अन सथरम।१७।। नव कर हु उरबी निषल। ले बाध हु
मम श्रंग। मुनि समाज जुत बैठि तुम। सकल चराचर संग।१८।। कवि
सनेनृपति व्रत तब। मुक लोआहि। कृतमाला सरिता विषय

दीबोमीनप्रवाहि १६ नदीसंगमि लिसफरतिहि॥सागरकरेप्रवेस॥जोजनल
हसुअंगनथ्य॥बिअहबृथबिसेस॥२०॥मछदेवजोजोकहै॥सोईनृपकरे
प्रमान॥तावीप्रलयसुनादरौ जोईइछ्तभगवान॥२१॥छंदपद्धरी॥जबन
ईअवधिपूरनप्रमान॥तोप्रलयनीरबढ़ैतयान॥नृपकरीनावउरबीप
सिध्य॥सबचढ़ैचराचरअमरसिध्य॥औषधीअनबनत्रिनअपार॥सोबिस्व
बीजराषेसंसार॥इहांतयेअवनिजलबिंबआनि॥बिस्वंतरसोंकहिदीन
बानि॥तुमदीनबंधुदेवनिदयाल॥करतारकरुनाकरहाकृपाल॥तहांमहम
छअनमानअंग॥सुखलछिलछिजोजनजुअंग॥इहिसमयदयोप्रभुदर
सआइ॥सोईसफरकृपबेहनिसहाइ॥प्रभुदरसदेबिसंजुतसनेह॥देवी
सुसकतिनरीरजदेह॥अंगपजुदेवअहिसेषआइ॥सत्यवृतनृपतिक
रनसहाइ॥कृतसेषसरीरज्यबिसेष॥इकओरबाधिपृथ्वीअसेष॥अहिदे
वीयओरबिसतारअंग॥सोईलियोबाधिसुरसफरअंग॥सोईअंगबधअं
चीसुचाइ॥अवनीसप्रलयजलउपरआइ॥ब्रह्मप्रलयकारकेनहावात॥प
थीसकोलिसोंनलनिपात॥उरलोकत्रासउपजोअसेवा॥दीयअनयसम
यतिहिमछदेव॥प्रभुकहेसत्यवृतसोप्रकास॥हमकरहिबिबियिबारअ
बिलास॥निसतरीब्रहमतहाकरेसैन॥जलप्रलयतरंगनिबढ़ैकैन॥
अनमोघदेवरछाअमान॥प्रभुयरहिवितसोईक्षेप्रमान॥जलमलसुफ
नतयोएकजोग॥उपजोसंषासुरअयप्रयोग॥सुरसत्रुउपजिसोईपप
संग॥उहिमअनरथअघरूपअंग॥सुषनिद्रबसजहाब्रहमसाथ॥इहिवि
रआइआसुरअसाथ॥बिधिस्वासपीयेसंजुकतबेद॥नुबकमलनपाये
दुष्टतेद॥जबतईब्रहमरजनीबितीत॥बिधिप्रलयबीतिजगेबिनीत॥चि
तकरेप्रातसंध्याबिचार॥दिगमूढतएअंधासंसार॥उरमांऊबेदसोजत
असेस॥नोसुनिहृदयपावतनलेस॥बिधिकरमीनसमरनबिसास॥त
तकालआइप्रभुहरनत्रास॥धरिमछदेवतहाजोगध्यान॥लएनिगमस्व
ससंगलहेपान॥मीनबाचलेगएसंषआसुरनिलाज॥बहिमारिआन
ऊबेदआज॥तोधरमबिरोधीपापजीन॥लिबेदनयोजलजलबिलीन
कबिरा॥लेगएअसुरजबनिगमजांम॥धरनएधरमअवछिनताम॥सु
नियेनहोमजपमंत्रजग॥वथेदुषितदेवपावहिनजग॥प्रतिपालधरम
हिबाधिदेवा॥इहिसमयमीनकोपेअजेव॥जलथलहलीनजबमीनज
ग॥प्रभुधरचेसंषआसुरजगाइ॥कछुकालकरेकीनसजुधा॥करुनांबू
तनएमीनक्रुध॥तबमारेसंषासुरपछारि॥सबिसेषबेदलीनेसंजा
रि॥सोकरेप्रगटलेनूनिकेत॥सुनिगमबाचऔषधसमेत॥१सं

प्रश्न॥ दोहा॥ संभक सौनव बिष्णु सो॥ जेहि हो क्षेमीना॥ यह गति कर कृदम्
तग्रब॥ रक्ष चरन आधीना॥१॥ श्रीमानउ॥ तव गतनी रन्ह बाहमुहि॥ सेव हिस
थसु जांना॥ मनसा बाचा नि कु॥ इ जावहे प्रमाना॥२॥ बेदपुराने बिमल
जल॥ अबुधि निधि दीय आनि॥ पीयेन उदरग्रसगमल॥ बिप्रनि करी गला
नि॥३॥ चवसुषसोजल चारन हि॥ दयाजुकतलेदीन॥ प्रीतिसुहृतहा पांन
कीय॥ बादत बुधिप्रबीन॥४॥ छैदप धरी॥ ब्रह्मा हिपठाये बेदअंनि॥ मनु
मूढ बालअध्ययनमांनि॥ प्रथुक थोतहमछो पुरनो॥ सुपठाइ ब्रह्मपुत्रनि
प्रमांनि॥ बिधि बिनयकरे सनकादिसाथ॥ दुषदीननिवारे दयानाथ॥ सबक
लसबनि तुम हो समांना॥ नवन्नतहेतकरुना निदाना॥ त्वसथान ब्रह्मसनक
दिसंगा॥ सुप्रसन गये गवतप्रसंग॥ करजोरि सप्रहृतप्रनितकीना॥ प्रभुदेहु
चरनसंगम प्रबीना॥ भगवानहेतकरिकहे नाहा॥ जगराजजोग नृपकरहु
जाहा॥ सुषराजकरहु मम प्रगटसंतत॥ अवतारचरितमहिमाअनंता॥ नृपत
बिलासकछुकालनेमा॥ पुनि मिलहु जोतिदेवीसप्रेमा॥ प्रभुपारसेषअप्पाप
साद॥ मदरपंतालगो अप्रमाद॥ सुरबजेदेवदुंदुभिअकासा॥ पुनि नईपुहुपब
रषाप्रकासा॥ इहिकारन नएमछावताराजगदीसकरनउधारपारा॥ दोहा॥
बेदसहाइकबिस्वहित॥ प्रभुअवतारप्रमान॥ अंतरध्यानअनगगनि॥ न
रेमीनभगवान॥५॥ इहिबिधिसुरसरूपहरि॥ कीनो ब्रह्मसहाइ॥ संष
सुरसो निअलो॥ आनेबेदछुडाइ॥२॥ समबृतकृतराजसुषा॥ पूरनअ
वधिसुपाइ॥ करनीजोगअभ्यासकरि॥ जोतिमिलेपुनिजाइ॥३॥ निगमह
तवरहरसुप्रभु॥ मछदेवमषमित्र॥ बिसदहेहबिवसाइजुता॥ चंचलअच
लचरित्र॥४॥ इतिश्रीमहामछाअवतारचरित्रसंपूरन॥ अरहटनर
हरदासेनबिरचितं॥ ॥अथश्रीनरसिंघअवतारबरननं॥ कबित्त
बाचा॥ दोहा॥ नरहरप्रभुनरहरिनिए॥ लीलाअगमअपार॥ सुषदाइकअनुक्रम
सहत॥ सुनहुजथाबिसतार॥१॥ छैदप धरी॥ हिरनाषिमरतइकअनुज
भ्रात॥ कहुबचे हिरनकसिपबिष्यात॥ सोनयो भूमिनवबैप्रतिष्ठा॥ सम
सचिनसुनइअसबंधूइष्ट॥ बसुधाप्रभुतपायो बिबेका॥ नवनयोताहि
राज्यानिषेका॥ बलवंतअसुरसाहसअसेषा॥ सुरसालधरनइंद्रादिधेष॥
तिहिप्रीयाकयाधूधरमबामा॥ त्रीयधारेगरभसुरतनयांमा॥ धतगरभन
येकछुदिनबितीत॥ नृपचलो होनतवजगतजीत॥ यहउपिजिग्यानआ
सुरअजेय॥ दिढकरे देहतपबलसुतेय॥ बिधिनिमतकरनबनतपबि
चारा॥ गो तिकसिराजतजिराजनारा॥ सबसुनहुसमंत्रीसुजांना॥ सबक
रतराजकारिजसयांना॥ नृपगयेसुमदराचलनिकेता॥ तहादेषिगोरजल

तरसमेता॥ बिधिसहतकरेतहातप बिचारा॥ धरिध्यानरहतभयेनिराधारा॥ तुव
चरनउरधरतुज मिलतनेता॥ जकभयेदेहजागरतचेता॥ तपकरेउग्रधरिरेकध्या
ना॥ मनबाचकरमग्रहिब्रह्मग्यानायहगईकथासुरपुरग्रसेसा॥ सोभयोदुचि
तसुनिकेसुरेसा॥ सुभनगरहिरनकसिपसथाना॥ परचकरंदग्रायेप्रमानः
उरजारिसुनरग्रासुरसंघारि॥ सबलयेकादिहयगयसंभारि॥ प्रजलूटफ
रिनकारपटा॥ सुभरतनजिब्यलीनेसंघाटा॥ पुनियहीकयाधूप्रीयाराजा॥
सुभनगरभवतीबिचत्रीयसमाजा॥ लैचलेकयाधुहिपकरिइंद्रातहामिलिबी
चनारदमुनिंद्रा॥ नाहंउ॥ सोरंहकरनारदसभेवा॥ इहिगरभपुत्रहेरतन
देवा॥ जयबिजयग्रसइहिगरभराजा॥ निसेषकरनग्रासुरसमाजा॥ प्रतिहार
बंसबधुपरिपुनीता॥ निरबंसहेतनिसचरग्रनीता॥ इंद्रबाचाबसुक
लोतबेनारदबिनीता॥ प्रतिपालकरहुरिषतुमपुनीता॥ कबिकालेगयेक
याधुहिमुनिनिकेता॥ हितकरतताससुत्रिकाहेता॥ ग्यानोपदेसरिषिकरहि
निसा॥ सिसुयहेगरभग्रंतरसुचिता॥ कबितानहीचकेनिजधरम कि
हकुजरसमलेबो॥ हानिबृथनहीनेह ब्रह्ममयबिस्वसपेषो॥ उरउप
जेग्रघेनबारहरिजोतिप्रकासो॥ कामक्रोधमदमोहलोभनिसातत
जिनासो॥ लघुग्रापसबनिगुरकरिलिनो॥ संततसतसंगतिग्रहो॥ सुनिपु
त्रिकरनकारनलिबे- ब्रह्मग्यानानारदकहो॥ ॥ छंदपधरी॥ सोरहे
नहीउरजनलेसा॥ सिसुजयेब्रह्मग्यानीसुदेसा॥ त्रीयगरभसपूरन
भयेतामा॥ पुहचाहदरिषिराजधामा॥ सो ह ग॥ मातरसोनलेस
नारदकेउपदेसकै॥ उपजीनगतिग्रसेसा॥ गरभब्रह्मग्यानीभयो
॥ ह॥ गरभमोषसतबरषभो॥ प्रीग्रवधिप्रकासा॥ परमभगव
तपुत्रभो॥ जिहिहरिकोबिसवासा॥ ॥ छंदपधरी॥ तिहिपुत्रनाम
प्रहलादहीना॥ ब्रपुबदेनित्यपोरुषनवीना॥ सोरहेरूपग्रंतरसमाइ
बिचदयेगरभनारदबताइ॥ संसारसकलग्रंधारधामा॥ मनिदीपप्र
गटइकरामनामा॥ मनजानियहेहरिनाममोहा॥ छलछद्मतासलागे
नछोहा॥ बनिकरेकबरनिजपुरबिहारा॥ सिसुगनेसकलमिथ्या
संसारा॥ कछुकालभयेनपतपकरंता॥ सुधिकरीब्रह्मनिजजोनिसं
ता॥ ग्रारूढहंसबियिग्रारग्रापा॥ बनिरहेसीततपजलबियापा॥ प
लरूधिरहीबहायेप्रचारि॥ दलदरभनिकसिग्रंगनिबिदारि॥ ग्रा
वासकीनासिरसकुनिग्राश॥ सोरहेजीवग्रसथनिसमाश॥ इहिदेस

मुनिरषेतपअषा॥करउरधरहेमनुकाउदेमा॥नरिब्रह्मकमंडलसलितन
रि॥छिरकेसरीरपत्तरुधिरपूरि॥नपजगेजोगनिवारि॥चढिहिष्टब्रह्मतह
बदनचारि॥जग्योपवीतचवबेदबांनि॥आरूढहंसजलपत्रपानि॥आ
नदउदितनृपकरीटकाअतिलाषदेवपूरेअनेक॥बिधिबाच॥बिधिक
हतभयेनृपकोबिचार॥जिहिहेतसधेबनजोगसार॥देमउ॥इकआहि
चित्रचितअमान॥तिहिहेतधस्योमेब्रह्मध्यांन॥निजनाममोहितम
दरसदीन॥उरबाचअहि करताप्रबीन॥बिधिबाच॥जिहिकाजआनि
बनदमोदेह॥फलहुनृपतिसोनि संदेह॥देमबाच॥मोहिहे
तरूपजोबिधिकृपाल॥मागोसलहोंबांछनमराल॥जोदीजेबाचा
जलजजात॥सबिसेषकरोबिनतीसुतात॥कबिरु॥सिवब्रह्मबि
ष्णुबाचसुदीन॥करजोरिदेमतबप्रनितकीन॥हिरनकसपा॥जुध
जीतिसकेमोसेरनदेव॥ससारसकलमुहिकरेसेव॥निसिदिवसम
रोनहीदयानाथ॥धरअगनमेल्हेअरिनहाथ॥मोहिनिदैनससत्र
असत्रअगनरअसुरजुरेमोसोनजंग॥सुनरथीअस्वयजचढि
समूरा॥मोहिअगयावधालेनसरा॥मोहिअतमिलेनहीछाहयांम॥स
ग्याअरूढनहीबिधनताम॥आकासधरनिगिरजलनअंत॥मोहेंमो
हिबरपरमसंत॥व्यापेनअंतकरबरनचारि॥पसुपषिसकिनसनमुष
निहारि॥बिधिबाच॥बिधितथाअसतकहिबदनचारि॥आरोहिह
सनिजपुरपधारि॥कबिरु॥तबदेतगयोनिजराजधाना॥सुतमिलेप
आनिदलबलसमांना॥उरधारिलयेतवकवरराजा॥सबनगरबजे
बाजिंत्रसमाजा॥उछाहभयेआसुरअवासा॥नृत्यादिगीतनानाबि
लासा॥प्रहलादसहतनवग्रहपधारि॥नोछावरिकीनीअसुरनारि
॥महासुनीइंद्रकीनीअनीत॥उरबढेक्रोधआसुरअनीत॥तिहिरोष
करेधरमावछीना॥येतपेअसुरनुवपापनीना॥नवषंडमंडतिहिनर
हिआनि॥करजोरिरहतनृपसंकमांनि॥तहांहेमदानमषमिदेता
मासुरअसरहतभयेदुषदामा॥ओबिप्रतिलकजग्योपवीतआपमा
नहोतनुलसीअनीता॥सेवानदेवआतिथसाध॥इहिभांतिभयेध
रधरमबाध॥फलरीघंटसुनियेनकांना॥द्विजदेवदुषितअतिदी
नमानाभूलईपिपपीउतसपूरा॥निरबीजगईआसितअकूरा॥छिति
नईतिबेसारारक्तताअवतारधरनचाहेअनंता॥इहिभांतिहिरन

कासिपनृपाल। सोकरैराजसुरराजसाल। इहिकरमकालकछुनोअतीत अकु
रपापनिजकृतअनीत। उपजेकुबुधिआसुरअसाधि। सुतदेषिओरप्रहलादस
धा। इकसमयराजमनचितकीन। पसुपारन्दपतिबिद्याबिहीन। असुरादिपुरो
हितमन्त्रिअषेक। सुतसुक्रउन्नयसरकारुसेक। राजोबाच। प्रहजानिबोलि
पुरनिरबिष्पाद। प्रसलादकरुबिद्याप्रसाद। आसुरीधरमबिद्याउदार।
सोपढुजननसंसुतकुमार। कबिरुवाच। कृतचरित्रितकुंकमअषितन्त
। लेचलेकबरकहंचदसाला। उपधानअरुनआवरनअनूपा। आरोहहिर
दरबितिभरुपा। निजलिसुनिगयेलेगुरनिकेता। त्रीयगानदानमंगलसमे
ता। प्रहलादसहतचटासमाजा। चटसालचयेप्रेमसकाजा। जबनयेकुवरए
स्वरनलीन। निप्रतिअसेषआसिषसुदीन। कीयगानदानमंगलबिधान। स
रदपजिगनपतिसमान। ऊंनमोसिधअहरअनादि। प्रहलादपढतनयेनि
रबिष्पाद। लषिदयेजथाक्रमसिसुनिअंक। सोपढतसबेचटानिसंक। तह
बेगिसंकमकीसुनाय। बिचधरेजुअषरसेनबनाय। करछुटीवासअसुर
कुमारा। सबपढतआपसंयासुदारा। गुरगम्पसबनिनयअषिरपीन।
प्रहलादकरीसुधिगरनथीन। उपदेसकरेषिगरनवास। सोईगानप
रमबिद्याप्रकास। जोकलोकुसोनारदरिषीस। सोईनामपढेपढबेदि
सीस। बिचगरनदईनारदबताय। सोईहृदयरहीमूरतिसमाय। कर
चारिसुनगतनसयनसांमा। सबिलासनेत्रबेजतिदामा। संषचक्रगदानि
रजसनाल। आजानभुजाकंधरबिसाल। नामंगरमाउरभनिबिकासा। सु
नपीतबसनरथगरुडजासा। यहदसानरीसिसुउरउदोता। मनहाथन
ऐसोमुनिनहोता। बाचासुकरमसननिरबिष्पाद। उररंगेस्यामअद्वैतब
ह्म। करिलिषेकवरहरिहरिसुअंक। सुनध्यानपढेहरिहरिनिसंक। प्रह
लाद। सुनसषापढहुहरिहरिसंनारि। हरिपढतनआवेजनमहारि।
हरिनामसुनगनैकासंसारा। हरिपढहुहोहुनवजलयिपारा। हरिनं
मत्री तिलावहुसमीता। हरिआहिअषिलमाथाअजीत। कबिरु।
सुननामकबरचटासमेता। हरिहरिजुपढेलिषिपरमहेत। सुनिन
यसंकमसकासरक्रुध। बिकरालदंतबांनबिरुध। बेबरनदेहबेगंध
तासा। अरकतनेत्रउतफुलनासा। करकसकुचावजाषाकराल। जिह्वाप्र
लंबरजतिलकभाल। फरकतअधरजलअमसरीर। कृतउरधरोमअंत
रअधीर। कुलगरुअसुरवेमहाकाय। जाजुलसनयेकोनिकटजाय। च

रिमकापानिदेरेकुचाल॥नयनीतनयेनुवगिरेबाला॥तिहिचरमकरेकवरहिप्रहा
रा॥फिरिलगीताहिन्हलेसंसारा॥तिहिचोरनएबिहवंलद्विजाता॥करिसबसथचि
तनोकरतबाता॥गुरबाचकुलदेतयरमनाहिनकुमारा॥यहकवनपाठक
ठिकुचारा॥हरिनामकहेइहिबंसकेशानपहलेताहिनिसकहोशा॥हरनामकहुब
तहेमुरारि॥सुरहेतकेरकआसुरसंघारि॥पितामहतेरेछितीसा॥सबमारिनयो
हिंआपईसा॥हरिनामलेइकोउग्रसअग्पान॥तेकवरराजयतननिदाना॥त
वपिताआक्रयजअजेया॥हिरनाहनामबलअप्रमेया॥तिहिधरीहमिस
मपयाला॥आपंकलेससुरपतिहिसाला॥हरिहतेताहिमसकासमान॥
कलेतनामताकोअग्पान॥नपहसोचहतिहिबयरआता॥तेहेजुकरेवह
मातताता॥मलतीयतबसेजो॥निरबिषादाधिकतासजनमयहपरमबाद॥
कहा॥जाकहंअरिबिसमरनहोशजोनहिअरिरसाला॥हिजनेप्रहलादसुनि
हथानयोअमकाला॥१॥छंदपधरी॥सुनसामदामअरुचेदंडगुरदई
कवरसिष्याअबंकाय॥पाग्पदोलकवरआजा॥पुनिपदतसुन्योकहिदे
राजा॥द्विजदयोबोधहितचितबदाता॥प्रहलादनयोगजसोचप्रनाथ॥
गजमंजनकृतगजनसंसारि॥छंनबीचपरेपुनिमिलेछारा॥नयलेय
ओबिद्विगलाजलीना॥नयमिलहिजाइपुतरीप्रबीना॥इहिनातिकवरचि
तमिलिअनंता॥यपपुमहिनीरनीरहिमिलंत॥चटाउ॥सबबेद्विजाइचट
सथांना॥प्रहलादकेपूछतनिदाना॥कहिदेनकहतगुरनपहिबेदा॥नयहे
तसुननकंपतसुगाता॥जोकहुजिहिनगुरसुतासिसाता॥जिहिपढे
होइसुप्रसनराशा॥प्रहलादउजाकोरांका॥हिसुप्रसनकांमा॥सुप्रसन
करुजिहिरामनामा॥जिहिरोमकृपब्रह्मंडबासा॥त्रुवहंगहोतनयपु
रबिनासा॥ब्रह्मादिकरतजिहिचरनसेवा॥दिगसूरचंद्रदेवाधिदेवा॥
यहजानिपढतहमरामनामा॥करुनानिधानसबसरहिकामा॥कबेक
रटउगीएकधुनिरामराम॥परजलेसुनतगुरहृदयताम॥किलकारिउ
ठिसंकाकुचीता॥तुवगिरेसबेबालकसनीता॥सानंदपढतप्रहलादस
रा॥गुरत्रासचितआनेंनमूरा॥गुरबाचकरिकोपसंकबोलेकराल॥
तेसबेबिगरेअसुरबाला॥रिपुनामलेतकतबारबारा॥यहछांडिकुबि
द्याकुलकुगार॥कबिकाय्हकहतमात्रसंकासुचारा॥नरनारिमिले
सतजूथआघ॥आयेनुपुरआसुरनीता॥आसुरीसबेवेसीअनी
ता॥सोकहतगुरहिसिसुमारिमारि॥यहमूढलगावतबंसगारि॥
सोकहतचलेनरनारितामि॥छंगएसंकमरकासुधामा॥सबिष्

देखि आये सुबिप्र॥ सब मिली आनि जुवती सछिप्र॥ निसास अश्रु धारा जुनैन
योदे बिसेस मरका कुचैन॥ सब जरति हैं जुवती सत्रास॥ पुनि रही घेरि छल
हिन पास॥ जुवती जाचा॥ कछु तयेऽ अजऽ अति राजऽ क्रुध॥ बढ़ि परे किधु क
रु बिरुध॥ अपंमान भये किधु राजद्वार॥ हैं फिरे किधु ति हि दुष दुष्पार॥
किधु लई हृत सकर्छ्ह गाय॥ द्विज जुवति दुबिन प्रछति सुनाय॥ द्विज बा
च॥ कहा कहै कछु कहि बैन जोग॥ उरऽ अंतर तल सुनि अप्रयोग॥ बिपरी
त नई इक आनि बाल॥ सो हम नहीं येना हिन सभात॥ सत्री बाच॥ पै अंतक
हा बनि है कृपाल॥ सहि जात न हिन हम परम साल॥ द्विज बाच॥ फल लप
न्य हि इक बहुत काल॥ पग्यो सुपद बन बरसाल॥ कुल असुर उबिन
बिद्या कुमार॥ सब ता हि पिद बन कहो सार॥ सोलह ऐ कहै बार संथ
पुनि गह्यो कवर बिपरीत पंथ॥ यह सुनै राज जो अनाचार॥ करि हैं न
संकहति हैं कुमार॥ नव तब कछु यह बुधि बियाप॥ अनकहे संकक
हियेन पाप॥ सिसु तेरा अहम अनसहेस॥ पद छेद करत सम सुकर
तेस॥ यह नई आनि चिंता असेस॥ कछु बनत ना हि कारन बिसेस॥ सो
असो बेक वहि नसे सार॥ कै उपजि कछु कुल कुमार॥ कबि रुबच॥
यह सुनत बिप्र बिनता अपार॥ चरत लगे जहान्प कुमार॥ द्विज
त्री या मिली सब पास सोध॥ प्रहलाद करत सिष्या प्रबोध॥ सत्री उ
कहि हैं न कहत गुरन्प हि सेद॥ ति हि हो तहम हि सु नि परम षेद॥
न्प हतै नो हि संदेह नाहि॥ यह हेऽ प्रलय पुनि कहा जाहि॥ मुषक व
न हि षावहि तब हि रानि॥ अवछा कि पुत्र बिपरीत बानि॥ प्रहलाद॥
सब सुन कुमात तुम हृदय सुध॥ बिपरीत बानि जि हि हरि बिरुध॥ सो
हि यहै बानि उधार मूल॥ सो तजो नहीं है प्रान तूल॥ प्रह बानि रहु पेज
कुमान॥ निज बुधि यहै मेरै निदान॥ सत्री उ॥ सुर नाम ले तुम बार
बार॥ ति हि काज कहा तुम्हरे कुमार॥ सुर असुर जबै प्रति जुध होय॥ सुर
बिजय पराजय असुर सोय॥ सुर पुष्ट हो हि भष तग पाय॥ सब बाधक
रे निसेष राय॥ स्यदत अबै जो ब्रह्म पान॥ जिम पा धिकार ता मह
निदान॥ तुम पढ़ु असुर बिद्या प्रबीन॥ स्नु हो हि ध सुर पर हि षी
ना॥ आगम सुनि गमजल थल अकास॥ ता लग मन सीष कु प्रक
सा॥ छल बल रु धनु र बिद्या प्रबीन॥ बस करन जु धमाया नवीन॥

परकाशमनसीबकुप्रमांना॥कुलबादपुत्रपढ़ियेसुजाना॥यिसवेपदकुबि
द्याअषंका॥सुरराजनवावकुलेकुरंका॥प्रहलादअप्रहलादबोलितबनग
तमोरा॥हमतुमरहिनहिनिबकबादगेरा॥मोहिलगतसुबिद्यायेहमारजि
हिपढ़ेबंसनहीनरकजाशा॥मोहिसबेअबिद्याअवरसूका॥अहिकुजोन
रकलोगूरू॥छंदपधरी॥जेरंगेसामसुंदरसुरंगा॥फिरिचढ़तनहीति
हिओनरंगा॥त्रीयजरकहतवत्रीयनिकेत॥प्रहलादनछाकतब्रह्म
हिता॥गुरपुत्रसंकमरकागहीरा॥पुनिआनिबोलिअंतरअधीरा॥द्विजबाच
मतदेकुकवरअबदेसमोहि॥करतारनयोप्रतिकूलतोहि॥हमकहत
नपहिअपकरराया॥बिनुकहेनिकासेदेसराया॥प्रहलादउतुमकह
कुराजपरजहिनिसका॥मैपढ़ेउनयअद्वैतअंका॥सोतजोनहीजोतजे
प्रांना॥यहसुनकुसंकमरकानिदाना॥द्विजबाच॥कुंडली॥मूढ़षिज
बकुराजमति॥जूजेपैबलवंता॥पाकेबलिबेंत्रलता॥तेरोकेहौअंता॥
तेरोकेबोअंता॥द्वारवाकेगजगाजे॥हेसकोसरथबाजि॥सुवटबकुसेना
साजे॥अरुबनितासंतजूथदेकुसुरपुरकेआवे॥दुष्टअसुरजिहिदास
सूदमततहिबिजावे॥कुवरबाच॥छंदनुजंगी॥कहामत्तमातंग
जोद्वारगाजे॥बनेहेमजंजीरयूटाबिराजे॥मुदमोषदंतावलीतुलसोहै
नयेकलसंगीजुहंगी॥बिमोहौसतमेघरेचलेआपूरंगे॥पुदलाहजं
जीरअेवेअतंगे॥हथायेबिनारामसंदेहनांही॥सबेनष्टजेहेमनुअ
नछांही॥अथहयबर्न॥कहाबाजिबेगीबंधेबाजिसाला॥जरजीनरा
जेमनीकंगमाला॥महातेजताजीसुषंबागसाचे॥चढ़ेपीछेथितंथाल
नाचे॥धराबायुधावेतरछेतरकेंमनुफालतगूलसाषाफरकेंसबेमृतक
पिकूमिसमेहौजगंनाथहोषीनयेअंतजेहै॥अथसिंहन॥कहासिंह
नंसंगसोनायमांनाजरेहेमहीरनगंमुकतमानाॐरसंरसमपटपूरेप्रमा
नेसबेरामहीनंसुमिथ्याबषानाकहासूरसामंतसेवासयानेसजेदे
नेसबेरामहीनंसुमिथ्याबषानाकहाकारनीसंनबाजेबधाये॥जिनेगरजतेमयल
हसनथसायुधसानेकहाकारनीसंनबाजेबधाये॥जिनेगरजतेमयल
जालजाये॥कहाआतपत्रंजलूरंसमानाॐसमंरुसोनायतडितंतजानां
कहासिंयपीगंजुस्वरनंबनाये॥कहाचामरंसेतचकुयांचलाये॥कहाको
सधानंयनंअप्रमानाबनेरसबासंउदेअसतमांनाकहासेजसंभासुष
नोगसाजे॥हथागीतनृत्यारिनानाबिराजे॥कहामंदिरंसप्तथानं
अवासे॥बिनारामनामेंसबेसूनिबासे॥कहाकृतमंत्रीचलेचितलीनें॥
कहासेनचतुरंगसंगप्रबीनें॥कहाकोटदुरंगअगंजीतराजे॥सबेरंअक
ग्रहजबूरसाजे॥जरेद्वारकपाटसारंजजीरा॥निनेचितषाईतरीनिस

नीरां कहा रूपरूपं सतं सब सोहैं। कहा दास षवास से वा बिमोहैं। कहा बरन
आस्रो प्रजा बाचकारी॥ कहा परन हाटबां निजवारी॥ कहा रूल लालारमेथा
न थानां॥ हथा लहकोरी द्वीपं छजानां॥ कहा नामग्रामीन कोलेबिराजी॥ समं हेम
मुकताजु अंगार साजी॥ कहा दुरगमं अडिउतंग थानां॥ समं बारनं ग्राम जंतु न
सानां॥ कहा रूप मिआरम्ब हेरं बनायें॥ सुगं सावजं नेरुआ भेटआयें॥ सरं सारसं अं
बरं बेजफूलें॥ कहा गुंजपुंजे रसं रंगफूलें॥ कहा तोयतेजं नदीपवानां॥ महामछ
कछं रंपोतमानां॥ कहा सागरं औरकिलीकयानां॥ महा आहुआवरतजंतु व
यानां॥ कहा षानि बेरागरं बोरिकाढ़ें॥ नगं लालहीरामनीमोलबाढ़ें॥ कहा बा
रिका हुस्सोनेसुहायें॥ रहैं निसफूलेफूलेचितलाये॥ समं नंगसोरंपिकं
मोररोरां॥ हुतं निरुरसीतछायासजोरां॥ कहा कूपबापी सुदारं संवारी॥ हिमं
तारकूलं नरेनीरनारी॥ कहा छैलछाकेरमेबारनारी॥ बिलसेरसेसेजरिब्मा
धकारी॥ कहा प्रेमवंनीप्रीयाजूथपायें॥ रसेरूपकीरा सिषेतेबिलायें॥ प्री
मसुगंधमंधासप्रेमानां॥ समं बेउ सालूषनंमोहमानां॥ निजं नार
कग्रहुलोगंग्रयानां॥ अकं बासलोगंधरूपं समानां॥ सतं जूथदासं सुनेसे
बसाजो॥ बनेअंबअंबरसेबाबिराजो॥ कहा आपरीस्वर्यकीनेकहायो॥ ब
हीयोंबकरीकहा बिरहपायें॥ कहा जारं नाद्रोंकरेदानहीनों॥ कहा सत्रु
कोनामसा आपत्रे लोककोंराजकीनों॥ बिना नगतियेतेअनथेबषानें॥
सुहैकनारायनंसमानां॥ सबेपाग्रूगेपदेतजसंकु॥ यहे नरककोमूल
हेबोअंकु॥ उर बाधाकहाबंस बिद्यातजेतेबकारी॥ कहा रामनामेरटेम
नपारी॥ कहा बापआपातजेदुषहीनों॥ कहा सत्रुकोनामसानंदलीनों॥ क
हा सत्रुसेनाकीयेधरमसानों॥ कहा आपनोधरमसोहीनजानों॥ कहा सत्रु
सोषीगिनेमित्ररोषी॥ कहा धरमबाधीनयेपापपोषी॥ कहा बापअपमान
अकरामसानें॥ कहा धूरिपीतेकहाछारछानें॥ प्रहलाद उ॥ कहा मूढसंक
हिजातीकहायें॥ छकरमानयेयेनिसंध्याअन्हायें॥ कहा बेदअध्ययन
उपवीतधारीसतंपुसतकंपाखरीकासवारी॥ कहा छारदेषेकरेमूढमोही॥ जु
थातावेकेहेसबेसिधतोही॥ यहे बालपानीसुतेअपजानें॥ बिनबंसबारे
नकतेबषानें॥ कहा सेतमाथेकहाबालदेही॥ कहा बापदेषीकरामेसने
ही॥ महामूढनोबूधसोप्रेतलेषें॥ नयोबालपानीवहेबूधदेषें॥ जुते
पादउतानबूधनपालें॥ धुवंपंचबरषंकुतेदेहबालें॥ कहोकोनबूझे
तिसेकोनिदानें॥ हहाप्रननीकोकियुबेबषानें॥ संकोबाचा॥ हु
॥ हासनयोतसत्रुके॥ मेरिपिताकोकांनि॥ जोयातेदुषऊपजे॥ मे
रोदोषनमानि॥ कबि कुबाच॥ गुरसुतयोकहियहगये उरअं

बनारीयेकंत्रहे:प्रछतिगतिप्रहलाद॥ द्विजबाचकुंकल
॥स्वानपूंछकीबक्रता॥अरुप्रहलादकोसाख॥कोटिजतनकरिकहियेके
॥नेंकनतजतसुभाव॥वासमरुपोरबनारी॥ पुनिजुरही
षटमास॥निकसिबांकीबकियारी॥जुकतिअनेकनिहसकलो॥सोसबर्म
मोंतुछ:अपनोंतबनछांडही॥जैसेस्वानकीपुंछ॥॥छंदपधरी॥तबसुक्र
बंसकीजेकलत्र॥सबजातनसीप्रहलादजत्र॥पुनिकवरआनियेस्यो
सुनाय॥तिकहनलगीबातेबनाय॥ सत्रीउ॥मतपुत्रजरावेजरेदेहाम
तरामनामसुषकेरिलेहु॥तुरआसकरेसबबंसआज॥तोहिदेषिप्रहू
लितहोइराज॥कहोकुराजथंनकुमारा॥सुरराजसाल सुरपुरउजार
सुरहोहिषीनआसुरसहाय॥अबकरहुकवरसोपेउपाय॥जबनयोज
नमतेरोकुमार॥नपअहबजेसांनरथार॥सुप्रसनरहेतोसुजनतात॥सुष
लोंनउतारेरेविमात॥दुषतेरेहमकोहोइदुःष॥सुषहोहितोहितबहमहि
सुष॥जाजुलतेजनृपअतिसबंक॥सोप्रानहतनहीकरतसंक॥पितब
चनपुत्रजोकरेनेग॥पित्रबधकनामपावेअनेग॥पितमातपुत्रजोदेईसु
षा॥तेदेहधनकहियेबिदुःषा॥सुषहोइनृपतिपरिवारसबा॥सोपाउपट
हुतुमकवरअब॥नवषंडहुंहुमांगहुनवाय॥सुरराजसुरनिसंकामन
य॥कीजेबिबाहमनमोदकारि॥सुरअसुरनागकंन्यासंवारि॥बिनताबि
बाहिकीजेबिलास॥सोगंधसेजउतमअवास॥प्रतिदिवसकरहुनवरस
प्रचार॥बिनताअनेकमुगधाबिहार॥यहबचनकहेवीयबारबार॥करअ
वनमूदिवैगेकुमार॥प्रहलादउ॥ इकरामनामकारनउधार॥बिनु
नगतिहथाजीतबसंसार॥यहजानिपरतमोहिजुगअंधार॥बिषीया
हिकआसीसुषबिकरा॥जगमिथ्याहेत्रयलोकराज॥सबंधआहिसं
पतिसमाज॥कहांबेगेसियासनबनाय॥सिरछत्रकहांचामरचला
य॥कहांनुवनबनयेसंप्रथांन॥सुषसेजकहांसोगंधसमांन॥कहां
पुरुषप्रीतिजिहिनसहेत॥सतपुत्रकहांजोजससमेत॥कहांआपवनि
अरुत्रीयबनाय॥सुंदरसरूपमुगधासुनाय॥सोगंधकहांषोडसस
गार॥बहुरंगबसनपहरेसुदार॥कहांअंजनमंजनतिलकतेल॥ता
बूलकहांरतिरंगषेल॥पटनूपरकांसबहारमांन॥छुद्रघंटिकहांरे
तननिसमांन॥नगजटितकहांकरबलयनेक॥अरुकहांकेवनूषन
अनेक॥अतकहांहेमकुंडलसुजाय॥बहुमुत्रिनासमुकताबनाय
उपमाकहांषंजननेनमीन॥करनालकहांरुचितिलकीन॥लय

छुटी कहा चचल सुदेसा। सुनसरलक हा जो पासकेसा। आवरन कहा पर बा
सअंग। मातंग चाल अंगनि बिलंग। इहि रूपक हा जो प्रीय रिझाए। सब आहि
अंतर मासमाए। त्रीय आहि सबै निंदत सरूपा। परि कोन कहै निहि मोहकू
पा। त्रीय रूप रसे बास वछतीसा। लए रंध्र सहस तन आपसीसा। पुनि हेतब्र
हमर हि रूप लीना। जो पंचम मसतक आपन लीना। इक कहे त्रिसंकर युबस
राजा। इहि मोहन ये सब सृष्टि काजा। प्रो लस तिहि अति बल प्रबीना। दिग
दीष बस सब नास कीना। सत्री बाचा। हूहा। तो कहसु ऊतत्रय हा की
जेक हा कुमारा। जो पे त्रीय निंदत सहा। क्यो आहत संसारा॥ तुम सुछनि
ही उपजे। बिनाग रस धूत मतो। यह उपदेसन जब कस्यो। तब ब्या लौन
बताता॥ प्रह्लाद बाचा। छंद पधरी॥ गुरबधू करत मि ष्या बिबादु
न कहु कबोध मधुरी सवादु। जो सुनो कुतो मैं गरब गपाना। तिहि बिना नस
ऊतमो हि आना। जो जननि कहो नारद प्रकासा। सो तत्र गसो मैं गरब वास।
मत औरत्री यातत हि बिरोध। सो लेकु नेक मम जननि सोध। गहरा तन हि
गज उदर बासा। जो फल कपिथ निकसत प्रकासा। सो न हि नर हत त्रीय उ
दर पाना। सुर गरुदेय सिष्या सुजाना। हम तुम हि निहि नब कबाद गोर। हम
नये अंध सकै न ओर। कुव रो बाचा। कुकर सु को हा कहु जो। चाबत हे स्व
छंद। तासु कहै को रति हि। चलेसु थिर के इंद। चलेसु थिर के इंद असथि
लो कु लपटानो। ताक हे चारत स्वान लीये येकांत सयानो। सो ही कां
मी पुरुष प्रेम जुत रहत बिषय परा। न हि आयातन हीत जत हा कु सुके
जो कुकर॥ प्रह्लादो बाचा। छंद पधरी॥ जो तुम जुवती रूप बषा
नो। तिन को मो प हसुन कु निदानो। जिहि तन नव संत मंजन साजो। जाप
हत रंन हि कलाजो। जिहि सिर मांग सुहाग संवारहि। धूप ति पासकेस
बिसतारहि। मध बिनाग मंग मुकतागन। रिष मंक ति मानकु नन
अंगन। सेंदुर मांग जरी सुन कारा। रवि तनया बिचि सरसति धारा। ब
नि पारी पुनि अस ति बिसाला। स्याम जल दस सिऊ पर सुदाला। बे
नी कुसम कुर बिबनारी। नाग निमन कु पयो निघिन्हारी। जिहि सि
र लप्पासी मुकरावति। रस बस के प्रीय पास लगावति। मन मीन नि
अलका बन सीसी। किंबित पथिक पासि पसरीसी। राज तिमनि
मय टीका अेसो। नाम निनालन नागमि लिजे सो। कुकम बिंदु सो
छबि अेसी। अरध चंद्र पर बूंद निबेसी। जिहि मुष नुव बल्ली नि
तावहि। अलि सुत से ऊ तछ बिपावहि। स्वर नर षत्रय नु कु

ति॥मुषमुकतागहिसुकछिरकावति॥जिहिमुषअमनसुकतिमनमोहै
स्वातिबुंदमुकताफलकोहै॥कुंडलकनकबिराजितकैसो॥ससिपारसजु
गहिनकरजैसो॥जिहिमुषसुनगकपोलसुहाये॥मानकुकनकतबकसे
ताये॥जेदिगबिसदबकरतनारो॥मीनमृगजघजनगनहारो॥पुनिअंज
नअंजितचषकोरे॥मदनबिसषमानकुबिषबोरे॥करतकटाछिअव
नतगिकैसे॥उछलिमीनजलबाहरिजैसे॥सुनगकटाछिरतेपरसो
हो॥तरानकहातरुनीमनमोहो॥जिहिमुषमध्यदसनयोलसे॥जनुबि
कसेदारिमसेहसे॥सहजरागअधरनिअरुनाये॥मानकुपानपानसे
षाये॥सहजसुगंधस्वासछबिछावत॥मानकुफूकेमदनजगावत॥
जिहिमुषबानीमधुरबषानें॥मोहनमंत्रपढतिसीमानें॥जिहिमु
षचिबुकबिदबनिअसे॥मानकुचंदराहरदजैसे॥कंपोतिसो
भितसबिसेषा॥राजतरुद्रगरलकीरेषा॥पुनिउरमुकताहारसु
हावहि॥मेरकुनेसुरसरिअथआवहि॥ग्रीवासुमनमालसुबिसा
ला॥मदनसदनमनुबंदनमाल॥बंनितअसबिसेषबषानें॥
प्रीयभुजलतापीवसेमानें॥जेकरकमलकमलछबिदेही॥बूडत
बिरहउदधिअहिलेही॥भुजजुगउरधअलसबसजदति॥छूटतिमन
कुतडितसीतदति॥करचूरीबलयादिकराजत॥मानकुमदनफंदसे
साजित॥करपल्लवमुद्राजुतमोहो॥चंपकलीसीलंकितसोहो॥पल्लव
जातअरुनसुतअसे॥मकरकेतरथनोदनजैसे॥कुचकंचरकर
कुंभबिराजित॥सुंदिनावरोमावलिसाजित॥उरजउतंगबनतजु
गअसे॥प्रीयअभिलाषअधिलफलजैसे॥चोलीउरजबनावबना
ये॥कामकलहजवकवचकसाये॥तवबनिअसितकंचुकीटूटी॥क
नकरेषधरिकामकसोटी॥दृष्टजागसोजायोलागत॥कामपोगपा
टीअनुरागत॥निमतनानिसरअगमनलोजा॥त्रिबलितरंगअतु
लत्रीयसोजा॥कटिमनिजडितमेषलाराजहि॥संभतारहतसिंघगन
लाजहि॥जेनितंबकदलीसमलीनें॥जेपदकमलकमलछबिछी
नें॥येहीअरुनबिराजितअसे॥कदलिदंडतरनारंगजैसे॥नूपर
धुनिकिंकनिरवराजे॥कामद्वारमनुमंगलबाजे॥गजगतिचलति
पतिहिअतिभावति॥रतिमानकुरतिमंदिरआवति॥तिहितनपु
ष्पाभूषनधारी॥मानकुबसंतपुरीसुषकारी॥जिहितनसहज

सुबास सुहाई मलय बात मनु चलि उपराई। जिहि तन बसन बिराजित ऐसो। हा
मनि जल दल पेर जैसो। तन बहु रंग बसन फहराव हि। बात बिधूत जलद सेथा
वहि। जिहि तन रति ते छबि अधिकाही। गति हि बिलो किमराल लजाही। रूप
न बसन बनी पीय प्यारी। जिहि सम सृंग सूरति सुषकारी। नव सत सा जिमि तन म
न भावन। मनु मन मथ अरति कर आवन। जिहि तन परसि पीय सुष बाढति
जे मिलि बिरह नाद सत काढति। जेतन पति सजा अनुसरही। हाव भाव संजुत मन हर
ही। राजत न षछित प्रीय अनुरागन। कंचन षंभ षचित मानिक गन। सुंदर अमत न
कंकन सोहे। मेरु अंग जनु ओस बिलोहे। जात न सबै सुष दुजुवती तन। पति अ
भिलाष करत परि पूरन। जिहि सम चरन पलोट हि दासी। देषि तही होइ सो लिउ
हासी। लुभजु वती तन अंग बिसेषे। निंदत न सहेत मैदेषे। जेतन प्रीय सो प्री
ति चढे हैं। सो पै अंत छार मिलि जे हैं। कबिरु बाच। दूहा। जैसे गंध बिगंध मि
लि। निकसत है सब गेर। देषो महिमा पवन की। आपु न औरै और। तोही
सम प्रह्लाद सिषा। सब हिन को सुनि लेत। आप अ संग अलिप्त रहि। नहीं छांड
न हरि हेत। इहि बिधि अस नोतरन्यो। गुरपत नी प्रह्लाद। उगिवनीय
रु आपनो। पति हि मिली सब बिषाद। गुरु बाच। छंद पधरी। द्विज पूछि उ
स्त्रीय को बिचार। कछु मानत है सिषा कुमार। सत्री। समझ्यो कहे
हम ग्यान गुरु। नहीं होत रे कैतें दोष मूढ। दूहा। जो भावी सो होइ है। नृप
हि कहो समझाय। कहा कयो चूकि हौ। पेर लीये पतराय। १। कहि जे प्री
य तुम राज सों। और फेर सो बात। ताते यह बालक जीयो। कैन परे उतपा
त। गुरु बाच। छंद मुरिल। तुम यों कहो कहा हम कहे। जिहि ते राजा
रो सन गहे। सत्री बाच। ग्यान तन्न्यो यह बाल। नाग तिहारे वकै न्यपा
ल। गुरु बाच। अंत तिहारो त्रीय को ग्यान। ऐसी कहे तजीय को जानाह
म कहि है सूधी समझाय। जो होनी सो होइ बजाय। सकारो सच ढे अंसरा
ल। अति आतुर आयो चटसाल। दूहा। बाल बिलोके पढत गुरु
राम नाम निसंक। बिधि ना लिषो सुनाट रो। लिषि लिलाट पट अंक। १।
गुरु बाच। छंद पधरी। मैं बरजो बालक बहुत बार। नहीं तजत कुबि
द्या कुलकुगार। यह ग्यान छांड अजहु अग्यान। येक टुक न्यये को ते
हि प्रान। हम पारपरत कुजे कृपाल। कुकवर कुवर मनि जिकु चाल।
कुंवरो बाच। दूहा। कहा करो बिधि निरमयो। ऐकै प्रान अजान। संग
हरि के नाम परि। वारि देउ सत प्रान। गुरु बाच। छंद पधरी। उगि
न हु बुलावे तो हि राजा। अब कहा हम हि बकबाद काज। कबिरु। यह

उ॥ऊ॥गिवसोकुमारा॥सानंदजातपतिपहसुदारा॥गुरमंदिरमिलेतबहारिअ
॥प्रतिपरंगबालजलचढतजाय॥गुरगयोलीयेंजहांअसुरराय॥सुनपानिपरि
अपनैसुतासा॥गुरकहेतबैंनृपसोसुनाय॥यहबालकनाहिंपढतराय॥हमरहे
जतनकरिकरिअनेक॥यहकवरनछाडतअपटेक॥अबहमहिदोसनाहिंन
रेस॥हमसबैकसोकारनबिसेस॥समझारकहोअपुनसयाने॥जोपुत्रत
जेयहब्रह्मग्यान॥राजोबाच॥नृपकलोतबैपुत्रहिरिसा॥तुमपढोक
हमोकहसुनाइ॥कबिरु॥नृपतिकरगयोबालकसधीरा॥प्रहलादनामह
रिगतबीर॥प्रहलादोउ॥मैपढेउसयअरअनूपा॥सुनराममरामहरिह
रिसरूप॥राजोबाच॥येकोनपढायेतोहिअंक॥सोकहोपुत्रमोसोंनिसंक॥
बालकोबाच॥यहमोहिदईनारदबताय॥मनबाचकरमहमपढतराय॥क
बिरुबाच॥यहसुनतदैतपरजरयोअंग॥घृतनयोमनुपावकप्रसंग॥करष
गउठेआसुरकरूरा॥सोयहबीचमंत्रीसमूरा॥मंत्रीउ॥यहपढेरलिअगपान
आज॥अपराधछमकुराजाधिराज॥हिजसुरनिबालत्रीयअवधिदेव॥यहसुने
सुकपहपरमनेच॥यहजोनिकरतहमफेरिराज॥करजोरितिहारेअयकाज॥
पुनिकरकृपापरतनीकृपाल॥एकबेरपगवकुफेरिसाल॥यहपढेफेरितो
दंडहीन॥कुलपांगपढैतोकृपाकीन॥राजोबाच॥यहबेगहेमुषकालमांह
इहिमसुबुलारीदेजुबाह॥तुमजाकुसचिवजहांकवरमाता॥समझारकहो
सबबिवरिबाता॥दुषवारकहुतुमजानहुता॥मगछांडिकुपढिनपरत
पूत॥कबिरुबाच॥लेगयेतहमंत्रीसबासा॥प्रहलादहिनिजजननीअ
वास॥सोदयोकयाधुहिसचिवसोध॥पुनिकरतनरीपुत्रहिंप्रबोध॥बेगरि
आसा॥सोदयोकयाधुहिसचिवसोध॥पुनिकरतनरीपुत्रहिंप्रबोध॥बेगरि
अकसिरसूघिमाय॥सुतदेतनरीसिषासुनाय॥सक्रोधरूपनृपकोसं
तारि॥ऐगनरतकयाधूदेतडारि॥रानीबाच॥सुरनजतकछुनाहिन
सुनाव॥तुमउनहिनिरतरबेरजाव॥निसिदिवसपढैतसबुनामा॥
तिहिनामपुत्रतोहिकवनकामा॥देवासुरजुधनिसुनकुगीता॥सुरहे
तबिजयरनुपराजीता॥नितपढतजाहितजानिइष्ट॥तिहिमारेस
पासुरबलिष्ट॥तवपितात्रातहिरणाषिनाम॥इहिहेतुताहितकरह
तरामा॥तलेइबयरकैदासहोय॥यहकरमनलोकहिहैनकोय॥तुमप
ढतब्रह्मबिद्यानुकूल॥कछुगईअसुरबिद्यासमूल॥कुलबधूक
हेकुललाजलीन॥सोपुत्रपिताआपाअधीन॥मातेगरहतअकुसहि
मानि॥निरमूलवहेगजतिलकजानि॥कलअगरईसकसियेअसेष
रसबासचढैबानीबिसेष॥ पुत्र बाच॥इहा॥मैकसिराषेप्रान
समा॥जोतिहिमिलेअंगारंगेजुस्यांमसुजानरंग॥चढतनअंनकु

रंग॥ पा॥ कुहाबकुत बकबादलगि॥ माताशुनकुनिदीना॥ मैंपायेहरिप
मनिधि॥ हयेबया ईप्रांना॥ रानीबाच॥ छंदपधरी॥ कुकुहाबेरलेहैकेमृत
जोनयोसत्रुसेवकअकृत॥ दुषबचनकहतरानीसुदेसा॥ सुतहेतुरते
उतनयनरेस॥ मतिनहीछुद्रसिरपआस॥ वषनगतजेनषबपुबि
नास॥ कुलराजसदामंत्राधिकार॥ हमकहाकहेतुमबुधिसार॥ अनसो
नयहैमेरेकुमार॥ सोआहिअंयछटिकाअधार॥ परिबांहतुमहिसोप
नप्रधान॥ सोकरकुलंगनहीहोहिमाना॥ किहिंतानिजीयनरहिकेप्र
ताबहानतिहरोमनहिंत॥ असबचनमंत्रकहियेमहीप॥ परजल
नयोमनुसांतदीप॥ मृतगरनयोकेगरनमोचा॥ केनयोनष्टफलक
लसोचा॥ इहिषोजपरकुमतआपरास॥ कुलनोकतुककरबिषहिषा
यानहीकरतअंगअनिउपजेबाधि॥ पितवासनरेसिसुनहीउपाधि
कुटिकाल॥ लेगयेसुतसिसुनृपनिकेत॥ सबनीतिबचनकहिकहिसि
हेत॥ पुनिकहेसबिनरानीकरावा॥ तिहिनयोकछुकसातिकसुनाव
नृपबाचा॥ नृपकहेसंकमरकासुदेरि॥ लेजकुसवहिचटसालफेरि॥ आ
सुरीधरमबिद्याअपार॥ अभयनकरावकुगुरकुमार॥ गुरुपढ़ेकुबि
द्याफेरिमृत्यु॥ ततकालकहुमोसोंअरथ॥ कबिकालबिहईजारपा
रीद्विजात॥ प्रहलादछुरीमनुअगनिगात॥ उगियोतबेरनिवासराज
कुरीकुटीलचषरतसाज॥ पुनिकीनआनिरानीससंत॥ थितसेजजुक
नछत्रावतंस॥ रानीबाचा॥ अपराधनहिनमसप्रानानाथ॥ हतकेठ
करतवहमूढ़हाथ॥ सुषनयोसत्रुवहिमित्रषेद॥ अवलंबुमारसो
ईकरतछेद॥ यहनयोयेककुलमहकेपूता॥ सिसुहतेपापउपजेअकूत
परियेनषोजवाकेनृपाल॥ सुहअसितरेकुरेसहितिकाल॥ कबिकु
आचा॥ बिषरोषझारिसबिनीतबास॥ मनुगरुडमंत्रअहिकरिबिरास॥
पुनिद्वितीयदिवसगुरप्रातकाल॥ द्विजनयोआनिथितचटसाल॥
दुहा॥ सिसुकेयेकअधारहरि॥ कषपानीकीरीति॥ जोजलमीनहिपर
हरेछांडेप्रानप्रतीत॥ पिताबंधपरिजनतजौ॥ सुतनतजौमहलाह
लोहरिकटकरिसंअलौ॥ औसोषेमप्रसाद॥ पटैनिरंतरनामहरि
अंतरपरननदेऊ॥ मनमिलिगोजलदुगधलो॥ बालकनयो॥ बिद्दह
छंदपधरी॥ फरकंतअधरद्विजसुनोफेरि॥ सिसुराभरसयहकलो
टेरि॥ पुनिउगेतबेसंठानिसंका॥ करचरमसिसुहिमारनिसंक॥ कैछो
कैमूरषराभनांमा॥ कैमाहिमारिकरोसुगंम॥ करचयेकाउनहीच

लतपाश जलमिलतनेत्रन हो देषि जाश ॥ तारू सजिक्रमिलिदंतवास
श्रुतनासरूधन हो पुरतस्वास ॥ अकुलाइ गिरेगुरलुगतचरमि अदन
तनये सिसुरहे रमि ॥ कछुकालनरेनयो द्विजहिचेता उगियो दोरिछि
नपतिनिकेता ॥ करपाय फिकरेमूरुबिप्रा ॥ इतांतकहतराजहिसुछिप्र
सुतरटतरामरामहिबिसेसा ॥ हमदेहि बृथासंयानरेसा ॥ पुरजररराज
द्विजकहतबारा ॥ आरकतनेत्रक्रोधाधिकारा ॥ यहलाउ छुडे कुसबेरे
क ॥ यहकहतदुष्टदेरिअनेकलिगये दुष्टबालकउगश ॥ पाहिकापुनि
हरिरटतजाश ॥ जबभयोदिष्टगोचरनरेसा ॥ प्रहलादकरतचिंताबिसे
स ॥ प्रहलाद बाच ॥ कुकलीयोमोहिनरोस्योस्यामकोनसोमिष्य
नहोश दीनसहाइकदुष्टहा ॥ बिरदकहावतसोश ॥ बिरदकहाव
तसोश दीनदासनिरषवार ॥ तहाप्रगटेतिहिरूपा ॥ जहानिहिनारस
नरि ॥ येसबकीरपुतंगा ॥ मोरसगकरतसरोसो ॥ सोमिष्यानहोश
मोहिजोस्यामनरोसो ॥ ॥ मेरेस्यामअधारहो ॥ मनतूरहिनिसचंत
येसबबाताबरतले ॥ तलउडे हेअंत ॥ तलउडे हेअंत कुषरा
षोजनपेबै ॥ ये नगतिबिरोधहोत इनहिसूझेहेजेबै ॥ प्रभु
औहेसुरसंगानिकआतुरकेटेरो ॥ कुसबतेबलिवंता ॥ स्यामअधार
सुमेरे ॥ कबिकबाच ॥ छंदपधरी ॥ त्रिगकूटमिलेआसुरअगा
ना ॥ प्रहलादबन्हिकनिकासमाना ॥ योंसूझिपरतसबहीनिबा
ना ॥ प्रगटोमनुआसुरप्रलयकाला ॥ करचापबानन्हपआतिसक्रुध ॥
प्रहलादअगटोप्रबुध ॥ राजोबाच ॥ तबताहिनयेप्रछतनरपा
ला ॥ अबपढोसुमोहिसुनाउबाला ॥ प्रहलाद उवाच ॥ मेंजुप
टेइकनामहरिनुमहिसुनायोसर्बा ॥ वहनिरंतरपढतकुआक
हातबेकहाअब ॥ ॥ छंदपधरी ॥ कबिक ॥ यहसुनतहेतधनु
जुकतबानः आकरषिकरेलेनिकटकाना ॥ राजोबाच ॥ अबबो
लिछुआवेतो ॥ हिमूढ जिहिजपतनिरंतरग्यान ॥ कबिक ॥ नृप
बानदेषिसिसुनयेत्रासः हरिहृदयमांऊमतिछूवेजासा ॥ राजो
॥ उरबेधकरोंबतोहिबानबाला ॥ प्रतिपालकरेबोलकुसुलाला ॥
निसिदिवसजपेतूजासनामा ॥ अबकरोकहापेवैसुस्यामा ॥ यहजा
निकहतहमतोहिधूता ॥ अजकुमतछांडेप्रानपूता ॥ सबसत्रुपरोसि
लगीआगि ॥ तबषनतकूपसगनीरलागि ॥ दिष्योनकछुतूजप

तजासु पाताल बसे कै धौं अकासा। अनदिष्ट बजै तेरा मदीन। मो हिछो
दिछ त्रधारा प्रबीना। सब तजे मो हिन जिकालजारा। सो रहो आनि सिर परन
मारा।। ६ ।। अबहूं कारो सीस तो हि लो नैषग पुधरा। अति बल जाके फूल
तो कीजे ता हि पुकारा।। ७ ।। छंद पधरी।। अब हम कहे देषे नैक ता हि। आरत
सहारज जिहि बिरद आहि। तब कहूं देरि जो होइ हरि। प्रभु जो तिरहीय घर
निपूरि।। ८ ।। दोहा।। वह जग मे वहिमो ऊ जग। बीज फल हि फल बीज। ज्यों
बिटुप मह जल बसे। जैसे जल मह बीज।। ९ ।। वहर हुक तहुक वहे
वहे उ पाज कमूल। सो ही मो हि बिचारहो। और न जिहि सम तूल।। १० ।। छंद
पधरी।। सब देषि सुनेमें बिधि बिचारा। वहि बिनो आहि सो ही न सिंसारा।
पाताल सप्त जिहि चरन थाना। अरु कुहु सप्त सागर प्रमाना। जु जमूल जास
सुन गिरनि अंग। दस दिसा जास आनन अंग। ससि सूरज नि जिहि नेत्र ज
पा। आकास लिंग जिहि परम रूपा। जल पात्र पवित्र जिहि जल दजाला। बसु
मती पीठ बैठक बिसाला। नाहुत्र जाल तिहि पुष्प माला। अरु बदन बेद बा
नी रसाला। अष्ट दस बन जिहि रोम राजि। अरु ओम जास मस तक बिरा
जि। बिनु मीच मो हि नही मरन देता। त्रिनरेन तूल कूष बरि लेता। बिधि स
चिव जास सिव दुख रिकुरवाल धरम राज हि तिहरि। सुर राज सहत
सुर करत सेवा। प्रभु दीन बंधु हे बाधि देवा। गज कीर तराज ऐक मांह। हरि
तो लि निबाहे कर षि बाह। तिहि रचे बिसद बेरा रूप। ब्रह्म रुको टि प्र
तिरोम कूप। तो से अनेक तिहि मांह कीय। निज रीस कर सीस हि किरीय।
बलवंत असुर उर कोप कीना। सुत सोक नयो अति मन मलीन।। राजो बाच
असपुत्र बिना हे सुष असेष। यह नयो नयो मो हि दुष बिसेष। पछित
तहि रन कसि पअपार। यह नयो बजे फूट कुसु धार। बिष अमृत बृछ नही
नेह कोय। फल लगे तब हि निरधार हार।। कछु जानि परत नही बालक
ला। बंसा वत सको उ होत साल। यि कमो हि त्रीया कर यह न कीन। यि कमे
मन्नयो जिहि रति अधीन। जो जानि परे यह जनम काल। कछु पापन
ही असहते बाल। तो हि राषन हार हि बोलि पूत। सुबतास कहो हे कपू
त। कुंतो हि जरे कुअग निमांह। कै बोरि देउ जह जल अथाह। अहि कै
कि गिरा उ गिरा उ तंग। गज मद्दन करा ऊ अंग अंग। संसो षन लेहे सो
षि प्रान। वह बोलि तो हि राषे निदान।। बाल को बा च। जिहि नाम स
रब मत लो क बास। नृप गरब क हा अस दे हतास। सो ए ध पुरुष सज्ज

महासः आभूषन भोजन रति बिलासा। संतजुवति तजि हिउर चरन धारि। अ
रुपीयत सबे जल वारि वारि। जिहि चलत बिछावहि सीस वास। जिहि देह
करत मंजन षवास। जिहि देह काज तुम बहु गरब। सु निता के कहु निर्द
न सबी। कैं जारि अगनि उछार जाइ। महि षोदि गरुत दीवक मिलाइ। कैं नि
लुठत जहा नरक जाल। स्वग्रह तसि षास करु अगाल। बपु देत स्वजन जल
महा बुहाइ। कैं षात कि कृमि कुल अघाइ। मल पात्र देह तिहि कहा मोह। है
नास हेत जद पि ससोह। प्रभु जोति रही घट घट समाइ। वह जोति लिषे
सोई स्वरग जाइ। मो हिरदे कहे वह जोति मूल। सो नास ततो ही मूह स
मूल। जल थल अकास गिरि बसत सोइ। नव भूत रही सोई जोति होइ
जो लिषे निकट ताते न दूर। जो कहे दूर ति हि तजे दूर। मन बाच करम हरि
चरन मूद। सो सेइ कहु तो हि पान गूद ॥ ६ ॥ ॥ हरि करता हरता सु हरि।
हरि रहक सेसार। हरि ही ते सब ऊपजे। हरि ही महा संचार ॥ ७ ॥ रजो बाच।
छंद पधरी ॥ है बो सही मे पुत्र जानि। तू बढ़ ता गयो सिर मेटि कानि। अ
बमो हि करावत सत्रु सेव। मे सबे कछु छोडे जु देव। कैं पढ़ै असुर बिद्या
अपान। गज पा सि रुद्र ऊंहते प्रान ॥ बालको ॥ कै पढ़ै पढ़ावे कहे
कोना। कुल का हि असुर बिद्या सकोना। गज को न मरे मारे सु का हि। को
प्रान रहा देही सु का हि। सत कूं न जरे जल पूरि थाना। स सि ता वत्त यो प्र
तिबिंब आनि। घट नष्ट भए जल तू निवास। वह चंद्र वहे एकै अकास
यह जानि सम कि अजु मद्य। वह जोति गयो तन तू समंध ॥ कबि
कु। यह सुनत बात पर जरि चुवाल। आरुद बात जनु जल न ज्वाल। ज
रि चरन लो ह हथ करी हाथ। जल बोरि दयो सि सु करि अनाथ। जल
जा स मीन पावहि न थाह। मातंग बुडहि जु तमकर आह ॥ ६ ॥ पानी
प्रान पि सा च बना। पावक प्रल थ पहारा। सुत पत्त प्रात अरिष्ट नया दीन
हि देव अधारा ॥ ९ ॥ आज्ञा म हरि नाम रत्ना। बालक है जल बीच। काल
अस्यो सो रो स बस। जग्यो नि सा चर नीच ॥ २ ॥ छंद पधरी ॥ निहि आ
निदरस दीय प्रात काल सब सचिव जु हा षल सुत दजाल ॥ रजो बा
च ॥ हसि कहो राज सि सु षबरि लेहु। बहि गयो किधु कि कुतिरत देह
कबि रु बाच। यह कहत दोरि असुर अपार। तहा गये जहा जल थित
कुमार ॥ ६ ॥ ॥ तहा देषे अद्भुत चरित। सिसु बेठो जल जोति। पा
र ब्रह्म प्रह्लाद प्रभु। ऐसी प्रीति प्रतीति ॥ १ ॥ छंद पधरी ॥ तजि गयो
नीर बहु ठोर पास। जल मांझ भयो थल सा वकास। हथ करी ऊरी अस

वैजंजीरा। सुनपीत बसनपहरैसधीरा। चोवाचदनचरिचितअंगरागा। पर
नालतिलकसिरबनीपाया। सबअंगसंषचक्रादिअंका। सोबालदेषिप्रफु
लितनिसंका। चरजारकरैनृपसोबिचारा। उरअसुरसलउपजिअपारा।
दुहा। ऐसेप्रभुहिबिसारिसगा। जिहिजगजोतिअरदा। आपनसोकर
चिलकलो। ईसकहावतमूढ़ा। प्रभुऐसेकोपरहरो। आपकहावत
राजा। कररीतबीदुष्टमनाजिकनतजतसुनावा। बालबचेजलथ
लनयो। असुरकरैअपाना। पुनिअपनेजीयकीपरी। कांपनलगेप्रा
ना। छंदपधरी। यहदेवकवनअवतस्योआसासुतकालरूपउ
पज्योसुनाश। आकृतसुनावनहीअसुरबंसा। येकपटनेषकोउग्रम
रअंसा। इहिंनातिअसुरउरमानिहारि। सिसुलेकुकलोजलतेनिका
रि। जबकाढिलयोजलमगनबाला। नृपअयकस्योलेतातकाला। राजे
बाचातबरेषिबालबोलेनृपाला। बिचिधरकुअगनिज्वालाबिसाल
सगधूतकरकुअनुक्रमसमेता। जलमध्यतयोथलकवनरेता। जलज
नप्रजलआवरतयाहा। मषबोजलीनपावहिनथाहा। दिढलोहपाइहथ
करीहाथा। छुटिगईसबेकैयोयेकसाथ। बालकोउ। तैबांधिमोहिज
लमांकरीना। करतारतहमजतनकीना। राजोबाचा। कहिमूढजलहि
करतारकोथि। लंआहिउपासतसकटचोथि। बालकोबाचा। अष्ट
मीचोथिजानैनआला। परब्रह्मऐकजानैकृपाला। मैरोनांरामतन
हिनसाथि। आकरषिदिष्टबंधनउपाथि। कुंऐकउपासतरामनोम
आरिष्टनिवारनवैसुसांमा। सबबोरररसोजलतरसमाश। वहिबिनआ
हिसोईबिनसिजाइ। राजोबाचा। दुहा। मोत्राताहरनाहन्पा
कुंनपेबलवंता। जुगबीतेइहिंवसता। नहीदेषोभगवंता।
। बालहिछायाकालकी। नयोअनोषोपाना। बापीसरवर
नदबिसदा। कूपहीमेंभगवाना। बालकोबाचा। कालअसमो
सोजानिजै। निकरनसकतजाहि। घटहीमहबोलतप्रगट
अजूनदेषौताहि। छंदपधरी। सुनिलेकुप्रथमनांमाथि
कारपुनिहतमोहिजिनकरेबारा। इकनांमद्विजातीअजा
मिलाइहिजनमनयोधरमहिअमेला। तिहिंतजेअंतहरिपुत्रहे
ताजातिउरधसईमनक्रमसमेता। सुकनिसापदावतबारनारि।
हरिहेतकरीसुरपुरबिहारि। बयपंचबरषधुवतत्वसकापदकुं

चलसो देषकुअग्रगरु॥ कबिकुबाच॥ उरअसुरबचनलगिबज्रतूल्यासमनये
कोपतनमनहिसल्ल॥ ग्रततेलतूलकाष्टसमाना॥ अरुरओदुष्टहूतलनया
चकुओररषिआसुरअन्ता॥ मतनिकसिजाइकहुकेकपूता॥ तुवसंगकीन
नृपचषकरूरा॥ उचकारलयोबालकसमूरा॥ आकरषिदुष्टआसुरअनिष्टप्र
लादकरेतिहिग्रहप्रतिष्ट॥ दूहा॥ राजाकीनगनीदुष्टा॥ दूदानामअसाधि
अगनिबंधअग्यासबकुआ॥ अवरोमंत्रउपाधि॥१॥ सोलैबेगोदमहाप्रल
हिनिहिग्रेहालाइदईचकुंधाअगनि॥ ज्वालकरालअछेह॥२॥ तहालाग
दूदाजलना॥ बिफलभयेसबमंत्रा॥ बलछूटेप्रहलादके॥ लीनोसरनसुतंत्र
दूनबाच॥ संगतिसाधअसाधकेः सदाहोतसुनकाजा॥ मेरेछूटेमंत्रबलाकोउ
कुरतनआजा॥४॥ बालके॥ इहिदिनतेरीमानिता॥ जिहैंजगतअसेषा॥ जोकोउ
नोकहैपूजिहोबढिहैआयुबिसेषा॥५॥ इहिबिधिप्रसनोतरभये॥ दूदाअरुप्र
लाद॥ बालहिछुयेनतापतनावहजरीसबिष्पाद॥६॥ छंदपधरी॥ परजैलेअनलग
प्रलयकारः जालुत्सगगनमिलिज्वालमाला॥ आसुरीअसुरघिरिजूथआगासब
ओरमरहेसुररथनिछाइ॥ जबलगेजरनमंदिरसुनाथ॥ नूगगनतरीधुनिहाह
हाइ॥ सुरबाच॥ ससिसूररहेरथअविचिहथ॥ दुषदीनसहतक्योंदयानाथ॥ सु
सबदनयोहाहाअकास॥ हरिराषिलेकुससिदुषितदास: हरिकरतबिरदअ
नाथनाथ यहकह्योसबनिबालकअनाथ॥ दूहा॥ बासदेवगोबिप्रहितः सं
तसबेदसहाइ॥ दुषीभयेदुषदीनके॥ अगनिनईजलप्राइ॥१॥ छंदपधरी॥ ज्वाला
करालजबमिटीजानि॥ हरतअंगारनपआपप्रानि॥ पुनिभयोअनलज्वालाप्रक
सा॥ कछुअसुरजरेनृपहेजुपासा॥ जबटारिकरेपछहाअगारा॥ जबहरितबस्त्रबे
गिकुमारा॥ बपुपीतबसनअरुतिलकभाल॥ तुलसीदलमालाउरबिसाल॥ अ
सुरीजोनिसंसर्गपापा॥ जरिगयेसबैसिसुकोनिपापा॥ भनताइकदेजनुस्वरनस
ध॥ प्रहलादअमलदेषतप्रबुध॥ दूहा॥ तादिनतेपूजितभई॥ दूदाहोरीना
जदेषकुद्वेषीसाधके॥ गारिलहलसबुगंज॥१॥ जालनबेगोदले॥ बालहि
यातबिसास॥ सोप्रतिसंबतजारियत॥ पात्रभईउपहास॥२॥ छंदपधरी॥ प
लरेसकलनोकुसलबाल॥ निरबैनृपसूअपकाल॥ कुलअसुरलेतअ
तिसयसकोप॥ प्रहलादबदनजोचदतओप॥ नृपदेषिपुत्रमनमलिनकीन
रिपुकेरिजीयोमनुकैनवीन॥ आकासभयेजयजयासदा॥ सुरभयेहरषआसु
रबिनदा॥ सुनबजेबिबिधिदुंदुभिअकास॥ सुरबधूदृष्टिकीनीसहास॥ गंध
बकरतनारकसगान॥ धिककहहिसबैआसुरअगान॥ दूहा॥ त्रिनदह
दूतबज्रतो॥ जोजमकरेप्रहारा॥ जगतजरेकु

रा॥१॥ अब जु सायहरिन गति सौं॥ इहि बो चितलगाइ। देषु जलम्रस्थलनयो॥ अ
गनि नईजतमाइ॥२॥ छंदपधरी॥ रूपलयो निकट बालक हकारि। करजोरि
रहे सनमुख निहारि। राजा जा। बलि कहा हरि यह कौन मंत्र॥ तिहि नई अगनि सी
तल सुतंत्र॥ क्यों ज्यो हरि तजब अगनि माहा। कछु पढ़ि कियु सेल्ह षिपाहा। कोउ
वीर कियु आराधकीन। तिहि बकेअनल ज्वाअधीन॥ बाल कोआच। दूहा॥
सुनि देवै सुषि रतन करौ। सोम बिना सुरओन। गरि कूटो जरि जाकु सो। रसन
लोचन कान॥१॥ हरि कौ ऐक उपासना॥ मेरै सुनि नृपाल। ता दिन आन उपासी
यो। तब ही दुहुदे काल॥२॥ छंदपधरी॥ कबिकौ। क्यो ऊन होत उर दयाल
ना। बहु ओर दुष्ट असुर समाज। गिर ऐक बिकट ओ घट उतंग। आकास लगे अ
ति अगम मांग। तरु लता अरु फित अप्रमांन। नयजंत तहा कंदरन यांन। गुंजार सि
यप्रति सब दहोता। दुहु बैन चित पही कपोता। नृपदयो तबै आयस रिसाइ।
सिसु डारि दे ऊपर बत चढ़ाइ। लेगये दुष्ट बाल हिअ नेक। गिरसीत अ सुरस
बअहेक। सुर रथ निनयो सो नित अकास। हाहंत बानि कहनांप्रकास।
आकर षिकंग सिसु दयो डारि। हरिअ लो बीच कंदुक निहारि। गिरमूल्य
स्यो सानंद बाल॥ सिसु सीस बरषि सुर सुमन जाल॥ सिसु डारि दियो जब
सुन्यो राजा। सानंद चलो जहा दुतल माजा॥ गिर मूल जाइ देषो नृपाल। सु
नपद तराम राम हिरसाल॥ मन असुर तहि चित्त समाइ। इहि प्रांन लेउ
कोनै उपाइ॥ दूहा॥ गरि दयो सिसु सैलतै। ऐलि लयो हरि बीच। प्रभु
जाकै रहक नयो। कौ बपुरा नृप नीच॥१॥ छंदपधरी॥ लेगये राज सि
सु राज द्वार। सब लये बोलि तहा सर्प धार॥२॥ दूहा॥ सर्प लपटे कंम्क रात
हा गदो सिसु फूलि। मांन फूल्यंदन बृछ सो। रहे तु जंगम झूलि॥१॥ छंदपध
री॥ नहीं ऊसे सर्प जब नगत बाल। तब छुटी जीयन आस नृपाल। जब भू
रत कछु नाहिन उपाय। तब संधि बिचारन लगे राइ। पुस लाइ बुलायो निक
ट बाल। तहा लगे दैन सिष्य तु वाल॥ राजो बाच। बस करन ओर आ
कर षमंत्र। सुत पढ़ ऊ असुर बिद्या स्वतंत्र। बालको॥ कोअसुर असु
र बिद्या नरेस। मो हि काज कहा पढ़ि बैबिसेस। मो हि लागत बिद्या सबे
सूल। इक राम नाम उथार मूल। सो रपढ़ तरा रफ्फ सहत हेत। दिन राति नि
अंतर परन देत। कौ सिध कवन साधिक सरूप। कौ बिद्या अबिद्या कवन
रूप। सब बिसेष रहीयर यर समाइ। स्वछंद जोति आरत सहाइ। ऊंदेषत
कुतो हि परिन सूझ। अति दृष्ट राज तो फूग अबूझ॥ राजो बाच। अनबूझि बि
चार कुता हि दूत। कुल तो हरत जि हि मित अन्दूत। सानंद पढ़त जो सत्रु पा

न्याकुलपग्लग तकरवो निदाना।तुम्हेतलगेसीकरतबाता।।बाता बिसेषके
सनिपाता।जो जजेमो हिमनबाचलाय।तोकरोबेगमोसोबदाश।रथक
रीअस्वसेवकसमाजा।अरधासनचामरछत्रसाजा।।हिमग्रेहराजछिति
अरधदेउ।सुषकालमाऊतेकादिलेउ।। बालकेबाचहूहा।तोसोतूही
होऊनपा।मोहिनतोसोंकांमा।मोकहषेचिबदारहो।।कुवाहीमतचा
मा।१।मोकहषेचिबदारहो।।तूहीनासहिलीना।कुबाद्रोनगवंतके।
जगजाकेआधीना।२।छंदपधरी।।अतिऊंचहेमभयेअघासापरवाल
थंनकलसोप्रकासा।सुनजुवतिसेजमनसिजबिलास।।तोसहतसबे
हेंकालग्रास।। राजोबाच।।नृपग्रे हनयोतूपुत्रआश।कैमांननरीसाति
कसुनाश।धिकतोहिजनमसग्नरथूता।कुलगारिलगावतकाकपूता।अ
जकुजसमहिनजिमोहिआजा।जोबदेचहतासिरछत्रसाज।। बालकेना
चा।रूहा।।बद्रोबद्रोनृपकाकहो।सुऊतनाहिनिदानबदिबोसोईजोनि
ता।जोबाटेउरगपांना।१।छंदपधरी।।संतोषसहतमनमांनमारि।कुलनि
लाषगुनगरबगारि।मनमोहअहंमदकरेनासा।सानंदरहेसमसावकास।
सतसीलसुकृतगहिसाधसंगा।परदारअछाडेप्रसंगा।सुषसोकनबा
धेलबयहानि।लयुरहेआपगुरसबनिमानि।उरसूऊपरेतबतवगुं
नासबराजरंकदेषेसमाना।गजकीटहोइजबयेकदिष्टा।नवन्नतकरेक
रिपरमरष्टा।निरजातसत्रुनिरबंधनेहा।निहसंकफिरेजलथलबिदेहा।
निरलोभनरहेनिरदोषनित्ता।हरिबिनासकलमानेअनित्ता।षटचारिरे
कतबलहेतना।पुनिहोइबिमलमायाबिरत्ता।बपुपंचन्नतपिंडबनाइ।
तेकाहिबदावनकहतराश।कछुमेरोमोसहनहिनराजा।क्युंकहतब
दावनमोहिआजा।ताकोकछुकरियेजतनताता।कैहैनकछुबलयदेदे
हा।यहसमझिकरऊसामेहिसनेहा।तुमहमहिदिषावतेराजलोना।
सुनिलीजेताकेछदमछोना।मनमोहलीनमायामदंधा।बऊनजेता
जेपासबंधा।सबकालरहेमनऊहलीना।छनछनहिसलबदेनवीना।अ
पमांनअबिद्याअनाचारा।सबदेषेराजहिमहिप्रकारा।पापानुरागधरम
पहरा।सतनकहेतनपतासंसारा।सकलंकराजतवनरकरूपा।कोरे
षिपरेतिहिपापकूप।। कबिरुवाच।। सबथकेराजकरिकरिसन्त
ला।प्रहलादयेकमलीनमूलः नृपकहेरेतिवपपेतोहि तुमरतबाल
नहीदोसमोहि मुषरत्नबिकटनकुटीबिरूप।कृतकोपनेत्रलोहित
करूप।।बिपरीतरूपबारनबिसाला।मातंगमगायोतबनपाला।प्र

चुबचनलीनसतपीलवाना॥करबांसचरबिगजफेरियाने॥अतिकष्टसाधि
बारनअलीत॥बैगरिऊरिबचननिबिनीता॥कतबधकंरयेटसजोप॥
तोतारिचदेगजसूतसवोप॥अंकुसअसंकबाचाअलीना॥करनीअनेकआ
वर्तकीना॥प्रेरेपहारजनुपीलवाना॥पूनीसतंगनोजंगनयोना॥गजजर
थमंथमंजतगहीरा॥जमरूपचलोअैचतजंजीरा॥जनकरेपूननपद्म
रजाता॥जाजुलिमनफुजमकीजमाति॥इहिरूपनयोनपदिष्टआरा॥
दिगसेनकरीतामसजगरा॥गजपेलेतबप्रहलादओरा॥जजिचलेल
कसबगेरबोरा॥बिरेनिसंकप्रहलादबाला॥आनेंनचित्तासिरनम्पे
काला॥गजनयेआनिसिसुचरनलीना॥करतारदीनरक्षाजुकीनाग
जलयेतबैगजनतउतारिउरचरनचापिमसतकउषारि॥ इह
हरिसबकेसंकटहरा॥बालकहरिकोदासा॥बंदिचरनप्रहलादके
गजफिरिचलेसोप्रकासा॥१॥छंदपधरी॥नृपतबेमहलतेउतरि
आरा॥पुनिकरनहिरनकसिपउपाय॥तबबोलिपूछिमंत्रीअधिकारा॥य
हबालमरहिकोनेप्रकारा॥इकअसुरनामसंसोषकारा॥पररेहपवन
कैपैगिजासा॥उरपेसिप्रानसोषेअसेषा॥लजिजातमूवेअपातलेषा॥
संसोषनबोलेतबैराजा॥चरचलेसुनतअतिगतिपलाजा॥संसोषन
पतनीसिरफिकारि॥सबिषादजातवहराजद्वारा॥मिलिगईबी
चियहिचरनिबामा॥सबिषादकरीनृपअग्रनाम॥राजोबाचाइ
षकवनआइत्रीयरजद्वारा॥बिपरीतबेषपूछऊबिचारा॥संसोष
न सत्रीबाचा॥पतिमोरबलीसंसोषनामा॥इहिकवरहसोसोम
ग्रधामा॥बलवतउहाअरुरहाबाला॥प्रहलादचरितअद्भुतत
वाल॥राजोबाचा॥मैंजातनदेष्योदैजुपीति॥कबकहाहतेव
हअसुरधीरा॥१कबिरु॥तबबोलिपरोसीअसुरराजा॥सबन्ते
दसबनिपूछोसुनाजा॥परोसीबाचा॥प्रहलादरूपअतिबल
प्रचारि॥तिहमारेसंसोषनपछारि॥सतषंडकरेनहनईबारा॥य
हअबहीमारिआयोकुमारा॥कबिरुबाचा॥करजोरिरहेसनमुष
बाला॥सक्रोधताहिपूछतनृपाल॥राजोबाचा॥छलकवनकरयो
तैकहहिधूता॥मातंगसरूसतिहिबलअनंत॥बालकोबाचा॥
यहमरमनसरूअजकुराय॥जोनयोबधअरुबनीआरा॥ब्रह्म
जैसियारेवहैयेका॥सोरलोपूरियघटघटअनेक॥घटपोषिबिन

सेवहैसोश्रातिहिलागिकहअर्बकरेकोश्रहिनहिव्यस्तप्रजुतोहिनहीसा॥
छतनेत्रअंधतनोछतीस॥ कबिकाबुनसारउग्रेनिसचरहिसाश्रजबन
येसबैनिफलउपाश्र॥मुहबांधिपसोसउसईसांऊ॥देपहुअकेलोनुव
नमांऊ॥निसचारिजामसोचतनपाला॥रहिनांतिनयोतबप्रातकाला॥
नृपश्रारतबैसुनसनाथाना॥अकुलाइनगरतबफिरीआंना॥कोउअसु
रजाउमतआपकाजा॥आप्पाप्रसादयहकरेराजा॥रहिनांतिफिरेटेर
तअछेपा॥कृतअहिनायाअतिराजकोपा॥दरबारनअैहैआजकोइ॥
नृपहतैलाहिनिसकहोश्रराजासुबैठिदरबारगामा॥मिलिसचिवसुन
टसबगंमंगमा॥नृपनरीतबैआप्पासफेरि॥थलऐकरचकुआरनपये
रि॥प्राकारओटकछुपरिनसरूऊ॥हितअहितसबैतिहिंमझूझि॥अ
कनमांऊयहरविअंनूपा॥जटिपृष्टिथंनपाषानजूपा॥मिलिअसुरषो
हिसबवृछमूला॥चकुओरकरेवोगांनतूला॥चवहिसाथानजोजनसुअ
ना॥तहासतिपरतचारीचलंता॥बैसाषमाससुनसुकलपक्ष॥प्रारंभच
उरहिसितिथिप्रतछि॥सिंघासनचामरछत्रसाज॥तिहिग्रेहनयेथि
तआंनिराजा॥सनथबधआसुरसहाश्रसबमिलेआनिअपआपनाश्र
आनीबिलासकरकसबिउंबा॥कालीकरालजिह्वाप्रलंबा॥परजतनिरे
हचषअरुनकूपा॥गिरगुहानासमुतसूपरूपा॥कृतकालदंतमांनऊकु
दाला॥मुषमूछगरदनापूंछमाला॥सिरकेसउरथकपलेकुसाजा॥बिटके
उरोमतनहीरघराजि॥नुजदियमनऊतरसाषनाश्र॥अहिषऊकरनपत्र
चकुनाश्र॥करनषरमनऊषरषुरीलेषि॥बपुचर्मचर्मगोथाबिसेषि॥
गजचरनचलतिगतिऊंटगाजा॥कारेकरूपकरकसकुसाजा॥सिरति
लअरुनचंदनकुनाश्र॥असबनेमुरुमुरुनिमुरुश्रतिसुचटससत्र
असत्रनिसजरूप॥बिचिकरीऐकपंकतिबिरूप॥तिहिपरपंतिपारक
प्रकास॥करफरीमगकूदहिसहास॥बिचिमध्यनुजाकंथरबिसाल॥
असफोटकरहिबोलहिकुदाला॥गजफेरिसमत्रचलीगजंता॥प्रजदु
ष्टरहेकरजोरिपंति॥संचोरनहिंनतहापवनसरूऊ॥योंकरेदुष्टमंऊ
लअगरूऊ॥अरुमिलेदुष्टजुवतीनिजाला॥बिकरालरूपअतिषुषि
तबाला॥मत्रायिकारमतिनयेमूला॥सिरपरीकालछायासमूला॥
थितहानृपासनमनमलीना॥बरदयोब्रह्मसोरीनयोषीना॥
मतिघटीनयेउरउलटपाना॥घटपापनरेनुवनारमाना॥असदी
सहिरनकसिपनरेसा॥दिटअहमनऊकरकालकेसा॥धरनहीज

जबहि नारायन्कैता मतिचालन्न ईआसुरआमिता॥ बिहसा हिमिलनअंतरजु
बामा॥ कबहुनतरनतत्रिमकामा॥ नृपकहेतबहिप्रतिहारेटेरिमहच
चनकहोसबहीनिफेरि॥ इहिमंडलआवैअवरकोइ॥ बिनुअसुरदेवमा
नुषजहोइ॥ धरिलेहुअचानकताहिकाम॥ महतईनृपतिआपानिस
कंकुलधरमलिदतजुनकरिउपाइ॥ यिकतासजनमयोकहतराइ॥
प्रहलादहतनजोरबिलेया॥ नमसत्रुनवाकहेजानदेया॥ जिहिमंडहो
इहरिनामिजाइ॥ सकुटंबहतोयोंकहतराइ॥ निजदावपरेहरिपकरि
लेहु॥ बलकरेसबेमिलिमारिलेहु॥ कुसियाररहुआयुधसजाइ
मतिसत्रुकहुकैनागिजाइ॥ सबनयोजबेमंडलसुरदा॥ प्रहलादबु
लायोतबप्रतहा॥ नृपदुष्टबिहकीनेअपार॥ करिजतनसबेलावहु
कुमार॥ प्रहलादप्रतिहिचरकलेजाइ॥ चलिकवरबुलावेतेहिराइ॥ प्रहल
दगयोतबयेहमाता॥ हुजातबुलायोबेगिताता॥ रानीबाचातबकलो
जननितबबिजयहोहु॥ सोपदहुपिताजिहकरहिमोहु॥ दहा॥ हुनहि
चाहतरहिजनमा॥ मातापितकोमोह॥ सामसनेहीउरबसतातासोनि
सचलहोहु॥ कबिरुबाचा॥ योकहिचलेप्रनामकरि॥ मातासोप्रहलाद
जाकोसाहसजगबिदत॥ हरितनयोउरमाद॥ १॥ छंद॥ धरी॥ सिसुचले
दुष्टपुरचेनजाइ॥ सोगयोबीचमंडलसुताइ॥ नृपअग्रतयोकरजोरिबो
ला॥ करधनुषतानिबोल्योनृपाल॥ अतिरूपबालसोजाअपार॥ पुनितग
तेषकीनोकुमार॥ हरितिलकभालउरतुलसीमाल॥ बपुपीतबसन
राजितबिसाल॥ परिबेषराहमनुससिसमीप॥ अधरबीचजनुरबिप्र
दीप॥ त्रिनकूटमध्यकेअगनिज्वाल॥ बिचअसुरलिष्योहेपरतबाल
सुरलोकसुनीजबयहअनीता॥ सुरचदसबेहरिनगतिप्रीति॥ इंद्रदिबि
मानिनिगगनछाइ॥ सुरआइसबेअपनेसुनाइ॥ रविचंदरहेथिरहेअ
कासा॥ अरुपवनगवनबिथकेप्रकास॥ पसुपंषिकरतकरुनपुकार
करतारकरहुरक्षाकुमार॥ आकासछयोजनुजलदजाल॥ बनिरहे
देवसिद्धनबिसाल॥ यिकारकरहिसबअसुरजाति॥ यहपुत्रहतन
क्योंउरसमाति॥ राजोबाच॥ करधनुषतानिबोल्योकरूर॥ जिह
करतयेजसोकहाकूर॥ अबलेहुबेगरहुकबुलाइ॥ यहहनतबान
उरबेधजाइ॥ बालकोबाचा॥ दहा॥ जोपसुहोइतोटेरिहु॥ करि
ऊपेहंतार॥ अद्भुतजोतिअनंतगति॥ घटघटमहकरतार॥ १॥ मो
महतोमहकाग्रमहुगजकीटीमहसोइ॥ ताकहटेरिबुलाइयोता
सेअंतरहोइ॥ १॥ मोकहसहुतमोरअनु॥ सबहीघटसबेय॥

तोहिनसरुतबावरो॥ओषिनहीछतअंध॥ राजोबाच॥तुमहमहीकेपुरन्
ये॥रुग्बतावतसारा॥अपनेप्रांननराषहीं॥मारतपाहुकुगर॥१॥छंदप
धरी॥इसमासरलोतुवउदरकूपा॥पुनिन्नयोजनमसुंदरसरूप॥लिगोरल
कायेमोततात॥कुलधरमग्रलोयहोरविभात॥लेतोहिपगयोचटसा
ला॥कुलपाग्रतजोतोहिसुफिकाला॥यहसेसवजेहेअबहीमरा॥पुनिग्रान
हेरजोबनोरुद्ध॥सुषसेजतरनिसोगंधबास॥गजबाजिसुन्नटसेवाबि
लास॥सुषकरकुकुवरधरिछत्रसीस॥हग्छांकिकोनहोजेछतीस॥बाल
के॥ कासुंदरमंदरसेजबास॥गजबाजिकहानृपताबिलास॥सिरछत्र
कहात्रेलोकराज॥बहुसुन्नटकहाजोसेवसाज॥ नृपनयेनगतजेहे
षकारि॥फगगयेजुवाजोजनमहारि॥ राजोबाच॥ तिनहारिजनम
सुनिधूतबाल॥कुलपाग्रभलगेतिहिपरमसाल॥जिहिकरीसत्रुसेव
सहास॥जेनऐसत्रुकेदीनदास॥कुलपाग्रतजेपदिसत्रुपाना॥तिहारिग
येजगजनमजानि॥जलमांझरहतजेसीतकाला॥पंचागनितपहिउष्ण
काल॥बरषारतिमंदिरछांहिजाहि॥गिरहहतजेहिमग्रिमाहि॥स
रथासोंषेहसदानदोहि॥हयमेधकरेदहासुलेहि॥करकंचकोटिग्रे
रयेमहेस॥तबहोहिचक्रबरतीनरेस॥करिउग्रतपसाधूम्रपाना॥त
बसीसछत्रधारतनिदाना॥सुषसबेकहतनबिषकपूता॥नृपग्रेहज
नमनयोहयधूता॥सम्कीएकहातोहिराजकाज॥तोहिदेषिलगत
कुलग्रसुरलाज॥ बालके॥ छितनृपतिकहाजोबिजयकीन॥न
रिग्रवनिकहाजोदंडलीन॥ग्रुकहानयोइंद्रराज॥हरिबिमुषल
गषतकुलहिलाज॥हरिबिमुषहोइजेनृपकहाश॥जगजीयतजन
मजेहेगमाट॥ नृपउ॥हमजीयतपुत्रजनमहिगमाग॥सिरयात
छत्रजेलगतपाय॥सुनिजेनकुदेषेनसोग॥तिनकरतसेवसुप्रस
नहोइ॥अबजरमतिहारोधनपूता॥जोनयोसत्रुसेवकग्रहता॥बा
लकोबाच॥ होउनहिकहतमानुषीदेहा॥उरलनराजनाहिनसं
देहा॥प्राचीनपुन्नतुमलहीसोग॥सिरिकरुजननहीनासहोग॥
नहीछुटतजतनकरिहोनृपाल॥इकवीसचोकनमिहोबिहाल॥
नवकृतहोतसबगरभवास॥सहिदुसहदुषछूटतप्रकास॥उ
तपतिसबजलबुंदरेका॥पुनिबरनरगग्रकृतग्रनेका॥अधबदन
उरयपदृस्वासरूप॥गतिएकराजरकनिप्रबुध॥जिहिजगरज्वाल
सबजरतजाग॥तूनहिनजस्योकाकेपस्ताग॥तिहिकारिज्वालक
रालमांझ॥सोबिसस्योसफिनजेरसांझ॥लगिपवननयोतेछु

धालीन: करवारबिसरिजिनमोषकीन॥जबचलेपारलगिषेलवाल॥त
जिक्षुधापिपासागेधजाल: पुनिनयोजबेजोबनप्रवेस॥ताकनतेजबि
षीयाबिलास: अजिषेकजयोतुवपतिकहाए: धरिसीसछत्रचाम
रचलाए॥यहहेराजजिहिकुलअधीन: अंगरकरतनितप्रतिनवीन
तनछोडिजबेहरिजोतिजाए॥कहिछीयाछीयांसबकुलयिनाए: प्रतिदि
वसपीयतजेनीरवारि: करितासनिगोठीदेतगारि: तिहिदेषिगरबतो
हिमयेराए॥गजबाजिआसनहीसंगजाए॥सोगंधचदतजिहिबारबार
सोदेहीकेहेअंतछार: बहरसनिदेहपोषितनुवाल कैंतासअयेहसं
वसरालए॥कुंठ लीयाबिसेप्रभुहिबिसारिकरि: पूजतआनसरूप: अं
धअंधककंधचढिबोधोसपरतसबकूपा॥धोसपरतसबकूप: गरतकी
वासनजाने: जिहिकादेवहिकिष्ट तोहिनहीनैंकपिछाने: पुनिग्रेहेव
हधोस जुतेडुवदेषेजैसे: आपनयेअवरीस आहिबिसरेप्रभुवेसे
राजोबाच॥छंदपधरी॥जबसुनेनरमछिंदबचनराए॥अतिकोपचढ्यो
उरअसुरआए॥करिक्रोधकहोनृपबचनयेहा॥तोहिराषेताकोंकलि
लेऊ॥तबरहकदेषेहमकुताहि॥किहिसुरगअसुरकवनआहि॥बा
लकोबचा॥तुवहिष्टछुरीहैकालरूपा॥तवनतवहेवाकोसरूप॥ दूहा
जलथलकाष्ठपषानमहा॥हेप्रभुहीकोवास॥घरघरप्रतिबिंबतव
येआपुनबसहिअकास॥राजोबाच॥छंदपधरी॥हरिहूंजकह
तपषानमांहा॥यहधंनकछुपषाननाहि॥पषानमांहहरिबिस
तआहि॥यहधंनबुतावहुबेगताहि॥ बालके॥ दूहा॥मेरोप्र
भुयाबंनमहा॥सोनिथ्यानहीहोइ॥मनबचकरमबुलाइऊ॥दूर
सनदेहैंमोहि॥राजोबाच॥सोमनबचकरिबोकहा॥मरतेहू
नहीहोइ॥तबदरसनकरिबोकहा॥उरतेहूसरपोइ॥गयेबि
देसनिबंधसबा॥तरनीतजोसनेहा॥ऋषिनासीपसुमरिगये॥इय
निवरसहूमेहा॥ मैंमाचौउरअचियहा॥बानप्रानलेजाइ॥तब
धोहरिकरिबोकहा॥मूवेबेदजुआइ॥ कुंडहा॥छंदपधरी॥वेसा
षसुकलचंदसिबिसालरविहोतअसतगतसंयिकाल॥प्रहलादक
रीकहनपुकारा॥यहराइतेंनतवपरिदारा॥धरहरितधंनतरगस
गतअहा॥हलहलतिहूंमिरिअसुरदहा॥कसमसतकमवफनल
सतिसेसा॥उरपरीत्रासअसुरअसेसा॥ बालकोबाच॥तुवनारउ
तारतप्रभुप्रबीन॥हरिरतोऊकबहूनकीन: येमूरदिषावतमे

हित्रास॥अबरेकुदरसकरुना निवास॥दुषहीनहरनदेवाधिदेव॥सबका
लकरतरंगादिसेव॥पितमातजोलकरिअनाथ॥कोदैहैमोतेरीननाथ
सवेया॥अखिलजगतसबआपुनैकरमबाधोनाचतहैतारीदैतुम
हीनचारवै॥करतुअकरतुनाथअनथासमरथहरिबिअतक्रमन
मैनमनकोबदरवै॥अतिहीरसकिरमारहतरसेरीजोपैयहनउचि
तपैबिरदविसरारवै॥मोकूसेपतितकीपुकारजोनलगेतनेछोंडिदेकु
पतितउधारनकहारवै॥ कबिकुबचाछंदपधरी॥यहकहतगरजपुहची
अकास॥इंद्रासनडोलेअतिसत्रास॥सिवटरेजोगनिआसमंथ॥मदसुकित
नयेदिगजमदंथ॥दिगपालचकितब्रहमंडोल॥अकबकतिअमरनहीकु
रतबोल॥थकिरंनिरतिगईतालचुकि॥मुषहासस्वासनिस्वासमुकि॥
जयजयनृसिंघसुरनयेउचार॥ब्रहमादिलिषोतुवटरचोचार॥यहरारंघे
पतबकुटेथंचा॥अवतारनयोनरहरिअसंचा॥ससिसूरज्वलनत्रयचषप्र
कास॥कटकटहिरसनदंतबिकास॥कुलजंत्रप्रदीपतमुषकराल॥सारकुरि
यजिह्वासचाल॥कुलनकुटिकुटिलबंकरसकोय॥उयिष्टसटाबपुपीतग्रे
प॥करनषरबज्रकरफरउगग॥अछोटन्त्रमतसिरपुंछअग॥धुकारस
बदगरजनगहीर॥बिकरालरूपनरसिंघबीर॥प्रनुउचकिहिरनकसिप
पछारि॥धरिगोदनयेथितग्रेहडारि॥दनुउदरसिषरनषरनिबिदारि॥आ
नंदसुरनिजयजयउचारि॥तहाकरेदेवक्रीडास्वतंत्र॥आंदोलहारउरअसु
रअंत्र॥आसुरसंयारमायाअनूप॥हरिनयेकालसगबानरूप॥रतलिमब
दनकरअरुनरंग॥नकुरीबिलासत्रयलोकतंग॥आसुरीगरनडावनि
अपार॥सिसुकरतसनयहाहापुकार॥हमातताताताहेतिहेग॥कुकु
हतआनत्रातानकोग॥षषनासनबेठितकोबिलास॥सुरस्वतसंगु
ननाटकसहास॥करुवरुकाकहरसमरकुध॥षरषरनिपत्रकुग निप्र
बुध॥बेतालतालमिलिहाकबीरागुरुसेतज्ञ दंगरजतगहीर॥काकनी
यकाकत्रंबकत्रहक॥गोमायुचिल्हयधीयहक॥आनंदनारदअंगत्रे
ग॥यहआनिमिलेओसरअनंग॥अरावतआरुहरंआग॥बरकुसम
बरषिदुदुनिबजाग॥सुनकरतअमरकेनोसगान॥नृत्यादिगीतनाने
बिधान॥गंधरबकरतनाटकसुगेय॥उचारबिरदतुबरअजेय॥दिग
जारूढदिगपालआग॥सबकरतसबदजयजयसुनाग॥पगधारिह
सबोहनप्रकास॥सुनरषिब्रहमक्रीडाबिलास॥चवबेरउकनिहि

तमंत्र चीन्हः मुषा चारिउ चित आसिष सुदीन तेतीस कोटि सुर सहत तां
मः सुवन्त हरे प्रभु धरम धाम रिष कहत नरेआनंद देव जगजय तिजय
ति नरसिंघ देवः सकुटंब हिरनकस्यप समूल ॥ हरि क्रोधानल जरि सलभ
मूलः कछु बचेन्ता जिआ सुर कुचारः निसेष हस्यो प्रभु न मिनारा ॥ नयनी
तनये रिष देव रूप ॥ सुन निकट आइ कमल सम रूपः देख बतकीन करुना दि
नाश ॥ नये सांत रूप नर हरि सुनाश ॥ सुन सुर कोटि दीप तिसरीर ॥ बपु दध बि
मल नरसिंघ बीरः नरसिंघ देव बेगरिश्रंकः नवन गत तिलक बालक निसं
कः चाटत नृसिंघ निजरसन निबालः दनु दुष्ट हरन नर हरि दयाल ॥ बरषासु
होत कुसम बिआकासः लेआमर चमर ढारत सहासः ॥ तहाधरे छत्र प्रहला
द सीसः दीय तिलक आपे त्रैलोक ईस ॥ श्रीनृसिंघ बाचा नृपता बिसेष छि
ति तुम हिदीन ॥ पुनि हेरचित जाचे कुप्रबीनः ॥ प्रह्लाद ॥ सुष चारि रतन बिथि
चारि बेदः सोरीनेनेनेगावत सबेद ॥ इंद्रादि सबे सुर सेगलीन ॥ निति निति ह
सुजस माथ नबीन ॥ ध्यान ब्रह्म सधि तहं धारि ॥ दिगवास जये मुष मेक च
रि ॥ त्रयनेत्र देबि जल थल आकास ॥ निरयार पार पायो न तास ॥ कृषि बस
त सयन उद्यान तीर ॥ जल पत्र पात्र पोषत सरीर ॥ द्रिगमूद हिरहत रत एक
ध्यान ॥ पे देव न हि पायो निदान ॥ नव नृत्त क्रम तत पजोग साधि ॥ अष्ट
गउपासत निरउपाधि ॥ अरु होत सिध साधि कअनेक ॥ ये ऊन बताव
त हेत एक ॥ षट मंत्र जु साधत नित बिप्र ॥ सो ईजोति फिरत षोजत सुछि
प्र ॥ जुग सहत रसनि निसनाम जोर ॥ आराध सेषन हीलहत ओर ॥ तुम
रहत आदि मध्य अवसान ॥ कारुन्य रूप करुना निदान ॥ दुरलभ जोति
तुम देह धारि ॥ मुहि दीन दरस दीनो मुरारि ॥ गहि बांह मो हि बेगरि गोद ॥ म
न बंछित पायो सहत मोद ॥ अभिलाष सबे पूरे अनंत ॥ सिर धरे हाथ मो हि
करे संत ॥ करजोरि यहे जाचत कृपाल ॥ द्रिढ भगति देहु दीन दयाल
निति रहे नैन तुव दरस लीन ॥ प्रभु सुजस सुनो श्रवन निप्रबीन ॥ नित
नाम रटे रसना नवीन ॥ अरु रहे रसत बंदन अधीन ॥ सिर रहे नमस्क
त चरन संग ॥ पुनि नाल देस पद रज प्रसंग ॥ सुन जोति रहहु हरि उरस
माश ॥ प्रभु करुन संत परिक्रमन पाश ॥ छबि सागर रहहु चित बेद साषि
नव तथा असतु नरसिंघ नाषि ॥ कीनो पुरान नरसिंघ देव ॥ निज बक्त
न कउ धारन नेव ॥ सब आर निकट तब सुर समाज ॥ सानंद करत महि
मा सकाज ॥ ॥ अथ श्री ब्रह्म सत्त बिनंन ॥ छंद भुजंगी ॥ नमो देव
नारायन नारसिंघ ॥ नमो देव नारायण बीरसिंघ ॥ नमो देव नारायणं

क्रूरसिंघ॥नमोदेवनारायणअग्रसिंघ॥नमोदेवनारायनपुछसिंघ॥नमो
देवनारायणपुरुषसिंघ॥नमोदेवनारायणरोद्रसिंघ॥नमसतेनमोनी
षनेनद्रसिंघ॥नमसतेनमोबिजलानेत्रसिंघ॥नमसतेनमोहृदतेन्द्र
तसिंघ॥नमसतेनमोनिरमलचित्तसिंघ॥नमसतेनमोनिरजितेकालसिं
घ॥नमसतेनमःकल्पितेकल्पसिंघ॥नमसतेनमःकामदेकामसिंघ॥
नमसतेदयारूपदुष्टनिसिंघ॥नमसतेनमःकालनगवानसिंघ॥नमसते
नमःनृपनवनेकसिंघ॥नमसतेनमःहेतप्रहलादसिंघ॥नमसतेनमस
तेलिछमीनृसिंघ॥ अथरुद्रसतुति॥नमसतेनमोहेमकसिपदाहा॥नमसते
नमोहेतप्रहलादचाहा॥नमसतेनमोकोटिसूरंप्रकासं॥नमसतेनमोनृमि
नारंबिनासं॥नमसतेनमसतेसुरंहेतकारं॥नमसतेनमसतेअसुरंषं
यारं॥ इंद्र सतुति॥ नमसतेहितचेतरीनंदयारं॥नमसतेकृतंरूप
अंतंबिहारं॥नमसतेतिवारंनपारंअनीतं॥नमसतेनमसतेतिमायाअ
तीतं॥ अथदिग्पाल सतुति॥नमसतेअक्रेयंअजेयंअनादि॥न
मसतेअलिप्तअछिप्तअबादि॥नमसतेसक्रतुअक्रतुअनाथं॥नमसते
अरूपंसरूपंसनाथं॥नमसतेसमोहंअमोहंअमतं॥नमसतेसबिद्ये
अबिद्यंअमृतं॥नमसतेअकासंअवासंअजेयं॥निराकारनिरधारमहि
मामअमेयं॥अबामंअकामंसकामंउदासी॥स्वयकोटिब्रह्मंकरोमेप्र
कासी॥स्वरमेधओघंजितंगर्जसिंघ॥नमसतेनमसतेलिछमीनृसिंघ॥
अथरिषिसतुतिनमसतेअपारंअधारअनाथं॥नमसतेअचारंबिकारंअ
माथं॥नमसतेसधीरंउदारंदीनपीरं॥नमसतेहितंगोद्विजंधरमधीरं॥
कबिरुबाच॥कुंडली॥उथाप्योप्रहलादहरिअवनीनारउतारि॥श्री
नृसिंघसुरसंगतबाप्रभुबयकूटपधारि॥प्रभुबयकूटपधारिदेवदु
दुभिदिब्बाजता॥गांनकरतगंधरबतानरंनादिकसोजता॥बामंगस
गकमलाबिमला॥आरतिबंधमुरारि॥बिरदनयोजुगजुगबिरिता॥ह
रिप्रहलादउधारि॥१॥ छंदपधरी॥ अतिदुषितकयाधूतसाअ
सुरनअजिरपरेतहाअसुरराइ॥उरलगेजननिप्रहलादआनि॥सबि
सेषकरतकरुनासबानि॥माताबाच॥कहिसाधुसाधुपुत्रहिसमा
ता॥तवप्रानधंनतिहितिरेता॥सग्याहिकरायहगतिसत्तेवा॥धरिदे
हतेनिजकरनिदेवा॥धरमिष्टनयोसुतत्तसधीरा॥सुनछुटेमरनजं
मनसरीर॥ रानीबाच॥दूहा॥ गतिजैसीयाउष्टकहो॥क्रीनक
कहोति॥तोहितहरियहदेहधरि॥मारिमिलायोजोति॥कबिरुबा
छंदपधरी॥ नृपनिकटकयाधूतबहिआइ॥ श्रीयचरनरहीमसत

कलगाइ॥ कुन्ती प्रानीबाच॥ सतरानेबीतोसमय॥ वृथाकस्योन्परो
स॥ अपकमायेकरमये॥ अबकिहिकीजैदोस॥ अबकिहिदीजेदोस॥ आप
हीकरमकमाये॥ सबदिनजानेऐकऐककेपंथनधाये॥ पुनिलागेपिछतो
न॥ समयबीतेसतरानें॥ छंदपधरी॥ प्रीयजोतिनसूझीतुमहिआनि॥
परगासिरहीगजक्रमप्रमानि॥ वहजोहिदईनारदबताइ॥ सिसुयहीग
रभगतचितलाइ॥ अपकरकराइनहीकहीतोहि॥ मैजानिकऊतोहतेमोहि॥
यहनयोब्रहमग्यानीसपूत॥ फलनयोतासतुमकहअकूत॥ तुमपंथबुहार
तनरकजाना॥ सुतकरेसबियिसदगतिसुजान॥ सुतनयोसाधतिहितन
सूझ॥ इहिगरभमांझसिसुयहीगझ॥ सुनपंथयहेइहिबालबेस॥ तुम
त्रासदईयाकहअसेस॥ तुमहतनप्रानयाकोबिचारि॥ प्रभुनयेप्रगट
तबथंभफारि॥ रावरेऊतेकूतनरकजोग॥ सुतसाधनयोकिऊकरमजो
ग॥ दूहा॥ ताहेसंततसेइजे॥ साधसंगमनलाइ॥ जैसेंजातीसंगतेंकू
करगंगान्हाइ॥ ९॥ छंदपधरी॥ पतितोहिनसूझेतप्पांन॥ हरिभग
तिप्रगटनहीबंधेप्रांन॥ तपसांबिजोगनहिबियिसमेथ॥ बियिजुकत
नकीनेंबाजिमेथ॥ सतसंगमजेनहीचितलाइ॥ बससरबगरबुहारे
वजाइ॥ उदयासतराजअरुअष्टसिधि॥ गजबाजिसाजसुषनवेनि
धि॥ यहगरबनसूझेतुमहिसांमा॥ प्रीयचलेअकेलेछांडियांमा॥ दू
हा॥ कहेकयाधूछांडिहरि॥ नरकपरऊजिनकेरि॥ आनदेवकेसेवक
हि॥ निसचयमुकतिनहोइ॥ १॥ ध्रुवबालकहरिउधरे॥ तिहिउरधप
दपरइ॥ टिकरहीप्रहलादकी॥ कीनोसांमसहाइ॥ २॥ कीनोराजहिन्ट
सकृत॥ प्रेमसहतप्रहलाद॥ नारदरेनुवलोकके॥ वासवरेबिषाद॥
होतदुषीदुषदीनकेसंततकोलतसाथ॥ संकट हरनअनाथकोदेष
ऊआयअनाथ॥ ३॥ हेमकसिपरिपुसंघरो॥ करेलगनउधार॥ इहिंक
रनरहरप्रन्नभयोजूमिअवतार॥ ४॥ कबित्तबाच॥ छंदपधरी॥ प्र
हलादभयोराजानिसेस॥ इकछत्रतपोअवनीनरेस॥ गोबेदबिप्रर
तनीतिनाइ॥ तिहिराजधरमचलिचऊपाइ॥ रसअवतअवनिओ
षधअसेष॥ तरलताफलतफूलतबिसेष॥ प्रतिग्रहोइप्रजाप्रसाद
कालरीजुनकसुनसंषनाद॥ कीरतनकथामुषबेदबाद॥ परिताग
कीनलोकनिप्रमाद॥ इकछत्रराजप्रहलादकीन॥ पुनिभयेअमर
हरिभगतिलीन॥ तिहिपुत्रबिरोचनदयोराज॥ सिरधरेतिलकसुन
छत्रसाज॥ दूहा॥ सुनतकथाप्रहलादकी॥ साधेप्रीतिप्रकास॥ जाके
ओरनलोकत्रय॥ जाहिनहीबिस्वास॥ १॥ सवैया॥ जादिनआनउपा

इथकैसबतादिन्नाइसहाइकरैगो॥ सोकंअलोकबिलोकत्रिलोकर
लोनरपूरिसुमरिटरैगो॥जैसेंचढेगजराजकीपीतिलोकुकरनादे
हसिमरैगो॥ जोकरुनामयरामकृपालोकहाजगकीअकृपाबिगरे
गो॥ कबित्त॥ इहिप्रकारअवतार रूपअद्भुतजुधास्थे॥कोटिब
ज्रनषकरिन उदरहिरनाकुसफास्थे॥उधारेप्रहलाद राजमहि
मंडलदिनो॥अकुकीनोंअसुरेस सदाअपनोंकरिलिनो॥यहनये
बिरदजुगजुगबिदित बिस्वसुजसबिसतारयो॥नरसिंघदेवनररू
पसुकबि अवनीभारउतारयो॥१॥ इतिनृसिंघअवतारचरित्रसम्प
रण॥ नामआरहटनरहरदासेनबिरचितं॥ अथश्रीबामनअवता
रबरननं॥कबित्त॥ अबबामनअवतारकथासुनकुसंतम
नलाइ॥बलिबंधनबपुबिसतस्थे॥तिकुपुरमेनसमाइ॥छंदपधरी
कारनरूपहरिकमंडलीना॥मथिषीरोदधितहारतनलीना॥सबरतनज
थाबिधिसुरनिपाइ॥सुरलोकनयोऋषितसुनाइ॥अबरूपमोहनीत
बचुलाइ॥इछासुआपहरितहआइ॥दितनिजमारइप्रभुसुरादीना॥प्र
भुनप्रसादसुरसुधापीना॥पुनिरहेसेषसोअमृतपाइ॥लैचलेसक्रसुरपु
रपलाइ॥आसुरनिइंद्रोक्योअमांना॥हमजीयतलइकोअमृतआनि॥
जाजुलसुरासुरस्तयोजुध॥कछुकालअमृतकारनसकुध॥रनजूझि
बिरोचनपस्योराज॥बलिकवरसहतदानवसमाज॥जयजुधसक्रदान
वसधारा॥ लेगयोसुधासुरपुरसुटारा॥रनजूझिसुक्रआयोरिषीसंत
लहीनीसजीवनिअसीस॥रनजूझिनपायोसीसगांमा॥पंचतबिरोचन
भयोतांमा॥सबलहेअंगजिहिजिहिसंगेरा॥बलिकवरजायेअरुअसु
रओरा॥रनजूझिबिरोचनसुजसलीना॥सोतिलकछत्रलैबलिहिदी
न॥गुरराजसुक्रभयसक्रमानि॥लैगयेबलिहितबसुतलथांना॥रा
जाभिषेकबलिभयोजानि॥सबभयेदैतएकंत्रआनि॥बलिस
नानपासनबलिबिधाना॥षितभयेजथाक्रमसुभटथांना॥गुरर
जसुक्रतिहिसभाआइ॥बलिदरीमध्यबैठकबताइ॥सिष्टासन
सुक्रहिअयकीना॥तबसुभटभयेमनमहमलीना॥उठिगयेसबैकहि
सुरनिसाल॥द्विजकरिहौंदिगबिजईनृपाल॥गुरराजलिषेतबछोभ
चित्त॥इकराजजग्यकरिनोउचित्त॥अकरहेबलिकछुककाल॥म
षकरेसिषटोमापताल॥तिहिअगनिकुंडरथनिकसिएकं॥तनत्रां
नसहतआयुधअनेकं॥गुरकहेबलिहितबनिरबिष्मारा॥दिगबिज

यहेऊ तवमषप्रसाद: रथचढेराजतिहिबिजयकाज: सनधबधससत्रनिस
माज: तिहिरथारूढदेषेनकोइ: यहहनैसबनिनिरसंकहोइ: नृपजीतिसबे
बलिबलबिधान: सुवलोकलयोनुजबलप्रमान: बसकरेनागमंडलबि
सेष: प्रतिजुधसमनकोअरिअसेष: यहसुनीसुरनिजबहुसहचात: तव
नोबिष्णादउरनहीसमात: सबलगेअमरतहातजनलोक: सुनिइंद्रबढे
रअतुलसोक: सक्रादिसनानिलिसुरसमाज: कसिपप्रजापपहुगयेसक
ज: कारननिवेदकसिपहिकीन: दीयबिदासबनितहांअनयदीन: उ
परेसकरेकसिपसकेत: वृतकरऊअदितुमबिसुहेत: पतिबचनप्रीया
आपासुपाइ: सबसेषकरेपतिहितसुनाइ: जबनयेबरषब्रतकरतजांनि
बिधिजुक तजथाचितएकथांन॥ श्रीभगवांनोबाच॥ हरिदयोतहादर
सनदयाल: हमबचनलेऊहृतबिलबिसाल॥ अदितबाच॥ पुनिकहेअदि
तहरिसोंप्रकास: बलिजयोबिजयसुरपतिहित्रास॥ श्रीहरिबाच॥ हरि
नयेसदयतहाकहिसुनाइ: ऊसहआहिधरमहिसहाइ: बलिमहाबलीअ
रुथरमबीर: प्रतिजुधनहिनकोऊसमरबीर: नवउदरअनुजअवतरोआइ
कैइंद्रभ्रातकरिऊसहाइ: बरपाइअदितउपजबिस्वास: हरिनियेतबे
निजपुरनिवास: बलिलयेतबहिबलइंद्रथांन: इंद्रादिनयेपालायमा
न: सुरनजेसबेतजिथांनथांन: कबिकहेमंत्रबलिश्रेयमांना॥ उरबा
ध॥ छलबलहिउपाजितभुवनरेस: अद्भयनहोतबेरोपदेस: धरमबल
लेतछितिनृपतिकोइ: अनेककलपअद्भयसुहोइ: सतजग्यकीयेसु
रराजहोत: सुरलोकतबेनृपताउरोत: धरमाधिकारउरग्यांनदीप:
बलिमहाचक्रबरतीप्रथीप: तिहिग्रेहसमधसुरपतिसमांन: धरमा
धिकारबलिअप्रमांन: तिहिसमयसुबलिउरिमप्रबीन: सतजग्यक
रनसंकलपलीन: मषहोनलगेनांनाप्रकार: सबनांतिबसकीनोंसंसा
र: दनुदेवमनुजसासनअधीन: इकऊनसबिधिसतजग्यकीन: इह
नरीसबेसुरलोकबात अतिदुसहइंद्रउरनहीसमात: तहांनयेनीत
बासवसतेष: अतिबलीअसुरमषकृतबिसेष: परब्रह्मगयेबासव
पुनीत: सबकहेबिधिहिकारनबिनीत: परचंडरेतअतिमषप्रसाद
रिगबिजयनयोवहनिरबिष्णाद: सुरलोककाजवहिजतनकीन:
सतजग्यकीयेपुनिऐकहीन: आरंभनयोतिहिमषसमूल: सहिजा
इनहिनहमउरहिसूल बिधिसक्रनयेआरूढबिमांन: कृतगमनज
हांकरुनानिदांन: परब्रह्मदेवपोढेपुनीत: जलतलपरचितमा
यअजीत: धुनिबेदकरीतहांब्रह्मआइ: सुनिजगेसेषसाईसुनी

र तुम आइ ब्रह्म बासव समेत: मोहि सम प्रबोध्यो कवन हेत॥ बिधि बाच॥ नि
जदास प्रभु हि करुना निवेर: बिधि कहत जये तय सब्रुनेर: लोके सथपेतु
मलोक लोक स्वछंद बसत अपआपओक मृतलोक तपन बलि दैस परा:
थरमाधिकार मय बलि सहार: सो लयो च हत अब इंद्र पैन: इक ऊनन मेष
सत बिधान आरत नयो ति हि मेष हि काज मन छुचित होत ति हि देवराज: सुरले
क होत आसुर संचार: यह जानि करी प्रभु सों पुकार॥ श्री ह रि बाच॥ धारमि करा
जरत बेद नीति किहि हेत हतो बलि जग पुनीत मरजाद बेद लंघ हि नमूल: स
तत सहार ति हि हु समूल॥ इहा॥ बिधि बाच॥ उपजे प्रान पि साच करूं नो छु
प्रगला त्रिनषार: तके लीने उ चितन हो: तजि ओर देव सहाइ॥१॥ हरि आइ ह्य
न कारन बरन को: जो उरत न प्रकास कहि बाधो जग ति के: कोल तय बनि
आकास॥२॥ बिधि॥ जो हि बाधे जग ति के: कोल तहो म हाराज: करि हो स
क्स हाइ तुम: आपथ पे कीलाज॥३॥ संतत बेद स हाइ तुम: आरति बंध
उदार सुरप नि तुम ही करि थप्पो: आरत करत पुकार॥४॥ रचे सुइछा लि
कत्रय निज लीला बिसतार: लोक प्रजा दाइरत हैं करि हो तुम ही बिचा
रा॥५॥ इंद्र बाच॥ छंद पधरी॥ इहि जा ति ब्रह्म बसु करि बिचार: पुनि ग
येत बे निज पुर सुदार: हरि त्रयेत बे चितत बिसेष: अपराध बिना अउ
चित द्वेष नृप बलि पुनीत बे दिक प्रतार: किहि हेत हतो ति हि बिय रन
व: बसु त्रात हो इ लघु ब्रह्म चार तब बिहत कछु क करि बो बिचार
कसि यरिषी सपितु अदिति मात: बसु अज हरि त्रयेत अनुज त्रात: नव
मास द्वादसी सुकल पंह: भय प्रान जनम बामन प्रतछ: इहि जा ति इंद्र
त्रात अनूप: हरि त्रयेत बिस्व बामन सरूप: प्रारत कस्यो बलि नज
प्पकाज सुक्र हि सब चि व आसुर समाज: बिधि सहत होत तहां मेष बि
धान: हव्य आदि होम द्विज बेद गान: जग्य सन बेद बलि इथी प: संग्या
बलि नाम अंग समीप॥ इहा॥ को ऊ जाच त आइ कछु बंछित देत छत
स: कलपलता जुत कलपतरु: देह धरि जनु दीस॥१॥ कारन बामन रू
प करि: हरि आये बलि द्वार: कौतक हित सग नगर के कोल न लोक अपा
रा॥२॥ छंद पधरी॥ इहि समय आइ बामन अनूप: नेष्क ब्रह्म चारी सरूप
अपत त्रिपुंद्र सोहत ससोह उपवीत कंठ मन हरन मोह: कुस दंड अद
मालप्रकास कर बामक मंडल सावकास: कोपीन मेखला कटि प्रदेस
मेषला अजिन सोभित सुदेस: घन स्याम सुभग मुष बेद चारि: बानी
बिलास श्रुत मोह कारि: लष्टि काधार जरजर सरीर: सिर होत कंप अं
तर सधीर॥ प्रतिहार बाच नृप कीन गुदर प्रतिहार जाइ: बामन स

रूपद्विजद्वारआए: थलजग्पली नबामनबुलाए: नृपनिकटतबेद्विजदेव
आए॥ बांदु नउ॥ आसिषसुदीन बामनअसेष: दिटनगतिहोऊ संजुत
बिसेष॥ बलिउ॥ कोआपुनकहियेअतिथतेव॥ बांदु ना॥ ऊआहिअ
पूरबब्रह्मदेव॥ बलि उ॥ स्वछंदबासविककवनगेम॥ बांदु ना॥ थि
तअषिलब्रह्मसजितसुथाम॥ बलिउ॥ सुनकालकवनरहकसरूप
बांदु ना॥ नवसमऊऊमोहिअनाथरूप॥ बलिबाच॥ कोबंसपिताउ
तपतिकाल॥ बांदु ना॥ मोहिनहिनाथसमरननृपाल॥ बलिउ॥
अलिलाषकवनचितधरिअमेष: कलतेऊकरऊपूरनकुदेव: रूस्वर
नरतनसजासयेह: कंनाहयबारनंगोसदेह: अरुमहादानषोउसस
बास: रूमीसन्तोमपन्ननबिलास: जुतदेसदीपषितिषंकलेऊ: तहा
करऊराजआसिषसुदेऊ॥ बांदु ना॥ त्रयपरगरूमिममदेऊमोहि
स्वसथानबसहिनिरन्तीतहोहि॥ बलिबाच॥ जाचंभाकीकअलप
दान: मोदेतरूमिकात्रिपदमान: दातासुषेत्रअरुपात्रकाल: अनु
सरवऊजाचऊतातकाल॥ बांदु ना॥ येबचनजुकतहेतुमहिरूप
प्रहलादपितामहधरमरूप: तुमरेतअधिककोउनहिराज: त्रयलो
कसहतसंपतिसमाज: संतोषसहतअपनेसमान: मागोनरेसदी
जेसुदान॥ बलिउ॥ रूजदपिप्रयोजनहेरिबीप: तोदेसषंकलीजेसु
दीप॥ बांदु नउ॥ नवषंऊसहतदीपतिसमेत: तोन्तीनकरेसंतो
षलेत: जोन्तयोअसंतोषीद्विजान: तोब्रह्मतेजतिहिछांडिजा
न: मोहिआहिप्रयोजनइतेराज: संतोषमानिलेऊसकाज: चि
तदयाजुकतजोदेयराए: रूवहेमोहित्रयलोकचार॥ सुकउ॥
कुलगरूसुकदरसीत्रिकाल: तिहिकिलोनाहियेद्विजनृपाल:
बलिउ॥ नृपगरूतबेपूछोसहास: कोआहिकहेअनुक्रमप्रका
स॥ सुकबाच॥ हरिकपटदेहधरिसुरसहाए: तवजग्पबिगास्योच
हतराए: मागतत्रिपैऊछितकाजआक: छलसाजिछीनिलेहैत्रि
लोक: पुनिकहोकिऊनदीनेबताए: कतहासिरूपसुरपतिसह
ए॥ बलिउ॥ छनमांऊकोटिब्रह्मंऊदेहि अहंनागिसुमोपैनी
षतेहि॥ गुरु बाच॥ छलछीनिलेहिछितराजसाज: तिहिदयेथ
रमकहामहाराज॥ बलि बाच॥ दहा॥ जाचकहरिसोकपटजु

ता॥कुनि हकपटेदेता॥याकोसुकबिसेषफल॥बेदबिमलकहिदेत
॥१॥ आपतहाद्विजरूपधरि॥ असुरराजसहाइ॥ मोसोसुकृतीओ
रकोः तापहलहकआशा॥२॥अगनिजरावतदब्यबहु॥ मषकोजतहि
तदेव॥ हाथमाहिअबलेतहे॥ हरिदेवनिकेदेवा॥३॥कबिकु॥ उहरतट
नदिनखदा॥ षेत्रतहानृगुकछ॥ तहाकरतबलिराजतव॥ पावनजग
प्रतछा॥४॥छंदपधरी॥गुरलिओतबेनृपनियमकीन॥ तवतयोआपु
जलपात्रलीन॥ द्विजलेकुस्वसतिकरिकसोराज॥ संकलपकरतहम्पु
निकाजे॥ संकलपहेतबलिकरपसारि॥ जलपात्रसुकरुंयितद्वार॥
चयेकोणगकृतवदुष्टनाइ॥ जलचलतनहीतवकीयबिचार॥ हरि
करेतवेकुसकरिप्रहार॥ द्विजदानिनिवारनफलसुपाइ॥ नयेकोणग
कृतवदुष्टनाइ॥ जलमेलिहसतसंकलपलीन॥ बलिनृमित्रिपदबां
मनहिदीन॥ नरिपेठलेकुतिजपरद्विजात॥ स्वसथाननृमिजोमनसु
हात॥कबिकु॥बपुबधेतहाबामनबिराइ॥ सुरराजकाजतहाकपटथ
इ॥ हरिकंग्रहनृगुत्रीयाकीन॥ अनदिष्टचक्रतवसीसछीन॥ पुनि
आनिलगेकरअसुरओर॥ तेईमारिपछारेगोरगोर॥ पदएकपूबपछि
मप्रजंत॥ द्वेआदिउतरदहनदिगंत॥ क्रमत्रितीयनृमिकचरनकी
न॥ ब्रह्मकछिदेरकउरधकीन॥ परब्रह्मचरनदरसनजुपाइ॥ बि
धिकरीतहापूजाबनाइ॥ पुनीतकमंडलसलिलआनि॥ कृतअरघ
पादपदआपपानि॥ सोचलेनीरहरिचरनसंग॥ त्रैलोकगमनपाव
नतरंग॥ तिहिरिधनयेगंगावतार॥ नवनतकरनउधारपार॥
नृगगनअतलोअरथपाइ॥ पुनिरहेअरथतवपूछिराइ॥बाव ना॥
अबनृपतिबतावकुगोरकोइ॥ त्रयपरगतहापूरनसहोइ॥ बलिउ
छितिदईतुमहिबामनबिनीत॥ ममसीसधरकुअबपदपुनीत॥
बाव ना॥नृपरहतअरथपदनृमिसेष॥ कोहोइसीसपूरनबिसे
षा॥बलि उ॥द्विजनृमिसबेममसिरअधीन॥ तुमअरथपरग संदे
हकीना॥कबिकु॥हरिधरोचरनजबचांपिसीस॥ बलिगयेसुतल
दानवअधीस॥बाव ना॥बलिसाधुसाधुकहिसुरसमाज॥ तहाकरी
सुमनबरषासकाज॥ प्रभुकथेतहाबामनपुरान॥ धरिनामत्रिबिक्र
बलिबिधांन॥ बलिराजनयेमनकाजसिध॥ पुनिकरतनयेबिनै
तीप्रसिध॥बलिउ॥बरदेकुयेहेहितचितसमोइ॥ हरिचरनदर

सर्वोत्तरन होरा॥ बांह नबाच॥ बलिअटलराजतवसुनलहोऊ॥ पुनिलेहु
मांगिजोहिमनहिभोऊ॥ कबित्त॥ बलिनयेतहाहरिचरनलीन॥ क
रजोरिसमुषतनप्रनितकीन॥ बालिजाबरदेऊयहेदेवाधिदेव॥ सबका
लरऊरतचरनसेव॥ प्रभुकहेतहाकरुनांसकास॥ मैरऊत्रेहतवचतुर
मास॥ तेतीसकोटिसुरसहतनाम॥ धरिगहासुबसिऊधारधाम॥ बलि
सुनयंपतवसतनबोल॥ उनसोसुकसोनिसचयअनोल॥ कछलन
लगोहोतोहिराज॥ सोछलमोतोहिसुमसतसाज॥ ममप्रबलअगमम
माअपार॥ बिस्वहिरंतनकोबिचार॥ करतारनपायोपारकोइ॥
सतबलहिलईनपछीनिसोइ॥ बिस्वासयातमैकपटकीन॥ नहीक
रतदपिसुममनमलीन॥ यहसुतलराजसुरसुरसमान॥ चिरजीवक
रुबलिबलनियान॥ सुषसमधरंदकीरहाआइ॥ सोकरऊचोगह
महैतहाइ॥ रांनीबाचारांनीतवबानीकहिसाल॥ तुमहेऊलेऊ
तुमहीदयाल॥ हतासुपावइहनाहिकोइ॥ कीनोसतयोकरसोसु
होइ॥ बिऊवलिपायोबरबिनीत॥ सौनाग्यअमरपदईपुनीत॥ क
बित्त॥ यहसुनयसुकमतकृतमलीन॥ हितस्वामिकरतममअहि
तकीन॥ हैहरिहिश्रीपकरिऊकुदाउ॥ नगवंतलसेकबिचितचाउ॥
बांह नोबाच॥ लतबामनसुकहिसमाधान॥ येकाछितदपिदुवस
मनआन॥ अपातम्पातनवसमुकआइ॥ सबतासअसुनकैहैसु
नाइ॥ कबित्त॥ ब्रहमादिबिनयकीनोबिसेष॥ आकासबजेदुंदु
भिअसेष॥ प्रभुकरेबिमललीलाबिलास॥ ब्रहमादिसहतबैकुण्ठ
स॥ कस्योअनुयहईकोइ॥ अरुबलिकोउधारकीनअ
नयसुरलोकसबनोबामनअवतरे॥ जाकेकोऊनाहिअर
नाकोकरतसहाउ॥ सेवककेसेवकतये॥ नरहरप्रभुहिसुनाव
कबित्त॥ अदितकुछिअवतरतऐकसिपत्रजेसपति॥ दिग्यसहे
बरदेनराज॥ लयुत्रातधरमहित॥ बढेबिसदबिग्रहबिराट॥ निग्रहि
हैतेसुर॥ करतबाधसुरकाज॥ कस्योयेकाछिअसुरएर॥ तिऊपुर
नमातबिष्मातनन॥ ब्रहमचारकृतबरबरन॥ कारनसोबामन
रूपकीय॥ सहासुकबिनरहरसरन॥ इति [illegible]
[illegible] कहिनिमनरा[illegible]॥ उहवित्रिकुटचलप्रसिध॥ स

बजंतसुसंगम: जोजनअयतउतंग अयतमेषलाअनूपम: महाअंगत्रयमिल
त हेमअरुतारलोहमय: दुगध सिंधकेमध्य रतनसुतधातसुसंचय: तरत
नानिरंतरफूलफल बिमलनीर निरुरबहत: गंभीरगुफाचकुओरगिर
सुष निवासरिषबररहत॥१॥छंदृपधरीगंधरबसिधचारनसगांन: मि
लिकहतसुजसमहिमाअमांन: बिद्याधरकिंनरगनबिबेक: निजभाव
करतबिहरतअनेक: मिलिगानतानरूपरसतूर: प्रतिसबदगुहाकंक
रपूर: उरगादिजंतुआश्रितअपार: सुषलहतजथाबंछितसुदार: कुंक
रसबदसिंघादिहेत: आरुनजंतपहीकपोत: निरुरनिपूरिखिदिस
रितनीर: सुररमनितहमंजितसरीर: सोजनुसहजसोगंधसंत
आमोदप्रसरिदिसिदिसिनअंत: मिलिअनिलचलतसोरंतमांन: स
बकालसुषदपरबतसथांन: परबतसमीपरकबनपुनीत: सोबरन
देवरहकबिनीत: रितवंतसंघनबनस्करसाल: सबकालफलतफूलत
सुदाल॥छंदउधोरा॥सरएकतिहिबनमांह: अतिअमलनीरअथाह: म
यादिमनिमयमूल: कनरतनबालककूल: तरकलपबलीयतांम: घन
छांहअमहतधांम: बनकनककमलबिराज: रविउदितप्रफुलितराज
भ्रमिनिकरगुंगीयनंग: उनमत्तरत्तअनंग: ऊंकारपुहपनिफूल: भर
भ्रमतअलिरसमूल: तहालताकुमदनितंत: बहुसुमननिसिबिग
संत: सोगंधसीतसमंध: अतिपवनत्रिबिधिअनंद: मिलितरलतरुव
मोर: चितमत्तचितचकोर: रसहंससारससंग: तहानीरबिबिधितरं
ग: जलजंतअगनितजाति: सबबसतसांतिनिसांति: नवनकचकनयांन
मिलिआहतंत्रअमांन: फतकमगमकरकलोल: तरिमीनटोलनिटोल ज
लउरगदादरजीव: सबबसतअपनीसीव: बनमहिषमउगबराह: अति
प्रबलअलयअथाह: चमरीसुअवमृगचित्र: बनसिंघसरसबिचित्र: न
वजीवअनअनसांति: नहीजोनितिरजगजाति॥१४॥ कबित॥ रचडिंडि
ससबिलास: प्रगटरकंबसतपृथीपर: ऐरावतीअनूप: पुरीबसिबर
नचारिबर: सबसंपथसंजुकत: निरतनिजकरमनिरंतर: इंदुमनि
तहाराज: करतनपधरमधुरंधुर: आग्पाअषंडजुतदंडजग: देसकोस
चतुरंगदल: भगवंतपरायनदृढसांति: तपतएकरविचक्रतल॥१॥
एकसमयनिसकरम: करतबेदिआसन: मोनवृतसंजुकत: नेत्रमि
लितपरायन: लग्यौध्यानएकाग्रचित: मनबाचकरमजुत: सिषा
सूत्रकरतुलसीमाल: रसरूपसांतरत: निसीमसिमोमनपरब्रह्म
मिलतनीरज्योनीरमह: कहीयतजुहंसरईयनकी जहासचेतगु

नम्पानतहांपु २॥ छंदपद्धरी॥ निजबसतकुलाचलतपनिधानः आयो अ
गसतिमोरीसिषसमानः नहीकस्योद्धारपालकनिषेद आयोजुमुनि मुनि
वरसमेधः जिहिग्रेहकिरतनितकृतराजः अनिवारतआयोद्विजसमाज
नयोग्रावनकुलनगअकसमातः नपभ्यानाबसथितनहिनिपातः असम
यनहीबंदनअर्थकीनः मुनिनयोग्रपूजितमनमलीनः उरबढ्योक्रोध
रिषराजआनिः आरकतनेत्रमुखबिषमबानिः अतिक्रोधकंपरोमांच
अंगः परजलोअनलजनुघृतप्रसंगः॥ अगसतिबाचा॥ मुनिकहोस
येनपमदाअंधः बनकरीमनजैसेबिबंधः नपहोकुजाइबनगजबिसा
लः मदअंधरहहिसंगसरबकालः कबकुनहितहितनेदकोइः हमरे
कनजकुमदबिवसहोइः नपलिषोलूतनावीनिदानः मानीसुदेव
मायाअमानः पुनिउग्रोराजकंपतसरीरः अनसहनआपअंतरअ
धीरः कीयराजतहाबंदनअनेकः बिसतारबिनयबानीबिबेकः इं
द्रउमनि॥ प्रभुकरकुदंडअथवाप्रसादः मैलयोधारिसिरअप्रमादः
कुकृतोध्यानपरसुषनिदानः अहकाजबिग्रनांहिनगुमानः रिषसि
वतनुमहीधरमरीति अनसमझिआपदेबोअनीति जोकरीबकेबि
धिअबिधिजानि सोरहीसबैमैसीसमानि॥ कबिरु॥ हीनतादेषिरि
षनयेदयालः कीनीअनीतिसोबसोकालः॥ रिलिउ॥ नपदंडयो
हमनिरपराध॥ कबिरु॥ सोनयेनजितमनसमझिसाध॥ अगसतिउ
समझावकलेकुंभजसधीरः बिनुजुगतेआपनरहेबीरः कछुकाल
बितेतोमहाकाइः तुमअवसिकुंजरीजोनिआइः करिहोहरिसमर
नअंतकालः तदपसुझैहोतिहीकालः॥ कबिरु॥ गवनोअगसति
देआपअंदः दिनतेहीछयोनपतिदंदः पृथीपतयोगजअवधिपा
इः सोजनमत्रिकूटाचलसुनाइः सतपंचकरनिबद्धकासंगः मद
मत्तछरितघमतमतंगः संप्यासहअगजजूथसाथः निसिदिवसक
रतक्रीडासनाथः मदगंधलुबधअलिमतमत्तः गुंजारसबदतरंग
वनरत्तः षटरितअनेकसुषकरतबेलः मनमथबिलासरतिरमनि
मेलः क्रमजुकतआइतहांउसकालः जलसुधाअनिलतयेअन
लज्वालः रितवंतबरनबनसयनछांहः मातंगजूथतिहिरहतमा
हः जलपानसमयगजजूथजानि मिलिगयेसरोवरबिषामा
नि सबपैगिरिदअपनेसुनाइ जलपानकरेसरमध्यजाइ मि
लिकेलिसलिलआंदोलमानः मनुनयोबकुरिसागरमथानः

जलजीव बिकल कलपंत जोनि: थल परे आनि पाव हिन थोनि: अंतक स
रूप जल आह एक: आवरति त्रीय परि जन अनेक: तिहि समय रोस से
वत निसंक: बिधि लिषत अंक बस दिव सबंक: जल हलत जोनि त्रीय पु
त्र जाइ: जाजुल्य आह जमसो जगाइ: इहि गेरउ पइ होत आज: कुंच
लकुअंत सब छोडि काज: सुनि अरुन नेत्र रसना सचाल: कोपेकृतांत
जनु प्रलय काल: ऊगेज चात अरसात अंग: संचरे अनल मनु अनिल
संग: उग्रिच सौ दैव प्रेरित असंक: अनिथान हिन बिधि लिषत अंक
हाकुन सुआह गज राज रोषि: बिसतार करे तंताबि सेषि: पर लय बोधि
चांस्यो प्रकास: पसरे जोत ताबरुन पास: कृतबध आहत ताकरूर: सं
अलो राह मनु दिरद सूर: जब बध चरन बस नयो जोनि: अंचो सुआह
उर क्रोध आनि: गज तीर नीर दिसि अंचिया फुः बलमह्य होत जोजुध बा
फुः गज अग्र लो दे षि गज जूथ गाजि: सबल गेआ निबल बुधि साजि: दे
सह सउ फुदि सिकर तदाउ: संग्रलो नाथ कीनो सहाउ: गज गिरे आस
आछेट गोम: बस बात पत्र जो त्रमत छोम: प्रति जुध होत गज या
हपूर: उछल हिस लिलन हो सूर फिसूर: मथि देव दनुज गज ग्राह मांन
सुन धीर सिंधु सरनये समान: जल उछलि गगन ऊसिमीन जाति: बि
परीत काल बरसो बिन्नाति: दिन होत निसा बढ़ित मद्दि गंत: बिपरी
त गगन गत जल बिहंत: नय नीत जंत जल थल नमंत: तन नये षीन ज
नि जुगंत: जुत छुधा त्रिषा नये दीन जीव: दिन प्रलय दीस रक्क कद्दव
जल बिबन्नये थल थल निजारः सरनीर उछलि नाहिन समार: यो
नये बरष दस सत बितीत: नव ऊत चरा चर सब सनीत: पति बि
थसो फबादे अपार: करि त्रि त्रि हि करनी पुकार: गिरजंत दिर
द जल जंत ग्राह: थकि यट तब दत बल जल अथाह: बिनु नद बर
ष गज सहस बीत: बल नये नंग उरबढ़ी नीत: नव नदी जीव ग्रा
स सुनंग: अति बिह्वल बारन अंग अंग: छूटे कुरंब बल नये छी
न: देषो गजेस अति दीन दीन: गज षेवि करे जल मग नये ग्राह: थ
ल लगत नाहि पग जल अथाह: करि राज सुजानि अंत काल: सु
धि नये जन मपूर बसु दाल: अनमगन रहो जब सूंड अंत: सुष्टि क
मात्र देषत महंत: बहि त्रा हि त्रा हि बारन बिहाल: करतार कर फु
रहा कृपाल: आनंद अश्रु रोम निउनार: करि राज करी हरि हरि

पुकार: सुषसेजसयनकमलासमानि: निग्रबसहेकरुनानिधान: बैकुंठ बिसु
लीलाबिलास: ब्रह्मादिकऊअनगम्यबास॥ कबित॥ बिषमदीनआधीन:
बानि: जवसुनीबिस्वंभर अतिअसमयआतुरअनंत: प्रभुउठेदयापर: कर
दहुनलीयचक्र बामकरबसनबिराजित: सोंपायेबाहनबिसेषि सोंन
देहीनहिंत पतमांऊलहजोजनपुहवि: गरुडचलतसंपातिगति: सोईजो
निबीचछांडेसिथल आपुनदोरिदयालअति॥१॥ कालअलपपथअधि
क: जगतपतिअंतरजानीय: प्रेरिआतुरनिजपानि: प्रगटबिसतारप्रमा
नीय: मुष्टिमात्रमातंग: सुठिजबलहीसिलतसिर: हसतबांमसंग्रही
य: अंबिकादेगजआतुर: करचक्रआहुवषठकीय: कृतत्रिलोकजय
जयकरीय: हरिनामलेतगजरजहरि: योंनरहरप्रभुउधरीय॥२॥ सवैया
आहअलोबकुकालबलोबलहीनभयोजलयाहनपायो: सूतप्रीयापरि
वारनप्रीतम: प्रीतिछुरीनयोदेहपरायो: सामसुजानहकारसुन्यो निज
नामसतंगरिकारलोनायो: आनिअचानकहीरहिबीचछुटेनप्रानगजे
इछुरायो॥१॥ थिरबाससदासुबिलासथलीसुषहेतकुतेतहाउषसमा
नो: मेगलमत्तमहामदमोकलबारिधसोतहातेबधानो: बातनरेंव
यलोकबिचत्रसदाउषमोचनस्यामसयानो: ओरसबीबिधिओरेन
ईगजआहअलोसोईआहअहानो॥२॥ अनकेयसदामनबांचअगोच
रजानैनबेदबतावहिजैसे उपहारललेउपकारकरे कृतऊपरकृतसुदे
वहैकैसे तवकृतनिसंकदआनिनयेतहाकासुनरूपधरेप्रभुतैसे उप
कारबिनाबुपकारकरे हरिदीनसोंदेवदयालहेऐसे॥३॥ कबित॥सा
पदगधगंधरब बिसदतनआहमहाबल अवधिअंतलोअनय षेत्रति
हितालबसोषल: तयेस्वक्रहतदेह फेरिअपनोंपदपायो: गावतगुनह
रिगीत सहतसुषअहसिधायो: कुलजनामगंधरबहो: द्विजरिषदेव
लआपदीय बकुकालरसोजरुकरमबस आहजोनितिहितुगईय॥
छेदपधरी॥ हरिगमनअचानकलषिनहेत चितवनकरतकमलासचे
त: सुषसयनसमयअबलोसधीर: इहिनांतिउठेकबकुनअधीर: बि
समयमनउपजतबारबार बहुनांतईसंत्रमबिचार: जेरहतनिर
तरनिकरदास: प्रभुगमनहेतजानिनप्रकास उठियलोसंगआतु
रअनंत: सबमिलेजारहरिपरमसंत: बिधिरुद्रइंद्रदिगपालदेव:
अदभुतकरमदेषोअजेव: इहिसमयपुहपबरषाअकास: सुरब

जेगगनदुंदुभिप्रकास·पुनप्रसिधसिध्चारनसुगीत: जसपटतबो
निजयजयअजीत·सुरबिबिधिबधूनाटकसगान·गंधरबकरतसुरतानग
न·इनदेरूपलटिनयोबिसुआप·सबदरेदुषनयमुकतआप·सुजुक्ति
पीतपटुतिलकभाल·मनिकुंडलसुभगउरतुलसीमाल: सुभबरनस्या
मआयुधअनंग·सारूपमुकतिमिलिचलोसंग॥६॥ करिबंदनप्रमु
दितकलो: ब्रहमादिकसुरसिध: बेदबिदितबतेअबनि·हरिअबता
रप्रसिध॥१॥ चतनवष्यतबरतमन: अस्तुतचरितअनंत·दीनाना
थदयालहरि·सबकहिहैसुरसंत॥२॥ सुरसमूहजुतगजसहत: हरि
बयकुंडपधारि: नरहरप्रतुगावतनिगम: चरितबिदितजुगचारि
३॥ कबित॥ इंदुमनिनपयेक·आपहतनयोसुसिंधुर: बारनब
नसरवरबिसाल·तत्रआसितनोआतुर·इहिअवसरप्रतुआनि·बि
षमजलग्राहबिदारयो·तत्रीजोनिसूटयो: अतगजराजउधारयो
अषिलेसबिरदकीनोअतुल·नयोप्रसिधत्रयलोकतुव·कारनपरु
पनरहरसुकबि·हरिप्रसिधअवतारकुव॥१॥ इतिश्री हरिअवता
रगजमोहकबार हटनरहरहासे नबिरचितं॥ ओ॥१५॥ क
ओसा॥३॥ अथश्री हं साअवातारबरनना॥ कबिरुबाचा॥छंद
॥१॥ येकसमयबिधिलोकबिधि·बेठेसताबनाह: सनकादिक
नारदसहत·सबसुतबेठेआह॥२॥ सकलसभासदबंदनां·करिबे
ठेसबथान: होनलगीतहगोसदी·तत्रपोनबिपोना॥३॥ तहानारद
सनकादिसों: कयोप्रसनसानंद·दिपजानितपसाअतुल·देखिद्या
तुतजगबंद॥४॥ नवसनकादिकप्रसनतिहि: करिकरिरहेबिचारि
तदपिनऊतरूपजत: नहीपावतनिरयारा॥५॥ दीनदिष्टसनका
दितब·चितयोपतिकीओर·ब्रहमारहेबिचारितव: उत्तरतहत
नगोर॥६॥ चिंताबसथितबिधिनिये: जगतपितामहनाम: प्रस
नोतरउपजतनही·लघुताकेहैनाम॥७॥ बिधिबाचाछंदपधरी
मुहिदियोपितामहपदमुरारि·चवबेदबानिबसबदनचारि उत्त
रकछुनायोतदपिअंत·उपहासिजगतकेहैअनंत: हरिबिरदद
नबंधूदयाल·सबकालकरतसबकीसंभाल·दुषहोतदीनके
दुषीदेव·नवसाधकहतयहपरमभेव·योब्रहमकरेसमरन
अनंत: करियेसहायममरमाकंत·बिधिकीयनिवेदआतम

बिषाद: परपुरुषकरुसि: आप्रसाद॥ कबित्त॥ उतपत्ति स्वयंअ
नाथनाथ: बपुधरे हंसबेकुंठनाथ: मायाअजीतइछमुरारि: प
ब्रह्म हंसतहपावधारि: ब्रह्मादिकरेपूजनबनाइ: कारुनाकृत
अंतु हंसकारु जोकरेप्रसननारदरिषीस: उतरसोईदीनोजगत
ईस॥ दहा॥ मायाब्रह्मबिनागकरि: कोटिनिरूपनकीन: नि
ज्ञानिन्नबतारके: नाइसउतरदीन॥१॥ जैसेछयोदेहसो: रहत
निरंतरसंग: तोहीमायाब्रह्मको: देषोप्रगटप्रसंग॥२॥ ब्रह्म
दिकबीन्हेबिमल: स्वयंब्रह्मबिसेस: अपनेअपनेतावजुत: असतु
तिकरीअसेस॥३॥ दुषटारेदुपदेसदे: धरिबपुदयानिधान: हंस
रूपअवतारहरि: पुनिनयेअतरधान॥४॥ समाधानकीयहि
जनको: चिंताहरीअपार: कारनरहिनरहरसुकबि: नयोहंसअ
वतार॥५॥ इति श्री हंसावतारचरित्रनाषावारहटनरह
रहासेनबिरचितं॥ अथमनंतरअवतारबर्नन॥ कबित्त
दहा॥ ब्रह्माकेसुतउपजे: सनकादिकतपसिध: अष्टिकरन
आग्यादई: बेनटिगयेप्रसिध॥१॥ तहाबिधिआग्यातगने:
रोषबढ्यो उरआर: तिहिछनफूरीभृकुटितहा: क्रोधनअंगस
मार॥२॥ तिहिभृकुरीपथरुद्रतहां: नयोक्रोधमयदेह: पंचान
नप्रतिमांप्रगट: समअंगुष्टअरेह॥३॥ ताहीछनतनरुद्रको: बा
ढेजथप्रमान: पितआगेतबजोरिकर: गढेजोगनिधान॥४॥
आग्यादीनीब्रह्मतब: सहतबिबेकबिचार: अष्टिउपाजहु
संतुतुम: स्वयंबिबिधिबिसतार॥५॥ छंद बेताल॥ बिपरीतबी
रपिसाचबिंतर: भूतप्रेतनवांवने: बेतालनिसचरबिकरषे
चर: दुसहरूपकरावने: जाजुलजहजमातिजहांतहां: जु
गतअनहितजानिये: मायाअनेकसुमानसीयह: रुद्रअष्टि
प्रमानिये: जीयहतकजोरपापसंजुत: कपटजुधबहुब
पुकरे: बिस्वासघातअमापबिग्रह: बिस्वद्रोहीबिसतरे:
बेलहंकरपदबदनबाणी: रंगआकृतओनसी: पलपि
सतरुधिरसरीरपोषक: मिलनउतपतिमानसी: सोदेषि
ब्रह्माअष्टिसंनव: नयत्रिसतबाकुलनये: सुरसिधजोगी

नतितापसः अतुरब्रह्मापहगये: नवसृष्टिकरमचयित्रतयजुत· ब्रह
मचकिथकिसेरहे· विधिबोलिरुद्रहिकलोअपनी: सृष्टिपूरनकी
जीये: सुरसियसायिकब्रह्मसृष्टिहि· अतयदानसुदीजीये· त
वरुद्रबचनप्रमानपितुको: कस्योअपनेअहगये: तहातयेब्रह्मा
चित्रसंत्रम· महातपसाधतनये· कछुकालसाधीउग्रतपस्या· ग
गनबानीतहांतरी: करिदेहनोतनतजकुजीरन· देवयहआगपदई
बिधिकस्योबिग्रहद्वितीयततछन· द्विधापहलोतननयो· तिहि
देहदहनतागतेतब· मनुस्वयंभूनिरमयो: असावतारउदारअ
द्भुत· प्रथममनुतेरीतये: बिष्णातबुद्धिबलअतुलबिक्रम जग
तउषदारकजये: बिधिअरथतागजुसेषबियह: अषिलमतियो
अनुसरी: तिहितेईयुनसीलसंजुत: सतरूपासुंदरी: अषि
लेसलिछमीअसउपजे उतयबरबरनीतये· अतिकरबिमल
बिबाहउछव· देषिसुरमुनिमनरये: पतिस्वयंभूमनुप्रीयापा
वन सतरूपासुंदरी: मैथुनीसृष्टिअमेयमहिमा· बिसदृतनते
बिसतरी: तहास्वयंभुमनुपारपदवी· करतसृष्टिप्रमानये: सु
तनयेदेअकृतीनकर्मा: परमधरमनिधानये· प्रथमप्रीयव्र
तपुत्रलघु· उतानपादअनूप· देविकृतिप्रसूतिअरु· आकूति
अतुलितरूप: नवसृष्टिकृतपिसाचनिरनय· करतअतिउपात
ब्रह्मसृष्टिसजीतनाजत· षोजिषोजिसुषात: यहसुनीब्रह्म
अनीतिअतिसय: चित्रबकुचिंताकरे· देतिलकचामरछत्र
मनुतहां· स्वयंभूअधपतिकरे: तेलगेषानपिसाचमनुकहं
निकसिकुअपातगो: कदराएदसुमेरकीतहां· महातपसा
धनलगो· कछुकालबीतदयालकिसव· प्रगटतहारहरसनदयो·
तिहिगेरस्वयंभूतहामनु· बिप्रसोंयहबीनयो: प्रभुस्वरगअरु
भूलोकमेंते· करतरहानांबने· तुमअनंतअजेयअद्भुत· जो
गहितझतकारने· बरदयोबिप्रप्रसमनुकहं· भूमिरहातु
मकरो: स्वरगको हमजतनकरिहैं· चित्रचिंतामतिधरो।।
दहा।। स्वायंभूमनुकहंदयो· मनबंछितबरदान: दीनाना
थदयालपुनि: हरिभयेअंतरध्यान ।।१।। मनुआयेनुवलोक
फिरि· करतभयेसुषराज: अतुललिततेजप्रतापअति: सह

[illegible] कश्यप अवतार [illegible]
[illegible] द्वितीय मनु ये भये अपने अपने बार
[illegible] कहि बिजय प्रकार ॥१५॥ बैवस्वत मनु सातवें
[illegible] अदिति माता संपन्न ई पुहवी प्रसिध प्रकास
[illegible] श्री बामन अवतार तीन परग कृत मे
[illegible] ॥१७॥ बैवस्वत मनु इंद्र जुत बरतमान सं
[illegible] मनु वासव अवतार ॥१८॥ मनु सा ब
[illegible] बिवस्वान ते ई पिता सो चे संपा मात
[illegible] जानि बौ अरु बलि नाम इंद्र ओ है नै
[illegible] हि मुनि इंद्र [illegible] नव मद्र हस्त सावर्ण मनु पि
[illegible] ऋतिनाम ता स्वरग पति पंडित कहत म
[illegible] सावर्ण मनु उपलोक पितु ताहि इंद्र
[illegible] प्रसिध सुआ हि [illegible] नाम थरमस
[illegible] पिता अनागत बसु बिदित धर

मसे तत्र अवतार॥२३॥ मनुजबके हैं द्वादसम: रुद्रसावर्णि सनाम:
देवानुषताकोपिता इंद्रनाम रितुधाम॥२४॥ रुद्रकबेद्रमजादके
बिबिधिधरम बिसतार: नाम सुधाम तिहि समय: प्रभु के हैं अ
वतार॥२५॥ मनुजबके हैं त्रयोद्दसम देवहोत पितु जानि इंद्र दे
वसपितुता समय: रवि अवतार प्रमानि॥२६॥ बरन इंद्र सावत्र
द्दसम: ब्रह्मे सेन तिहि तात: श्रुति सुबिनाम तिहि समय: के हैं बि
स्वबिष्यात॥२७॥ द्विजसुरनीमषदीनके करि हैं जतन अपार: सु
नियत के हैं तिहि समय: ब्रह्मदत्त अवतार॥२८॥ कबित्त॥ अपने
अपने समय बिहत तपतेज राजबल: धरमनीति दिब्बलोक
करत रहा महिमंडल तिहि प्रसाद मषत्राण सकल निरभय सुष प
वत आपआपने काज लोक लोके सचलावत: बिसतार अष्टि बिधि
निरबिघन जिन अनेक दुरजन जये कहि समरनर हरसु कबि
मनंतरअवतार यो॥१॥ इति श्री चतुर द्दसम मनंतरअवतार
चरित्र भाषा सम्पूर्ण बार हटनर हरद्दसे नबिरचितं॥ अथ श्री
अनंतरअवतार बरननं॥ कबित्त॥ आमयषकारक
अखिल: अनंतरअवतार: तंत्रमंत्रऔषधससत्र: रचे चारउपच
रा॥१॥ छंद पधरी॥ इनु देवउनय बलअप्रमान: मिलिकरे दुगध
सागर मथ्यान: उछलेफेनकनकआकास: तेनयेरोग पृथ्वीप्रक
स: जग बात पित्त कफ हतकंत: इत्यादि प्रगट आमयअनंत चि
सोतबंआगमपानचेत: हरिजानि बिस्वयेनासहेत: परब्रह्मलेलै
रोगनिप्रस्राव: नवजनतहेतकृतदयानाव: तेजमयपुरुषएकप्र
गटितामः कृतकुंजसुधापूरितसकाम: बपुस्यामपीतवासनबि
साल: कमलदलोचनतिलकभाल: कुंडलकिरीटमनिमयप्र
कास: कचकुंचितसोभितअसितभास: अतिसुंदरआकृतबिलुप्त
स सबअंगचिन्हसोभावंतेस: तेजमयथनंतरिनामतास: बिष्मा
तबेदबिद्याबिलास: नाटिकाकालऔषधिनान: बसबरतरोग
नासकबिधान: आमयबिनाशकीनेअपार: प्रगटेसुग्रंथबिस्वो
पकार: सुजतंत्रमंत्रऔषधसुनाम: बिधिससत्रक्रीयादीनीब
ताय: पुनिधातकरममूलप्रचार: कीनेप्रचारजगपरुपकार
परब्रह्मनयेपृथ्वीप्रकास: निजनामधनंतरिरोगनास: दीने
बतायेतत्दाव: नावनासिधबिस्वासनाव: निरलोभबेदिरहि

बौनिदान सोईसफलहोतबैदिकबिहंन करिदयाजीवउपरेसकी
न जगदीसजयेपुनिजोतिलीन ॥ दुहा ॥ नरहरप्रचुरहिहेतसो
धनंतरअवतार तिहिप्रसादसुनयरेगते सबनिरनयसंसार ॥ इति
॥ श्रीपंच हदसम ॥ श्रीभगवंत स्त्रिअवतारा ॥ चरित्र सपूरन
नाम बार हदन दहर राखे ॥ बिरचितो अथ श्रीपरसमअ
वतार ॥ बर्नन ॥ कबित्त बाच छंद पधरी ॥ द्विजराम सुनऊअ
वतारहेत कृतकरम उअतिहिधरमसेत कुसजयेनृपतिरकसो
मबंस सुतनयोकुलिकपुहमीप्रसंस तिहकरेमहातपपुत्रकाम
सुतहोइसमथरमधाम यहकथासुनीजबइंद्रआप तपबिघनकर
नतोअतिसंताप कीनेसुरेसउरिमअसेस तपनंगहोतनाहिनन
रेस सुरराजगयेतबगुरनिकेत हुकहेसकलतपनंगहेत ॥ इं
द्रबाचाकरिजतनबिघनबहुतेंजुकीन नृपरहतनिरंतरध्यांन
लीन ॥ गुरबाचा ॥ गुरकसोइंद्रसोंगूदग्यांन मिलिनृपहिकरहुमे
त्रीसमांन द्विजतपनिहारितबदेवराज कुसकसोंकरीमेत्रीसकाज
इंद्रबाचा ॥ कुसकसोंमत्रयहप्रसनकीन कांमनांकवनतपहृत
जुलीन ॥ राजोबाचा ॥ निरधारकलेउत्तरनरेस सुतहोहुअनिमेरे
सुरेस ॥ इंद्रबाचदुहा ॥ तपपूरनकरिराजतव सुषनोगवहुस
रीर ममअंसअवतारसुत तेरेहैंधीर ॥ कबित्त ॥ योंकहिइं
द्रस्वसथांनगो राजाआयोग्रेह रसबिलासुषराजकेंहुगव
तसहतसनेह ॥ ॥ अवधिपाइसुतऊपज्यो राजागाधिपुनीत अं
सजयोसुरराजको बिद्यानीतिबिनीत ॥ कंसांउपजीगाधिके
सतबतीयहनांम सुंदरतासोतासहत समगुनलछनधांम ॥ ४
ब्रहमाकेसुतहगुनयो सुक्रनयोहगुयेह रिषरिचीकताकेन
यो महातेजबलदेह ॥ ॥ ५ ॥ रिषरिचीकनृपगाधिको कंसाज
चनकीन राजकसोरिषराजसों हुकुंहतआधीन ॥ ६ ॥ गाधिबा
चाहयसहअससिक्रांतितन स्यामकरनसुतरूप इतसमरचे
आनिमुहि कंसांबरेअनूप ॥ ७ ॥ मैयहलीनोएकेहृत सोमि
थ्यानहीहोइ जोयहपुनपूरनकरे सतबतीपतिसोइ ॥ ८ ॥
कबित्त ॥ तबरिचीकगयेबरुनपंह हयजाचनांकीन स
वकरनलछनसहत हयसहअतहादीन ॥ ९ ॥ आनिदयेहय

गाधिकहं कीनोवचनप्रमानः सतवतीसंकलपकरि दीनीकंनोरुज
॥१॥मुनिकृतकंप्रांनोनिग्रहः लैआयेनिजगेहः करमचारयहसथके
निवसतसहतसनेह॥११॥सतवतीत्रिनपुत्रताः कछुनोकालबितीत
अंतरुषनरनारसोंः बिनयोपरमबिनीत॥१२॥सतवतीकीमातनवु
आयेअपुत्राजांनिः जाचेनांजामात्रसोंः पुत्रीसुषहिप्रमानि॥१३॥पुत्रहे
तत्रीयसासुकेकीनोंजग्यबिधांनः मषप्रसादमुनिमंत्रजुतः ईश्वरक
रेसमांन॥१४॥छंदपधरी॥चरुनयेसपूरनमंत्रजोगः रिषप्रेमजुक
तकीनेप्रयोगः त्रीयहेतकस्योजोचरसुतंत्रः तिहिब्रह्मसकतिमिल
सुमंत्रः सश्रुनिमंतचरुकृतसतेजः तिहिहत्रसकतिदीयरुद्रतेजः
चरुनयेसिधपूरनप्रभाव सोसांनउग्रसंजुतसुभाव॥रिचीकउ
संग्रासनानसरितासनेमः रिषकलेजांनपरब्रह्मप्रेमः पुनिआइस
देकंचरपुनीतः बिधिजुकतहोकुमकुबिनीत॥कबिरुबाचायो
कहिरिचीकगयेनिसकाजः सानंदसरितसंजुतसमाजः रिषरहेक
लकछुसरिततीरः आतुरसुतावत्रीयनईअधीरः पुनिपुत्रमनोरथ
सिधपारः अबासमेतमषसालआइ॥ दहा॥ सतवतीकीमातनह
कीनोचितबिचारः मुनिजकस्योनिजत्रीयनिमतः यामहकछुअध
कारा॥१॥सतवतीकेनिमतचरुः कीनोंकुतोरिषेसः मातासोचेसुअ
पलेः कीनोंनहबिसेसा॥२॥सेषरलोचरपुत्रिकाः नहनकस्योसमु
लः बिधिकेअंकनअनिथाः नावीटरेनमूल॥३॥करिआयेरिषुनि
सकृतः चरुनहीपायेथांनः सतवतीसोंतिहिसमयः पूछतभयेनि
हंनो॥४॥प्रीयादयोतवत्रीयकोः उतरप्रेमप्रसिधः नहकरेहमजग्य
चरुः होकुमनोरथसिध॥५॥छंदपधरी॥ततकालगरनथितनई
संतापः मुनित्रीयाकष्टउपजोअमापः॥सतवतीआअबहीमोहि
उपजोकष्टअपारः सुतगरनहोतपूरनसुनार॥रिचीक॥ कहि
बिप्रनईबिपरीतकारः कल्यानहेतनहीकष्टकोहः॥सतवती॥
चरकस्योबिपरजयहमअचेतः त्रीयजातिनजानोहितकुहेत
रिचीकबाचा॥तवहोइत्रात्रिसातिकसुतारः अतिघोरकरम
तहोतअरु॥सतवतीआ॥नरनाहिकसोअतिसनयुनाजः मु
तघोरकरममोहिकोनकाज॥रिचीक॥ प्रीयदयोबचनर
नीत्रसिधः सुतहोतसंतस्वाजावसिधः तवपेत्रजरपिहयु

लघु बीत: हो इउ अघोर करम अनीत: ॥ कबिरुज बा ॥ मुनि मंत्र उदिक प
योप्रकास: त्रीय सांत रूप लेग रत्न तास: नये पुत्र अवधि परमांन पाइ:
जमदग्नि महासाति कसुतार: राजा रकरेनुक धरम धाम: पुत्रिका तास
रेनुका नाम: जमदग्नि रिषहि सो ईदई दांन: रेनुका बेद संजुत बिधा
न: तिहि ईग रत्न थित समय पाइ: द्विज बंस तद पिदा रुन सुनाइ: द
समास बीत नये जनम देव: अवतार परसधारन अजेव: इहि का
लघु इछ त्रीय अनीत: सुव करी नार पीड़त सनीत: अवतरे ईसति हि
समय आइ: श्रीपरसराम उरबीसहार: बिधि जुकत करी सेवा बिसेष
सिव दई धनुर बिद्या असेष: तस त्रास सत्र ब्रह्म बिद्या समांन अध्य
यन सिध पाइ प्रमांन: तप करे परसधर गंग तीर: सातिक सुनाव बेग्ग
धीर: जमदग्नि अग्नि होत्री द्विजात: प्रति दिवस करत कृत समय प्रा
तै: रेनुका नित प्रति इत नेम: पटकलस नीर आनत सप्रेम: इक दि
वस आइ गंधरब राज: सुरसरित बिबिधि कंन्या समाज: तिहि नांम प
द्मसाली प्रसिध: संजुत बिलास सुष सकल सिध: बंधान राग बा
जित बिबेक: अपछरा करत नाटक अनेक: अवगाह गंग जल अंग
अंग: मिलि करत मन कुक्रीड़ा तंग: इहि समय रेनुका नीर आइ: गं
धरब देषि सब सुष सुनाइ: मन चकित करत चित्त नमूल: सुष
तहां जह हरिसा नकूल: बसुधा हि ऐक देह वांन: इक देह धरति भु
ऊ अपांन: सेण धब सत्र सजांन सैंन: चित नैंम करम जुत नहि चै
न: बाजूल रतन भूषन नतेल: अंगार नहि सुष समय षेल: न
पग्रेह जनम हम बृथा पाइ: इत नियम तप हिजे है बिहाइ: मनसो
चरे न काकरे माहि: निम चीर कलस जल रहत नाहि: पट पात्र नी
रन हि चलत पेषि: नय बीत होत बिसमय बिसेषि: जब काल अति थ
क्रम नये जांनि: पुनि आइ ग्रेह तब रिकत पांनि: जुग हस तजो रिप
ति अग्र जाइ ॥ रिष बाचा ॥ कहा नीर कलेजल रतासुनाइ: ॥ रेणुका
पट पात्र आज आवे न आप: मृद कलस कहा आनै अमाप ॥ कबि
का त्रीय बचन सुन तत्र मन येआइ: पति ध्यान दिष्टि कारन सुप
इ: गंधरब देषि सब पति समाज: इहि चित्त अनागी चले आज: बि
जचार नव तिहि उपजि बांम: मुनि करे रोष च षरत्न ताम ॥ इहा
बसुमन अदि जुपे चसुत: पित तब लनि दे रि जम दग्नि उ मसत

ककारकुमातकेः उतरदेकुनकेरि॥३॥पुत्रबाच॥तबपांचकुपुत्रनिवचनः क
रिकलोडुषरोरः ऐसेपापग्रक्रमयहः हमपंहतातनहोइ॥कबिरुबाच
परसरामतिहिछिनसुतपः करतसुरसुरीतीरः सुनिजमदग्निसकोपमन
बोलिलयोरनधीर॥५॥पिताभगतहारुनप्रकृतिः आयेपरसउतारि
पितुदीनीआपप्रगटः मातत्रातनवमारि॥६॥कटेसीसकुगारकरि फेरिन
पूछोबातः पृथीतललोरतपरेः पांचत्रातअरुमात॥७॥जमदग्नउ॥जये
प्रसनरिषजमदग्निः कीनीआपप्रासिधः जोकछुइंछाचित्तमहः मांगकु
पुत्रप्रसिध॥६॥ परसरांमबाच॥जोरिकलोकरपरसधरः ऐसा
धीनजुआपः जननीसोदरजीउठे मुहिनलगेबधपाप॥कबिरुवातहे
जिवायेमृतकतबः ब्रह्मतेजरिषराजः मांनकुसोवतसेउठे करतज
येग्रहकाज॥ परसरांमबाच॥ फेरिकलोतहापरसधरः मेरेनियम
अंगः कबकुजननीजनककी करिकुआपप्रसंग॥९॥जननीछिन
प्रजावजुतः उपजेबेरअपारः कबकुआपदेइमुहि तुमहिहतोनिर
धार॥१०॥तुमतोदेवीसकतिकरि सबेजिवायेआजः इनपहजोतुमन
जीयो सबकेहोइअकाज॥११॥ततेजुकतननिकटतुमः अंतरहिहो
जारः होइप्रयोजनमोहिलगः लीजकुबेगबुलाइ॥ कबिरुवायेंकहि
कीठोरमतबः आश्रमगंगातीरः तपकृतसंजमनियमजुतः करतज
येतहाधीरा॥१२॥हिहयबंसप्रसिधमहः जोराजातिहिबारः नामसह
आरजननृपः बिद्याबलबिसतार॥१४॥दत्तात्रेयआराधकीय पर
बंदनकरिसीसः सेवाहेहमराजसो प्रसनभयेजगदीस॥१५॥तिहिबि
घआनीबकीदीनीसहतबिसेस ताते जलथलगगनपथः पायोन
पतिप्रवेस॥१६॥ रिपुकरसमरअजेयता उवदिसिहाथहजारः जो
गसकतिअघटतिआयाः पायेरेकहीबार॥१७॥कंनारेनकन्यपतिकीः म
हीहेयहराजः परमप्रीयपुटरागनीः सोजासीलसमाज॥ छंदपधरी
इकद्योसप्रबलहेयनरेस बनगहनचल्योमृगीयाबिसेस बनित
जुसंगसंजुतबिबेकः योंकरतउचितकीरअनेकः थलजलबिहारप
बनसथानः कंदराबिबिधिनिरुरनियांनः सरवरनिबिमलपंकजबि
कासः बनकुसमत्रिबिधिमारुतिसुबासः गंधरबकरतसंगीतगां
सुरसरसतानबाजित्रबिधांनः रितरितबिलासबेनवबिसेष उ
वअनंगबिलसतअसेषः सेनासमूहचतुरंगसंगः अनेकसुनरजे
रित

लपुनीत: होइउ अघोरकरमा अनीत: ॥ कबिरुवाच ॥ सुनिमंत्रउदिक्ष
योप्रकास: त्रीयसांतरूपनेगरनतास: नयेपुत्रअवधिपरमांनपाइ
जमदग्निमहासातिकसुनार: राजारकरेनुकधरमधाम: पुत्रिकतास
रेनुकानाम: जमदग्निरिषहिसोईदईदान: रेनुकाबेदसंजुतबिधा
न: तिहिईगरनथितसमयपाइ: द्विजबंसतदपिदारुनसुनाइ: द
समासबीतनयोजनमदेव: अवतारधरसधारनअजेव: इहिका
लपुरछत्रीयअनीत: नुवकरीनारपीडतसनीत: अवतरेरीसतिहि
समयआइ: श्रीपरसरामउरबीसहार: बिधिजुकतकरीसेवाबिसेष
सिवदईधनुरबिद्याअसेष: ससत्रासस्त्रब्रह्मबिद्यासमांन अध्य
यनसिधपाईप्रिमान: तपकरेपरसधरगंगतीर: सातिकसुनावबेग्से
धीर: जमदग्निअग्निहोत्रीद्विजात: प्रतिदिवसकरतकृतसमयप्रा
तं: रेनुकानिसपतिहितनेम: पटकलसनीरआनतसप्रेम: इकदि
वसआइगंधरबराज: सुरसरितबिबिधिकंमासमाज: तिहिनांमप
दमसालीप्रसिध: संजुतबिलाससुषसकलसिध: बंधानरागबा
जितबिबेक: अपछराकरतनाटकअनेक: अवगाहगंगजलअंग
अंग: मिलिकरतमनकुकीडामतंग: इहिसमयरेनकानीआइ: ग
धरबदेषिसबसुषसुनार: मनचकितकरतचितवनमूल: सुष
तहांजहांहरिसानकूल: बसुधाहैऐकदेहवांन: इकदेहधरतिहिम
कुअग्यांन: सेणयबसत्रसजानसेंन: चितनेंमकरमजुतनहिनचै
न: तांबूलरतनभूषननतेल: अंगारनहिनसुषसमयषेल: न
पग्रेहजनमहमवृथापाइ: वृतनियमतपहिजैहैबिहाइ: मनसो
चेरनकाकरमाहि: निसबीरकलसजलरहतनाहि: पटपात्रनी
रनहीचलतपेषि: नयतीतहोतबिसमयबिसेषि: जबकालअतिथ
क्रमनयोजांनि: पुनिआइग्रेहतवरिकतपांनि: जुगहसतजोरिप
तिअजाइ॥ रिष बाचा॥ कहानीरकलोलरतासुनाइ॥ रेणका
पटपात्रआजआवेनआप: मृदकलसकहांआनैअमाप॥ कबि
रुवाच॥ त्रीयबचनसुनतत्रमनयोआइ: पतिध्यानदिषकारनसुप
इ: गंधरबदेषिसंपतिसमाज: इहिचितअनागीचलेआज: बि
नचारनावतिहिउपजिबांम: मुनिकरेरोषचषपरतताम॥ इहा
बसुमनआदिजुपचसुत: पितृतबलीनेंटरिजम: दमउ॥ मसत

ककारकुमातकौ॥ उतरदेकुनफेरि॥३॥पुत्र बाच॥तबपांचकुपुत्रनिबचनफे
रिकहोदुषरोइ॥ऐसेपापअक्रमयह॥ हमपैहतातनहोइ॥कबिकुबाच
परसरामतिहिछिनसुतपकरतसुरसुरीतीर॥ सुनिजमदग्निसकोपमन
बोलिलयोरनधीर॥५॥पिताजगतहारुनप्रकृति॥ अयोपरसउतारि
पितुदीनीआग्पाप्रगट॥ मातजातनवमारि॥६॥काटेसीसकुगरकरि॥फेरिन
पूछीबात॥ श्रुतीतलोरतपरे॥पांचजातअरुमात॥७॥जमदग्नमउ॥चये
प्रसनरिषिजमदग्नि॥ कीनीआग्पासिध॥ जोकछुइछाचित्तमह॥ मांगकु
पुत्रप्रसिध॥ ६॥ परसरामबाच॥जोरिकलोकरपरसधर॥ क्षेत्र
धीनजुआप॥ जननीसोदरजीउठे॥ मुहिनलगेबधपाप॥कबिकुतह
जिवायेमृतकतब॥ ब्रह्मतेजरिषिराज॥ मांनकुसोवतसेउठे॥ करतन
येयहकाज॥ परसरामबाच॥ फेरिकलोतहापरसधर॥ मेरेनियम
अनंग॥ कबकुजननीजननककी॥ करिकुआग्पासंग॥९॥जननीछिन
मनवेजुत॥ उपजेबेरअपार॥ कबकुआग्पादेहमुहि॥ तुमहिहतोनिर
धार॥१०॥तुमतोदेवीसकतिकरि॥ सबेजिवायेआज॥ इनपहजोतुमन
जीयो॥ सबकेहोइअकाज॥११॥तातेजुकतननिकटतुम॥ अंतरहिहो
जार॥ होइप्रयोजनमोहिलग॥ लीजकुबेगबुलाइ॥ कबिकुयोंकहि
कीनोरामतब॥ आश्रमगंगातीर॥ तपकृतसंजमनियमजुत॥ करतन
येतहाधीर॥१२॥हिहयबेसप्रसिधमह॥ जोराजातिहिबार॥ नामसह
आरजननृप॥ बिद्याबलबिसतार॥१४॥इत्रातृथआराधकीय॥ पद
बंदनकरिसीस॥ सेवाहेहमराजसो॥ प्रसनभयेजगदीस॥१५॥तिहिबि
द्यआनीबकी॥ दीनीसहतबिसेस॥ तातेजलथलगगनपथ॥ पायोन्ह
पतिप्रवेस॥१६॥ रिपुकरसमरअजेयता॥ उपदिसिहाथहजार॥ जो
गसकतिअघटतिआया॥ पायेऐकहीबार॥१७॥कंमारेनकन्पतिकी॥ ब्र
हीहेयहराज॥ परमप्रीयपटरागनी॥ सोजासीलसमाज॥ छंदपधरी॥
एकहोसप्रबलहेहयनरेस॥ बनगहनचल्योमृगीयाबिसेस॥ बनिता
जुसंगसंजुतबिबेक॥ योंकरतउचितक्रीडाअनेक॥ थलजलबिहारपर
बतसथान॥ कंदराबिबियिनिरुरनिधान॥ सरवरनिबिमलपंकजबि
कास॥ बनकुसमंत्रिबियिमारुतिसुबास॥ गंधरबकरतसंगीतगान॥
सुरसरसतानबाजित्रबिधान॥ रितरितबिलासबेतवबिसेष॥ उदन
वअनंगबिलसतअसेष॥ सेनासमूरचतुरंगसंग॥ अनेकसुतरजोध
अनंग॥ मृगीयाबिलाससंजुतसधीर॥ तिहिसमयआरसुरसरितती

र: जमदग्नि करत तप द्विजात: बन बिमल तपोपथ लग बिख्यात:
चवरेत सिथित रानी कराज; देखो मुनि आश्रम बन बिराज॥ रानी उवाच
लरम्य देषि रानी सथान: यह कलोके लिको तपनिधान॥ राजो बाच नृप
दुष्ट भाव उतर सरीन: अहंकार तरकमन महमलीन: इह वसत तिहा
रीबहुन आज: मिलि चलहु देषि सुपति समाज॥ कबिकुबाच॥ इह॥ सि
न्धुरे राषि तव: आपग येमुनि ग्रेह: मिले परस परमोदमन: संजुतरि
उहि सनेह॥१॥ इजे बिहत प्रसन मन: परन कुटी बेगारि: कीने प्रसन्न त
रकुसल: बिबिधि सप्रेम बिचारि॥२॥ छुन अंतर हैहय नृपति: आपज
नकीन: यह मुनि रिषपत नीत बे मनमहन्य मलीन॥३॥ केरिक
लोत राजमृग नि: राषहु धरम हमार: बनफल तोजन जल बिमल क
रिये अंगीकार॥४॥ अहग्रये आतिथ क्रम: जोन करे अहवान: धरम बिप
रजय होइ तब: तुम सब जानसयान॥५॥ राजो बाच॥ नृपति कलोक
छु हासि जुत: बचन अहंकृत फेरि: मेरे सेन असंषि है: रिषदेष कुटीयह
रि: रिषि उ बाच॥ महपुरी माहिषमती: जिनके राजसथान: तिनके
अचिरजकोन नृप: जोदल मिलि अप्रमान॥ कबिकुबाच॥ तब राज
रिषराजसो: कीनो बचन प्रमान: सरितातरपर अहकरि: नृपगय
मध्यसथान॥६॥ कामयेन जमदग्नि के: हबस्यमती यह नाम: प
रनसाथ लथिपुजियत: देयसुबंछित काम॥७॥ दीयनो जनअ
सन बिबिधि: हैहयराज बुलाइ: सो सामंत सुसेन तब: मुबियह
बेग आरुण छेदपधरी॥ इंछासुकरे तोजन अनेक: मिष्टनेप
न बिजन बिबेक: मृगमद कपूर ताबूल तेल: सुजसेज सयन सो
गंधमेल: नरी इंछापूरन तोतिनोति: बलनृपति बदीतह चित्रष
ति: नृपतयो महा अचिरज निदान: पुनि पूछि सबे सेवक सुजा
न॥ नृप बाच॥ तुम कारक बन देषो सुजाइ: इंछा मनज होतब
सनुआइ॥ सेवक॥ देषी इक तह मनुपदयाल: इक सुरतीबो
धीपरनसाल: कहियतब हरिषके कोमगाइ: यह सिय सबेता
कोप्रभाव॥ नृप उ॥ मंत्रायि पतिन सो कहि महीस: यह सुरति
काज जाचहु रिषीस॥ मंत्री उ॥ तब सचिव कलो जो नृप रिसा
इ॥ नृप उ॥ नृप कलोत तो लीजो छिंगाइ॥ कबिकु॥ प्रभुव
लेजबे मुनि बिदापार: सो धेन सचिव जाची सुताइ॥ रिषि बाच॥

होईस्वरतुमहयगयअनेक: यहमेरेबछियांआहियेक: अहिकुनसचिवसे
देउगाइ: प्रतिदिवसपीयनजलदरसपाइ॥ मंत्रीबाचा॥ सोकसोसचिव
नृपसोंसुनाइ: गहिदेतनहिनजमरगनिगाइ॥ कबि॥ बसकरषिरि
षिहिदेमहारेस: लेगयेधेनहेहयनरेस: रिषिरामरामकहिकीपुकार
धरिकोपसुआयेपरसुधार॥ पर सरां॥ तुमबोलेसोकारनकवन
तात: सोकहुमोहिजोबिषमबात॥ कबि॥ कृतसुनेदुष्टछत्रीजुकी
न: नगुबंसतिलकतहारोसचीन: मेषलाअजिनमोजीसमान: बेषम
कुमारकरअनुरबान: जटतिलकदरनउपबीतजोग: चुवनारउतारनर
हितचोग: जुतब्रहमचर्यउरकोधजवाल: कमजोगपुकुचिमनुप्रलयका
ल: आवरतबातचलिअसहमान: नमरेनरुयसूरैनतान: नाषित्रदिव
सउलमुकनिहारि: चढिगगनअयपहीप्रचारि: पतवारनषीकुलमिलि
अपार: सबदारमानधावतसुदार: बेतालबीरमिलिप्रेतबृंद: उरबढोम
हाजुगनिअनंद: हेहयदलदेषतअसुचहेत: बिपरीतनिमतचलाबि
चलचेत: उरबिकसिसूरअंतरअनंद: बिसमोहपरेकातरनिबृंद:
पुरधसतराजहेहयप्रबीन: हिजरामपृष्ठितहाहाकदीन: सुनिबचन
फिरोसंग्रामसूर: करसहससजेआयुधकरूर: मिलिचयोमहाच
रथतयान: उमगेसबीरमनुआसमान: इहिओरपरसधरएकआप
दससप्तउतहिबोहनिसदाप: सुषमारमारसंग्रामसूर: सोरलोसब
दब्रहमंडपूर: एकपरतसूरयारनअनंद: उठिउठिकबंधएकजिर
तआइ: दलचालभूमितयकालदीस: हयखरमतंगमिलिगरजहीस
: दिगदंतजीतदिगपालकोल: कसमसतिकमठनहीरहतकोल
डगमगतअचलथिरचरउदास: पुनिपवनगवनबिथकेप्रकास
करसहसछेदिकरकसकुमार: सिरकाटिरामसेनासंघार: मिलि
मासओनकरमहीस: दिनप्रलयकारथिरचरनदीस: सतरअ
होहनिपरेसूर: प्रभुहेतसिधपोरुषसपूर: बसओनलिप्तरनन
बिहार: करउरधघोरधाराकुमार: थितअथकामधेनोअतीत
जुधअजिरबिराजितअरिजीत: इहिरूपदेषिब्रहमादिआइ:
सुनकरीपुहपबरषासुताइ: बाणीसुबिबुधजयजयबिसेस
सानंदबजेदुंदुभिसुरेस: निःसंकमारिहेहयनरेस: पुरपरसर
मकीनोंप्रवेस: जयपाइमहासंग्रामजीत: पितदईआनिधेनपुनी

तः तपकरनगयेफिरिरामतांमः करिनियमकठुबेग्रकांम॥ दहा॥सहसाअ
रजनकेसुवनः मोपितु बयरसंभारि। दिनकछुबीतेदुष्टताः बढिकुकरम
बिचारा॥१॥ कोपेहैहयराजकेः सुतआयेदलसाजिः ततछनआश्र
मगंगतरः बेढ्यो मिलिगजबाजि॥२॥ छंदपधरी॥जमदग्निनियमजु
तध्यानजापः इहिसमयकरतबेग्रमापः चषमुद्रितमिलिपरब्रह्मचे
तः आनदृगनउधारहेतः इतमोनजुकतबरजितबिचारः मुनिबे
ग्रसमयअप्रमादः अनसमयदुष्टछत्रीअनीतः जमदग्निकुतनि
पक्रोधजीतः हाहंतसबदरिषग्रेहहोइः रेनकासहतसबउठेरोइ
सुनिदुसहरुदनतबरामदेवः अतिबेगतहाआयेअजेव। सुनिछित्र
करमदारुनदुरंत तहारामनियमलीनोतुरंतः षलरुधिरपूरितरनी
बिष्मातः तिहिपेरितिलेजुलिदैउतात संकलपकस्यो सुरनरप्रसि
धः सोईजामदग्निसंग्रामसिध। दैअगनिदहपितुक्रीयाकाज सबक
रुअनुजमिलिकुसलसाजः दैआप्यबंधुनिरामदेव उग्रिलेआ
पसायुधअजेवः हीयजयोकविनआयुधप्रहारः तिहिकरतातिषधा
राकुगार॥ दहा॥ रामआइमाहिषमतीः कहेजुबचनकरालः पुत्रसुहैहयरा
जकेः आनिनिरेततकाल॥१॥ छंदपधरी॥संग्रामतयोदारुनसकोप
रनबीरजुरेतहापेजरोपः मचिमारपरसपरअतिग्रमानः नाराचतयोज
तलजयानः द्विजराम हतेरिपुसुवनदोइः सामंतसरसेनासमोइः मारे
असंषिछत्रीअमानः रनजरेरुधिरनिरूरनिवांनः तिहिपेग्रिकस्योतरप
नसुतातः बिसतरीलेकेत्रयनियमबातः मसतकनिअरिकीयपुरीमां
हिः जगजीवदेषिनयत्रिसतजाहिः इहिनातिसोधिउरबीअतीत
निरमूलकरेछत्रीअनीतः नयकोपअनलतयेगरतआव आंकुरछेदि
सतनिअनाव इकवीसबेरदेउसहदाव नूवकरीनिछत्रीबेरनाव दी
नेलेबिप्रनिउदिकदानः नमीसनोमपितराजथानः प्रतिजुधरुधिरत
रपनप्रकारः धरिकोपबेरहितपरसधारः इहिनातिदईलेलेग्रमापः पृ
थीसगमारीलोतपापः परसकरकरेबिप्रनबिरोध इकवीसबारषो
ईग्रबोध इकसमयमिलेछत्रीयअसेष बढिबिप्रनिसोबियहबि
सेषः धरपरसकुतेकठ्यानलीनः कृतसुनेबकुरिछत्रीजुकीनः आतु
रअनीतनबरामआइः संग्रामरओदारुनसुनाइः बिपरीतबीरकु
ठाबिसेषः दिवदेवचकितनयेचरितदेषि द्विजराम दीपअरिस

लक्ष्मार: अनसंघिपरेघरनअयार: पलचारयौधआहारपार: सबनयेवि
पतअपनैसुनार: कुरघेतरूमिसंग्रामकीन: वहांचलीओनसरितानवीन:
नरिरामकुंडरुचिरनिनयाने: परसधरयेक्किंवहिप्रमाने: तिहिरुचिरक
रेतरपनपुनीत: विष्णुतबातत्रयपुरबिनीत: इहिसमयपिताजमदग्
निआई: संबपितरजुकतसातिकसुनार: ब्रह्मादिदेवमुनिगनबिसेष
दाकनबिलासपित्रनगतदेषि: सुंतबईसुमनबरषाअकास: सुरसिधस
बदजयजयसहास॥ पित रक्षा॥ नयेपितापितरसंतुष्टनाव: सुतहेतु
अबेसातिकसुनाव: करियेनिवरतक्रीडाकराल: सुषनयेहमहिमिहिबेर
साल॥ परसराम॥ परसधरकहोपितसोसप्रीत: रिषजानतहोतुम
धरमरीति: रनबद्धोमोहितुमिष्टोरोष: सोबचनदेउसंजुतसंतोष॥
कबित्त॥ पितकरीपुत्रबाचप्रमान अरुकहेअहिंसाकृतबिधान: अ
तिरोषजदपिसुतहेअसेष: अनुसरउअहिंसाधरमरेक॥ पिता उ॥
सुतधन्यधन्यपौरुषसुनाव: तपकरउबिगतक्रोधबैरनाव॥ कबित्त॥
सुरपितरगयेसबसथानसंग: परसधरकहतपौरुषप्रसंग: अतिआतु
रआयेइहीकाल: द्विजरामद्विजनयेस्वेदयाल: इसकुहिसिजाचतबि
प्रदीन: अनुपरसरामबोलेप्रबीन: अन्ववरुधिरबेरारकीस॥ परस
रा म॥ छितदईतुमहिहतिहतिछितीस: दिग्अंतलहीतुमपृथीदान: नि
जअसंतोषसोईगईनिदान: धरिबिप्रआपआपहिबिरोध: इकवीसबे
रषोईअबोध॥ कबित्त॥ सबतिसमपद्विजमहासूर: महिमाप्रसिध
महि: रनहिदीकुआधीन: करमजुतमरमनिगमकहि: बिषमपरसप
रबैर: तुतीयसुषदेषिमहतुष: असहमानउतकर्ष: आनमिलिहोतम
लिनसुष: तिहिनाहिनिपृथीजोग्यतुस: तिहापररहिउदरतर: द्वि
जरामकसोयहद्विजनसों: अनुतातदृषिबिरोधपर॥ कबित्त॥
योकहिरामसुसांतमन: बिरतिचलेबनवास: बैरबिरोधबिहारसब
पूरनदयाप्रकास॥१॥ कबित्त॥ परसरामपृथीपवित्र: परिक्रमनप्र
कासीय: पुनिकालतीरथप्रसिध: कमनेमजुकतकीय: सांतनाव
अनुसरीय: दयादीछापतिदीनीय: मनबचकरमबिसुध: बुधिकरु
नारसतीनीय: बनगहनमहिंद्रचलबिमल: सरितातटआश्रमसु
षद: निसंब्रह्मचर्यसंजुतनियम: अनुसोधतबिरजीवपद॥१॥

ब्रह्मबंसअवतरन: दुष्टछत्रीयकुलहारुन: जरातिलकजग्पोपवित्र कस
नाजिनधारन: दरनमोजमेषला धनुषतूनीरबिसषधर: धारयोरकुग
र: बिषमबिस्वेसबिहतबर अवतरनसरनबरजितअनंत जरारहित
रहीयबिजत: तपकरतअतुलत्रैलोकपति ध्यावतसुरउधारहित:
॥१॥ब्रह्मअंहपरब्रह्म धस्योनिजदेहधरमहित मातबंधुपितब
चन हतेतउपायअलेपित करमछित्रद्विजदेह: ब्रह्मचारीबृतध
रीय: कीयनिछत्रिरकवीसबार तुवचारउतारीय: कृतचरितकहेन
रहरसुकबि बिमलकिर्तिजगबिथरीय: त्रयलोकनाथभएकुल
तिलक कारनयहअवतारकीय॥१॥इति श्रीपरसरामअवतार
चरित्रसंपूरन॥नाषाबाहुहटनरहरहासे नबिरंचि अथश्री
बेदर्ब्यासअवतार बर्नन॥ कबिकबाच॥छ॥ मंडिकेतगंध
रबरक: प्रीयामंडिकानाम: ब्रह्मआपहतकरमबस: सफरमिथन
नएतोम॥१॥गंधरनीबाच॥ आपसमयद्विजसोत्रीया: कसोब
चनयहरोइ: लीनोसीसचढारहम: आपमोछिकबहेरइ॥२॥द्विज
बाच॥सफरीबीरजमनुजननि: पुत्रीगरभनिवास: तबेमिथुनतुम
जालपरि: पंचतलहकुप्रकास॥३॥ कन्यानिकसेउदरतब: रहेसुरुब
रयेह: तबतुमपावकुआपपद: फिरिगंधरबीदेह॥४॥मंडिकउवाक
सोबचनयोमंडिका: ऊंबरमीचसुनाव तातेजोकंमाकरे कोऊकर
मकुचाव॥५॥सोफलपुहचेमातपित: यहजानतसबकोइ: तेहम
केसेंपरलहे आपमोछिकोंहेरइ॥६॥द्विजबाच॥फिरिकसोद्विजप्र
सनयो नकरकुसोचबिचार: सोकंमानपग्रहगत करिहेधरमप्र
कार॥७॥देहतजीगंधरबतब मीनभयेजलमांह करतबिहारजु
करमबस जमुनापुनिप्रवाह॥८॥बसुनामकोऊकवरतो: गिरक
बोमानास: पितआपातनकालगो: बनआषेटबिलास॥९॥ताकीबां
मारतिसमय सुकसोदयोसंदेस: मृगीयाजंतनकरचढ्यो: हीड
सकतबिसेस॥१०॥नलिकाबीरजमेलितहो सोदीनसुकहाथ क
जसफलसुकफिरिचल्यो मारगगगनसनाथ॥११॥तरनिसुताकेम
ध्यतट: जबसुकनिकस्योआनि: नक्तलोकतानावते ऊपट्योनी
चसिचानि॥१२॥तहानलिकाअधमुषभई: बीर्यगिस्योजलबीच

गंधरची सफरी गिरो: जबनीयरानी मीच॥१॥ तिहि गरन्थित कंनि
का: मछगंधा सुन्दरूप: लिपिलिलट पटनांतरे जो बिधि लिषी अनूप॥२॥
माछी का स्यो जालतहां: मीन मिथुन परिबेध: सुष दुष बहु गते जीव सम: सबही क
रम सबंध॥३॥ छंद पधरी॥ माछी लै आयो सफरग्रह: लै सस्त्र बिदारयो उदर
देह: तब निकसी कन्या अति अनूप: सब अंग अंग सुंदर सरूप: यह देषि अ
संचब बात एक: उतपनन भये अचिरज अनेक: वह कुतो अपुत्रक मीन मार
सेपोषि पुत्रिका करि सुदार: सब देह मछ सो रंन सुन्दार: मछगंधा नांम सो
कहार: अति सुंदर अतुलित रूप अंग: अहन्त मन कुसेन अनंग: पितनाम
समारन समय प्रात: मछगंधा रूप नतन समात: इहि समय परासुर पाउ
धारि: यह नांउ मोकु कन्या निहारि॥ रिष बाचा: दिछो रिनाव जल मोकु
डारि: उबि मांछ नि मोहि सरिता उतारि॥ मु छ गंधा उ॥ द्विजछन कनि
लंब कुइ हदेव: षिन आवत पुरुष कर हि षेव॥ ब्यास उ॥ अवकास
बिलंबन मोहि आज: करिबो आवसिक बेग काज॥ कंसा बाचा: मुतताप
सकलप हि त्रास मांनि: वहि आगे कीनी नाव आनि: बेगे महरिषि नौका
बिसाल: तिहि कीनो षेवा तात काल: सुंदरी दिषि कन्या सरूप: जोबनाह
मन मथ जरूप: मुनि लरी तेबे मन मथ मार: उसहन बान निकसे उसा
र: बहु नयो रिष हि कामे दबोय: प्रीय बचन करि कन्या प्रबोय॥ ब्या
स बाचा॥ मारत अनंग इहि समय मोहि: तिहि ताको सुंदरि सरन तोहि:
रति दान देहु नहि षेत्र रंग: इक द्विजहु करत बाधा अनंग॥ कंसा बाचा॥
तब कहो मीन गंधा सुता हि: इक कंसा कहु दिव सुआ हि: यह उचि
तना हि करम हि कुअंक: कंसा तब बिनसि चहि कलंक॥ रिष बाचा: रि
षबिमुष कुहर कीनो बिथार: आकास तयो दिग अंधकार: मुनि कहो न
जहु इहि द्वीप मो हि: तब काल हैउ नंतर आपतो हि॥ कबि कु॥ कुलला
ज जदपि पितमात कांनि: जीयहु री अपनय दुसह जांनि: कन्या नहीउ
त्तर फेरि कीन: द्विज राम तहार तिदान दीन॥ रिष बाचा: प्रीय बचन प
रासुर तयो प्रसन्न: मांगहु बनिता बर इछ मन्न॥ कंसा बाचा: कंसा तर
हैजानि नकोइ: दुरगंध न सेनि ध्यान होइ॥ रिषि बाचा: पसरे सुगंध
जोजन प्रमांनि: तुव जोजन गंधा नाम जांनि: बिनता बिसेष बेनव बि
साल: कंसा त्वर होतु वसर बेकाल: इह गरन्थ थरहु इहि द्वीप आज:
कृत सफल होहु मन इछ काज॥ कबि कु॥ त्रिनका सिपरन आछो

हितांम : धरि पुत्रत्रहासोगर्ध्यांम सुभसांमबरनसुंदरसरीर : सोजातम
नउलिगोसधीर : बथंसिधसाधसातिकसुनार : परपुरुषमहादेवतप्र
नाव : नपकरेसुषतकहुबेबितांम : आरथअनंतअंतरअकाम : बिनुअस
नपानबासनबिहीन : निमबदनदेहपोरुषनवीन : अतिसहकष्टषटरिउ
अंग : उतपनसिधतहांगअंग : यहपुरुष ब्रह्मअसावतार : सुप्रस
ननयेहरिकीयेसंचार : इकदिवसआनिहरिदरसदीन : परब्रह्मअषि
लकहुबांसबीन ॥ नगवानो बाच ॥ बिसुतहाकसोबरमांगिआस : जि
हिकाजतपोबनगहलबास ॥ आसउकरतारजानिजबसांनकूलमो
हिहेहुबेदबिद्यासमूल : रिषपुत्रकहेराजाधिराज : यहमांगतहोंब
रदानआज ॥ श्रीनगवान ॥ परब्रह्मकहोनहारसिप्रबीन : कतजा
नमचेतपउग्रकीन : बरलेहुबिबिधिसुषभोगआस : बिसतारराजबैन
बबिलास ॥ आसउ ॥ सुषसंपतिमेरेयहसनेव : दीजेदयालदेवाधि
देव ॥ नगवानो ॥ द्विजदीनोइछादानरेषि : आसबबिस्वकहिहैबिसे
षि : तबबेदचारिबानीबिलास : पूरनपुरानकरिहोप्रकास ॥ कबित्त
॥ बरबंछितदेआसकहं : सहसहइकसंत : नगतबिछलतिहिछं
नसये : अंतरध्यानअनंत ॥ कबित ॥ धरमनिरूपनकस्यो महाना
रथसुषराष्यो : बेदबिभागबिचार रिषूरबिमंडलराष्यो : बेदब्या
सबिष्यात कलद्वैपाइनकहीयो : तीनभवनतपसिध लोकअमरप
दलहीयो : कतकिनिकहीनरहरसुकबि : अपसकतिमनुअनुसर्यो :
अवतारअसअषिलेसको : आसनामजगबिसतर्यो ॥ इतिश्रीबेद
ब्यासअवतारचरित्रसंपूरन ॥ नांमाबारहटनरहरदासेनबिरचि
तं ॥ अ ॥ ॥ श्रीरामेनमः ॥ अथश्रीरामाय
णश्रीरामअवतारबालकांडलिखतं ॥ गथा ॥ कबित्त ॥
आरंभअंबेसा ॥ बदनसिंदूरअरुनबिथरयो ॥ आहनआप्सुबिचत्रांबरद
नाबुधिलंबोदर ॥ १ ॥ स्वेतगिरबाससुकला ॥ स्वेतबसनायबिमलस
सिबदनी ॥ हंसरथबीनाहसता ॥ सदबिद्यादानसरस्वती ॥ २ ॥ मू
लसकतिमहमाया ॥ ज्वालाननजोतिजालपा ॥ नगरकोटिनिवा
सं ॥ जगजेताबंदिजगजननी ॥ ३ ॥ सहसकरसप्रहासं : उदितअमु
रनासतमअषिलं : प्रतिमांअकेयपुरुषं : नयहंतादेवनासकरं :

सिद्ध सप्त ऋषि सर्वेश्वरा।। वृषभ को बाहन बिछावने है तो मरिष बिषई तु
चा को बास क्रोध के निकेत है आसी बिष भूषन भषन बिष बिधु भाल
मंगल तिलक सर्व मंगला सहेत है बिषय बिनास बेष रहत बिषे हीरत
सूल औ कपाल अहि संपति समेत है देषो धौं अचंभ नूतन नूतन नाथ एके
फल तजे रीझे मृत्यु नाम निज मृत पद देत हैं।।१।। तोरे हूं लिजात नवनी
गई है तो रही सो तो रीझो रीझी नवा के समान नारी यतु है।। रति ही सो रि
झो बिरत सो बिसेषे रत आरत पुकार सुनि के उधारी यतु है।। तप की
पवित्रता है तेज की अतुलता है पुन की पवित्रता है पार पारी यतु है।। का
सी नाथ काशी सब काशी कुन होत नेक हा सी तजे बासी ते बिसासी
नारी यतु है।।२।। कबित्त।। जटा जूट सिर गंग चंद्र सेषर चषु तवह
गरल कंठ अहि हार मूंड माला बिषत सह डमरू सूल कपाल पानि ध
नु बान प्रकासित। बपु बिभूति अवधूत सियगज चरम सवासित बा
मंग सिवा बाहन बृषभ जयति जयति संकर अमर। रघुनाथ चरित क
थ्यान हित सुमति हेतु हरि कसमर।।१।। अथ स्वयंभू मनु तप साध
न गा। कबित्त।। दोहा।। जाइ बलकि मुनि एक समय। उर आनंद सह
स। नारद राज सोय हि कथा। कही जु प्रेम प्रकास।।१।। कबित्त।। स्वयंभू
मनु सम यपार। तप साधन किने पति बरता सपुनीत ससंकूपा सं
गलिन्हे।। जहां निमेष सरूप परम पावन थल पायो। धेनमती सरि
ता सतीर। मनु ध्यान लगायो। तब द्वादस अक्षर मंत्र तहां। जपत निरंत
र समजुगति। मनहु पति महा संतोष मिलि नर मूल पत्र बनु गति।।१।।
पुनि छो के फल मूल पत्र जुग जुधा सुजिन्हीय। एक बार अधार बर
षषट सहस जु बितीय। बरष सहस दस कछु कि बारि बात सन किन्हो। अ
युत बरष रहि निराहार तजि पवन सु दिन्हो। एक पाइ रहे गढ़ अवनि
असथि मात्र अवसेष तन। सोइ उ अजोग मनु सधयो। मिलि सम कार
क बाचु मन।।२।। तहं पिन सरधा धरत रहत रत ध्यान निरंतर। अनंत
देषि तपसंकल्प सन। प्रगटे तयेहि या पर। बिमल होत आकास बाति म
नु मांगि मांगि मुष। सुनत सपुष्ट सरीर। भये सबरो मरो मसुष। आनंद म
गन मनु उचस्यो। प्रगटु भए ता पर मुपद। सिव काकतु सहि जु उरबस
न। सोइ दरसन दीजे सुषद।।३।। छंद पधरी।। जगहेत जगत पति जग
निकास। श्रीराम रूप बेद निप्रकास। सुनस्याम देह नीरद समान। परि

धानपीतबिद्युतप्रमानः रतनमयकनककंकनरसालः मकराकृतकुंडल
मुकुतमालः कटिषीनसिंघतनकसिनिषंग ः आरंनबिस्वजेताअंगः मार
गबामकरनिमतसोहः मिलिरहुनत्रामतबिसषमोहः सुनआदिस
कतिबामांगसंग ः अचलोकिउरितसुषअंगअंग ः यहरूपरषिसरति
उदार ः मनुकरेदंडवतनमसकार ॥ श्रीहरिजीउवाच ॥ हरिलयोबाध्य
रिमनुउठाः बरलेहुहेतजिहितपेआरः ॥ मनुबाच ॥ मनुकहेदेवम
नरकाज ः सबनयेमनोरथसफलआज ः करजोरिकहोसारमूकंत
अनिलाषएकअवरअनंत ॥ श्रीहरिउवाच ॥ हरिकहोतबेकरिपरमंत
मनुमांगहुसोइछासमेत ॥ मनुबाच ॥ ॥ स्वायंभूमनुतिहिसमय
प्रगटकहेबरपाइ ः तुमसोमेरेपुत्रहोइ ः तिहिहितलेउलकारा ॥ श्री
हरिउवाच ॥ पुनिहरिकहोप्रसनहेः सतरूपासोयहु ः जोअभिलाषाचि
तमहः तुमहुमागिसुलेहु ॥ मति रूपाउवाच ॥ मम मनरतामांगोजुबर
सोईहुमांगतदेव ः दीनानाथदयालतुम ः जानतअंतरसेव ॥ श्री
हरिउवाच ॥ तबहरिपरमप्रसनहेः दीयवंछितबरदान ः असेहोहे
हेअवसि ः मनुकीजेपरमान ॥ कबि ताकेदयालदेवयिदेकबर
दानदयोतब ः कछुककालमनुपरबिसाल ः सुष करहुतेसम
ब ः अवधिपारअबंधेस ः प्रगटहेहैदृथापति ः तबतवयहअवता
र ः आनिलेहुनरआकृत ः तिहिसमयजोगमाया अजित ः बेहोहे
हैबिमल ः मनुकरहुयहनिरधारमन ः सबेहोहिसाधनसफल ॥
इति स्वायंभूमनुबरलबधाप्रसंग ॥ अथरावनपूरबजनम ः सुनहुज
थाक्रमसाय ः द्विजसरापहतजोनृपति ः आसुरभयोअसाय
केकैनामारेसरक ः रतलबसतअनीत ः सत्यकेतराजातहां
राजकरेरिपुजीता ॥ ताकेपुत्रप्रसिधहैः तयेबिस्वबिभात ः जे
ठोनानप्रतापअरु ः अरिमर्दनलघुभ्रात ॥ ॥ सत्यकेतरूपदृ
नोः राजपुत्रकहेदीन ः बिमलचितबैराग्यजुत ः बानप्रसथर
तलीन ॥ ॥ नांनप्रतापसुनृपतिनो ः आसमुद्रअवनीस भस
प्रवरतेअखिलभुव ः जगजनहेतअसीस ॥ ॥ ताकोमंत्रीधरमरु
चि ः नीतिनिपुननिसंक ः इंद्रीजितनिरलोभअति ः एकसामिहि

तत्रैक॥५॥छैदपधरी॥इकसमयराजदलबलहिसानिःकरिमंत्रचंद्रो
दिगबिजयकाजिःअनेकसत्रुमारेसंग्रामःनिःमेघलयेधनधराधामः
दिगअंतकरीअपोअघेमःनदीकामदुअष्टथीअचकःकृतमहादानम
षहोमकीनःनिसहेतपुनिनिसचयनवीनःआघेटचंद्रोनपएकाल
जनजंतबिबिधिसंगसुनटजालःआकुलजीवमारेअमानःबिंधानु
लबनवाजतनिसानःपहलेरकआसुरकालकेतःपरतापनानसाजुचा
बेतःसतपुत्रअसुरदसवेधुतामःसोमारिलयेसेनासंग्रामःपुतबधुगिरसे
नासमेतःकरमीकतनाप्पोकालकेतःबनमीकरहेआसुरबिसेषजसम
याकरेअनेकबेषःअष्टबीजिहिहोआसुरअमानःनपोआबनतहपरता
पनानःसोनयोअसुरसूकरसरूपःउग्रिचलोआसुरआगअनूपःनप
लगोपीछिसूकरनिहारिःसंधानबानधानुपसंचारिःपुरिजातनिकरद
रसेदुरंतःइहिजातिकरेमायाअनंतःनृपएकआपकोउसंसगनाहिःमु
ल्लोबराहबनगहनमाहिःथलतलबिबरपरबतअथाहःबनपाइबि
बरगतनोबराहःदेखोपदचिन्हसुबिवरद्वारःनृपजिचोगरतदुरगम
निहारिःतहतनयोत्रिधातुरूपतासःनहीपयोयोजतजलनिबासः
सुबलीनीछीनिप्रतापजानःनृपगयोनाजिइकत्रासमानिःबनभ्रम
ततहंउतसोबिचारिःमुनयसोतकऊरहिसकतनपःरियबिषयसंग
हकपरसूपःनृपजानतासतपथतनिहारिःबनभ्रमतहंउतसोबि
चारिःमुनिकपटबेषबेगमहंतःनृपकरेदिबिंदनअनंतःनृपनानि
सोनबीनसोनिहंतःअतिपरीबिपतिनयोकुग्रानःनृपनानिपिछा
सोतिहिनिरेसःउरबथरनाखउपसोबिसेसःनृपनानकलासजानिसंग
उरत्रिपानोहिउपजोअनंतःतबकपटीनोजलबनाःपानीजलगना
अंदपाःनृपग्रायोफिरिकपटीनिबासःप्यासोबिप्रोनिबेकसरूप
करइ मुनिबाचनानसोकहोबकपटनेपअमतलिनयेदिन
कअसेषःजोजनतबसहरिनगरजानिःनियमसयनकोकजिनिदा
नःकहिनहचानृपनानतसबेनिमेकःकपटीदिषमनमन
जेकःसीसरीबहुतमुनिअनंतअरबिसमसबनिनगंतःकपटी
बचाःकपटीमुनिप्रोडिकीनःमुनिकरेकृपाकरिअनानः
तबहिनकेकरनीमुनरःदनमतकबकिनिबिचारःनृप
नोनउःकुवराजातसतपनानअनंतकोईग्रमपर
तगीयाहितनमनउग्रनमःकबकनहनबोनमर

गिप्रनुदरसपाइ सबनांतिकृतारथलेसुनाइ तहांकलोतानकरजोरि
नास प्रनुआपुनकोकहीयेप्रकास ॥ कबिरुबाच ॥ अवनीसयलो
बिस्वासएक यहकपटबातमिलवैअनेक छत्रीयनरेसजुतकपटसत्रु
तिहिजरतनेत्रनपरेषितत्र ॥ कपटी ॥ कपटीतबबोलोकपटलीन
रूनिरधनतहकथानहीन तउचीन्हतनाहिनृपततास बसतयो
नानमायाबिलास ॥ नांन बाच ॥ करजोरिनानपुनिप्रनितकीन तुम
बीतरागबिषीयाबिहीन तवकहुनामकरिकृपानाथ हितजुक
तसीसमुझरुहाथ ॥ कपटी ॥ बसतयोसत्रुजोनोंविसेष बा
चादेबोलोकपटबेष जनसंगतयेतपधनजाइ रहिनांतिरलो
येकांतआइ जोमनप्रसनतुवतगतिनाव राषिरूनहीतोसेंडुरा
व ममनामएकतनसुनहुमूल तनदेषतहुसबब्रहमतूल ॥ राज
बाच ॥ पुनिनृपतिनानपूछेनिपाप रहिनामअरथमुहिकहुआ
प ॥ कपटीबाच ॥ यहअषिलअष्टिउपजीअनादि वहिसमयतयोमम
जनमआदि इसिरोतयोनहीफेरिदेहु येकतननामकोअरथएहु त
पतेकछुदुरलतनाहितंत सिधांतकहतयहसायसंत बिधिनयेअष्टि
करताबिधांन प्रतिपालबिलुष्टीप्रमांन तिहिबिस्वबिनासकसिवबिष्ण
तपबलअगम्यकछुनहिनतात आजनमकरमैंतपअषंड जितत
योप्रबलमायाप्रचंड ॥ कबिरुबाच ॥ उतपतिप्रलयबातैअसेष ब
सकस्योनानकहिकहिबिसेष ॥ कपटीबाच ॥ नृपलगोप्रकासनआप
नांम तिहिबीचबोलिकपरीसतांम अबतोदुरावकीनेअग्यांन नृव
पतितुआहिप्रतपेनांन तवपितानयोनृपसतकेत रूत्रिकालग्य
गुरकृपाहेत पुरुषनहीकरतनिजगुनप्रकास अनगम्यनमोतेतवअरू
स अभिलाषचित्तनृपमांगिआज करिहुसबतेसफलकाज ॥ नांन
बाच ॥ नृपनानकलोतबयहनिदांन प्रनुमांगतहोअभिलाषप्रांन
अरिकरिअजेयअरूअजरअंग समरजितअमरहुषरहतसंग निःकंट
कएकछित्रनाथ सतकलपराजतुगतोसनाथ ॥ कपटीकहित
थाअसतकपटीकरूर सबकेहेबेछितकाजसूर बसतेरेजगहो
रहेबिसेष कालादिअषिलप्रानीअसेष द्विजबिनासबेतोहि
नरहिदंड येरहहिअजितनपबलअषंड जोहोहिबिप्रतुबब
सनरेस तोब्रहमबिमुतुमहीमहेस निसचयद्विजआपहिहोइ
नास बिधिहरिहरकृतवनहीबिनास कैबातपरेयहछेकांन

नृपमरनतबहितेरोनिदांन॥ राजोवाच॥ निरणयतवपूछोनृपतिसांन: ब
सहोहिबिप्रकहियेबियोग॥ कपटीएनोहैबसकारकबऊउपाउ: सोपैउर
तउसायिद्दाउ॥ राजोवाच॥ प्रभुकरोवहसाधनप्रसाद: बसहोहिबिप्र
जिहिंनिरबिषाद॥ कपटीकाचारियकसोफेरितवकपटरूप: नौजन
सकतहैबिप्ररूप: कैकरोमाकबिधिजुकतबांनि: आपनपुरसावऊरा
जआनि: सोकरहिबिप्रतोजनप्रहास: बसहोहिनियतमानऊबिस्वास
इकआनिकविनमुनिबनीआहि: मनतर्कबितर्कनिपस्यौनाहि: आ
जनमसुनऊनिसचयनरेस: मैंकरेनाहियतनप्रवेस: तुवनगरगये
बिनुसरबतंत्र: किहिनांतिहोहिसाधनसुमंत्र॥ राजोवाचमुनिसुन
ऊबेदमरजादमूल: तजिबोअगीकृतलयुनथूल: सिषधूमकूटत्रिनेत्र
रूपेन: सिरकीयेंबहुतेजोधरनिरेन: करयसोमोहितुमदयाकीन: निरब
हसबेतुमहीअधीन॥ कपटीकरियेजुगुप्तसाधनसकाम: तबहोइसि
धिसोरीतंत्रताम: होइप्रातरूपतुमचलऊयेह: द्विजलहनिमंत्रण
जारदेऊ: परजंतमासबूदससप्रेम: निसुनिसहिजिमावऊसहतनेम
मंहोमकहिलेद्विजसमूल: सुरहोहितबहितुहिसानकूल: सुनिगुनब
तरकनृपसहास: इहिरूपनआऊतवआवास: यातेमोहिउपजीबुधिएक
: यहहोइसिधसाधनअनेक: आदिकुलपरोहितवजुआहि: तप
बलतेआऊइहांताहि: तबहैकैमेरोरूपतास: कैकरिकरूपवाकेप्रकास: कैआऊप्रोहितरूपहोइ: कृतइहिमचीन्हैनहिनकोइ:
परजंतबरषतवरकैपास: कैकरिऊरूपवाकोप्रकास: कैआऊप्र
हितरूपहोइ: कृतइहिमचीन्हैनहिनकोइ: परजंतबरषतवरकै
पास: प्रोहितहिइहाराषोप्रकास: साधनमोहिउरलजनाहिसंसार
कारिजतुवकरिऊइहिप्रकार: आजतेंतुमहिंदिनतितीयआनि: प्रो
हितसरूपमिलिऊप्रमानि: पहचानिमोहिबातनिप्रकास: येकांत
बोलिलीजऊप्रवास: निरधारकरऊनृपतुवनिकेत: तपबलपुरुचे
कैहयसमेत: अवसेषरहीअबनिसाआइ: सुषसयननृपतिकरिये
सुहाइ: तयेषेदषीनमृगीयानृमंत: तहांनिद्रबसनृपऊवतुरंत
कबिरुवाच॥ कपटीकोमित्रजुकालकेत: निसचरतवआयेमु
निनिकेत: जोजयोबिसदराहसबराह: छलछिद्रपारकीनोउ
छाह: सुतबंधबयरराहससंचारि: चितकपटीमिलिनृपबधबि
चारि॥ कालकेतबाच॥ कहिकालकेतयोकपटकार: बधस

सत्रउचितनांहिनबिचार: जोहीनतदपिनृपछिप्रिजाति॥ अतिलघुक
रिगनियेनहीअराति: सीरषाबिसेषजोरऊसत्र: तउकरतअनेससि
सुरतत्र: निहचेसुषहीहोइसत्रुनास: सुनियेमतमेरोसावकास: निर
मलसत्रुकुलकरिनिसेष: बासुरचतुरथमिलिहैबिसेषि॥ कपटी
बाच॥ कहिकातकेतसोकपटरूप: जबहोऊबिजयतबअसुरन
प॥ कहिऊ॥ करिमायारूकसकालकेत: मेल्योनृपमंदिरहयसमेत:
रानीदिगसयनकरारेराज: बिचिबाजिसालबाधोसुबाजि: सोआ
निपुरोहितग्रहसमापु: आकरषिद्विजहिलेगयोआपु: तहाकरीन्
तमायाअनूत: धरिबेषपरोहितअपधूत: तहादयोआपनोरूपत
हि: करिगृहसुराष्योकंदराहि: कृतताकोरूपजुकालकेत: तिहिसे
जसयनकीयसुषसमेत: निसिकछुकसेषजाग्योनृपाल: त्रीयग्रह
आपनषिनातकाल: उठिबाहरिआयोनृपअगपात: तेहीहयचढिबन
नयोजात: कालनहीजाग्योयहप्रकार: दिनमध्यआरफेरिराजद्वार
करिसनासुनगमंत्राधिकार: सिंघासनबैठोनृसुदार: क्रमजुकतदेषि
संपतिअनेक: कृतसनाबिसरजनजुतबिबेक: त्रयदिवसतहाजुग
समबितीत: पुनिनयोसनाथितनृपपुनीत: मुनिकपरसुमहिमाल
ग्योमोह: बसनयोनृपनिमायाबिमोह: प्रतिमजुपरोहितअसुरप
प: इहिसमयआनिहीयहरसआप: नृपनमसकारकीयसहतने
म: प्रोहितनहाआसिषरीयसप्रेम: उठिनानतबैएकांतआप: प्रोह
तसरूपलीयबोलिपाप: नृपतहाकरेसकलपनेम: पूजाद्विजनोज
नलहप्रेम: अरुपानृपप्रोहतदरीयेह: दिनलहनिमंत्रनद्विजन
देहु: नावीसुप्रबलनृपलहनान: आरंभआनकछुहोइआन: प्रो
हितनृपसासनजबहिपार: सकुटंबबिप्रनिमंतेसुनार: मायाप्रपंचबिधि
बिधिबनाइ: कीयपाकअसुरधरिबिप्रकार: दससतदिब्यभोजनसुदेस
अनेकस्वादबिजनबिसेस: पसुमांसबिबिधिराधेप्रकार: तिनमांहबिप्र
आमिषअपार: जबतरीरसोरीसिधजाति: इहाबिप्रनिमंत्रतमिलेआनि
नृपतानसबिधिद्विजपदपषारि: बैगरितबेपकतिबिचारि: अपरस
नृपतिगदोप्रबीन: परुसारपाकआयेप्रबीन: इहिबीचतईआकास
बानि: हैनोजनकीनेधरमहानि: बिप्रामषराधेइहाबनाइ: जोब्र
हमतषेसोनरकजाइ: यहसुनतबिप्रऊगेरिसाइ: बसतावीनृपहिन
बचनआइ॥ द्विज बाच॥ बिप्रनिसरापदीनोबिसेस: सकुटंबहोहुरा
हसनरेस: तदेवमासतवहोहुनदु: पुनिकरुपापदृघीप्रतछे

कबरस मांऽतवनासहोरः कंदातरहऽजिनवेसकोरः पाविष्टकरेहन्द
रेबिप्रः प्रतुन्नयेधरमरहकसु छिप्रः नपरलोऽपोसोकछुनजोनि
नेरथारनरीफिरिगगन बांनि ॥ आकासबांनी॥ निरदोषनृपतिनि
सचंयनिपापः अपराधबिनां द्विजरयोआपः॥ कबिरुबाच॥ जोबिस
मयसुनतप्रतापनानः नजगिरादेवइछानिदानः अननीसपाकमंदिर
द्विआरः नहीओहिपाकेनपात्रपारः कारनबिप्रनिसेंपगुरकोनः मुर
छगतनोनृपमनमलीन॥ द्विजबाच द्विजकलोनांनसोंकेरयातः जो
वोबिष्टमांनऽतुवालः निरदोषजांनतुवनिसंदेहः अनसमऽिआप
हमरयोयेहः सबकहतसुरासुरबेदसंतः अमथाहोइनहीआपअंत
ह्यीसरकेहेजुकतपापः अवधिलोआपबजिहोसुआपः श्रीरामबान
हतसमरसिधपुनिमिलऽजोतिदेवोप्रसिध॥ कबिरुबाचासबग
वोबिप्रदीनोंसरापः प्रानीहतनुगनतपुनिपाप॥ दहा॥ ओहितन
ननरेसकोः ग्रेहरयोपुंहचारः कालकेतमुनिकपटसोंः जयजुतमि
लोसुजाउ॥१॥ प्रीतमकेअऽआपनेः लीनेबयरबसेषः केकेदेस
नरेसकोः जोयोबंसअसेषा॥२॥ दुसहजानप्रतापकोः दीनोआप
द्विजातः अतिअनीतिजुतबातयहः नरीबिस्वबिष्यात॥३॥ बलदुर
जनअऽमहकाः इनकेसिधसुनावः छिद्रहितकेतरहतनिस
दितसमयपरहावः॥४॥ बेरीजाननरेसकेः येकेनयेअनेकः जह
तहांतेसमिटिसबः कीयउहिमजुतटेक॥५॥ कबित॥ आगेनृपति
प्रतापजांन जिहिपरिनिवदिनो राहसमनुजअनेकराज मिलि
मंत्रजुकिन्हो सत्रुसेनचतुरंगसाजि परिहिससंतारीयः चऽओ
रचटिसीम बेरबिग्रहबिसतारीयः दऽहिसिप्रचऽअनपारदल थ
रमस्वांमिरिषपालधरः दिनफिरेतबेनृपजांनके परेबीरसंग्रा
मपुरा॥१॥ बरषेएकबरबीर बिषमसंग्रामजुबिजीयः बलषुटे
षगधार करीरविमंडलकिन्हीयः सुनरमंत्रिसुतबंधु सहतसेना
चतुरंगीयः पऽओसुनृपतिप्रतापजांन नारायअऽकोंयः उबरेन
बेसअबसेषरहि कोऊजलअंजुलिकरनः बहीरतदेवइछानियत
नोमहीपरहिबिधिमरन॥२॥ रावननृपतिप्रतापजांन कुंतसुअरि
मर्दन मंत्रिधरमरुचिधरममल केहेसुबिभीषन अवरसुजटसे
वकअनेकअवतरहिजथाक्रम आकृतदहउतंग महावेकृतपाप
[illegible] परितापप्रानहिसकपतित बिसवद्रोहमनमथ बिवस अ

बेकजोनिराहसअधम जयेनवष्ण हैअवधिबस ॥ इतिश्रीरावणपूर्व
जनम ॥ अथरावण नज नम बर्नन ॥ कबिरुबाच ॥ दोहा ॥ रावणहिके
जनमअब कहिऊमतिअनुसार जिहिकारनजुवजरहरन नेरांम
अवतार ॥ १ ॥ कृतजुगबिषेपोलसतिरिष साधनतपसासंत आपे
रूमिसुमेरकी थलदेषोएकंत ॥ २ ॥ तपहितकरेनिवासतहां बनबि
चित्रबिसतार सरसरोजकुस्त्रीयसुषद मज्जमधुपगुंजार ॥ ३ ॥ तह
साधनकीयउअतप जयोब्रह्मचितलीन धारनजोगसमाधिधर
मनआसनदिढकीन ॥ ४ ॥ तहराजात्रिणबिंदुको पतननिकटप्रसिध
बरनचतुरतामहबसत सबसानंदसमृध ॥ ५ ॥ किंनरसुरमुनिकंनि
का गंधरबीसुतजान तिहिसरवरआरीतबें करतबिलासबिर्थ
न ॥ ६ ॥ तेनचतुरगवतहसत बाजितबिबिधिबजाइ क्रीडतिहिकर
तालिका धरतिपरसपरथाइ ॥ ७ ॥ कोलाहलकृतकंनिका आश्र
मकीदिगआर अंतराइजोध्यानमह कलोपुलसतिरिसाइ ॥ ८ ॥
पुलसतिउ ॥ रेपापनिमम दिष्टिपथ इहिसरजोपेआर गरनव
तीसोईकंनिका कैहैंसहजसुनार ॥ कबिरु ॥ तबबेकमांजयं
त्रिसत आपआपअहआर भेदनकाफलसोकलो लयुबयरहीलजा
इ ॥ १० ॥ कं नानपत्रिनहुदकी अवरेहिनअपात घेलतनिरनय
आनिसो बिनुजानेवहबात ॥ ११ ॥ परीजुदिष्टि पुलसतिकें अकस
मातनहांआइ गरनसत्यितनाकहनरी नावीप्रबलसुनाइ
॥ १२ ॥ छद्मपधरी बिबर्णलग्योतनहोनबांम तबगरनसुलछनप्र
गटितांम अंबाबिलोकिसबिकारअंग पतिसोनिवेदपुत्रीप्रसं
ग नृपलिष्योतबेकरिजोगध्यान मुनिकृतसदोषयहसमांनि
त्रिनहुदृतहाधरियदग्यान पुलसतिहिदईपुत्रीप्रमांन निसकरे
नरहसेवासनेम पतिबरतपरमसाधीसप्रेम ॥ मुनिबाचालव
कैप्रसनबोलेपुलसति सुनिप्रीयेकहुएकबचनसत्रि एकहै
हैतेरेसुतअजेव हुवबंसहृधकारककुदेव ॥ कबिरु ॥ दोहा ॥ ताके
पुत्रप्रसिधजो बिस्वअवाय हनाम बिद्याजुतलछनबिमल
तेजसीअतिरांम ॥ १ ॥ रिषपुलसतिकेपुत्रअरु ब्रह्मपुत्रबरबा
नि ताकहकंमाआपनी नारदजदईआंनि ॥ २ ॥ सोआहीबि
स्वस्त्रया मिलिआनंदअमेव ताकेपुत्रकुबेरसो जोउत्तरदिग

देव॥३॥ बिधि निमंत्रकीयबैश्रवन: उग्रतपसाआनि: मनसंजमआतम
दमन: अलतपसीतनजानि॥४॥ छंदपधरी॥ जियसायिजोगसहि
उ:षजाल: दीयदरसनयेब्रह्मादयाल॥ बिधि बाचाबैश्रवनमां
गिबिधिबाचदीन: करनजिहितपसाउग्रकीन॥ कुबेरबाचा॥ये
स्वर्यदेकैदेवतअनंत: अक्षयधनेसपदअवयिअंत: पदवीधनेसनो
हिसापाल: दीनोबिमानपुष्पकदयाल॥ कबिक॥पायोकुबेरप
थीप्रताप: अबजनवगएस्वसथानआप: इकदिनकुबेररथचढे
आरूढ: पितबरनकीनेदरसपार॥ कुबेरबाच॥ बैश्रवनकलो
पतिसोसंप्रीति: बरदयोमोहिब्रह्मबिनीत: बिश्रामबतावहु
कोउबिष्मात: तहाबसेजारनिरनीतसात: इकतुरगपुरीलंकाअ
रूप: सोरचिनबिस्वकरमासरूप: बनगहनत्रिकूटाचलबिसाल
प्राकारकनकअंजनप्रबाल: पाथोनिधिपरिषगहरपूर: संचारतह
इकप्रनासूर: निरमयेऊतेराहसनिवास: तेगयेसुतलजनिबिश्व
त्रास: सोआहिसनिदुरगमसथान: तहपुत्रबासकरियेप्रमान॥
कबिक॥ पितबचनआरअप्पअधीन: निरभयधनसुतहाबासकी
न: संपतिसबअक्षयसुषसमाज: रसभोगकरेतहाजहराज॥ इहाभा
लिवानराहसअधम: अवनिसुतलतेआर: संपतिसुषबैश्रवनके: लंक
बिलोकेजाइ॥१॥ राहसथानकसुरनिपह: देषतउपजोद्वेष: सत्रुभावु
तेनिहिसमय: बाढ्योदुषबिसेष॥२॥ षलजनदेषेआनसुष: अंतरज
रेअपार: ताकेबिघनबिसेषकों: करेअनेकप्रकार॥३॥ मालवान
फिरियेहगो: करनकुबेरअकाज: कंन्याअपनीकेकसी: लेआयोनिरल
ज॥४॥ मालवान उ॥तिहिंबलकंन्यासोंकलो: तरीसजपानाम
बिधिनातीबिसवअवा: ताकेकुलजकुसकाम॥५॥ तबतुवपुत्रकुबेर
से: होहिमहाबलवंत: छीनिलेहिसोसुरनिपह: तुवलंकापरजंत
ह॥ छंदपधरी कबिरुबाच॥ करिमंत्रपगरीपुत्रकाहि: जयहेउ
पुत्रितसीघ्रजाहि: केकसीआस्तबरिषनिकेत: सेवासुकरेमन
क्रमसमेत: पोलसतिसमयइकचितप्रकास: सोजग्पेजोगनिरानि
वास: केकसीअगटीकुमारि: ढरहीअधोमुषमुषनिहारि: जोब
नागमनउदनवअनंग: उफनातजुसोताअंगअंग: पदनषनिल
षितरेषाप्रमान: लजानिलाषनयमिलिसमान॥ बिस्व अवाबाच॥
मुनिकलोतहिलषिलजाम: नक

नगर कैकसी बाच॥ सरब्रपसहास्रसुपरमसंत॥ अप्रातकछुनतुमतेअ
नंत॥ कबिकुबाच॥ कैध्यानवसथितरिषिसहित॥ चिंतत्रिताषुत्रीयति
भोचेत॥ रिषि बाच॥ अप्रासुदरीपोतसतिरेव॥ ऐपुत्रदुष्टकैहैअदेव॥
कैकसी॥ प्रभुहोहिदुष्टतुमतैजुपुत्र॥ अवैनचिंतयुहअसंकत॥ रिषि
बाच॥ कीयजाचेमातैअसुरकाल॥ बलसमयहोइमध्यानबाल॥ सुत
कैहैत्रीयसुत्रवसिध॥ परब्रह्मजगतपावनप्रसिध॥ कबिकुति
हिचईगिरनथितद्विजप्रसाद॥ बसअवधिप्रसवतोनिरबिषाद॥ जिहि
जातमत्रनयेअसुरजाल॥ ब्रह्मकुलिथिरचरबिहाल॥ अकृतअ
साधआतमअनीत॥ सुवकंपरब्रेत्रयतोकुनीत॥ उतपातहोतदुरनि
मतआनि॥ जबलयोजनमरावनसुजानि॥ बिग्रहअमानअरुनुज
बीस॥ स्वाभवदुष्टदसबदेसीस॥ बलअमितदेहधरधरमबाध॥ अ
तिकुंतकरनउपजोअसाध॥ अनत्रिप्रकोमअयरूपआप॥ पुनिस
पनषपुत्रीसपाप॥ उतपतबिभीषनसुतसुभाव॥ भगवंतपरायन
नगतिजाव॥ योउतपतिरावनकृतआप॥ पितासनबालतमनुजपा
प॥ होरतासबृथजगनासहित॥ मिलिबढतरोगजोबपुसमेत॥ परि
तापबिस्वहिंसकसप्रान॥ अनुचवअनीतबलअप्रमान॥ बैश्रवनच
द्रोपुष्पकबिमान॥ पितदरसनहितअगमप्रमान॥ कीनेकुबेरतह
नमसकार॥ पुनिदयेपिताअसिषअपार॥ बैश्रवनदेषिअतितेजवं
त॥ कैकसीउपजिअमरषअनंत॥ कैकसीबाच॥ सेगरपुत्रिरावन
समीप॥ मनसोतिपुत्रकोमहमहीप॥ उरउवतअगनिअसबैरभाव॥
सुषआनअसहसबत्रीयसुचाव॥ सुतकरकुजतनतुमकैसदाप॥
वातैबिसेषतुमहोकुआप॥ रावनबाच॥ अबानचिंतुमरकुअ
ंत॥ अबहमकुकरेउदिमअनंत॥ कबिकुरावनसबंधतवछो
हिराज॥ लोकलगियोतपकरनकाज॥ अपनैसुतारत्रयबंधुत
म॥ कृतनियमजेगसाधतसकाम॥ येकायचित्तरहिएकपार॥ पंच
सबरषसतगतसुतार॥ सबतारसभोतपआनसेव॥ दीयदर
सबिभीषनब्रह्मदेव॥ बिधिबाच॥ चितहेतकलोबिधिबर
नचारि॥ बरमांगिबिभीषनमनबिचारि॥ बिभीषन बाच॥ मांगे
सुबिभीषनपरमप्रेम॥ निसरहेबुधिरतधरमनेम॥ इछाअधरम
उपजेनआर॥ ईस्वरीभगतिसबदिनसुचार॥ बिधिबाच॥ सो

ईहौ कुकलो बिधि दयासंग: अरु अजर अमर आतम अभंग: सब फल जो निस
यन सुनाइ: उचित बेबि नीबन तप बिहाइ॥ कबि रु॥ नये बरष अयत जब
तप बितीत: ब्रह्मा तब दरसन दीय बिनीत: सुरसती प्रेरित हा सुरसमाज: इ
हि दुष्ट हृदय मुष बस कुआज: जो नीत तव कीय जिह्वा प्रवेस: सुन जो नि कुं
नय छल सुरेस: उर बसो कुंत अभिलाष आनि॥ बिधि बाच॥ बिधि कहै
मांगिसो ईसो दमानि॥ कुंत बाच॥ बरष मह एक तेज न बिसेष: षट मास नी
रसो ऊँ असेष॥ बिधि बाच॥ ब्रह्मा बरदीनो लहि बिस्वास: यह्यो ही कै है
अनयास॥ कबि रु॥ पुनि देव हृदय आनंद पार: संसार अहित टरिगो सुना
र॥ देव बाच॥ यह जागर करतो नित अहार: सहजहीन सपावत संसा
र॥ कबि रु॥ सरसती ब्रह्म आथे सथान: करि बिबिधि बिस्वरहा बि
धान: इहो उग्र तप तरावन अषंड: कृत अग्य ज्वलित अति अग्य निकुंड: ज
बहि ब्यिसहस इक बरष जो हि: मसतक इक हो मत अनल मो हि: एकास
न बैठे तप अपार: नव सहस बरष गत निराहार: आकृति दसमासिर सम
य आइ: सो उसीस लगो छेदन सुनाइ: नि: कोष षड गज बलयो पानि: तब
बोलि ब्रह्म आकास बानि॥ ब्रह्म बाच॥ मामेत बाच बोल्यो मराल: तहां
आनि दरसदीय तात काल: दस सीस मांगि बिधि बाच दीन: निरधार जु
मन इछा नवीन॥ रावन बाच॥ सुप्रसन्न देखि जब ब्रह्म संत: तब कलो
दसानन कृत्य तंत: सुर असुर जक्ष तर हु साथ: नहीं नाग कुकरि मम अंत
नाथ: मम मत हनूत मानुष महीप: सो गिनत नाहि हम बल समीप: अमर
न अनय जल थल अकास: पाताल गमन मांगत प्रकास: बिधि तथा अस
त कहि बिमल बानि: मन निसचय सो दस सीस मानि: फटि जु सीस ते हो
मकीन: नव अहय कै है फिरि नवीन॥ कबि रु॥ यो कहत मात्र अहय अ
रूप: सिर नये प्रगट सुंदर सरूप: आश्रम सब यह सर्क धआइ: प्रफुलित
स्वइछ बरदान पाइ: बिभीत नर त्रय लोक बात: सुर साध सिध काहू न
सुहात॥ कहा॥ दस सिर कोनाने दुष्ट: मालिवान तिहि नाम: सो सु
निआयो सुतल तै: सहत कुटंब सब बाम॥॥१॥ असुर प्रहस्त अरु आदि दै॥
संग मारीच सुबाहु: आनि मिल्यो दो हित कहै: सिय नयो ससना हमारा॥
मालवान बाच॥ तिहि मत रावन सो कहो: हम छांडि जब लंक: सो ग
दपायो सूनि तहां: बसत कुबेर निसंक॥२॥ छल बल अथवा सामक
रि: तीजे बेग छिनाइ: राहु सकै व हु दुरग है: देव बसत हम आइ॥४॥ रा
वन बाच॥ तब रावन उत्तर दयो: तुम जानत सब री ति: जे ग्वे थकु
बेर सो: नाहि उचित अनीति॥५॥ प्रह सुत ३॥ तब प्रहस्त निस
कहै: रावन सुं कहि बात: राजा [illegible] तिन कै कैसे त्रात ६

।।२।।दोऊकसिपकेसुवन:हंनवरदेवप्रतिष्ठ:ऋमिराजकेकाजसो:अंजफु
लरतबलिष्ठ।।३।।कबित्त।। रावनसुनिप्रहसतमत:लोतअनरथबढ़
इ:जेगेत्रातनिकासिके:लंकालईछिनाइ।।४।। रावनतहकुटंबजुत
आनिबसेगढलंक:सबराक्षसमिलिराजदीय:कृतअनथकनिसंक।।
।।५।। रावनकीबहनीतहां:बिद्युतजिह्वानाम:कालषंजकोतिहिसमय
आहिदईबरबाम।।६।।छंदपधरी।। पितसोंकुबेरकीनीपुकार:बृतांतक
होसबबारबार:जबपितकुबेरहिदुषितजानि:उपदेसकरमनमोदमा
नि:दुषतेरोहरिहैसंतुदेव:सुतकरऊप्रमजुतजारसेव:मनधरिबिस्वास
पितबचनमानि:उग्रतपकरकैलासआनि:हरदेवतजेसुप्रसनहोइ:
सुतसषाअपनोकस्योसोइ:अलकपुरउतरदिसिअजेय:सोरवि
तबिस्वकरमासप्रेय:पुरबासदयोसिवकैदयाल:दीनोंधनेसपद
दिसापाल।।८।। बसिकुबेरअलकपुरी:रावनलंकनिवास:इहिं
बिधिऋमिबिनगनो:सहतप्रतापप्रकास।।९।।कबित्त।।क
सिपपितुदनुमात:उदरमयनयोनिसाचर:सबअसुरनितिहिदईबि
स्वकरमापदईबर:ताकीकंन्याअतुलरूप:नामोमंदोदरि:गुनलछन
बिद्यांप्रबीन:त्रैलोकहिसुंदरि:सोबिनताब्याहीरावनहिं:संग्रमे
यदीनीसकति:बरबरनिनेणबिलसतिबिबिधि:पृथीकंरकलंकपति
।।१०।।दोहा।। देतबिरोचनदोहत्र:बृत्राज्वालानाम:कुंतकरनतिहिकरय
हन:कृतसुषबछितकाम।।११।। बिद्युतनामसैलुषबिनु:गंधरबनिकोरा
ज:सरमाताकीपुत्रिका:साथीसुमतिसुलाज।।।।१२।।सोब्याहीजुबिनीषन
हिं:आनंदबढेअनेक:बरनीबरजोरीबिमल:बनिज्योंनीतिबिबेक।।१३।।
उष्टपुत्रमंदोदरी:जायोषलबलवंत:अघकारकअनसंकअति:अवनि
अधरमअसंत।।१४।।जातमात्रघननादतिहि:कीनोंगरजकराल:मेघ
नादतातेतयो:नामसुरेसहिसाल।।१५।।कुंभ बाच।। कुंतकसोदस
कंधसो:निद्राबाधतमोहि:मुषमांगेपायोसुमे:कहाकरूंअबतोहि।।
।।१६।।कबित्त।। एकात्रिकूटाचलगहर:कृतअनेकप्रकार:कुंतकरनत
हसयनकीय:करिअहारअनपार।।।।१७।।देवदनुजनरनागद्विज:त्रय
पुरतयोसंताप:सबहीकोरावनससुत:पीडदेतसंताप।।१८।। सुनो
अधरमाचरनजब:रावनकोसबिसेष:पग्योकृतकुबेरतहां:क
हिकहिबिनयअसेष।।१९।।कुबेरबाच।। ब्रह्मबंसउतपनबिदु
कुलपुलसतिजयकार:तिनकहंजुकतनआचरन:अवनिअधरमा
चार।।२०।।रावनबाच।। रावनसुनिउरपरजस्यो:असहमानअहमेव

हमकहुँउपदृष्टान्यये तुमकुबेरहिदेव॥ कबिरुवाच॥छंदपधरी॥मिलि
सेनाकटकक्रोधमानि:अलकापुरघेस्योतबहिआनि: निकसोकुबे
रमगत्रासमानि:तहालयोछीनिपुष्पकबिमान:जिहिरथारूढ्जम
बरनजीति:अतिकरनलगोदससिरअनीति:जबघेस्योबासवले
कजारः रहोइंद्रकस्योसंग्रामआरः देवासुरकीनेकछुककालःसो
मेयनादसुनिनयेसालःआयोतहांआतुरकुवरआपः दारुनसंग्राम
कीनोसदापः लेचलोबांधिइंद्रहिनिलाजःदीनोछुटाइबिधिदेवरा
जःअतिबलीसमरकृतिबिजयअंकःइंद्रजितनामपायोअसंकःरह
रावनगिरकैलासआइःसबकरेसिवहिबंदनसुनाइःलीलाउगरह
कैलासलीन पुनिधस्योफेरिरथीप्रबीनःदीयसापजुनंदीगनस
हासःनरबानरकरिलेहोइनासः॥ दूहा॥ पुरीसुहैहयराजकी
माहिषमतीप्रसिधःरेवातटतयदुमरहतःसबकोउबसतसमृध
सुदसिसुतगसमूहसंगःनदकीडतनरनाहःकरसहस्रबिसतारक
तःपानीकेप्रवाह॥१॥ दससिरसंध्यामध्यदिनःबिमलनदीतल
वासःपेमजुकतहरपूजियतःकीयपारथीप्रकास॥२॥ पानिलये
जबअंबिनृपःचलेप्रवाहसपूरःमिलितरंगसिवलिंगगतःको
पिउग्रोबलकूरा॥३॥पस्योजूफिराहसनृपतिःकूतलमहानयांन
कछुककरेकीडाकलहःनिसचरबध्योनिदांन॥४॥ आयोतहपु
लसतिरिषःसोयहसुनीसुनाइःकरिजाचेनानृपतिकहःदीय
दसकंधछुटाइ॥५॥ छंदपधरी॥तबगयोसुतलबिजईबि
हारःदेतनिसोरोक्योउराचारःदससीसदेतेउतबलिसदापःअ
नंगमिलेदेउजुधआपःउठ्योरकरेबलप्रबलदावःनिरथ
तयातबाजहिनिहावःदेतेसतहाराहसदबारःबलिलयोबांधि
रावनबिदाइःपोलसतिथंनबांध्योसपापःआवासआइबलि
बिजयआपःदससीसबीसभुजदेषिदेषिःबिनताबिनोदउ
पजोबिसेषिःदेकवलहाथिदेतेइंद्रदासिःहनितालनचावतिकर
तिहासिःइहिसमयसुक्रबलिद्वारआइःसग्रथंनबध्योदेष्योसुन
इःछुटकारहयेएरबंधछोरिःबलतोलिलंकआयोबहोरि॥
कबिता॥ नयोनरेसप्रातापनांन रावनलंकेसुरःअरिमरदनजो
कुनक्रंन अलसनिअग्रेसुरःसचिवधरमरुचिधरमसीलःनयो
नगतबिभीषन ॥ ॥ ॥ मायाकरिमलीन

मन: द्विज आपदोष गत दुरगति हि बिस्व बिनासक बुधि बिकल र
हसी जो नि सुगवत अनय षर बाहन निरलाज षल ॥ इहा मनधन
जोबन राज मद कुल दल बल इक गैर इन हीते उपजत अषिल
हित अनरथ न ओर ॥ २ ॥ छंद पधरी ॥ इक समय दसानन सत्र आ
नि बैरे सबंध सिर छत्र तानि सुत पोत्र सत्र सब सचिव संग अरु
आर सुभट राहस अत्तंग ॥ रा व न बाचा करि कोप कलोक कंटक क
रूर तुम सब बैनि साचर समर सूर एक मूल मंत्र सो सुनहु आज फ
कहत निसाचर श्रेय काज हम सो हितकारी हर षवंत सुप्रसन सद
सिव ब्रह्म संत इंद्रादि देव हम सत्रु आदि असुर सुर बैर उपजो अ
नादि इन के सहाय हैं बिष्नु एक सो करत अमर रहा अनेक वह बि
ष्नु मरै जिहि तिहि उपाय सब हो हि काज अपने सुभाय बिबुध के
मूल हैं मष बिधान निसेष उषार फुते निदान जब लगन पावहि
अमर जाति आपु ही दीन कै हैं अराति हीन षल पर हित बमारि लै
हि थल छांडि जांहि कै हैं हि बिबुध तजि जाहि जब देस बास
तहा असुर बसावहि अनायास सब रुष्ट उग्र यह मंत्र मानि कृत य
रम बाध मष छांडि कानि द्विज जो जप आरध जप होम दान अरु पा
ग्र बेद सास्त्र पुरान गो ब्रह्म तिलक जग्योपवीत अति होत सा
ध तुलसी अनीति पुनि करत ध्यांन मुनि जहा पार दै अरध चंद्र दे
जन उगाय प्रतिमा करि षंडन पद प्रहारि आमूल लेत दव लउ
मारि रुधिर द्विज मांस आवहि रसोइ हित जुकत तास आह
रहोइ अति कोप चढ्यो रावन असाध बल छांडि करन धरध
रम बाध तहा अत्तंग धरि इंद्रजीत अनेक संग सेना अतीत
इंद्रादि देव दिगपाल अंत तेक्कवर बायि आनहु तुरंत दल चलत य
सकि धरनी दिगंत पर बत निसंग दहि दिपरंत नीसान गहर धु
नि परि निहाउ सुनि होत अमर स्त्रीय गरभ आव यह लोक लोक ज
ब बात आइ स्वस थान सुर निछांडि सुभाइ मिलि छपे मेरु कंदर
मांऊ सुर समय न जानत तो रसांऊ दिग देव लोक जब सून दि
सि बस गरब हस्यो रावन बिसेषि अहमेव असुर उपजो अ
सेस सन मुषन नयो को ऊ सुर सुरेस बैस्रवन सूर ससि बरु
न बात जम अगनि काल किंनर बिख्यात मुनि जहा सिध गंधर
बनाग नये बिबुध षीन मष रत नाग बिधि अष्टि नई बस

बरतवांन कोऊस्व : तंत्रसुनियेनकांन. सबगंनिबुधिबलमंत्रसा
धि बसकस्योबिस्वउपजीउपाधि सुरजहनगकिंनरनरेस गंध
रबरैतहानवगिरेस प्रीयबधूसुनगकंमाप्रकास बललेतछी
निजीयलगतजास सुरद्वेषदुष्टसेवकअसाधि : अनेकरूपकार
कउपाधि : जहसुननसाधद्विजसुरनिसिध पुरजारिद्वैतपतन
प्रसिध : निरमूलकरेसबधरमनास गुरदेवनपूजाअतिथआ
स : जपजोगजुगतिगुरगंमगपांन : कहुनीतिनैकसुनियेनकांन
कोउकरैनमातापिताकांनि : जगनयेनष्टिआचरजांनि. इहि
नांतिधरमगतआदिअंत ऋनरीतहनारइकंत ऋनरीधेन
रूपासजीत अतिअसहमानरावनअनीत : जबनरीबिकलबि
हबलबिहाल : सहिजातनहिनवुरपरमसाल : सुररहेमेरकंद
रसमार : अतित्रासजुकतगेनहीआइ ॥ एथीबचासबकहिअ
नरथजेनयेसंसार : नरीदेवतासकुंदुषितनार : चवषांनिच
राचरनहीबिचार : ऋकलोअवरमोहिसुगमनार बिस्वास
घातअकस्वामिद्रोह मनकनकतेयकतछेदमोह : संसरगीद
नहिंसुनावसिध : येपंचमहापापीप्रसिध पापिष्टतहायेधरत
पाइ : कंटकतकंपममहोतकाइ इनआदिअवरपापीअपार : स
बरलोपूरिरहससंसार : अवनिजबनईअयनरअधीन : करि
कहनसुरनिसोप्रनितकीन ॥ इहलषचोरासीजीवजग : अ
कतदेहअमांन : तिनहिबहुतनिसंकहु : मानतनूलसमांन ॥
कबिकु ॥ इंद्रादिकसबमिलिअमर : संगबसमतीससोक : किं
नरजबिगंधरबमुनि : आयेबिधिकेलोक ॥१॥ अवनीकोअस्त्रा
पनो : दुषसुषकलोसुनाइ : ब्रह्मासोबिधिबिधिबिवरि इं
द्रादिकअकुलाइ ॥ ब्रह्माआतपसफलपहलेतिनहिं मेदी
नोबरदान अबतोमेरोनाहिबल : ब्रह्माकलोनिदान ॥२॥ दी
नबंधुजाकोबिरद अखिलबिस्वआधार : सदासहाइकअपनो
करियेतिनहिपुकार ॥४॥ कबिकु ॥ सिवबिरंचिसुरपतिसुर
नि : कारनकरुनाकीन पाहियाहिपूरनपुरुष : हमबुधिबल
नयेहीन ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ इंद्रादिककीआपदा सुनिबेकु
ण्ठनरेस : नजबां : : अ : अबिलेस ॥६॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तुवगरजप्रबल पृथ्वीप्रसंस: श्रीरामचरितसाहससधीर: बिभातनामह
नुमंतबीर: तवपुत्रपारहोरुद्रनाम: सुरकज सिधकरिहैसंग्रामा॥अं
जनीबाच॥निरदोषदोषममलगेपेदिव: अंजनीकहोप्रनुरैयेव॥क
बिकुबाच॥केसरीनामकपिमहाकार: सोकरतसंतुसेवासुचार॥दहा
इतहितपस्वनिअंजनी। उतकेसरिकपिराज: हरआपापानिजग्रहन
कस्योधरमसुरकज॥१॥ तपसासेवाफलतबहि: पायेपुत्रनिश्च
सिध: तवप्रसादत्रैलोकनो: सबहरषतसुरसिध॥२॥ अवधिप्रा
अंजनिउदर: महाबीरहनुमंत अमरसहाइकअवतरयो: बिष्णुजग
तबलवंत॥३॥इति हनुमत उतपति अथ बालिसुग्रीवउतप
ति॥कबिक॥ दहा॥ मध्यजुअंगसुमेरको: सतजोजनबिसत
र: ब्रह्मसनाताकेबिषे: बेगतनितबिहार॥१॥ येकसमयसुर
सिधजुत: बेगेसनाबनाइ: ब्रह्मग्यानचरचाबिमल: होनलगी
सुषदाइ॥२॥ चतुराननकोबिनतहा: नयोब्रह्ममहलीन अ
ग्रुचलेआनंदमय: सोकरअंजुलिकीन॥३॥ बिधिसोअपनोअश्रु
जल: करतेदीनोकारि: नमिपरतबानरतयो। बिजयनामअबि
कारि॥४॥ बिधिआग्याबसबिजयतहां: बसिसेवाहितबीर: नित
बंदनदरसननिरत: रहतध्यानजुतधीर॥५॥इकदिनअरथअ
रकै: बिजयत्रमतबनमांह: तहाबापीसुंदरसुघर: देषीउदिक
अथाह॥६॥ तिहिबापीबानरत्रिषत: ऊपरबेगआनि: मुंहकाके
जबनीरमंह: नोप्रतिबिंबप्रमानि॥७॥ असहमानअतिदरपतें
बानरजानिबिसाल: नावीबसअतिक्रोधजुम: कूदिपस्योततक
ल॥८॥ छंदप ध री॥बापीप्रनावदेवीसुबारि: नरपरेमध्यसोहे
तनारि- तिहिपस्योमांझकपिबिजयतेष: बिनतासुजयेअदभुत
बिसेष- बारितैनिकसितिहिसमयबाम- तहारहोबेगिलज्जित
सुतांम: इहिसमयआइबासवबिनीत: तहाकरीब्रह्मपूजापु
नीत: बासुरहिमध्यसंग्याबिसेस: सोबापीतिहिआयेसुरेस:
सुरराजत्रीयादेषीसुनाइ: उरबढीबिथामनमथआइ: नयो
बीर्यपातपीडितबिअंग- सोबीर्यधस्योबालनिप्रसंग- बीर्यतिहि
उपजोमहाबीर: धरिबालनामकपिराजधीर- मिलिसनाब्रह्म
दिनकरसनेम- परपूजनकीनोसहतप्रेम- निसकृतहितआयेदिने

स॰ प्रभुकस्वोतबेबापीप्रविस : बापिकामध्यदेषीसुबेमे॰ मिहरतहानवे
उदबोधकोमः समर बसनयोतहारतआवः सोधस्वोग्रीवसुदरिसुनाव
ग्रीवउपजितिहिबीर्यसाथ॰ सोरामसषाकेहैंसनाथ : देवीप्रनावसुतनये
दोर : सुंदरिसलजत हार हीसोर : प्रतिमासरूपअपनोप्रनात : फिरिबि
यनयोबानरबिष्यात : बिधिलोकआरतवबिजयबीर : सुतउनयअय
बिलसतसधीर ॥ बिजयबाचाकरजोरिब्रह्मसोप्रनितकीन : प्र
सुदेऊबासथानकसबीन ॥ ब्रह्मबाचा॥ बिधिकलोकिकंधापुरी
बीर : सुनरचिलबिस्वकरमासधीर॰ बनसफलबिषमपरबतबि
साल : निरुरनिनीरषितिबहुत षाल : तुमबसऊबालिसुग्रीवतत्र
योबिजयसेवममरहहिअत्र ॥ ब्रह्मबाचाकबित॥ बिसरम
ध्यब्रह्मऊ॰ बीरजेरीछसुबानर॰ अमरअवनिअवतरे॰ प्रगरस
बन्दमिकजपर॰ अतिबियहआलेतअनेक॰ नवरहितकालन
य : जूथपजूथअनंगजुध॰ जगबिदितअसुरजय : आपाअधीनत
नअनुसरहि॰ सेवपरायनकपिसकल : नेगवऊजाइप्रभुताअनय
केकंधानगरीअकल॥१॥ ब्रह्माअपनोगनबिबुध : इनकेस
गरीयषेक : इनकहसुरसमतअषिल॰ करऊराजअनषेक॥१॥
ब्रह्माकोगनबालिकहं : लेआयोकेलास : बिधिआपाहरसोबि
वरि : करनकलोप्रकास॥२॥ हरषयोहनुमंततहां : बालिसह
रकबीर : केकंधापरवेसकीय॰ समसुग्रीवसधीर॥३॥ अबुज
नवकोरतवह : इंद्रलोकतबआइ॰ सुरपतिआगेसबकहे॥ वि
धिकेबचनबनाइ॥४॥ इंद्रादिकसुरमुनिसकल॰ आनिनयेएकं
त : कपिबालिहिदीनोतिलक : केकंधापुरछत्र॥५॥ तबतारारोमा
तरनि : सुंदरिअनयसुजान : बालिबिबाहीबिजयजुत : बिलसत
मदनबिधान॥६॥ ताराराणीउदरतहां : अंगदनयोकुमार : मह
प्रनाविकबीरमहि॰ अतुलअमरअवतार॥७॥ सबेअकंटक
राजसुष : करतबालिबलवंऊ॰ सेवकजूथपजूथसंग : आप
आनअषंऊ॥८॥ बालिसुग्रीवमहाबली : इंद्रअरकअवतार॰ नि
रनअसुरषुजवातजुज उछवजुधअपार॥९॥ केकंधापुरबा
लिकपि : रीतिसहतहृतराज : प्रतिदिनपृथ्वीपरिक्रमन : कर
तसुनोजनकाज॥१०॥ छंद पधरी॥ संध्याहितबालीमोनि

धि: सोकरतध्यानकहुलगिसमाधि: दिगबिजयकाजरावनहुसं
ग्रारनअटनकृतअवनिग्रंत: इहिसमयग्रारकटकअसाध: बल
रबिसीसकपिकरनबाध: करबामगलोकपिग्रसुरकंध: मेल्ले
कांषलेमदग्रंध: संध्याकरिकैग्रोबालिसंत: दीनीपरिकरमा
दृष्टिगंत: इथीबिजेतकेबाधिपांनि: ग्रंगदकेक्रीडाकाजग्रानि: न
टकाइस्योपलनांनिलाज: सोदेषिहसतत्रीयगनसमाज: बालिसो
करीग्राइपबिनीत: नयोजीनजातनिसचरग्रनीत: छुटकाइदयो
मलबंधछोरि: मुसकातगयोमूछनिमरोरि: इहिनीतिग्रमरग्र
वतग्रिसेष: बलीमुषजालजलबिसेष॥ कबिताग्रसुरसंत
पितग्रवनि: नारपीडितसनीतनय: धेनरूपतिहिथिस्यो मनसु
बिंतेकरुनामय: नारयनग्राकासबानि: ग्रवतरनकलोनर: देव
सबेधरिदेह: रीछकेहैबरबानर: ग्रप्पाग्रनतउपजेग्रमर: मह
बीरबिक्रमग्रमित: श्रीरामचंद्रग्रवतारसंग: नियतनिहारतपंथ
निसा॥१॥ इति बलीमुष जाल उत्पत्ति॥ ग्र थ राजादस स्यउ
तपतिबनन॥ दूहा॥राजाग्रजग्रवधेसके: स्वयंरूमनुग्रार: दस
रथद्वैकैग्रवतर: तपसाकोफलपाइ॥१॥उतरेसकोसलनृपति: तिहि
पुत्रीग्रतिराम: सतरूपग्रवतारतो: कोसलदेसनरेस: ताकहंब्राह्मीबिधिजुकत: कौ
दसरथधरमधुर: कोसलदेसनरेस: ताकहंब्राह्मीबिधिजुकत: कौ
सलासुतबेसा॥३॥ग्रतिप्रसिधपावनपुरी: संजुतसुषनिसमृध धरम
उपासकलोकसब: नितसनमुषनवनिधि॥४॥ दूरसदृदसकोस
लौं: चहुंधांचारिबजार: सरयूमध्यसुपंचतुव: बिसरजुरतहरवार
॥५॥दूसपंचपरिबेषदिष्ट: पत्तनकोटिप्रमान: चहुंदिसदीरघद्वार
चव: बज्रकपाटबिधांना॥६॥षाईजलपूरितबिषम: ग्रहजलजंतग्र
गंध: मीनकमठनेकीमकर: सूसिग्राहग्रनसाध॥७॥ मध्यकोट
नृपमंदिरन: ग्रासपासउतंग: ग्रंषलसलकपाटसंग: चारिपौ
चतुरंग॥८॥छैदृपधरी॥जलपूरिपरिषाजोप: जनुग्रंबसागर
प: बिचिराजधामबिकास: मनुउदितसेकैलास: नगबिबिधि
दनियंक: प्राकारकुरनिपंक: परवालथंनलिपार: कृतमलय
गरकपाट: मनिनीलषूनीमांन: सुनसिरालालसमांन: रबि
मक्रांतिरसाल: जहांमीनजालनिजाल: कृतकाचग्रंगनकाम
मनियंम: बनिबातपथबिसतार: प्रतिग्रेहबिबि

प्रकार : नगर चित्र प्रतिमा नेक : तरल तरंग तुलम अनेक : नवरत्न अनग्न नाति :
बनि चित्र रंग बिन्नाति : अट्ट अट्ट निर्गोष उतंग : रचि जवनिका बहु रंग : धुजक
लस अंकित धाम : दिग बिजय चिन्ह बिदाम : प्रटलोम सूत्र प्रकार : प्रतिधा
तकनक नियंक : प्रतिधाम धाम प्रजंक : बनि सेज उज्जल वान : सिंधु षीर फे
नसम्मान : राजाधिराज समस्थ : सुषभोग नृपद सरथ : नित्य बसत अट्ट
वनिधि : अनकूल अष्ट सुसिध : रस बिबिधि रतन निवास : बिनता बिबे
क बिलास : नरदेव पुत्री नाग : सुनसेव नृपति सनाग : मुगधा समध्या मो
न : पुनि प्रगल्भ नासु प्रमान ॥ ६ ॥ तीन पचास बिबाहिता : नृप कंसास
मनाम : सो नाम गुनगुन सुंदरी : ज्यों राजत रति काम ॥ ७ ॥ तिन महपटरा
नी सुत्रय : नित्य पाति हृत नेम : कहीसुमित्रा के कई : प्रीय कौसल्या प्रेम ॥ ८ ॥
अवर दासिका सहस्र : निकर बरतनी नारि : बिबिधि सेव बिस्वास बस
अति प्रबीन अधिकारि ॥ ९ ॥ चेरी चतुर अनेक चित : यों राजति निवास : मान
ऊरति को नगर सो : सुष संजुत सब बिलास ॥ १० ॥ कलाकुसल जे कामनी : गा
नतान संगीत : सूरति थरे रागमनु : बाजत नित्य बिनीत ॥ ११ ॥ समय समय
सुष सप्त सुर : रस षट त्रिस तराग : नित्य नवन नवनाटिक निषल : सेवत
नृपति सनाग ॥ १२ ॥ छंद उधोर ॥ बामने कुबजे रथ : प्रतिहार षट प्रसिध
रनिवास रहकराज : कंचुकी चातुर काज : अति सन्न बिसद अवास : प्र
कार बिबिधि प्रकास : परिबेष पोलि प्रचंड : सुष थंन तोरन मंड : थित
सूल अंबल थार : उद्दथार बज्र कपाट : पर बस्त्र बिबिधि बिछाइ : बि
चित्र नृपति बनाइ : सुन छत्र चामर संग : अद्वैत उज्जल अंग : ऋतनिकर
बरतीन्त : जे राजमनु अनुरूप : गुरबामदेव बासिष्ट : समधरम करम नि
ष्टि : पुनि आगम मंत्र प्रमानि : सब नीति धरम सुजान ॥ अथ अष्ट मंत्र
नामानि ॥ ६ ॥ सिद्धारथ १ साधक २ अरथ : दृष्ट ३ बिजय ४ जय ५ पषि
पालक ६ धरम ७ असोक ८ पुनि : बकोसुमंत बिसेषि ॥ १ ॥ देसकोस दल दंड
दम : दनाधल सम्रत : द्वारपाल देवज्ञ दिष्ट : अधिकारी अनुजुत्त ॥ २ ॥ र
थ गज हय गोरस वनी : पति अधिकारि प्रमानि : कबि पोराणिक निषज
कुल : मागध नरतक मानि ॥ ३ ॥ छंद उधोर ॥ सुर नाग नर बस सेव : दिग
बिजत दस रथ देव : कृत राज ऋषि सुरह : ये स्वर्ग इंद्र प्रतह : पुर तास
धरम प्रकास : सब बस हि धरम सहास : थित बलि कबि क्रय वंत : ज
नु शीय सचिव लसंत : उद्दथर हि हाटक पाट : ज्यों धाम सेध नराट : को
टी सध्वजी अनेक : बनि लहरी पबि बेक : बहु करम कार बजार : अ

सकतंकुलअधिकार: पुरबाटिकासुषपुंज: जुतबहुफुलकुंजनिकुंज: तरल
ताकलपसुतंत्र: बनिपुहपफलनिबिचत्र सरकूपबापीसंग: जलजंतचल
ततरंग: मिलिभ्रमरहमरीमत्त गुंजारसोरंनरत्त: पसुहुधषसुपतिपाह
सबसुषीअनयसुनाह: बसिकृषीकुसलबिबेक: अतिउपजिअनअनेक
मनचिंतबरषहिमेह: सबधरमहुथसनेह: कहुसोकदुषनहीसंग: अ
नंदमनअनंग: पुरचहुओरप्रकास: बनगहनबागबिलास: नदमह
सरयूनाम: उधारजगअभिराम: मिलिबिसदपरबतमाल: बनिलता
हुहबिसाल: निसचलतनिरझरनीर: गिरहरीअगमगंभीर: आषेटजंत
अपार: प्रतिदिवसमिलतप्रकार: मृगराजगरजसमूर: प्रतिसबहकंदरपूर
बनमहिषबहुगबराह: गजछरितमत्तअथाह: गिरगवयचमरीगाव: स
तजूथजूथसुनाव: मृगबिचरसोरंतमांन: बनससकअनअनबांन: सार
गहुलनिसंग: कहुसांषसाषअंग: कपिनालजूथपजूथ: बनसरलबि
बिधिबिरूप: जेनषीअंगीजीव: हंसीजुअछिदहीव: जलथलनिगिरच
रजाति: बरओमबरनिबिभाति: बनबासिवासबिबेक: कहुकोलनि
लअनेक: आषेरहितनरइंद: बनजंतुहुंदनिहुंद: गछंदपधरी॥उत
पतिषानिरतनतिअनेक: बहुरंगजातिजातिनबिबेक: षितितारतात्र
मयकनकषानि: अनेकधातमयषानिआनि: बहुरंगसंगसोगंधबा
न: पथचलतअषियनिरझरपहार: आरनतहांमंजतजलबिहार: च
हुओरदेसपरबतनिचाउ: बिसतारबिमलबनबनबनाउ: सरित
अनेकतीरथसथांन: मुनिहंस्वासतहमुनिमांन: स्वाध्यायनिरत
तपससप्रेम: तपजापहोममषनिसनेम: सरसीबिलासजलजंतसं
ग: नीरजबिकासनानाबिहंग: पतनअनेकपृथीप्रमांन: चवबरन
बासअतिचैनमांन: द्विजपुंजकरमजुतअतिअदीन: निसअनलहोत
बिद्यानवीन: जुतस्वामिधरमछत्रीसधीर: गुनवंतसूरदातागहीर
व्यापारनिपुनबहुबनिकहुंद: उपराजकपोषकधनअनंद: दिनक
थाकीरतनदेवद्वार: कालरीघंटसुरऊतकार: पसुपालकरतपसुनि
करपोष: अनहोतप्रातमथांनघोष: अनेकहुषीकृषिकरमआस
अतिउपजिअनबरषाबिलास: त्रयबरनसेवरतसहुतत्र: प्रनुतत
परसाधकयहुपरत्र: अतिनियुनबिबिधिसिलीउदार: पृथीसक
रमकारकअपार: बारनजुमतषटरितबिनीत: अनुसरतअचलज
गमअनीत: करनीअनेकआवरतसकोप: बगपतिदंतउजल
सओप: प्रतिरंगरेषमनुसक्रचाप: मनुजलदधुजायरितिहित

धाप: सिंहरसीसबिथुरेसुरंग: आकासमन कुआगमपतंग: मरलेषअसित
अबिरलअनूप: गुंजारमधुपकृतकरलजूप: मरुरततलनिलागेमतंग
निरुरनिनीरमनुगिरउतंग: यहरातसयनजनुरतिगंभीर: मदमोष
घोषगरजनिगहीर: प्रतिरंगबसनबासितजुनाग: बरषाकिबिबिधि
बाहलबिलाग: यहरासुयोषघूघरनिनद: हिमतारलिमजंजीरहद: च
तुरंगचलतचामरसजोप: अषरितपुहपतरुबसंतओप: नगजटित
कनकबंगरीअनूप: राजितरहनकरबलयरूप: मातंग फिरतमोकल
मदंध: सतनारसारअषलसबंध: दुसायि उरकरुरतदान: प्रेरति
पहारमनुपीलवान: सतमेघ धरेचरषीसुरंग: रहिरूपबारआवहिअन
ग: किंकुलिरतबारनसकुंध: जाजुल्यमनकुपरबतनिजुध: करिहे
तकफुयुरहोरकोप: आरूढपवनजनुजलदओप: बिरहेतकरीके
उगदबिदार: पेबयमनकुयूमतपहार: असिलसतिबाजिसालाअ
नेक: बिधिजुकततेजलहनबिबेक: प्रतिषेत्रषंकसंतवपवंग: अने
करंगआकृतउतंग: अतिसजवकेउकनरतकअनूप: रहवालकेउ
कसुषचालरूप: धावंतसजवकेउपहधाप: फरकंतफलकेउम
हिअमाप: मृगगहतकंवकेउधनुषमेल: मिलिजातअनिलसंगबलमे
ल: हिमघटितजीननगजटितओप: जरतारसारसुषमंलसजोप: सुष
बणकोरिरेसमसुरंग: प्रतिबाजिसाजसोनितसुचंग: सिंहनअनेकबिज
ईसंग्राम: सनाहससत्रअसत्रनिसनाम: रथराजकेउकसुषसेजसा
ज: हिमरचितषचितनगमनिबिराज: कोउजुकतहषतकोउजुक
तबाज: बारनसजुकतकोउरथबिराज: अतिकरतनारबाहकअमे
व: मदमत्तगरजयुकारमेव: जेचलतदंडजोजनजमाज: करतीअ
नेकहितराजकाज: सतजूथसंगबामीसमर्थ: अतिबेगवंतबाहक
सुअर्थ: मनिरतनहेमबफुमुल्लिमान: महिकोषधांनधनअमान
सेणंधवसत्रसालासमाज: सुतससत्रअसत्रसालासमाज: अनेक
नोजसालाअनूप: नवनिधहोतअनेकरूप: पलत्रियाद्विधामि
लिअनपूर: समपंचसाषषटरससमूर: धृतएकबिबिधिरचना
बिधान: दससमदबिनोजननिदान: अनिवारतनोजनकरत
आनि: अनेकमनुजमनमोदमानि: षटदरसनषषटमिलिमहं
त: जयकिशिजपतदसरथजयंत: अनेकदानपावतअनेक: बिद्या
प्रमानगुनबिधिबिबेक: चतुरंगचलतदलसूरचित्र: नवनूमिदुर
गबसहोतनित्र। तजिजातराजदुरजनहिंगत: तेलहतअनयनिन

गहतर्हत:उदयासतरजमहिमाग्रमेव: हिगबिजनतपतहसरथदेव।सिया
सनचामरछत्रसज:आग्पाग्रबंदराजाधिराज: उहिमप्रमानहलबलअपार
बिसतारसिंधुबियहबिचार:महिदुरगदंडआग्पाग्रनग: अतिदयाप्र
तग्पाअंगअंग:बहुबंधसंगबिरदैतबीर:सबतारनआहसबससत
धीर:अवनीबिलासहीउअनेक:अंनतगतपतनृपछत्रयेक:प्रनुरु
पापत्रजसजपनजानि:बिद्याधरचारनजसबषानि।।१।इति राजाह
सरथउत पतिराज अबिरन ना। अथराजाहसरथरानीकेकईबि
रदीनप्रसंग। कबिरुबाचा।दहा।हरुनदेसजयतपुर:जहासंबर
हनुजात:करतराजबिख्यातकुल:अमितयजालयुत्रात।।१।तेप्रपंच
मायप्रबल:करमअसाधसक्रोध:जातिस्वभावकिइंद्रसों:उपजे
बैरबिरोध।।२।देवासुरकछुकालतो।इंद्रपराजयपाइ:नृपहसरथ
कोचिंतवन:कीनोहेतसहाय।।३।देवराजसोंहसरथहिं:प्रगटपुरात
नप्रीति:गजहिधुरधुरहोतगज:राजनीतिथहरीति।।४।नृपमृगीया
रतजिहिसमय:कैकेईत्रियसंग:आतुरआयोइंद्रतहां:बनहीनयेप्र
संग।।५।।इंद्रबाचा।सुरपतिजावंनाकरी:करियेदेवसहाइ:राज
हसरथसुनतहीं:चलेनिसानबजाइ।।६।।सबरहानवहसरथहिं
नयोनयानकछुथ:बिषमपरसपरबीरबर:करतप्रहारसक्रुध
।७।नृपरथअहाकीलतहां:गिरीअलबधसुजानि:करअंगुरीछ
तकेकईरंध्रनिवेसितआनि।।८।त्रीयकरपल्लवछिद्रथित:पतिदे
खोतिहिकाल:बिसमयगतअतिप्रेमजुत:नयोनृपालकृपाल।।
।।९।प्रथमकुकर्मसंसमय:कैकेईबयबाल:कीनेबंदनजोरिक
र:द्विजसोईनयोदयाल।।१०।हीयबिद्यासजीव:देषिनगतिद्वि
जराज:सोकंमालीयमांनिसिर:करेसफलमनकाज।।११।छंदप
धरी।। सोईराषिगूढबिद्याबिलास:कीयसमयपाइरानीप्रकास
जबनयेअंसमालीअदिष्टि:अपआपसंनारतबंधुइष्टि:निसिल
ईजुयकीजानिवर्त:रनबेतरहेरसरोसरत्र:लगधारमरेकोऊ
सूरषेत:अनेकगिरेधारलग्रचेत:रनअजिरससत्रहतदेषिर
इ:कैकईकरेकरपरसकाइ:छितछुवतमात्रबिनताबिसेस
नि:सेषनईपीउनरेस:पुनिगिरेदेषिसबसुनटसूर:सजी
वनमंत्रसुजपिसमूर:रहिसमयजिवायेसुनटआंन:सजीव

नि बिद्याबल बियान: उ ग्रितबेराजद सरथअनेग: अतिबद्धोक्रोधनसमातअ
ग: तेउ ग्रे सबेसंग्रामसिध: प्रनुअयग्रो निगटेप्रसिध: निसिरभोजुधदसा
थनरेस: परब्रह्मथ्यकीनोप्रवेस: मयकरेअसुरबलमारिषेत: सबेरस
बंधसेनासमेत: सबदेसमारिकीनोसंघार: कोउ गयेभाजिपे निभिपार: सं
ग्रामजेतिबाजेनिसांन: बनिरहेगगनबिबुधनि बिमांन: संतुष्टभयोजी
सोसंग्रामबेचित्रकरमपतिदेषिबाम॥ राजोबाचा॥ कीयप्रथमजुरह
रथप्रमांन: अरुमृतकजिवायेबीरग्रांन: कृतकरेउग्रत्रीयउत्तयकाज:
अबलेहुउत्तयबरदानग्राज॥ रांणीबाचा॥ स्वामीप्रमानकृतपतिस
मीप: मांगोतबदीजहुबरमहीप॥ राजोबाचा॥ अतिप्रेमप्रीयाप्रीयकलोये
हु: होरइछामनमहतबहीलेहु॥ कबिरुबाचा॥ सुरपतिसहारकीनोनरे
स: हिगबिजयकरीग्रायेस्वदेस॥ रुहा॥ महतबंकामंथरा: धात्रीबृध
बिस: केकेईहितकारिनी: सबग्रहकाजप्रवेस॥ ॥ कारनदुवबरदा
नकी: दसरथनृपजोहीन: रांनीधात्रीसोंरहसि: कसोजग्राकमकीन:
॥ केकेई॥ मातारषेगूढमें: मासनृतनिरधार: बातहृदयगतराषवी:
ग्रपनेबुधिउदार॥३॥ इतिकेकईबरदांन॥ अथ अवनत
पसबधप्रसंग॥ कबिरुवाच॥ रुहा॥ हिबिधिदसरथनृपतिनुव: राज
करतजगजीत: बेसबिनावसुअजसुवन: गावतत्रयपुरगीत॥१॥
ऐकसमयकछुकालगत: ग्रोषरकनृपग्रार: बेगेतमसासरितितट
थानग्रदिष्टबनार॥२॥ दपतिहृधनिकुंनमुनि: अवनपुत्रतिनसंग
बिधिकृतसमयनिसीथबन: त्रिषाबिकलनेयग्रंग॥३॥ अवनगयोजब
कलसलै: सरिताजलकेकाज: पूरितकुंनजसबदसै: जांनोनृपगजर
ज॥४॥ सबदबेदसरथतहा: रघुमोष्यो धनुतांनि: सोलगतबोले
अवन: हाहाहतहिबांन॥५॥ सुनोनृपतिमनुषसबद: उग्रिआतु
रतहाग्रार: द्विजहत्यासयत्रासतें: रलोमनसंत्रमछाग॥६॥ अग्रिन
बाचा॥ तबहीबोलोअवनमुनि: बेसपुत्रहुराज: अंधकमममात
पिता: ग्रायोहुजलकाज॥७॥ ग्रातुरजललेजाहुवे: बिकलत्रि
षामयबाप: केमरिहैअपमृतुबस: नांतरिदेहैआप॥८॥ क
रहुबिसलपमहीपमुहि: इहांउपचारनग्रांन: कादतहीसरग्र
वनके: कीनोंग्रांनप्रयांन॥ छंदपधरी॥ लेगयोनृपतिजबकू
लनीर: मुनिग्राहरबोलोमुनिसधीर॥ अंध दंपती रेपुत्र

श्रवनआयेसुदेस॥राजोवा॥इहिसमयकलौकौसलनरेस मैं हत्यै
श्रवनबनजंतुजांनि अपराधनयेअग्यातआंनि॥ मुनिबाचा॥
पुत्रपुत्रकहिबिषसबांनि मुरछागतआंतमहु-षमोनि अपराधबि
नाकीयहमअनाथ हतपुत्रतहुगहिचलहुहथ्थ॥कबि क॥तिनहि
नृपगयोलेसरनितीर जहापस्योश्रवनसरहतसरीर दंपतीअंधतह
पुत्रदेषि उरलाइबिकलबिलपतबिसेषि उठिदरजिलेजुलिसुतहि
अंध संसारछुटोसोचोसबंध बससोकपिमातबिसेस सुतसं
गकस्योकुतंतुकप्रवेस॥अंधदंपती॥ दुषपुत्रतजोजोहमनुदेह
सुतसोकमरकुनृपनिसंदेह॥कबि क॥इहाद्योश्रापमुनिदं
पती जरतक्रोधउरज्वाल इहिप्रकारतापसश्रवन नयोअचा
नककाल॥१॥इतिश्रवनबधप्रसंग॥अथअंग देसअनावृ
ष्टि प्रसंग॥ कबिक॥अंगदेसचंपपुरी लोमपादनृपतास अ
नावृष्टिद्वादसबरष नरीनवनृतबिनास॥१॥चितातुरतबलो
मपद नयोदीनआधीन कछुनपावतथाहकछु तातेचितमली
ना॥२॥त्रिकालग्यदेवग्यद्विज तेबोलेइककाल कारनचिंतादिस
कोतिनहिकलेतुवपाल॥३॥द्विजबाचा॥द्विजनिकलोतबनृप
तिसों औरउपाइनकोइ अंगीरिषआवेइहां तोपेबरषाहोइ॥४॥
ऐसोहैवतबंता निसचयअंगनरेस नासहोहिदुरभिक्षतो बरष
हिदेवबिसेस॥५॥कसिपदेवप्रजापको पुत्र सुतांकनांम निय
तकरमतपसानिरत बननिरुरतबिश्राम॥६॥अंगीरिषताके
सुवन ब्रहमचर्यबयबाल रहतसहाअध्ययनरत पितुआग्यापा
तिपाल॥७॥राजेबाचा॥लोमपादनृपगुरसचिव बोलिकस्योय
हमंत्र किहिबिधिआवेअंगरिष बसतउद्यानसुतंत्र॥८॥देहतजे
केआपदेह तातेकरीयतराइ बलकरिनावेबिप्रवर करिबोएकउ
पाइ॥९॥पग्वकुबारिबिलासनी बेषबिचित्रबनाइ कारनहेत
उपाइकरि लावहिमोहलगाइ॥१०॥कबि क॥नृपतहापुरईन
इकाद्योमानबकुदान सोआग्यबससुंदरी पनकृतकरैं
प्रयांन॥११॥तेमुनिबेषबनस्त्रीय गईजहांरिषअंग करेपरस
परनमसकृत उपजेसुषअंगअंग॥१२॥आवनगमनजुबेषर

धनागपाइसपवित्र कौसलसुताहिसोदयोअत्र जोरसोअरधअवसे
षअंन थितथालकस्योसोउनयथांन कैकेयसमरपितयेककीन
कैअससुमित्रहिद्वितीयदीन संगतासिधमषजोसकाम बिधिजु
कतदानदीयनृपसबाम दसलहसपरिकरधरमधेन सोपूजिबिप्र
दीनीसुषेन दसकोटिसुब्रलमयपूरनदान मिलिरजतकोटिदस
चोकमांन द्विजबंदिचरनकीयबिदृदेव जगपअतकस्योमंज
लअजेव क्रमजुक्रत्रीयनपयनहकीन निसचयनरंगस्नसथि
तनवीन प्रतिगरभअवधिबसहधपाइ समअंगरूपलहनसु
नाइ ॥ दहा ॥ प्रसवकालनिरबियनचो नहादसमासबितीत जा
गतआसबिस्वासजुत अनुआगमनपुनीता ॥१॥ कबिकबाचाकबि
ता ॥ अवधिपाइउतपन गेहअवधेसअवधिपुर पितुदसरथपृथेस
धरमरथनारबहुनधुर पतिबरतासपुनीत मातकौसल्यारानी
हंसबंसअवतंस जातिछत्रीयजगजांनी षलगयेअसितमितति
मरषय हितउद्योतरघुबंसकुव परब्रहमपरातमपरपुरुष
नयोरामअवतारनुव ॥१॥ रितबसंतमधुमास मिलतपषसे
तमथपदिन अमृतसिधजुतजोग नहत्रअभिजितउतरायन
मेषलांनवृषसोम बुधकंमाककर्कटगुर सफरसुक्रसंक्रमन
सेषयहपंचऊंचसुर सगुनलयेनरहरसुकबि जातधांनउरपर
जरे काकुसथबंसनवमीसुनिथ रामचंदअवतरे ॥२॥ अर
कबंसआकास अवधिबितीयअरणोदय कवसल्याप्राचीसु
राम रवित्रगरजगतजय सतथनिसाचरतिमर किन्निदिग
किरनिप्रकासीय दुष्टकुमुदसंकुचीय सत्रुनहत्रबिनासीय
नरहरकबिचकवाजयजपत असुरचकोरसंतापउर दसबद
नयूकमनमूकफुव प्रफुलितसुरपंकजत्रिपुरा ॥३॥ अवधिसिस
रअवसांन जनमआगमजगजांनीय अमरवृदआनंद निषल
बनपुहपनिधांनीय कंटकतयनरदरीय सीतदाहकनहीस
जीय संतकमलबिकसंत किन्निकबिकोकिलकिजय मु
निमधुपमालगावतमुदित बेदनीतित्रयबातबहि जगप्रग
टिरामरितुराजजो मिलिउछवआमोदमहि ॥४॥ मषनिसा
नयुनिगरज आसघनघटाबंधिउर मिलेमनोरथजलद

मोल-सेतचातुकरश्रातुर-सुरसिषंकिमनमुदित-जोतिनिदितश्रानासीय-
किन्निसरितबिथरीय-निरुषमुषसिंधुबिलासीय-बरषासुकनकबुंदनि
वदीय-बैरबिनालनवासबन-मिटिचितारेरवन्दपतिमन-रामस्पा
मयनश्रागमन॥ सोरठा॥ मंगलबंदनमाल-बिमलथालअहअहज
जे-सुरनरसबरसाल-जयजयजयरघुकुलतिलक॥१॥ छंद॥ बिबुध
निसानअकासबजि-सुमनबृष्टिसंसार-तीनलोकआनंदऊव-रामच
न्द्रअवतार॥१॥ छंद चौपाल॥ कौसल्याबाच॥ परमातमाजुअनादिपौरु
ष-सतरूपसनातन-नीलोतपलदलसांमसुंदर-पीतबासननास
नं-द्विग्रंतअंबुजअरुनआनो-मकरकुंडलसोभये-मनिजटितक
नककिरीटमंडित-अलिकअलिमनछोभये-भुजचारिआयुधचारि
संजुत-हृदयमनिसोभासनें-केयूरमुकतामालकंकन-बिबुधरुष
नतनबने-गनरीसकोटिनअअबरती-कुलअमरबंदनकरे-बनमा
लउरसिबिचत्रबिचित-हसचंद्रिकचितहरे-करिसिंयमंडितहेमकि
किन-नवलकंकतरूपरे-जोतिमयनषअरुनराजित-रूपअरुनुत
नरहरे-सोदेषिकोसलसुताबिसमत-नरीचितभ्रमावही-अनें
दधाराअम्रुअबिरल-प्रेमथाहनपावही-करिजोरिकरिफरिपरम
करुनो-बारबारबषानही-अभिलाषपूरनतयेअपनें-जनमस
फलजानही-तुमपारब्रहमअपारअच्युत-परमधामअमानीये-ज
गकरनपालकनासजगजित-जगनिवासमुजानिये-रविकोटिज
रप्रकासराजित-ईसकोटिमहेस्वरा-बिधिकोटिकोटिनबिस्व
अजता-कालकोटिनयंकरा-हयमेधकोटिअधरमहंता-मरुतकोटि
महाबली-ससिकोटिजगदानंदस्वामी-कोटिसुरनगनसच
ली-बैअवनकोटिधनेसबैभव-सक्रकोटिबिलासनं-त्रैलोकवं
दितपरमपदसोई-कोटितीरथनिवासनं-परपंचकोटिअतुल
सुंदर-षिमाकोटिबसंधरा-सामुद्रकोटिगंभीरसोभा-कोटिचंम
नयंकरा-बपुकोटिजग्यपुनीतपूजा-देवदेवदयालनो-सुनप्रि
यकोटिकसुधाकावक-परमगतिदाइकप्रभो-ब्रहमंडकोटिसु
बिपुलबिग्रह-बिमलजगजसबिसतरे-कामधककोटिककाम
दाता-बिस्वजितबिस्वंतरे-कचकूपजिहिब्रहमंडकोटिन-नियत
निष्कलनिवासये-सोरअमितबिग्रहममउदरगत-प्रेमभावप्रजा
सये-यहचरितलोकबिडंबनालगि-करनकारनहेत-निगमग
वतनेतिनित-मनबाककायसमेत॥ सो॥ आदिमध्य

अवसान रहित अनवरूप यह अनप्रेम प्रमान। बिस्वनरममजीयवस
फा॥१॥ रहतस्वच्छाचारि जोयहु सतरसुरनिकु मोहिआपेनमुरारि मा
या बिस्वबिमोहनी॥२॥ बिस्वातमा बिसेषि रूपअलोकिकरावरो अ
बअद्भुतअसेष करियेअंतरध्यानक्रम॥३॥ बालतावरघुबीर अ
षिलईससोईअनुसरकु सुंदरस्यामसरीर देवमनुजपावहिदर
स॥ ६॥ श्रीभगवानोबाच॥ माताजोअभिलाषतुम बंछित
बेदबिधान सोसपूरनअवधिबस कहैप्रगटप्रमान॥१॥ तुमकीनि
तिहिहेतुतप देपतिबनदमिदेह मातारूपअद्भुतसम देब्यानिसं
देह॥२॥ अंबजोसंबादयह करेपागनिकाम सोलहिहैसारूप
ता अंतकालममनाम॥३॥ कोसल्याहिप्रबोधकरि बालतावअ
नुसार रुदनकरनलागेरहसि नरहरकेनिसतार॥४॥ सोसुनिअ
ईमातसब बंसजुवतिबनिबृंद बालकरूपनिहारिनिज उरनिबृंद
आनंद॥५॥ जुवतिनकीनीअरती बालकबिमलबधाइ हरषतहृ
सबलेतहै बारंबारबलाइ॥६॥ दईबधाईदसरथहि दासनिकुब
बधाइ नृपतिआनंदमगनजो मृतकप्रानसेपाइ॥७॥ समयजानि
गुरबिप्रसंजुत देवजथाबलिदीन आरधनादीसुषसहित जात
करमसबकीना॥८॥ मंगलदुंदुभिगगन बजेएकहीबार नर
पुरसुरपुरनागपुर उछवनयेअपार॥९॥ आनंदमगनजुलोकय
ह जुकतनकाकुजान येकअहोनिसिरहिसमय निकसोमास
प्रमान॥१०॥ बासुरअतरअवधिबस गानतयेसुतगीत सोतरू
पकेकयसुता जायेपुत्रपुनीत॥११॥ समयप्रसूतसुंदरी नरीसु
मित्रानाम सरसुलछनउतयसुत महाधरमकेधाम॥१२॥ करितिन
कुकेजातक्रम जथाबेदबिधिजानि तबतेदिनदिनसुषअमित ब
सेअवधिपुरआनि॥१३॥ जबबितीतनयेदिवसदस गुरबसिष्ठद्विज
आइ देपादारछ्यजिनृप बंदनकरेबनाइ॥१४॥ बेदप्रनीतसह
मबिधि करेजथाक्रमकाज नामकरननिरबिघनतो सुरसंतोष
समाज॥१५॥ सो॥ ग॥ महिदेवनिकोंग्रामु सोसनदीनुएकस
हस रतनस्वरनअनिराम गवबसनअनकोगनैं॥१॥ कोसल्या
तराम केकेईसंतवतरत सोमित्रेयसुनाम लछमनसत्रुघन
तयसुता॥२॥ छंदबेताल॥ एकदिवसकोसलसुतअतिहित कुवरत
नमंजनकरे सोगंधलेपनबसनभूषन बिबिधअंगअंगबिसतरे
पयपानदेपीयूषपूरन सुषदपलनालेधरे तबमंदमंदहुलासमा

ता रामनिशावसकरे: पुनिमातजरत्रन्हरमंदिर: सुकृतनितहिअनुसरी॥
कुलदेविदेवाअरचनाकरि: कृतबिहतपूजाकरी॥ सुनआइजननीपाक
साला रामरूपबिलोकयो: तहाकरतभोजनदेषिबालक नयचकित
बिसमयतयो: पुनिगरीफिरिजहापुत्रपलना मोऊकीनैसैन: तहारा
मपायोसुषहिसोवत उपजिचितअचैन: उरकंपरोमउठारअतिसय
असनमहिआइ: तिहिभांतिभोजनकरतितिहिंग पुत्रबकुस्योंपाइ
नयधरकिछतीयांउपजिमनभ्रम: धरतिनांहिनधीर अवलोकिउकु
गरूपऐकैं सोचिसरनिसरीर जबरामब्याकुलजानिजननी दीर
अरूपदिषाइ कचकूपप्रतिब्रह्मंडकोटिन मंदमुषमुसकार रवि
सोमसिवबिधि सक्रदिगपति देवदानवदूतजे गिरसिंधुसरितनर
ककांनन: बराचरअनचरतजे: अनगनितकालजुकरमगुनगति स
कलग्यानसुनाइ: मायाप्रबलमनबचअगोचर देषिसंभ्रमपाइ
तनपुलकिकंपतनयनमुद्रित भ्रमतचित्तसतीत: इहिदसाजननीगु
नितदेषी हासिकलोमषभीत ॥श्रीरामोवाच॥छंदपधरी॥यहचरि
तमातदेषोजुआज: सरबथगोपिकरिबोसकाज॥ कबिरा क
रिमंत्रजननिसोयहकृपाल: बकुस्योंतयेअंतरध्यानबाल: यहच
रितकछुजानेनआन: परब्रह्मप्रबलमायाप्रमान: अनुसरबाल
लीलाअनंत: सुषदेतकुटंबपितमातसंत: अवधूतधूरिधूसरितअं
ग: परब्रह्मबिगतमायाप्रसंग: किलकारिजतकबकुसकोप: उरव
निमतमातंगओप: बससमयअनआसनबिधान: गुरकरेकरमनेगम
बिहान: हरिमातगोदलीनैसरते: दधितंदलमिलिमुषकमलदेत:
चुवकुंडलसकतसुचलतनाजि: बदनदधिलिप्तउरकरबिराजि
हरिदृष्टिदेरिजननीसहास: परतधरलोरिरोदतप्रकास: पुनि
लेउछंगअन्हवाइप्रत: योकरतबाललीलाअचरत: बनिबालबसनभू
षनबिसाल हरिकरजचक्रउरमुकतमाल: कचसोमसघनबकृतब
रूथ जनुघेरिजलजमिलिभृंगजूथ: परनितहेमनूपरप्रहास: ह
रिचलनिमंदकिलकनिसहास: इत्यादिबाललीलाअपार: बिसत
रहिदेहिसुषबारबार: जबभयोसमयगुरराजजानि: आरंभकरे
सबसोजआनि: सुभलगनसोधिपंचांगसुध: पुनिहोमबेदमंत्र
निप्रबुध क्रमजुकतसचकुकरमकीन: द्विजपोषतोषबकुस्यो
नदीन: ब्रह्मादिअगोचरमनसिबानि: जिहिजोतिफिरतभोजन

मुछिप्रं: तोरमनुजदेहधरित्रहसमूल: नृपअजिरकरतक्रीडानुकूल:
बेलतबालापनबिहार: अतिचंचलसेसवदसाआर: सुतसामगोर
सुंदरसरूप: उत्तमांगकाकपहत्रनृप: कोपीनपटपरिधानकीन: ब
मध्यदेसमोजीनवीन: जग्योपवीतगुरमंत्रजाप: आग्यानपदयेबासिष
आप अध्ययनहेतगुरथेआइ: ऊंनमोसिधिसंथजुपाइ: मनब
ललगेबिद्यानिमोऊ: संथानवजावतनोरसोऊ: गुरगम्यतयेजब
हरग्यांन: सबग्रंथपढेपूरनप्रमांन: जुगजुगमनिगमजिहिसासज
नि: संथाहितेतपटिकापांनि: पढिछित्रिधरमबिद्याप्रकास: संग्रा
सिधआयुधअभ्यास: जलतरनमल्लबिद्याअजेव: आषेटकरम
पोरुषअभेव: ग्रहिचापबांनकटिकसिनिषंग: अभ्यासतमनऊधन्वी
अनंग: जमदग्निदषडंगसकलीसजोप: आकरषचरमबरबीरओप: अ
रूदअस्वबिद्याअपार: बाजीसुजांनगतिचितबिकार: बयग्यातस
हजबिद्या।बिलास: संगराजपुत्रषेलहिसहास: अनुसरहिराम
नृपनीतिअंग: समप्रीतिअनुजसेवतसुसंग: सुतरामलषनमिलिबे
मसिध: पुनिचरतसत्रयनहैप्रसिध: पितमातचितजिहिमोदपाइ: स
क्रमतरामतेहीसुतार: अनुसासनबंधुनिहेतआप: यहपरमधरम
नहीलगतपाप: नित्यसुनतधरमसासत्रनिदान: पुनिप्रेमनेमसंजुत
पुरान: उग्रिप्रातपितादरसनहिआइ: पूजियुरद्विजनकेलगतपाइ:
प्रतिद्विसजननिमंदिरसप्रेम: मिलिकवरकरतनोजनसनेम: स
बसबिनसुतरकबिसरसंग: पुरराजकाजपरिषदप्रसंग: इहिंगो
तिहोतबासुरबितीत: परचारधरमपृथ्वीसप्रीत ॥ इतिश्रीराम
चंद्रजनमप्रसंग ॥ अथसीताजनमप्रसंगाकबिसाइहा॥का
लांतरनरनाथकोऊ: मृगीयासकतमहीप: बसतजहमुनिवृंदब
र: गोतिहिथांनसमीप॥१॥ ध्यांनाबसथितमुनिकुंतो: नृपसतु
कारनकीन: तातेदुष्टसुतावजुत: मनकीयक्रोधमलीन॥२॥ प
ग्येनृपतिअनीतिरत: कोपअरुनकृतनैन: अंसरुमारीअवनि
को: आनऊजुगनरिअंनि॥३॥पापनिमांपोअंसनृप: सोसुनिबोल
तसिध: कादतषष्टअंसहम: संपतबेदप्रसिध॥४॥तहांउपद्रव
तिनकस्यो: मुनिनमहादुषमांनि: रुधिरनिकास्योदेहतें: न
रियष्टीनोआनि॥५॥ अथयस्योघरअनुचरनि: रुधिरपू
रिअयरूप: ताकेदेषतमात्रतहा: भयोकालबसनृप॥६॥ता

ीसमयबसिष्टतहां:आरमिसोरिषराज:देषोदुष्टचारअति:अस्तवतअअक
न:।।बंसष्टोबाचा।छीदृपधरी।।तबबोलिसचिवपुरलोकतास:कहियोंव
सिष्टनिकसेप्रकास:बलछांफिचरनलेजाफुबाल:कैंबंसनासकेहैंअकाल
कबिरुबाचा।नृपपुत्रगयेतबरिषनिकेत:मिलिसबेराजजुवतीसमे
न:।सब्रवबाचा।सोहीनबांनिकैकरीसेव:हीयरुअनुग्रहकरुदेव
मुनिअयरुघिरघटधस्यौमल:हतदोषहरुफैसांनकूल:सप्रसनन
येमुनिटस्योआप:बहुकरतदेषिअबलाबिलाप:जबबंध्योबंसनावी
बिनास:अतिहरषबालत्रीयगयेअवास:मुनिनयेसबेमिलिमनम
लान:कुंनसोहीनिवेसतनमिकीन:अनमोघरुघिरवह्रहमअंस
पुत्रिकाउपजितिहिजगप्रसंस:प्रनसरीरतोअवधिपार:तिहिबा
लसबहकीनोसुनाह:रिषलयोफाटिसोईघट सरूप:निकसीअजो
निकंमांअनूप:कतजातकरममुनिवरप्रकास:सुनबेरमतीदयान
मतास:तिहिउपजिउग्रबैराग्यताम:कृतब्रहमचर्यअवस्थोबाम
आबालब्रहमचारनिअरेह:देवहितिहिअरपतकीनदेह:तपसनि
समूहमिलितपततापः बरषानसीतग्रीषमबियाप:अतिकरतिकषृज
दृपिस्वअंग:स्वाभाविकसोभाबढतिसंग:बनसघनसुभआश्रमबि
राज:सुनसंगतहासाधीसमाज:इकसमयतहांहसासिरुअजीत:अ
निबलीअसुरआयोअनीत:तिहिजांनिअजोनीतगीताम:बसतीत
बिवरगतनईबाम:पापिष्टरुरपदबिम्हपार:सोईधसेरबिवरअ
पनेसुनाह:उग्रिरोमत्रीयाकंपतसरीर:अकुलाइधरकिछतीयाअधी
र:स्वाभावजोतितनतोप्रकास:तहांदेषिअधमहसबहनतास:बल
करबिकस्योतपतंगबाल:सोदुष्टअसुरषलसुरनिसाल:बपुससत्रछे
दकीनोंबिसेष:त्रीयरुघिरपात्रपूस्योसतेष:सषिकुतीतापसीयेक
साथ:हगिरुघिरपात्रतिहिदयोहाथ:बेतिकासरितउपकंग्बीर
सजनीतुवगाहवघटसधीर:पुनिकसोहसाननसोंप्रकास:नि
सेषकरोतवबंसनास:अवतारद्वितीयहिलोकआनि:कुलराहस
मोकछांफिकांनि:योंकहतमात्रतनउगीआगि:ज्वालाकरालब्रह
मंकजागि:नईनसमसक्रोधानलसुनाह:हीयसोकलोकनई
हाहाह:।तिहिरुघिरपात्रबेतिकातीर:सषिजूमिगाफिराछोसथी
:सुन
र:

अंगसतिलछनसुनाइ॰ इहिसमयरमंत्रअवतरीआइ॰ कतुकाजजनकआरं
भकीन॰ प्रभुबोलिसकलमंत्रीप्रबीन॰ संकारसिधकुवनरपसाज॰ चुवसो
धिपूछि द्विजवेदत्राज॰ मषकजकरतबिलिसोधमूल॰ वहाषोदिअवनिरक
पुरुषकंत॰ मिलितहाराजरानीसमेत॰ कनकमयजोतिहलकनुनिकेत॰
हलसीतअरतवअरकहोइ॰ सहकंनानिकसोपात्रसोइ॰ जोतहामहाविस
मतनुरूप॰ सोअवुलदेषिकंनासरूप॰ आनंदपुहुपवरषाअकास॰ पु
निलिहीगगनबानीप्रकास॥ आकासबानी॥ पोषकुबिदेहपुत्री
सप्रेम॰ निरधारनिगमकरिसहतनेम॰ कारनयहउपजीदेवकाज॰
राषियेजतननिथलेसराज॥ कबित्त॥ हलसीतमुषप्रगटीसह
स॰ तिहिनिकसोसीतानामतास॰ करिजातकरमनानप्रकार॰ बाजि
त्रगानमंगलबिथार॰ नृपथेरबढीकंनाअनूप॰ साष्यातचिन्हलछमी
सरूप॥ दुहादुहप्रजप्पतिमषबिषे॰ तोसुरसंकरजुध॰ ससत्रअ
सत्रप्रहारसो॰ करतपरसपरक्रुध॥१॥ क्रोधाधिकहरदुहकहे॰
सुरनिसमेतसंघारि॰ उपजीचितगलानितहा॰ दयोपिनाकहिगा
रि॥२॥ चापसुपेमिथलेसकै॰ आंगनपसोजुआनि॰ उग्रेनपुरुष
अनेकक॰ मनरहेलजामानि॥३॥ वादिनतेवहचापतहा॰ पसोर
लोथलपाइ॰ सुरनरआसुरकसबल॰ ठेलिनसकेउगराइ॥४॥ काल
तरतहाजानकी॰ उपजीरूपअनूप॰ कंनाराजाजनकके॰ प्रगटर
मोअनूपरूप॥५॥ सीतासतहृतसंजुकत॰ हरकोधनुषनिहारि॰
प्रतिबासुरपूजितप्रतछि॰ मनक्रमबचनबिचारि॥६॥ छंदूप
धरी॥ प्रतिष्विसधनुषआकरषिपानि॰ वहिगमसुचोकादित
आनि॰ पुनिथरिपिनाकपूजनसप्रेम॰ निरधारमहतयहनित
नेम॰ इकदिवसदेषिसोजनकआइ॰ सीताजुचापपूजितसुनाइ॰ चित
महबिदेहहाकीयबिचार॰ बिधिनीतिधरमयहबिहार॥ जन
कबाचा॥ कंनाबलहियुनवहोइकंत॰ संजोगबनेसुषकहतसंत
कवनेमजवकहितकनिकारि॰ ऐचेपिनाकसोईबरेयाहि
पनकरेपूरनमेरोपुनीत॰ सोबरेसुषहिकंनकासीत॥ इतिसी
ताजनम॥ अथराजादसरथ घरे मुनिबिस्वामित्रआ
गमना॥ कबित्त॥ बिटपसघनबनजलबिमल॰ पुनि
तपोथलपाइ॰ बिस्वामित्रपवित्रमुनि॰ आश्रमकीनोआइ॥१॥
होवतउपदेसतहा॰ संजुतरिषनिसमाज॰ जपतपसंजमनियमजि

यः करतजथाक्रमकाजा॥२॥ तिहिकांननअंतरबसत महादुष्टमारीच
सुंदरसंगसुबाहुसो निलजनिसाचरनीच॥३॥ समयइकतहोगा
धिसुत कृतउहिमनुकीन सोधितपोथलन्हमिसुत प्रारंभकरेप्रवी
ना॥४॥ आचारिजहोताअखिल पूजिबिप्रपरचार बैठिमषासनआपमु
नि सिधनयेसंभार॥५॥ कुंडप्रदीपतअगनिकृत बिप्रनिबिह
त बिधान मंत्रजथाबिधिबेदमय गिराप्रगटनयेगान॥६॥ छंदपधरी॥
सोसुनतमत्रआसुरअसाध बहुनिसचरपग्येजग्यबाध कृतजथाउ
पद्रवआनिकीन बसमांसरुधिरबरषानबीन कैवृष्टिपांसुउपलनिर
हार मषरलोनहिनसाहिजातमार बसमोकतयेरिषबिस्वमित्र
चितअमतदेषिआसुरचरित्र मुनिबलेसंगमिलिद्विजसमाज
अजतनयतहराजाधिराज अतिप्रीतअजोध्यापुरीआइ सोराजकार
पुहुचेसुनाइ प्रतिहारनृपहियुहुचोपुनीत मुनिआयेबिसवामित्र
मीत सामुहेआइदसरथनरेस परिपाइकस्योमंदिरप्रवेस तहा
प्रथमप्रेमजुतधोइपाइ सुतअरघकीनपूजासुनाइ पहुकुलद
येआसनप्रमानि निजकुसलप्रसनकीनैनिदान सुतचारिचर
नलायेरिषीस आनंदपाइदीनीअसीस पुनियेकपाइगहेप्रबीन
करजोरिनृपतिपुनिप्रनितकीन॥राजोबाचा॥ हथीप्रभावपूरनप
वित्र मुनिकहेआगमनहेतमित्र ममअहोभयोपावनमहंत सो
कहियेकारनपरमसंत॥ रिषिबाचा॥ अवधेससुनुजिहिकाजआ
इ सबजातिसहातुममषसहाइ हमकरतजग्यनृपधरमहेत त
हांदुष्टनिसाचरदुषहेत नहीहोतजग्यपूरननरेस बिघनबहुक
रतराहसबिसेस इकमांगतहैंहमदानआज जसलेहुहैंराजाधि
राज॥राजोबाचा॥तबहयोबचननिसचयनरेस सोईधनमनुमहि
रीजेरिषेस॥रिषिबाचा॥संगचलहिरामलछमनसहाइ सुनहोस
जग्यपूरनसुनाइ येराजकवरपरमकुअनीत तोहोइनासनिसच
रअनीत परिअवनबचनजबयहनृपाल सरसेलगिअहारहुद
यसाल॥राजोबाचा॥राजाइहीआपुमंत्रिराज सबसेनकरुअच
तुरंगसाज मिलिसुनयसहरहलबलसमेत हमचलिहैंबिसवा
मित्रहेत॥रिषबाचा॥ मैंपरबसमयजाओमहीप सोदीयेब
नेसुनिबेसदीप॥राजोबाचा॥करजोरिनृपतिहाप्रनितकी
नेयहसरबतुमहिआपाअधीन धनदेसकोसप्रजुताप्रजंत

मनहोइसुपेलीजेमहंत· संक्रमोचवुरथ्थ अमसुत्तार: अवसेषअयुकछुरलो
आर· पुनिकरेअंगरिषमयप्रयोग· सुतनयेरामकिकुकृतसंजोग· सोउकाकर
कुधारीकुमार: ममआहिअंधछरिकाअधार: दुसाधिजुधरादुसहुरंत· तुमवि
कालग्पजानतसुतंत· आकरषिमुष्टिआयुधअभ्यास· प्रभुबालकुलजान
हिप्रयास· कीजासरथनुहीकरतकेलि· मारगनसजनतविनलाषमेलि॥ रि
ष बाचाबिषबरनसियबरछित्रबाल· लघुकरिनिरतेगनथेनृपाल· बिष
बिक्रमअनमितितेजवंत· स्वानावसिध्यकरतसंत॥ राजोबाचाहृष्ट
ठिकाजकीजेरिषेस· हमचलहिसंगसेनाबिसेस· मषकरहिप्रनषल
मारिषेत· तजिसोककरहुबिस्वासचेत॥ रिषिबाचाकबिता बिम
लहेसनुवबंस· प्रगटयुरराजवहेपुर· सोसमाजसोईसाज· सदापूजि
तसोपेसुर· हरिसचंद्रममबचनलागि· तनबिक्रयकरयो· अषयबच
नरषयो· नीचमंदिरजलभरयो· बिथरीयकिंत्रियपुरबिमल· सप्त
अरमतिहिपाइसिषि· तिहिराजबेठिदसरथनृपति· बचनलगनहीबिद
बिषि॥१॥ कबिरुबाचा॥ दुहा॥ गाधिसुवनकेतिहिसमय· क्रोधअरुन
शिरदेषि· गुरबासिष्टअवधेससो· बिनतीकरीबिसेषि॥१॥ गुरुबा
चातपबलबिसवामित्रके· रामसरहिसबकाज· जयजुतजसजुतकुसल
जुत· बेगिमिलिहिरिरामा॥२॥ मुनिकेमनहेरामभय· जानकुनियतनरेस·
तातेबिसवामित्रको· राषकुबचनबिसेस॥३॥ कबिरुबाचा आगामो
निबसिष्टकी· कीनोनृपतिप्रमान· तेजनतावप्रतावजुत· मुनिहि
दयेबकुमान॥४॥ रामलषनतहाबोलिनृप· बिमलअंकबेगरि दी
नोबिसवामित्रसंग· करनजग्परषिवारि॥५॥ अतिहितबिसवामित्र
के· नृपतिलगेउगिपाइ· कंठस्वासउरकंपअति· नैनरहेजलछाइ·
गयेरामतबमध्यग्रह· मातहिनायेसीस· लेबलाइउरलाइतब·
दीनीजयतिअसीस॥६॥ बिसवामित्रपवित्रमुनि· सिसुनिचलेतेसं
ग· जैसेबालकसिंघके· आगेचलतअनंग॥७॥ सबआयुधबिद्यासु
मर· दई सिसुनिहिजदेव· ससत्रअसत्रधारनसुकर· जुधजईअनजे
वा॥८॥ बिद्याबलजुअतिबला· देवनिरमितदोइ· कछुकुपथजब
अनुक्रमीय· रामहिदीनीसोइ॥९॥ तिहिबिद्याबलजोगते· आपिन
छुधापिपास· आगेगंगापारकीय· कौसिकपंथप्रकास॥१०॥ रिषिबाचा॥
कौसिकश्रीरघुनाथसो· कहतकथामगजात· अद्भुतसुनिसुनिहो
तहै· हरषवंतहोकुन्नात॥ बिस्वामित्र बाचा॥ सरबिधिनरबिध
मानसिक· सिषरबिषैकैलास· तातेचलीतरंगनी· सरयूनामप्र

कास॥१॥ ताके रहनतरबिषे बनइकरम्पबिसाल निहत्रनयांनकजंतकरि से
वितनरलतमाल॥२॥ इक करूषमालवद्वितीय तहांबसतसुन्दरेस परमन
वनेइंद्रके बिरचितरेवबिसेसा॥३॥ नामसुकेतसुजहइक मनअनपुत्रम
लीन तापुषब्रह्मा हेतनिहि नियतनपसाकीन॥४॥ दीनोताकहंदरसबि
धि कारनपूछिकृपाल कहीसुकेतअपुत्रता सहिनजातउरसाल॥५॥
छंदपधरी॥ कविरुवाच॥ बिधिकलोरेषितिहिदुषबियाप तवपूबउप
जितप्रबलपाप निहिदोषनप्राप्तपुत्रतोहि मनबाचजुपूछतहेतमोहि
पुत्रीइकहैहैअवधिपाइ सोदुष्टमहापापनिसुनाइ॥ कबिरुवाच॥
तवउपजीकंन्याअथमनाम निरलाजनिडुरताइकानाम॥ताइ क॥
करजोरिब्रह्मसोंप्रनितकीन दारुनसुनावजहतादीन सुरजोनिज
हसानिकसुनाव नयहोहिकुटंबमोहिदुषनाव॥ कबिरु॥ निरबल
बिरंचिवहजांनिनारि बारनसहअबलदीयबिचारि आश्रमअगसति
केनिसाआइ सोलसोजोगनिद्रासुनाइ दारुनपसारिमुषकेसदप बृ
हलगीअगसतहिषानआप तषबलअगसतितवतप्रीतास पापनिहि
आपदीनोप्रकास बेकृतरूपबिपरीतबेष राकसीतईसोकरमरेष
तजिजहजोनिप्रांनीसताप पिसतासतबिग्रहमहापाप दुष्टसुउप
द्रवकरतदेस बसुधाकरूषमालवबिसेस बिपरीतकरमबासवबि
चारि मालवतेंकादीतबेमारि॥ताइ क॥ बासवपरमांगोतिहिबि
सेस सुषथानबासदीजेसुरेस॥ रिषिबाच॥ तबइंद्रबतायोबनजुत
हि अवअजइहांतेनिकटआहि॥ इहा॥ जोजनअरधप्रमांनजिह
बनदयोइंद्रबताइ जंतलहकृतिहिमध्यजोई नहुनकरकुसुनाइ
॥१॥ ताहेजंतनजातनहां कोउकेकुकाल महाभयानकलोकमह
बनताडिकाबिसाल॥२॥ वहेपंथहैनिकटअब नृमिश्रलपबकुनी
ति तहांबसतबहताडका अतिआसुरीअनीति॥३॥ मारगद्वितीयसफे
रमहि नियतनतहांजयनाहि करकुबिचारकुमारतुम जिहिमगआश्र
मजाहि॥४॥ श्रीरामोबाच॥ सोसुनिबिसवामित्रसों रामकहीहसि
बात तुमहिकहाद्विजराजकर निकटपंथचलुतात॥५॥ कबिरुवा
च॥ तबआयेबनताडका बिसवामित्रबिचारि सजयपंथजयेदास
रथि चलियेसरसंचारि॥६॥ सोसुनिरामसबंधतहां लीनेंचापच
टाइ कृतटंकारवपनचिके सबहिनघोषसुनाइ॥७॥ सुनतमात्रसो
नारिका पंथनिरोधेआनि घोरारवकीनोसघन बिषमजयांनकव
नि॥८॥ रामबांनसधांनकीय निसचयदृषीनारि कहतअवध्य
जुसाधकुल सरमोष्यौनसंनारि॥९॥ रिषिबाच॥ जानेरामससो

जब: तहाबोलेरिषराज: याकोकछूबिचारनही: करिबोहैसुरकाज:॥१॥ प्र
मकुतीस्कपापनी: दीयजि ज्ञानारि: देत बिरोचनकीसुता: मारीचक्रमुरा
रा॥२॥ बकुस्चौमातासुक्रकी: दुष्टाचारनदेषि: सोपेचक्रअदिष्टसौ: बामनह
ीबिसेषि॥३॥ सहसमञ्चगजजोरसौ: सदाकरतद्विजदेष: ततेरायवबे
गियह: मारिमिलावकुमोष॥४॥ कबि रुबाच॥ सुनतमात्रसरताडका
उरमहहनीअसाध: बमतरुयिरगतप्रानतई: बिप्रधरमकीबाध॥५॥ प्र
थमषिसाचीपापनी: आपदगयतईनाम: मुकतारामप्रसादसा: नईजही
निजनाम॥६॥ आपबिमुकतसुंदरी: यहीदेहसुपाइ: रामहिकीनोप
रिक्रमन: पायोस्वरगसुनाइ॥७॥ सनिताड कबंध॥ बिस्वामित्रआ
श्रमअगमनं॥ ऐकरजनिअंतरतहा: आयेसमयप्रभात: चारनसि
धप्रसिधसौ: बनसेवतबिष्मात॥८॥ देषितषोबनरामतहा: उपजौदु
षअपार: कोलतमानकुसियहै: क्रीडतराजकुमार॥९॥ छंदपधरी॥
मुषकमलकमलदलनेत्रमान: सायुधसकोपतयेसावधान: बिसतीर
लबहुकंधरबिसाल: आजानभुजाउतंगभाल: बत्रिसतलहुनजुकत
देह: सुनपुरुषसिधसोदर्सनेह: कोदंडबानकरकरिनिषंग: मनुतयेउच्च
पअंगीअनंग: बषअरुनस्यामयनूतनबिसाल: पटपीतकसेकटितरसुढाल:
बीरासनबैठेउतयबीर: सायुधसकोपउछवसधीर॥ अतिमबाच॥ षि
राजसरसितवकलोराम: करियेद्विजजज्ञारंभकाम: सबआचारिजहो
तासवतंत्र: मुनिकरकुबेहउचारमंत्र॥ कबि रुबाच॥ समसांतरूपकी
सिकसुनाइ: बिचिबैठेअष्टासनबनाइ: सप्तत्वकसहसरिलजसमा
न: जेनिपुनबेदबिद्यानिदान: प्रारंभजज्ञतबअतयपाइ: साजिचापबो
नरयुबरसहाइ: कृतबेदोधुनिमध्यानकाल: आजुलिकुंडउठिअगनि
ज्वाल: द्विजदेतमंत्रआहुतिदान: निरयोषतरीधुनिसामगान: दिगर
हेपूरितहाबेदनाद: मारीचसुनोसोअप्रमाद: तहाआस्थिरुधिरब
रषासहोत: तमप्रसरिगगनरविदरिउदोत: बिनुनित्तरामसंयो
नबान: तिहिकरेमोषअकरतान: मारीचबातसरपंषमार: त्रा
मतअकासहूलोसंचार: मेलोसतजोजनउदधिमाऊ: सोबिह
बलसूकिनतोरसांऊ: सरअनलद्वितीयमाह्योसुबाहु: नयोतस
मअसुरइंद्रनिउछाह: सबलषनसेषनिसचरसंघारि: निःसेष
करेरनषतमारि: आकासछयोसुरथनिआइ: सुनतईपुहपब
रषासुनाइ: निरयोषदुंदुभीगगननाद: बदिसिधसुचारनज
यतिबाद: निसदिवससप्तरहिसावधान: येकासनबांधेध
नुषबान: वयसप्तबरषरघुबीरबीर: संघारअसुरकीनोस

धीर मधनये तहापूरनसमूल सुनिअसुरउरनिवटिपरमसूल उग्रिम
लषनसरितअन्हार सबनि सकरमकीनेसुनार॥६॥ कौसिकतग
तिप्रनावकी महिमाबरननिजार जग्यपुरषनरदेह्यहु जोजनक
रतसुनाइ॥७॥ त्रितीयदिवसकरजोरिकहि रिषवरसोरघुनाथ
अवधिकहं गवनकरहिअनाथ॥८॥ कौसिकतबरघुबीरसं जाचो
सहतसनेह कछुदिनदिनकरकुलतिलक दुरलनरसनदेहु॥९॥ प्रे
मजुक्तरघुनाथतहां रहेकमलदलनैन राजनीतिमतधरमजुत
सुनतदृढतचितचैन॥१०॥ छंदपधरी॥ अथजनकधनकजग्या
रंभप्रसंग॥ तिहिसमयसोधिसुतलगनतांम कीयधनुषजज्ञ
उदिमसकाम आरंभस्वयंबररचिउछाह बोलेनरेंद्रआजनबाह स
बबोलितहामुनिवरसमाज कृतबिबिधिमंत्रतहांपनिकाज दान
बजुदेतरहसदुरंत सबआरदेवदोषीअसंत पुनिमनुजबीरर
नाअपार मिलिमहासूरसुदरकुमार इत्यादिआस्तुवपतिअ
नेक बिवसारजुकतबिक्रमबिबेक अतिदुष्टदानवआरंभ
प दुसाधिबनआयोसदाप॥१२॥ पत्रीबिरंचमिलकहं प
ठईजनकनरेस धनुषजग्यआरंभरहां पगधारियेरिषेस॥१३॥ कौ
सिकतबश्रीरामसों पूछेसहतसनेह धनुषजज्ञकोतुकचलहि देह
षहियेहबिदेहपुर॥१४॥ गुरआग्यारघुनाथतहां पौरुषकरीप्रमान
उग्रासमयअतिहरषसों कीनोंप्रगटप्रयांन॥१५॥ धनषजज्ञमिथुलप्र
तिगमन॥ अहल्यापूरबप्रसंग छंदबेताल॥ तबआरकौसिक
सुरसुरीतट बिमलथलजुबिसेषयो तरलतामंजरपुहुपफलजुत
रहतजनअवरेषयो त्रिनगुलमपल्लवबिपुलसंकुल गोतमस्याश्र
मगनें बनजतबरजितपहमृगगन नेगपुंजनगुंजनें॥ रामबा
तिहिदेषिश्रीरघुनाथबिसमत बचनकौसिकसंकलो यहपु
निजलतटबिमलपावन थलसुनिरजनकोरलो॥ रिषिवाच
पुनिकहोकौसिकसुनहुरघुबर पुराहतजोमैसुनें नवतबदेवी
प्रबलमाया नियतनिगमागमगुनें॥१६॥ राजसुतासकसु
दरी नामअहल्यातास ताकेलहनरूपगुन तीनहुलोकप्रकास
॥१७॥ ताकोनारदइंद्रपहं बरननकस्योबिसेष सोसुनिसुरपति
कोनयो अतअनुरागअसेष॥१८॥ द्विजइकगोतमसोंपढ्यो बिद्य
बेदबिलास देतनयोगुरदक्षना सुनिमुनिनट्यो सहास॥१९॥

गुरु बाचा॥ दीनी बिद्याधरमभे: ताकेकछुनलेत: पुत्रचलहु अहल्या अपने
सुतकल्यानसमेत॥१॥ सिष बाचा॥ सिषकसौ रिषराजसौ: मनक्रमबु
धिसमोइ: धरमहि बिद्याजो पढ़े: जाकी सिधन होइ॥२॥ गुरु बाच आ
ग्रहदेष्यो सिषकै: मुनिमाग्यो हितमानि: आहि अहल्यानृपसुता: देहु
दहनआनि॥३॥ सिष गयो सोनृपतिपहि: कीयजाचनाआइ: दीजेकं
यादानहु: गुरहितमांगतराइ॥४॥ तैंहीसमयसुरेसतहा: आइअहल्या
हित: पुत्रीमांगीनृपतिपहि: मनक्रमबचनसमेत॥५॥ द्विजकोजानो
आपकर: इहमहानयआहि: दोऊबातदुरंतअति: रह्योनृपतिचकिचा
हि॥६॥ नृपतिबाच॥ कीयनिरधारबिचारकरि: दुहुनिउत्तरदेइ: करे
जुहथीपरिक्रमन: सुपेअहल्यालेय॥७॥ तुवमंडलकरिपरिभ्रमन:
पहलेआवैकोइ: द्विजअथवादेवेसमहि: कंन्यापावैसोइ॥८॥ क
बिरु॥ कह्योप्रमानजुबचनको: उगिवनेअकुलाइ: उलेमुषीसु
तीजुरक: प्रसवसमयद्विजपाइ॥९॥ दीनीताहिप्रदहनां: बिप्रसह
तबिस्वास: सिधकजलयेराजसो: प्रथमहिमिल्योप्रकास॥१०॥ छंद
पधरी॥ ऐरावतआरूढ़ि इंद्रआइ: सोमिल्योनृपहि सातिकसुनाइ
तहावहेआनिदेष्यो द्विजात: संभ्रम्योचितनहीदुषसमात॥ इंद्रब
चाउचस्योइ इयहअप्रमान: येऐरावतैकोसजवआन॥ क बिरु॥
कीयबिहबिदुषनिरधारकीन: पदचिन्हजाइदेषहुप्रबीन: जब
देष्यो तिनजूगोलजाइ: पदचिन्हबिप्रगजअपाइ: तिनआइजथा
बिधिधरमतंत: बिसतारसहतसुबकहिवृतंत: तबगयेसबेब्रह्मा
निकेत: सोकहीबातकारनसमेत॥ ब्रह्माबाच॥ बिप्रसोइंद्रउ
पज्यो बिबाद: मिथ्यानहोइबेदनिम्रजाद: परिबेषउनयमुषगोप्र
मान: सोसत्यकुमंडलकेसमान: नैगमबिचारबिधिकहिनिदां
न: द्विजदेहुजाइकंन्यादान॥ क बिरु बाच॥ द्विजताहिअहल्या
दानदीन: कंन्याबिबाहगोतमहिकीन: लैगयेब्याहिगोतमस्वग्रह
निसबदतअमितदंपतिसनेह: पुनिहप्रभावगोतमप्रकास:
तहासतानंदनेपुत्रतास: सुंदरीपरनाहिनसुरेस: पूरबानुरा
गतोउरप्रवेस: मानसिकबिथाउपजीअमान: अहल्याबिनुअ
वेचितनआन॥ इंद्रबाच॥ सुरराजकहीससिसोसमूल: करि
येसहाइकैसानकूल॥ क बिरु॥ इकनिसागोतमआश्रमहि
आनि: भगकरमकस्योउहुकपरगनि: बिधुतामूचउबांनीबि

प्रात परगासकरी जो करत प्रात सो सुनत उग्रो गोतम सुनार आन्हीकहित
जलतीर आर रिषरूपक स्यो तब देवराज कीनो प्रवेस मुनिय हम काज गो
तम बिचारित हानछत्र गान जीयत नरी कछु कबिपरीत जान पुनि आनिक
सो मंदिर प्रवेस अपनो सरूप देखो सुरेस ॥ गोतम बाच ॥ पापिष्ठ क
वन तू अगरिपाप सग करुन समर्क देउ आप सा रूप देह मेरो सुनार
अन समय अथ सद्दिज आर ॥ इंद्र बाच ॥ नामनी चोर बोल्यो सनीत
कुंइंद्र काम किंकर अनीत मैं दुष्कर मआच स्यो देव अब त्राहि त्राहि अय
कुलअजेव ॥ गोतम बाच ॥ मुनि नयो तह क्रोध रमान दारुन सर
पदीनो निदान आकोर लुब्ध जिहि नो अधीर रोमांच देह दिग अवतनीर
कबिरुबाच ॥ दस सत जुन रीत हजो नि देह आकृत असम्फल करम
येह नगवान इंद्र नयो गयो नाजि कीनो कुकरम जिहि अंग काज अति त्र
सत्रीयाकंपत अधीर रोमांच देह दिग अवतनीर इहि दसा अहल्या लि
षी आप संक्रोध दयो गोतम सराप ॥ गोतम बाच ॥ पापनी उपतमय
देह पार मिलहो हि इह बर जितसहार अनजंत अजन बन रहु येह
सब काल मिलान्त यनि संदेह इक सहस बरष सहि कष्ट अंग अति सं
तापबरषा अनंग दिनकर नबंसरयु पति दिनेस पथ जात कर हि इ
हि बन प्रवेस अषिलेस छुव हि सिरचरन आर सुन देह फेरि पावहि सुनार
कबिरुबा चा हारुन सराप नरी मिलादेह सो चले प्रान छूटे सनेह अमर
बसे रिषज इआप मिलन्त रीत्रीया नुगत सराप ॥ बि स्वा मित्र बाच ॥ अषि
लेस छुव कुअबचरन अंग सो तजे अहल्या उपतसंग ॥ कबिरु ॥ यो सुन
त्र्यो गत केउ धार पद परसक स्यो लीला अपार सो तइत्रीया तजि प
पसुध परत कुअ अगदी प्रबुध निजरूपक हे गोतम सनेम प्रतिमो
सो रीदेषी सहत प्रेम ॥ अथ अहल्या सतुति कबित्त ॥ नीलजल
दतनस्याम मंदमुष हासबिलासित बसन पीत कोसेय कनककुं
डलमकराकृत उरबिसाल उतंग नाल लोचन कमलाइत कटिनि
षंगकरयनुरबान नुजजानुप्रलंबित सुप्रसन बदन सानुज सद
य श्रीयसेवित असरन सरन अवलोकि अहल्या उचरीय हरित्रि
लोकसंकट हरन ॥ १ ॥ जिहि पद रज पावन प्रसिध बंछित बिरं
चि बर जिहि पद रज पावन प्रसिध हित परस इछ हर जिहि पद
रज पावन प्रसिध इंद्रादि उपासित जिहि पद रज दरसन उपा
नव सिध अन्पासत अपकरमनो गनुगवत अषिल प्रतिसराप
सिल नुव परीय तिहि रज प्रसि पावन

धरीय॥२॥ जिहि हरिपदपंकजप्रसंग गंगापुनीतगति तिहि जलमंज
नउरयलोक पापिष्ठ कुंपावति जिहि हरिनिजनाती सरोज ब्रह्माउत
पत्तीय जिहि पदपंकजरजपुनीत सोजतस्रुतिषंतीय तेई रामभनुज
बिग्रह अतुल नवमभद्रिगोचरसत्ये तिहि नाग्पमोरमहिमाअमित
जिहि अनेकसुकृतजये॥३॥ जिहि नमोमृतसार रसिकतपसत्रिपु
रारे तिहि अवतारचरित्र बिचित्र मुरलोकबिहारे सुरमुनिनारदसे
ष सियसनकादिसुगावत प्रतिदिनजसनवनवप्रकार तउ ओरन
आवत अरिमनुजदेहधरनीधरन मुहिहितइहिंपदचारमहि मिलि
उयपुराकृतकरममम करिबंदनमुनिनारिकहि॥४॥ सोईयहपु
रुषपुरान परमआतमपरमेसुर स्वयंजोतितनअजत लोकलीला
बिमोहकर अपयेकअनेक रूपमायाप्रतिबिंबत बिधिनवबिस्व
हिनाम तेदतेई होतबिस्वहित बियहसुतंत्रदरसतबिपुल पदपंक
जश्रीयउरपरस आक्रमतजनएकेन इल रिषतेई आवतजोगरस॥
॥५॥ रामजगततेआदिअंत जीवनिजगतआश्रय सरवप्रानआसकरो
यकनासतअनेकमय ऐकारअपार रामत्वबचनअगोचर वाचकब
चनबिनेद जगतमयत्वजगदीस्वर कृतकारनकारिजकरततत्व
तिहि फलसाधनजेदनव त्वेरामएकनासितअखिल तनमया
अनेकतवा॥६॥ तुवमायामोहितजुबुधि तवततनजानत हैमा
यानरकपरमीस मूढ़तोहिमानुषमानत जोअकासअथाह बिम
लनासतबिहरंतर अचलअसंगतनित सुधबुधसबसमसर जो
षिनामूढ़अग्यानजुत कुनततजानतहरे तसमोतरामतुवचरनचि
त कोटिकोटिबंदनकरो॥७॥ तवनमोमिपुरुषेस नगतबंधुलज
यहिता श्रीनारायनरिषीकेस अनबिद्यअनंता जत्रजत्रदेवाधि
देव अहमितउतपतीय तवपदपंकजिनगति नियमजुतहोकुसु
नितीय सुरसेविसदाअसरनसरन अधमउधारनअधतीय देवेस
दीनबंधुसदय पावनपतितअनाथप्रीय॥८॥ नवनयनासनऐकन
प रविकोटिअकासे करधृतसरकोदंड नीलघनआभाजासु कन
करुचिरपरपीत रतनमनिकुंडलराजत अमलकमलदलनेत्र बा
हुअजानबिराजित सानुजसहरघुबीरसोई असमदेहत्रीय
धरीय मिलिप्रेमअहल्यागोतमहि कहिसतोत्रबंदनकरीय॥९॥
श्रीगौतमोवाच॥ यहजुअहल्याकृतसतोत्र जोपढ़ैतगतिजुत म
हापापतिहिमुचहि मुकतिसाजोजिसुधमति हृदयनिवासितराम

पुत्र कामना प्रकासे सब बंछरफल सिध्हो ह्वै बंध्या न विनासे सुषलाभ म
नोरथ फल हि सब ताके रामप्रभावत हो तत्कालदेत दरसन तिन हि जे
ईसुमिरत जिहि हेतु जहो ॥१॥ श्रीभगवाने ॥ ब्रह्मघात गुरतलप अ
मते ईसुरापप्रीय मातभ्रातपितबाल मारजिहि कामबिकल जीय
स्वामिद्रोह बिस्वास हि सपथ हत कपपपर गोत्रीय मारकुदेन आह
देवदाह कुकृतकर नित्यहस तोत्रजपि हैनियम सोपरलोक हि सा
धिहै पुनि नासकहा कहिबे प्रगट आचारी आराधिहैं ॥२॥ कबिकु
वाच ॥ इहि प्रकार कोसलकुमार रिषिनारि उधारीय इंद्रदेष पति श्राप
रोष सिलदेह सुधारीय पावन पद रज परसि पाप पर हरि पुनीत
भय सुमन बरषि सुर गगन बानि जस गावत जय जय जिहि चरन
सरन नर हरसु कबि ग्रहन बंधन छेदि गनि सो ईराम करन कार
न समथ महाबाहु अवतार मनि ॥१॥ इति अहल्या उधरना ॥ ह
ल गोतम आश्रम ते गमन ॥ कौसिक करे सकाम प्रीति सहत मिथु
लपुरी सानुज संग रघुराम ॥ ॥१॥ श्रीरघुनाथ हि जे सगुन भये नगर प
रवेस तिन के प्रगट प्रभाव कहे कहि न सकत सुरसेस ॥२॥ जब हि सुने राज
जनक आगम बिसवामित्र सादर आये सामुहे पारन लगे पवित्र ॥३॥
अथ मिथिला आगमन ॥ जनक बाच ॥ ह्वा ॥ इछे जनक नरेस तह
मुनिवर बिसवामित्र कोथे देष तब बालबय पूरन पुरुष पवित्र ॥१॥ कै
स कबाच ॥ बोले बिसवामित्र तब सुनिये मैथिलराज येसुत दसर
थ नृपति के मैं आनेमष काज ॥२॥ इन हो मारीत ताडिका पथ पापनी
बाम ताते आगमन तब हि सिध सुर निके काम ॥३॥ पुनि मम आश्र
म हेत मष मास्यो सबल सुबाहु बिनु फल सर मारीच मुनि दयो उ
र सर फेंक ॥४॥ आवत रिषत्रीय उधरी परसत पद रज राम पतिक हे मि
ली अ पापके निगम साषि सुभ नाम ॥५॥ बचन जु बिसवामित्र मुनि क
हि नृप हि सुषकंद सुनत लगे पीयूष सम उरउपजे आनंद ॥६॥ कबिस
ज्ञ यथा धरम बिधि बेद जुत पूजा करी सप्रेम जो जन भाव जु जग तिसो
नित सनवहे तसनेम ॥७॥ समय पाय सानुज सुषद देषन नगर नरेस
कौसिक आगे पाय पुनि पतन कस्यो प्रवेस ॥१॥ पीतबसन तन
स्याम मयन भुज आजानु बिसाल सर धनु पानि निषंग कटि बोल
त बचन रसाल ॥२॥ जहा राम रबि बंस रबि निकसत बिजत मनोज
तहा तहा पुर नर नारि के उर बिकसत अंबोज ॥३॥ छीद्र पथ री ॥ सि
सु मिलत आनि अनेक साथ सुभ दरसकरत षेलत सनाथ सर

[illegible] यान सुषमा हलतातरवरसमान अनेक बागरचन
[illegible] रामदेषतबिसेष तब आस्कुसमबारिकातीर सुच
[illegible] सधीर तरलतातरलसंकुलतमाल नानानिकुंजबे
[illegible] अनअनबिहंगकुंजतअसेष बिथरहिं बिबिधिबोली
[illegible] निलिमदनमततकवतमोर साषानिसाषकलकंठसोर
[illegible] कृतआराम तरलताकुसम तरनिमततमः रस
[illegible] मंजररसाल मकरंदमदचूमिभ्रमरमाल चहुओर
[illegible] प्रतिपत्र निउलहतिअरुनकोंप रसरूपस्वादअ
[illegible] फलतारनमितसाषाउतंग बिचिबाणसरोवरबनबि
[illegible] जलबिमलप्रफुलितकमलजाल मनिमयमंजादसोपान
[illegible] कलहंसकोकगनसोनकूल तिहिसरसमीपसुतकेतस
[illegible] देवालयअतिउतंग ॥ छं दबेताल ॥ तहाजनिआ
[illegible] सीयतब गवरिपूजनकहंचली ॥ संगबेसबेस बिचत्र
[illegible] निआनिमिलीअती तिहिबारिकासरसलिलसषि
[illegible] बिधिबिधिमंजनकरे परधोतपरमपवित्रसीयपुनि
[illegible] अपरसकीयप्रासादप्रवसनि धूपदीप
[illegible] अदभुतआवरे अपरसकीयप्रासादप्रवसनि धूपदीप
[illegible] नैबेदपूजाकरीनेगम ध्यानगोरीउरधरे अनुरूपब
[illegible] बर काजजाचंसोकरी परदहनदेपरमहितचित पूजि
[illegible] ॥ तहानिसनेमसप्रेमसीता करिप्रनामअनेक मिलि
[illegible] सीसुकुलनिकसिमग्रै बढीलाजबिबेक सषियेकदेषत
[illegible] देषिबनरयुबीर पुनिआरआतुरजानकीपंह
[illegible] हिप्रेमअधीर ॥ सषीबाचा तिहिकिलोरजकुमारसुंदर
[illegible] रूप इहिबागहेकैदेषिआई पुरुषसिंघअनूप
[illegible] सुनिलेगईसीतहि हरषजुतनिहिकुंज जहराम
[illegible] बनहिबिहरत परमसोभापुंज तहांआनिदेषे
[illegible] सुंदर रामराजीवनैन आनंदउरनसमातअतिस
[illegible] देहधरेहु
[illegible] सकि बिसाल राजव
[illegible] बि
[illegible] निजातनबैन के
[illegible] सिथलेसकेकोउक
[illegible] यीअनंगअंगी
[illegible] सुनैनउरसनेह ६
[illegible] धिबलक

लिओटनिरखेजांनुकी रघुबंसराजकुमार अंनमोघचहूरगउप
जो अग्रकृतअनुसार जोगमायामेथलीअरु रामब्रह्मअनादि
बिधिलेषजोगप्रयोगसबबनि अंकटरहिनआरि ॥ इजी सषीव
च ॥ दहा ॥ अेकसषीअेसेंकहो सबनिसुनाइपुकार येसुतद
सरथनृपतिके कोसिकमषरषवार ॥१॥ इनहीअहल्याउधरी स
तानंदकीमात आयेबिसवामित्रसंग सुनीनगरबिष्यात ॥२॥ कबि
कुबाच ॥ नारदबचनसंभारिसीय पुनिपुनिचितयसप्रेम लज
नयसजनीसकुंच नयनरगउरनेम ॥३॥ पूजीगौरीप्रेमसों सी
तासषीसमाज मंगलगानबिधानजुत फिरिआईग्रहराज ॥४॥
बनउपबननिबिलासकरि रामआइस्वसथान कीनेबिसवामि
त्रकहे बरनबिबिधिबिधान ॥५॥ बामेअंगबेदेहिके दहनअंगजु
राम नावीसरचतिसकलसुत फुरकनलगेसकाम ॥६॥ सुनबासु
रपूरबप्रहर कीनोसनाबनाउ राजाराजकुमारतहा बोलेरान
राउ ॥७॥ सतानंदकोतिहिसमय पठयेजनकबिदेह आनकुवि
सवामित्रमुनि समआदरससनेह ॥८॥ आगेहीआयेरंगभु बि
नगरनिवासीलोग धनुषजग्यउछाहअति रामदरससंजोग ॥९॥
बालतरुनअरुबृधजन नेहसहतनरनारि जथाजोगबेगेसक
ल अपनीगोरबिचारि ॥१॥ छंद बेताल ॥ सुनिसीयब्याहउछाह
सब संतासारसुसिध निजकाजततपरनारिनर त्रनुहेतबु
धिप्रसिध नृपबंधुमंत्रीयसुहृदसाजन देसदेससमागता गु
रबिप्रपूजिअनेकक्रमगति सुकबियंमितसंजुता कुलमानि
मागधबंससत्वक बंदिजनिबानीबरा पुनिसिधचारनबि
स्वपूजित ततसाधनततपरा मिलिब्रह्मछत्रीयबेससूद्र
निपुनबिद्याआपनो बनिदीपदेसबिदेसबासीय करमकारन
कोगनै समसजनसंकुलबिपुलसोना परमसुषमिथुलापुरी
सबसिधरिधसमृधसोभात कोउनपुरसमताकरी मिलिगगन
यनस्वत्रिदिसिसिंदूर बिबिधिरंगबिराजही बिधिबिष्नुसंभु
सुरेससुरगन सोमसूरसमाजही जलअनिलअनलदिगेस
जोगी जहमनमथलोजुरे रिषसिधुगिरतरसरितितीरथ सुर
सुरजिमनिसंचरे जमपितरगजमुषसेषसारद चारिषानिचरा
चरा जलगगनस्वरसृतजेते बृतीतापसबिसतरा रितनह
त्रयहदिस दिवसअबुद सोमबंसीयसंग जोरजोतिवंतअ

नंतबनजुत बेदनादबिहंग गंधरब किंनरअपछरागन तांनगानसुतल
आकासबाजतबाजअगम बजत बिबिधिबिसाल असुरअमाधअनीतअ
तिसय देतदानबहुसृजे आकासछयेरथनिअनगनु जावअपअपनेंन
जे इतादिअखिलअनंगअंगीय ब्रह्मसृष्टिजु बिसतरे मषधनुषसीता
आकुमंगल धरमकारनतनधरे॥१॥ सवैया॥ बिक्रमबिसेसदसदस
केअसेसबल जितेमेरसेषलाससुरमध्यजाये बिधिसृष्टिउपजे
जेब्रह्मसुकबीबबासी पंचभूतकीप्रबरतिराजपदपाये हैं कोतुक
निमंतकोउबाऊबलकाजबीरजाहिजेसी जावनांतरोसामनचारे
हैं पावनपिनाषमंषदेषनसिसृष्टी ऐसीअवनीससीतास्वय
बरआये हैं॥१॥२॥ कनकयहितनगमनिजटित बिनियिमंचबि
सतार अनिजथाक्रमबेष्टितिन राजाराजकुमार॥१॥ बिसवामित्र
पवित्रमुनि सानुजरघुबरसंग सादरबोलेरंगतुव राजाजनकअ
नंग॥२॥ सतानंदरिषकोसिकहि कीनीप्रनितअनेक सीयस्वयं
बरधनुषमष अनोबिहतबिबेक॥३॥ सबहिनतेऊपरसुषद
ऊबमंचएककीन रामसहतकोसिकतहां बैठेपुनिप्रबीन
॥४॥ औबालकमृगराजके बैठेअबिसेष मृगपतिबिसवामित्रमु
नि अतितपतेजअसेष॥५॥ चौ॰ ई॰ रामरूपदेषतसबे सुरनरसु
षपावहि चितआनंदसमोहबढि नहीपलकलगावहि सामबर
नतनजलदस्याम नहीसमतापावहि मकराकृतकुंडलकपोल
छबिअतुलितछावहि सोभाअमितसरूपदेषि मनतजितमनोजा
कचकुंचितरंगावली द्विगसरदसरोजा उचतालनासाउतंग ही
रारदराजे मुषप्रसनमिलिमंदहास बरअधरबिराजे अतुलकंधअ
जानबाहु प्रभुउरअतिपीनो कंबकंठहारावली बनमालनबी
नो नाभिसरोजत्रिबेषमध्य छबिअद्भुतकीनी रोमावलीसबी
यजिंत्र जनुरहदीनी करिमृगराजनितंबपीन पटपीतजुबेष ज
आबृतससोभतजानु सुतसमयसुसंथे चरनकमलसुरसेवित सु
रसरितनिवासा सरनागतपंजरबिजय बऊबिघनबिनासा न
बसुंदररतनेपमा तेजनिछबिछीने पदतलअसनाकररेष ब
जाकुसलीनें पारंगतबिद्याप्रबीन दसचारिनिदानो आतधर
मगपसावधान निसबेदपुरानो करिकेहरिताथाकसे करथ
रिकोदमा इषुत्रामतकरदहनो पोरुषहिप्रचंडा द्वात्रिंसतल
छनसुंदस सबअंगनिसोहैं पुरुषसिंघदेषतसप्रेम मनहरत्य

बिमोहै॥ छंद॥ जैसी॥ जिसिइंछाकरिदेषेजैसी॥ तिनकहंसफल
नावनातैसी॥ रामनृपनिरहिरूपनिहारे॥ मानुरहेबीररसधारे॥ ष
लषत्रतिरयुवरअसदेषे॥ रसत्रयानजनुबपुहिबिसेषे॥ सजनबि
लोकतरामसनेही॥ हेमनुकरनधरेरसदेही॥ समथनिउररायव
योसोहत॥ मनुहासिरसबिस्वबिमोहत॥ जगतजीयअद्भुत
रसनारी॥ सिलतेनईदिषतननारी॥ रसअंगारसारअवरेषे॥ देष
रेजुवतीजनदेषे॥ गलतगलानिअपेरूषआये॥ अवनीपतिबैठ
छउपजाये॥ असुरदेतजेदनुजअनागे॥ तिनरसरोद्रकालसेलागे॥
सेतनिउरयोरयुपतिसोहे॥ महासांतरसतनमनमोहे॥ बिदुषनिम
नाथसुहाये॥ बिसदबिराटरूपसेआये॥ जोगतत्रसेजोगनिजानें॥ बि
दानदमयप्रतोप्रमानें॥ जगतनिउररयुबरयोंराजत॥ दृष्ट
षउपराजत॥ सासुसुसरयोंरामसपेषे॥ अतिबल्लभसुतसमं
षे॥ देषे सुरनिरामसुषदारक॥ सबनिसदासुषकाजसुतारक॥ प्रजाप्र
संसिपरमसुषपावत॥ अवलोकतनहीनैंनअघावत॥ कबिका॥ जिहि
जैसीभावना॥ रामरयुबीरनिहारे॥ तैसीइंछातिनहिं॥ सफलजईकृत
अनुसारे॥ साधनसुतअगमनः बलनिषयकालउपजीय॥ दुष्ट
निआसांतंग॥ नयेमुषमलिननिलजीय॥ नवरससरूपमंयेनहन
व॥ सबहिनबितसंचारकीय॥ जयजयतिरामरबिंसरबि॥ अषिल
चराचरउचरीय॥ सवैया॥ येकजिहिजानेंजाहि॥ देकैंजो
सिआप॥ जानतअनेकेताहि॥ अनेकजनारेहैं॥ निकटनिहारेता
अगटनिकटनाथ॥ देवषंतफारिनरसिंमकैदिषायेहैं॥ हरि
जानेंतिन्हे॥ हरिहीबिहारिहीनें॥ सुलभनिहारेताहि॥
सहायेहैं॥ आरतपुकारसुनिअंगीयोंअनंगीहोत अ
द्रजालकौनेंधोपगायेहैं॥१७॥ दूहा॥ बालबिदूषनतना
मल॥ रामअद्भुतरूप॥ सोभितबैठेनृपसभा॥ अषिलेसुरअनु
प॥१९॥ साधनृपबाच॥ रामबिलोकिनरेससब॥ उरचिंतअबि
र॥ इनकहंग्रामबिजयजस॥ निगमयहैनिरधार॥२०॥ नरमरा॥
चलियेनवन॥ अंतअकारिजोर॥ इनकेरहतअसेषबल॥ कम
लहैनकोइ॥२८॥ दुष्टनृपबाच॥ जोअवबेकीअधउर॥ न
अतिमान॥ हमहिहोतबलवानको॥ पावैकेमआंन॥२९॥
नरोसोबाहुबल॥ यहजानुबिधिअंक॥ कालहुसोंजीतैस
हैंसांबरहिनिसंक॥३०॥ साधबाच॥ जेनृपबेदमग

महि हसिबोलेसुनिबात: कहगातमारतहथा: अरुमनुलकुवाष
वा॥१॥ मृगत्रिसनाजोबावरे थलदेषतजलनार: नरमहिमंत
रिगतलै: मरिहोसहजसुनाश॥२॥ जगतपिताजगदीसये: कौस
लराजकुमार: सीताजगरबासती निगमकरतनिरधार॥ अ
परावनबानअग्न म॥ कबिरुबाचा॥ कबित॥ तुजाबीसद
ससीस महारहसबलरावन हैकेटकत्रयलोक सुरकुसु
रराजसतावन सहसबाहुदितिबंस समरबिजरीबानासुर
तीनलोकतवकरत ताहिदेषतउपजतजुर दोउदुष्टदेवदषी
अरय: इथीबिस्तिपेरुषप्रबल सुनिहोतस्वयंवरसीयको
आयेतिहिछनछग्यथल॥१॥ रहा॥ असुरअसाधअसंकअति
दोउबिलछनदेह: अवचिंतआयेअसह: सबनिस्तयेसंदे
॥१॥ तेरुक बाचा॥ रावनबानबलिष्टअति कहतयहेसबकोइ जो
उठुनिअैओधनुष: महउपद्रवहोश॥२॥ कबिरु॥ तिनहिबिलो
किससोकतहो: रयेनिरासनरेस: आयेमंगलजानियहा: उपजे
बिघनअसेस॥३॥ सजनराजसमाजमह: आसेअसुरअनीत: नर
नारीहाहाकरत: हरिहरियेबिपरीत॥४॥ रावनबाचा॥ मोहिबतावहु
नृपसुता: पहलेदेषूताहि: पाछेहीतोरिपिनाककह: कंन्योजाउबि
बाहिय बान आ॥ बाणकलोदसकंधसुनि: पहलेचापचढाउ
पनपूरनकरिजनककै: जसलेलंकाजाहु॥ कबिरुबाचारराव
नबातसुबानकी: सुनीनकीलीकान: पुनसानेअतिचितम
ह: बहुस्योबोलेबान॥ बाणबाचा॥ कबित॥ रेरेसठदसक
ठ छाडिहठगरबनकीजे बचनतंगकेहोत जगतगरुवान
नछीजे तूपुनीतपोलसति बंसउपज्योअधिकारीय सोकरि
येपरवान वातजोमुषहिउचारीय हतलीनेजनकबिदेहसो सो
पोसिरेचढाईये कहुपहलेकेसेनृपनिकी पुत्रीदेषनपाईये
॥१॥ रावनबाचा॥ रहा॥ मम तुजबलकीबातसुनि महिमाअतु
लअपार: नवग्रहपारबहेगनित: सुरसेवतदरबार॥ बाणब
चाबानकलोदससीससो: बहुमुषरसनापार: अपुनीकीरतिअ
पुही: कहतबढाईबढार॥ रावन॥ तबफिरिरावनबानक
हे: उतरदयोसदाप: बहुतबाहुजुतदेषीयत: अतिबलकैहेआ
प॥ बाण नु॥ रावनमेरेबाहु बल: सुनोअजहुलोनाहि

सबतैं दसगुन अवनजे जरन्त अमहिन जाहि ॥५॥ कबित्त ॥ कुंजबहि
जबजात पितापद बंदन पावत महादानदेतेस निरषि मुषपापनस
बन तबदेषे बलतोलि सप्तपातालनिवासी तहतहाकरतलदेकि
छीनिराषीछतनासी सहसकनत्तारटारेसरज लोकलोकमहजसल
यो कोजानेकोतुकवारके सेषसहाइकलतयो ॥६॥ रावनवाचहसि
रावनतबकहो बानतुमआहिमहाबल सहसबाहुसंग्रामसूर
खकुहैतसंगदल बलिसोराजाबहुतकाल हैसुतलनिवासी पिता
तुम्हारोकरहु आनिनृतलहिबिलासी ॥७॥ बाणबाचाछितिमंडलदी
नोदहनो सोनिगमागमसाषीयो निकलकन्यपनिरमाल्य
यल कहोकहाधोराषीयो ॥८॥ दोहा ॥ अग्रजबंधुकुबेरको उ
मयरलयोछिकाइ सोहमपहकरतनबने बेदमृजादनिहार
॥१॥ कबित्त ॥ मधुकैटभमारे हिरनकसिपहत्याहि सबलकोगनेसंघारे जिहितुजसरनिनिसंक बसत
त्रैलचराचर कमलाकुचकुंकमसुगंध बासत बिचित्रबर बलिसर
बसदीनोधरमबस उचरिबचननहीषंकयो सुरपतिसहस्रसोर
हाथहरि ममपितुआगेमंकयो ॥१॥ दोहा ॥ तुमकुसुनोंतुबच
कबलि द्विजहिदहनादीन उरउपजोसातरस रहतब्रह्मपदलीन ॥१॥ प्रगटपराक्रमआपनो सबजानतसंसार चापचढावतहुकुनि
बलि अबकैहैनिरधार ॥२॥ कबिरुबाच ॥ सुनोंजुरावनबानहत
सबनृपतयेसत्रास कन्यात्रासकोगने छुटीजीयतनआस ॥३॥ बा
णबाच ॥ बानकलोदसकंधसों राहसधनुषचढाइ कहतेऔरनु
आइहैं बातबनाइबनाइ ॥४॥ रावनबाच ॥ कापहरोकोजांउकु मे
ध्योसुरराज पहलेकन्यादेषिकु पुनिकेवकहिकाज ॥५॥ बाण
उबाच ॥ बानकलोतबरावनहि यामहकवनसवाद तवमनोरथम
नहरष करतवृथाबकबाद ॥६॥ रावनबाच ॥ बोलिनजानत
बानतू बिधिबिबेककीबात ॥ बाणउआहमहिनकहिआवतनी
या जैसीतोहिसुहात ॥७॥ रावनबाच ॥ करिकुजैसीमेंकही चि
त्तनआवतआन करिहैकोउमेरोकहा सुनियहबातनिदान ॥
॥८॥ आगेहैहयराजने जोकीनीतुममोहि वैसीहीकैहैंत्रवै से
सुधिहैकिधुनाहि ॥ रावनबाच ॥ कबित्त ॥ नृतनाथजुतनृत
सगनबासुकिगनेससंग सुरसरिपावकसूरजससल अदस्तुतबि
नृतिअंग सरबमंगलासहित बासकबिलासबिराजित सुरब

नजंतसमेति सकलसोसानगसाजित लीनोंउगरगिरगेदलैं सोजा
नतसुरनरसकल त्रयलोकबिदितमेरेअतुल बांननजानतबाहुबल
॥१॥ कबिरुबाच॥ दहा॥ तजिबिबादलंकेसतब बिबिधिबिमुषसु
निबानि मारिमरसामनहिमन आंनिछुयेधनुपानि॥१॥ बांण॥ बान
कलेपोलसतिसों तुमबलअतुलितअंग जैसेंकरषफुमुष्टिकर
होइपिनाकनसंग॥ कबिरु॥ जैसेंसतउतबिषयबस जोगीचुते
नचित्त तजतनगोरपिनाकसों रावननयोकुचित्त॥ रावनजो
रनधनुषमहेसकों ऊंतोरोगोलांनि कहीयतबानमहाबली
तुमधोदेषफुआंनि॥ बांनउ॥ बानधनुषसालागये कीयेप्रणा
मप्रयोग मेरेगुरकोचापयह मोहिनछुइबेजोग॥५॥ कबिरु
च॥ नयोषिसानोलंकपति गगनगिरायोहोइ धनुषनटरिहै
गेरतैं कष्टकरफुजिनकोइ॥६॥ सरमासरमीसुनतसो दसमि
रगयोषिसाइ करिबंदनबिसषासनहिं बानगयेसुषपाइ॥७॥
इतिरावनबांनसंबादसंपूर्ण॥ कबिरु॥ धनुषभंजनसंग
दहा॥ जातहीराकसदैतके सबहिनिरष्योकलेस ज्योंरविससिउ
परागतैं उयहोतबिसेस॥१॥ राजाजनकबिदेहतब बंदीजन
निबुलाइ धनुषजग्यपनआपनो तिनहिकहोसमझाइ॥२॥
सुमतिबिमतदोउनाटसुन सुकबिमहमतिसुध राजसभाकेम
ध्यसो गदेआनिप्रबुधा॥३॥ छंदहेप्र षरी॥ सुमतिबिमतितहंतु
जाउगई कलोजनकपननृपनिसुनाई संतुधनुषजोरूपचढावे
सोजससंजुतकन्यापावे॥ दहा॥ पूछतबिमतबिसेषसों सुमतिक
हतसमुझाइ राजनकेबरननसकल सबनिसुनाइसुनाइ॥१॥ बि
रहगोत्रजेजगबिदित देसबंसगुनआम बिक्रमदनजुबीरता
निजभुजदलबलनाम॥२॥ प्रगटसुनतजसआपनो सूरउग्त
सुषपाइ परिकरबांधिलपेटिपट सनमुषहृदमनाइ॥३॥ तमकि
तमकिनृपतिजसों धरतचापकरधाइ नेकनउग्तफुरूमितें फि
रिफिरिबेगतआइ॥४॥ मंचनिबैगिमहीपजे बोलतबचनबिसेष
परसिगिरीसपिनाकजये नरपोरूषनिसेष॥५॥ छंदबेताल॥ त
बसहसदसनरमहानृपति अनषिअगिरकबारही सोरोषअवते
धनुषसाला आनिचापअधारही नहीटरतसंतुपिनाकसों बि
धिलिषतअंकलिलाटके महसतीमननहीचलतइतउत ग
येलपटगटके॥ सुनसंतुकोमनुमदनकेबस नयोनाहिनसुन

नहीं नसमांबिसेषअनंगनोसोई पुनिकुदेहनपावहीं॥अवनीपत्रीहत
नयेउ विउवि दोसउकमनुमानियै बैरागविनुजोविषयरसबस जर
ज्योगीजानिये संन्यासपदजोनेषसाजे सषीसुगधासंग जहाजा
तनहानहायरतमहिमा अंगविवसअनंग उपहासिनाजननयेअ
वनिप चापकेरिगआइ केगनेमुरबीजुकतकरिबो सकेनछिं
कइ पुनिनाटबोलेजनकपनमष सिधपेनहीपाइ चुवचक्रकेअ
वनीपआये नयेनाकसुनाइ सुरनगतिसकतिनकस्योसाधन द
योनहीबरदान पुरुषसेमषसालयेजे फिरेबिनताबांन तुमगरन
हतकिनभयेजननी जनेआलबजाइ वृथाअमतिनकरेजुवति
न बयसरूपबिहाइ बरबिहतबंधाकुछिबिनता आवगस्त
सहोइ ममजनहिपोरुषरुतपुत्रहि अलनजोबनषोइ इत्यादि
बचनप्रहारअसहन करतबदीजनकिते बलछोकिसीसनवाइबेगे
जुरेमषभूपतिजिते जुगउरिधुरतजिपवनजोते धवलबैग्सिधी
र कछुसिधनाहिप्रहारकीने बिगतपोरुषबीर॥ सुमतिबि
च॥ दोहा॥ सुमतिबिमतहसिकेकहो नपतिसुनाइसुनाइ च
पनचढोषरचढे अपुनहिमषआशा॥१॥राजनकीदेषीदसा जन
ककलोसबिषाद देषोमहिमाकालकी मिटिपोरुषमरजाद
॥२॥भूपजितेभूगोलके बलबिधानबलबीर आयेपुरुषजुधनुष
मष ओदिचलेसिरबीर॥३॥ त्रिदसदेषधरिमनुजतन आयेन
पतिअसेष नयेनिरुदिमतेजहत तिनकुनकछुबिसेष॥४॥चापच
ढावनकेगनेसकेनअवनिछिंकाइ नहीउरबीनिरबीरअब
कलोजनकअकुलाइ॥५॥जनकबाच॥कबित्त॥सप्तदीपदिगअं
ब नयोआवनभूपति राक्षसदनुजरिषेस अमरकृतमानवआ
कृत नपबिदेहकेनिका संगजयलानकिनिसम काजसाजकोदेम
अषिलकीनेबलउदिम नहीधस्योनटास्योअवनिते नहीचुदाइ
टकारयो हाहजुकालगतिप्रबलयह चुवमंडलनिरबीरभयो॥
दोहा॥जोजानतनिरबीरचुव तोनकरतपनयेह पावकप्रजलतअ
हसब तबकहापइयतमेह॥१॥ रहीकवारीकेनिका लिषतबि
रचिलिलार पनकीनेजोपरहरो तोउपहासिसंसार॥२॥ जनक
बचनसुनिलषनजहा क्रोधअरुनचषकीन मानुप्रजलतअ
नलमहा नाइअमृतघृतदीन॥ लछमनबाच॥श्रीरामंत्र ति
कबितादिवदेवरयुबीर कलोलछमनतवकिंकर मेरमहीधर

कितकमात्र जीरनपिनाकहर दैआग्यअबिलेस हासबलकौतुकदेष
फु जेअबिरुकहत सारेषासपेषफु आकरषिनवाश्चदाश्बलि नि
हचेऔचिनसाश्फु कहिमुषनजोनऐतीकरों तोनहीबीरकहाश्फु॥
लछमन जनकप्रतिवाक्य॥ दहा॥लछमनसुनिनिरबीरनुव रो
षाहुनकीयनैन जनकहोतरघुरामजहां नाहिउचितयहबैन॥
॥१॥फुरतअधररोमांचतुज लषनरिसोहरूप रामनिवारेसेनक
रि सनयजानिनुदनरूप॥२॥छंद बेताल॥कौसिकबाच॥ सोसमयदे
षिबिसेषिकौसिक हरषउरनसमावही॥हसिकलैमुनिमिथलेस
सों धनुरामदेषोचाहही॥ जनकबाचापुनिदयोउत्तरजनकमुनि
प्रति कालदंडहिकोगने अतिबज्रतेजकठोरसिवधनु अदिमान
सुआपनें पनगसप्रतिमांजिहिप्रतिचा कोनतिहिगोरवकहै त्रै
लोककेसुरअसुरनुवपति देषिहरेउरदहै करिबंदनआदिजु
बिस्वकरमां कोटिमिलिउदिमकरै॥नवनृतनाथसनाथबिनु
सो टक्योषितनेनादरै सबदीपकेअवनीपसुरनर हारिहारिरहेही
ये तिलमात्रपैनहीटस्योतिनपै करनिकरष्योपनकीये मुनित
बेमनहतनंगमिरे राजकंनायोरही॥चितबदीजोअप्रयोगचि
ता कठिनसोनपरैकही मुनिसंगलायेबालकनितुम कीयेम
षजयटेक महिरावरेतपतेजमहिमा कहिनजातअनेक रि
षदेषितपबलजनकहरषत रामबयलषिउरफरै पुनिसंतुच
पसंनारिकरकस पनकठिननहीतजिपरै चितनयोचलदलप
त्रजोचल तदपिमंत्रिबुलाश्के॥नृपकहोमिलिजनजूयआन
फु ईसचापउगाश्के सतयंटहिमयमननिसोना आवरितप
टअंग जयपारसमरअनेकजातें ईसदहनअनंग॥दहा॥कहि
रु॥ पंचसहसनरमिलिप्रबल बिधिआकरषिबिसेष राजस
नामहलेधरे संतुचापसबिसेष॥१॥ बिसवामित्रबिलोकि
बर रामचंद्रनधीर हकुटिभ्रिरेषाफरकिनुज सुनरोमांच
सरीर॥२॥बिस्वामित्रबाच्यश्रीराम प्रति॥ पंथनयानकबनप्रवे
स ताडिकानिपातीय सत्रुसुनुजसेनासमेत छेदोसरछातीय बि
नुफलसरकेपंष बातमारीचहिमास्यो बारिसिंधुकेबीच नीच
सतजोजनमास्यो जिहियनुषकरयेतेबिजय सोदीजेसोमि
त्रकर रघुबीरबीरत्रिभवनबिदित हरषिचदावफुचापहर

॥कबि रुबाच॥ दोहा॥ रघुपति बिसवामित्रके सुनेबचनसप्रसंस।
मनुउदयाचलमंचपर ऊगि दितहरिहंस॥१॥ कटितटबांधेपी
तपट चुजारोमउजार कमनिचलेमृगराजकी कोसलराजकुं
मार॥२॥ देषिसरासनसंतुकौ रामचलेइहिंभांति जोंमृगपतिम
नमोदजुन पाइदुरदमदपांति॥३॥ छंद बेताल॥ पुरलोकतरक
बितरककरिकरि बिबिधिबातबनावही। दैसकंधबानहिंग्रा
दिदैनप गयेहरिसुनावही॥ सीताबाच॥ मनहोतसीताअतिह
बिसमय सनयजांनिसुरेस करकमलकोमलरामके अतिचापक
ठिनचदव॥१॥ रांबीबाच॥ जांनुकीरूपबिलोकिजननी रामबयसनि
हारही लषिकठिनतानवचापकी अकुलतबिदेहबिचारही मुष
सरपजोंग्रहिगयमूसी मनहिसोचसमाज बपुनासनषवषना
सबितजे उनयहेतअकाज अनुचदेधनुसीताअनुदा रहैयहनिरधार
करिनृपहतजोबाकुकीजे सुजसतउनसंसार॥ सषीबाच॥ यहसु
नतकोउसहचरिसयानी नियतउतरदीन रामहिबिलोकतबाल
रानी मननकरकुमलीन मुनिअगसतिसरीरसमता उदधिकतउ
पजपत येकहीअजुलिकरेअचवन जातजग्पबिभात मुरलोकत
मरबिंबप्रतिमां नियतनहिनप्रमांन अतितेजबलअधारअ
तुलित नासहोतनिदान धनुबानकोमलपुहपकेधरि अतनधनी
अक चोभानिबसकीनेचराचर अंगप्रबलअनेक मृगराजनुज
बलगजहिमारत मासरासिनमांनियें मातंगआंकुससमनप्रति
मां बसतथापिबषांनियें मुनिबीजअक्षरमंत्रमहमां बससुरा
सुरबीर देबीनरामहिबिलदेषकु स्वयंजोतिसरीर सषिबचन
सुनिरनिवाससबके बढ्योउरबिस्वास त्रैलोकप्रभुहरिकरकुते
सी अबिलप्रजहिआस॥ कबि रा करबामरामउगरहर को
दंडचाढिकगेर धरिमध्यनाजमुष्टिधारन अरुचितयदुवंश
र करसबिकैजोकरषिकीनो कठिनधनुटंकार सोसुनतस
मानदउर आनंदउपजिअपार॥ दोहा॥ कौतुकमयअहिपतिअ
वनि सावधांनदिगदेव कहिलछमनहरचापकहं सज्जतराम
सनेव॥१॥ तहप्रतिंचाबानजुत करिनिसचयरघुनाथ कंकु
मुषीआकरषिकर देषतसनासनाथ॥२॥ अंबिकरेबिसबास
नहि मंडलकरनसमांन टूटेमध्यमृनालजों जोआयातनयो
न॥ कबित्त॥ सुरसरितासरवरसमुद्र मरयादपमुकीय कं

रहिगजरुगमगीय: कमलनुवधानजुचुकीय: धरनिधुजिधसिगई: प्रव
लपबयबिहारपरि: मिहरवाजिछुरिमग: प्रगटदिगदेवकंपपरि: नागे
ससेसफनमालनमि: कोलकमठकमतजयो: रघुबीरबीरत्रयलोकप
ति: तिहिछिननवधनुतजयो॥३॥नवबिसमतत्रयभुवन: सगनसंकर
समाधिहरि: अष्टकुलाचलबिचल: पनगबधरतकंपपरि: कालरुपर
चंड: पस्योजमरथबिछुटीय: रविससिग्रहरथरुधि: तेजआफालितत
टीय: दिगचक्रोलब्रह्मरुगि: चुवनत्रेयजयजयनयो: दसरथकु
मारसिवचापदलि: नवदुरलनजसलनयो॥४॥लसतिसप्तपाताल
प्रलययनगरजपमुकीय: करतगनबंधान: तानरनादिकचुकीय:
नयेमलीनमरअंध: बिस्नुनिरासुबरजीय: परिमुहनररावनसपाप:
तपपीरबितजीय: दिगबामकुरकिपरसूधरन: महामोदबेदीहिमन:
ककुसथजदिननरहरसुकवि: धरिनजोनृतेसधनु॥५॥सुरसुरसथ
रिसंक: रजनिचरसंकउपजीय: परीतंकआतंक: कंककंटकमनस
जीय: सुषउपजेसजनसमूह: दुजनदुषनारीय: बिकसिजनकसह
बाम: नगरआनंदनिहारीय: मुनिनयेमहाकौसिकमुदित: किनिस
कबिनररूरकरीय: त्रयपुरप्रसिधअवधेससुत: बिजयकथाजगबि
थरीय॥६॥नीमनादधनुतंग: नयोनयनीतउपनीय: तिहिपूरित
दिसिबिदिसि: महाप्रलयाकृतमनीय: अमरबृंदआनंद: इंदक
रिजनयोआगम: बिबुधलोकमंगलबिधान: मान्योनिगमाग
म: सुननरीगगनबरषासुमन: सुरनिसानबजेसयन: कहिज
यतिजयतिरघुनाथकी: कबिनररमिलिमोदमन॥७॥इहा॥उन
यदकअवधेससुत: करिरुस्योकोदंड: मानुपरबतबजहत
नयोमध्यजुगषंड॥८॥छंदपधरी॥सुरलोकबजेदुंदुभिअसेष: बिस
तारनगरबाजितबिसेष: ननभूमिमिलतनीसाननद: सुरनरस
माजजयजयासद: आनंदकुसमबरषाअकास: उछवअनेकअ
मरनिअवास: गंधरबकरहिकिंनरसुगान: तहनचतिबिबिधि
सुररमनितान: गावहिसगीतत्रीयग्रहग्रह: नवनवउछाहसीत
सनेह: अतिहरषजूथजुवतीअपार: दिसिदिसितेआवतराज
दार: हितवंतनारिनरनीरहोर: कहुनगरपंथपावैनकोर:
नृपरमनिउदितआनंदनेह: मानुकृषिसूकतबरषिमेह: बि
नराजहिआपाजनकदीन: पुत्रीपुनीतआनुप्रबीन: दिनसुभ
तबप्रोहितसतानंद: आयेरनिवासहिजुतआनंद: आपाएरसीतहि

दईआइ पुत्रिकाचलफुसुनसमयपाइ गुरबधूअयकीनीसगान पुनिच
लीकवरिसीतप्रमानि आवरितसंगजुवतीअनेक बिथरहि बिनयबानी
बिबेक सोभागवतीआरतीसाज मुकताअबेधकुंकमसमाज दधिदूध
बनेतनिसमेत फेरीपकमंगलकलसहेत सुनगानजुवतिउछवअसे
ष बिसतारहि अमंगलबिसेष इहिनातिकवरिमषथोनआनि पुर
पावलिनैकवलपानि मुनलजासकुचनयनिलतसंग आनंदअंग
उरनवअनंग ॥ सतानंद बाच ॥ इहा ॥ सतानंदबारकसुषद कसोसी
यहिसुनकाल पुत्रीतुममेलफुप्रगट रामकंठजयमाला ॥ सोसुनि
रामसमीपसीय नेहसहतनीयराइ सोभासकुचनिगूढसुष यह
काफुनकहिजाइ ॥ २ ॥ मनुमालानुजमेथली बिहतउमइबिसेस
करतसनालसरोजकरि रविहिअरघराकेस ॥ ३ ॥ सीताजयमाल
समय पत्तिरमेलिसप्रेम सुनलछनरोमांचसंग निरषतछबि
हिसनेम ॥ ४ ॥ देषनकहअकुलातद्रिग अतिहितलजअधीन प
टपरबसजुगजालपरि मानकुतरफतमीन ॥ ५ ॥ मेलीजयमाला
मुदित सीयपीयकेसनेह प्रतिघरघरआनंदपुर हयनिबरषमे
ह ॥ ६ ॥ दुलहनिफूलहरामके लेमेलीजयमाल ऐकहीबेलागोग
यन बाजितबजेबिसाल ॥ ७ ॥ ब्रह्मादिकआनंदबढे धनुषज
यपजयराम मंगलगानबिधानमिलि त्रयपुरधामनिधाम ॥ ७
सषीसिषावतिसीयकहि प्रभुपदपरसकृपानि करनिपसारति
सकुचकछु गोतमत्रीयगतिजानि ॥ ८ ॥ सोरहसिकाफुनसम
हि मनहि रामभुसकात त्रिकालगपतवहेतिहि सतानंद
सकुचात ॥ ९ ॥ सुमनबरषिसुरहीयहरषि बकुरेव्योमबिमान
अपनेलोकप्रति करेप्रवेसप्रमान ॥ ११ ॥ बलनृप बाच ॥ छं
दपधरी ॥ सीयरूपछबिहिनिहारिनृपसब नरमहीमनरिसन
रि उठिसजेअंगसनाहअरुत कोपबिनुअरथहिकरे नृपब
लदेउधरुबलही छीनिकैन्यालीजीयेकोसकेवरि हमजीय
तकवरिहि कहतबिक्रमकीजीयेकहाबासंजीरनतंगकीनें
कोनबीरकहाइहैं तबबदहिछत्रीजनकपुरते जपेसीयलैजा
इहैं कैहैबिदेहसनेहबसजोई इनासिसुनिकीओर मारिहै
बधसहतरनमिलि जपेकरिहैजोर ॥ १ ॥ धर्म ज्ञान पा सोस
यनृपअनीतिसुनिसुनि नृपहितरदीन छत्रीकहाधुम
इबलछबि मननहोतमलीन धिकारतुमहिजुससत्रधारत

दृथागलबजाइ गयेलाजनाकपिनाककेसंग बलबिधानबिहाइ
तिहिसमयकितगईसुरतायह अबजुप्रगटीआनि सुषनयेकोरेरह
ततदृपिन मोनलजामानि जोचहतस्वानअंगलससह मृगराज
बलिबसमोह सबजातिजातिनसंपदासह लहतकोसिवद्रोह
मिलिकरतबाईसजोमनोरथ बेनतेयबिनाग हरिबिमुषजैसेपर
मपदवह नगतिबिनुहतनाग जसलहतजैसेलोनलोसप पति
तमहिमापुंज क्रोमीनलहिअकलेकता गरुवतमुकताएंज सो
मित्ररोषजुप्रलयपावक परिनहोजुपतंग दगधकैहोसकुलदल
हिन त्रिननिकरदवदंग॥१॥ छंद॥ अपनेअपनेजावनजि रूपग
येउगिनोन जगजेतारघुबीरबिनु कैसाब्याहैकोन॥१॥ जलनि
धिसंसयजोनकी मगनहोतमनमारि कल्पलताअवलंबज्यों
पथेरामसुरारि॥२॥ जनकपुरीनरनारिके साधनफलेसुनाइ
जनमदलिद्रीबिकलज्यों प्रगटमहानिधिपाइ॥३॥ इतिश्रीराम
चंद्रमषबिजय अथसिवधनुष प्रसंग॥ कबित्त॥ छंद॥
परमरम्यमिथुलापुरी सबसंसयमिटिसूल बाजित्रगानबिधान
बढि धरयरमंगलमूल॥१॥ बैठेसजनसमाजतहां मुनिवरबि
सवामित्र राजजनकबिदेहतब प्रगटीकथापवित्र॥२॥ जन
कबाच॥ कोसिकसुनियेहेतजिहि रलोचापममग्रेह सोई
अबहतांअतसब कहीयतनिसंदेह॥३॥ परमसाधकेलासप्रभु
एकसमयसुषअंग अग्रनिवेसतरीसके सतीरहीतहासंग॥
॥४॥ छंद पद्धरी॥ वहिसमयसंतुलागीसमाधि एकासनबैठेध्यान
सधि चषमिलतजोगनिद्रासचेत कैगयेबिदेहमनब्रहमहेत
संबतसहस्रगतअसीसात बिस्वेसजुकततपसाबिष्मात सिवछु
टीतहातालीसंतारि जागेसजोगनिद्रानिवारि॥ सतीबाचामनमु
दितसतीकीनेप्रनाम मुषधन्यधन्यकहिधरमधाम॥ जनकब
चा॥ परतहप्रजापतिपदहिपाइ अतिगरबबढ्योउरदहआइ
कतबिहतदहआरंभकीन संतारबिबिधिनिरमतनवीन करिसि
धप्रब्रमषहोमकाज सबबोलिबिनागीसुरसमाज नगुआदिग्र
हमुनिवरसमाज बिसतारजग्यकीनोबिराज तिहिसमयदक्ष
पुत्रीदयाल कैलाससंतुबैठेकृपाल आकासबहतसुररथअ
सेष बिसतरहिगान किंनरबिसेष सुररमनिरचितनारकस
हास आनंदनादडुंदुभिअकास॥ सतीबाचा॥ प्रभुकहोकहाय

हरिप्रसाद: नभमंडलकोलाहलसनाद॥ श्रीसिवबाचा॥ नवकलौफे
रितवसुनकुमार: मषउछवहेतवपितायांम: सुरजातबुलाये मषप्रक
स: संगहोतगगननारकसहास॥ श्रीसिवाउ॥ मोहिकरकुदेवआपाम
हेस: पितुग्रेहजतृकरकुप्रवेस॥ सिव बाच्य हसुनकुसतीकारन
अकाज: हमसमयसचारकसुरसमाज: आगमनदहतहदिकानेउ
गिकस्योसबनिआदरसमांन: पगधारिदहतबतहांप्रमांन: कुभांनुसं
गअनसावधांन: उगिसक्योनहीतिहिअसआप परजस्योचिततातेप्र
जाप: हमसोतिहिकारनरहतहेत: मनमलिनकीनपरिजनसमेत:
अनमोहसागसिधातयेह: अनमित्रनगमननउचि
तआज: कतपितुग्रेहतवकोनकाज: पितमाताजदपिपरमप्रेय: सन
मांनबिनांजैयोनश्रेय: तिहिगोरनन्नगमननजुकततोहि: मनवाच
करमपूछैजुमोहि: हत्रीयाकबकुनहीकरिहेह: कोहिजोकरैउप
देसकोह॥ दहा॥ मोतिबुलाये दहसव: औरसुताजामात तुमरी
बाचेजग्पते तहांकहाअबजात॥ जनकबाचा॥ छंदपुधरी॥ मनबचनज
दपिबरजीमहेस: पतिग्रेहतदपिकीनोप्रवेस: सिवसेवकपग्येसतीसं
ग: अतिसावधानसनाथअंग: अंतहपुरप्रवसीसतीआइ: सबमिली
बिमनदासीसुनाइ: मदादरकीनोपितामात: बसक्रोधकुसलहूछीनब
त॥ बधु बहुनीबाचा॥ जगनीसतकैकहिबधनांम: गंगाधरछांडे
कवनग्राम: हेकुसलदषनबिषसूलसेष: मृगचरमबाघबारनबि
सेष: कनकबनतसममानुषकपाल: करदंडजुलितमंगलकराल
अपतासमिद्धतपिसत्वसाथ: मेषलीकोलिकापंचमाथ: आवरनअंग
कोपीमअंग: अरकतनेत्रअलसालअंग: उनमतबीजनदंगीअहार: वि
षअमलचदावतबारबार: संसारमोहबरजितअसंग: अतिग्रेहदंभ
घूमतअनंग: इहिछबिसोंनायेइहांआज: कीयजुकतहोतहासीअक
ज: सुनितरकहासिजहातहांसनेद: मनसालसतीआरीसवेद: कत
कुंडअनलपरजलितकीन: बिधिजुकतदिअनेनवीन: सवहोतारि
तजसावधांन: गावहिसुनसाषाबेदगांन: अधिकारीमषअहिअमरआ
इ: सबग्रहितनागअपनेसुनाइ: आकृतिदानदीजतअसेष: बिधि
जुकत हवनसुरमुषबिसेष: बिधिकुंडबिबुधसनुबिबुधवृंद: आ
येसकामषहितअनंद: दीजतसबहिनिमषअंसदांन: कुकुकुनो
मसुनियेनकांन: सोअनाचारदेषोअश्रेय: मनसतीक्रोधबढिअ
प्रमेय: रोमांचकंपतननयनरत्त: बेकृतबबदनजीवतबिरत्त: उ
चस्योसतीबसरोषआप: सिवद्रोहीपावकुफलसपाप: धारि

सुतासिषिलेसभान। निहचेयहबरजाच्यो निदान। बरदानयहैमांगतबि
सेष। नरतारहोहिनवनवतवेस। योकहतमात्रअंगअंगकराल। कोपा
नलप्रगटेप्रलयकाल। तजिदेहप्रानकीयगमनताम। नसमोबिसेषरहि
रुद्रनाम। हाहारवतहात्रैलोकहोइ। करयेसहाइकरतारकोइ। कहोजा
हिपुकारहिरमांकंत। त्रातानअवरतुमबिनुअनंत। सिवछुरीजोगनिंद्रा
समाधि। आकारप्रलयजानीउपाधि। यहकहीरुद्रसोगननिआइ। प्रनुज
रीसतीअतिदुषपाइ। कबिरु। नतेसनयेतबप्रलयनाइ। नुवकरषिजय
परकीसुनाइ। नयोजराजनमतवबीरनद्र। अतिहीअसाधअमरनिअन
द्र। अनेकबीरसेनाअसंत। अतिकोपचल्योजनुकलपअंत। बिध्वंसज
गपतिहिकरेबीर। सिरछेदनिनकीनोसरीर। सुरनिकरमारिकीनोसंघा
र। नाजोसुरेसतजिराजनार। सबरितजहोताकरेसोध। कतनासआ
हिहुयुअतिहिक्रोध। ईसबिनुसुरनियहिजग्यअंस। तेमारिबीरकीनेबि
धंस। हिजदीनोनवबिनुहोमदान। निसंकबीरतेहतिनिदान। ब्रह्मरुद्र
लिचलिप्रलयबाइ। इंद्रादिअमरबिधिलोकआइ। कीनीपुकारसिवग
नप्रकास। निरयारहोततवआइनास। कतकोपबीरमषनासकीन। ल
हिहतनागसबमारिलीन। करियेप्रसातबिधिरुद्रकोप। प्रनुहोप्रबे
दमरजादलोप॥ इंद्रादिबाच॥ इंद्रादिब्रह्मकैलासआइ। सिवअग्रदुष
बरमोसुनाइ॥ रुद्र बाच॥ सुनिब्रह्मसतुतिचितासुरेस। सुप्रसनद
ईआग्यामहेस। बिधिजाइजिवावकुबिबुधवृंद। अधिकारदेकुदहु
हिअनंद। नवकमलआइतवदहलोक। संग्रामदेबिउरबढ्योसोक
पलचरनिदहुसुरमृतकपाइ। षनिसीससबनिकेगयोषाइ। कोंज
यहिबिनामसतककबंध। सिरगयेदेहकुगेसबंध॥ जनकबाच॥
अबुजनवतहाअकुकमलआनि। जोयोसकलेवरदहुजानि। कर
परसब्रह्मतवमृतककाइ। जगबिदितदहुलीनेजिवाइ। पुनिबिति
यअजोमुषनामपाइ। सुसथानदहुबेगसुनाइ। अनेकजंतसिरग्येवे
र। नयुआहिहेयबिजजीयेओर। उतमंगआनअरुआनअंग। सुरजी
येबिलछनबिदनसंग। क्रोधबससंतुकीनोअकाज। मारेजुस्वसरसा
लकसमाज। नयुआदिकरेहोतानिनेग। संयारदेवनयोदहुसंग॥
कतनिरककारिजबिवसक्रोध। पुनिनोदयालउपजोप्रबोध। उपजी
गलानिउरसनुआनि। हास्योपिनाकयहिप्रबलपानि। नयोदेवरातअ
ष्टमबिदेह। तिहिसमयपस्योधनुतासग्रेह॥ सिव बाच॥ सिवक
लोचापराधकुसंतारि। हैन्यासनतमेरोनिहारि॥ जनकबाच॥ ब
ऊकालनयेइहिंबितीत। प्रनुनयोसकतधनुमषपुनीत। कार

नपिनाकआगमनकाज॰ रिषिकौसिकसोंकहिजनकराज॥ इति सही
हह हह जग बिधं सन जन कबाचा॥ ६॥ कौसिककारनधनुषकौ
आपु बसुन्यौंअसेष॰ अबसीताउतपत्तिसुत॰ बरनतहौंसबिसेष॰
येकसमयहमजग्यथल॰ सुधकरतसबगम॰ हलसीताकेअग्रतें॰ निक
स्योकुंअसकास॥॥१॥ तामहपाईपुत्रिका॰ पूरनअंगअबीन॰ तातेसी
तानामतिहि॰ द्विजनिबिचारिसुदीन॥३॥ कंसाप्रजतधनुषकहे॰ अ
हप्रतिधरतउगाह॰ कारनतिहिहृतधनुषकौ॰ हमलीनौंरिषराइ॥४॥ बरनी
तिबरद्विगुनबल॰ तबहिसबधसमान॰ कीनौंपनहमधनुषकौ॰ कवर
प्रमानसुकीन॥५॥ अनुरावरेप्रसादमम॰ पनपूरनतापाइ॰ जनककले
मुनिकौसिकहि॰ बचनबिनीतबनाइ॥६॥ धनुषभंगकृतमषजयौ॥
सीताबरीसुनाइ॰ रामबरजयबंधकी॰ लेकुबुरातबुलाइ॥७॥ सीयस्वयंब
रसफलतौ॰ कुवकृतकृतरिषीस॰ अबजोआप्यौहोइप्रभु॰ सोईप्रभा
नममसीस॥॥८॥ बिस्वामित्र बाच॥ बिसवामित्रपवित्रमुनि॰ आ
ग्यादीनीयेकु॰ चास्यौसुतअवधेसके॰ ब्याहकुजनकबिदेह॥ जन
कबाचाकौसिकबिसवामित्रकौ॰ कीनौबचनप्रमान॰ सबैकवरद
सरथसहत॰ मौंतिबुलावकुजान॥१॥ त्रिकालग्यदेवग्यतब॰ बे
लेबिप्रबिदेह॰ सुनकारकपंचागसुध॰ दिअलग्नलिषिदेकु॥
॥२॥ पठये दूतजुअवधिपुर॰ महीपालमिथलेस॰ सुनहिनचारिबरात
सजि॰ अवकुअवधिनरेस॥४॥ बिस्वामित्रहिआदिदे॰ प्रोहितगुरसप्र
बीन॰ बिबिधिपुरानिबेदमंत॰ दिअलग्नलषिदीन॥५॥ कबित्त॥
बासुरनाजेअतिसजव॰ पुरबिहृतसुषपाइ॰ कुसलपत्रअरयुबीरकौ
दयौबसिष्टहिआइ॥६॥ सियजोगअनिजितसहत॰ बहतकृतौतिहि
बार॰ तीनकालदरसीतबे॰ कस्योबसिष्टबिचार॥७॥ पत्रलगनदस
रथनृपति॰ लौटीनेगुरराज॰ रामचंद्रलछमनकुसले॰ सुनतफलेम
नकाज॥८॥ तबनरेससोपत्रले॰ बेगगयेरनिवास॰ पटरानीक
वरनिकुसल॰ पूछतप्रेमप्रकास॥ कोसल्यादि करां नीबाचा॥
कबिता॥ काकपहधरकवर॰ करमकीडाधनुसाइक॰ बेबाल्क
राहसबलिष्ट॰ लरिबेनहीलाइक॰ मुनिवरबिसवामित्र॰ नप
हिनाचंपाकीनी॰ बचनसुरबरसरवंस॰ कहिनाहिनकीनी॰
लाठलेरामलरकालषन॰ बिछुरेजबहिअदिष्टबस॰ निकसेनप्रा
नतिहिछिननिलज॰ तौअबकौंप्रतीतबस॥ राजपत्रीअव लो
कनें॥ स्वसतिश्रीदसरथनरेस॰ अवधेसबीरबर॰ हसबंसअवत
सजोग्य॰ सुनपत्रप्रेमपर॰ लिषतजनकमिथलेस॰ सहतबंधवकु

सलीसब: कोसरिसकुलकुसल: अखिलराघरीचहत्रब: हितदीनीपु
त्रीचारिहम: करुआकुचास्योंकवर: सजिकैबरातचतुरंगसजि: पावय
रुममसीसपरा॥२॥ सुनतपत्रसबत्रीयअसेष: आनंदउपजीय: जो
सकतधरधान: गहरबरमोअनगजीय: बसपीयासचाविगबि
लाप: मिलिस्वातिनीरसुष: जनमदरिद्रीमनकु: संगनद्वनिधि
लहेसुष: परजरतनगरश्रीषमप्रगट: घोरियोरिबरषतसघन
कहिनृपतिरामलछमनकुसल: मिलिमातोआनंदमन॥कबित
॥ दुहा॥राजद्वारअरुनगरते: दूतनिपायेरान: धातबसत्रमनिगन
बिबिधि: मनबंछितसनमान॥१॥कुसलपत्रयुबीरकी: सबहीत्री
थनिसुनाइ: पुनिबाहरिआयेनृपति: बेगेसजाबनाइ॥२॥छंदपध
री॥आयेबसिष्टकुलपूजिगौर: थितजयेजथाक्रमगोरगौर: व
ऊबंधआइबिरदैतबीर: सुनसनामअबेगेसधीर: मंत्रीयिक
रआयेसुमंत: सोसचिवस्वामिहितपरमसंत: अरुचतुरअंग
रदकअनेक: बापारजुकतबिनयबिबेक: नृपमानिमह
जनपुरनिवास: प्रजबरनबरनआयेप्रकास: तबबोलिसन
नृपजनकदूत: पूछतसप्रेमकुसलातपूत: आनंदबचनसुनिसु
निअपार: बिधिपूछनलगेबारबार: अवलोकिरहतजनदूतओर
चाहतसकोमजोसासिचकोर: आनंदनगरधरयरअनेक: बाजित्र
गीतमंगलबिबेक॥मंत्रीबाच॥राजासोबिनयोमंत्रिराज: करि
येप्रभुआपागमनकाज॥राजोबाच॥महिपालदयोआइससुमं
त: तुमसाधकुसबदिगबिजयतंत: प्रारंभउचितकरियेप्रमान
नहिकालबिपरजयबिधिनिदान: जिहिजोगपजथाक्रमजो
नजंत: तिहिदेकुउचितमंत्रीतुरंत: सिवकागजहयरथसहतसा
ज: करिबिनयदेकुबाहनसकाज: आवरनपटबकुमुल्लिओप: गु
तअलंकारमनिरतनजोप: आमोदबिबिधिसोगधअंग: सनाथ
ससत्रअसत्रानिसंग: सबराजसाजनिकरीसुसाइ: पूरनजहार
बिसतारपाइ: मिलिसकटभारबाहकअमेय: गजकरतह
षतबामीसबेय: नरिकिनकरिब्मकोटिनभार: तहाकुपक
संभारहततार: कोसेयरोमकृतसत्रसार: नरिबिबिधरंगब
सत्रनिसंतार: नरियतअनेकसोगधतेद: आयुधछतीसज
सनअनेद: रसवतीनिपुनजेराजरीति: नगारजदलादीअनी

तः नरिनहराज चोजनसुनाइ बरनेसकैनसंभावनाइ लेकनककल
सनिकसिकहार परषहिजुनीरस्वादनिश्कार कोगनेबुसतनृपग्रेह
काज सबकोसकोसरहकसमाज ॥ छंद बेताला। सुनसाजबाज
समाजसोभा राजद्वारबिराजही नगकनकजटितजरावजीननि
भांतिभांतिनभ्राजही॥ जरतारबसत्रसुजीनसंजुत पाटदोरिग्रमो
नियै सबतुरंगदेससुषेत्रसंनव जातिग्रनग्रनजानियै सुषबाग
सचिनटतनाचे गवनपवननिसमगिनै तिरछीजुतरकनितडित
करकनि सबहीग्रंगसुहावनै प्रतिरंगरंगपवंगपाटजु ग्रंगग्रंगउ
तंगये ग्रारोहस्वामिकग्रग्रगामीय चालतेजनसुचंगये ग्रारूढग्रे
पतसुनटसामंत ससत्रग्रसत्रसपूरये बरबीरधीरजुबीरबिद्या
सचबाचासूरये गजपुंजगाजतसघनलाजत छरितछाकेछ
रहरे मदग्रंधमातेधापधाते जलदमानुजलनरे सिंदूरबिथुरेग्र
रुनसिरपर सेतचामरसोभये मदलेषग्रसितकपोलमंडित भ्र
मरसोरंतलोभये बनिदंतउजलकनकबंगरी जरीतगमनिजो
पये ग्रारकतपीतग्रनेकग्राकृत पताकाध्वजग्रोपये मदगंधमेग
लसतनिग्रषल लोहलंगरलगये दलग्रग्रदंतीयप्रबलपंतीय
बहुतमगग्रमगये मिलिज्वलितमंगल बरषिचंचल भ्रमतयोउ
पमानतनी घनघटाकारीमध्यचकुयो रमकिमानुदामनी सजि
सुनगसिंदूनसाजसंजुत बने बिबिधिबिछावने परदापसारेपाट
पटमय सुरंगरंगसुहावने प्रतिरथनिकलसपताकध्वजप्रति फ
बतिनभ्रहावही॥ जुतद्विरदहयबरवृषभजोते धरासजवि
नधावही कृतकनककिंकनिसुनगधुनिसुनि मुनिसुरनिमनमो
हये समचलतजलथलग्रतरिषकु सबहीभांतिनसोहये मि
वकासुषासनजातिग्रनग्रन सयनसेजसुहावनी पटरोमबस
त्रसुरंगलपटी रूपसुषसुनावनी ॥ छंदपधरी॥ गजहयर
थपयदलमिलिग्रगोन निरयातगगनवजेनिसोन कुलदेवदेवि
पूजासकीन द्विजग्रचनकरिगोरोनदीन द्विजगुरवसिष्टग्रसुवाम
देव जाबालिरुकात्यायनग्रजेव दीरघयुमारकेयद्विजात पु
निबिस्वबदिकसिपबिष्मात मिलिसुकबिसियिचारनसमान
बंदिबदिसूतमागधसुजान ॥ दहा॥ चदेवसिष्टसुनिष्टम
ति रथजुग्रयगुरराज दिब्ररथहिदसरथनृपति
ससुनसाज॥१॥ छंदपधरी॥ इत्या

आरोहरथनिबनिऐकऐक: सहतरतसत्रघनछत्रसाज: नयेरथारूढ
राजाधिराज: निरघोषगगनदुंदुभिनिनाद: बिसतारबिबुधजयज
यतिबाद॥१॥ दोहा॥ जालगवाषनिजुवतिजन: गावहिमंगलगीत
देषिबरातजुग्रमितदल: बरषहिपुहपसप्रीत॥१॥ छंदउथोरा॥
सुनसगुनहोतसकाम: मिलिब्याकुलहराम: समकलसजुवतिन
सेग। अरुलयेपुत्रउछंग: सितसुरतिसमुषसबछ। पयपानदेतअ
तछ: मिलिपूरिदधिघटमीन: करउरथमृगजकीन: द्विजदेस
पुसतकदेषि: बिसतारसुनसुबिसेषि लेनहुचाषसलील: सुन
दिसाअरुसुसील: कृतसबदृढनकाग: नयेनकुलदरससनाग
तहालेवअरुसुषेत: दिसिदरसपुनिपुनिदेत: मिलिदाहिनेमृगम
ल: समअंगअरुसुदाल: बेमंकरीसुनथान: तरुसिषरबोलिबिध
न: बरसबदसोमाबोम: तरहरितबेरीताम: उग्रिपवनत्रिबिधि
अनंद: सोगंधसीतसमंद॥ दोहा॥ जथामनोरथसगुनसुन: न
येअषिलनुवपाल: सेषनगारेसयनसे: बाजतचलेबिसाल॥१॥
बिधिहरिहरगौरीसंगुर: महागनेसमनाइ: बनीजानरघुबीरकी: कापह
बरनीजाइ॥२॥ छंदपधरी॥ सुनदिवससगुनदिगबिजयसाधि: आनं
दसमूहबरजितउपाधि: चतुरंगचमूसजिजानचारि: संक्रमीयचारि
मगहबिचारि॥ छंद बेताला॥ गजअस्वकरतनिलदअगनित ब
जतमंगलबाजने: सहनाइतेरीयसमरअंग: झांझिझिमकोगने: पं
चसबदतालमृदंगपूरन: बांसतेत्रीयबजये: गंधरबकिंनरगुनीगं
ननि: सकलमंगलसजये: नीसानधुनिगजयरागरजनि: बिजयच
ढदलबजये: तिहिपूरिजरिनअंतरायल: जनुघनघनगजये: नि
रघातकेजुतसबदनिसचल: चमूचतुरंगनिचली: पातालपरबत
मालपृथी: अषुआसाआकुली॥ दोहा॥ गरजगयेदुनिसानधुनि॥
हयहेषारवहोइ: बातपरीआपनी: कहीनसमरुतकोइ॥१॥ सुरउइ
जिनीसानसद: बजतबारहीबार: बरषिसुमनहरषतबिबुध॥
इंद्रउछाहअपार॥२॥ सेतबधायेसरितसब: बासबासंसुषसूर
करिरषेसंजुतसकल: असनआदिआनंद॥३॥ कुलमंडनरघुरा
की: जहाजहाबसहिबरात: तहतहासबसंपदा: धरीबिदेहबि
ष्यात॥४॥ छंदपधरी॥ संक्रमिप्रयानदिनचारिसेन: सुनसोम

सुनसीमअरमिथलसुपेन: इकगीबरातसबनईआइ:तहसुनइबीरअ
पनेसुनाइ: हेरेजुबधउवासमयदेषि बेगजुतमिलेजनकहिंबिसेषि
देइतबधाईषाइदान- अनुनिकरजानआरीप्रमान: सब्रकमोजनकच
तुरंगसाजि: बसप्रेमसमुहेजयतिबाजि अतिबेगनृपतिकुषअअगनि
परसपरनेहिप्रीतमप्रमानि: मिलिउभयराजसमधीसमाह: रसबि
नयकरेपुनिरथारोह: नवनेहसहतहबहलनरेस: पुरकरेमध्यमि
थुलाप्रवेस: मिलिआयेजनवासेमहीप: दासीनिसजेआरतीदीप
उछाहकलसआयेअनेक: बिनतसगानमंगलबिबेक: दिब्यासन
दसरथबैठिदेव: सजिहेमछत्रचामरसनेव॥ बिसा मित्र बाच॥
जनकप्रति॥कबित॥ बिसवामित्रबिदेह राजसोकहोबिचारि
य: जथाबंसबिबहार: करहुसबबिधिसुषकारिय: बेदबिदितअ
चार: बूझिगुरमंत्रबुधिबर: मंगलगानबिधान कलसतोरनउछ
वकरि सबबोलिसचिवसेवकसहत देवसुआपादीजीये जिहि
होइनहिनकालातक्रम काजबिलंबनकीजीये॥१॥ इतिश्रीराम
चंद्रबरातराजादसरथमिथलाआगमनं॥ कबिस्नाच॥
दूहा॥ रामलषनदसरथदरस देषनकहंअकुलाहि बडीसमु
द्रहा॥ रामलषनदसरथदरस देषनकहंअकुलाहि बडीसमु
क्रिअप्रेमबस: प्रगटकहिनगुरपाहि॥१॥ रिषिबरबिनयबिबेक
लछि: पाचोसुषसुग्यान: पुत्रचलहुअवधेसपह: मिलियेजुतसनमान
॥२॥ आयेबिसवामित्रतब: जनवासेसुषपाइ: सुनतसात्रदसरथस
सुत: आपनसनमुषआइ॥३॥ बिसवामित्रहिसमुहे आयेअवधि
नुवाल थाहतेसुषसिंधुमनु: लीयेसंगदेउबाल॥४॥छंदप
धरी॥पाउधारितहकोसिकपुनीत: अगेसुरामसानुजअनीत
अवधेसरिषहिसमुहेआइ: कीनेप्रनामदहुवतपाइ: पितचरनलगे
रघवप्रकास: उरलाइलयेसानुजसहास: अवधेसरामलयेकवल
इ: सबसेसरीरमनुप्रानपाइ: पुनिरामबसिष्टहिलगेपाइ: लीने
आसिषदेउरलगाइ: तहारामहिरनेरेनरतात: सुषसागरनो
हिनउरसमात: बिधिजुकतपरसपरमिलेबीर: सबजीवएकअ
रचवसरीर: सानुजरघुबीरहिमिलेसाथ: हितमनहुमहानि
धिचरीहाथ: सुतसनोबैठिसानुजसमाज: रिषराजसहतरा
जाधिराज॥ दूहा॥ सुतमिलिदसरथजिहिसमय बढिसुषसि
धुसमाइ: उपजेआनंदकालइहि: जोकोहुनकहिजाइ॥१॥

[illegible] सिकपुनीत: श्रीरामसानुजश्रीत
श्रवधेस [illegible] कीनेप्रनामहरुबतपाइ: पितचरनलगे
राघव [illegible] सिकबसतुसाजि: बिहसतबितानन
सानबाजि: [illegible] जुवतिबृंद उरबदसकलजाचुकअ
नंद: [illegible] नरेस: समतानल हतसंपतिसुरस
मिलिसुतनमहतपकायप्रनाम: दीयसुतानंदआसीसतोम
सत नंदु [illegible] मागसिरलगनलेष: गोधूलसमयहि
मरितुबिसेषि [illegible] हरबेताल। सुभसमयसरबकलसानसजु
त निकरआरतरस: गुरसहतअहबिदेहकै: अवकरुपुनिप्र
वेस: कुलकरसबिधिबिहरकरिकरि गुरबसिष्ठहिअग्रकै: सु
तबंधसजनसचिवसेवक साथसंगसमग्रकै। हथहिरदहयस
मसजराजित वीरबहुआरुहबनै। तहबाजिघोरिनिसानजित
तित धनयुमरसानकुयनै: सुषदेषिसंपतिनागपसोता अमरपति
अवधेसकै: सुषसमसमषबिसेषमहिमा समनकोऊकहिसकै
सबछयोगगनअद्भुतअनगन: बिबुधसिद्धनबनिरहे सुरमनि
नरकहतकतहुत जाहिकबिकापहकहै: भुवनपतिसंपतिद
षिदेषिसु अमरआनंदितभये: रचनाअलोकिकरी तिराजसब
रबारहिवरणय: पुरजुवतिजालसुजलगवषनि: सुषबरातस
पेषये: निजनागरामबिलोकिरूपहि लाजजनमसुलेषये:
रहिसमयअवधिनरसआवन भयेग्रहबिदेहकै: सुषदेषिस
पतिजनकसोता: नियतहरषेनेहकै: नृपद्वारतोरनरचितनिस
चल बिबिधिउरधविसेसये: सोबंदनाकरिरामसनुज प्रगर
मध्यप्रवेसये: तहकलससनसुषआनितरनी बनीसुंदरबृंद
आरोपितिहिंकनकआसन बैठिबरजगबंद ॥ दहा॥ पेषि
दुलहप्रेमपर: अग्रसुवासनआनि: तछनकोसुषसुरसुगन: बि
धिकुनकहतबषानि॥१॥ जुगमनरेसुरबधुजुत: मिलेसहतउ
नमाद: जैसेजलनिधिबिमलजल: मिलितपमुकिमजाद
छंद बेताल॥ सुषरामचंद्रबिलोकिसबहिन अमितउरआन
दभये: सारंगकरसुस्यामतातन बसनतडितबिराजये: बि
धुबदनदिनकरतेजबिचित नैनजलजसुहावनै॥ आजानब

कसियकरितर बिपुलछबिअलबने बपुबाहुउचितरचि बिभूषन
बसनदिब्यबसेभये बनिमोरनगमनि कनकबिरचित अमितछ
बिअवरेभये॥ इंद्र बाच॥ कबित॥ रामचंद्रनवचंद्रदेषि इंद्रहि
नंदनय सहसबिलोचनसफलजानि मनमानिब्रह्ममय दुस
हगोतमश्राप आपचितयोजुअनुग्रह महाग्रहित हितमानि अ
मरप्रतिकसोरहसियरु कृतकामबिवसनिदृतकस्यो बिजसु
धनिममआपदीय यहसमयदेषिअवधेससुत लोचनछनजुगल
नलीय॥ कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥ सुनरबितपट्टमंडपसथान
अति हीउतंगलगिआसमान कृतकाचलिप्तअंगनअनूप अनेक
रंगअनेकरूप अथउदेकनकघटपंतिओप जुतहरितबांसअ
वलंबजोप कनकमयकदलिरचिकाचरंग फलपत्रजुकतअ
पतउतंग रुकममयरचितजहाबृछराजि बिथिअंगरंगमीनांबि
राजि बचपल्लवमंजरपुहुपभास बषिसुषदबिबिधिकृतमसु
बास अनेकरतनमयफलअनूप राजतप्रमानजिहिरंगरूप करि
मोतिनकेतरुगुछकीन नहीचीन्हिपरतरचनानवीन जुतमानर
गजिहिरेरजोग प्रतिमासुबृछकृतमप्रयोग सोधरकलसस्वस
थानसंग जुतपनबाटिकामनुअनेग जुततरुतरुबिबिधिबिहंग
जाति बसबातजोगकुंजतसुजाति बंदनसुमालयहयहबिराजि
रतिकामबागमनुलताराजि कनकमयथंभतोरनजुकीन निर
मितमयूरतहतहानवीन बनिकलसपताकाध्वजअवास उत
गअषिलचुंबितअकास प्रतिद्वारबंधितोरनप्रसिध सोदेषिबि
मोहतअमरसिध जोतिमयरतनदीपकसजोइ हसतमनुधाम
परकासहोइ बेदिकारचितमंगलबिधान पुरयेसचोकमुकतास
मान कुंकमसुरंगजुतअषितकीन परज्वालिधरेदीपकप्रबीन॥
धरिरंगपटआसनसुधारि चहुओरखनीचोरीसुचारि प्रतिचोरीसुर
मंगलप्रवेस रिजतहकीनेगुरिषेस सोभगवतीअंगारसाजि
बिधिजुकतहजुवतीबिराजि॥ दहा॥तबपलथलमंगलउचित
बारोगीबिबहार करिचोरीपरवेसकीय चास्योराजकुमार॥१॥प
रेपरमयपांवडे नेगीआयेलेन बरकन्याचिरजीवने लगेअसीसनि
दैन॥२॥चोरीप्रचे सा॥ बेगेमंडपमोडबनि चास्योदुलहआनि
होनलगेबेदनिबिहत जथाजोगकृतजानि॥३॥उचैनरेससबंध
दहा अद्भुतमंडपआर दिषीयमानकुरंदहे सुरसमाजसम

दोहा॥ छंद पधरी॥ सुनयरितहेमआसनसुरंग॥ अनमोलिजरितन
अंगअंग॥ निजबेंगितहादसरथनेरेस॥ सजिसीसछत्रचामरसुदेस॥ बि
भातबीरतनहंसबंस॥ आवरितबंसछत्रावतंस॥ अपतसबंधतहाज
नकआप॥ प्रतिआसनबेठेजुतप्रताप॥ आराधसिधपरसिधआनि॥
बिद्याधरचरनबिदुषबानि॥ अधिकारीमागधसूतआए॥ सबक
बितबंदीजनसुनाए॥ जाबालिअत्रिगोतमद्विजात॥ तहाजरमनक
सिपबिष्यात॥ इत्यादिमुनिरिषिबरअनंत॥ महिमासुकरमअतुलि
तमहंत॥ दोहा॥ कुलपूजितरघुबंसके॥ तहबसिष्टरिषराज॥ बाम
देवमिलिआइके॥ करतजथाकमकाज॥१॥ बंदितबंसबिदेहके
सतानंदसबिसेष॥ बेदप्रनीतबिबाहबिधि॥ आश्रितकाजअसेष
॥२॥ करतसमृथजुआष्टिकहं॥ मुनिबरबिसवामित्र॥ अधिकतेज
तपसाअतुल॥ तिनकेअमितचरित्र॥३॥ छंद पधरी॥ कीनेबसिष्टआ
रंभकाज॥ बिसतारअनलबेदीबिराज॥ ऐसमधिउचितआकृतिदी
न॥ कतबेदबिहितआरंभकीन॥ छंद उधोर॥ सबरिषनिपूजिसने
ह॥ बिधिजुकतराजबिदेह॥ पुनिबामदेवबसिष्ट॥ परिपारपूजिप्रति
ष्ट॥ देबसनभूषनदीन॥ सबजातिकृतसनमान॥ अरचेसुअवधिन
रेस॥ सोगंधइब्मसुदेस॥ सबहंसबंसीसाथ॥ तिनपूजिजोरेहाथ
॥ बिप्रबेष ब्रह्म मादिकआगमनो॥ दोहा॥ बिधिहरिहरदिगन
थसब॥ दिब्यप्रभावदिनेस॥ आयेआइउछाहबस॥ साजिकपरद्वि
जबेस॥१॥ संपतिसोभासुषसमय॥ देषिबिबिधिबिबहार॥ मंग
पबेदेसिकमिसहि॥ आइबिधिअनिवार॥२॥ आरअपूरबदिज
तिनहि॥ आसनउचितबनाए॥ पूजाअरचाप्रेमपर॥ करीबिदेहबिन
ए॥३॥ रामचंदजानेरहासि॥ देवकपटद्विजदेह॥ कीनीपूजामानसि
क॥ समयबिचारिसनेह॥४॥ पहचानतअपनेनपर॥ सबनयबि
वससनेह॥ रामसरूपपीयूषरस॥ देषतभूलदेह॥५॥ छंद बेताल॥
बसिष्टोबाच॥ सुनसमयकतोबसिष्टरिषबर॥ सतानंदहिप्रेम
सो॥ करिबसनभूषनजुकतकंन्या॥ सबलिआनऋषिमसो॥ अध
ब्रह्म मागीआदि देव सत्रीआगमनो॥ कबिरुबिधिबिस्व
रुहिआदिदेसब॥ बिबुधबिनतातनबनी॥ तिहिसमयअंतहपुर
प्रवेसित॥ कपटबेषसुकारनी॥ छबिरामदुलहदुलहनीसीय॥ मा
ऊदेषनभाकुली॥ कतकपटरूपअनूपकामनि॥ मांऊरनिवासहि

मिली: इहिवीचगुररनिवासअंतर: सताभेंसुआइ: विधिसहतलगनवि
सेषवेला: कहीसबनिसुनाइ: तहासुनतरानीविप्रबानी: सुषनचित्त
समावहीं॥ बरबिप्रत्रीयकुलबधूदृधा: अतिप्रफुलितआवहीं॥ नृपन
रिकरिकुलरीतिनेगम: बिहतकरमबिसेषये: इहिसमयबिय
जोपुनिआश्रित: लहआइकलेषये: ॥ छंदपधरी॥ सजिमंडन
दिषोइससिंगार: बिधुबदनबिलोकतबारबार: लषिसोनाजन
नीलोनलेति: नोछावरिदीनबधूनिदेत: निमिबंसनिमंत्रतिसुष
नारि: अवलोकिसीयहिजलपीयतवारि: नृपरानीदीयआग्पास
नेम: पथरावकुहलहनिसहतप्रेम: गुरबधूसमंगलगानगीत: प
धराइसीयहिमंडपसप्रीति आवरितमानजुबतीअनेक: बिचित्र
लीकवरिगजगति बिबेक: निरषनमुषमिलिचलिअमरनारि
कृतकपटरूपत्रीयमोहकारि: इहिंतातिकवरिमंडपहिआइ: स
मजुवतिवृंदमंगलसुनाइ: तहप्रेमजुकतकंन्यापुनीत: संग
रामचंद्रबेगरिसीत॥ दहा॥ सुतासीलधनुजनककी: सीयआ
जोनिजजानि: नईउरमिलाओरसी: बिस्वबिदतसुतबानि॥१॥
कुलीकुसध्वजनातके: द्वेपुत्रिकासुदेस: महासुलछनांमांडवी
श्रुतिकीरतिसमबेस॥२॥ सीतारामसमरपिता: साधउरमिल
सेष: तरतमांडवीरिपुयनहि: श्रुतिकीरतिसबिसेष॥३॥तब
बेगरेकमजुकत: बरकंन्यागुरबाम: तहाबसिष्टसुनिष्टमति
करतनयेसुनकाम॥४॥छंदपधरी॥ तहप्रथमसबिधिपाव
कपुजार: गुरदुकुदिसकेधुनिबेदगाइ: सुरपूजिसबेगोरीग
नेस: आचारहोनलागेअसेस: आएजुदेहधरिबिप्रबेद: आन
दपूरतसाषाअषेद: मुधुपुरुकआदिमंगलसमूल: कृतहोनल
गेसबसानकूल॥ दहा॥ राजजनकपटरागनी: मिलिपुरजुव
तिसमाज: आईमंडपमांझतब: कतसमीपसकाज॥१॥जोरि
गांठिराजाजनक: पटरानीसपुनीत: जोहिमगिरमेनावती
कुरबाकुरसरीति॥२॥ बामअंगबिनतावनी: दहनराजबि
देह: निकटबेदिकाआइनिज: दंपतिसहतसनेह॥३॥छं
दद्वैअषरी॥ कोपरकनकअलेधरयो:

मनिजरयो: कनककुंभजलजनकमगये: सुविसुगंधवकुबिधिनवनो
श्रीरामच रनोदिक महिमो॥ रामचरनकरजनकपषारे: जेसरवि
तेकरउरधारे: तेपरमतत्वरंगपुनीता: बिबुधबिदितवयताकबिनी
ता: जिहिरजपरसतगोतमनारी: सिलतनतजिसदगतिहिसिधारी
जिनकेपदनखसुरिजोगी: बिषयबियोगीसाधसंजोगी: नखरु
चिपदनषहिप्रकरा: तिहिगंगसुरसरिताअवतरा: जेकुलजेससेस
सिरसोभित: लोकसकेलिलितिमनरोभित: तेकमलकुचकुंकुमम
डित: बंदितसुरनरपपेबिबंदित: जेपदबिधिबिसेषउरधारे: परम
मनोहरदेहपषारे: पदोदिकजेसुरनिपीयारे: जनकसबामसीस
धारे॥ ६॥ जनकसयेकुतकुतजहा: रामचरनजलसीसधा
रतभरसेसुरसुखमन: दीनीरिषनिग्रसीसा॥ ५॥ जलकरअंजुलिरमनि
जुत: जनकअकुलजोग: सीतारामसमर्पित: पूरनमंत्रप्रयोग॥
॥ ४॥ चरनपषारेबरनिके: कृतकंनसिकल्प: दीनीबिधिजुतसुख
स्विस: बिगतअनेकबिकल्प॥ ३॥ करबरनीसिरमौरमनि: मनिमुक
तानयमोनि: जोनुकोलजगतकी: एकैनरजरईनि॥ ४॥ करकंनजु
तबेदबिधि: करकरअंनजुकीन: उभयउतरीयअंगरतहा: द्विजनि
धिसुखदीन॥ ५॥ छंदचौपाई॥ अतिअंहार तिबेनुपरहा: रोरिर
गसुरगये: तिनमध्यनिरषतराजरवनी: अतिहीअमुदितअंगरे: सो
नगवतीजुवतिअतिसुष: गीतसंगलगान: द्विगदिग्धुतहीसकल
द्विजोसत: जातमीनसुजान: अरुजलरंधुतिरनिकोवत: गोषगो
षतिगाह: प्रतिसबदमिलिकेंकारयुमरत: सोयसोयसुतार: हिसि
हिसिनिसंकुलजूथसासनि: नवउछाहनिहारही॥ सुषगानमं
गलबिपुलमिलिमिलि: बिबिधितरकबियारही॥ अथगोत्र
चारकथन॥ ६॥ गोत्रचारबसिष्टगुर: कहतनयेसुनकज
: सुनतजथाबिधिपुनिसुष: मुनिवरराजसमाज॥ बसिष्ट
ब्रच॥ छंदउथोर॥ बढिबेदसमृतबिचार: रहाचलोसाषा
चार: सबकृतहतिनगवंत: एकसनयदेवअनंत: प्रभुसेषफन
पर्यंक: सुषसयनकीननिसंक: बढिप्रतयजलतिहिबार: अति
सयअगाधअपार: षितनाबिकूपसथान: मिलिपंकनीरप्रमा
न: करतारनाभीकूप: उपनकमलअनूप: कृतबंसवृभति

हिकाल: समसलिलनाल बिसाल: जलअंतनालसुजाए: सोरकमलबि
कासिसुचार: अद्वितीय पंकजरिक: आमोद प्रसरिअनेक: तिहिकमलते
अवतार: अनजोनिब्रह्मउदार: उतपनबिसमयआप: मनन्हमितने
अनमाप: अबकोनलुकहुआए: मनुकोनधोपितुमाए: कोबरननामि
बिसेष: उरबढ़ोअमजुअसेष: बिचकमलनालबिसेस: पुनिकरछि
द्रप्रवेस: बहुगएकलपबिहाए: पेनालअंतनपाए: प्रभुनाभिरिअ
प्रचार: बिचिबुहरगोतिहिबार: नवबीतिगएंतरमंत: नवउदरपा
इनअंत: बिधितयेअमतबिहाल: निकसेसुपथतिहिनाल: गतगरन
नोतिहिपान: महिमासुजानिअमान: बलबुधिगतजोबाल: कतदी
नतातिहिकाल: प्रभुदीनबंधुहरेव: अनबिछअमितअजेव॥ छ॥
मूलबरनधरिषोडसम: एकबीसमबीयआन: साधकुआपनजतन
सों: बिमुकलोनुजबानि॥१॥छंद उ घोरा॥बिस्वासमुनिनजबाचि
सोरकमलमूअहिसाचे: तिहिकमलबेदिसुताम: कतध्यानबिधि
अकाम: मनलगीजोगसमाधि: सबछुधात्रिसासाधि: समनाबरंदी
पसोध: बहुउपजिअंतरबोध: परपुरुषध्यानसप्रीति: बेसतपहि
कलपबितीत॥ छंद पधरी॥सोरजोनिसंतमनबचलसेत: हरिद
रसदयोतपउअहंत: तिहिछनबिदेहलषिगतिअनंत: करपरसकरे
नचरमाकंत: चेतनासकतिजरबदनचारि: निरूपसगुननयुतनि
हारि: आनंदअसुरोमांचअंग: उरउपजिभावसात्विकअनंग: देव
धिदेवबिधिनामदीन: पदहयोसृष्टिकरताप्रबीन: बिधितयेप्रजा
पतिचितबिचार: उतपनतेजमिटिगोअंधार: नवद्विजबीजउतपत
नाम: महाजयेचराचरजीवताम: महिआतगगनजलतेजमेल: षेन
मिसलिलचररचितषेल: धरिकालमूलअरुजीवधात: बिसतारय
ष्टिबेदनिबिष्यात: चत्रषानिजूतनवअसीचारि: असकरमजोगसु
षदुषबिचारि: बिसतारबिस्वमायाबियाप: अरुरहतसबनितें
हरिआप: कतउरधपाएपरब्रह्मलोक: सबबसतब्रह्ममयसु
रअसोक: चवबेदनबेदबानीसुचारि: कतकरमलोकउधारक
रि: उपजेमरीचबिधिउदरआए: सुतनयोतासकसिपसुता
ए: कसिपप्रजापउरसानकूल: बिवसांनजयेमनुधरममूल:
मनुबेबसतनयेमहीपाल: बिसतारबसतिनतेबिसाल: इत्या
कनयेअसंकमेल: सुततिहिबिकुछउपजेबिसेस: उपजेकुकु

मध्य अदिवल अर्जीत : पुनि भये अवनीपति पुनीत : भये बिस्वगंध सुत बंस
बीर : युवनाश्व रघु सावस तधीर : हरिहय बहुबली या स्वकबिनीत : उप
जे दिलीप सुत बिदिहि बिनीत : हरिजस भये सुत पुमहेत : महिपति निकु
तह्लबल समेत : बरबीर भये नृप बहु कल्यास : समधरम करम रा
जा लिस्वास : सेन जित भये युवनाश्व सूर : पृथ्वी समान धाता सपूर : पु
कुस पुत्र भये हरि पाल : अनरण्य भये हरिजस अपार : अरुन हि नि
बेधन पुत्र बोल : सत बहत निपति निरिंकुतास : चक्रबेद सम सारक ह
रिसर्वेश : अवतार सत्य अवनीस ईश : रोहित नरेस तय हरितराज
बंपक सुदेव सुवच्छ त्रसाज : पुनि बिजय कृत कृत भये बीर : बाहु
कत्थ रस जुत सगर धीर : असमंज सुत राजा अंसुमान : प्रगटे दिलीप
सुद बेस मान : कृत नृपति गीर पृथ्वी अकंत : पुहवी सम्रोनि गंगा प्र
बीन : भुत्र भये नृप बिपुनि सियु दीप : अंसुमान प्रगट पूरन पृथ्वीप
रिपु परण्य भये नृप सिर बकोस : तहान भये सुदास सौदास ताम : अ
संमक पुनि मूलक भये आप : इसरथ जुए लबिडु सहदाप : बि
स्वसह भये षट्टंग बीर : भये दीरघ बाहु रघु अजस धीर : इसर
थ द्वितीय भये बिस्वदेव : सबिसेष सुरासुर करत सेव : राजाधि
राज सुत रास चंद्र : अवतरे कवर पुरुस मंत्र ईश : इक्ष्वाकु बंस बर
प्रेम असेष : बरबृध कोऊ बेन बिसेष : जो रीबर बरनी चिरजीव :
दिन दिन प्रती पर कुकेद्रव ॥ दहा ॥ सा षो चार बसिष्ट सुत
बरनि कसो रघुबंस : पुनि पुरुक्रम तेज पन : पृथ्वी प्रगट प्रसंस ॥ ५
॥ कवित्त ॥ निराकार निरलेप : नियत निरबिघ्न निरामय : निकु
लंक निरसंक : नाथ नर सिंघ निपुन नय : बारधि जाता नारि जे
हवा मांग निरंतर : निगम हेत निरबंस : करे निसेष निसाचर : कैलो
कराज हाता अतुल : हीन सहाइ कुष्ट दम : सोई बंस यंन नर हर
सुकबि : जिहि सुरामती धो जन्म ॥ ७ ॥ इति श्रीरामचंद्र सा षो
चार सूर्य बंस बर्णन : बार हट नर हर दृत नबिर
चिते ॥ जैन कसी लध्ध जबाच ॥ दहा ॥ कहत जनक अबसी
लध्ध : सुनहु बसिष्ट रिषेस : कहहु हमारे करि कृपा : बरन
निबंस बिसेस ॥ बसिष्ट उवाच ॥ कलो बसिष्ट बिदेह सो : बि
वरसि बिसतर बात : सुनहु नये नृप मूल सो : जेत बकुल बि

सबैमध्यमुनार ५ राजानिमकेपुत्रजो माहाबीरमथिनाम प्रगटकरी मथुलापुरी

ब्याता॥२॥ बेबसतमनुकेतये: नृपइक्ष्वाकसुनीति: तिनते
बाधेबंसबर: परमपुनिसोप्रीति॥३॥कुलमंकनइक्ष्वाकके: नि
मिनयोबंसनेस: तेरहोतअवनीतपो: उरगमहलबलदेस॥
॥४॥उपजोपरबतनेमिमह: कोउकारनपाइ: गतेपायोनामनि
मि: धनपूरनधनधामा॥४॥छंद॥ मिथिपुत्रजनकबि
देह: नयेउराबसुहिबदेह: नृपनदीबरधननाम: पुनिनरेसुकेतजुताम
नयेदेवरातसुनार: तिहिग्रेहसिवधनुआर: पुनिहृदहुयुकुलदीप: न
येमहाबीर्यमहीप: नयेसुधृतराजनरेस: पुनधृष्टकेतसुदेस: दिब्यदरस
देहबदेह: मरुसदासुकृतसनेह: नवनेप्रतीकपनरूप: अरुकृतरथजु
अनूप: नयेदेवमीढदयाल: बिसुसुबाहुबिसाल: नयेमहाधृतजु
महीप: पुनिकृतराजप्रदीप: पुनिमहारोमाधाम: धनस्वरनरोमोधास
नयेकृसरोमराज: नवजनकसंग्पाराज॥६॥ताकेसीलजनक
धज: अनुजकुसध्वजएक: बिद्याबिनयबिबेकबिधि: करतजुधरम
अनेक॥१॥ आगेकहियेनामये: पाछेजनकप्रमान: यहसंग्पानिमि
बंसकी: प्रगटसुलोकपुरान॥२॥ पवनसीतापुत्रिका: रामचंद्रजाम
त: सीलध्वजफलसुकृतको: पायोबिस्वबिख्यात॥३॥ कृतजुतरोउबंस
त: सीलध्वजफलसुकृतको: पायोबिस्वबिख्यात॥३॥ कृतजुतरोउबंस
के: सोबोरसुनार: होमजथाबिधिहोनलगि: सुतबिबाहसुषपा
के: सोबोरसुनार: होमजथाबिधिहोनलगि: सुतबिबाहसुषपा
रा॥४॥कहेबंसनरहरसुकबि: अपसुमतिअनुसारि: बिवसिकृलि
छमिजकुबिदुष: सजनपढ़कुसंवारि॥५॥इतिश्रीनिमिबंसब
रनन॥ अथबंस कीर्तन॥ छंदबेताल॥ कबिरुबाचा॥क
रयप्रनआहिसुकृतकरिकरि: सतानंदबसिष्ठ: पुनिबामअंगनिअ
निबामा: मांगिलहिमनइष्ट: परिक्रमनमंगलनावरीपरि: पानिम
रषितपानि: पतिअग्रदुलहनिदृष्टिपावनि: प्रीतिहृदप्रमानि: नह
दईबिप्रनिपूरनांकृति: बेदबिधिनयेआकृ: जुवगगनधुनिजय
जयतिनाषा: उरअसिषउछाह: सुरसुमनबरषेहीयनिहरषे: बिबु
धदुंदुभिबाजही: मिलिगांनतानननिअपछरागन: गगनमंकलग
जही॥ नृपद्वारबाजिनिसाननिरजर: नभधरासानाद: पुनिलहेजे
चकदानपूरन: बिहसिजयजयबाद: उरजनकअतिआनंदउपजे
नयनसुषजुनिहरि: कृतकुलाचारसबामकीने: बारिपीनेबारि॥
नृपजनकबकुरीपाटरागनि: परमआनंदपाइ: गनिसिधसबमनु
बांछिगोगिहि: आपनेग्रहआइ॥ छंद॥ जोहिमगिरगिरजाहरहि

श्रीयाहरिहिंजनरासि: सोबिदेहरामहिंदई: सीत सबसुषरासि॥२॥सि
बकआरुहरामसीय: योजनबासेआइ: मकरध्वजरिब्राकुमनु: जय
नीसानेबजाइ॥३॥कवरकमनजनबासकहं: मिलिसुषमंगलमूल
ननिरयोषनिसानधुनि: सुरगनबरषतफूल॥४॥जनवासेदुलह
निसंजुत: दुलहसबेसिधाइ: दसरथनृपतिबिदेहतब: बिदाकेरपरि
पाटी॥५॥सबेबिलोकिबिहंसुष: उमगतहेतअसीस: अतिआदरअ
नंदसो: मेरनिगयेरिषीस॥६॥ सुषहिबिहानीसरवरी: हितकर
दरसनदीन: सुरपूजानित्यकृतसब: लोकजथाक्रमकीन॥७॥जन
कबिदेहसनेहसो: संजुतरिषनिसमाज: जनवासेअवधेसपहं: अ
येसमयसुसाज॥८॥ सनमुषआयेअजसुवन: प्रेमसहतपधराइ
धरमसत्यमनुदेहधरि: बेगेसनाबनाइ॥९॥सतानंदबाचाछंद
पधरी॥ तबसतानंदसबहिनिसुनाइ: यहकरीबिरतबिनतीबन
नाइ: तुमसबेब्रह्मरिषबरबिनीत: पाउधारेइहिंगजगपुनीत: नि
मिबेससरासितुमकृपाकीन: नहीबरनिजाइइकमुषनवीन॥१०॥ज
नकबाचा॥साधतसियसमाधि जोगआराधतजोगी: तउनहीदर
सनहोत रहतनिसबिषयबियोगी: रूपनरेषबिसेष आदिअव
सांनआवत: निगमागमपुरान कोउनकहुंहेतबतावत: जो
बसतनिरंतररूपजीय: सुनजोनीसुषचारिजुत: सोईजोतिदेहधरी
सगुन: सबनिदिषाईगाधिसुता॥१२॥ तिनकेकुलतपतेज: पुनिजलब
सुहिबिहारीय: जिनकेसत्यसंदेह: अवधिसुरलोकसिधारीय: जि
नकेसुतपदरजहिपार: सिलत्रीयतनपायो: हरधनुतेज्योजोति
जग्यबरसुजसबढायो: जिनआसुरसमरअनेकजय: रिषसुरेसरि
ताकरीय: महिमप्रसिद्धजिनकीअमित: हमकोअमरनिउचरी
य॥१३॥ छंदपधरी॥ राजादसरथउ॥ दुरलसहमहिरावरीह
सि: पुनिदीनीपुत्रीरूपरासि: रविबंससरासितुमजनकराज:
कीनोजुअनुयहआजुकाज: पूरनप्रमोदसगपनप्रमानि: जु
गजयेराजमनुएकजानि॥ नरद्वाज॥ सुषदुषजयेतुमएक
सेग: नृपताअरुपायोपदअनेग: कोउएकबडोकुलमहकहाइ
कुलकरतगरबतिहिबचनकाइ: प्रतिपुरुषनतुमराजपुनीत:
गावतजसजिनकोसियगीत॥बसिष्ठोबाचा॥कोउहोतसु
षीइहिलोकरेक: वहिलोकनिरयबिलसतअनेक: दुषसहत

कोउइहिलोकदेह:सोउ स्वरगभुगतनसनेह:ध्रुवलोकसहतके
उगारिदीन:नवएकनृष्टिअघजालतीन:प्रतिलोकलोकमहिमा
प्रकास:निथलेसनकीसमसावकासा।सवैया।।जोगकुजोगसंजे
गबिजोगकेपूरनपुनिप्रकासे:राजससातिकनवनकेसुष:क
ष्टकरेरिपुरोरबिनासे:रससवादबिष्यादबिनोपदवीजुगसाधि
प्रमोदप्रकासे:अदभुतचरित्रबिदेहनिकेसुनि देवअदेवन
रेससमासे।।१।।जा।बा।लिबाच।।छंदपधरी।। मनजोतिजदफिर
तिअप्रमान:दिनकरसंजोगबहुतनिदान:नितकुतेनिसाकरबंदनीय:
लहिसंतुलमहिमासुलीय:सुरसरितपवित्रहिसुताइ:पदबावनपु
वनताहिपाइ:नमिबसकुतीमहिमाबिसेष:सीयआगमपुनिबटीअस
ष।।बिस्वामित्र बचा।इहाकृतसुनजनकनरेसके:बेदबिदितबि
ख्यात:सीतापावनपुत्रिका:जगकरताजामात।।१।।कबि।।जन
कनृपतिअवधेसजुत:मंदिरआनिमहीप;बेगेजनसालबनि:अ
खिलसंगअवनीस।।२।।बेदिजथाक्रमपातिबकु:बरनचारिसुनबे
ष:आसमुद्रजाचकअवर:बरनिनिजाहिबिसेष।३।।जनकचर
नअवधेसके:पुत्रनिसहतपधारि:अनमोलिकआसनउचित ज
थाजुकतबेचारि।४।छंदहरिअरी।।रतनजटितचौकीजुकनककरि
औरनृपतिदसरथआगेधरि:मनिमयथालबिमलबिसतीरन।।
तापरधरेमधुमबेलागन:स्वरनरजतमयथालसुहाये:नृपनि
अअधरेमनभाये:परुसनलगेसुधारसपावन:कोजनसतरह
बिधिमनभावन:अरुनिसानबिधिबकुआये:जेजुवतिनब
कुलातिबनाये:समयनसारअनेकसुगंधनि:बेछितस्वादअने
कलातिबनि:पातिपातिछनमहपरुसारो:पूरनभयोअमृतपन
कलातिबनि:पातिपातिछनमहपरुसारो:पूरनभयोअमृतपन
वारो:थितचवकवरपितारकथालहि:करनभयेजोजनसुनक
लहि:दासीजूथजूथमिलिदिसिदिसि:बनीसिंगारबनाइतेदब
स:गारितरकजुतगीतसुगावत:सोदसरथसबनृपनिसुनावत
छंदपधरी।।दासीबाच।।कादेहिगारिदसरथकुमार:सुनपित
सुजससुनियेसुदार:बकुबीरबिरुरेछीनिबाम:कुकलत्रकरी
सोईबिवसकाम:यहकरमकरेदसरथअनृत:पितकीरतिसु
नकुसपूतपूत:कछुताकुकेसुनियेसुताइ:हमजथासकतिब
रनहिबनाइ:ताकेकोजानेचरितंत्र:मानेनहीकाकुजंत्रमंत्र

उरनहिनदयादुषदेषिग्रांन: सुषमानलकरिग्रोनीसनांन ॥ छंद पद्म
री॥ कुकलत्रकीनीरसहिनीनी निसनवीनीलागरी॥ मनबिस्वमानी
जगतजानी अतिहिलछनआगरी॥ कोगवैकीनेनिसनवीनै पति
सुअवसरपारकै कृतकरमनकेबिषमवाके सचहीकहतिसुन
रकै परपुरुषप्यारीनिलजनारी सुनुकुलहसावरे करनीकु
लछनबसिलनतनमन रघुपतिसोरावरे हिअरतनदेहीरूपरे ही
निसनवनवयोबनी॥ गिरषकजलबसननिधिजल अरुनक
चुकिग्रनतनी॥ बनिनीललहंगमोलिमहंगा अतिहिपतिरति
अनुरी॥ उपरैतिसोहैमनमोहै चितचंचलचतुरी नागे
सकुलमनिसेजसुभगनि सहजसोरलसुंदरी॥ दिसउदयप
दथरिग्रसतसिरकरि नोगजुतनितरसभरी॥ हगलगोहर
सुतलग्यापी लागहेयतनिहलयो तिहिकायो कृतगुप्तपापी
प्रलयजल उपजिग्रननग्रोषधी॥ मिटिमषनिचकीग्रमर
ग्रची ब्रह्मउरचिंताबधी॥ लषिग्रषिलरीस्वर प्रभुदयापर बिस
रगपबराहकै बारधिबिहारीधरउधारीय छनकहीरदग्रयहै
नृपबेलनवतपारग्रबला नामकरिकछुनोगई नवपापतीनीमर
मलीनी नारपीडतनहनेई रिषिग्रापरोरवहाहमनुदव बेणमज
रिबिग्रयो सोउबुगतिनाग्रोजातछाग्रो चलतनेकनचितयो व
हुबरीबिहबलमिलतग्रधमल रसनिग्रसियोहीरहो प्यारीपराई
दथुजपाई सहतग्रादरसग्रयो तबहीयोहरषोप्रेमपरषो सुषि
तकीनीसबै अंगरसाजेबजेबाजे तिहिहपतिबुगतीतबे परले
कपायोग्रनग्रघायो दथुजछाग्रीप्रीतिसो नहीसोककीनोमनमलो
नो नियतनेहग्रनीतिसो तिहिसमयजुततप हिरनकसिप देतग्र
तिबलदेषिकै परग्रेहपैसीग्रजऊबैसी बपुसरूपबिसेषिकै॥ तस
रसहिरातीमदनमाती नाहिनहिरकछुनतजो ग्रनयासपायोत्री
यपरायो नातिनातिनसोनजो ग्रतिगरबयाकेचितताके अ
नाचारजुग्रादस्यो सुतहनतसाथहिग्रनपराधहि करमग्रगी
कृतकस्यो ग्रनरथग्रैसेग्रतिग्रनेसे सरबग्रापकक्योसहे॥
हीनहिदुषारेलषिमुरारे करतरहानितरहे॥ थिरफारिथंभ

यहअचंभा निकटेप्रगटेनरहरी प्रहलादराखैसुरनिसाखै बा
तनिगमनिबिसंतरी॥ नरीबेदषीनीछीनिलीनी हैंवहरिचंदहि
दई सबसारदीनैनिसनवीनें नृपतिनकुनेगई दुष्टसदेषीबिषि
बिसेषी उदिकजुतद्विजअर्पई॥ पृथीपवित्रहिबिस्वमित्र हि हरिसचंदस
मर्पई द्विजदीनजानोंमननुमानौ बलीबलिदेइतैंबस्यो सोषीवताप
सबिरतिकेबस आजुनमनृतआचस्यो पूरपुरुषपवनतयेबवन
बचनछलबिसतारयो महिविपदमापीकरेपापी नृगुसुवनबिनुच
मतयो नृपनियमनाषैबलिजुवाषै अषिलनुवअपनारकै कै
नकपटकरनीलईधरनी हरईहरिआनिकै॥ तिहिहरसाप्रेमननुला
ग्यो सुनौहैहयअतिबली॥ बासवबिगोयो दुषनिरोयो चित्रचप
लउचिवली बरबस्योअरजनमिलीतनमन सहसबाहुसजानयो
तिहिमननुमानीपाटरानी मोहमयरसमानयो छबिमदसुछा
क्यो हितनताक्यो जमदगनिमुनिमारयो तपअगनिबिहिछनरे
षभरिमनु परसरामसुजारयो बरबयखाषैनियमनाषै छत्रि
कुलबलछेदयो रुधिरननहायो निगमगायो द्विजनमहिमंडल
दयो कृतपितरुअरपनरुधिरतर्पन रहेसरसरितानरे इकवीसबे
रात्रमरनेल कुसमजयनरषाकरे दुष्टबिसेषीद्विजनदेषी नीतिध
रमनजोरहे॥ रहिहैनसाषीसहजसाषी चलिहिजारबिगोरहे॥ इकवी
सबारी चितबिचारी मुनिनछाडीमोषकै॥ योकेअलोकिकरावण
दिक अररस्त्रनिलाषकै॥१॥ छ॥ साकुवामबिक्रमसहतक
वरपितातवकीन करिबीनाहिस्वतंत्रअब रषकुबचनअधीना॥१॥
अमतरहीनवकृपतजि पैनहीथिरताआर अबदसरथअवधेसके
सदारहोसुषसार॥ सौकरिराषकुआजते याहिनपावैओर निस
रहोनृपअहनियत रामकवरकुलमोर॥३॥ तरकतेदरासिनत
हा गाइसुनाईगारि रीझेराजाराजरिष रहेबिबेकबिचारि॥४॥
करीअगरनरहरसुकबि रामरिझवनकाज दीनीहसिहसिनग
तिद्विट सूरबेससिरताज॥५॥ छद्द अरी॥ जालगवाषिनपथ
जुवतीजन देषनसुषदुलहनृपदरसन सुनिसुनिसोधगवाषिन
सुंदरि हसतपरसपरकरतालीकरि बरनिबिलोकनिदुलहनिव
निबनि सकुचततकगारिससुनिसुनि सोजनमनबछितअ
नंदतरि करेआचमनषरिकोकरिकरि आयेबीरबिबिधिबन
ये सोमृगमदघनसारसुहाये सोधातेलअनेकसु

बारचिरचेसमधीबनि: कुंकमसोरंननीरअनेकन: गहिगिहिनवतसमि
अनगन: करिपूजाअर्चीसबक्रमक्रम: पुंहचयेजनवासेप्रीतम: बि
बिधिबिसालअनेकबनाई: सोरंनजुतसुषसेजसुहाई: सबेरूप
सुषसजासोये: सीतलपंषापवनसजोये: नृपतिबिदेहपरमसुषप
ये: अपरदिवसजनवासेआये। पूजिबसिष्टअवरऋषिपावन: ज
षनबसनरयेमनभावन: दिब्यअनेकजथाक्रमदीनें: करिमनु
हरिप्रसनसुकीनें॥ ८॥ कामदुघासीदुगधदा: चारिलदद
ईधेन: तरनसपरिकरबसनसुत: संजुतबछसुषेन॥ ९॥ आनंद
नयेअसेषउर: सिधनयेसबकाज: करोबिसवामित्रकेआयेभे
थिलराज॥ १०॥ पूजाअरचादानपुन: सबबिधिसहतसनेह:
बंदिचरनकीनें बिदा: बिसवामित्रबिदेह॥ ११॥ कोसिकदसर
थनृपतिकहं: मिलिगनरीसमनाई: उतरपरबतकहंचलि: दि
दयध्यानरघुराइ॥ १४॥ पधरायेतबअवधिपति: मंदिरजनकम
हीप: चारयोंपुत्रसुअग्रचलि: जोदीपहिप्रतिदीप॥ १५॥ आयेअहे
बिदेहकें: समसुतबंधसमाज। राजसरीरबनांरुचिर: रीझेके
सिलराज॥ १६॥ बेगेसनाबिदेहबनि: अरुसजारथुबेस: दि
ब्यअसंष्याकरंजे: पूरनअगटप्रसेस॥ १७॥ छंद बेसाला पूजैक
हेमसुरतनमनिमय: जरितरंगअनेकजे - सुनरंगरंगअनेकस
ज्या: रीझिपरबसत्रनिरजे॥ कैसेयदोरिनकसेकूटसु: बिबिधि
अतिसोनाबनी: फबिरहेजरितजरा: स्फूंदा: मध्यसरिमुकतामनी
तिनबेगिरायवसीयासंजुत: सबिधिपुनिउलहसबे: रहाहोत
नोछावरिअसंषित: सजनसुषदेषतसबे: अनेकदिब्यजुरतन
अगनित: गंधबसत्रसुकोगनें। मनरंछजेजेबसतमंगल:
बिमलकारिजजिहिबनें: परचारिकानित्यनिकटबरतनि: नि
यतमनुअनुगामनी: सतचारिबसनबिभूषननिसजि: सुंद
रीहितस्वामनी॥ इकलछिपतनीओनअपति: बिमलबुधिबिस
तार: अपारअहकृतचितचतुरि: प्रीतिजुकतप्रचार: पुनिअ
ष्टकोटिजुप्रजुपरायन: दानदीनेदास: सबकाजसाधकसाध
संतत: सावधानसहास: गजअयतकरलीजूथसंजुत: कनक
मयकिंकिनिकसी: मदमतगुंजतमधुपमाला: श्रवनतटसो
रतबसी॥ बनिअयतअस्वसुषत्रसंजव: जरितजीनजराइ

जे: अनेकसज बिराज अद्भुत जिनहि गिरिमा रुतिलजे: सुनसुष
दसहस पचीस सिंदन सजु सजुत सोचनै: जिन बाजि जब जुत द
षन जोते बली किंकिनि सोबनैं: सतसहस सुरनीसुर सुरनिसी
दिव्य बरण दुग्ध दा सहबछ्य पटकनक साजित सेवि सुन्दर
सन सदा चवरोल सिवका सुषसुषासन रोलिकादि सुदेस: अ
नेक आकृत जाति अनगन पुरुष जुकत प्रवेस: बिधि पूरब दिष्य
जुकनक बासन गेरगेर निलेरये: सब समृध देषि बिसेषिसो
भा नृप सुरअचिरजभये प्रति देस संतवकर तप बली अगणि
रउनमान: सुषफेनउजल करतमहजल मनछ रितअमान: न
रिसकटसकरी नरकाहक दृषनबामी बहुबनैं।। सबसोज
संजुत बिहतसजे आनिथलथल आपनैं कोगनेमहषीकर
रिकुललौ जितेकीहुजेत: पदचारपहीयप्रबलकपर आ
षेटनिपुनअनंत: पुनिकरीपूजिबसिष्टपूजा बामदेवसबा
म: बसत्रादि भूषनबिहतबानी: कृतप्रमानसकाम: पहुर
इदसरथनृपतिपावन प्रमप्रीतिहिपापरे: मनु हारिकरिक
रिअमितमहिमा रूपमनआनंदभरे: रघुबंसआदिअनेकरा
जा बिमलमथबरातके: सनमानबसनबिसेषसोरन जि
हिसुचितसुहातजे: मिलिसूतचारनसिधमागध दयेबंछितदा
न करिगतिअतिमनुहारिकीनी सबहाबिधिसनमान।।इ
हा।।सकलबरातीसंगके: लघुदीरघजेलोग: पहरायेपाटंबरनि
जुतआदरजिहिजोग।।१।। इमअनेकनरपजे: सोसनमान
सनेह: जनुबिभूतित्रयलोककी: दीनीजनकबिदेह।।२।।अथन
रदमनक प्रति प्रबोध पुरप्रसंग।।इहा।।बैरेषरिषदुनि
नहा: ओररहसिजुएक: संजुतप्रेमबसिष्टसो कहतबिदेहबि
बेका।।१।।छंद पधरी।।एकसमयआसनारदरिषेस: हमकरीबिबि
धिपूजाबिसेस: बीनासनादहितजुकतहाथ: गावतअनंतकृत
चरितगाथ: सबनारतयेजनुसानकूल: मोहिकलोगेपिमुनि
मंत्रमूल: कारनरूपहरिदेवकाज: रावनबधषोवनसकुलरा
ज: मायातनमांनुषधरिमुरारि: बिबुधहितरामप्रगटहिबिचा

रि: दसरथसुतरघुबंसहिंदयाल: चवबेधउपजिबेचरषयाल:
प्रगटिहैंजोगमायापुनीत: तवग्रेहसुलछननामसीत: हरिप्रे
यालहिप्राचीनहेत: तिहिबरिहैंराघवजससमेत: मुनिकहेहमहि
परब्रहमहेव: तवतबसुनीयालवसुताभोम॥ दहा॥ एकसमय
हममषग्रबनि: करिलागुलसुधकीन: ताकेसीताग्रयवै: पुत्री
प्रगटिपुबीना॥ १॥ तातेसीतानामतिहि: पायोलोकप्रकास: चे
दाननमृगलोचनें: बिमलसुलछनबास॥ २॥ निसचयममप
टरागनी: त बहिसमरपीताहि: करिपोषीसाकनिका: हेतजुक
तचितचाहि॥ शछंदपधरी॥ मुनिकहेहमहिउपदेसमंत्र: तेदेवी
इंछामिलेतंत्र: कृतनयेमनोरथसफलकाम: राजतऐकासनथी
याराम: कोसिकप्रसादसबसरेकाज: जनमहमकृतारथ तयोग्र
ज॥ कुलदेवापूजानिमतग्रराम रनि वासप्रवेस॥ दहा॥ स
मयसुसाधिसबधसुत: रामग्राहरनिवास: करनजथाबिधिमा
ऊकृत: बिद्याहीनुसबिलास॥ १॥ छंदपधरी॥ रहासतानंदप्रोहित
सुग्रार: कुलदेविदेवपूजाकरार: पुनिकरेकृतबेदनिपुनीत: पुन
कारनसबबिधिरामसीत: कृतसागसपूरनसबेकीन: द्विजसता
नदकहंदानदीन: नोछावरिकरिकरिजनकनारि: छबिनिरषिपी
यतजलवारिवारि: पुनिपुनिउरलावतिपुत्रिकानि: सुनदेतजुस
ग्राप्रेमसानि: गुरसासुसुसरसेवासनेह: दिनकरऊनउत्तरफेरिदे
ऊ: गुरसषीबचनबसरहिसपान: दीजेसबहिनकहमानदान
पतिबृतसहतग्रनुसरऊप्रेम: नितरहऊबचनग्राधीननेम: भि
लिबारबारसिरसपिमार: ग्रासीसदेतछतीयनलगार॥ दहा॥
चूरीसेंदुरमांगचिर: सदासुहागनिहोऊ: लोनपरऊतिहिनैंननि
त: जोताकेछलछोऊ॥ १॥ दईग्रसीसग्रनेकयह: ग्रसुनवछाव
रिवारि: बदतिदेषिबिछुरनबिषम: नोसिरजऊबिधिनारि॥
॥ २॥ बिछुरतसीताप्रेमबस: बिकलसकलरनिवास: दारुन
तिहिछिनकीदसा: कहिकोसकेप्रकास॥ ३॥ रामगमनसुनि
नारिनर: भयेमनबिकलमलीन: तरफरातजिततितकती
जोजलहीनेमीन॥ ४॥ जनमदलिद्रीकलपतरु: पतितउ
धपदपार: दीरघरोगग्रमृतजो: सुषहीलहतसुनार

सोहमदरसनरामकै। पायोपुनिप्रकास कहतसकलममजीयकर
कृ निसीयसहतनिवास अस्वारोहितछबिअमित उलहेर
निआइ पुरजनसुवतीप्रेमपर लेतबिलोकिबिलाइ॥ छंदपध
री॥रिषकरेबिदासबजनकराज सबनातितोषिसंजुतसमाज
जाचकनिदानलहिजथाजोग पुनिबटतजयतिकीरतिप्रयो
ग निरघोषनगरननबजिनिसांन पुरसुमनबरषिहरषतस
मान बिधिजुकतबिबुधदुंदुभिबजाइ पुरचलेअमरआनंदपाइ नृप
दुंदुभिबजेनीसाननाद बटिबिस्वबदितजयजयनिबाद पुरलोकच
लेआनंदपाइ सुनतदेसकलकेरसमाज चवकोलचटीदुलहनीचा
रि बाहननिसकलदासीबिचारि नयेरथासूदरसरथनरेस सु
नआपआपरथचढिसुदेस पुरजथाजोगपुरबंधुजान सबसुनदस
रथअपनेसमान तुवगगनकुलाहलनयोनरि प्रतिसबदरहेदिसिबि
दिसपूरि हयहेषारवगजगरजहोइ सुनिपुरेडीरननिरघातसोइ
इनतातिचलेदसरथअनंग मिलिपवनरेनमुदितपतंग सीलध
ज नृपतिकुसकेतसाथ हितचलतपयादेजोरिहाथ मिलिअमि
तनेहहितजुगमहीप पुहचारजनकलकुरेथीप रसरलोअ
भिलचलिअवधिराइ बाजिबजेतमंगलबजाइ॥ दोहा॥ निसचय
नहादसरथनृपति बसिहैपथप्रयान तहतहासबसमृधसुष
पव्येजनकप्रमान॥१॥समयसाधिआनंदसों नृपचलेसुनना
इ पावनमिथुलापुरकुते इहजोजनत्रयआरोरा॥अथ नगर वि
अगमन॥ छंदपधरी॥कबिरुबाच॥ दृथीसचालउलक
निपात बिदिसानिदिसाबटिबिषमबात उकिपांसुनसमबरष
अकास अनमितहोतसबअनायास उकिदरसदिवसआसाअंधार
उतपातहोहिदारनअपार बटिबिषमधूमसंकुलबिसाल प्रतिकू
लपछिकुंजतकराल दिनमनिसुमहापरिबेषदेषि पहीअसोमि
दिसिगगनपेषि मातंगअंगगतिमदहिमुकि नएसाधनावगरे
हनसुकि मृगमालसुननिसचकअसेस परिक्रमनकरेदहुन
प्रवेस॥ नृप निबाचाअनमित्रदेषिसबअवनिईस सनमुष
बसिष्टपूछेरिषीस यहकहाजानिनहोपरतआज उतपतिकछु
कारनअकाज नयहोतचितअतिअमंतीत उपजेअरिष्टकछुअवे
अचीत॥ बसिष्टबाचाबोलेबसिष्टबबिहतबोनि अनमित
नयेइहिसमयओनि मृगतयेजुदहनसुनदमूल सबमंगलस

चक्र सांनकूल ॥ कबि रुबाच ॥ येकहतमात्र अवनी असेष साकंपग
ईधसिनिमतसेष मिलिचलेसमुषमारुतसमूह जुतरेनगतपर
बतनिजूह अवछिनकरीरजुचमूओनि जननिकरतदपिको
उकिहिनजानि ॥ जामदग्नि निस रूपा कैलासमानकोपाधिकार
बेकृतबेषनकुटीबिकार अपतात्रिपुदउतफुलनास उपवीतदंडकुस
सावकास मौजाजिनमेषलतनमलीन काषायबसनकेपीनकी
न पदतलीफुरितबरजितउपांन सुब्रनसरीरपरबतसमोन कर
बामचापदृढ़नकुगर धृतबानदृष्टितूनीरधार उरसिलामनकु
यनयरितघाट बपुबिसषपरसुधरषतसुनाट परज्वलितचेत
तपतेजपूर समरथअनुअहआपसूर मुषचारिबेदपाग्निअ
मोह छबिमनुप्रलयपावकसछोह ॥ कबित ॥ जिहिहेयकु
लकेतमारि अरजनमहिलिनीय अषिलओनअन्हवाइ उदिकत
देवनिदिनीय इहिप्रकारइकवीसबार बसुमतिनिरबीर रोषज
ज्वरिगरतजाल तरअवनिअधीर पितुबयरतरेरिपुहतिबल
कुंठरुधिरतरपनकरन मृगगनमहीपमृगराजमनु निकरआइपर
सीधरन ॥ १ ॥ जरजरचुंबितअजेय इषुकंकपत्रचल दृष्टिउन
यतनीर बसमतोछनबछिसिथल असाजितहरिचर्म अहमा
लअवलिंबित करकुगरकोदंड पेषिलसुकरमजुत पितबेस
बिहतउपवीतपन मातृबेसआयुधमहत अदभूतबेषलोचन
अरुन कोपबचनआयेकहत ॥ २ ॥ घरितससत्रयनघाट समरउ
रपीरउपुलसम कठिनयोरधारकुगर तिहिकरतति षक्रम अ
हमचर्यआजनम ब्रहमबिद्याबृतधारीय जयजननमाहआघात
बिसमतुवचक्रबिहारीय जमदग्निबयरअतरज्वलित कृतकु
ठारउधतकरग बनगजमहीपमृगीय बिसन मिलेकालतगवा
नमग ॥ ३ ॥ ॥ बामदेवद्विजआदिदे सबमुनिवरनिसमाज बि
धिबदनकीनोबिहत जामदग्निरिषराज ॥ प सरा मउ ॥ क
परकोपकृतोतकृत जिहियनुजगनजबेस ताकेदंतनिमधमत
ट पापीचहतप्रवेस ॥ पेच्योकिहित्रबकयनुष बामदेवमुनि
राव कैछितिनिछत्रीकरो कैतिहिबेगबताउ ॥ २ ॥ बामदेवउ
कठिनसरासनसंजुको तोस्योरामकुमार मषजयराष्योजनक
पन सीताबरीसुदार ॥ जामदग्नि बाचा बामदेवमुनिसोबि
हसि फिरिपूछेद्विजराम जिहिनाजोमाहेसधनु सोधोकैसोरा

मा।बोमदेव बाचा।छंदपधरी।।सरयेककस्यौतादिकानसा
मा।।त्रीयहतिकोविक्रमकीनतास।।वामदेव बाचा।।सेनंसुव
रीचसंग अतिबलदुष्टराक्षसअनेग:मारयोसुबाऊमसकास
मारीचउठायोबायुबान:मषरहाकीनीअसुरमारि:कोसिकहिर
हकारि:पदरजपुनीतपरसतसपाप:गतिउरधअहल्यालहीआप
चापतंगकौसलकुमार:सोईरामचंद्रसबिदितसंसारा।पर स
।।कबित।।जुधनुचढावतजरयार अमहोतहठ्ठे: दान्वरा
हैतदेव छोहेनसकेछै: मिलिस हसछत्रीयमहीप: इकसायउ
य: नहिनमुकितिहिअवनि गयेबलतजगुमाईय।करिहेव
जुवचक्रके सबविक्रमसुनसजयो:पिबऊनकालमहिमाअब
नृपबालधनुनेजयो।।१।।दूहा।।मानिअहिंसाधरममें मृगी
यातजीमहीप: नवछित्रिनियायेअनय प्रगटेपापप्रथीपा।क
बित।। करतसत्रुबयकाल कोउजछांग्रोकिहिकारन:बालक
हथअबध तहबलहीनबीनतन:उनिसोईअवसरपरे करत
बलहथहिक्रमक्रम:जैसेकनिकाबन्हि बढतदावानलबेष
म अनुसरुधरमहिंसाअबिल बसुधाकरेलछित्रसब थिकर
यानुकीजैसत्रुसों पहोपरीबोसत्पअब।।१।।कबिरुबाचा।दूहा।।
तवरथतेरसरथउतरि उतरिमहनयमानि:कीनेअअब सिदक
हे आराधेतहांआनि।।१।।त्राहित्राहिअवधेसतब: हाथजोरिक
हियेकु:मोहिपुत्रनिकीपरपुरुष:देवदहनारेकु।।२।।आयेराम
सबंधरहा:बंदनकरेबिसेष:रोषानलजनुजरतसो:दारुनरू
पसुरेषा।।३।।नगुपतिअतिकोपहिरे:ऐसीदईअसीस:होअ
पराधकरुकके:समरअजयचढिसीस।।४।।रामकुवारबिलोकि
तहा:कीयद्विजरामबिचार:सत्रुसरासनमदनमनु:तोस्यो
बयरबिकारा।।५।।अगवबाचा।।कबित।।नरतहिन्दजोरोष
नार पितुबयरप्रकासों तलिहोअरिहतेल तेषातिहिअयह
नित्रासों लछिमोकलछमनहिं मूछिनरिबानपमुकउ।।अ
नकुंठनरिसमर कीयातरपननहीचुकउ करकसकुगरमु
रामकर त्रिनसमानकरितोरिहों इहिसमयनावअब
सकी सोकसमुद्रहिबोरिहों।।।।१।।लछमनबाचा।दूहा।।
आपबऊपनआपनो:किंनराषऊरिषराज

होकुबच: कारहांतयोअकाजध॥तुमजुकहोनछित्रमहि:ब
सुथाकीयबहुबार:तिनमहनपदसरथतनय:कोउहोराम
कुमार॥ छंद पधरी॥द्विजरामबचनसुनिसुनिसरूपइ
हबोलेहसिकेलषनआप:निसबालकेलिधनुहीनवीन
करअचिरामबहुषंडकीन:छनकस्योनाहितुमस्तोछोह:
मनधनुषइहिकछुअधिकमोह॥द्विज बाचा॥वतकह
करतअतिनृपतिबास:कोप्योकृतातसूकैनकाल॥ल
छमन बाचा छंदबेताल॥यहकरमनीतिबिरोधअबिह
त:हमतुमहिजुधहोइ:हरधनुषटूट्योछुवतही:वहक
करैअबकोइ:जिनकेअनुग्रहकैमनोरथ:सबकरतसं
सार:तिनसोजबिग्रहयहअबिहत:अजसहोइअपार॥
करबंदिलीनेअछितजिनके:करतबहुकल्यान:तनसम
रसछितकीयेतिनसु:नयबिरोधनिदान:पदउदिकजिनकेनित
पीनै:करमनासतसाक:करससत्रतिनसोसामहैकर:तोकलोक
अलोक॥द्विजदेवतिनसोदासभावहि:परमकरुनाप्रीति:जयद
हनाकैतगतिजानहु:अन्यथाअनजीति॥नार्द बचा॥सब
ससत्रजुततुमसूरसंतव:सबलसेनासंग:मरनकेतयसत्रसनमु
ष:आपटारतअंग:छितिचक्रकहीयतबहुछत्रीय:समरपंडितसूर
किहुनातिकोरिनजतनकीनै:मीचरहिनमूरा॥लछमन बाचायुर
जोहअंगीकारकबहुन:करतबहुकहाइ:जगप्रगटआपुनआपुनेजो
मारिअजमाइ:जिनकस्योतुमतुवचक्रनजय:येकबिसतबार
किहिनातिचलिहैरावरेकर:कंगसुनिकुगरापरसरामे॥
छितिछत्रियाकेगरनछेदे:कवहेद्विजराम:अबजरगतरनैबाल
जेते:सबहतोसंग्राम॥नरद बाचा॥किहिनातिबोलतहोबहुकु
ल:प्रगटजनमहिपाइ:बिसतारतामसबिषमबेकृत:नेषसातिक
नाइ:तुमआपनेमुषकहतमुनिमें:ह्योहैयराज:जससुनहुता
कोजीयतजुगजुग:कतमरतबिनुकाज:श्रीषंडषंडजुगमयर
षत:उठतअनलअमान:मतकरहुबिषबकवादहमसो:नहि
नश्रेयनिदान॥परसरामा॥यहकसोनीकोनरतते:सिधा
तसिधसुनाउ:आपनेतनतेजुअमरष:अनलबेगउगाउ:बंचि

लेजुकौ कुनि हिंग्रग निनै जीयतनावीजोग तबपूछिहोंरनरा
मसो गुरचापनगप्रयोग॥ कुरु लीयाकरिऊषंकनतेईकरग न
वथ नुजिहिंकतनंग कहोरन हिलगैकहा सुनरबापुरेसंग
सुनरबापुरेसंग ईसआपबसआये दंडपात्रजोरीकरे दे
षाबिधिबेदबताये दुत्त हत्रुबात्रअवधिदिन दोषतदिपनां
हिनकरो करुनांत जिरामकुवारके करतेरबंकनकरो॥१॥
सत्र यंन बचा। दहा तबरिपुयनबोलेतमकि सरकोदंडसंतारि मुनि
बोलनयरहैजनम बोलुकुनैकबिचारि॥१॥ कुरुनिछत्रीतुमकरी बा
सुधाबारहीबार सोछांडोअबबेरले करियेसज्जकुगार॥२॥ त्रयवं
धुनितबरोषजुत करेधनुषटंकार रामबिप्रहकककसो नैननि
सैननिवारि॥ ३॥ तुरग बबाचा। कबित॥ मुनिरयुबीरसमुद्रसील
तरदिव्यबंसतव बेलालछमनसुधाबांनि कुतषगतरकासब
चकुरि बिकारजुत्रमन सरितमिलिसुत्तरसनेहीय लहरिपुनिबि
षरोष रतनगुनजुतअनुरहीय तवबंधुतिमंगलछुप्रेर जरि
जरिजैहैलोकजम मरजादकोपबाढ्वजुमम कसोचहतअबले
पक्रम॥ श्रीरामसानुनय॥ छंदपधरी॥ करजोरिरामतबप्रनित
कीन मनदेवहथाकरियतमलीन पारपजोटटेअवधिपार बात
हिकाकहियेबिधिबनार जीरनपिनाकटटेअजान नहीटरतकि
कुजावीनिदान बिधिअंकनचकतकिकुबिधान प्रभुजानतनिगम
गमपुरान टूटौनजुरैकोहंकतास बसतावीसिवधनुतोबिनास
नाग बबाचा। दहा॥ मुनिनृगुबंसप्रसिधमह परसरामयहनाम
तुमकुकहावतरामतो सजिमोसोसंग्राम॥१॥ कबित॥ रेकाकुसथ
निसंक श्रवनअजकुनहीसुनयो जिहिछित्राधमपित्रछेदि हेहय
रनहतयो ताअमरषसागरतरंग निसतारबधुत्तय बिषमावध
त्रयसप्त सत्रप्रतिरोधकरेहय तिहिबंसओनआमिषलिप्त रहतनि
रंतरसासरस अरितरसमुहहावअनल प्रबलघोरधारापरस॥
॥१॥ जिहिअरजनदसमतअसाधि नुजदंडत्रयकर रेवानीरस
वाह रुद्रसहबामकेलिपर तहादसकंधमरध आनिजुधदुंदस
जुटयो धनुषगुननिबंधयो कोपकरतलमुहकुटयो हेहयाधीस
सोरषेतहनि पिताघातअमरषप्रबल कृतपरबपरबतेरयकर
बेरकितिगवतबिमलार॥ बिषमसप्तत्रयबार महीकिनीकदम

मय: दृपतिमोसबसपंक: सलिलमिलिओ सरितनय: बरनितासबे
धब्ब: रानिबालाबृधाबयि: नियतनिसनिरदई सत्रुकुलनासधरम
सिधि: तुजमूलसिषस्तुव पालनव बिबिधिधातसनादबर: जम
दगनिसुवनसोईहुंसजय धारयोरकुमारधर ॥ श्रीरामचन्द्रातुम
जुस्वसतिहमसमत्र: अनयग्रहनिसाअन्यासहि: बिमलबेदरस
बीर: प्रकृतिअनयसप्रकासहि: कसनाजिनतनकवच: कसततु
नहमकुसकारन: पेषिलनहतबिपह: प्रगटसिरदेपचारन: नवए
नप्रसियउपवीतनित: बिषमएकगुनचापबल: संग्रामकरनद्विज
दीनसो: कोउनकरइस्वकुकुल ॥ पर सराम उ॥ रेहत्राधमबि
प्रजानि: मोहिन्लतनोरे: कुजेसोद्विजदीन: अवनसुनिलेमतमे
रे: समरकुठकुतनुकसरोष: संमधाचतुरंगीय: षादरिश्रवाकुगर
मजयधनुबानसुसंगीय: पृथीसप्रबलसंतुष्टपसु: सदाहोमकी
नोसुतर: संग्रामजग्पदीछतसकु: परसरामबानतनप्रगट ॥ तबकु
लनोमूलकमहीप: राजारघुबंसीय: तिहिसतुम्हिकुगईय: पारपूर
नपरसंसीय: छत्रीबधकृतलयो: हमजुपितुबयरप्रमानीय: कु
गदोसंग्रामे: छेत्रजाचतजुधजानीय: सोगयोतागिजुबितिनसरन
तेईनिईतनत्रानतह: बिथरयोनामनारीकवच: मानितदिनसंसार
मह ॥ ॥ ॥ ॥ उरजुतिहरोगयिसुत: ममकुगरतनयमानि: तबब
ओषत्रीयततजि: आपतयोद्विजआनि ॥ श्रीरामबाचाकबित्त ॥
पुहपहारसप्रकास कंठकिनपरकुकुगर: तनभूषनमनिमयत्र
तुलि: उरधरसरधारा: चित्रसालबसुचिता: चरतनहीहोतबिम
नचित: बिमलअंगसोरतबिलेप: कुतनुककुपरमहित: सिरच
दकुलोकअपलोकसम: कोउबसुरकातरकहीय: सबतारन
गतिद्विजदीनसो: इतरबिबसीनिरबहीय ॥ ॥ छंदउथोर ॥ पर
सराम ॥ रेरामरबिकुलबाल: घरपोसीयघरघाल: समबिनय
मोहिसुनाइ: तकहतबातबनाइ: धनुजोजिजीरनजान: मनब
ड्योगरबअमान: नहीसकमेरीकीन: चितकृतनाथनचीन: अपर
धउपजोआर: सोईरेनाहिसुनाइ: बीयदेकुगरहिबाफ: जस
सहतपुनियरजाफ ॥ श्रीरामजीउ॥ फुवधनुषटूटनहार: बस
जोगमिलिसंसार: बकुकालगतिबलवान: नहसेमुकिदेवनि
दान: इहहोनहारसहोइ: कहाकरेताकहकोइ: यहिकुलसि

नाविनअंग नवकुलसिलत्रयनेग: अबयुनीआवकुकोर: सिवधनु
षसंधयसोर॥ दहा॥टरिहैनहीनवतब्यता: कोटिनकरुउपाय
रहनहारसोईपैरहै: जोनहारसोईजोर॥१॥भार्गवबाच॥दुष्टछि
त्रकुलसोदया कालकरैप्रकार: नवसोईफलनेगवे हैताकहंधि
कार॥२॥जोउबच्योछलछद्मकिकु: सबकोहोतसंयार: करोनास
सोईसोधिकै अद्यधरमअनुसार॥३॥छंदपधरी॥सुनिराजपु
त्रसहबंधुसाथ: हठिसजकुबानकोदेकुहाथ सरछोकतकुअबप्र
नछेद: बधबालनसकुकिनलोकबेद: मुकुकुरुप्यारहाथनिसमे
त: धगचापसाजिकैमरकुषेत॥ राम जानुयुनेदबानछोकुनयो
न: सनमुषहिसकुपुरुषनिसमान: करिरोषकेंबावकुकुगार ह
मअहैनाहितुमसोहप्यार दृष्योपिनाकपरसतहिपानि जीरन
धुनहनमयमेनजानि लयुदोषकरतद्विजअधिकदाप: आचार
नीतितुमपढेआप हमबिप्रजानिजोरतजुहाथ मनबाचनवावहि
अअमाथ दानवदयंतभ्रनगदेव: सिरनवेकाकुनकरहिसेव:
करषगपचारहिरमहिकोर: हठिलागिलरहिकिनकालकोइ: स
किहेद्विजकेसुरत्रीप्रसस: हमजमकुनत्रासहिहंसबंस॥भार्गव॥
निरबीरकरेमैतुवनिकेत: हठिलागिलागिपितबयरहेत जिहिदर
उमहिबिद्याअजान निहचैसुनिताकुकेनिदान: कोसिकजोतेरा
गुरकहाए सोबांतनकैबाचेसुनाए अनबधिबानममगिनकुरेह
द्विजसुरनिनिपुसकबालदेह अरुनारिहीनरोगीअनाथ हथीया
रुरिजोरेजुहाथ तबालकहासहिहेसुतापे: अमरममबानन
यनजेआप रेबालछोहिबातनिबनाउ जीयलेकटारकरअहजा
उ॥ दहा॥करकटेबिनुरेकवर निहचैछांडेनाहि बातेंओरअप
नबस मनबिनेमनमाहि॥१॥श्रीरामबाच॥ब्रह्मतेजजबह
बधो: जामदग्निजीयजानि जोनवतबसुनादरे हमोरामनि
दांन॥२॥कबिताकरयोनेगकोदेह दाहतवपुरमेदिन्हो त्रिनप
मांनतकयो कछुनतेरोनयकिन्हो देवदेवराहसनदेव अ
षंडलआये मैतेरकीनेबिमद सबेसुबअहसिधाये अजकुय
हगटोरनअजिर बिषमकरोसंग्रामबर श्रीरामकेहिद्वि
रामसों सजकुयेरकुगरसर॥१॥महिमंडलकुगमगकु बिस

हबिघ्रअष्टिबिनासकु लोकत्रेयकिंनचलकु समुमिलिसिंधुस
मासकु तजकुनोमिलुवनार हरकुरिगनगिरकोलकु अंधकारहि
सिबिदिस बटकुमोनीनयबोलकु रगकोलईसआसनअडिग
नरपमुकिधसिजाकुनुव बेकलपछोडिहोईयेबिहत सावधान
जमरगनिसुव ॥ कुमलीयोकबिरुबाच ॥ आकंपीयअगजगअ
वनिहलीनोसंग्राम हाहारवत्रयलोकफुव रनरोषेदोउरा
म रनरोषेदोऊराम असुरसुरत्रासउपजीय एकधनुषटंका
र एकपरसाकरसजीय एकपीतपरकसीय एकजटजूटसथ
पीय बातप्रलयबिथरीय अवनिअगजगआकंपीय ॥ ॥ उपजि
परीबिपरीतियह महिसुरनरतयमानि अनचितयाहीसम
य बिमलनईनतबानि बिमलनईनतबानि ब्रह्मकरिबिनय
उचारीय निषलअष्टिममनास वारिअरणवजुबिचारीय रुकुटि
रेषनुवनरेग सुकरतुमआयुधसजीय महीनारमुकिहेयहेबि
परीतउपजीय ॥ ॥ कबिरुबाच ॥ दहा ॥ महारुद्रयेहीसमय आ
निकस्योउपदेस बिघिरचनायहबिनसिहैं बिग्रहतजकुबिसेस
॥ ॥ ऐकजोतिखछंदतुम नासतहोनवरूत आपनमांकुबिरो
धयह अनुचितकरमअरूतार छंदपधरी ॥ द्विजरामसुनकुधर
माधिकार रघुरामसदाबरजितबिकार तुमआदिमध्यअवसा
नऐक आकारेरचतकारनअनेक उवहनामऐकेंदयाल षि
तिधरमहेतषेचरषयाल आयुरबलषयोधनुषअंत हयो
सोईअवसरपारसंत रघुरामनियतनिरदोषनिस अबिकार
अंगपूरनप्रकृति अनबिघ्रअमलतुमहेअनंत आगमकुनि
गमनहीआदिअंत बिनुबयरनेहबरजितबिकार नवरूतरे
तनवहरनभार आपनयोचीन्हकुसमयआज करियेबिचार
अबदेवकाज तजियेबिरोधनहीसमयतास समनावसदतुम
सावकास ॥ कबिरु ॥ दहा ॥ रोषपरलद्विजरामके रहेछोहउर
छार अनिलसंतुउपदेसजो बादलगयेबिलास ॥ ॥ दुकुरामउ
पदेसतें जुथनिवारिसुजान कहिजयरघुद्विजरामकृत हरिहरे
अंतरधान ॥ ॥ छंदपधरी ॥ पदसरो म ॥ पूरबवृतांतअप
नोप्रकास सोपरसरामकीनोसहास सुनिरामरलोकुध्यानस

धि अषेरछित्रछांडीउपाधि तुमकरेंगहरधनुषतोनि महसव
हसुनोमैंक्रोधमांनि यहदैवसरासनकरकुसाज अपनोबल
तेजदिषाउआज॥दसरथउ॥ सोसुनतआरहसरथनरेस नृ
पजुकतकलोसोतागविस रिषबंसउपजितुमपरसराम उजि
क्रोधसांतहतलयोताम कसिपहिहरिरघोअसेष बैरएपनेंम
लीनोबिसेष आकृतबिरोधअतिक्रोधअंग प्रतुजानतसबनै
गमप्रसंग रहिबालप्रतीछाकोनअर्थ सुरराजहितुमपूछन
समर्थ॥ नाग बा॥ कीनोंनचित्रहसरथकहाउ रामसोकहत
सांतिकसुनाउ दैधनुषरतनसुनिरामदेव उपराजिबिस्वक
रमांअजेव अमरनिमिलिसंतुहिरयेएक बिष्णुहिदीयप्रजोज
नबिबेक नगवंतधनुषदीनोअनंत भृगुपुत्रचीकहिलास
हंत जमदग्निहिदीनोपिताजांनि रनलयोमहमनमोदमां
नि कुजापकरतअमत्रजारे हैहयाधीसहहिसमयआरे तिहि
कामदुयालगिपापकीन ऋषिसाधबिप्रवहगउलीन सहसबु
जबलसोलेअहसुचार यहसुनतलगोकुपीआर हविकस्यो
जुथमेंसुरविहेत अलमास्यो हैहयराजषेत पुनिमहासमरसे
बिजयपारे अहिलायोअपनीकामगार वाकेसुतबकुस्योलगे
आनि मुनिहतोजमदग्निबैरमानि लैगयेदुष्टबधनुषधेनु सं
ग्रामबिनापायेसुषेन मोहितयोदुःषदारुनअमेय तवगयोच
क्रीरथसुतेय बिष्णुहितकस्योमैतपबिसेष रंद्रीनिदमनसाध
नअसेष अषिलेसचितआपकअनंत ममभरमजानिबरदीयम
हंत जिहिहेतदमोआतमद्विजेस बिप्रिसबेसिधकेहैबिसेस
ममअंसतेजतवमांझांनि करिहैप्रवेसपूरनप्रमांनि मिलिजुध
हैहयाधीसमारि पृथीनछित्रकरिहैप्रचारि दैद्विजनबेरकवी
सदांन मंत्रनिप्रयोगजुतउदिकमांन नरिरुषिरकुंडतरपनसंने
व करिहैतुमदारुनकरमदेव तवउपजैतुमकहसांतजाव दे
पृथीकसिपहिपूजिपाउ जुतसाधतावतपकरफुजार सबकाज
सफलकैहैसुनार क्रेत्रेतायुगरामावतार तवदरसनकरैकउ
दार उहलैकुअपनोतेजअंस पुनिसाधतावकैहैप्रसंस॥
छंदउधोर॥ दैमोहिबंछितदांन हरिनयेअंतरधांन प्रतुकु

पामेबरपाइ सबसाधकाजसुनाइ बलहयौ हैहयबेत लईसुरनिचाप
समेत वेरबिसुतुमअवतार नचन्द्रमिटारनभार यहबिसुचापअजे
व दिगबिजतलाजेदेव ॥ कविकुबाच ॥ हरिलयोरामसुहाथ सबचापते
जहिसाथ द्विजरामपरिनवहीन कोदंडहरषुजुतकीन करनातवो
निकराल कहिपरसधरहिकृपाल अनमोघसरममआहि कहि
बिप्रछेदोकाहि धुरधरमरामसधीर बधबिप्रउचितनबीर यह
नीतिजानिअषेद द्विजरामगतिकृतछेद पुनिचिरजीवितपार इ
हिहेतहरुपतिआर नाग वबाच ॥ छंद पधरी ॥ स्वयंबिष्णुरामतुम
बेदसाषि नवकजसकतनहीबिरितभाषि हेजनमचारजुवहरन
हेत सबनारसर्बसुआससमेत ममनाऊतोतवतेजमूल सोरलिये
आजतुमसानकूल मोहितयोसबेअबसफलकाम बिसमयरहि
जतेब्रह्मराम तुमदेवप्रकृतिपारगपुनीत बिधबिदअगोचरबि
तुबिनीत उतपतिथितिरतनकृपरतास समता४बलरदीय५
हानियनास ६ जगमायातवषरनावजानि येरसबेनाससंतवअ
पान बिष्णुतुमसदाबरंजितबिकार उतपत्तिआदिअंतनअधार
नतबिमलजथामलफेनजाल बिसतार धूमअनलहिबिसल
आधारतुमहिमायाअमान सबकाजअजितसंग्यासुजान मोया
हततोलोलोकमानि जगदीसनतोलोतुमहिजानि अबिचारसिध
उतपतिऐष बेरोयिबिद्यबिद्याबिसेष देहहिअबिद्याकृतदुरास
तिहिमिलिप्रतिबिंबतुम्होनतास चितसकतिजीवसंगमसुदार
सोरजीवनाथयहनिगमसार मनप्रानदेहअपनेमानि अनबुधि
बदतअनिमानआनि तिहिआपकरमतुगताकहार सुषदुषपात्र
तोलोसुनाइ नहीआतमकहसंग्रितबिनास बुयिबेग्यानलहिलषे
नास हरसंगचितअबबेकहोइ संसारीजीवहिकहेसोइ जकचितहे
तजबसमजोग बसतासचितचेतहिबियोग उपजेजकतजकसंग
आनि जलअनलसंजुगयहनियतजानि तवसाधसंगजोलोनत
हि उतपत्तिसुषतोलोनआहि ससारदुषजोलोबसाथ ननिब
रतेतोलोनरअनाथ सतसंगग्यानउपजेबिसास तबछनछनमा
यातजेतास उपजेकुसंगदुरबुयिआर सोरतवप्रसादनासेसु
नाइ प्रगटेतवप्रनग्यानप्रेम निहचेसुमुकतिपावेसनेम तस
मातरहततवजगतितास सतकोटिकलपबेरनिबिसास जीवे

तथापिनहीसुकतिजोगः पावैनसुषकौनकुप्रयोगः तवचरनसगतितोते
विचारि: मुहिजनमजनमहीजेमुरारि: जेहतअविद्यासंगजोग: लील
नवगवतरतरलोग: नवसिंधुतिरतेउसुनाउ: पुनिसकुलजात
कैसोकहाउ: जगनाथनमसतेजगनिवास: करुननमसतेसाव
कास: नमसतेसगतिनावनअनीत: श्रीरमनमसतेनाथसीत:
इत्याकबेसबनकंजनीन: दनुवेसगहनदहनकृसान: करता
रसुरनिसुरहेतकारि: महिमाअमेयजयमोहहारि: जयबिजय
सीलसागरसुरेस: जयदीनबंधुसोनासुदेस: जयबिजतअंग
कोटिकअनंग: जयरामसतनावनअनंग: जयआदिमध्यअ
वसानएक: इछाबिथारमायाअनेक: जयमहारुद्रमानसमर
ल: बितधरनकरनबेचरषयाल: मुषरसनिएकमहिमाअमान
ऊंकितककुकरुनानिदान: बसरोसकछुबोलेकुबानि: छमि
जेहयालमोहिदीनजानि: मैकरेपुनिजगजयतिकाज: तवबानप्र
वेसकुअबिलआज ॥श्रीरामबाचा॥ तुलतयेत्र सनरघुबीरताम
करिकृतनपूरनचितकाम॥ नाग बबाच॥ द्विजरामकलोदेव
धिदेव अतिकल्योअनुयहजोअजेव: नितुसाधसंगउपजेसने
म: परब्रह्मजुनवपदपदमप्रेम: प्रतिदिनसतोत्रयहकरेजाप
अचलजुकतसपवित्रआप: बिग्यानतगतिबाटेबिसेष परिनि
मतुमहिसमरनसुपेषि ॥ इतिपर सरामकृत सतोत्र सप्र
मतुमहिसमरनसुपेषि ॥ रामअबिलनवहीसअन: मांगतयहेमुरारि: पांनि
रतहा॥ रामअबिलनवहीसअन: मांगतयहेमुरारि: पांनि
जोरिद्विजपरसधर: बचनकहेसबिचारि॥१॥ सानुजरामसत
पसुन: सीतासहतसहास: बेदसहारुककरुबिहसु: बिसु
चितममबासा॥२॥ श्रीरामबाचा॥ तबरघुबीरप्रसनतहा: नष्ट
असतुकहितास: जोकछुमनअभिलाषद्विज: पूरनहोकुप्रक
सा॥३॥ जतजुतनेनजुरामजुग: तवकरुनारसलीन: बारबारअ
तिप्रीतिबस: निजअंगनदीन॥४॥ करेपरसधरपरिक्रमन: नां
तिनातिसुनताषि चलेमहेंद्राचलअचल: हृदयरामछबिरा
षि॥५॥ बाजेगगननिसानबर: गंनगंधरबसगान: पुहपबृष्टि
कीयरामपर: सुरसुरराजसमान॥६॥ मुनिजुसिधचारनमहत
रेषिचरितरघुरेव: करिप्रयानस्वसथानकहे: जयजसकह
तअजेव॥७॥ कसोपरसरघुरामकेव बिस्व

करीकिन्निनरहरसुकबि : पूरनरहतप्रमाद ॥१॥ इति श्रीरामचंद्र
चरितरामसंबादसंपूरनाम कबिकबाचाकबिता दीयपरि
नवद्विजराम बिक्रमअनूतकीय श्रीनारायनधनुषतेज जुतहे
लमात्रलीय सुरसिधनिसुषदयो जनकपनरपिजग्पजय महा
महीपमथिमान : जगतत्रयलोकअतयजय धुरघातबातचढि
गगनषिति अंसुमानतिहिअंतरीय : घनसेनिसानयुमरतसय
न : रामअवधिपथसंचरीय ॥१॥ दोहा ॥ सुनबेलापेंगोसुध अ
वधिनिकटदलआइ : हतनिअगनितदानलहि : सुषआगमनसु
नाइ ॥१॥ पटंबरमंदिर प्रगट बहुछाये बाजार : छिरकिसुगंधति
पथसब : उग्रिआमोदअपार ॥२॥ सातदिवसमुगसंक्रमीय दल
बललीयेबिसेस : पुत्रबधुजुतअवधिपुर : आयेअवधिनरेस ॥
॥३॥ ध्वजपताकाग्रहधवल : कनककलससुनकाज : द्वारद्वार
तोरनउदित : बिसदसुथंनबिराज ॥४॥ कलसआरतीसाजकृत
बनिबनिजुवतीबृंद : मंगलगानउछाहमन : आगमरामअनं
दाय ॥ छंदपद्धरी ॥ निजगेहआइदसरथनरेस : पुत्रनिसबो
मकीनोंप्रवेस : सुनसाजसबेबिसतारसार : द्विजमिलेजथा
क्रमराजद्वार : कुलदेविपूजिआचारकीन : द्विजगुरुबसिष्ठबि
धिदानदीन : मिलिसुतनमातआनंदमूल : सबनासेसंसय
बिरहसूल : नीसाननगरघरघरनिनाद : बरषामिलिमारुतजल
दबाद : बिसतारहोतमंगलबिधान : पायेमनुबिछुरेदेहप्रान : आवा
सऊंचचढिजुवतिजाल : तनदामनिदुतिपटजलदमाल : सबगेहघ
हप्रगटेसुगंध : अतिबिकसतमतसोरतनिअंध : बहुरंगरंगऊरुतग
बीर : नभमासमनहुबादरसनीर : सुषअंगेहरामबैदेहिसंग : अतिहि
तबिलासजोरतिअनंग : बेकुंठबिलुमनुश्रीयबिलास : तेईतेद
जानरसभोगतास : मिलिबंधुचारिजीयएकमूल : सबहिनसोर
यवसानकूल : नितकृतनियमजुतसावधान : नहीटरतनीतिमा
रगनिदान : पितुतासदेषिहरषहिअपार : आषेटधरमकीउदार
नित्यगावतहेजिहिलोकनाथ : मानंदरहसिरमनीनसाथ : श्री
रामसीयाबामंगसंग : अवलोकिअमरआनंदअंग : निसश्रीय
निगमहितनिरबिकार : बिसतारनिरावधिबितवबार : नेरा

चौ

सुधरमै
कुमार
मकरत
बिहार

सनियतकरुनानिदान · मायनुसारकारनमानः सोईआदिहमानु
षसंसार · अखिलेसकरत लीलाअपार॥कविता बालकेलिरघुबीर · क
रमविक्रमअद्भुतकीयः तारिबानताडिका · सुनुजसंग्रामसुसंधीयः मख
रक्षोकौसिकमुनीसः सिलतेत्रीयकिनीयः धनुषतोजिसीयबरीय
छोरहरुयुपतिगतिछिनीयः पुरअवधिआरूढनपुरुष · नवअनेकसु
षतुगरीयः काकुसथबंसउद्योतकर · कितिसुकबिनरहरकरीय
कहा॥कहेचरितरघुबीरके · बालकांडसुनबेष · निधनहरनमंगलक
रनः पूरनतयोअसेष॥१॥इतिश्रीपोरुयबेयनाबाश्रीरामायणे
महापुक्तिमार्गे श्रीअवतारचरित्रे श्रीरामोजनम बालकां
डसपूरण श्रीरामोजयति॥ अथअजोध्याकांडलिषंतो॥
मुनिनारदआगमनो॥ कहा॥ एकसमयमंदिरअजिर · श्री
यासहतश्रीरामः सियासनसुंदरसुषदः मनुबेरेरतिकाम॥१॥म
निजयकीसितचमरः सीतापानिसुचालः बिमलबिलोकतबिधु
बदनः अरिजनयनबिसाल॥२॥ससिनतउजलफटिकतनः बी
नाकरबरबानिः तिहिअवसरबिधिलोकतैः नारदउतरेआनि
३॥छंदपधरी॥ दरसनहमत्रउरिरामदेव · अखिलेसआरसनपु
षअजेव · कीनेसप्रीतितहनमसकारः करजोरिकलोदसरथ
कुमारः करिअरयपूजिबिधिवतअनेक · बिधुबदनबचनबोले
बिबेक॥श्रीरामोबाच॥तवदरसनदुरलभजगतदेव · हमसेसं
सारनिसुनकुनेव · मनरहतसदाबिषीयानिमांऊ · सुषराजस्व
छांतोरसांऊ · मनउदितपुराकृतनयेअनीतः तुमदीनोदर
सनजगपुनीतः कृतकृतनऐहमसकलकाजः मुनिकहुआगम
नहेतआज॥नारदबाच॥रासरथनगतबिछलदयाल · कामोहतु
महिदरसीत्रिकाल · करिकृपारामतुमसोहकारि · सुनबचनकह
लोकनुसारि · जाजगतआदिसृतअजेय · सामायातवअहणीसभे
यः तवजोगहोतउतपतिनासः ब्रह्मादिप्रजामयोबिलासः साम
यातवआश्रयसंसारः सात्विकरजतामसत्रिगुनसंग · सितअरुनअ
सितआतासअंग · त्रयलोकअहसथितस्वास्वतंत्र · महिमेहनहि
नबसजंत्रमंत्र · स्वरामबिहुश्रीयश्रीयबाम · नवरामनवाजनु
कीनाम · बिधिरामब्रह्मीसीयाबिसेषि · रविरामप्रभामेयलीपे
षि · ससिरामरोहनीसीयासंग · [illegible] · तु

मअनलसीयास्वाहाअकार: सेवतसुनाथपिबरतसार: यमजदपि
मतुमदेवदेव: संजमनीसीताकरतसेव: नैरतिरामतुमजगतनाथ: स
रबथातामसीसीयासाथ: बरनतुमरामलोचनबिसाल: नारगबीज
नकीतिलकभाल: अनिलतुमसरबगलिअंगअंग: सदागतिसुषदखे
देहिसंग: बेअबनरामसंग्रामबीर: संपदासरबसीतासरीर: तुम
कहनषिलनबन्दतनास: सीताकृपालीजुतसहास: सबपुरुषनाम
सोईतबसरूप: जोबिनाहेहमायासरूप: निहचेत्रिलोकतबमय
निहान: इहनसतकिंचिनहेतआन: गतमायातबसंगउ दितग
न: मरतहोतएकत्रमान: कारनजुहेतबुधिअहंकार: मिलिप्रान
पंचइंद्रीप्रचार: इनहोतप्रगटसोईदेहआहि: तबजनममरतसु
ष्षुषताहि: इनतेजबिछुरतग्यानआप: पुनिब्रह्मबहेकछुन
हिबियाप: सबसरूपजीवइनहीनिसंग: अकेयग्याहीवहअन
ग: तुमकरिप्रतिष्ठसाजीवजोति: हेतबसतुमहिमहलीनहोति
तसमतसरबकारनतुमेव: दुषसुषबनसेजबचीनिदेव: ममहे
तरजुजोलुजगनाह: छनरहतप्रिष्ठअग्यानछाह: उपजेप्रबोधछो
डिअनीति: ममदरेजुबहिमोहीलतीति: अग्यानहेतदेषतअनेक
उरचषअकासतबतुमहीएक: दुषसुषबिनाग्यीयहेदेह: निर
धारजीवसोनहीसनेह: यहसोहिअनुग्रहकरकृआज: नगर्व
तहोउतरनगतिबाज: तुवनाभिकंजउतपननाथ: सुतकंजनयो
ब्रह्मासनाथ: ममजनकसुयेब्रह्मामहंत: अबमोहिपोत्रजान
कृअनंत: आनंदसलिलचलिदिगनिओर: चाहतमुषमुनिजोस
सिचकोर: पुनिकलोकेरिनारदप्रकास: प्रठयोकेब्रह्मसतुहि
पास: रावनबधकारनतुमराम: तुमलयोप्रतंग्याजुकलां
म: जुवराजपिताकरिहेअजेव: दिनकेहोराज्यासकतिदेव: पु
निहतिहेकोरावनसपाप: अषिलेसप्रतंग्याकरीआप: बरदयो
मोहिजुवहरनभार: करियेप्रमानदसरथकुमार। श्रीराम
वाचा। नारदसोरघुबरकहिनिदान: मेकरीप्रतंग्यासोप्रमा
न: कछुकालआहिप्रबोधकाज: देकुसुषदेवनिदेवराज:
दसचारिबरषतपहितबिसेस: पुनिकरिकृदंडकबनप्रवेस:
मेथलीआजनारदमुनेस: आसुरअमूलकरिकृअसेस। क

बिरु॥सोईमोनिबचननारदसहासःपदवेहिचलेसुरपुरप्रकास॥दहा॥
करिप्रबोधरघुबीरकहः बिधिकेबचनबिधानः हरषवंतहरिगुनगुन
तः नारदगएस्वसथांन॥१॥इतिश्रीरामप्रतिनारदप्रबोध॥अथ
श्रीरामजुच॥ राज तिलकउछव कबिरु॥दहा॥केकयदेसनरेस
के मंत्रीबुधिनिवासः भरतकुमारहिलैनकोः आयेअवधिप्रकास॥१॥
पितआगमलैप्रेमपरः भरतसत्रुघनसंग मातुलियहगिरवजूतरो
आयेमुदितअनंग॥२॥ सेवतएकअनेकसुखः बिलसैरामबिलास
जोनवतजसुनोटरे आनिमिलेअनयास॥३॥ सिंघासनथितरा
कसमयः राजतअवधिनरेसः मुकरमोकदेषतअमलः सिरकपे
लसितकेस॥४॥ बरषअयुतनृपतानिलसिः अवधिनिकटत
रआरः उचितबुधिउसपनयहः नावीहेतसुनाउ॥५॥ तैसीहीउ
पजैसुमति सेगउदिसवटिसोरः तैसोमिलैसरतहः जैसीहो
नीहोइ॥६॥ छंदउधोरा॥ इकसमयदसरथराइः अतिनगति
गुरयहआइ ऐकंतवैठिअनंगः पुनिकहतग्रेहप्रसंग॥राजोवा
च॥ द्विजसुनकुरकगुरदेवः नवमभजुअंतरलेवः सुषबिनवराज
असेषः सबनुगतिहमसबिसेषः कीयअमरसमरसहाइः प्रतु
तासकीरतिपाइः बिधुबदनदानदिधांनः सबकरोद्विजसनमांन
अबआहिइछाएकः अनिलाषफलहिअनेकः जुवराजपददेराम
हमकरहिकछुबिश्रामः हमतिलकनिजकरदेहि रहिजनमके
फललेहि॥ बसिष्ठोवाच॥ पुनिकीयबसिष्टप्रमांनः मतिधन्य
देवसुमांनः यहसबनिकेअनिलाषः नवसुनतहमजनभाषः सोर
कहतुमअवधेसः निरधारकरहुनरेसः यहदेषिअमितउछाह सब
लैलोचनलाह धरिछत्ररामसधीरः बनितिलकरघुकुलबीरः क
बिरु॥मनमंत्रकीनप्रमांन रूपअहआरनिदांनः तहांबोलिमंत्रसु
मंत तिहिकहैसबमनतंतः अबकरहुउदिमएकः जुवराजरामहि
हैकः सबकरहुराजसुसिधः परमानबेदप्रसिधः॥कबिरु॥सोईकरे
मंत्रसुजांनः बिसतारबिहतबिधांनः संचारबेदप्रसिधः सबहोनला
गेसिधः॥कबिरुछंदपधरी॥ सुनकेनाषोउससुदरीयः कनक
कजरिअंगारकीयः जलतीरथपूरितउचितजोनिः इकसहस
कनकघटधरिओनिः त्रयसिंघवरमसिषनषसमेतः हिमदंडछत्र
सुनचमरसेतः ऋतुकाउचितफलपत्रमूलः संचारसिधसुरसो

त। गजचतुरदंतरूषितउतंग। गुंजतकपोलिमहगत
छनतन विसाल: स्वरनमयसाजमनिमुकतमाल: सबरहु
पफलजुकतसाज: बिधिबिधिअनेकमंगलबिराज: प्रतिग्रेहमाल
नप्रमान: बिसतारबिबिधबांधेबितान: अहकलसपताकाध्व
तंग: बनिद्वारद्वारतोरनबिहंग: देवालयपूजाबलिजुदीन: कू
मुकतनगरसुप्रसनकीन: किनरमिलिगंधरबगानकार: निर
कीबारमुष्पाबिहार: अनेकजांतिबाजित्रआनि: बहुमिलेबज
बिमलबानि: गजहयरथपयदलमिलिअगान: निरयोषब
लबाजतनिसाल: कैनगरमहोछवग्रेहग्रेह: सुजतिलकराम
रसनसनेह: ग्रहग्रहप्रतिजुवतीकरतगान: निरयोषबहुल
बाजतनिसान: मनिरतनदिब्यमुकतानिमाल: स्वरनमयबिबि
धिरूषनरसाल: द्विजबरबसिष्टगुरबामदेव: अनेकसिध्यमु
निगनअजेव: ॥ ६ ॥ बेरउकतिअजषेषबिधि: सबेसिध
संभार: आनिकरेएकंत्रतब: राजतराजदुवार ॥१॥ राजोबाच
कसोनरेसबसिष्टकहे: सोसनमानसनेह: रामतिलकजु
वराजको: दिब्यमहूरतदेह: ॥ बसिष्टोबाच ॥ प्रातबितीतेदेप्र
हर: करतमहूरतकाज: कसोबसिष्टबिचारकरि: रामतिल
कजुवराज: ॥ राजोबाच ॥ दसरथनृपआग्यादई: गुरअंतह
पुरजाइ: कोसल्यासोंसबकहहु: मंगलबिधिसमगाइ ॥४॥ क
बिरु ॥ रामचंद्रसीतासहत: जहांबिराजितजांनि: तबबसिष्ट
दरसनतहां: अनिवारतदीयआंनि ॥५॥ सीतारामसुजानसं
ग: आपुनसनमुषआइ: करुनाजुतदेकोतकरि: पुनिधायेगु
रपाइ ॥६॥ श्रीरामबाच ॥ सिंयासनदेस्वरनमय: गुरहिरामगु
नग्रांम: करअंजुलिजुगजोरिकहि: धन्यआजममधाम ॥७॥
बसिष्टोबाच ॥ सबबिधिमांनिबसिष्टमुष: जगकरताजीयजा
न: लोकधरमउपदेसलगि: प्रभुसोईकहतप्रमांनि ॥८॥ छंद
बोल ॥ परमातमाउमपुरुषपूरन: स्वयंसिधसरूप: साध
हितसुरकाजमाधव: नयेरघुकुलरूप: तुमअमितमाया
नुजतनधरि: देवदीनदयाल: लेकेसबधहितजनमलीनो: ब
लसमूलषयाल: यहमंत्रहेअतिगूढआपुन: दयोबिधिबरदान

अन्यत्र नहीं उदधाटिबो अब नाथ निगम निरनै: पुनि सुनहु रघुकु
लतिलक सूरन पुरुषराम प्रवीन नृपपरोहित परिषनि सचल
मानि करम मलीन मैं सुनो आगे ब्रह्म के मुख बेद बिदित बिचार
इक्ष्वाकु कै कुल राम आपुन लेहिगे अवतार तानि मत अंगीकार कृत मैं
पुरोहित पद पाइ प्रभु नये मेरे काज पूरन सबै आज सुनाइ अखिल स
इछा एक अब उर मोहु उपजत आन तव मम मायामोहनी मम नहि
न आपनि रान ॥ श्रीराम बाच ॥ ६ यों हीज कै है देव इछा रिषि करहु
निरधार मध्यान आपे तुम हिम पुनि सदा सुध संसार ॥ वसिष्ठ
बाच ॥ पिनु दे हिगे जुवराज पद तव प्रात अवसर पाइ सुत जोग बी
ति मध्य संध्या सुधल गन सुनाइ पृथीस करियेष्ट थक सज्जा सयन
हित उपवास तहां रहहु संजम नियम जुत तुम ब्रह्मचर्य बिलास ॥ ६
॥ करि प्रबोध रघुबीर कहं गुरु अंतपुर आइ रानी कौसल्या हितहि
सब बृतांत सुनाइ ॥ ७ ॥ कुलदेव निपूजा करति कौसल्या सुनकार दं
न होम सनमान द्विज: जथा बेस बिबहार ॥ ८ ॥ इंद्रादिक जा हा रं
महोदिजुवराज बनै कैसे बनजै बो बिनु बनवास बिसेष हरन
सीता क्यों कैबो जौ न हरन सीय हेर आतताई क्यों रावन बिनां
दोष बध बिप्र पुरुष करि हैं नहीं पावन: बध बिनु दुष्ट सब दन
कैं सुर कारिज कैसे सरै सुर कहत देवि सुरसति सुनहु अवनि
नार क्यों उतरै ॥ ९ ॥ इहि अवसर इंद्रादिक न: सोच बढ़ो उर
सोइ पावहि राम जुराज पद हरन सीत क्यों होइ ॥ १० ॥ अब तातें नि
रधार यह करियै कछु छल काज: जा हि राम बनवास सजि: राम
तिलक जुवराज ॥ ११ ॥ महातब काम थारा: कैकेई कीधा: ताके
उर आपत तब: सरसेरही समाइ ॥ १२ ॥ मंथरा उ ॥ आवत कुबज
राज ग्रह: सो नागर निहारि: पूछो उछव कौन यह मंगल यह
ग्रह हारि ॥ १४ ॥ स्वो कहु ॥ जाकहं पूछो जिहि कहो: रामतिलक जु
वराज सो कै है मम करत सुषद: दीय बिहान युवराज ॥ १५ ॥ उपजो
हासी दाह उर: मनु सुनि आगम मीच: जो कपि लागे कुब्जरा: नाच
न लागी नीच ॥ छंद पधरी ॥ नारी सुभाव यह जग निदान उत
कर षन हि न सहि सकत आन सुनि राम तिलक उपज्यो संताप
आगि बिनु जरति मंथरा आप: कोपत तन लोचन अरुन कीन
भकुटी कुटिल चषरोष लीन ॥ इहि रूप कैकई ग्रह आइ बैरोध

बिसनबूदी बलाइ: निद्राबसतहारानी निहारि पापनी रुदनकीनेपुन
रि॥ मंथरोबाच॥ इहिसमयनीदअवतिअर्पान तोसीनमूदकेउत्र
यअनि॥ कैकई॥ सोसुनतउगीरानीसषेद: तेजीतजरीपूछतसन
हा॥ मंथरे॥ यहबातसुनीमेअतिअनूत: प्रीयराजदयोतवसोतिप्र
त: सुनलगनप्रातमंगलसमाज: रघुरामसुपावेअवधिराज॥ कविरु
मंथराकलोमनक्रमसमेत: कीयहरषरेरतयकवनहेत: करजोरि
रामबकुकरतकानि: जननीतेमोकहअधिकजानि॥ मंथरा॥ तब
फेरिकलेमंथराताहि: अवसथाप्रोढबुधिबालआहि: नृपअह
जनमतहपिअर्पान: पानिअहनृपतिदेसरथप्रमान: पतिएकप्र
यपतिएकप्रान: पतिबिमरलताआसकतआन: तुमरूपगरबन
हीजानिताहि: अमत्रआपमनअंतआहि: सुषदेततुमहिलोलो
समीप: पलओटमित्रकाकेष्टथीप: तुवपुत्रपरेमातुलनिकेत
तवसोतिपुत्रकहराजदेत॥ दहा॥ रामचंदलछमनदुवे: एक
सहजमतचित: पावहिरामजुराजपद: लछमनमंगलनिस॥
॥ दासनावनजिहैनरत: नातरिदेसनिकारि: कछुसपरध
जोकरी: ततोफरिबेमारि॥ ॥ जायेजननीएकके: ऊफिमरतज
गजेत: अचिरजकामाताउनय: बिअहनादबदंत॥ ॥ एकहीक
सिपतेउपजि: देतदनुजनरदेव: अवरमातयरबेधहहि: अजफुल
रतअजेव॥ ॥ नातेप्रीतिनकोउगनत: अवनिलोचउतपात
एकमरतउपजतअवर: राजबेधनसिरात॥ ॥ दासीकेहेपु
सहदुष: तुमकोसलाअहि: बिनताकहकीकथा: सुनिलेनिस
दिहा॥ मंथरोक्त बिनताकहपूर्वप्रसंगा॥ दहा॥ सु
नहुकथाएकसुंदरी: सोतिनकीसबिसेष: मुषपीयूषउरबिष
मबिष: बिअहबादबिसेषा॥ ॥ उपजीएकमाताउदर: कद्रू
बिनतानाम: दहप्रजापतिकसुता: रिषकसिपकीबाम॥ ॥
एकसमयआनंदअति: जबप्रसनपीयजान: निजमनबंछित
नांमनी: दुहुमांगेबरदान॥ ॥ कद्रूबाच॥ कद्रूमांगेजोरिक
र: आकृतबिषमअनूत: सहसनिसेषाअतिसबिष: पंनग
होहिममपूत॥ बिनताबाच॥ बिनताबरमांगेबहुरि॥ न
दिहुपुत्रममदोर: नागादिकनवहूततिन: करेनसमतकि

सुनत
दासीहुष
हारदीन

र ॥ कसिपो बाच ॥ स्येबचन बरहंनदुव कसिपप्रेमप्रकास ऐसे
हीकै हैअवसि बांमांकरकुबिस्वास ॥१॥ तहांनवीबसगरजथित कर्
उनयज बनांम कसिपजुवतिनसोकसो करियोजतनसकांम ॥२॥
अवधिसपूरनगरभरे हितबछितसब होर अकबिनेदनआपतें क
रकुनलि जिनकोइ ॥८॥ मथरे ॥ कसिपत्रीयनिप्रबोधकरि आप
गयेउद्यान तहसाधनकृतउअतप बेदनिबिहितबिधान ॥९॥ छंद
पधरी ॥ इहकरजुतउछवअनेक अकप्रसूतभयेसहसएक जे
प्रसनबकुरिबिनतासुतार अकडेउपजेउदरआर अकासुधरमृ
तकृतआनि प्रतिरहृदयजुवतीप्रमानि सतपंचबरषबीतेसुत
इ इहासरपअपेबलनिकसिआर ॥ कहबाच ॥ कहकेबंछित
भयेकाम पायेजुपुत्र बकुतुजेगनांम इहांउपजिसोचबिनताअ
नंत किबवरमिप्यातयोकंत ॥ बिन ते ॥ सुतसोतिदेषिबकु
बदीसूल मेपयेएकनपुत्रमूल ॥ मथरे ॥ कांमनपुत्रनहीबि
लबकीन इकअकफोरिमनतोमलीन अधअंगरहतउरधअंग
प्रगटेतिहिअकअरनपंग ॥ अ र ल उ ॥ दुषभयेआपअरधांगदे
षि बिनताहिअरुनबोलोबिसेषि अनअवधिफोरिअकजुआज
कृतआपकाजमेरेअकाज चितजतनिकोनअपराधचीन कि
हेतमोहितेपंगकीन असहनअहहासीहोकुआप परिचरबकु
सहिहोरहीपप पंचसतबरषदासतपार सुतद्वितीयमोछिक
रिहेसहार बरषसतपंचमातबिधान इहिअकप्रतीछाकरि
मान यहद्वितीयअकजिनकरकुनेह बिनुअवधिबितीतेबिरु
थबेह अरनकरिजननिउपदेसएह संक्रमोअरकमंकलसने
ह ॥ मथरा ॥ ह ह ॥ महापयोनिधिमथनमिलि कीयसुरअ
सुरसमान रतनचतुरदसकाढितहां कीनेपुहविप्रमांना ॥१॥ अ
स्वनिकसिउचैश्रवा ससिआनातनसेत अमिततेजबिक्रमअतुल
सुनगुनलछनसमेत ॥३॥ कसिपरिषकीउनयत्रीय इकसमयस
यसंग बिसदगवाषिबिलासबस बेगीअहुतेग ॥४॥ छंदपधरी ॥
कबिकु ॥ बूझोकरिकहुछलबिधान बिनताउचैश्रवाकवनवा
न ॥ बिन ता ॥ उतारफिरिबिनताहथेयेह सरबांगसेतहयक
सदेह ॥ कहबाच ॥ पनबाधिकसोकहुसपाप हेअमरबीचअ
रुआहआप जोकहेयाहिहयसेतकोर

हयनयोकहलजोदेवहेत: करिकुतोहिहासीममनिकेत॥ मंथरा॥ कहु
मपपथरमपणडुकुनिकीय: नगनीसपतिअरुतथात्रीय॥ कहु बा
च॥ सुतबोलिलक्षसंभानसाप: यहकारनकहुकलेआप: दासीत
बाधिपनबचनदीन: कीजायहबिनताहमजुकीन: उचैश्रवाहयह
खेतआहि: तुमअजनबरनसुकरकुताहि: अनकरेपुत्रछलकाज
एह: कहैकहुदासीसोतियेह: करिहैनकाजयहपुत्रकोइ: मुषस
रपदाहमहजरेसोइ: करिहैजनमजयसरयसत्र: तेनासहिपैहैद
गयतत्र॥ बिधिबाणीयहसुनेजबेबिधिसरपआप: आयेकसि
पअहतबेआप: समझाइकहोतहासमाधान: मतहोकुत्रीया
सोक्रोधमान: जगअहितआहिअहिदुष्टजंत: तसवृधअयन
हिनपरंत: जिहिहेतछीनषलहोतजाहि: मानिबोअयसोइ
बिस्वमाहि: बिषहरमंत्रबिद्याबिधान: पितुदयेकसिपाहि
करिप्रमान: समझाइपुत्रकसिपसहेत: तबगयेब्रह्मअपने
निकेत॥ मंथरा॥ कहुबिनताकुकुतनिदान: पनयेहप्रात
करिहैप्रमान: येरहीसोइनिजगेहआइ: पनबांधिसुनबीजि
गपाइ: उरसरपत्रासउपजयोअसेष: सबकरतनयेचिंताबि
सेष: यहसमझिगयेबिषमुषअसेस: कीयासिषेपुछरोम
निप्रवेस: प्रगटेकुचैश्रवाअनरूप: बेबरनसिताअसितने
बिरूप: इहकहुबिनताउनयआइ: पेमोहयनबसुतसोक
पाइ: पनजीतोकहुकपटपाप: अरुबिनताहास्योबचनआप
बिन बाणीकीनोप्रमानबिनताअकोप: लाछनहैसोपुनि
बचनलोप: पनकस्योसाषिसुरसोइप्रमान: मिथ्यानहोइ
अयत्रासमानि॥ मंथरा॥ हमिदुषसहतसबसोतियेह: दा
सत्वकरमबिनतासुदेह: परिनवजुसहतिअतिहृतबिक
रि: मुषकेरिनबोलतमानमारि: दासीतदुषदारुनदुस
घि: पुनिकरतिसोतिनित्यनवउपाधि॥ अथगरुडकेज
नम॥ सतपंचबरषबीतेसुनाइ: उतपनगरुडकोसम
यआइ: अवधिबसतयेपूरनजुअंग: नवतब्रह्मतबलक
टेप्रकास: महकाइमहाबलअप्रमान: प्रगटेसुगरुडष्ट
थीप्रमान: अगनिसमतेजतिहिदेहआप: सोकरतमह

त्रैलोकताप: सबदेवचराचरकेसबेद: दहनपहुंगयेअगातनेद॥सुर
बाच॥सुरकलोअनलसोंनयसमेत: तुमबिस्वहिजरतकवनहेत: अ
पनजुनीतिजानतअघेरु अपराधबिनादेबोनदंड॥अग्नि॥उतरत
बहीनोअगनियेह: नहीकारनमेरोनिसंदेह: बिनतासुतउपजोग
रुडबीर सोमहातेजअनमितसरीर: तिहितेजबढ्योयहबिस्वताप
आराधकरुतिहिप्रसनआप: सुरआरसबेजहागरुडसाथ: अति
कारतेजदेखोअगाध॥ सुर बाच॥ सुरतहाअगटकीनीप्रसंस
ऊवधरमहेतुमजहमबेस॥ मथुरा॥ सुरलोकगयेसुरकाज
साधि: रहातापसमितिनयोमिटिउपाधि: सुनसांतरूपकरि
लयुसरीर: बिनतायहजायोगरुडबीर॥गरुड॥ मिलिहेतजु
कतपूछीजुमात: यहदसाकवनतुमहु: बहात॥बिनता॥ दुतां
तकलोबिनताबिचारि: कतईहासिपनबचनहारि: कहुमिलि
पुत्रनिकपटकीन: हयरोमपेक्षिकतबरनहीन॥गरुडबाचत
बसुनीबातकहिगरुडताहि: अपराधीमेरेसर्पआहि॥मथुरा॥
मनगरुडसरपअपराधमांनि: उपजोतिहिकारनबैरआनि: तब
तेबिनतासुतकेसताप: उरगनिकोनहानकरतआप: दिनपुत्रन
सतयपाइनेद: सुतसोकतईकहुसबेद: अगारगोबिबयिअस
त: अतिदुसहजारेबसनअंत: गतिसरपगंधमूसीअसंत: चप
नासतजेअरुनषेअंत: अरपेगिरहरोवतअपान: महिलाजोत
सकरसोकमान: उरिमबलनाहिनपुरतआइ: परबोधसामसू
झोउपाइ॥कहुबाच॥कहुबिनतासोप्रानितकीन: पितमात
येकउतपतिप्रबीन: तबहनप्रानबछवसप्रीति: अपानजुकतमे
कतअनीति: दासीतनोहिदीनोकुदाइ: कुतईहोपनाजनसुनाइ: दास
तनुभनोहिकरोमर मंत्रकजपेमानकुसमूर॥बिनता॥कहुकेव
चनबिस्वासकीन: पतितातबपूछीबियिनवीन: कहिकहुकारनक
वनकाज: दासतनमिटैमहुषसमाज॥कहुबाच॥मथेसिंधुसुरास
रलीयप्रमान: वहअमृतकुंभमोहिदेहुआनि॥बिनता॥सोफेरि
कहोबिनतासुनाइ: बुसतवहकहाहेसोबताइ॥कहुबाच॥लव
लोदधिठहैसबरलोक: सबबसुतनराप्रानीअसोक: बिनता
महरहतनिषादबीर: तिनकरिकहरहतसियुतीर: पेकोतगोरवह
गूटआहि: तातेनहीजानतअवरताहि: अमृतघटधरोतिहिगोर

आनि मनइंद्रतहानिरनीतमानि॥ बिनताबाचा॥ इहिकारनबिनता
ग्रेआइ सबकसेपुत्रगरुडहिसुनाइ॥ मंथरे॥ सोसुनतसयो
सुषगरुडसंत अनलमनुपवनचढिबढिअनंत इकनिमषमात्र
तहागरुडआइ सबषोजिनिप्यादनिगयोषार षायेनिषादजद
पिनिसेष नहीबिगतछुधातदपिबिसेष तपकरतजराकसिपप्र
जाप इहिसमयआइतहागरुडआप पदपूजिपिताकीयनमसक
र पहचानिपूछियहबिचार॥ कबिरु॥ कारनपिताहिसबप्रगट
कीन बिनताबिपतिदासतदीन॥ कसिपा॥ पितुकसोसुनतकार
नप्रासिध लेजाडुसुधाकृतकरडुसिधा॥ गरुडा॥ कुआछिधार
नप्रमितआज सामरथनहिनकछुकरनकाज॥ कसिपा॥ रिषिकहे
इहारकसररसाल बनलताग्रहनअतितरतमाल मदमतदुरद
इकमहप्रमान सरवरतिहिआयोजलसनान इसजोजनदीर
घतासदेह दादसलोलाबोनिसदेह जलपैकिरतक्रीडासजो
र आंदोलसलितलोचडुओर तहारहतकमगरकमहाकार
जलदेखसबदताकहजगाइ बपुडुचोत्रयजोजनबिथार कय
पचदिउनबरतुलाकार सगडुदृष्टरबबेरानुसार अद्याबधिकृतब
लअपार सोकरडुजाइतहनसकाज रसनासस्वादकरिपहरा
ज॥ मंथरे॥ यहसुनतहरषगरुडहोइ सरआइलरततहादिषि
सोइ करनषरअग्रमवयहनकीन लेतयोकमगजगगनलीन
कारुनाकृतकिडुसरितकूल सुरवृछडुनेतहाअतिसथूल सं
पातपछिमारुतसचाल बनवृछगिरतकेपतबिहाल॥ महावृछ
गरबजुतवृछइककहिगहीर बनत्रासदेतकतमहाबीर वृछते
हिसतनजोजनबिथार साषाअनेकपल्लवबिथार ममसाषबे
ग्रिआनदमान दिनकछुकरहकरियेनिदान॥ मंथरे॥ इक
साषअथोमुषलबआप रिषबालषिल्पतहातपतताप साषाबु
नहेसुतब्रह्मसंत अगुष्ठमात्रतनतपअनंत संपाअआसीस
हससोइ हमसाथतजोगबिदेहहोइ तिहिसाषबेग्षिगरुडजत्र
सोपरीदृष्टिलुग्तपत्र तिहिकारचंचयहिउनोतास अतिबेग
गरुडमारगआकास बिसदमिरगंधमादनबिप्रात तपकर
ततहाकसिपसतात कीयपितादेषितहानमसकार अबि
लोकिगरुडबिक्रमअपार पितुकसोसुनडुकरुणापूरी

त॰ ईहिसाषालेबितहैअनीत॰ रिषबालषिलजेउरधरेत हैंडुषितनयेसा
षासहेत॰ रहतेहैजोजनलहएक॰ हिमवंतअदिकिंदरअनेक॰ यहसाष
राषकउहाआज॰ सुषबालषिलपावहिसमाज॥ मंथरउ॥ लैगयौतह
छनमात्रलाग॰ साषासधीरकिंदरसतागः गिरअंगवेहिहिमगरुतमा
न॰ मातंगकमरतुगतेअमानः तिहिनयोत्रिप्रजबवैनतेयः उठिचलो
गगनपथबलअमेयः संपातपंषुसुनिअमरधामः त्रयलोकनयोआकं
पतामः कुवअकसमातउतपातहेत॰ सुरत्रासपरयोसुरपतिसमेत॰
दिवबाचाचतुरंगचमूकछुनाहिचीन॰ कोउसत्रुनदीसतकेपकी
न॰ कहाअसंतावउतपातआजः देवगुरुपूछितवदेवराज॥ बृहस
पति॥ गुरकहेबृहसपतिजोगपान॰ महिनयोजनमहैंगरुतमा
न कीयउदमअमृतहरनकाज॰ तिहिबद्धोतेउ उतपातआजः सं
पातपंषतसबातसंग॰ ब्रह्मेकहोलिथिरचरबिहंग॰ सुरराजसुनि
अनरहुएहः दुषबढ्योक्रोधनसमातदेह॥ मंथरोबाचापठयेजु
इंद्रचतुरंगपूरः सनाथबधसुरसमरसूर॰ सुरआइतहासबसाव
धान बिसतारअमृतरहाबिधान॰ सोरहेरोकिपथसमरसूरः पा
वेनपवनबिचगवनब्यूह॰ अप्रमानदेहरहिसमयआइः संक्रमेगा
रुडअपनेसुचाइ सुरसेनगरुडरोकेसक्रुध॰ जाजुलनयोबकक
लजुध॰ संपातपंषरजचढिअकास॰ आछननयेसुरबिगतआस॰
दिगमूढनयेदिगअंधदिव॰ आवैनदिष्टषगपतिअजेव॰ नषचं
चपंषपूरनप्रहार॰ संग्रामहोतसुरगनसंघार॰ आकंपनयेअति
इंद्रलोक॰ गयेअमरनागिअपआपओक॰ सुरनयेबिकलतनसत्रह
र॰ धरजातनिरतररुधिरधार॰ सरिताजुचलीअतिओनसंग तिहिमह
रोअबिरलतरंग॰ सुरनयेपराजयसमरसिध॰ पयोषगेसतहाजयप्र
सिध॰ थितनयोआइतवअमृतथान॰ तहाचमतचक्रअयमयनयां
न॰ सोदेषिगरुडकतलयुसरीर बिचिपस्योकुदितिहिचक्रबीर॰ रहित्र
मतचक्रबाहरिसंचार धरितिष्ठ बिबिधित्रयघोरधार तहामध
सरपंदेदेषितासः मुषबिघतचषबिषअगनिवासः दारुनदिजि
ह्वअनिमेषवान॰ बिषअवतनैनदाहकबिधान॰ सोदिष्टमात्रजा
रतसंसार॰ आकृतअनिष्टचितबेगचार आघातपंषकृतगरुड
आरः सहबेगअनलरजउठिसुचारः आछननेत्रअहिनयेआ-

नि: सुनैनकछूतमगगनसोनि: जोबेनतेयअनदिष्टनाह: तहांअमृत
कुंनलेगोउगइ: लेचलोगगनमारगसलील: सुनसिधहोतसाधनसुसी
ल मिलिबिष्णुगरुडकहंगगनमाग: अतिबेगरेषिबिक्रमअथागाश्री
बिष्णु॥ बिष्णुकहियेनतूबेनरेय: अतिहृष्टमागिबरजगअजेयाग
रुड॥ गरुड बरतबेमोग्पोअनंग: सेवापरिराषकुनाथसंग॥ बि
ष्णु॥ पुनिमोगिगरुडकहिहरिसप्रेम: निरधारचितबंछितसनेमाग
रुड॥ मोग्पोसगरुडआनंदमान: प्रभुकरकुअमरबिनुअमृतपा
न॥ श्रीबिष्णु॥ तहतथाअसतुहरिकोआप: मम्ध्रजाबसकु
तुमबलअमाप: सोमानिसाधुमनक्रमसमेत: करतारनयेतबग
रुडकेता॥ गरुड॥ अतिहरषवंतकहिगरुडयेह: लिछमीपतिकछु
बरतुमकुलेकु॥ श्रीबिष्णु॥ बरलयोबिष्णुयहजगबिराज: रथहो
कुहमारेबिहंगराज॥ मंथरो॥ परसपरलयेबरजगपुनीत: न
येबिष्णुगरुडबाहनअनीत॥ रुडा॥ आपुनहरिबाहनलयो: अरु
हरिध्रजानिवास: सुनसेवकअग्रेस्वरी: हरिकीनोसप्रहास॥१॥
छंदपधरीउठिचलोगरुडलहिबरअनंत: सोपवनसपरधाकर
तसंत: इहांइंद्रआनिपुहप्पोउदार: पनंगारिबज्रकीनोप्रहार॥ गरु
ड॥ तबबज्रइंद्रलयुकुसमतल: मोहिलग्पोबिथानहीउपजिमल
नदृपिदृधीचअरुबज्रतेहि: कछुदेउमानमनआहिमोहि॥ मंथ
रो॥ इकपंषबंचअहिलईडषारि: दीयमानइंद्रकहदईडारि: तिहि
कहिसपंषत्रयलोकताम: निकस्योसुपरनतबगरुडनाम: इहां
पस्योषिसानोइंद्रआप: तारहमंत्रकीयसहिनताप॥ इंद्रोवाच॥
मिलिसषालयेहमतुमसमान: मुहिकहुआपनोबलप्रमाना॥ ग
रुडा॥ अतमबलबिक्रमबुधिअंत: सरबथाअकासतनहिनसं
त: कहिकुनथापिकिचितलुकोइ: होप्रछतजोतुमभिंत्रहोइ: नू
गोलचराचरबिसदबास: इकपारकरषिकुओअकास: तोसेग्र
नेकमिलिइंद्रमोहि: जुतलोकप्रलबितनयेजाहि॥ इंद्र॥ आइ
इकहाअनतबिक्रमबिसेस: सुनवेसबेतुमकहषगेस: निहचे
करिकरिसुनियेपरमनीति: जगरहमकहतहेबिसप्रीति: तुम
तोनहीपीवतअमृततास: पुनिदेहोकरुकहप्रकास: प्यारहै
सुतोपुत्रनिपीयूष: कछुजिहउपजेसरपकुष: दुष्टवेअमरकै

हेंसाथि अहिनोअनेककरिहैंउपाथि ऐवनिथहतेअमृतरेकु लो
कत्रयरक्षाधरमलेकु॥ गरुड़ बासवहिंकुड़जुतकहिबिबेक अं
मृतलगिहमहिहैंकाजरेक ममसंगइंद्रमहिमाअमाप अगपातरु
पतुमचलकुआप करिकाजसिधधरिकुरकंत तुमसुधाकुंत
लैजाकुसंत करिकुअबनाहिनिषीजकोर हरिजाकुअमृतलैअ
नयहोकु॥ मंथरो॥ थरइंद्रमंत्रकीनोप्रमान आयेजुसंगक
रिरूपआन अमृतघरयोमाताहिओनि पनकसोगरुड़बु
धिबलप्रमानि अमृतघरयेहकइंद्रअसेष बिनताकुगरुड़
आसोबिसेष॥ बिनता॥ दासतछुटोहमगरुड़राषि सोईक
हिकुइंद्रसाषि॥ कद्रू बाच॥ अपराधछमकुममबहनयेकु हे
ग्रानप्रीयतुमनिसंदेह सुतयेहजाकुअपनेसहास तुमनयेमु
कतपनबंधतास॥ मंथरा॥ इहअमृतपानकहंनागआर सु
तबचनगरुड़बोलेसुनार॥ गरुड़बाच॥ दोहा॥ सुनकुमातत्रा
तासकल अमृतरतनपयआहि कतसुमंजनदानकरि आं
निपीयकुपुनिथाहि॥ मंथरा॥ कुसकासेकुपरकलस सुधा
धरेसुबसंग नागसमूहसुबिमलनद आयेमंजनअंग॥ गरुड़ सिआरेअपयह सोबिबधपनमात नाकतकुतेसुरस
तहा तबपूजीसबघाता॥ इंद्रलोकलेगेअमृत कीयबास
बसुरकाज सुजसतयोत्रयलोकसो सुषतयोअमरसमा
ज॥ करिकरिमंजननागकुल अहआयेसुषजेग तहानप
योअमृतघट पूरनतयेप्रयोग॥ कहीकथायहमथरा सोति
नकीसबिष्मादे होतसुरासुरयेहहग बिग्रहबिषमबिबादे॥
इति कद्रू बिनता प्रसंग॥ श्रीरामबनवासो उ तमकबि
रा॥ कबित्त॥ दिनकरकिरनिमलीन दिवसअसमयउदे
न कंजकुलाहतकरत धरनिआसनजबुधन फेरसबदफे
कार बिषमबहिबरअबारनि उलकादंडप्रचंड पतनबरषारत
धारन तबकृतभूमिकंपतसमय प्रलयकालपरमानथो उत
पातहेतआगमअसुभ हानगदीसनजानयो॥ कबित्त॥
दोहा॥ कुबजेकानैषंजजे कुटिलकुजातिकुचाल त्रीयाबिसेषजु
दासिका इनकेऐईहाल॥ ७॥ आगेपाछेसोचनहि कर

अनरथ उपार इन के बचन बिलास मम हि जगत प्रलय कै जारा ॥ छंद ॥ प
धरी ॥ चित गिरा हास सुख काज चीन्ह कैकेयी हृदय परवेस कीन्ह त
न कलत्री या मति फिरी तास मंथरा बचन कीनो बिसास ॥ कैकई ॥
कहि जननि करो अब कवन काज अवलंब बुधि मम हेतु आज
मंथरा ॥ मंथरा बोलि तब कपट मूल कुल देवि हेतु तव सान
कूल ॥ कबि कबाच ॥ हहा कैकेई कंत समय बचन तव श्रुति कि
न दुष साथ तिहि रोष बस दुष दहि आपन बदीन ॥ १ ॥ बाले बुधि त्र
नी निबस परकु संग प्रकास मम आपहि सब लोक मह कैहै
नव उपहास ॥ २ ॥ कैकेई द्विज आपको नावि जोग सुनार मिलीस
हा कमथरा अवसर बसो सुआरा ॥ ३ ॥ पायो दाव जु आपनो
कुब्ज आप प्रकास उपदेसो स्वामिन अहित बिय नृपति बि
नास ॥ ४ ॥ मंथरा ॥ परिनवसो तिप्रताप करि तिहि जीवन धिक
र अहंकार सो आपनो मरिबो मंगल चार ॥ ५ ॥ दये फुनि बर दान
है नृपति हि सहत सनेह तेथा तीरथ बिति दिन हव करि आज सु
लेह ॥ ६ ॥ बरष चतुरदस एक बर बसहि राम बनवास भरत ध
नीय बर माँगु तुव पावहि राज प्रकास ॥ ७ ॥ कुब्ज ॥ कैकेई प्रि
बोध करि कुब्ज गई निकेत असंतावन अरथ अब कैहै नावि
हित ॥ ८ ॥ कबित ॥ दयावंत अति धीर अबिल गुन जुत आचारि
य नीति धरम करि निपुन बेद बिद्या सब बिचारीय सत बिबेक
सुसील सरल सुभ बाक सुसंगीय उच बंस उतपन बिमल म
ति बिजत बिअंगीय अति दुष्ट परायन पापपन संगत सजे
अनुसरे दिन राति ताहि दुर बुधि हे क्रम हि आपजे सो करे ॥ इ
ति राम तिलक बिघ्नो पदे सनो ॥ छंद ॥ मलिन बसन तन स्व
समुष कुटिल त्रिरेष कपाल नूषन तोरे सयन तुव लोचन
चढे लिलार ॥ १ ॥ उर धरो मत्र पकंपतन दरत नयन जल धार
मिलि आगम बेध्य मनु कै बिधि सूचन हार ॥ २ ॥ तहा कुब्ज
उपदेस तैं बनी सबै बिपरीत रामगमन राजा मरन सोक जरत
दुष सीत ॥ ३ ॥ या कैय हयेही समय सुष आगम अवधेस सनमु
ष नारी सुंदरी पूरब जघ प्रवेस ॥ ४ ॥ राजो बाच ॥ राजा पूछीस

हचरी प्यारीकहप्रवीनसाहसी॥ क्रोधागारप्रवेसकीय:दासीउ
तरहीन॥ राजोबाच॥ छंदपधरी॥ क्योंगईबिलंबतांतिहिनिकेतदास॥
हमजानेनाहिनिदेवहेत:सुनियेनरेसतपहिसिधारि। सबकार
नसोकहिहैसंनारि॥ कबि रुबाच॥ छंदबेताल॥ नृपदेषिसूनेन
वननिसचे तहबदीउरत्रास बिघिजुकतनारीसमुषबामा स
राजोसबिलास पकुनोसुनैग्रेहकोजो पैगिपुनिपिछतास चि
तबिकलचकुयांचकितचितवत बुधिबितर्कबदाइ नयउदयि
थाहतसेजुनामनि ग्रेहमहदसरथगये बिपरीतबेषबिलो
किबिनता नीतजुतबिसमयनये॥ कबित॥ नतहीदेषीसुनी
चित्रकुबचनअगोचर असंनतअनचिंत देवदानवकरिदुत्र
नगसुरासुरनरनि ग्रंथकाहुनहगाई बिद्याबिसनबसेष ब्र
हमबेदनिनबताई अस्पासनअनतवआपपर पुसतकपाठ
नपढिहैं बनितजुबातनरहरसुकबि हेलमात्रगढिकढिहैं
॥१॥ छंदपधरी॥ तबनिकटबैठिकोसलनरेस बिनताहितये
पूछतबिसेस॥ राजोबाच॥ तुवसयनकोंनकारनजुनाम त
वमोंनबेदममहोतताम तवअहितकीनतिहिकुषोकाल ब
थदंकपाइकैहैबिहाल करिकुंअबधसोबधकाज जोबंध
जोगसोमुकतआज देकुसमृधदारिद्रहीन छिनहीप्रभुतकि
ककुंछीन रविक्रअधसथिजुनमिराज बसबरतीमेरेग्र
बिलआज प्राची॥ जुसिंधुसोबारपेषि सोरगअवतीलोबि
सेषि बंगांगमगधकोसलजुकासि पुनिद्रमदेसओरोप्रक
सि मांगकुसुदेसजोचित्रमांहि तवसपथनियतकरिकुन
नांहि॥ कैकईपतिसबदसुनतबोलीप्रसंस तुमबचनस
रयुराजबंस बरदानदयेतुमदेबिसेस मैंपासनतराषेन
रेस सोदिकुअबेप्रीयकैप्यार तुमरामसपथजोकरकुयाल॥
राजोबाच॥ प्यारीसुमांगिलीजेप्रकास सुनदिवसआजदेल
सहास अजषेषतिलकरघुरामआज सबमिलेआनिमंगल
समाज॥१॥ दूहा॥ जोमनइछामांननी कहोप्रगटतजिकांनि
मोहिसपथहैरामकी जोनकरुयहजानि॥२॥ इहषेवरप्र
हदेवये साषीजूतसुनाइ जोतूकहिहैसो

मरनाइ॥ कैकइ जाइ॥ छंद पधरी॥ करि एक चतुर दस बर्म बास इंद्र
कारन्म सेवहि इंद्रास मुनि बेष धारि इति गन नाहि जरजरबोषि बन
रम्म जाहि इंछ जेअ वहि अवधि अंत सेवहि तु इंछ बन हि संत रू
अति बेग जाति इहि सिमय तरत कहे इहो अति संचारय है सुमति
लकस जे अनबेषम करत सजग अजे॥ कबि कुल जाचा॥ दुष॥ बन
न लगे बिषबान से पार कृदय दरार मानु पर बत बज्र हत नृप
गिरे अस संतर॥ गाघा महा छत्रि कुल दंड सावा पत्र बिथार
इथी सग्र वृ पतन बाम बेच बात बिहत॥ दुष॥ आयनि
रग छिमे हो बिवस हेत मृग वृंद सोग तिहि सरथ कीन्ह दे
नमु सेन रिंद॥ हुति कुंच मोन घर रहित सिंघी करति सुकाम
कस्मे अकारन नृपति को बचन मरम छिद्र बाम॥ २॥ सपहे रबो
बीस मुष पोगी तादृ प्रकास बिषधर दहन करि बिदस नगर न
चवत तास॥ छंद पधरी॥ अनुग्रा तिकिरति पास आनि गिबा
पति मृग जो छरम मानि कैकई जाति तिहि घात कीन नहीं जानि
निरा पिपमोह लीन नग नित त्रीय हरब सपति बिनास नावि ब
लि बृष्टि सुति सिमृति जास॥ दुष॥ नृप हिग ई बिनावरी चास्यो
जम अचेत सज्यानु मी मृतक से उरथ उ ससनि लेत॥ जब
हि रजमुर छ जगी बिषम रूप लषि बाम पुत्र कि पसी नाकंप
तन रत तराम हीराम॥ राजे बाच॥ यह सब संपति राज सु
ष धरा अवधि धन धाम मैं बरत हि दीनें मुदित मतपव हि
नरांम॥ तैं ममराषे प्रान तव मेरे तोम हु प्रान ससि बदनी अ
बसो करु जिहि सब को कल्यान॥ पुत्र बरे जुवराज पद प्र
वत बेद प्रमान कतो यातें करत कुं बिनती नीति बिधान॥ ज
रत हि संपति राज जुव रामहि राष कुंयेह तुव मन बंछित सुख
पुनि अब करियें मतये कुं॥ राम न इंछ राज की उदासीन नि
त्र हि सो न हो माया मोह बस तुं कत काढत ताहि॥ कैकई ब
पहलें करि कैं बचन पन मरत उगरी मोहि अब सुक हत नृप ओर
सी हमारे कै तोहि॥ उदबंधन बिष बहन रसना छेदन र
त सस त्रयत जल अनल संग बजि कुप्रान तुरंत॥ दैन करे
बर दान दे राम सपथ कृत राय पनमि आ कीनि [illegible]

नरकसुनाइ॥१५॥ राजाकरनीरावरी: हमजानैंअवहित: नहरूपउरे
नरतअरु रजराम कहैहैत॥ १७॥ छंदपधरी॥ इहिगेरउपजिदु
बतुमहिदेव: नयछांडिकहकुधोंचितनेव: कैमोहिबिसाहीह
टमांझ: वेदानतरतकैनरबांझ: आगेदधीचसिवबाचदीन: सोक
रीसतपनहीनाहिकीन: मर्मछिदबचनसुनिरहैमोन: अनुत्रीय
नरेपरदेतलोन॥ राजा बिलाप॥ कबि रु॥ हाकरीयतहो
कछुकछुनयो: मनसोचतमहिपाल: जोगसमयकेसिधजो
करिगयो बितनबिकाल॥१॥ जैसैंगुवाकेघरत: नईअचित
ननेरि: मूलेनूपसुबुधिबल: हाहाकृतहीयहेरि॥२॥ उपजिअ
निष्टअनदथल: पुरतनबचनबिधांन: सोबनबिजुरीकेपरे: थकि
तबिहंगमथांन॥३॥ छनहीचेतअचेतछन: सोचतमोचतस्वास
ज्योंबेलीयरियारकी: कृतितिरतबिकास॥४॥ इहिबिधिबिल
पतनोरतो: उधरेदेवदुवार: संधाहिकालरिसबद: प्रगटअ
नेकप्रकार॥५॥ प्रतिदिनअरकप्रकासतै: ज्योंबेलवबिनह
र: सुनहजथाक्रमक्रमसबै: राजतराजदुवार॥६॥ बंदीजनबेल
हिबिरद: सूचकबेससुजांन: अपनैअपनैकुलकरम: सावधा
नसनमांन॥७॥ बालकवृधजुतरुनवय: नगरबासिनरनारि
रामतिलकजुतरूपरस: चाहतचितबिचारि॥८॥ निद्रालहीन
नैकनिसि: पुरजनप्रेमप्रकास: कबेउदितकैहैअर्क: कवप्रजे
उरआस: सुषहिनिहांनीसरवरी: दिनकरदरसनदीन: सुरप्र
जानिसकृतसब: लोकजथाक्रमकीन॥१०॥ सरबसंतारसु
सिधतहो: बिहतबसिष्टबताइ: तबैसुमतउछाहजुत: अव
निईसंग्रहआइ॥११॥ इहासुमंत्रआदेसतै: सुतबाजेनीसांन
मानकुयुमरतयनसयन: पावसरितपरवांन॥१२॥ चारनसिधजु
चतुरचित: औपतसंताउदार: कित्तिप्रकासतबिरदकहि: कु
लबंदिनजयकार॥१३॥ राजतनूषनबसतरंग: बिक्रमबिनय
बिसेस: रघुकुलमंडनबीररन: आयेबंधुअनेक॥१४॥ बिबि
धिसुनइचतुरंगबनि: राजतराजदुवार: हयहेषारवगजगर
ज: बंदीऐकहीबार॥१५॥ इहांकेकईउरअमित: बाढ्यो बिषम
बिषाद: सुनिनिरघातनिसानसुत: अरुबंदिनजयबाद॥

कैकईजीचा॥छंद॥पधरी॥कैकेयपठ्यदासीकुताइ॥जयसबदनिवारऊ
रजाइ॥कबि॥आदेसस्वामनीसुनिअसंत॥तेगईद्वारदासीतुरंत॥ब
रजेतिसानमंगलबिधान॥जननरेचकितकछुअसुनजान॥अवचित
अरिपुरबातएहि॥हेपरीबीजजनुअहयेहि॥मनसोचकरतमंत्रीसुमंत
संचरकैकईभवनसंत॥तुवपरेनृपतिदेषेकुताइ॥उरजयोत्रासउर
मंत्रिआइ॥समझ्योसुमंतयहमंत्रसार॥कैकईकस्योकछुयहबिक
र॥रघुराजतिलकजुवराजरीति॥अछेपकीनआदरिअनीति॥करिज
थाधरमदृढ़मनमसकार॥जीबेरबद्योजयबारबार॥प्रनुदसादेषितिहि
छनप्रधान॥परिबिसमयब्याकुलभयेप्रान॥नहीपूछिसकतरहिसक
तनाहि॥मंत्रीभयेसोचबिचितमाहि॥मानिलहिअंतरगतिसुमंत॥ह
हिसमयबोलिऊठीअसंत॥कैकईचा॥राजानिसिबिलपतरामरा
म॥जुगजुगसमबीतेचारिजाम॥कारनदुषहमऊनलिषोकोइ॥र
जनीसहबितईरोइरोइ॥नृपऊनकलोकछुदुषनिदान॥हरिराम
रामकहिकीयबिहान॥रामहिलैआवहुमंत्रिराज॥कैकछुआज
उपजैअकाज॥महिपालदसादेषतसुमंत॥तुमरामआनिमिलवहु
तुरंत॥कबि॥सोसुनतमहामंत्रीसुजान॥संकप्योकवरयहस
बधान॥दृतब्रह्मचर्यजुतरामबीर॥तिहसदनआइमंत्रीसधीर॥उ
गिरामकरेआदरअपार॥बदनकरिमंत्रिसुबारबार॥सुमंत्रजब
परधानरामसोंकहिसप्रेम॥नृपदरसनकहंचलियेसनेम॥ब
पुरामबिबिधिनृषनबनाइ॥सुनसनादरसदीनेसुताइ॥मिलि
सनामंत्रिछत्रीयकुमार॥आरोहहिरदरघुबरउदार॥सबचढ़ेज
थाक्रमजानसाज॥रथरूढ़सुआगेमंत्रिराज॥सबहिनकहआ
दरसमाधान॥रघुबीरकरतपुरजनप्रमान॥लोकबाचा॥सबि
प्रादृषिमंत्रीसुमंत॥सोजयेबिमनजननसाधसंत॥सोचतमनमे
चतउरयस्वास॥उपजेअनिष्टकछुअनायास॥बाजतनिसानऐ
कहीबार॥बिनुहेतरहेकोयोबिचार॥असिसोकलोकसबयेहये
हि॥दुषसिंधुपरउपजेसंदेह॥कबि॥दिनकरदिनेसकुल
राजद्वार॥हहारामआनिउतरेउदार॥पारषदसबनिकीनेप्रमान
सनमानकरेरघुरामस्याम॥कैकईयेहदसरथकुमार॥रघुबीर
चलेसंगमंत्रिसारा॥श्रीरामबाचा॥भयचकितभयेअहदसा
हेषि॥बिपरीतभाचउधसबिसेषि॥सबहतेबिगतदासीसमा

ज सनमुषनहीआवतप्रेमसाज आवतिभौंआगेदिवसआरः ग
दीसत्रासससबगेरगेर मंदिरजिहिहेदसरथमहीप सुषपाइरा
मआयेसमीप॥कबित्त॥ नुवपरदेषिदसरथनुवालः केकेईनि
करकृतकराल दुषमगनपितादसरथहिदेषि बिपरीतनईक
छुचितबिसेषि क्रोधानललोचनअरुनकीन मातातहदेषीम
नमलीन कीनेंपितमातहिनमसकार बैकलपहोतचितवारब
र लषिरामरहेदसरथतजाइ उरसोकअसितनहीबचनआइ
नरनाथअयेमुषअवतनैन नहीजातबोलिचितअतिकुचैन॥
निसासकरिअवनीनिहारि मुषमोनरहेनृपमानमारि॥श्रीरा
मबाचारयुरामबोलितबंधरमरीति यहकहआजजननीअनी
ति अपराधकहाहमतेजुआज जिहिबोलेनहीराजाधिराज॥
केकईबाचाइहा॥ रामबचनतुमसोअहित अबलोकलोनके
इ तातेनृपतिसंकोचतिहि अवनिमोनरहेसोइ॥१॥ केकेईसुन
रामकहि कारनकवनसंकोच कआपबसपुत्रअब प्रगटन
लीवापोच॥२॥ केकई॥ सुनकुरामकारनसकुच सबेकहुस
मझाइ राजबचनपनराषिये बुधिबिकलबिहाइ॥३॥ दुयेमे
हिबरदानदे आगेअवधिनरेस मेथातीरषेतहिन सोमागेस
बिसेस॥४॥ दंडकबनमहचतुरदस बरषबसकुतुमजाइ अ
बबरदानजुएकयह मोकहदीनोंराइ॥५॥ दुजेबरमहइहिदि
बस भरतहोहिजवरूप पाइप्रगटजुवराजपद बिलसहिअ
वधिअनूप॥६॥ यातेकरिबोपुत्रअब पितकोबचनप्रमान
लसोजनमरघुराजकुल तुमहोनीतिनिधान॥७॥ छंदपधरी
पितजीयतअषिलआग्याअधीन सोईपुत्रपुत्रकहीयतप्रबीन
बयदिवसअसंभ्यअनदेय लाषनिजिवारजगसुजसलेय दे
गयाछत्रपितुपिंडदान पुत्रतातबहिषवेप्रमान॥कबित्त॥
बिनताकेयेसुनिबचन उरपरजरिअवधेस जतनजतनमु
रछाजगी उपजोसोकअसेस॥१॥ प्रीयापिसाचीसीप्रतछि
बेगीसहतबिकार नकुटिबिरषानचितनुव लोचनचढ
लिलार॥२॥ जोजरामउदेगजग अकबिधवापनआप मां
नकुमीचमहीपकि पलपलगनतसपाप॥३॥ बामांअहसा

सीविषम निरषीअवधिनरेस: नावीस चितअनुजतय: मनगव
तसविसेस॥४॥ दस रथउ॥ अलपलाजपादकअतुल: मवैअ निर
सुतार: ऐकनिलसकेअरथ: गहिकतकारतगारा॥५॥ मेरोजीवनम
ननी: निहचैजोतकुनाहि: काहुकारतदैवकृत: जपैरामवनजोहि
॥६॥ केकईकोच॥ हयेमोहिवरदानदे: रामसपथकहिराउ: मन
मिथ्याकीनेपरत: सुरनरनरकसुनाउ॥७॥ कहिकलच छंदप
धरी॥ योकहिनगेहैबसत्रआनि: पापनीदयेरघुनाथपानि: सि
रमानिलयेसुनिपटप्रसंस: वरवीररामरघुराजवंस: येआदिम
ध्यअवसानएक: इनकेचरित्रमायाअनेक: सुषदु: यतनापतन
गतिसाधि: अषिलेसअनंतवरजितउपाधि: सुषराजतेगजो
गकुसमान: अनुपमअनीहमिमोअमान: उपराजिराषिनवक
रहिश्रंत: इछानकोगनपतअनंत: येसर्वज्ञानिनासतसुजन
नवहृतसोकअनेकनहु: लषिकारनकछुअवतारलीन: महिम
रहरनमारनमलीन: सानंदसुतहिदेवनरेस: नरीवयरराजरंड
नरेस: देषीअनीतिनृपत्रीयादोष: रामहितयापिकछुनहिरोष
राजो वाच: सुतसुनकुकलेकोसलनरेस: विधिवेदरतउहि
मविसेस: मोहिराषकुकारणगरनाहि: हविलेकुराजकछुदोषन
हि: कुपतितमहिलजितलषिनकेत: चलचितनयोअतरअचेत:
गवचनकहत्रीयकपटगनि: उपजोअनिष्टकारमोहिआनि
रामवाच: दोहा॥ कष्टनपहिहवकेकरइ: वनीसवैविपरीत:
वेदविदितरघुवीरतहु: वोलेवचनविनीत॥८॥ छंदचौपाई॥
कृतउचितयहहिवसेसके: कुलअवधिनाहिनरेस: पृथीसह
केवचनपन: त्रैप्रगटनिरयप्रवेस॥ कहिरा: करिविविधिम
तविताहिबंदन: रामराजीवनैन॥ उठिचलेजननीयेहकौ: अति
चित्रबादनचैन॥ पुर वधू वाच: छंदपधरी॥ अनरथअनी
तिजबसुनीऐह: पुरवधूआरकेकरीयेह: तेकरतजईउपदे
सताहि: अवनीससुतातप्रगटआहि: मनगनतिरामकरतहि
समान: यलतईआजकछुबुधिआनि: अपराधरामकहाकरेआ
ज: तिहिदयोजोगतुमदेतराज: नृपनीतितुमकुजानतिनिदे
न: पितुराजतहैअयजप्रमान: कृतनीतिविपरजयतुमनि

संक: अनिथातरपिनहीजालअंक: यहहोइभरतनेनहिअजः
रामहिनिकारिअकलेहिराज: सीतानतजेरघुनाथसंग: यहसार
रेषजानकुअनेग: जोराजछाडिबनरामजाहि: निहचैतोदसरथ
जीयहिनाहि: उपजेअलानतुमकहअनेक: यतिअलोककर
रहैऐक: भरतहिलुवहीनोराजभार: अहरहहिरामतवकाबि
गार: रामहिनहिलखचकछुराजे: कतकरतलागिहकुलअक
ज: भरतकहंदेकुजुवराजनाम: मतथपकुजिहिनबनजाहि
रामा॥१५॥ हरतजिराषकुबांहअहि: रामचंद्रतजिरोष
मंगलचारउछाहमन: सबकुलहोहिसंतोष॥ कहिकुबचा किके
ईगुरत्रीयनकेः कसोनकीनोकान: करमीकतधिकधिककहत: अ
हनिगरीसगोन॥२॥ छंदबेताल॥ सुतरामकहंजुवराजपदसु
न: निकटलगनविहारि: कतउचितकोसलसुताकुलगत करतमंग
लकारि: कुलदेवदेवीअरचनाकरि: कोसल्यातिहिकाल: द्विजदान
बिहतबिधानबैदिक: बिबिधितोषबिसाल॥ छंदपधरी॥ इहि
समयरामजननीअवास: प्रगटयारिचितआनंदप्रकास: कीयको
सल्याकहंनमसकार: अबआसीसदीनीअपार॥ कोसल्याउ।
हैलगनसमयकबतिलकहोइ: सुतकहुसमंगलबचनसोइ: पु
त्रसबकरकुउछवप्रयोग: जिहिहोइसमयआनंदजोग॥ रामजा
जननीकहंकबनहिजात: पितुआपादीनीसमयप्रात॥ कोस
ल्याबचाजुनसहेतुमहिंतिहिकहयसाल: कैपरकुबज्रतिनसि
रअकाल: काकहतबचनअनहितकुमार: सुनिबहतहीयेदुसह
दुसार: कहियेबनदंडककबनकोम: राजाजिहिपग्वतुमाहिरा
म: कैकईमातकछुकपटकीन: द्वैनृपतिताहिबरदानदीन: सोह
महिदंडकारन्यबास: इहिकालअवधिछांडहिअवास: भरतकह
ह्योजुवराजनाम: आयेकलेसंग्रपताअनूप॥ माताजा कैहोकुन
रतजुवराजकाज: अहपरकुदुखसिरअवयिगाज: बनसंगहमहि
लैचलोबीर: इहारहिनजातआतमअधीर: बिनुतुमकोदेषहिबा
रबार: तुमपुत्रअधलकुदीअधार: हमदेषहिसुतबिनुसनिग्रह
निहचैउरफूटहिनिसंदेह: बनिहैतुहारहिबोबिहाल: बनसंग
हमहितैचलोलाला॥ राम बाक्यमसंगनचलिबोउचितमात
पतिजीयतछांडिबिचहिबिषातम॥ कबिता॥ बासनदुधबि

सेष बिसनदुरबचन बिरागी: बलरोगी जड़बंद अंधअंग हीन अभागी
कलहकारकृतघात चोरनिरधनी जुवारी वैसकपापी बिलज बेस
अहिकृतबिचारी मृतकनतजेहेरसहगमन अंतअधोगतउधरे
इमाहिअगुनअनेकजुत पतिहनवारीपरहरे॥१॥ दोहा॥ पतिअसेक
पतिहिता नाहिनतजतिनिदान: जीवतजीवेप्रीतिजुत मानेप्रान
समान॥ छंदपधरी॥ यहराजजननिसुमहीअधीन: नहीनीतित
जतसुतमोहलीन: साचोसुयेकतरतासनेह: तिहिसंगदहतत्रीय
अगनिदेह पतिबिनाकछुनपरिवारप्रीति: निरधारकहतयोनिगम
नीति: पतिदेवनामपतनीसप्रेम: नितउचितताससेवासनेम सब
नारसफलसरतारसेव: दिनउचितकरममानतदेव: पतिसेवस
दापतनीपुनीत: गतिपावतगावतसमृतगीत: जोचहदपतिसेवा
बिसेष सबलोकनरीपूजतअसेष: दुषदेवकंतजोबिनकुदोष
सुषमानिसुलीजेउरसंतोष नहीतजतनारिहितपतिसनेह: तिहिसंगदहल
चरिचितदेह: जोजीवेकराचितदेवजोग पतिहतजुसाधेयहप्रयोग
तजिमानगानबेलबबिधोल पोषतबहुतसंजुतकष्टप्रान तजिषेलते
लसमातेबूल सोनहिसुगंधउछनमूल जलसीतलपांलनउस
हीन पहचारपुहविबरजितउपान सुषनधुरउछभोजननमेल च
हेनचितनबरंगषेल मनबाचकरमधरमहिम्रजाद परिवारदस
पूजाप्रसाद: उपवासबरतबिनबीन॥ लजाअषंडसुतबचनलीन
इहिंनांतिदमतइंद्रीयअसेष: बेधर्यधरमपालेबिसेष: बसअबस
जीयेतोलोबिदेह हतजेजोगअसासदेह॥१॥ माताबाच॥ सुतसु
नकुबचनमेरोसुजान: सुरसाषिपितामातासमान: दसमासउदरध
रिजाचिदेव: सुतजनमिबर्द्धसकरतसेव हेअधिकपितातेमातह
त: सबतारनाचमनक्रमसमेत: जोपिताबचनराषकुप्रसात: न
हीमातबचनतजिबोनिदान: कांताजितबाउलबृधकाल: अन
सोचबचनरनकेजुआल: हविलेकुराजनिसेकहेर: करियेबिच
रसहियलनकेर: हितबधुसदनपरमिहेत: लोककुअलोकले
राजलेत: जोनीतिछांडिबोलेअनाउ: कीजेनकोनताकोकह
रामबाच॥ कुलकलंकचदेअरुअजसअंग नवपिताबचन
सुतकरेतंग: रविबेसमातयहनाहिरीत अबलोनतरीअसी

अनीति: कैकई कस्योछ तब बचन काज: अनजानि नृपति बरदये अ
जे मातानरे न चत अमान: सुषदुषकरम फल लहै निदान: इहि
सोच करिबो न आज: करियै बिचार अब अग काज: बिपदा व
स है अवधे सबीर: सुधि लेहु जाहु उनके सरीर: निरधार चारि दस
बरष नेम: पति बचन सिध मिलहै सप्रेम: मन सोच कबहु करिये
न मार: अब अवधि अंत मिलिहै सुआर॥ छ॥ जल उपन मंगल
जलन: लगि पित बचन प्रमान: अब बुधि अनीति अब: अंगीकार न अ
नीति॥ कबि॥ को सत्य रघुबीर कर: बंधे रहा जंत्र: जाहि न ब्यापै
बिधन जग: जल थल अमत सुतंत्र॥ को स त्य॥ अब अस षद
नी असीस: सब हो फुसिध जय चहु सीस: बामन जल रहु क
थल बराह: मधु कैटभ मरहु न पंथ मोह: बन अघ बिषम नरासिंघ
बीर: सब काल कर हिरहा सधीर: कंकनी ऋत प्रेत निकर: हरि
हो फुसहा सन मुष सहार: दिग बिदिग उरध अधम ध्यदेस
बसंग के सब प्रवेस सुर प्रसन सबै रिषि बर समाज: कृत सिध सबै कु
हि सफल काज: त्रयदेव सिध गंधरब ताम
निद्रा बस जागत स्वपन मोहि: मन बच करम त्राता मुरारि॥ कबि
तब राम आरसीता निकेत: दिन जथा धरम उपदेस देता॥ श्रीराम बाच
तुम प्रीया रहहु मम जननि पास: बिपद निबटाव हु ये कबास: त
बलो करि सेवा ये कतंत: आवहि हम जो लो अवधि अंत: जानो त जन
क के ये हु जाइ: बैषम बियोग जाते बिहाइ॥ श्रीसीता बाच॥ सीत
तब बोली सावधान: बिसतार धरम पति हित बिधान: माता हि कसे
तब धरम मूल: सो सबै सुनो मैं सानकूल: रहि हु न ये हु संग छांडि
राम: मन बच न जे हु जनक धाम: पति संग न छांडो तजो प्रान: नि
रधार यहै मेरे निदान॥ श्रीराम बाच॥ सरकर कुस कंटक जुत सु
नार: पद त्रान बिना पथ गमन पार: बन जंत बिबिधि बल जाल
बाल: राहस घोर रूप कराल: मनुजा मिष तेजन मन मलीन
निर्दई पाप करतानबीन: बन सिंध ब्याघ्र सरना बराह: अति रौ
द्र नाल महिष अथाह: आरन करीस रमत्र अंग: पुनि मनुज नि
द्र न स्त्री प्रसंग: कंदरन दंस मच कुण कुजीव: सुष धाम त हाब
सिबो सदीव: परिधान पत्र त्रिन तल पपार: भुव सयन सहज

सातिकसुनाइ : हरिकुकअमलफलनहोइ : संदेहलाभअनलाभ
सोइ : मिलिपावससहिबेसीसमेह : दाहकतुसारतुसिरदेह : त
पिबोतहाश्रीषमदुसहताप : बसिबोसनेमबनदुषबियप : गजग
मनिरहकुतसमातयेह : देषिहोबेगिममनिसंदेह ॥ सीता बाच
हा ॥ जथालाभसंतोषजीय : बनबसिकुरघुबीर : सबेकलेस
बिनासससम : सुषमानिकुसरीर ॥१॥ जोतिषबिद्यानिपुनद्विज
कोउसैसवकाल : सोकहदेषिबिचारिमन : बोलोबचनबिसाल
॥२॥ सुनिबालेनरनारसंग : तोहिकैहैबनबास : अकरदेवनअन
था : सोकरिबोबिस्वास ॥३॥ अतिबलोसोरकालयह : बिधिस
चतमोहार : स्वामितयेबिनुमोहिसंग : बनैनअनबिचार ॥४॥
कंगछेरकैपासकस : षोजिइलाहलषाउ : लातेचलिकुसंगतव
कैजमलोकहिजाउ ॥५॥ श्रीराम बाच ॥ छंद पध री ॥ बहुबन
त्रीयपुनिसुगयबेस : रनकेउरतहरहैअसेस : पतिजानकलोसी
यचलकुआप : बनदुःषदुसहसबहिनबियाप ॥ श्रीसीता उ
पुनिकहोसीयसुनिप्रननाथ : सबकाजसमंगलपतिहसाथ :
कबिरुबाच ॥ अथ राम लछ मन संबाद ॥ इहासुमित्राथेहआर
सेषहिप्रबोधकीनोसुनाइ ॥ श्रीराम बाच ॥ सुमरहकुयेहलछमनसु
तेत्र : मानकुयहमेरेमूलमंत्र : नरतजोकरकुकछुद्वेषताउ : जुग
जननिसंगअन्यत्रजाउ : पतिसेवजतनकरिबेप्रेमान : मम बिरह
पितहैअसहमान ॥ लछमन बाच ॥ यहसुनतसेषकोप्रेकराल
जारेत्रिलोकजनुरोषज्वाल : उनमत्रत्रातिचितनृपतिआज : केक
ईबचनबसकृतअकाज : तिहिरोकिमारिस्त्रारतहिसत्रात : अतु
रेषकुबिक्रमनृपप्रात : अतषकबिघनतवकस्योआहि : तिह
हेतहतोसकुटंबताहि : राजाधिराजतवतिलकराज : अबकरि
बोमोकहजतनआज ॥ कबिरुबाच ॥ तिबचनरामसुनिलषन
बीर : सोहकिगलाइबोलेसधीर ॥ श्रीराम बाच ॥ सोमित्रसुनकुर
युसारकुल : मैजानततवबिक्रमसमूल : नहीसभयसेषदेष
कुसकाज : इहिमोरअटकिरहिबोनआज : देषीयतबिस्वय
हराजदेह : उदिमतोजोपेसतयेह : यतोगआहिबारिदबित

ः सबिलासतडितलेषासमान-आयुजोग्रग निग्रयतपतअंग-
नवपरतबुंदजलहोतअंग-अहिगलसथोपिजोनेकआप:तउ
हंसउपेछाजुतसंताप:सोलोकजोगततपरनिलाज:सोईजोगअ
सितनियतअज:तनकष्टकरतरहाकरसतंत्र:तेईजोगअर
थअहनिसिस्वतंत्र:सोजिनदेहतेपुरुषजोग:नवरहकौनक
रिहेसतोग:पितमातभ्रातसुतदारसंग-अनेकबंधसबंधअंग
अपजतनबहुमिलतजार:नदिहारुनिकरबारिहबिहार:अ
यचपलनियतछायासमान-योबनहिनीरलहरीसुजान:सुषत्रे
यामनहुनिसिस्वपनसरू:अलूपायुतदृष्टिअहमितअबूरु-गंध
नगरसंश्रितगुमानेः नयबिषमसकुलरोगनयान-अतिक
सहतआतमअगदःममतानहीछांडतदपिमूढ:आदितगताग
तअहनिअंत-आयुरबलछीजतजातअंत:नरजनमबिलोकतज
रानास:तदपिनहीमानतमूढतास:सोईरात्रिवहेवहदिवससो
ई:हतकालबेगदेषेनकोइ:छनहीछेनआयुषहोनछीन:नरआम
तजलजोनवीन:रोगोयसमनजोरिसाइ-प्रतिदिनसरीरसहर
नउपाइ:ब्याधीवअअबस्तनिबिसेष:आतमहिजरातरजतअसे
ष-साझिलीमसुसोसावधान:निसिदिवससमयचाहतनिदान
उतपनदेहयहअहंभाव:रविचक्रतपतराजारुराव:यहमानतहै
निहतयअबूरु:संपासुतसमबिटनाहिसरू:त्वग-मांस-असथि
नसरक्तरेत:संजोगमूलमलजलसहेत:सबिकारसदपरिणामस
ग-आपनोताहिक्योकहेअंग:बहुकालसथितदपिबिनास:स
बिदितअंतवहअगनिआस:सोदेहपाइतुमक्रोधसंग:नव
हतनचाहतअंग-अनिसोनदेहजोकरतआप-सनदोषता
उपजतसंताप:जिहिबुधिदेहआपनोजानि:मनबाचअबि
मानि:ममदेहनाहिजिहिबुधिमानि-जगतासमुबिद्या
नि-अनबिद्यासंश्रितहेतआहि:तुमबिद्यानिवरतक
हि:ततेनिमबिद्याजतनतेत:असासतअरथमुकतीमरत
धाधिकआतमबैरकारि:निरधारतासक्रोधहिनिवारि:
बिघनहेत:सोतजहुसेषमनबचसमेत:जा

नावमनुजादिजीव: दुषदातपिनामातासदीव: मनतापसरबकहंको
मूल: संसारक्रोधवंयनसमूल: नित्यक्रोधधरमनासकनिदान:
ईक्रोधतजकृतातेसुजान: जमरूपक्रोधसाष्यातजानि: पुनिविसनो
बेतरनीप्रमानि: संतोषसुनंदनबनसुजाव: निसीमसांतिसुतकांम
गाव: समसांतिग्रादितुमतजकृसोइ: किकुकालसत्रुउपजेनको
इ: मनग्रांनदेहबुधिबिषयमेल: बुध्यादिबिलछनहेतहेल: अबि
कारनिराकृतजोतिग्राप: ग्रातमासुयग्रंतकग्रब्याप: जबलोंनजो
तितनलिनजांनि: ग्रंतकदुषतोलोदेतग्रांनि: तसमातसदातुमग्या
नवंत: ग्रातमहिलिनजांनकृग्रनंत: बुध्यादिबिहसयितसर्वबीर
सुषषेदरहतबरतकृसधीर: सुगतीयुतपुराकृतग्रषिलभाव: सुष
दुःषयेवग्रपनेसुभाव: परिकृग्रवाहजोकार्यकीन: नहीलिप्तर
होतिनतग्रलीन ॥ ६॥ जारहिसबकरवततुम: जदपिबहत
बिसेष: ग्रंतरसुधसुभावजो: करमनलिप्तग्रसेष ॥७॥ यह
कृदभावजुग्रापनो: सातिककसोसुनार: ग्रनिग्रंतररषकृ
ग्रषिल: सोतुमसबसुषपा ॥८॥ जातिनवदुषजालकी: बाधाक
बकृनहोइ: बारिजपल्लवबारिजो: करमनछीपिकेसो ॥९॥ लछ
मनरामप्रनामकरि: नयनानदसनीर: बोलेबचनबिनीतकृ
सेवकसदासधीर ॥१०॥ मेरेग्रंतरगतग्रमित: संसयकृतोसमू
ल: दीनानाथदयालतुम: सोसबहस्योसमूल ॥११॥ तुमजांन
तमम स्वामिइत: सेवकबालसनेह: केंचलिकृरघुरामसंग: कै
हग्छिकोंदेहा ॥१२॥ इतिश्रीरां मल छम नहि प्रबोध ॥ माताप्रति
ग्रग्या कबि कृ। रामचंद्रसीयलषनसंग: ग्रायेमातनिकेत: इहां
ग्रग्या मांगतउचित: हरषगमनबनहेत ॥१॥ श्रीरां मबाचामात
प्रतीछकरकृमम: ग्रागमग्रवधिग्रधीन: कबकृबिरहकलेसकरि
मनमतकरकृमलीन ॥२॥ जेग्रनुबरतीकरमपथ: नहीयेकेत
निवास: जेसोपोतप्रवाहपरि: सरितासलिलप्रकास ॥३॥ मातच
तुरदसबरषबन: मुहिजे हैछनमांन: मंदिरदरीनिवासपथ:
सजानूमिसमांन ॥४॥ कोसल्या बाचा छंदपद्य ॥ धरिधीर
मेथलीरहकृधांम: बनगमनउचिततुमकोंनबांम: पुनिसासु

कैसे दिग जलप्रवाह: जोन कीअलपबयबननिजाह ॥ सीताउ
बचनकहिसीयासासु हिबिसेस: पतिसंगकिनेजमपुरप्रवेस
कबिकाबंदनकृतरायबबारबार: मिलिमातउरहिलायेकुमार
उनमोनिसमयहीनीअसीस: सुतचलेसीयाजुतनारसीस ॥ दोहा ॥
त्रीयाबसिष्ठअरुधती: बिधिबतपूजिबिचारि: अपनेसीताआ
रन: तकेहृयेउतारि ॥ १ ॥ अलंकाररघुबीरअंग: जेबकुमुद्रिब
नार: रामहृयेगुरराजकहं: परमप्रेमपरिपाटा ॥ २ ॥ छंदपधरी ॥
महिपालउग्रोमनमुषमलीन: कैकरीअहैतैंमनकीन: जगह
रिमनकुसरबसजुवार: मुनिबोरम हातपबिवसमार: आजन
मकृतीहृतनंगअंग: सरपजोबिकलमनिरहतसंग: सस्वकि
महाधनीससोच: परहरेजेगजोगीसपोच: जनुसाहउदधिबूके
जिहाज: रनभूमिजसेसूरराज: धनगयेकृपनजैसेअधीर: बि
धिनरीयहैअबयेसबीर: इहिदसानृपतिअहसनाआनि: बा
रघुबुषभूकृतबिकलबानि: कुलहसनहिनअवलंबकोइ:
रघुनाथबिरहदुषउग्तरोइ: इहिसमयरामआयेसधीर: बं
नगमनदंडकारन्यबीर: कृतरामपिताकहंनमसकार: बंदित
पदचुंमतबारबार: पुनिसीतालछमनलगेपाइ: उरकंपनय
नजलभरआइ: उरलाइपुत्रबैगरिअंक: राजानिधिपाईमनकुरं
क: मुषबचननआवतमनमलीन: दुषसागरभूकृतनयेहीन
श्रीरामब नवासग मना ॥ रघुबंसतिलकलषिसमयराम: उ
ग्रिचलेछांडिधनधराधाम ॥ १ ॥ दोहा ॥ औपरदेसीपाकुनो: राषेम
नरहार: परजागतसंपतिप्रभुत: छांडिचलेरघुराइ ॥ १ ॥ छंदप
धरी ॥ सुरकाइपस्योनृपभूमिमाहि: हीयफटेमनकुसुधिरहीनो
हि: हाहंतबानिरनिवासहोइ: कुहेतनहिनअवलंबकोइ:
पुरजनउदासरोदतपुकारि: नेरासनयेसबपुरुषनारि: हाह
नजकुजंगमसमयदेषि: बसबिरहबिषमबिलपतबिसेषि:
षगमृगकुहषनसुरलीससोक: तजिआसबिकलअपआ
पओक: गजसनयसबहृयदुषितहेष: बिलपातबारबा
रहिबिसेष: जेबालकेलिहितचित्रजंत: तिनतजेअसनज

लपुनितुरंत: निरयारदसायहपसुनिहारि: हीयलगेफटननरनारि
हारि॥ दहा॥ बसनअनतजिलीनहृत: बनदेकहिनिवास: सबे
बिबर्जितबिहतसुष: बैनवरामबिलास॥१॥ वृछत्वचापल्लववव
सन: निसबयकृतपरिधाम: सांझजिनतांजनसलिल: मुनि
पदरलीयराम॥२॥ हाहरवरनिवासकृत: नगरलोकनेरास: बिछु
रतदारुनदुषाबिषम: रामगमनबनवास॥३॥ राजोबाच॥ मांनिसु
मंत्रअनंतमति: बोलेनृपतिबिचारि: रथलेजरीयेरामकहं: बिन
यसहतबेगरि॥४॥ बनदिषाइबोरामन: करिउपदेसकुमार
किंप्रकाररघुबीरकहं: अनकुबुधिउदार॥५॥ बूझतसोकसमुद्र
मह: अवलंबननहीआन: मरतमिलावकुराममुहि: प्रेमनियांन
प्रधांन॥६॥ बकुरैरामननियमबस: हवपुरुषारतहेत: सीत
श्रीनकुफेरिवुम: किंकुमपंचनिकेत॥७॥ कबि रा॥ रनबिज
ईसुनराजरथ: आगेकीनेआनि: मंत्रिसुमंत्रअनंतमति: नृपअ
ग्रासिरमानि॥८॥ बाहरिनगरसुमंतनब: रामहिरथबेगरि: रू
खबधुलषमनसहित: संगसीयासकुमारि॥९॥ करिकरिबंदन
अवधिकहं: सबपुरजनसनमानि: रामचलेआरूढरथ: बिज
यनिमंतप्रमांनि॥१०॥ छंद पधरी॥ सबचलेतहापुरलोकसंग: अ
निवृथतरुनजेबालअंग: बसबिरहमहाकातरबिहाल: बसिहे
समीपजहूबनबिसाल: अवधितेएकजोजनआर: नयेमानअसतमि
नतहासुनार: तिहिकरेरामबिश्रामराति: जनुदीनमहामंनुनिधि
हिजात: पहरुवानयेसबआसपास: ससिहेजनिहृजोधरिसत्र
स: बुधिरचीयहेरघुरामबीर: समयेनिसीथजागेसधीर: रथ
हांकिअवधिसनमुषहिराम: तबकहिसुमंतसबसरकाम: प्रज
जांनिरामग्रहदिसप्रवेस: उग्चिलेचितआनेदअसेस: दिसिद
हनफेरिरथरामदेव: अतिसजवहांकिगवनेअजेव: तबआरस
रितनमसाहितीर: बसिनिसातहाहिगबिजतबीर: रथचक
चिन्हनहीपारराम: महियावतपुरजनगमगम: अनलबधअजो
ध्यालोकआर: बिनुरामसबेउदिमबिहार: अतिबिकललोकज
येआनिआनि: जमसदनप्रायनिजसदनजांनि: नरनारियोरदू
रसननिहारि: नागतकरएकनिरकतयारि: परिजनपिसाचमे

हिरमसान: जनसुजनमनऊजमऊनजांन: हिनअहिनरातिमनु
कालरातिः बिपरीतदसापुरजनबिहाति॥पुर जनगा॥दहा॥
नरीकिरातनिकेकई उसहदसाहवदीन: हसऊहिसाथखेतु
षित: मनुमृगछनछनछीन॥ कबित्त॥ छैदपंधरी॥अव
धिजनमिलेऐकंत्रओर: सबकरतयहेबितासुनार॥ लोकबा
चा॥पदचाररामसीतापुनीत: सहलछमनसहिहैतापसीत: बिनु
रामदहाबसिबोनबीर: अवलोकिअवधिचितअतिअधीर: के
कईबचनछलकरेकाज: रघुबसबृधबुधिफिरीराज: राहसी
नरीकेकईरीरोनि: जिहसरबबिनासकबुधिबोनि: बनिरा
मदुःषसीताबियोग: पतिकष्टसहाबहिअप्रयोग: बलवान
बिधातअकवारि: इहमंजनकोउनसमथआहि: मनसोचलो
कबाकुलमहव: तिहिअसहदुषनहीलहतअंत॥ कबित्त॥ जब
दुषितजानिमुनिबामदेव: इनमथआनिबेरेअजेव॥ बामदे
वबाचा॥इहिरेरसोचकरिबोनअज: कारनदुरंतअतिदेवक
ज: बिधिजुकतकहतयोबामदेव: नावीबलिष्टकोउलहिनते
व: करियेनरामजानकीकाज: यहसोचउचितनहीसमयआज
येआदिपुरुषअब्ययअनंत: जानकीत्रीयालछमीजयंत: परपुरु
षआदिमायाप्रसिध: सुनियतनिगमागमस्वयंसिध: सेलछम
नअसिसेषावतार: नवनतधरतजेअबिलसार: येईरामनयेब्रह्म
अनूप: रजजुकतबिस्वनावनसरूप: आबिष्टसलगुनबिलुआपे:
तिईसंश्रितपालकहरनताप: तमजुकतरुद्रयेईआपकार: संसारक
रतछंनमहसंघार: येईतियेमीनअवतारएक: बेबसतमनुबरनत
बिबेक: कृतसेषरज्जुवनावर्क: सेबोयिअगजलप्रलयलीन:
सामुद्रसुरासुरमथनसंग: सोलीनभयोमंदिरसअंग: आधारपृष्टि
मगवतार: कृतदेवकाजबरजितबिकार: जबगईरसातलरसाजो
नि: अवतरआदिबाराहआनि: रदअग्रतुलितकरमसरूप: उधार
इनहिकीनोअनूप: प्रहलादबालदुषदसापाइ: दारुनसरूपनर
हरदिषाइ: कंटकत्रिलोकदितिजातक्रूर: अतिरोषनषरतिहि
फारिक्रूर: सुतराजजातदेष्योसेषेद: बरजाचिअदितहाबिद
तबेद: येईभयेतहाबामनबिसेष: बलिबांधिअवनिलीन
असेष: हेहयाधीसनुवनारहेत: बनिमास्योतारगवतासि

षेत: सोई नयेरामरघुराजबंस पौलसतिहतकरथीप्रसंस: नर
हयमरनरावनरनिदान: बरदयोब्रह्मयहओतबान: आगेजुरा
जदसरथअजेव: दारुनतपसाआराधिदेव: तुमहोहुपुत्रमेरेस्वतंत्र
मैमांगोबरयहमूलमंत्र: येईबिष्णुरामअवतरेआप: बधरावन
हितपडुषबियाप: तुषबेषसेषसीतासमेत: बनजातहरनतु
वतारहेत: सीतासुआरिमायाअतीत: इहिभाजनासरावनअनी
ति: नृपतिवाकेकईकृतबिदान: इहाहेतकछुजानहुआन: गत
हिसआरनारदसमपान: पुनिरामसंत्रकीनेप्रमान: द्विब
चनरामनारदहिदीन: कष्टतुवहरनबनगमनकीन: करियेन
सोचरघुबीरकाज: सुनमंत्रसुनहुसाधूसमाज: निरधारमोनि
साधूनिदान: यहमंत्रयदकहिबोनआन: काहिमनुजरामराम
तिकोर: अपमृत्युतीततिहिनहिनहोर: इहिगोरमुकतिकारन
नआन: बिनुरामरामबेकलबिधान: करिमायामानुषरूपकी
न: दिनजोनिबिडंबनलोकहीन॥ ६॥ तजनहेतनगतनिश्च
नय: रावनबधनिरधार: आश्रितमानुषरूपअब: रामहरनतु
वतारा॥ ७॥ नातितिहिरघुरामकृत: साधुनहोहुससोक: बोम
देवउपदेसदे: आपगयेनिजओक॥ ८॥ सबजनसाधसमा
जसुनि: उनमानैअषिलिस: उयरीसमयग्रंथिउर: सुमिरतरा
मनरेस॥ ९॥ सीतारामरहसियह: हितजुतहीयथितहोर:
नवसोईपावैदिनगति: कलुषनदरसेकोइ॥ १०॥ अबरघुबीरच
रित्रिये: आगेनयेअनेक: सिवप्रनीतनरहरसुकबि: बरनेसह
तबिबेक॥ ११॥ इति बालकांडे दोहा॥ पुरजनप्रतिछंदप
धरीकबिक॥ तबआइरामतमसातीर: बसिनिसातहारनबे
जतबीर: पुनिअंगमेरआयेपुनीत: सममंत्रीयसानुजसहतसी
त: देबीबनसरवरसुनगदेषि: मगपेम्किरबंदनबिसेषि: सि
सिपाहछछायानिवास: कृतरामचंद्रतहासावकास: तहाआ
इरामसुरसरितीर: बंदनकृतअरचनसमरबीर: तबकरे
गंगपावनतरंग: अघनासनमंजनअंगअंग: बिप्रातजुनिगम
गमबतार: सुरसरिप्रभावसेषहिसुनाइ: कोसलकुमारबिश्रा
मकाज: सिसिपाहछआयेसमाज॥ कबित॥ रघुबीरसषा

बहुषदुष अंतर्जामी सुष सहतजंतसुनार आहिनिसानाहिनपरतअं
तर बिधिबिधानबनाइ सुषमधदुषदुषमधसुषथित यहपरस
परअंक पंकमहजतजथापावन प्रगटजलमहपंक नरहोतनह
कस्वपनअंतर नरपतीकिनहोइ कैरंकहोतसुरेसकिबा करतब
छितकोइ कररहतहांनिनलानकछुजब जागिचहुंघांचाहि जगसे
इंप्रपंचजुबिस्तवजीवन अकलमायाआहि तसमतधीरजततबेता
बिहतबुधिबिसाल इहजोबअनिष्टउपजे कालरूअनकाल बसह
रषकेनबिषादकेबस बिहतनिसबिचार मायेतिसरबसंनावनं
यह सारसमझिअसार मिलितनबादनिषादलिछमन बिमलबे
धबिचार कुलरीतिबसकुरकरनिकीनी पुरप्रजातपुकार ॥ ६ ॥
जाम्योहोतबिहानजब जागेरामसुजान करेजुबासुरकरमकुल मि
लिसबहिनसनमान ॥ ७ ॥ श्रीरामबाच ॥ मंत्रिसुमंतहिरामसुष क
हतजुनीतिप्रकार राजजतनमरतहिप्रजुत जथाउचितआचार
नगरनीतिपालनप्रजा हृथनिमानबिसेष राजश्रीयरिष्माकरउ
अहप्रतिहृथअसेष ॥ कबित्त ॥ कीनेबिदासुमंतकहं मिलिस
प्रेमसनमान रोदतबिलपतबैरिथ पुरहिसिचलेप्रधान ॥ ५ ॥
कीर प्रसंग ॥ छंद ॥ अषरी ॥ इहरघुबीरसरिततटआये बो
हतलावहुकीरबुलाये आनतनाहिनावइहिओरा करीयराम
अयकरजोरा ॥ कीर उ ॥ बोलेकीरतहामृदुबानी जगतप्रसि
धहमहुपुनिजानी रामचरनरजपरसपुनीता उठीसिलागई
गगनअनीता द्विजसरापत्रीयपांहनदेही सोरजपरसतमिली
सनेही उपलतेतोलकछुअधिकाई गनीयतकाठमोहुगरुवा
ई चेहिगतिजोममनावउठाई बामपुत्रमरहिबिलताई
पुनिहुदीननावकहपांऊ जनकुरंबकिहिआसजिवाऊ ओ
रनहृसमलहुअस्पासी बिनवबिपतिनदीतरबासी मुहिव
रुयनुषतानिसरमारहु पोतचढहुजोचरनपषारहु जोगंत
अअवसितुमवहितर पदरजधोइअगेछेममपट ॥ कबित्त ॥
दीनबचनसुनिकिवटकेरे हसिहसिरामप्रीयातनहेरे मनम
नरामलषनमुसकावहि निकटरहेतेउनेहनपावहि दीनजबेर
घुपतिसोदेषा दीनबंधुनिजबिरदबिसेषा ॥ श्रीरामबाच तबबे
लेहसिमुरमधुमारन करहुमलाहउचितजोकारन जिहिनाव

तोरी उ किजाई इहाँउ चितसे करियेनाई॥ कबिका॥ परमपवित्र जुसुरसरि
पानी इहाकरेती नरि चरिअनी॥ मिलिमिलिपंकजचरनमुरारे पटनिअं
गेछिअंगोछिपपारे जबेनिसेषनरिजजानी इहानिकरनेकातवआनी
बिबुधनिकिवटलाएपबषानै सुमनबुरषिकरुनांरससानै इंदजुचरन
कमलउरधारे तेईपरपामरकीरपषारे जेइंद्रादिनिरंतरजोये धरिक
रकिवटमिलिमिलिधाये अवनिचक्रजिहित्रयक्रमआनी मेल्लेब
लिमसतकमनमानी नागराजसिरबहतनिरंतर रामचरनतेईकर
ममुकतकर निकसतजिनतेगंगतरंगा पावनजलत्रयलोकप्रसंगा
इतिसंबादकीररघुपतिकेरा कलुषबिनासदाननिजगतिकेरा॥ दहा॥
कहौरहसिनरहरसुकबि करुनांहासिप्रकास साधसुनतमनउल्ल
सत बिमलनगतिबिस्वास॥१॥ इति श्रीरामकीर॥ संबाद॥ क
बिकुबाचा छंदप धरी॥ आरोहरामनौकाउदार प्रभुनयेतहासुर
सरितपार निजसषसहगुहबिदादीन आगपाअधीनउतरनकी
न नृपफिरेतहांगुहसजलनैन उरनहीसमातबिछुरनचैन सी
तासुमध्यचलिअअसेष बरषृष्टिरामतापससुबेष मगचलतराम
इकमृगजुमारि तिहिआनिसरोवरतटउतारि बरतहामहासाष
बिथार इहांबसेतबैरघुबरउदार मृगअनिषकोनोजनसुप्रार बसु
मतीतलपपल्लवबनाइ निजसयनकीनकरुनानिधीन धरिचापल
बनरहेसावधान॥ अपनार राजआश्रमआगमनं॥ छंदबेताला
प्रभुनयेआनिप्रीयागग्राम जहातीरथराज करिन्हानिनबिधांन
नेगम बनबिलोकिबिराज पुनिजोप्रीयागप्रभावपूरन बिमलबेद
बखाइ सोईप्रीयाबंधुसुनाइ पावन रीतिकेरघुराइ इहांनारद
जरिषेसआश्रम अगमनअषिलेस परिक्रमनकरिरघुनाथपुनि
पुनि अरुप्रणामअसेस रसप्रेममगनरिषीसरामहि लीनतब
उरलाइ इहांअमितब्रह्मानंदउपजो भयोसातिकभाव कृतअ
घपुंजाउचितअर्चन बारबारबिलोकि आनंदसागरहृदयउम
ग्यो रिषिसुजातनरोकि बेगरिआसनकुसलबूझत सहजसानुजसी
य असुसमयफलमूलअदभुत द्विजसुरमहिदीन कहिनरदेव
जअनेकभांतिनि बिनयभगतिबदाइ कृतजनमजनमअसेषत
पके प्रगटफलहमपाइ चितहरषजुतकृतधरमचर्चा बसिनिस
रघुबीर उठिचले प्रातरिषिसआये संगसमाजसधीर॥ कबिता॥

ब्रह्मादिकनबिसेष· सुगमदुरगमउपदेसत· मोछिधरमकोमाग· विहतजो
वेदबिसेसत· जीवचराचरजिनहि· पूछिपरपंथहिपावत· जथाकरमफ
लजोग· साधनिजलोकसिधावत· आचिजनयोजवजूतयह· कहिन
जातकारनअकथ· तेईरामपुराकृतपुरुषजो· पूछतबनगिरजूमिप
थ॥ दो॥ नरद्वाजसोरामतहो· पूछेपंथप्रयान· इहारिषउपदष्ट
यो· प्रभुसोईकरेप्रमान॥ २॥ नरद्वाजकेबंदिपद· प्रभुतवआग्या
पाइ· चित्रकूटसनमुषसुचित· कीनगमनरघुराइ॥ छंद॥ उठोरा॥ र
विसुताउतरेराम· किधुदेहधरिरतिकाम· जिहिनिरषिमगनरनारि·
तयेबिवसकाजबिसारि॥ बन बासी बाच॥ अवलोकिलछनअंग
पुनिकहतनीतिप्रसंग· इनछत्रजोगअनंग· अरुचिन्हपताअंग·
बनिदेहलछनबतीस· सबसियछत्रजुसीस· जटजूटतिहिसिरजो
ट· हमपरमबिसमयहोट· बपुजोगबसनबिलास· तरुवचाअ
ततास· सुषजेजबिबिधिबिलास· लषिगोरतिहिमृगछाल· बा
हनमतंगबिनीत· पदचारयहबिपरीत· पदसियपीवप्रमान· तिन
त्रमतरहतउपान· देवपलछनदेषि· सुनराजपात्रबिसेषि· सामुद्रि
कजोतिषसंग· येईसर्बमथाअंग· केदईबिजोगअकाज· यहलयो
निसचयआज॥ छंद॥ बेताल॥ निहचेसुमातापितानिष्टर· नीति
बरजितनेह· येपुत्रजिनबनवासपग्ये· सहजप्रानसदेह· मृदुअं
गबयसुकिसोरसूरति· चरनचरबनचीर· अतियोरकृदयकेग
रउनके· बजूलतिबीर· हमकजदेषतफटतहीय· बिपरीतदुस
हबात· बिनुदोषअसेबालबिछुरन· मातउरहिसमात॥ कबि
त॥ दो॥ मारगजिहिजिहिग्रामम· निसचयतेनरनारि·
सबेकृतारथहोतसुष· नरहरप्रभुहिनिहारि॥ ९॥ पावनकरत
अपावननि· जेजकजगमजीव· पाउधारेरघुनाथप्रभु· सुषदचित्रगि
रसीव॥ १०॥ अथ बालमीकिआश्रमवर्णन॥ कवित्त॥ दो॥ चि
त्रकूटमहिमाअमित· बालमीकबिश्राम· मुनिसमाजनिगमनिनिपु
न· करमनिरतनिकाम॥ ११॥ बिबिधिसियमृगमाहरत· बसत
बिचित्रबिहंग· मतपुंजगुंजतमधुप· तहानिरुरतरंग· तरुन
प्रफुलितफलिततरु· पत्रहरितनितपाट· सीतसमदसुगंधसुष·
सेवतजंतसुतार॥ १२॥ बालमीकमुनिइंदबर· रहतबहारिषरा
ज· बरजितबयरबिरोधबन· सेवतजंतसमाज॥ १३॥ आलिंगे

करुनाउदधि: रिषबरसानुजराम अरुचीन्हे अबिलेसये ब्याप
क बिस्वसब्रोम॥२॥ पूजा अरचा प्रेमपर: कुसलप्रसनमन कीन
न: बेगरे आसन बिबिधि: हिम असन फल दीन:॥ राम जा कव
रत हकरजोरि कहि: बालमीक सो बात: पित आग्या बनवास प
न: जथा न्याइ हम जात॥३॥ कालछेप कछु दिन करहि: रिषबरस
क हि राम उपदेस कृतातेइ हा: बास सथल बिश्राम॥४॥ कबित॥
रिष बाच॥ जल थल अनिल अकास: दुरग गिर देस बिदेस नि ई
प गहन दिग बिदिग सिंधु सरसरित बिसेस नि स्वरग मृत्यु पाताल
नियत त्रयलोक निवासी: ब्रह्म आदि पर जंतु तत्ल स्वयमेव बि
लासी: सम सांत सर ब्याप क सुषद अषिल ईस अस्वर नस
रन जानो अनावतु म्हरे जेही कहु ततो तहा अहकरन॥७॥ इ
ह सरब बिस्व ब्याप क सगुन: निरगुन कहु निरधार: कहि कृतद
पिथानके उ: साधारन बुधि सार॥१॥ छंद उधेर॥ सम दिष्टि सां
त सुभाव: अरु हृदय द्वेष अभाव: सुषदुष रहत समान: तव
मंत्र पाग प्रमान: निसप्रेह निर्मल नेरास: एक सरन तक आस:
षलता अहंपद षोइ: करि राग द्वेष न कोइ: अय उपल कल गनि
येक: बिधि अबिधि ते बिबेक: दृय जद पि अदृय पार: नहीं हर
ष सोक सुत्तार: सुषदु:ष जानी य संग: यह करम फल अनंग: सु
ष आन आप समान: इत्यादि साध अकाम: रहि मेजु ति हि उर राम
करि ये निवास कृपाल: प्रनु इन हि उर प्रतिपाल॥२॥ दो॥ नाथ जु
महिमा नामकी: केतिक कहु कृपाल: राम नयो कहु ब्रह्म रिष
जिहि छुटे अय जाल॥१॥ अब ता को सुनिये अषित: कारन सी
ता कंत: सो तव नाम प्रभाव ते: सबे कहत मुहि संत॥२॥ अथ बाल
मीक पूर्व प्रसंग॥ बाल मीक बाच॥ कबित॥ दुरग मगि
रउ द्यान निहत हा बसत भयंकर: पर हिंसक बिग्रापहार प
पी अदयापर: पुर पत्तन जारत प्रासि ध लाषलाष निपसुला
वत: लूरत देस सलान धारि हिंसक हिंसि धावत: [illegible] सृत्यब्द
त्यब नदाह हव दुषद रूप निकाल करत गिरकंदर सवत बन ग
हन: करम घोर निरदय करत॥१॥ छंद पधरी॥ प्रनु पुरा किरात
निबरति पार: हम बिप्र रहे तिहि गरतार: कुंबज्रो किरात निसं

गहेउ: ममजनममात्रकहिबिप्रकोउ: उपजेकिरातबहुसषाग्रानि
समकरमबेसबुधिबलसमान: मिलिकरहिसबेहमचोस्करम: धनु
बानग्रासहिनिहत्थर्म: बधकरहिजीवबरजितबिकार: मगरो
किनिसारिनिमनुजमार: पितमातहृधत्रीयपुत्रपास: सबकरहिए
कममहुसग्रास: जनबधकरोकिमेपंथजार: इहिसमयसप्तरि
षइहाग्रार: मुनिनासततपबलग्रप्रमान: सोज्वलिततेजहिनक
रसमान: मैतबेग्रानिरोकेमहंत: तनबसनछीनिलीनेतुरंत॥
सप्त रिषि बाच॥मोहिपूछिनहरिषिराजमरम: किहेतद्विज
धमयहग्रकर्म॥बालमीकबाच॥मैकेसोफेरितबरोकिरीस
ममकुटंबमोहिग्रानितमुनीस: सोमहाछुधितममकुलसम
ज: ग्रहनयोग्रतिक्रमकालग्राज: क्रूरहतउनहिपोषनग्रधीन
कांननगिरिनित्यनिवासकीन॥सप्त रिषि॥ममसूलमंत्रतवक
हिमुनीस: बिग्रिकुटंबजारपूछहुबिसेस: बिग्येबिनागस
बलेतबीर: सोकरहिकोउममकरमसीर: तुमजोलोग्रेहोवि
वरिबात: तोलोहमगदेकहुनजात:॥बा ल मी क॥यहसुनत
मात्रलग्येहग्रार: सबकुटंबनयोपूछतसुजार: हतिप्रानकुल
वतनिकुरहोर: समनागघातसबहिमसोर: प्रतिदिवसचढ
तममसीसपाप: इहिलेकहुबिनागग्रापु: मिलिसबहिन
उतरदयोमोहि: तेपापकरमसबलग्रहितोहि:॥कुटंबा दुष
सु: घनग्रथातग्रानिदेत: हमफलहिबिनागोउदूरहेत॥बालमी
कउ॥ यहसुनतत्रासउपजेग्रमान: ममनयेप्रानकंपारमा
न: बैराग्यमोहिउपजेबिसेष: धिकारकरतग्रापहिग्रसेष
निरबेदभावउपजेबिनीत: पुनिग्राइजहाकरिषपुनीत: धनु
बानतोरिकीग्रधीन: कमजोगबहुतमैग्रकृतकीन: नेरास
निरयग्रारणवग्रसेष: बहिकरमदेवकृतबिसेष: बहिसुमेरि
सरषेतबानि: मुनिरयोग्रनयमुहिदीनमानि: दृढवतचरन
मोहिपस्योदेषि: बाचोपदेसदीनीबिसेषि॥रिषि बाचा॥ग्रालो
चिपरसपररिषिनिग्राप: परतहद्विजायममहापाप: ग्रयक
रतदपियहसरनग्रार: सतसंगहेतकरिबोसहार: उपदेस
मोछिमारगग्रनीत: बिप्रतोहिसबिधिकरिहैबिनीत: सो

[illegible]

अतिमनत्रमतआमोदआसः तरलताबिपुलसंकुलतमालः सुनकु
जमनकुसंकेतसालः अतिअमितनहसीयरामआरः बनबनबिहारहो
जाबिहारः अवलोकिफटिकसयसिलाएकः अतिरंगचित्रसोरंचअने
कः ब्यामोहचितरपुहपपातः बहिसीतमंदसोगंधबातः कुंजतबि
हंगबनबनअनेकः बिसतारसुषदबानीबिबेकः गिरचारुजंतआल
तअगानः बिघिबिघिबिहारकीजाबिधानः सनादसुषदनिरुरनि
नीरः सुनसलिलचारुअनअनसरीरः पल्लवअंकुरबिनमूलपार
सुषतलपरचितनिहिसितसुहारः सीयरामतहबैठेसधीरः बिल
सतिरतिमानकुमदनबीरः नवसलिलमहिमनसितनवीनः करि
तिलकरामनिजभालकीनः पुवजोरिप्रीयाप्रीयभालदेसः समबिबि
तिलकप्रगयोसुदेसः रचनोअनूतनकृततिलकरामः बनदेवबिहसि
त्रिनतोरितामः ॥ ॥ बासुरएकबिलासबनः सीतारामसुजानपि
नबैठेएकोतथलः बिवसमनोजबिधानः ॥ नामेजयंतसुरेससुत
बारसरूपबिहारः तिहिदेषीसीतातहीः बायोचितबिकारामाछेप
धरी ॥ सोपुहजीवअपनेसुनारः अवलोकितसीतहिनिकटआर
बिहंगाधमअगमबारबार: अवलोकितहारयुबरउदारः अक
रषरीसीकाअसत्रआपः तिहिहेतरामसोप्रोसंतपः पापिष्टपदानि
कसेपलारः ज्वालकरालसरपृष्टिजारः उठिचद्रोजदपिबासस
अकासः त्रिनअसंत्रनछोकतसंगतासः त्रैलोकफिरोकरित्राहि
त्राहिः त्रातनतयोकोउतहानाहिः सप्तरिषदयोउपदेसतास सु
निरामसरनजरीयेप्रकासः बारससोत्रमित्रमितोबिहालः क
रचरनग्रहेरयुबरकृपाल ॥ श्रीतमबाचानहीहोतदृष्यमंत
कुनिदानः बचिहोनअअनमोमबानः अकरषिसीकमायअ
नेकः अर्धघकस्योबषकोरिएकः दिगहीनतयोजबकाकदीन
करुनानिधानसोप्रनितकीन ॥ ॥ ॥

ना॥१॥नृपतिनिष्प्रादबिष्प्रादबस:मंत्रिहिरेषिमलीन:कहतदुषदबि
छुरनकथा:आरतदीनअधीना॥२॥मंत्रीचलोनिष्प्रादमिलि:बन
छांडेरघुबीर:सुनिसुनिरुदनसुमंतकेअंगजगहोतअधीरा॥३॥
लकेउनाहिनचलतहयअवधिसमुषअकुलात:फिरिफिरिनाग
तरथहिलै:हेरिहेरिहिहिनाता॥४॥मंत्रिसुमंतससोकमन:राम
हिफिरेषनारि-आयेषालीरथअवधि-बरषतलोचनबारि॥५॥
समाचाररघुनाथके:बूझतलोकबिहाल:मंत्रिनआवतबोलमु
ष:करकरिहतकपाल॥६॥पटलपेरिमुषमनमलिन:कीनोपु
रहिप्रबेस:राजदुआरथतेउतरि:आएजहाअवधेस॥ दसर
थउ॥ नृपतिबिलोकिसुमंततहि:अथमुषदुषहिमलीन:कहां
छांडेसीताकवरि:मेरेजीवनिप्रान॥७॥कहाकलोसोपतिनकहं
रामलषनसीयबैन:सुपेसुनावकुत्रीयजितहि:लेआयेजीयलै
नाअगाध॥दुजनबिनवबिनासं:सुजनसुषसमयआगमसंत
तं:कहियेपथिकप्रमान:पुनिपुनिसोसोपिसंदेस॥८॥ दुहा॥बहु
तजिबयोबिधि:यहकृतदेषनकाज:समयतिलकसंम्पासलै:रा
मजाहितजिराज॥९॥मंत्रीबाचाबारंबारबंदनकरे:रघुबर
तुमहिनरेस:ममहितकरकुकलेसमत:दीनोयहसंदेस॥१०॥
कुलआचारजुनीतिक्रम:करिपितबचनप्रमान:दरसनकरि
पदबंदिकु:अवधिबितीतेआनि॥११॥सीतालछमनतुमहिसो
बंदनकरेबिसेष:पितदरसनपावनपरम:कैहैबिधनालेष॥१२॥
रामलषनजटजूटसिर:बांधेबरपटआनि:तनपहरतकुपत्रबच
बेषमहामुनिबानि॥१३॥ अंगबेरतेशवनकीय:अरुरथदीनेफे
रि:मातपितहिबंदनबिबिधि-हितसोकीयइतहेरि॥ सोरग
दसारामसीयदेषि:जकषेचरजलथलजथा:बिसमयपरेबिसे
षि:कुंजतबिकलकरालरव॥१७॥नृपबचनदुहा॥मैंमृगीया
निसिअवनमुनि-बाननिहतोअपात:ताकेअंयजुमातपित:ति
हिदुषजरेबिष्पात॥१८॥कृतबसचितप्रवेसकीय:उनदीनोमोहि
श्राप:पुत्रसोकजोमरतहम:योंनृपमरियोआप॥१९॥सोयह
आयोवहसमय-करमबिपाकप्रकास:जोबिधिअंकलिलाट

पट: मिथ्या होहि निताप ॥३॥ छंद पद्धरी ॥ कबि कहा चा ॥ यह समय
सोक सागर मझारि: नृप तथा मगन नहीं तन संभारि ॥ राजो आ रोव
तपुकार करि राम राम: हा पुत्र कहां तुम धरम धाम: मो हि मरत आ
नि किन दरस देहु: संसार अजहूं रोसन नेहु: हा लषन पुत्र मम बच
न लीन: कृतछांडि मोहि योगमन कीन: हा राम राम तव बिरह
ग: कैकेई संतव उपजि अंत ॥ कबि कहा ॥ करि राम राम दसरथ पुकार
प्रानत जिनये दुष सिंधु पार: ॥ दोहा ॥ अस्वमेध्या यक जुगति: या
गति धरम निधान: ब्रह्म रिंद्र कृष्ण नृपति सो: पाई गति परमान ॥ छंद
पद्धरी ॥ पुरसुनो नृपति सुरपुर प्रयान: हा हंत सबद तो तुव न
यान: हा हा रघुवर निवास हेत: कैकई धिक्क हि सब केकेत: पति
मरन राम बनवास पाय: बैराग्य भरत जाके प्रजाय: वस सोक चरा
चर तथा बिहाल: कोबर निसकैव हु सहकाल: गुरु बंधु सचिव ब
मिलि सगान: बस समय मंत्र कीनो बिधान: द्रोण कातेल मह्य
पति देह: स्वसथान राषि दूतेसनेह: दूत निबुलाइ गुरु पत्र दीन: पु
रजाऊ भरत मातुल प्रबीन: दुतजाऊ जुधाजित नगर मत: जो जाइ सु
नह कहबी अमृत: भरत निसु स्वपन देषत तथान: अनचित असंग
तरूप आन ॥ त र तह प न दर्सन ॥ बिसतार सषा सो स्वपन बात
परिकहयत्र ससो कहत प्रात: अवलोकि सुक्क सागर अनीर: ससिन
मिपतन देषो सधीर: घन तिमर सयन मिलि नगर रूप: पति मु
कत केस थित जल प्रबुध: पति अद्रि सिषर तेपतन पेषि: बिचबि
सह कुंडगो मय बिसेषि: पुनि करत तिलाजुल तेल पान: पेहसत
बार बार हित्र मान: आहार तिलोदन अनायास: तन लिप्त तेल अ
वगाहतास: पाषान पीठ बैठक प्रमान: निज बसन कुल्ल कृत परि
धान: पिंगला कुल्ल प्रमदा सप्रीति: राजा सो प्रहसति जथा रीति
धावत त्रीयति ईस जवथाप: अनुलेपन माला अरु अप: रास नर
थ जोतेरो रूप: जमदिसा समुष प्रायो न जूप: पुनि षर रोहको
उ नरस पाप: अति अतुर रंछ गमन आप: तत काल चिता धूम
अतास: अवलोकि जात सो अनायास: इहि जोति स्वपन अद्भु
त अलोक: सो देषि निसा चित अति ससोक: अहमपि नृपाल वारा
मअंत। देषेजु स्वपन दारुन दुरंत: तिहि कारन अति रम हा त्रास: उप

जेअनिष्टकछुअनयासः पत्रीवसिष्टआपनुपाइः अतिवेगनरनपह
रतआइ॥ इतोवाच॥ बोलेवसिष्टगुरचलकुवीरः उठिचलेत
रतसानुजसधीर॥ कवि॥ अतिवेगअजोध्यानगरआइः सब
होतनहाअनमितसुनाइः सोनाहनदीसतश्रीसमाजः आकारनगर
जेसोअराजः नहीबोलतबहिनबिरदबांनि जितनितहिसोचज
नमुसेजानि राजयेहनाहिनराजरीति गजबाजिसुनटमंगल
निगीति नृपमंदिरआयेसमयनाहि मनजानिपितारनिवासम
हि इहिसमयमातयहनरतआइ सामुहेआनिकेकयसुनाइ
अतिहरषपुत्रवेगरिअकेनीयराइकुसलपूछतनिसंकानर ता
रानीकिहिमंदिरआजराइ सुधिलेकुपगयुदासीसुनाइ॥ केक
ई सुषउतरदीनोफेरिमाइ सुरलोकपिनाजसजुतसिधाराना
र ताउपजोअनरथकहिकेनयेकु॥ केकई॥ दुषपुत्रपितात
वतजोहेकु॥ नर ता सोपुत्रकोनकारनसुनाइ॥ केकई॥ दंडकनि
वासरामहिदिवाइ॥ नर ता॥ किहिधोअकाजयहदुष्टकीना॥ के
कई॥ हेनृपतिमोहिबिरदानदीन॥ नर ता॥ वरलयेसुतेयेकिहिवि
धान॥ केकई॥ नृपनाविसेषतुमकहनिरान रघुनाथजोहिव
नछाहिराज सोतिलकतुमहिसिरछत्रसाज॥ नर ता॥ पापनीक
हतेबाटपारि मारयोनरेसअबमोहिमारि ममकाजराजमांगे
जुमात तिहिलगेयेहफलमस्योतात बनवासरामलछमन
बियोग अवधेसअंतनोअप्रयोग कारमजिहिकीनोकुलअकह
राजश्रीकोरितुवसीसराज रामहिनिकारिमोहिदेतराज यहदुई
बुधितोहिकवनआज पापनीदुहुयपुजोसपाप अपलोकपात्र
कनयोआप॥ कहा॥ मूलकाटितरपत्रते सोचेचित्रकुचा
लि मीनजिवावनहितजो फेरतसरवरपालि॥ पुरीअजो
ध्याबसरवि दसरथपितारयाल रामलषनसेत्रातमम
जननीतंत्रयजाल॥ तिनरजाचेतिहिसमय अधमाकुल
उछेद रसनागिरीनकरतै छातीनयेनछेद॥ नृपतिनस
मुझेसुधमन अबलाकपटअसंत जाणतहीमूसतिजगत द
हनकरमडुरंत॥ कवि॥ इसोहिकडुरबादये
तेकहनाषि कोसल्याहिनामकीय सुधेकहयसुरसाषि

बसनमलीनसुधीनबपु कौसल्यातिहिकाल महाकलपतरुतेमनऊ
बिछुरीलताबिसाल ॥छंद॥ श्रीसरयूमजरततरुकीनैं लए
उगाइलाइउरलीनैं भरतसुधमनक्रमबचनोरे गलतगलानिअ
रकजोओरे मनबिस्वासदेतसरतारी सकतनसनमुषदिष्टिप
सारी॥ भरत॥ अबमोसमपतितनकोई हितजिहिरतेअनथी
जुहोई पितपरलोकरामबनबासा सोसुनिअजऊजीयनमनआ
सा यहमतिबिधिहिदृष्टिहिहीनी कैकैसुतानबंधाकीनी ज
ननीनरीजांनियहजाके तोसिरपरऊपायपताके काजउदर
कंपाबकैता चाहतसुकतिसुधजुनचेता कतजोबधकअरु
धतियुरके सुतपितघातकतिरकसुरके गोद्विजऊतनुकचर
नप्रहारा स्त्रीयबालकमारनहारा स्वामिद्रोहबिस्वासघा
ती कृतहिबिनासकबनदुरदाती गोकुलहारकबछबिछो
ही देवपितामातागुरद्रोही गुरतलपकजोपरयहगामी सते
थीकनककलिकतकामी कृबिकारनसरफेरतकोऊ जन
बंचकपथघातकजोऊ द्विजजोकीयाहृष्टिकृबिकरमी ग्रो
रपतिअहअपदअधरमी छिनिजातिरनीतअछोही होबि
कलदेषतछतलोही इत्यादिकअयअसहअसेषा बिस्व
रऊमसीसबिसेषा जोमोहिजांननरीयहमाता देवहे
ऊतोउषफलदाता जननीयहसंमतहेजाकै तेरनहोऊपराजय
ताकै कीयअनरथजोयहकेकई तोममसोकदेवबहिदेई॥क
बिरुवाच॥ दुहा॥ पतियातनिसुतद्वेषनी देसबंसदुषदाइ य
हेकुबुधिनकेकई माताननवसवमाइ॥१॥ जांनिभरतनिरदो
षजीय कौसल्याहितकीन लोचनपूछेअश्रुजल नियतअंक
नरितीन॥२॥ सूयेसाधसुनाबतुम बरजितबयरबिकार
पुत्रकरऊजिनसपथपन सबजाननसंसार॥३॥ कृतसो
कसमुझमहि अवलंबनतुमआइ सीतालछमनरामसंग
सबमनुमिलेसुनाइ॥४॥ तिहिछिनदासनदुषदुसह उरऊर
प्रगटआइ कगिनदसारनिवासकी बिधिऊबरननिजाइ
कौसल्या॥ कहिकौसल्यांभरतकहं अबजिनहोऊअधी
र समयबिचारिजुअनुसरे सोरीपुरुषसधीर॥६॥ काल

दोसनहीजीये॥ नागिफुलतसतनारः कालकरमअतिकठिनहै॥
यासोकछुनबसाइ॥१॥ जीयनमरननरनाथकौ॥ धनकहुकुछ
मताहि॥ जलतेबिछुरतपंकजौ॥ उरममफटैनआहि॥२॥ सफ
रीप्रेमसराहीये॥ हरिनबहतइकहेत॥ छीनहीबिछुरीनीरतें॥
तरफितरफिजीयदेत॥ कबिरुबाच॥ करमदसासुतनरतके॥
कौसल्यातिहिकाल॥ कुचपयकरुनाहेतकरि॥ अवनलगेमि
रिसाल॥४॥ नरीबितीतबिभावरी॥ सबहिनकलपसमान॥ क
रिनकलरनिवासके॥ बिलपतभयोबिहान॥५॥ आरबुसि
सुअरुयती॥ बचनउचारिबिनीत॥ समाधानसबकोकरयो॥
पावनबेदप्रनीत॥६॥ तबबाहरिआयेतरत॥ मनदुषबदनम
लीन॥ जोकोहिनअपराधजुत॥ होतछनहिछिनहीन॥७॥
गुरबांधवअरुमंत्रिगुर॥ मुनिकुमहाजनलोक॥ उतिमअति
जजनअषिल॥ आयेसतासससोक॥८॥ छंदपधरी॥ अन्हवा
इनृपतिजलगंगअंग॥ सबकरेलपसोरंतजुसंग॥ जोबेदरी
तिसाजेबिमान॥ पधरारनृपतिमहप्रमान॥ देकंधपुत्रन
तपुनीत॥ बिसतरबानिहरिहरिबिनीत॥ हाहंतसबदनन
नगरहोइ॥ खउडीसदुषजरुजीवरोइ॥ लेआयेसरयूतटसषे
द॥ कृतसोजसबेबिधउचितबेद॥ श्रीषंडअगरमंदिरसजार
बसत्रादिबिबिधिसोरंतबनाइ॥ पुनिकृतबिमानतिहिअप्र
वेस॥ बिधिजुकतदयोकृतनुकबिसेस॥ करनरतदाहदसर
थहिकीन॥ पुनिउचितकरमद्विजबचअधीन॥ बपुन्हाइसरि
प्रसर्यूबिभात॥ तहांदईतिलंजुलिउदिकतात॥ लषिसमय
रुरतसबनगरलोक॥ सबआरराजमंदिरससोक॥१॥ इतिद
सरथपुर लोक प्राप्त॥ कबि रु॥ छंदपधरी॥ मृतकृतज
थाबिधिकरिसनेम॥ परलोकसधेपितुजुकतप्रेम॥ गोलछि
सबिधिजुतरूमिथाम॥ सुषसेजबसनरूषनसमान॥ गज
बाजिअनेधनऊंचगेह॥ सबनारद्विजनअर्चासनेह॥ अहष
दसनोजनजगअन्हाइ॥ सूतकनिवरतनोसुतसुनाइ॥ क
तमंजनउजलबसनअंग॥ सबनगरजथाबिधिलोकसंग॥

दीनेवसिष्ठगुरबामदेव अनेकदानप्रजाअमेव इहिसमयभरतसानु
जसधीर बैठेसुसभारघुबंसबीर गुरमंत्रिमहाजनमिलिसगोन पुनि
बरनचारिपुरजनप्रमान ॥ कबित्त ॥ करिबसिष्ठगुरकथा बिहतमतबेद
बिबिधिबर सुनहुभरतसंसार प्रबलबिधिअकसु सिरपर हानिलाभ
हितअहित मरनहुजीवनसमगत बिषमपराजयबिजय अब
निअपजसजसउजल तबतब्बसुपैतबतुगवत जोईजोईउपजैजा
निजहु तमछांडिसमयबरतहुभरत करिबोसोचनपुरुषकह
सुरसहारसंग्राम बिषमनिसिदिवसजुबिलो निषलअसुरकीयुन
स सुरेसरथरनजित्यो निगमबिहितनिसेष दानपूरनदिजदिनो
अवधिअंतभजिराम राजनिकंटककिनो नहीटस्योबचनपननि
खसो पृथीसुजसपरमानयो तिहिधर्मदेहतजिरामहित जी
यनमरनहुजानयो ॥ छंदपधरी ॥ तिहिकाजसोचकरियेनको
इ होनीसुदेवइछासहोई ॥ छंद द्वैअषरी ॥ गुरउ ॥ गुरबसिष्ठ
अरुबामदेवगुर अतिबिलो कितरतहिदुषआतुर जथासमयउ
परेसजनावत सानुजभरतहिनीतिसुनावत किहिलगिकरियेसो
चअकारन धस्योसुबिनसिरहिनरकधारन ज्योनरतजतबसन
तोजीरन ततछनलेधारतपटनोतन त्योहीजीयछांडिजीरनत
न अषिलसरीरतजतहैअनअन अभयजीवसुधनिस्पअनम
र जनमनासबजितहैजरजर पितअथवासुतपंचतपावत वृथा
सूदउरसोकबढावत बिधिकृतअष्टिअनेकबिहाई नियतको
टिब्रह्मंडनसाही सागरकूसरसरितसुषाही निषलद्रस्यसोपि
धिरनाही ज्योजलबिंदुपत्रपरजानहु प्रतिमांपोछनलगप्र
मानहु आयुचपलजलबेनाआही तातेप्रलयकेसोताही कोऊ
चलेचताऊकोई सबहिनकोवहमारगसोई जलसमीरबस
होतलरंगज्यो उपजतनासहोतसंग्रितयो धरहुधीरतजिसो
कपुरपुर अनथदेहुसबहीजनआतुर ॥ दोहा ॥ बचनलागि
रघुनाथ बन सानुजचलेससीत नैमबचनदसरथनृपतिछा
डेप्रानप्रतीत ॥ १ ॥ यहतुमसमझहुभरतअब सबहीनातिसु
जान जोकछुपितुआगमप्रगट करिबोपुत्रप्रमान ॥ २ ॥ दंडक
बनरामहिदियो तुमहिअजोध्याराज सोउनहुतुमहुसम
झि करिबोउचितसुकाज ॥ कबित्त ॥ तबबसिष्ठमुनिज

सिधसा
स सब
नसदस
षनरस

रत: लोकहितराजसुलिजय पिताबचनपरवांन कालगतिजा
निसुकिजय नृपसुरलोकनिवास कहिनपनपूरनकरयो: रा
मबिषमबनवास सबिधिमुनिकृतअनुसरयो: तुमसाथनीति
जानतसगुन: बिकललोकअवलंबबिनु: अबकरहुराजअपाउ
चित देहितिलकसुतसोयिदिनु ॥ छंद पधरी॥ अनउचितउचि
तअपाअधीन: पितुबचनमानिसुतसोईप्रबीन पितुबचनक
जदिजपरसधार सहसोदरजननीकृतसंयार जाचेउलनजो
बनजजाति सुतदयो बिस्वबदो बिख्याति उपजोनउनकुकोउ
अजसअंक नपबचनरतपालकुनिसंक पितदेइराजसोईल
हेपूत समतयहबेदपुरानसत ॥ कोसल्याउ॥ इहकोसल्यादि
कमातआइ: सोकतिसमयकारतसुनाइ अवधेससुरगबन
रामआपबससोकनरतनुमबिरहआप करिहैकोरहाल
मिलोक सुतकरहुकाजमनतजहुसोक अवलंबनसबकौ
तुमहीआज: रहाअबकीजेबेगिराज: पितआपाकरहुप्रमा
नपूत यहनीतिधरमजसहेअनत ॥ सो र ग ॥ कबि कृ॥
बिषमसुनतयहबात अश्रुसलिलसींचीअवनि: दुषअंकुरउपजात
चूमंजुतउलहेनरतके ॥ नर ताकपकृदयजलनैन: तहारोमउन
रतन बिकलनरतकहिबैन काजनमोकहरामकछु ॥२॥ कुंअयम
लअकाज: उपजोकेकरउदर: चाहतकुसुषसाज: दुष्टमोहिअवर
जिदो ॥३॥ यहमोतेनहीहोइ: राजलेकुरघुरामको: मैसिरमानीसोइ
कौकुजसअपजसकहै ॥४॥ रामलषनबनबास माताबिधवापि
तमरन: हमहितिलकजगहास: नलीवनाईबातबिधि ॥५॥ छंद
पधरी ॥ रघुबीररामराजायिराज: उनकीयहसंपतिसुषसमा
ज: अबतोमुहिसकिउपाइएक: तजिओरबातयहयहोइक: सुर
देवचलहुलेसबनिसंग: यहिबांहरामआनकुअलंग: जननीसु
रमंत्रीबंधुआइ आनियेरामजिहितिहिउपाइ: यहमंत्रसबनिअ
वलंबआइ: नयोसोकसिंधुबूडतसहाइ ॥ कबि कृ॥ कीनोप्रमा
नयहमंत्रकाज: सबउठेथापिसिजनसमाज ॥ नर ता ॥ हहा॥
कलोनरतगुरमंत्रिकहे: पुनयहकरहुप्रमान: सबमंगलया
महसमहि: करियेप्रातप्रयान ॥७॥ कबि कृ॥ मानिनरतकु

तमत्रमनः पूरनप्रेमप्रतीतः सोनिसिवकरीचक्रजो लोकनिबि
षमबितीतः॥ होतबिहानप्रयानहित रामदरसचितचाउ अ
बुजजोदिनकरउदय उरआनंदअमाउ॥ छंद बेताल॥ च
रत चित्रकूट गमन॥ सुषसाजसरबअरुधतीसंग बनिब
सिष्टबिमान पुनिबामदेवसबांमपूजित प्रगटरथपरवान
चवरोलसिवकासुषसुषासन अअरानिअरोह बाहनीकरनी
बिबिधिबाहन सकलदससमोह सबबीरजोबिवसानबेसी
य सचिवसुतसमाज कृतजथाक्रमआरोहकीनें सुतगबा
हनसाज पुरलोकजानबनाइपूरन जथामनसुषजोग क
रिहरषरघुबरदरसकारन प्रगटप्रेमप्रयोग गजबाजिसुर
थपदातिअगनित चतुरचमूचतुरंग पुनिगगनचुंबितधज
पताकी अतिसुरंगउतंग नीसांनगहरनिनादनिरंतर अ
वनिमध्यअकास प्रगटसुरब्रह्मंडपूरित प्रतिदिगंतप्रह
स धरजातधसिंहगमगतनुवधर कमग्रीवकंप सु
रसिधछूटिसमाधितिहिछिन संक्रमतदलसंप मिलिअ
नलषुररजपूरिमंडल अगमचढिआकास तमप्रसरिच
क्रबिछोहतिहिछिन तरनिरुपतताप पदचारतरतसब
धपावन कृतगमनसुतकाल समसांतबेषबिसेषसो
ना मध्यगतमुनिमाल॥ सवैया॥ ग्रीषमरितुगज
जूथजो सरवुरजातसकाम बिकलत्रिषातुरप्रेमबस
रूपदरसहितराम॥ कबित्त॥ सेनाप्रमान॥ मिलिस
हअदसमुहित मत्रमातंगमहाबल सुरथबीरबरसहस
साबि बितिपालसालषल येकलषअतिसजव अस्वजो
धाआरोहित मिलिपयदलधानुषसमूह अनंतगअ
संषित धसमसतिधरनिगिरअगदहि कमग्रीवअ
कंपकीय सेनासुभरतचतुरंगसजि समुषचित्रगिरसं
चरीयाना॥ छंद॥ अंगमेरसीमासघन बनसरसरितबि
साल षुरतिनिसानदिसानघन मिलिनिहाउगिरमाल
॥ छंद पधरी॥ नीसानघोषसुनिनृपनिषाद बनराअ

केलेवढ़ि विष्मार्द्ध॥ गुरुवाच॥ सेनाअनेकबोधवसकेति महि
बाटयाकंधकुस्तमेलि रघुनाथकाजगुहिकोपिराज इहिषे
तनरत हमजुधआज असमथरामजोनतअपान सोरईचले
जातदतबलसमान मोहिप्रथमरामकिकरहिमारि बनया
इततोयासिहेंबिचारि॥ कबि॥ नृमिकाजनवरूत बंधु
सुतपिताबिरोधत नृमिकाजनवरूत सतछोडेहितसोध
त नृमिकाजनवरूप करमनिरतसबकरहीं नृमिकाज
नवरूप अपथापीअनुसरहीं नृतनृमिराजसोपेनरत
कृष्ण बिनाहीकरचद्रो हीयहेरिअकंटककरनहित बिष
मबैरबियहबद्रो॥१॥ छ॥ पग्यैनतनिष्मादयाति सोध
लेनसबिसेष करनआगमनरतकोआनकुजाअसेष
॥१॥ कबि॥ बिषमपंथपहत्रांनबिनु चरनचारबितव
इ श्रावतमुनिवरवृंदमहु नरतअअसतनाश॥२॥ साति
कबेषबिलोकिसुकधावनअयेथाइ सेनाकारनस्वामि
सों अषिलनिवेद्योआइ॥३॥ छंदपूधरी॥ निसचयहयछ
केतबनिष्मादु पुनिचलेपाइबरजितप्रमादु करजोरिआ
इगुहदरसकीन परिदंडनाइबंदनप्रबीन अतिप्रेमव
रतलीनोउगइ लषिरामसषामिलिकेवतार अतिप्रप
जिमोहमुकहिनअंत सानुजमनुनेटेरामसंत पुनिपूछिकु
सलपथचलेपाइ सीयसमलषनसुषिलहिसुनाइ॥गुह
बाच॥ प्रभुदासजानिकरियेप्रवेस सदनममहोइपावन
नरेस॥ र ता॥ पुनिनरतकसोगुहसोप्रकास बिनुरा
मनआवहिनगरवास रघुबीरसषातुमअद्रिराज अ
वचतकुसंगमउचितआज॥ कबि॥ जिहिनोतिस
हनुजनरतजात कीनोप्रमानसोरघुतिकिरात बि
षमपथजथाक्रमकीयप्रमान गिरचित्रनिकटअये
सुपान इहिनिसाजानुकीहिस्वपनआइ सबिसेषप्रा
तरामहिसुनाइ॥ सीताबाच॥ अनेकसेनमिलिनरत
आइ बेकृतसरीरदुषदिनबिहाइ तनषीनमलिन

सबमातसंग। तिहिरूपअनअरुअनरंग॥कबिरु॥यहसुनोस्व
पनजबअवनिइंद्र। चषअश्रुधारचलिरामचंद्र। सोईस्वपन
रामसेषहिसुनाइ। अवचिंतअजकछुअसुनआइ। यहकहि
सतीतरयुबरअन्हाइ। पुनिप्रजिजथाबिधिरुद्रपाइ। उतरदि
सिसनमुषबैठिआप। बरबीररामबिसमयबियाप। नतपूरि
धरानीसाननद। बसुमतीकोलिमुनिगनबिषाद॥किरात
॥च॥ ६॥ सेनसंगचतुरंगसजि। नरतसहतलघुभ्रात। आ
येइहिबनअपनै। कारुकलोकिरात॥॥श्रीरामबाच॥ आ
हिअचानकआगमन। इहानरतकोअज। कहोलषनकारनक
वन। सोचतुरंगसमाज॥॥लछमन कोप॥ सत्रुसेषनाहिन
सुषद। निगमनीतिनिरधार। याहीतेअवनीसउर। बादतबैरबि
कार॥॥इसएकमहस्वमिटै। होतजहाकिरुहेत। बिग्रहबि
षमबिनासकै। निसचयतहानिकेत॥कबित॥षंनिमरेरा
नषेत। उसहचतुरंगबिकरु। सरितओगसपूरि। बीरकेतुक
बिसतारु। सानुजनरतसधीर। बीरजमलोकहिबासो। के
कईउरपुत्रसोक। ज्वरप्रबलप्रकासो। कुलतिलकछत्रअ
जसुवनको। रामसीसलेधारिकु। कारुनरूपअवधेसकरि
सियबीछिबैगरिकु॥॥ ६॥ प्रभुतुमजानतधरमपर। अ
पुनजेसेओर। पावैमनुजबिभूतिपुनि। किंनरहतजीयमोर
॥॥पाईनृपताअवधिपुर। सबपरयागसाथ। आयेअवसर
जानिअब। करनअकंटकराज॥॥बनहिअकेलेतुमबसत
संगनसेनसहाउ। असहनकोलछनयहे। देतसमयपरद
ऊ॥॥छंद॥ अषरी॥कोनराजमदचलोकुचाल। बऊरार
जबिनसेबुधिबाल। सोमपइपदगुरत्रीयगामी। नऊषजो
तिहिजनोअयनामी। बेनबिप्रकीयबेत्रप्रहार। सहसबा
हुजमदग्निसंघार। षलसुरसंगोतमघरषोयो। रंधजये
पुनिपाछेऊरोयो॥कबिरुबाच॥कबित॥ जटामुकटसि
रजूट। बसनतरुवचबिराजित। कंधअजिनकरदंड। रेन
रंजितनराजित। सातजोवअनुसार। बयरबिपरीतबिल

बजीय। रामबेषआचरीय। संगमुनिवरगुरसजीय। करिचितचरनरघुनाथ
के। यहीसमयजुआगमन॥१॥ रामदिष्टपथनरत। नयेजबदेऊनाई।
मगनसातरसमाऊ। साथमुनिवृंदसषाई। चितप्रेमवदिरामचंद्र। धरआ
तुरथारे। प्रणितदंडजेपरे। जरतलेकंवलगाए। तहासजलनैनरामत्व
तन। कोउनउरअंतरकरत। अनबिद्यप्रीतिरसरीतियह। भातरामचे
ष्टनरत॥छंदप धरी॥ मिलिसषातहएहसुषआपा। उरलाइलयेर
घुबीरआपा। सबबंधुसीयाअपनेसुनाए। आनंदबढ़ोअतिमिलत
आए। सुतदरसबंदिगुरपिषसंनारि। मिलिबेगिरामपरिषदसंगारि
बसि होउ। बोलेबसिष्टगुरबिमलबानि। मातासबआईमोदमानि
कबिकु। पाउधारिरामतिहिंगपुनीत। समबंधुसकलअरुसीयासी
त। आयेसहरषराघवउदार। बंदनकृतजननिहबारबार। मिलि
मुदितजथाक्रमसबेमाई। बेगरिअकलेलेबलाई। श्रीरामोबाचापि
तकुसलरामप्रजीकृपाल। करुनारसप्रगटोतिहिकाल॥कबिकु॥
राजाहसरथ परलोकप्राप्त। रहिसकिनजननिसबउगीरेए। हरि
हपुकाररबनिषमहोए। मिलिनयननीरमनुबरषिमेह। दुषसोक
प्रगटजनुधरेदेह। होयोसुधराधरअरुधार। प्रतिसबदहोतकंदर
पुकार। करिसकिनधीरनरनारिकोए। रनिवासदुःषजरुजीवरोए
सुरनारिकहतिसहनिसत्रास। तरजधरब्यापितसोकतास। गुर
त्रीयाअरुधतिअतिसंगान। सबहिनकोकीनोसमाधान॥अरु धती
राजलोकहिप्रबोध॥ हरिइछाकबुऊनहथाहोए। कीनेउपाएहिंग
नकोए। मायाजुप्रबलदेवीअमान। सिरबहतसुरासुरनरसमान
काटेमगमसंतकउपरकोए। हरिहेतबलीसोकोउनहोए॥कबिकु
प्रछालिउदिकआननपुनीत। तवसासुअकतरिलरीसीत। सबि
बादरामगुरबंधुसंग। तहान्हएतरलगंगातरंग। सबिसेषरामस
बबिधिसुजाने। दीयपितहितिलजुलिउदिकदान। अबिलेसराम
गुरमतउदार। करिक्रीयजथाबिधिकुलाचार। प्रभुबेगिसाधप
रिषदसमान। नित्यहोतधरमचर्चानिदान। बासुरकछुरहिबिर
हबीति। पुरलोकदरसरघुनाथप्रीति। श्रीरामबाचाएहीबच
नराम। गुरसोउचारि। द्विजलोकहोतग्रहबिनुदुषारि। संगमातन
रतकरियेप्रवेस। दलबलसमानपुरअवधिदेस। कबिकुबाचा
एकदिवसनरतसुतसनाए। गुरसषासहतसानुजसुन

इ: मुनिवरगुरमंत्रीसुतरमोनि: पुनिबरनचारिपुरजनप्रमोनि॥ इहा॥
इहासबनिमिलियोकहौ: अबकछुकरऊउपाइ: देषिजथाबियिसुन
हिवस: राजतिलकरघुराइ॥१॥ नर नबा चा॥ कबित॥ अलपकाज
नवनूरि नहिनब्ययकरतबिचषन: येहैनीतिउपदेस गहतसुरअ
सुरसिधगन: हरिकाज जिहितिहिजुनाइ बसुअलप बिथा रहि: पु
रुषवहेपंडितप्रमान योनिगमउचारहि अ: नषेषतिलकरघुबी
रअब करिलेचलियेअवधिकहि: करिहैनिवासहमनरतकहि: म
हादेकारन्यमहा॥१॥ इहा॥ अरथगयेसरबसरहै: मंत्रयहैजुप्रमान:
बसिहैहैमभुनिबेषबन: रामबसहिरजथानि॥२॥ कबित्त॥ नरतस
हानुजनगतिपर: देअगेमुनिइंद: मिलिसंकलपबिकलपमन
अयेजहारयुइंद॥ कबित्त॥ करअंजुलिजुतनरत: रामसोंप्र
लपतिकीनीय: अवनिचक्रतुमईस अषिलश्रीयतुमहिअधी
नीय: करहितिलकअनषेक: छत्रसिंघासनसजहि: मातहोहिम
नमुदित बिस्वजयदुंदुभिबजहि राजाधिराजरविबंसरवि बि
कसहिलोकजुकंजबन: करियेप्रयानअबअवधिकहि: यरयरम
गलहोहियन॥१॥ छंद पद्धरी॥ जननीममजाच्योकपरजोग: प
तनहिनसमझियहअघअप्रयोग: होनीसरैनहीअतहोइ: ति
हिलागिकहअबकरैकोइ: रहानुबकरियेबेगिराज: यहछित्र
धरमहैउचितआज॥ श्रीरा मबा चा॥ पुनिकरतरामनरतहिप्र
बोध: पितुबचनलोपबेदहिबिरोध: सुतपिताबचनकरिसंगता
स: निरधारताहिनरकहिनिवास: पितबचननरतकरिबेप्रमान
इहिगेरनकारनउचितआन॥ नर ता॥ तुमनीतिधरमजानत
नरेस: बियिजुकतनरतउचरयौ बिसेस: उनमतनातिचितत्री
याजीत: अपानअतिहिकामुकअनीत: अकेयबचनरनकेअक
ज: सोईकहतनीतिपंडितसमाज: उपजेअनरथसुनबचनअंत
सबपूछऊमुनिवरसायसंत॥ रा म उ॥ अपरायनमातापितोए
ह: सबनाबीकारननिसंदेह: बरषदसचारिदंडकनिवास: पि
तबचनसत्यकरिऊप्रकास पितबचनलंगजोकरतपूत: अ
नसंसत्रबयककहियेअकूत: पितयातपापपृथीप्रमान: इ
हिगेरफेरिकहिबोनआन॥ कबि क॥ तबगयेनरतउगिं

गतीर: सजिदरजासनबेगेसधीर: पनकस्यौदेहत्यागनप्रमानः नि
रधारनगतिरघुबरनिदानः सुनिनियमनरतकृतयहबिसेसः सुर
काजनेगजानेसुरेसः सुरराजसहितनबसुरसमाजः कहिहेतग
गसोदेवकाजः सुरसुरीदेहधरितहासकामः मनमुदितआइजहा
अनुजराम॥ कबितागंगा ३॥ येनरूपकीयधरनि असुरअय
नरआकंता: ब्रह्मबिष्णुसोबिवरि तासदुषकहेदुरंता: बरअमो
घतहाबिहत: ब्रह्मकेहृदयोबिसंजर दसरथनृपकेपुत्र: नियत
केलिआकृतनर: करिकृअमूलरावनसकुल ताहिनपेबोधोजतब
अषिलेसबिसुरीनोअतय अवनिहेकृनिरनीतअब॥छंद पधरी॥
रहिहेतबिसुअवतरेआइ: संयरअसुरदेवनिसहाइ: निरलेपनिरे
जननिराकार अवतारलयोकारनउदार: नहीबोधवकालकेनि
दान: आरंभआनकछुकरेआन: केकईआजबनवासकीन: निर
धारकछुइंछानवीन: येजातबनहिसुरकाजआज: रावनकोकरिहे
नासराज: आपाजुदेहिरघुपतिअनंत: सोईकरकृनरतहवछांनिसं
त॥ दहा॥ करिबिनासपोलमतिकोः देवकाजकरिदेव: अवधिबि
तेअवधिपति: ओहैअवधिअजेव॥१॥ कबि कोकीयप्रबोधम
हाकनी सबनरतहिसमुझाइ: महिमाजथासरूपमिति: सुषस
सथानसिधाइ॥२॥ सुनिप्रबोधसुरसरितकोः नरतउरेसतजा
इ: आयेआश्रमआपनेः बिसमयहरहिबिहाइ॥३॥ राजा जनक
आगमनं॥ सोरठा॥ ताहीअवसरइतः आयेजनकनरेसके
तहासुनिचरितअनूतः रामजोगदसरथमरन॥१॥ इतदसाय
हदेषि: पुनिआयेमिथुलपुरी: बिनरीबातबिसेष: सबहीरा
जाजनकसों॥२॥ बढ्योबिषादबिदेह: सुनिसुनिसोबातेदुस
ह: सोसकुरंबसनेह: राजाआयेचित्रगिर॥ छंदबेला॥ लारयु
नथसनुजजनकराजा: मुदितमनसाजनमिले: सुरतेकदस
रथगमनसुनिसुनि: बिषमदुषनयेआकुले रनिबासउनयउ
दासरसगत: मिलिसमयअनुसार: रिषत्रीयकीन्हिनेकरा
निनि कीयप्रबोधप्रकार: कुलराजराजसमुझमिलिकछु का
लछेपनकीन चित्रकूटकीसुधरमचर्चा निसहोदिवीन
कबि कबाच॥ रानीमेथलिराजकी बसुरकबिष्णु

तहिकरतिप्रबोधसो: जथासमय बिधिबात ॥ सीताजननीप्रति॥छंद
पधरी॥ पितदतरामबनवासपाइ: बसनीतिचलतिलकहिबिहाइ: दुषत
हामहादुसहदुरंत: अनचितकष्टउपजहिअनंत आरुनजंतदारुनअ
साधि: उतपातकरहिनवनवउपाधि: मनुजासनराहसतनअमाने
नुवबसतदुष्टबनबनतथान: बधबालरामलीलाबिलास: तातेनउ
चितनुमसंगतास: हरछांडिपुत्रिकारहुअथेह: सबकरहुसासुसेवा
सनेहु: रघुनाथबिरहअरुसोतिरेस: बसिअहबशावहुकछुबिसेस: य
हसंमतहैतवपितप्रमान: करियेमसिहाकवरिकान ॥ सीतादस॥
अथबदनबिमनहीप्रतबैन: नीरदसमानजलधारनैन: स्वरन
गकंपरोमांचसंग: उपजोसीयसात्विकभावअंग: बेबरनदेहप्रसे
दबारि: हीयबिकलसीयहिजननीनिहारि: सोदसादेषिसीतासत्र
सबारि: हीयबिकलसीयहिजननीनिहारि: सोदसादेषिसीतासत्र
सबारि: बिपरीतहोइकछुनोबिस्वास: निरधारजनेताकीयनिदान: पु
निकहुरहनसीतजेप्रान: पतिप्रेमरतेमातप्रभाव: दुषमगनसीयउ
दिसभाव: उरलाइजननिलीनीउगर: चषपोंछिबातओरेचलाइ:
कबिकहाच ॥ दूहा॥ नृपतिबिदेहनिषादपति: गुरबासिष्टसुप
न: मुनिसमाजमहिमोअमित: नेगमनीतिनिधान॥१॥मंत्रिसुमंत
हिसुनरमिलि: बीरनरेसबिसेस: एकसमयएकत्रहो: देतनरतउ
पदेस॥२॥छंद पधरी॥ बसिष्टोबाच॥ गुरकहोनरतसोंगूढग्या
न: सिषसमयमानिबरतहुसुजान: रावनबधकारनजातरामि
करियेनबिधनरहहिबिकाम: तातेअबआग्रहतजहुतात: मिलि
रामचलहुलैअहमात: तुमसदासाधसंमतसधीर: बिधिकहहि
रामसोकरहिबीर: गुरपिताबंधुजेगोसग्यान: नहीबचनलोप
करियेनिदान॥कबिक॥मनसोचिनरतगुरबचनमानि: उगि
रामचरनदेषेजुआनि ॥दूहा॥ हाथजोरिबोलेनरत: सुनहु
नानकुलतान: महाबाहुरघुबीरमुहि: प्रभुआग्यासप्रमान॥
श्रीरामबाच॥पितुदीनीआग्यासगर: हितवाअनहितहोइ: सो
हमतुमकरियेसफल: कुलहिकलंकनकोइ॥२॥ कबित॥
तहाप्रनामकरितरत: रामसोकसोजोरिकर: प्रभुआग्यासप्रमान
सबैममानिलईसिर: परमपुजिपारुका: देवमोकहअबदिजय
केकेईसुतजुतकलंक: पुनिपावनकिजय: सोपैप्रमानत्रैलोकसि

र राघवरछारावरी: करुनानिधानदरसनरतकहँ: प्रेमसहतनि
जपावरी॥१॥ दो॥ कवि रुबाच॥ महापादुकारतनमय: ल
ईनरतउरलाइ: पूजिसुराषीसीसपर सोसुषउरनसमाइ:
चर ताहिबिअवधिगतप्रथमदिन: नावकुअवधिनरेस: करुना
निधितोनरतको: सुनिहेअगनिप्रवेस:॥अथ श्रीरामनतीपदे
सनं॥ पृथीपालकयेकन्दप: सुनियेनरतसधीर: मानपानक
रियेकमुष: पोषतसकलसरीर॥३॥ जैसेंबनहिबसंतरति: स
बकीकरतसंसार: तरबल्लीनिपोषितिहि: फूलतफलतअप
रा॥४॥ तोहीतुमकरियोनरत: पुररहासपुनीत: जानतहोर
घुबसजो: राजनीतिसबरीति॥५॥ अवनिसंतारकुअवधिलौ
तुमसबलतिसयान: करियेरहालोककी: पावहिसुषबकुप्रा
न॥६॥ लोकबेदअरुकालललि: जोबरतेनुवपाल: ताकेबुधि
प्रनोबलै: जातबिलयषलजाल॥७॥ कबि रु॥ नेहिनरतअ
रुसत्रुघन: बिदाकरेयुबीर: कंपरुदयअतितनपुलक: सा
तिकनावसरीर॥ कबित्त॥ बिछुरतबीरबिदेह: प्रेमजुतनयेपर
सपर: पुनिपुनिदंडप्रनाम: नियतकृतनरतनिरंतर: लयेराम
उरलाइ: हरतलोचनजलधारा: देवसिधयहप्रीतिदेषि: आनंद
अपारा: करिचलेनरततहांपरिक्रमन: संसयमिटोसधीरको
क्रमक्रमबिलोकनफिरकरत: कमलबदनरघुबीरको॥ माता
उ॥ मांगनआपसात: रामसीयलषनसिधारे: बारबारलेलै
बलाइ: गोदनिबेगरे: अवलोकतनहीं दिगअयात: उरलेटितअ
कनि: मानुबिछुरीकुअमाइ: निधिपारीरंकनि: जुरिचितवहि
चंद्रचकोरलो: रहिकटकपलरोकिहै: करतारहोहिअैसीकबु
हि: फिरिबिधुबदनबिलोकिहै॥१२॥ दो॥ आपामांगीरामई
हा: अंबाईअसीस: सबेसहाइकहेकुसुर: गुरगोबिदगिरीस:
केकईबाचाकेकेईतवरामकहै: बचनकहेसबिनीत: मयाव
समोतेतयो: पापछमकुसपुनीत॥१॥ नरपसुनाचतनिसन
व: पदतिसुकाहिप्रबीन: येजोंपाएकबसअषिल: जनमाया
आधीन॥२॥ केकेईसुरामकहि: मातनअमरषमोहि: पुनिदे
वीमायाप्रबल: हेतनआपेतोहि॥४॥ कबि रु॥ रामचलेम
ताहिमिलि: सीतालछमनसंग: उपजेसातिकनाहा उन

यहिसानिअनंग॥१॥सोरठा॥ बामदेवजाबालि, पुनिबसिष्टके
सिकप्रमुषः पूजेचरनपषालि, रामबिदाकीनेसुरिष॥१॥करिमनु
हारिअनेकः रामबिबिधबंदनबिहत, बचनपीयूषबिबेकः क
नीबिदाबिदेहकी॥२॥ मंत्रीसुनरमहीपः प्रीतमसषानिष्पाद
पतिः सबसनमानसमीपः पुनिजेबासीअवधिपुर॥३॥लयुद्ध
रघपुरलोकः सेवकरामसुजानकेः सोमनमलिनससोकः बिछु
रतनयेब्याकुलबिरह॥४॥निरजरबजेनिसानः दुसहचलेच
तुरंगदलः प्रगटप्रयानप्रयानः सुनीयतनहदुजोसबदा॥५॥
समसंतोषसुनारः नरततपसीनेषनोः सेनअयसतनार
बिषमचलेजुबियोगबस॥६॥ दूहा॥ चलेजथाक्रमनंग
चित्तः मुषतनबसनमलीनः सर्बसषायेजातसब देवबि
मुषजोदीन॥७॥ बासुरचारिबितीतबसः अवधिसीमदल
आइः नदीआमहिनियमजुतः संक्रमिनरतसुनार॥८॥पाटनि
वेसतपावरीः पूजतनरतसप्रेमः करतजथाक्रमनगतिकरः
सेवानिससनेम॥९॥ पुरुषप्रमानसुषनिपुहवि, सजादर
नसंवारि, सेवततामहनरतसुषः मोहबिषयमनमारि
॥१०॥माता गुरमंत्रीबिमनः पत्रनकरेप्रवेसः जीवनकरुगहरा
तज्यौः सिरमनिबिछुरीसेस॥११॥ समझिनिबाहतसत्रुघनः जु
वरहानुवपालः राजकाजमंत्रीजुमिलिः सबसाधतरिपुसा
ल॥१२॥ रीतिनरतकृतप्रेमरसः कहैसुनैनरकोइः रामनग
तितकिकृत्यु हेतसुनिसचलहोइ॥१३॥बसतबीरगिरचित्र
बनः हरषदिनहिदिनहोतिः रामलषनसीयसुनलषनः जो
जीयमनमिलिजोति॥१४॥ कबित्त॥ तरनिबंसअवतंस प्र
गटअवतारअवधिपुरः छाकितिलकजुवराजः सजोबनवा
सकाजसुरः पिताबचनपरवान कस्योकृतउयजुकीनौः ब
रषचतुरदसजतीबेषः लीलाकृतलीनौः क्रीडाअद्भुतनरह
रसुकबि रामचित्रपर्बतकरीय, बिसतारनीतिअरुधरम
बिधि बिमलकित्तिजगबिथरीया॥१७॥इतिचतुरबीसतश्रीअ
जोध्याकांडनाबारहदनरहरहसेनबिरचितोअजोध्याकां
डसंपूरनाः ॥सुभमंगलदा॥

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [

तनोजनबिबेकः कछुकालरामइहाबासकीनः पुनिचलतमा
गिआप्पाप्रबीनः॥ कबिरुबाच॥ छंद॥ अत्रिबिलोकतरामछ
बिः नेकअयातननैनः करुनाप्रकुअसतुतिकरतः बिबिधस
मजुतबैनः॥ छंदअर धनाराज॥ अत्रिउबाच॥ सतोत्र॥ नमा
मिदिब्यदेवतः कृपालसीलसंमतः बहुनआपबासयः प्रजाक
रंप्रकासयः बिराजितंबिरूपयं॥ अलकरंगजूथयं॥ सदिव्यनै
नसोहयं॥ तिबारिजंबमोहयं॥ सबक्रनेहस्यामयं॥ जुकामकै
कामयं॥ रदंछदंसुरंगयं॥ सुबज्रबिंबसंगयं॥ प्रसनमुष
पंकजं॥ सहासबासनासजं॥ त्रिरेषकंबुग्रीवयं॥ सुसरबसो
नसीवयं॥ भुजाअजानयंनजं॥ जुपानिरतपंकजं॥ उरमणिउ
हासयं॥ सप्रेमभावभासयं॥ जुनाभिसोभसंजुरी॥ समध्यदेस
केसरी॥ नितंबभारभारयं॥ बिमोहनंबिभारयं॥ पदंअनेजु
पंजरी॥ सरप्पदंसुरासुरं॥ सदेवसेससीसयं॥ जुदीपमा
निदीसयं॥ सुरसुरीनिवासयं॥ समूलपापनासयं॥ श्रीयासुचे
दनंसजं॥ पलोरपानिपंकजं॥ चरित्रबृतचारिनं॥ बनंयनंबि
हारिनं॥ सप्रेमचंद्रसेषरं॥ अमनक्रोधतंउरं॥ अराधमा
नजेयजं॥ सपूजिपादपंकजं॥ सरीरस्यामसुंदरं॥ पयोदनील
निरंतरं॥ बिलासबनबासनं॥ प्रभाछटाप्रकासनं॥ जटामुकट
धारिनं॥ बनेबनेबिहारिनं॥ सचापबामपाणियं॥ बिसेषस
बिबानयं॥ कटितटेनिषंगयं॥ सओपमाअनंगयं॥ त्रिबिक्रम
त्रिलोकदं॥ त्रिकालबंदितेपदं॥ नवेसचापभंजनं॥ बिदेहबंसर
जनं॥ सुरेसुरेससेवितं॥ जराभकेअजेवतं॥ रछाकबंसअ
पमं॥ सुरासुरनकेसमं॥ हरेअनंतबिग्रहं॥ नमामिआपद
पहं॥ सरप्पदंसुषाकरं॥ अमोघसिद्धिआकरं॥ ससेषसकति
सोभनं॥ सुरारिबृंदछोभनं॥ तमेवपादपंकजं॥ नमामिदेव-
सानुजं॥ सदासपुन्यसंगमं॥ निदानबुद्धिनैगमं॥ भजंतिभूत
भावनं॥ अपावनंसपावनं॥ रसेजुरूपराघवं॥ अजीततेअध
रणवं॥ हितंजुरामगावहीं॥ सपुन्यलोकपावहीं॥ प्रसीदराम
मेप्रभो॥ जुबिस्वभावनंबिभो॥ दिनेसबंसभासकं॥ नवोध

कारनासकं॥सुरंदु हुंबिनासनं॥अनावनावनासनं॥कलिकसु
यकारकं॥अकालमृत्युहारकं॥नवेसनावनाजनं॥सुसंतसाध
साजनं॥नमामिदेवनायकं॥तजेअमोघसायकं॥प्रसीदजान
कीपते॥जुसेषसंगसेवितं॥नमोनमोनरायिपं॥प्रसनकस्व
पपादपं॥प्रसीदसिंधुजापती॥नयापहारसूपती॥कुजोनिकष्ट
कापनं॥थिरंससाधथापनं॥त्वमेवदुष्टतर्जनं॥अमोघपुनिश्र
जनं॥त्वमेवतापतापदं॥अथरमनासआपदं॥नमामिनित्यनि
सचलं॥अनादिसिधअमलं॥नमामिकरमकारणं॥रसातिनारह
रणं॥नमामिलोकनायकं॥सचापपानिसायकं॥नमामिविस्व
नासकं॥नमामिदुष्टनासकं॥नमामिदीनबछलं॥कृपानिधानके
वलं॥नमामिमूलमायकं॥दुहूत्वनमोषदायकं॥नमामिनित्यरूप
तं॥महानुभावमेयतं॥सतोत्रअत्रिभाषितं॥सुसिधबेदसाषि
तं॥निकामपाठनित्यं॥बिसुधचित्तकृत्यं॥जेवतिनगतिभाज
नं॥सजरथलोकसाजनं॥ कवि रुवाच॥दूहा॥किन्निकहौ
नरहरसुकवि॥करमनासगतिकाज॥जथासकतिकृतजानि
हैं॥रामगरीबनिवाज॥१॥ मैअसकयताक्योसरन॥रामसरन
सरधार॥मोहकृतघातकपतितकहं॥यहैजुएकआधार॥२॥
अथ आधबध नं॥दूहा॥कबि रु॥ बलदंडकारनकहं॥
सानुजरामससीत॥जोजननसारथरकजहां॥निरखोआधिअनी
ता॥१॥छंद पधरी॥पथमांरु आधनामासपाप दृष्टोरकरके
समहाहाप॥बिपरीतरूपचषअरुलबांन॥बिसतारअगनिक
निकाबिधांन॥जिककरालमुषअनलज्वाल॥दरसदिष्य
दृताकुदाल॥बेरूपआघ्रचरमाबसांन॥सुवनारसरवनही
नयान॥अतिकरुदुष्टप्रतिअंगअंग॥अथमयत्रिसूलत्रामत
उतंग॥सूलअअष्टसिधनिसधीर॥सचमनुजसूलपेयेस
रीर॥निसचरनिसंकहतघोरनाद॥बमुधासकंपथिरचरबि
षाद॥आसुरकहिरेतुमकोनआहि॥जतिबेषप्रगटसंगतरणि
जाहि॥बनितानुसंगयहतपबिरोध॥पापीकिहिकीनोतव
प्रबोध॥ कबिरु॥आकरषिसीयहिलेगोअकास॥तहा

जाइ दुष्ट बोलौ अत्रास: कांननमम आयेतुम सकौन: नरतहकनि
सचरसुनौ हौन: तपसाधम नागकुकै सत्रास: त्रीयलरीछी निन
हीहैउतास: सोसुनतमात्रलछमनसमूल: सरमारिकस्वासतष
कसूल: सररामअसुरबेधौसरीर: नवगिध्योबमतमुषरुधिर
नीर॥ श्रीरामबाच॥ छ॥ ताकहपूछिरामतब: रेतूकोनिरला
ज: कतयनप्रेस्वोकलेको: काहेमस्वोअकाज॥१॥ कबि कुबाच
छंदपधरी॥ यहसुनतबदनरघुबरबिलोकि: राकसतराबे
लोरिसहिरोकि॥ ब्याध जाइकसमयसुषहिबिलसतस धीर
बेश्र बनसतानिलिजहबीर: गंधरबसकिंनरगानकार: अप
छराअछबिसोअपार: गंधरबकुतोकुंकरतगान: तिहिसमय
बिबिधिसुररागतान: रंजातहानाटकसजोरंग: अनेकनावछबि
अंगअंग: तिहिरूपदेषिमनचलेचेत: कुबदसाअंनतवतब
हेत: कतलषिकुबेरचितनोबिकार: बेषमआपदीयतिहीबा
र॥ कुबेरा॥ जाइदुष्टहोहिराकसदुसाधि: अनरथअनीतिक
रकउपाधि: परहिससरबतहासपाप: प्रतिकूलधनदहीनो
सराप॥ ब्याध जाकैहीनकलोभैजोरिहाथ: कवआपमुक
तकैकैसनाथ॥ कुबेरा॥ रघुबंसहोइरामावतार: बसकार
नकरिहैबनबिहार: बंधनबिमुकतहतरामबान: पुनिज
हजोनिलहिहोसमान॥ ब्याध जाहिगपतिकुदिष्टमभछु
टेहे: सुतत्रीयबंधुमिरिगोसनेह: सतफुदानामजननीअ
साध: बसिउदरतासकृतयोब्याध: यहकारनजोनिपिसाच
पाइ: अद्यबधिइहिबनबसोआर॥ गाथा॥ स्वयंबिष्णुर
मासीता: सेषलछमनसंजुता: सेषचक्रवताराय: सेवितनर
नसानुजा॥१॥ छंदपधरी॥ करजोरिअसुरतबप्रनितकीन: प्र
भुदेवब्रह्मरहकप्रबीन: करिदेहमनुजतुमधरमकाज
बनबिहरतहोपितुबचनआज: नुवनारउतारनचलिज
त: राघवमैंचीन्हेजतीरूप: ब्राह्मणअरथयहकीयबि
चार: भगवंतहरनतुमभूमिभार: हतप्रानजयोअबदेव
हाथ: निजपदमैंपायोदयानाथ॥ कबिरा॥ दरसनअ

धीनमभुद्धौदेह: आकासबानितबन्नरीयेह:॥देव बाचा॥दुष
देवदोषउसाधि:अखिलेसहसोटरिबउपाधि॥ इत्या॥आस
मलअनर्थयह रहसिलअजेव: सोअनुसाचोयेकसर:
उनिबाजेदेव॥१॥अथसरभंग आश्रमआगमन॥कबित्त
यावनतेजोजनअरथ आएजबरघुराइ: तहांआश्रमसरभ
गकौ: देखोअतिसुषहाइ॥ छंदपधरी॥सरभंगआरसन
सुषसकाम: राजीवनथनकृतदरसराम: पनकरिनगतिपूजाप
कार: आसनबनन्नोजनदीयअपार: सरभंगबैठियुबीरसंग
पुनिकहतभयेपूरबप्रसंग॥सरभंगउवाच॥आगेमोबैधिमुषसु
नीयेह: देवाधिदेवधरिमनुजदेह: त्रेतामहुक्षेरामावतार: ब
पुकारनदंडकबनबिहार: अथाबधिनेत्रनुदरसआस: क
रनथहसेषोसावकास: तपजुक्तइहानयेजुगबितीत: प्रभु
नयोआजदरसनपुनीत: सबनभेसफलसाधनसमूल: क
मलोननदेषोसानकूल: ग्रहराउछनकयहरम्पगउ: जोलो
दयालतवलोकजाउ: अथाबधिमनतपसिधएउ: द्विपुन
समरषोतुमहिदेव: सानुजबिलोकिबामागसीत: अखिलेस
सुकृतकेकृअनीत: सरपुजमोकसोबेगिसिध: सीयरामकृ
पउरधरिप्रसिध: जोगबलप्रगटितनअनलज्वाल: तिहिम
योनसमभुनितातकाल: उरबाहलस्यामलतनदयाल: ब
निलोचनकमालारतबिसाल: जटजूटमुकटबनचीरबास:
कटितटनिषंगकसिसवकास: जुतबामपानिधनुजुकतजेव
रहुनकरत्रासितबिसषदेव: यहरूपधारिअंतरअकाम: धरि
दिव्यदेहगोरिव्यधाम: सरभंगजस्वोजोगीसनेम: प्रभुजोति
मिलोसोसहतप्रेम॥कबि रुवाचा॥दुहा॥स्वेतछत्रहयस्वेत
सो: सनमुषआस्सुरेस: रथारोहसरभंगगो: बरषतपुहुप
बिसेस॥१॥अथमुनिवृंदसमागम॥श्रीरामराहसबध
प्रतंग॥१॥ कबि रुवाचा॥दुहा॥सरभंगाश्रमतेगमन: कीनोरा
मसकाज: दंडकबनबासीमिले: सबैरिषीससमाज॥१॥बि
हरतरामसबामबन: पेषेमनुजकपाल: स्वेतबरनजहोनहो
सयन: कूटाकृतकंकाल॥२॥श्रीसंमोवाचा॥छंदपधरी॥

है अस्थि पुंजयेक वनहेत: सबिसेष कहु द्विजक्रमसमेत: किहि
हेतु कवनयेक वनकाज: सो कहु हेतु मुनिसमाज ॥ द्विज बाच ॥
करजोरि द्विजनतव कहि सत्रास: रिषि अस्थि पुंज पृथ्वी प्रक
स: रक्षस निनषे तिन असि थराजि: बोजत जेउ बरेत्रा जिन
जि ॥ ५ ॥ कबि रू ॥ सो सुनि सुनि रघुबीर सब: दुष्टाचार दु
रंत: नास देषि द्विज दीन को: अबिरल नेत्र अनंत ॥ ॥ श्री रा मो ॥
इह कस्यो पन देग्रनय: बिग्र निराम बिसेष: इक बन राक्ष
स दुसह: सब हति कुनि सेष ॥ २ ॥ अथ पंचा सरोवर आग
मन ॥ कबि रू बा च ॥ ५ ॥ सरभंग आश्रम तें चले: वन गत
आनि बिसेषि: मनुज सीता लषन हां: दिब्य सरोवर देषि
॥ ७ ॥ अति प्रसन्न जोजन अयुत: सरवर सुषद सुदार: जल अ
थाह कुंद्रीय जलज: मन्न मधुप गुंजार ॥ ३ ॥ महा अजाद सहि
मिलि: अरु जिलता चहु ओर: बासत बिबिधि बिहंग बर: न
बत मत मयो रा ॥ ३ ॥ तब कीनो बिश्राम तहां: पंथ श्रमित सुष
पाइ: सुनि इह दंग नृपरस बर: रीझि रहे रघुराइ ॥ ४ ॥ श्री रा मो
बा च ॥ महा सयन उद्यान सह: कछु नृपरऊंकार: कहत राम
सो धो कहां: बिसमय चित बिचार ॥ ७ ॥ रिष बाच ॥ छंद पद्धरी ॥
रिष कहो सुनहु को सत्त नरेस: इह मंदकिरनि नामा सुनेस: ति
हि तप्पो इहा बसि उग्र तप: इक अयुत बरष सहि कष्ट आप: सो
सुन्यो इंद्र मुनि तप बिसेष: इंद्रासन कंपत्यो असेष: अपछरा
आइ तप थल अग्रपात: बन फूलि बिबिधि चलि त्रिबिधि बात: जो
मनि कराछि करि हाव भाव: सर मारि करे मन मथ सा हाउ: सय
क अंग निकसे उसार: बसत्र तापस जो मन मथ बिकार: सुरप
ज काज सुर रमनि संग: जो मंदकिरनि मुनि धरम भंग: तेरहत
इह मुनि श्राप त्रास: पुनि करत नित्य नाटक प्रकास ॥ ५ ॥ पं
च अपछरा ति प्रगट: रहत समीप परिषेस: सुर नृपरऊंकार सुत
सुनि यत अवधि नरेस ॥ ॥ अथ सुतीक्ष्न आश्रम आगम
न ॥ कबि रू ॥ बिसद सरोवर सघन बन: बसे कछु कर युबी
र: तापस बेष स्वरूप तब: चले धरम धुरधीर ॥ ॥ रिष अग
स्ति को सिष्य इक: नाम सुतीछन नाम: ताके बन आश्रम बि

बे. आयेश्रीराम ॥ छंद ॥ प्रभरी ॥ क्रमआतिथ्यसुतीछनकीने
नवपत्रवदरजासनदीने: कंदमूलफलस्वादसुहाये: बनते
जनदीनेमनभाये बिधिबतजगतिसुतीछनकीनी रामकृप
लमानिसबलीनी: इहांकछुकदिनरहिरघुराई: कीनेगमनमु
दितदोउभाई संगमुतीछनचलेरिषीसा: कछुदिनगवनेमगहि
महीसा ॥ अथअग सति आश्रमआगम ॥ मुनिअगसतिकेआ
श्रमआए: जाइसुतीछनगुरहिसुनाए: सुनिअगसतितबसन
मुखआए: देषेरामनयनजलछाए: मिलेपरसपरसुषमनमा
ने अतिहितरामसुआश्रमआने: कीनीपूजाबिबिधप्रकार
जोकछुबेदबिहितबिबहारा: बनजोजनफलमूलअमृतव
र प्रभुहिसमरपनकरेजगतिपर: बिधिबिधिकहतसतोत्र
बहुहीं. नाथप्रसनहोतहेउभाई ॥ श्रीराम ॥ बैठेरहसिमु
दितदोऊभाई मुनिअगसतिसोबातचलाई: त्रिकालग्यतुम
समहिगस्वामी. नियतकरमनिसहितबृतनामी: जाकारन
हमहेबनआए सोतुमसबजानतरिषराये तुमसोंकछुदु
राबनताते बिसतरजुतकहियेकाबाते बिहतमंत्रसोईकह
हुबिसेषा: सुरद्रोहीतिहिकरोअसेषा ॥ अगसति ज्ञानव
अगसतिमुनिबातचलाई: पुरातनसंगसुनहुरघुराई: आषि
लअनादिबिभुतुमआगे: षीरसमुद्रसयनकरिजागे: बिधि
तुमसोंकहबीतिबषानी: तुमअनंतकरुनाउरआनी: दये
अनयतुमहरिहिदेवा: अवनिभारतयहरनअजेवा: पुनि
तुमबिधिहिदियोबरपावन: नासकरोराहसकुलरावन
प्रभुबृतलीनोसुनोपुलंदर: घनउछवदेवनिकीयघरघर: जा
सोइंद्रहप्रभुआवन: मुहिसोपेआयुधमनभावन: सोअ
बलेसुरकाजसवारहु: महादुष्टरावनबलमारहु: यहनिष
गअहयसमसास्क: इंद्रचापयहतुमहीलइक: षड्गसति
बरतनमयसुंदर: कवचअनेदिप्रानरक्षाकर ॥ कबिरुहि
आयुधकुंजजमुनिदीने: रामलषनबंदनकरिलीने ॥ अग
सति उ ॥ छंद ॥ पुनिअगसतिरघुबीरप्रति: कलोमंत्रएकंत
इककारनसुनियेअसुत: सीतहेजिहिसंत ॥ ॥ आतापीनो

मांअसुर बातापीलयुत्रात मायारचत्रनेकमिलि बोजिबोजिमु
निघात॥२॥ राहसतिअजरूपकरि मुनिभोजनकेमूल पेटिफारि
सोनिकसिपुनि सबहीघातसमूल॥३॥ कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥
कुंभजयहरामहिप्रगटकीन निरदईनिसाचरकृतनबीन आतापी
तापसबेषआइ भोजनहितभोसोमुनिसुनाइ बनितहांआतापी
छागबेष बिधिजुकतमांसरांधे बिसेष बसकपटरम्पतपथ
लबनाइ बकुस्योंअगसतिलीनोंबुलाइ कुंभजसोआमिषजुग
तकीन बातापीदारुनहाकरीन बोलेआतापीउदरबीच॥
मुनिलिष्योनिसाचर मुनिवरजग्रानलतपअमाप उदरगतभस
मभोअसुरआप सोउपृष्टकरमसुनिरामदेव कीनेअसेषआसुरअ
जेव इहिंभांतिअजोध्यापतिअनंत इल्वनबातापीकस्योअंत॥
श्रीरामभनस्वाहा॥ सानुजरामअगसतिसों पूछेमंत्रप्रकास सु
षस्वतावकुसोगेरसो निसचलकरहिंनिवास॥४॥ छंदद्वेअष
री॥ अगसतिबाच॥ कुंभजमंत्ररामसोंकीनें दयेइंद्रसोआयुधदी
नें पंचबरीजुगजोजनपावन निकटगोतमीतटमनभावन का
लछेपनातहांबसिकीजे वृतप्रमानदेवनिसुषदीजे॥ कबिरु
बाच॥ ॥ आग्यामांगिअगसतिपंह प्रभुजबचलेप्रकास
अमरइंद्रआनंदअति दुंदुभिबजेअकास॥५॥ कछुदिनपछ
जुमासकछु अयनबरषकछुबास एकादसबीतेबरष प्र
चरतिबननिप्रकास॥६॥ पावनकस्योप्रवेसप्रभु महादेवकब
नमांझ तहांबसेनिसंकतब सानुजआगमसांझ॥७॥ अघ
ग्रीषजहां युगिलबा॥ कबिरुबाच॥ सोरठा॥ कीनोंप्रातप्रथो
न तिहिथलतेरघुबीरतब सीतानाथसुजान बिबिधिबिलोक
तसघनबन॥१॥ गाथा॥ ज्योंजीवेसरुजीव मिलिजुगमध्यजाग
चलिमाया रामलषनबैदेही तिहिछबिजातगहनबनतापस
॥द्वा॥ इहांबिलोक्योगीधइक दारुनदीरघदेह कह्योरामसो
मित्रकहं हैकोउराहसयेह॥१॥ परबतऊपरपंषसो बपुदे
ष्योबिसतार सानुजरामसंभारितहां करेधनुषटंकार॥
॥२॥ छंदपधरी॥ ज्यायातदुसहसुनिकेंजटयु यहजोन्योंपूर
नतयेआयु॥ ज टायु॥ नहीराहसकुराजाधिराज अक्ता

रसफलनो दरसआज। बिसतारबिस्व ब्रह्मा बिष्पातः जोनकु
मरीचमुनिब्रह्मजातः तिहिनयो पुत्रकसिपप्रजापः उपराजिच
राचरआष्टिआपः बिनतातरीनाकेधरमबांम। निजपुत्रअरुणन
येगरुडनाम। अरनकेनये हमपुत्रआनि। जग बिदितअधद्वैबली
जोनि। अतितरुनपंषजबअंगआइ। सीषतउठानि हमकुलसुना
इ। परनातउदितरेष्योपतंग। संपातिबडोकुअनुजसंग। उन
मानिमासहमअसनआस। अतिदूरपगयेउडिकैअकास। रवि
किरनितापहमजरतराम। संपातिनयोऊपरसताम। संपा
तिगिस्योकुलषिनसोइ। हमत्रातातबहि बिजोगहोइ। जी
रनजरायुमुहिनामजानि। प्रनुराषिलेकुसिरधरकुपानि॥
कबि रुवाच। सोश्रीधसबाइसरथनरेस। षेचासहरदरसीषगे
स। तवदयेअनयरघुबीरतास। बनरहुश्रीधइहानिकटबा
स॥ अथपंचबटीआगमन॥ दूहा॥ बिहरतआयेपंचबट
बनबनश्रीरघुबीर। कांममनकुद्वेदेहकरि। संगरतिप्रीयास
धीर॥१॥ पंचबटीतटगोतमी। आयेरामअनीत। अनुसास
नकारनअनुज। पतनीसंगपुनीत॥२॥ गंगाउतरतटसघन
मिलितरलतातमाल। बुधिवंतलछमनबिमल। सुनगरची
त्रिनसाल॥३॥ परनकुटीसुंदरसुषद। दिब्यबनाईदोइ। सीता
रामसुजानतहां। बसेमुदितमनहोइ॥४॥ इकसमयअषिले
सइहां। सोदरलछमनसंग। करतसुचरचाधरमकी। आपुनमांकुअ
नंग॥५॥ कबित॥ इहबिनेत्रयमासः बसतसुषपंचबटीबनः
इकसमयएकांतः रामसीतासमलषमनः बिस्वनिरूपणब्रह्मनी
व। बिग्यानग्यानबरः बिसरबिस्रुमायाबिलास। पुनिनगतिमुक
तिपर। बिद्याअबिद्यप्रतिमांबिबिधि। सोसुनिसमजीयहोइसुष
सोमित्रकलोरघुनाथसो। प्रगटबतावकुपरपुरुष॥१॥ जोईजो
ईकसोअजेव। प्रसमसोमित्रप्रबीनो। सोईसोईउतरसमाधांनः करुणा
निधिकीनो। करेलषनवंदनअनेक। उरग्यानउपजीय। बिहतबिधां
नबिसेष। स्यांमसेवारतिसजीय। मनटरिग्यानअनिमांनमति। उ
चितरहसिजुबुझयो॥ हसतांमलजोंजीयहितअहित। सबेतनतहां
सुझयो॥२॥ अथश्रीनारदमुनि। आपप्रसंग॥ क

बिसंकोच ॥ ६ ॥ एक समय येकांत थल बैठे श्रीरघुराम बाम अंग सी
ता बनी मानहु बनि रति काम ॥ १ ॥ त्रिकालग्य रघुनाथ तहां जानि
नव प्रभाव कारन नारद आपको सीतहि कहत सुभाव ॥ २ ॥
छंद पद्मरी इथी सुत्र मन नारद रिषीप इक दिवस आइ हिमगिरस
मीप सुंदर बिपिन तहां अति बिसाल तरु लता बिपुल संकुल तम
ल सुर सुरी निकर तप पुनि संग तरु लता कुसम गुंजार भंग मन मो
नित हत नारद मन हंत तिहि गैर बेष्टित पक्ष तुरंत समचित उचित आ
सन सुसाधि धरि ब्रह्म ध्यान लागी समाधि न ग्रान प्यास न नय छुधा
नास तप उग्र नयो अनदेह तास मुनि नारद तप सात बबिसेस सि
धासन मोलन लगि सुरेस मुनि साधन जोत पसा अमाप इंद्र पद लेइ
मत छीनि आप संकल्प बिकल्प सु नासीर उपजे चित तात अति
अधीर मनमथ ह्वोलित बहु योमान दुष्क सोर इंद्र अपनो निदा
न संक्रम्यो मदन रति राज संग त्रस चित करन मुनि ध्यान भंग सजि च
ल्यो सेन मनमथ सयीर बिष्यात बिजय त्रै लोक बीर संग हि बसं
त लीने सहार अति दरप मदन हिमवंत आइ बन फूलि बिबिधि पल्ल
व बिथार गुंजार मधुप परिहत पुकार बहि सीत मंद सोगंध बात ब
सुकाम जंत जल थल बिष्यात सुररम निरचित नाटक सगान बि
सतार नि बिधि बाजित बिधान काम रूप पंच अनेक कीन मनत
योन हि नारद मलीन कछु लग्यो नाहि बिलम करकेत सोर ल
हि परिग्रह समेत मुनि त्रास महा नय मदन मानि आधीन नयो
रिष चरन आनि करि बिनय सुनारद बिहकीन हग्छा फिकाम
ग्यो गरब हीन बृत नयो जब पूरन बिसेस सिध पाइ उग्रे नार
द रिषेस कृत सुजस सुनो आपनो कान मनमथ न नयो जिहि
जेग मान सिव सन बैरि सुरग न समाज जहां आये नारद रिषिन
राज अहमिति अति बाढी जित अनंग पुनि कहत नये सो इंद्र सं
ग आपनी कीति सुष कही आप बिसमो हरिषि हि गैर ब बियाप
श्री सिव बाच ॥ सिव कहो नारद हि जुत सनेह अति गूढ सुनहु
मम मंत्र येह सब बिधि समर्थ तुम जोग सिध पूरन प्रभाव त्रय पु
र प्रसिध इहि भांति न कहि बोक हु आन समदृष्टि सदा तुम हो स
यान करियेहु राव जो कहे कोइ हरि सो न कहु यह प्रगट होइ बि
सुजो सुनेय हक हु बात तब श्रेय ति हारो न हि तात ॥ कबि रू
॥ ६ ॥ मदन दहन उपदेस मन नारद मानो नाहि बिधि कृत

अंकजुनालबिचि:जथाजतनकुनताहि॥१॥अटनकरतनारदअव
नि:सुकरबीनसनाद:हरिगुनगावतहरषजुत:।बजितबिषयबि
ष्यारद॥२॥आयेइंछाआपनी:सुषहीनारदसंत:जहाबिराजितबिस
जित।श्रीयासहतअकिंत॥श्रीभगवानो॥करिबंदनरिषराजकर:प्र
जाचरनयषारि:दीनोंबकुतेहिनदरस:मुनिसोंकसोमुरारि॥छंद
पधरी॥बैगरिपरसपरकतबात:बिस्वेसरनारदसोंबिष्यात॥ना
रद॥सुषपास्कहतनारदसुजान:जबबेरहमहिमवंतजाइ:तिहि
मेरतप्पोसेउग्रताप:आरंभकरिआयोमदनआप:तिहिदुष्टकरेबकु
तेंचरित्र:मिलिपुनिसरसरितुराजमित्र:अनेककरीतिहिषलउपा
धि:ममछुटीनहिनतदपिसमाधि:नहीचुक्योध्यानमेरोनिदांन
बिसिगयोंनयोमनमथबिसांन॥कबिक॥ऐसोकोजननीज
नोआहि:जगअहंकारब्यापैनजाहि:कतमदनचरितनारद
प्रकास:त्रंबकबकुवरजेकुनेतास॥अतिअहमितिछायोचित
अपांन॥मुनिनारदबकुरेमोदमांनि॥जगदीसतबेमायाअजीत
नवतबहैतमेरीअतीत॥कहा॥मायारूपीनगरतिहि:मा
यारचोरसाल॥जोजनसतबिसतारजिहि:बागतडाग बिसा
ल॥१॥सबसंमृथसंजुतसुलग:नगरबसतनरनारि:करमप
रायनथरमधुर:चेनबरनरहिचारि॥२॥सबसुषजांजननग
रसुत:सोहरिपुरहिसमांन:नीतिनिपुनतिहिपुरनृपति:रा
जासीलनिधान॥३॥नृपतिहिकंन्यासीलनिधि:वहलछमी
अवतार:ताहिबाहेअवरकोउ॥एकबिनांकरतार॥४॥छं
दृष्टेषरी॥इहिमुरतबनारदमुनिआये:क्रमतस्वइंछाभूमि
सुहाये:सबसुरेससमबिनबनिलोकी:तहामनुसोजाब
सतत्रिलोकी॥अवनिपत्रहनारदमुनिआये:सीलनिधानन्ह
पतिउठिधाये:रिषिहिजथाबिधिपूजेराजा:सबबिधिकरे
प्रणांमसमाजा:इहांऐकांतबैठिनृपनारद:बातेकरतसुबुधि
बिसारद:नृपकंन्योजुसीलनिधिनांमा:बिस्नमोहलीबिसुकी
बांमां:नृपपुत्रीतहांनिकटबुलाई:दुहितालेनारदहिंदिषाई
राजासील निधि बाचा॥तुमत्रिकालदरसीरिषराया:देषकुया
लछनकरिदृष्या॥कहि कातांकीकररेषामुनिदेषी:बिकलज
योद्विजरूपबिसेषी॥जेगुनसीलकवरिकेजांनें॥नारदतेनृप
सोंनबषांनें॥राजोबाचा॥सीलनिधांनकसोतबराजा॥हम

महहिसुतास्वयंबरसाजा॥ नारद उवाच॥ नारदकहौसुग्यानिनिहारी
रचहुस्वयंबरबेगकुमारी॥ कबिरुवाच॥ पुनिनारदगौआग्यापाई
रहोसीलनिधिछबिहिलुनाई॥ बाजितनृपतिद्वारघनबाजे॥ की
यआरंभस्वयंबरकाजे॥ भौतिभौतिसुवनृपबुलाये॥ छनाबना
ईमंडपछाये॥ बिबिधिबितानमंचबिसतारे॥ जथाजोगिसनार
संवारे॥ भ्रमतरिषीसबिकलचितनारी॥ मनमैंबसिरहीराज
कुमारी॥ नारद उवाच॥ भयोबिवसमुनिचिंतानारी॥ किहि
बिधिपाऊराजकुमारी॥ दिनथोरेतपकरतदुरंतर॥ बनैनजत
नयहोकहिमुनिबर॥ औरउपाइसुगमइकआही॥ तातेअबेब
नाऊताही॥ जाचोंरूपबिष्णुकोजाई॥ नृपसुताजिहिबरैतुनाई॥
कालबिषमरहककरुनामय॥ सदानेयआतुरकहंअतिस
य॥ कबिरु॥ यहबिचारिहरिरूपधारिउर॥ अटबीबिकटभ्रमत
मुनिआतुर॥ बिरतिबिसारिबिकलभयोमुनिवर॥ संचरेअंगअंग
मनमथसर॥ चितअतिहीआतुररिनचीन्हा॥ दीनदयालदरसत
बरीन्हा॥ नारदभ्रमतमिलेनारायन॥ परमपुरुषजेजगतपराय
न॥ नारद उवाच॥ नारदहरिसोकीननिहोरा॥ ममप्रभुकरहुकाज
इकमोरा॥ श्री हरि॥ कहिहरितबेकहोमुनिकारन॥ मरुम
नोरथजोईधारौमन॥ नारद उवाच॥ सीलनिधानृपतिकीकंन
नामसीलनिधिरूपसयंन्या॥ ताकोपितास्वयंबरमांगौ॥ मैंवह
नगरनिकटहैंछांगौ॥ देवरूपअपनोमोहिदीजे॥ कारनकाज
सफलसबकीजे॥ रमारूपवहरूपरसाला॥ मेरेहीउरमेल्हे
बरमाला॥ नामनिछांडिसबेनुवनृपति॥ मोहीबरैयहेउप
जेमति॥ श्रीभगवानेंनो॥ हसिबोलेहरिआरतिहरिहुं॥ त
वहितहोइसुपेसबकरिहुं॥ कबिरुवाच॥ धरनीधरभयेअं
तरध्यानां॥ मुनिनारदसोईनिसचैमानां॥ श्रीभगवानेंनो॥ अरथी
दोषनदेषैताही॥ आगेकछुभवनभजुआही॥ बिष्णुसुमायाप्रब
लबिचारी॥ होइनइछामृषाहमारी॥ ग्रसोरोगजोकुपथिभगावै॥
बेदनिदेषातनिबोरावै॥ मुनिजोमूढभ्रष्टबसमाया॥ छदमछं
दिमोहिकरबीछाया॥ कबिरु॥ कृपानिधानकोतकीकेसव
भयभंजनतारनसागरभव॥ नृपतिस्वयंबररचिरुतलीनें॥

जथाप्रकारसुक्रमजुतकीनें॰ अषिलनरेसअवनिकेआये॰ बिह
तजोगमंचनिबैगये॰ धरनीधरमानुषतनधारी॰ महामंचतह
बैठिदुरारी॰ देवसमीपतबैमुनिनारद॰ बैठे हरषतबुधिबिसा
रद॰ बिकसहिफूलहिछबिहिबदवहिं॰ बिष्नुसुदेषिमनहिमुस
कावहिं॰ उकसिउकसिदेषतनिहिआगम॰ नामनिबसीजुमन
छायोत्रम॰ इहसीलनिधिकंमांआई॰ बिषमंरूपतनबसन
बनाई॰ रूपअलोकिककंरबरमाला॰ बकबिलोकनिनयन
बिसाला॰ कंन्यासोनारदअवलोकी॰ रिषकीमनसारहेनरे
की॰ उकसिउकसिबैठहिअरसोही॰ मुनिकेअतिअहमितिम
नमोही॰ उपजोरूपगरबनारदअति॰ परमसरूपदयोमोहि
श्रीपति॰ रिषकेनिसचयरूपरसाला॰ बरिहैसबनिछांमिमो
हिबाला॰ महामनोरथमुनिमनमोही॰ चितैचितैकंन्यालत
चाही॰ कपिअकृतमुषनारदकीनो॰ देवरूपअतिनिंदतदी
नो॰ कीसबदनमुनिजानिनकोई॰ सुतानृपतिकीदेषतसोई॰ नार
दकेंजबबालनिहस्यो॰ बैनडरसउरमहबिसतास्यो॰ नारदबांद
रबदननिहारी॰ करिगलांनिमुसकांनिकुमारी॰ इतउतहेरिबिष्नु
दिसिआई॰ अंगपुलिकतसातिकरसछाई॰ दीनदयालबिष्नुज
बदेषे॰ प्रेमनिधानप्रानसमपेषे॰ जगकरताहरताजीयजानें॰
पतिअचीनकवरिपहचानें॰ बदनबिलोकतनयनबिसाल
बिष्नुकंठमेल्हीबरमाला॰ जयजयजयेस्वयंबरजीतौ॰ बि
धिसुतकोअनिलाषजुबीतौ॰ बिष्नुबिजयजयोमंगलबाजे॰
सीलनिधानरूपतिकृतसाजे॰ जथाबेदबिधिमाफुबिचारी॰ क
सोपांनिअहराजकुमारी॰ हरपग्येगनकोतकमनमंह॰ तेहिज
रूपधरेदेषततंह॰ उकुगननिअद्भुतयहदेषा॰ बिधिसुतमर
कटबदनबिसेषा॰ प्रभुकोमाफुजयोजबपूरन॰ गगननिसां
नहरषिदीयसुरगन॰ बिदासमंगलकृतबरबरनी॰ करीनिप
तिनिगमागमकरनी॰ नारदजयेनिरासषिसांनें॰ मनअमरष
अतिहीमुरझानें॰ हृदयअधारजयेरिषिराई॰ गांठिकुतेमनुन
होगमाई॰ बिकलभयेधावतरिषिबनबन॰ उरअपानबढ़ोअ

महाहसुतास्वयंबरसाजा॥ नारद दोहा॥ नारदकहौसुग्यानिनिहारी
रचहुस्वयंबरबेगकुमारी॥ कबिरुवाच॥ पुनिनारदगोआपापाई
रलोसीलनिधिछबिहिलुनाई॥ बाजितनृपतिद्वारघनबाजे॥ की
यआरंभस्वयंबरकाजे॥ ग्यौतिन्यौतिसुवनृपबुलाये॥ छत्राबना
ईमंडपछाये॥ बिबिधिबितानमंचबिसतारे॥ जथाजोगिसंगार
संवारे॥ भ्रमतरिषीसबिकलचितनारी॥ मनमेंबसिरहीराज
कुमारी॥ नारद उवाच॥ भयोबिवसमुनिचिंतानारी॥ किहि
बिधिपाऊराजकुमारी॥ दिनथोरेतपकरतदुरंतर॥ बनैनजत
नयहोकहिमुनिबर॥ औरउपायसुगमइकआही॥ तातेअबेब
नाऊताही॥ जाचोंरूपबिष्णुकोजाई॥ रूपसुताजिहिबरैलुना
ई॥ कालबिषमरहककरुनामय॥ सदानयेआतुरकहंअतिस
य॥ कबिरु॥ यहबिचारिहरिरूपधारिउर॥ अटबीबिकटभ्रमत
मुनिआतुर॥ बिरतिबिसारिबिकलभयोमुनिवर॥ संचरेअंगअंग
मनमथसर॥ चितअतिहीआतुररिषचीन्हा॥ दीनदयालदरसत
बरीन्हा॥ नारदभ्रमतमिलेनारायन॥ परमपुरुषजेजगतपराय
न॥ नारद उवाच॥ नारदहरिसोंकीननिहोरा॥ ममप्रभुकरहुकाज
इकमोरा॥ श्री हरि॥ कहिहरितबैकहोमुनिकारन॥ महाम
नोरथजोईधास्यौमन॥ नारद उवाच॥ सीलनिधानन्रपतिकीकन्या
नामसीलनिधिरूपसधन्या॥ ताकोपितास्वयंबरमांग्यौ॥ मैंवह
नगरनिकटहैंछांग्यौ॥ देवरूपअपनोमोहिदीजे॥ कारनकाज
सफलसबकीजे॥ रमारूपवहरूपरसाला॥ मेरेहीउरमेल्हे
बरमाला॥ नामनिछांडिसबैनुवनृपति॥ मोहीबरैयहैउप
जेमति॥ श्रीभगवानेंनो॥ हसिबोलेहरिआरतिहरिहुं॥ त
वहितहोइसुपेसबंकरिहुं॥ कबिरुवाच॥ धरनीधरभयेअं
तरध्यानां॥ मुनिनारदसोईनिसचैमानां॥ श्रीभगवानेंनो॥ अरथी
दोषनदेषैताही॥ आगेकछुभवतभजुआही॥ बिष्णुसुमायाप्रब
लबिचारी॥ होइनइछामृषाहमारी॥ ग्रसोरोगजोकुपथिमगावै॥
बेदनिदेषातनिबोरावै॥ मुनिमोहदभ्रषबसमाया॥ छदमछां
डिमोहिकरबीछाया॥ कबिरु॥ कृपानिधानकोतकीकेसव॥
भयभंजनतारनसागरभव॥ नृपतिस्वयंबररचिरहतीनैं॥

जथाप्रकारसुक्रमजुतकीने: अषिलनरेसअवनिकेआये: बि
तजोगमंचनिबैगये: धरनीधरमानुषतनधारी: महामंत्रत
बेगिमुरारी: देवसमीपतबेमुनिनारद: बेगे हरषतबुधिबिस
रद: बिकसाहिकृतहिछबिहिबदवहिं: बिष्नुसुरेषमनहिमुस
कावहिं: उकसिउकसिरेषतनिहिआगम: नामनिबसीनुमन
छायोत्रम: इहासीलनिधिकंन्याआई: बिचमंरूपतनबसन
बनाई: रूपअलोकिककरबरमाला: बंकबिलोकनिनयन
बिसाला: कंन्यासोनारदअवलोकी: रिषकीमनसारहेनरे
की: उकसिउकसिबेगहिअरसोही: मुनिकेअतिअहमितिमं
नमांही: उपजोरूपगरबनारदअति: परमसरूपदयोमोहि
श्रीपति: रिषकेनिसचयरूपरसाला: बरिहैसबनिछांडिमो
हिबाला: महामनोरथमुनिमनमांही: चितैचितैकंन्यालत
चाही: कपिअकृतमुषनारदकीनो: देवरूपअतिनिंदतदी
नो: कीसबदनमुनिजानिनकोई: सुतानृपतिकीदेषतसोई: नार
दकोंनबबालनिहारयो: बैनछरसउरमहबिसतास्यो: नारदबांह
रबदननिहारी: करिगलानिमुसकानिकुमारी: इतउतहेरिबिष्नु
दिसिआई: अंगपुलिकतसातिकरसछाई: दीनदयालबिष्नुज
बदेषे: प्रेमनिधानप्रानसमपेषे: जगकरताहरताजीयजाने
पतिप्राचीनकवरिपहचाने: बदनबिलोकतनयनबिसाल
बिष्नुकंठमेल्हीबरमाला: जयजयजयोस्वयंबरजीतो: बि
धिसुतकोअनिलाषजुबीतो: बिष्नुबिजयजयोमंगलबाजे
सीतनिधानृपतिकृतसाजे: जथाबेदबिधिब्याहुबिचारी: क
स्योपांनिग्रहराजकुमारी: हरपग्येगनकोतकमनमंह: तेद्विज
रूपधरदेषतनंह: उकुगननिअस्तुतयहदेषा: बिधिसुतमर
कटबदनबिसेषा: प्रभुकोब्याहुजयोजनप्रन: गगननिसां
नहरषिदीयसुरगन: बिहासमंगलकृतबरबरनी: करीनिप
तिनिगमागमकरनी: नारदजयेनिरासषिसांने: मनअमरष
अतिहीमुरझाने: हृदयअधीरजयेरिषराई: गांठिजुतेमनुनिधि
हैगमाई: बिकलजयेधावतरिषबनबन: उरअपनबदोअ

बनगन: हरगनफिरतसंगहरषानै: जेहिजरूपननारदजानै: प्र
गटजलाशयइहामुनिपायो: आचारीसंघाहितआयो: गनवाद
आरनिकटयहगननिउचारी: कहानहीजोराजकुमारी: यहसूरति
तजिरूपरसाला: मेल्हीनिरगुनउरबरमाला: नृपअइजनमतद
पिबुधिनाही: मूढनयहसमझीमनमांही: सुनगआपनोबदनगु
साई: झांकिनीरनिरषऊधोंझांई: कहिकहचा: नवुगनयोक
हितलनलागे: नारदछबिहिनिहारनलागे: दुषजुतरिषजब
जलमहदेषो: बांदरकोमुषआपविसेषो: बिकलाननजबकी
सबिलोक्यो: रोषबढ्योउररहतनरोक्यो: बनबनकोलतनारद
रिषबर: धरिउरध्यानसरूपधरनिधर: प्रभुआरतिबंधूप्रतिपा
लक: अषिलअविद्यामूलउषालक: हरिनारदकहंदुषितनिह
रे: प्रीयासीलनिधिजुतपाउधारे: दंपतिदेवजबेमुनिदेषे: बढ्यो
श्रमितउररोषबिसेषे: बिकलदसाहिनोगवतरिषबर: अतिह
जरतक्रोधानलअंतर: परमपुरुषतिहिमुनिपहचाने: महारो
षउफनमनमांने ॥ नारदबोलेइहांनारदबिषबांनी: भगई
यहेसदातुमगांनी: बलिबृतनिबलोतउगहिबांध्यो: सांचेकु
सोंकपटहितसांध्यो: मथतसमुद्रबिथारीमाया: कहकिसु
रासुरसांचदिषाया: नगतसेनुसबदनुजनुलाये: प्रांनत्रम
इबिषासबपाये: करनीकपटसुरनिसूकीनी: लछमीअरुम
निआपहिलीनी: गोबिंदअबकुकितकगुनगाऊं: प्रभूचरित्र
निअंतनपाऊं: महाप्रबलयहरषरीमाया: नहीमुहिबचबि
गोयनचाया: कहकिकहकिपुनिपंथदिषावत: प्रभुकहिये
यामहकहापावत: परमस्वतंत्रनहीकोउसिरपर: नावतमन
सोईकरतबिस्वंभार: आपनिरंकुसकरतउपाये: सोतुमअबलोक
कुनसाये: बिस्वरूपोतुमकोउनबांचा: सोपरपाकलहऊंअबसांचा
जोबपुधरिमेमकाजाबिगारा: आपलहऊसोईनरअवतारा: बिनत
कारनमोहिबिगोयो: रहोनिरासमहादुषरोयो: तुमतिहिंबिनत
बिरहबिसेषो: दुसहआपनुगतऊदुषदेषो: करीकृपामोहिकपिमु
षकीनां: निधिमांगतजोपाथरदीना: तेरीकपिहोहिसहाइतिहारी
निहचैतबपावऊतुमनारी ॥ कबिरु ॥ हरितबमायाहरकीह

सिकै बिसनचावतिजोअपबासिकै माधवप्रेरी कुतीजमाया सोई नि
वारिनारदसमझाया नारदमनसंभ्रमहोछायो बिसमयमिटयोकले
सबिहायो पारनासतमअर्कप्रकासे नारदउरसंभ्रमसोनासे ना
रदरेषोफेरिनिहारी नहीतहाकमलाराजकुमारी नारदमनतहो
नयोमलीनो नयउपजोकरुनारसलीनो॥ना ई॥जगतरीस
प्रणितारतिनजन ग्यानिधानअपानहिगंजन॥कबिको॥नार
दहरिचरननिसिरनायो दीनभयोनिजदोषदिषायो॥ना ई॥
महअपराधछमकुसोमेरे रिसबसकहिदुरबादघनेरे पापमिट
वकुसोप्रभुपावन नयउपदेसकअनयनसावन॥कबिको॥बिषु
नारदहिहितपरबोधो संतुतजनअनिअंतरसोधो॥श्री हरि॥
मृषाबचनतुमभवकेमानें नोअपहासअबिलअपमानें नवउप
देसतुमहिनहीनायो प्रगटयहैकरनीफलपायो नजकुसहअ
नोमनवकेरे तबअपराधमिटिहैतेरे हरियोकहितयेअंतर
ध्यानहिं नारदगयेकरतयुनगानहिं॥श्रीरामो॥नारदआप
दयेनारायन प्रगटसलोसोरघुकुषपरायन॥कबित्त॥सुनिसी
तायहहित आपनारदमुनिदीनो कारनकरनसमथ हरिकुंगी
कृतकीनो तातेअबमनुजावतार हमलयोनीतिहित सोतुगईहि
जनमअसहसहिहैबियोगइत सोईसमयबमोअवचिंतयह अप्रय
गउनमानिये निरधारकरुनारदबचन जगअमोघयेजानिये
॥१॥हितउपाययहकरुअनलमहराषकुआतम बहतबपीहरआ
हि सुषहितहाबसकुप्रीतिसम या यारूपसरीर रहकुममसंगनिर
तर करिहैहमसुरकाज पुनितुमसिलकुप्रेमपर सीयकीनोंमत्र
प्रमानसोई निजबपुअनलहिआश्रयो सुरराजटस्योजीयसोच
सुर सुवनत्रयजयजयतयो॥॥रूहा॥कोजानैनरहरसुकबि प्र
सुचरित्रअनपार कारनकरनसमथ हरि कृपासिंधुकरतार॥१॥
यहचरित्रअवधेसको समझिनलषनसुजान अवजनवकृतेअग
म नरहरप्रभुनिदान॥कबित्त॥अथसरूपनषप्रसंग॥कबित्त॥
पंचबटीबनराम बसतनिसंकबीरबर बिसदधराधरहरि निग
रफलफूलनिरंतर नदिनिरुरतरनीर प्रांनबनचरसुषपावत
तहामयूरतफिरत सिंघचकुघासबदावत मिलिकुंजपुंजगुंज
तमधुप सुषदबिहंगमरवसरस बनबनबिहारबंछितबिहर
बितितकालबिलासबसा॥१॥रूहा॥सीतासहजसुगधतें

तनयेदिगंत महिमांबनसोरतमिटी बिसमयुतयोबसंत॥१॥रावन
नगनीराहसी सूपनषा तिहिनाम बनबनसूपत्रनेकबनि करत
बिहारसकाम॥२॥इक दिसासोत्रासुरी अष्टबीदंडकआइ सोरतत्र
दुतबातबस सोतिहितिष्ठोसुनाइ॥३॥जैसैलावतिहतिका प
स्त्रीयबचनबिलास सूर्पनषहिल्याहीसरस पोहीसीयासुबास
॥४॥पापनिकीनेगंधपथ पंचबटीपरवेस चरनचिन्हरघुबीरके
देषेचिन्हसुदेस॥५॥बज्राकुसध्वजसोबिमल राजितपदमसुरेष
चरनचिन्हअवलोकिवत बढिअनिलाषबिसेष॥६॥अतिसोभा
उफनातिअंग बेषबिचत्रबनाइ थितबैठेऐकतथल अवलो
केरघुराइ॥७॥त्रातपितामातुलकुसुत दिब्यसूपनरदेषि त्री
याअनेगप्रभावतें ब्याकुलहोतबिसेष॥८॥छंदबेतालासा
निकटआइनिहारिसुंदरि रामराजीवनैन करिहावभावकटा
छिकमतहां बोलिरसमयबैन॥सूप नषाउवाच॥अबिबाहित
मोहिजानिअदभुत अमितसोभाअंग कतवसरनजाचोकोमपी
ऊित अनयदेकुअभंग॥श्रीराम मोवाच॥ किहेतअजकुकुम
रिकामैंतुम मरमपूछिराम अतिअंगअंगअनंगउदभव नई
सजग्यानाम॥सूप नषाउ॥ ममसदृसबरत्रैलोकमध्यजु न
हिनकोउवनिहारि सूरपनषरीसुंदरीकृत रहीयाहिकुमारि॥
सुरलोकबिजईत्रातमेरो सीसदसभुजबीस रविचक्रआनअ
षंडरावन सबैमानतसीस नटकुलनाईजिहिबिभीषन सुरनि
देतसंताप अकुमेयनादकुमारउथत इंद्रजेताआप हमहिसा
दृस्पसंगसुंदर कृतउचितकरतार नजिमोहिभुगतकुप्रेमभाव
न सबेसुषसंसार तुमकोंनहेइहाकोनकारन त्रमतसबे
अनीत प्रतिअंगलछनराजप्रतिमा बेषयहेबिपरीतारा
ग॥तबराम हसितिहिदयोउतर मोहिजानिसबाम बृतएक
पतनीअरकबसी रामहैममनाम सुतधरमपतनीनामसीता
जनकनंदनिजानि नामनीआनकुतेजुबल्लभ निरतसेवनिदा
न दुषदुसहदारुनदृदयदाहक सोतिकोसबिषाद सहिन
हिनसकिहैसालसुंदरि पुनिकुहेइप्रमाद अवधेसकेसुत
पिताआपा इहिबिषमबनआइ द्विजदीनरक्षाकरतकोल
त दुष्टमारतदारु लयु त्रातहैममसंगलछमन महाबीरअ

मांस: तिहिजाइअब तुमनजकुलातासंग: करुपूरनकाम॥॥१॥
कबिरु॥ तिहिजारलछमननिकटततछन करेप्रेमप्रकार: क
रेबकदिष्टकयाछिकीनें मनबिकलबसमार॥ लछ मनालषि
चितहसि तिहिकिसोलछमन: स्वामिवेहमदास: प्रभुहितजिकिन
लेकुप्रभुता संगममउपहास: सुषषोतपानसयनसम्या सम
यनहीअवकास: बसिचेनकुनस्वतंत्रबसिबो: दुषसोजनदास
नहीपराधीनहिसुषनिरंतर: मिलनतहंकमान: नगतिनहिबि
नचारसोजन जसनलोसीजोन: बिसनीनथनतपसिधमधप
नियतगुनअतिमोन आकासदुहिजोंदुगधआसा नहिनपू
रिनिदान सोसजकुप्रभुतुमरामसुंदर: सबहिंतिसमान॥
इतउतनकोलकुबितअपनो तोनकुलतजिनांन॥॥ छंदपधरी॥
पुनिआईदुष्टारामपास: उफनातिसंसारउसास॥ सूपनषा
॥ मोहिकहत्रमावतहथामूढ: गुनग्यानप्रकासतहसतगूढ
छंद बेताल॥ तिहिलिष्योनरयेमोहिकहतः बिबिधिजतके
बनाइ: इनसंगहेजेजुवतिअस्तुत: याहिलेलंषाइ: हवछो
डिमेरोकलोकरिहें: अतनरुनिअनाव: दुषरोइमरिहेकिते
दुसह बनेंयहपेदावा॥ कबिरु॥ करिरूपदारुनदुष्टकोमनि
अरुनलोचनआकुली: मुषफारिदसेनकरालदमकत: चकित
सीतादिसिचली तिहिदेषिसीतानीतनब: पतिदृष्टिआईपुनी
त: दिगसेनआगेअनुजकहदे: मुष हसेमषमीत: सरतिष्प
लेकरसिष्यासंग्रहि: काटिनासाकान: देलषनमूरुबिकारि
दीनी नजतरूपनयांन: गिरगुहाजेसेधातेगेरुकि: अवतिनि
रुरसंग: रहिनातिरुधिरप्रवाहअबिरल अरुनताप्रतिअंग
॥ कहा॥ नासाअवननसारके: प्रगटकरमफलपाइ: आक्रंद
तिचाबतअधर: पापनिगईपलाइ॥१॥ कबि ताषरदूषन
षलत्रिसर रहतथानेंजहाराहस: सुनतसूरतिनसंग: उग
मनरसहसचतुरदस: बिप्रामिषभोजनबिरूप बसिनिक
टदंडबन बिकटाननजनपदबिनास प्रतिमाजुअपावन
तहागईसूर्पनषरीतबहि: रुदतकरतिबिकरालरुष: परज

पस्तौ सुखरउरत्रासपरि: महाकसानकफारिमुषनाप॥ षरा दिकबा॥ ६॥
अरदूषनपूछअषम: उरवधौ दुषआइ: करेकाकहियेकालकहि: सोनम
बेगसुनाइ॥ ६॥ नाउ॥ बनदंडकमहपंचबट: बसतउन्यमुनिवा
ल: आहि निरंकुसयोअति: हमहिकरयेकाल॥ ६॥ यिकपोरूषतबुरे
अथम: कुलराहसयिकार: बीरकहावतबीरपुनि: हाथधरतहथीयु
रथ: कहि रुचा: सोसुनिषरदूषनत्रिसर: दुष्टनयेउरदाह: कोपे
कालकरालमनु: नरसनाहसनाह॥ छंद॥ सनयआयुध
साजि: गिरदेघनसेगाजि: धरिलेकुमारकुधार: जिनगाजिकेष
लजार: रथसाजिअपनेरंग: अतिक्रोधचलिअनसंग: संक्रमोराद
ससेन: मिलिषेहनलमनुमेन: षैलोकचढिषुरषेह: कुवचकाव
किसदेह: नगनीसुपापहिनीत: कुवअयनासोहीन: सोअसुनकु
पकुमार: अनमिअसबमिलिआइ: निसचारमांनतनाहि: जेनरकु
बधिजोहि: मुनियोररवनीसांन: जुधरामनिसचयजांन: कसिजयनुक
रमजोप: उछाहमुषरविश्रोप: बनचारमधबिभाग: कोदंडचाढिकरा
ग: दहाकसीयकटितूबीर: सरन्नमनपानिमधीर॥ श्रीरा मोजचसु
निलषनरहसमसेन: सबनिकरआरसुषेन: लेजाकुसीतहिलाल
दनअभिओरबिसाल: बनिताहिरकाबीर: सबनारकरकुसधीर
हराकहिअनुजअनंग: रहेरामरुपिरनरंग: कृतधनुषगुनटंकार:
तबन्नलियरमकार: रनरन्मोजहारमुराइ: अनेकराहसआइ: मिलि
मनोअतिसंग्रान: रसबीरकीजतराम: प्रहिओरराघवएक: उत
लिरतबलअनेक: परिसमक्रअसत्रप्रहार: घनमारअसुरसंघार: र
घुनाथसरहतबीर: संग्रामगिरतसधीर: चढिहतचरितविकार: परिषेक
उनबअपार: नेअजतमायातंत: उन्किनमुंकअनंत: सरसकतितोमरस
न: मिलिउपलहहसन्नत: परिरामसीसप्रहार: मुषसबहमारहीमार
हकुपरतउवतकबंध: अतिलिरतमरतमदंध: कछुकालक्रीडाकीन: पुनि
रोबरामप्रबीन: जोरईदुष्टमायाजाल: करिकरतरूपकराल: सोरकिरत
नससधीर: बदिरोषरनरघुबीर: जोउदयभानअनंत: तमनासहेत
दुरंत: सररामअनलसमूल: तिहिजरतराहसतूल: भयजलदजो
बसबात: बढिगगनसयनबिलात: घरत्रिसरदूषनषेत: सबनिरसे
नसमेत: नषेनासअसुरअनंग: जोसलभदीपकसंग: अत्रावलीय
हिअंत: नहयोधगगनअनंत: अहिकोरिचंगउमार: सिसुप्रेतमन
कुसुमार: कहिरामरामजुकोर: हरिमरेमुकतिसहोर: रनजीति
गढिराम: सुरपुहपबरषिसंग्राम: सुषभयोबिबुधसमाज: रनदेषि

कोसलराज:जयगंगनदुंदुभिबाजि-सुरनिरषिसिंदनसाजि:हिंत्रि
सपलचरहेह:सबकहतजयजयसोह:पलपूरजोगनिपत्र:तेईवि
पतगावततत्र:पुनिकृतप्रेतपिसाच:नतचारमंतितनाच:कहिजय
तिरघुकुलकेत-सुरराजसुरनिसमेत:इहालषनप्रभुहितआए:सी
यमिलेसंगसुजाए:अतिहरषसीताआनि:परसेजुपतिछितपानि
घटमिटीपीडायाए:सुषउपजिरामसुजाए॥ रूहा॥कहतबिजय
जसरामकै:गयेबिबुधनिजगेह:मोषनयहराक्षसमरन:समुझ्यो
निसदेह॥१॥नरहरप्रभुकीरानिरषि-सुरमुनिभयेसहास:आपुन
गहेरनअजिर:नषिलसत्रुकीयनास॥२॥कवित्त॥षरहूषनषलत्रि
सर-सुभटसंग्रामसंयारीय:सहस्त्रचतुरदसअसुर-संगमिलिषेत
जुमारीय:सुरसुरेससानंद:यरनिबजेनिसानयन:कोआगम
स्वतंत्र:बिषमभुवनारबिनासन:संग्रामबिजयनरहरसुकवि
बिसंदकिंद्रिजगबिथरीय:अस्तुतचरितपोरुषअतुल:कोपसम
रहीडाकरीय॥३॥अथ सीताहरन प्रसंग॥कवित्त॥ रूहा॥अस
नसरूपअंगलिक-कैअतनासाहीन-आरीरखनपहरहो:निर
लजबेषनबीन॥१॥सुतबंधवमंत्रीसुभट-बेहेसचावनाए:दस
सिरकोदीनोदरस:इहअचानकआए॥२॥कथकवनबिनोकि
कै:अतमहतयेमलीन:सबनाइलिउचोलुपिपनी-कोनयह
गविकीन॥३॥बिमुकुबेरकजमरन:किबरिबजुकोन:कपि
नासबिसेषकुल-कैताकोकरन॥४॥सुपनप्रजामासनिबोली
राकसी:जरतरोयनिरलाज:पुरुषबजयानकपर:नोबागक
सराज॥५॥रोबना॥ [illegible]
पलकेकिकारनमगर:पोछीजुकयप॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

कोउदेवा॥रावन॥कोरामहतिकिहिहेत॥खरनिसरदूषनपेठा॥सूपन
खा॥अवधेसपुत्रउदार॥बनबननिकरतबिहार॥आरूपदेखकआ
इ॥सोबसतअतयसुनाइ॥रघुबंसअग्रजराम॥मिलिअनुजलछम
नगोस॥सुंदरीसीतासंग॥अतिरूपरनिजितअंग॥मैंत्रीयानिजवन
मांहि॥तिरबीजुताप्रसनोहि॥तवकाजलावनताहि॥कुंगईतहं
चितचाहि॥अतिदीघदसतनआंन॥कीयनासनासाकान॥सबकह
ठुहिसुरसाल॥हैंजीयतातिहियेहाल॥नईबिपतिमोमस्त्रात॥
सोईदुःषउरनसमात॥॥कबिरुबाच॥यहसुनतपरजरिअंग॥दस
बदनजोबनदंग॥कैंदुछरचुकीयकांन॥निसिचपिअहिअनजानि
जोसाहबूझिजिहाज॥रनअजयजोतरराज॥मनसोचत्योदसमा
थ॥हीयहनतमीठतहाथ॥॥रावन॥मुहबांधिमंदिरमांहि॥सर
पचोहोतहीसांहि॥तहाबदेसोचअतीव॥यहकालगतिजुदईव॥अ
तिबलीराकसआप॥तिहिसहिनसुरकोउताप॥ममत्रातसेनममा
न॥नरसिसुनिहतिनिदांन॥इहिंतातिअतयअजेव॥द्विजरूपयेकेउ
देव॥बिधिबिहुसोबरजाच॥सोईहोतदिबीयतसाच॥रघुबंसन
रअवतार॥यहनयोरामउदार॥सोराममारिसंग्राम॥बेकुंठरचिकुधा
म॥कबित॥यहबिचारिपोलसति॥रामचीन्हे परमेसर॥अबिलंबे
कआधारा॥सरबआधीनसुरासुर॥तिहिबिरोधअनुसरत॥ताहिसा
रूपरेतगति॥सधतनपदुषसहत॥तदपिफलबेगितपावत॥सोपेबि
चारितिहिरामसों॥बिग्रहबयरबदाइ॥रघुबीरबानमरिसमुषर
न॥परमजोतिपदपाइ॥॥छंदपधरी॥कबिरुबाच॥बिलपा
तताहिदुसहबिहांन॥जुगमानतईरजनीसुजांन॥पुनिप्रातउग्रोरा
वनसपाप॥अतिरोषअंगपरजलतआप॥रथसाजिचढ्योरावनरि
साइ॥आनिहैमनकुमीचहिमनाइ॥जहांतपतकुतेमारीचतापपं
पासरगोरावनसपापा॥मारीच॥ऐकाकीआगमकहाआज॥कार
नप्रकासकरियेसकाज॥मतुलिसोकीनोबेगिमंत्र॥तहांकहेसुखसु
पनषीतंत्र॥रावनबाच॥मामाअबकरहुसहाइमोहि॥ताकेब
निहेरोसबेतोहि॥मारीच॥मारीचकहोफिरित्रिमांन॥प्रभु
कहोसुपेआगपप्रमांन॥रावन॥अबसोबिचारकरियेउपाइ॥ब
सहोइसत्रुजिहिबलबिहाइ॥बरपंचबसतहेजतीबाल॥बिनत
संगहेलोचनबिसाल॥वहलावहिहरिजिहितिहिउपाइ॥दुषबिरह

होइ मरिहै बिहरइ ॥ कवित्त ॥ मारीच ॥ पुनि कहि मुनि मारीच सु
नहु सिषांत इ सानन : राम न मानहु मनुज करन अवतरे सकारन
सीय न त्रीया संग जाव आदि माया उतपनीय अनुज सेष अंसावतार
निरधार सुमनीय इन सों न बयर बिग्रह उचित अमर ईस बिक्र
म अतुल अनुसरहु संघित जिरोष उर करहि अनंद पुलसति कु
ल ॥ छंद पधरी ॥ करियै न मंत्र सो सुनि लंकेस : कुल नास बिस्व ह
सी बिसेस रघुनाथ बान दीपक दुरंत : मत होहु सलभ नतिहि परि कुमं
त : यह षेल बंस कार्क अमूल उनतुम हि जोग जो अनुलतूल उप
देस कवन तो हि कस्यो एह : दुष दूत यात जा हो उपजि देह : कौसि
क मषरिष्य करन काज : रघुनाथ हि पठए अवधिराज : यह काकपद
रघुराम धीर : बीरासन बेग महाबीर : संग्या बिनु राह ससेन संग : हं
मउ न यत्र तात आये अनंग : कतु नंग उपद्रव आनि कीन : मल श्रोन
रेन बरषा मलीन : मार्यो सुबाहु सेना समेत : षेबजि निसान जय पाइ
षेत : बिनु जह्न बिसषत हा मो हि मारि : दीनो सतजोजन अंतकारि
सर बत्र राम देषू सुनाइ : उर होत कंप सुधि जब हि आइ : नय त्रिसत
रहत कुचित अंग : अघ बधित बत बिकल अंग : स्वपन कु राम देष
त सुनाइ : नय नीत होत मनु मृतक नाइ : निग्रह हीत बत लहत नैन
अति ही उहास आतम अचैन : ऐकांत रलो रहि गो आइ : पैनि कसत
कु केउ समय पाइ : पुनि सुनहु एक पूरब प्रसंग : सो सुनो कुतो हम
रिषि निसंग : अगि कहु हरि सो ब्रह्म एह : सुनजा चिलयो बर अति
सनेह ॥ ब्र लो बाच ॥ सुपुनकेत्र तुमनुजावतार : भगवंत हरहु
यह न्रमिनार : अवधेस ग्रह अवतर हु ईस : सकुटंब हतहु घट
चारि सीस ॥ मारीच बाच ॥ ऐ ईन ऐ ब्रह्म राम अवतार : भगवान ह
रन तव न्रमिनार : बध करे ताड़का बाल बेस : मषरिष्य कीय के
सिक सुनेस : पन जनक निबाहो तजि चाप : अरु कस्यो बिमद दि
जराम आप : अर दूषन त्रिसरा हनेषत : तिहि गेरन मानहु मनुज हे
त ॥ रावन ॥ पुनि कहो ताहि रावन सु पाप : इक सुनहु रहसि मारीच
आप : परपुरुष जदपि राघव प्रकास : बरदयो बिधि हि मम कृत बिना
स : मो हि मारन मानुष भयो मुरारि : कारन बनदहु बिहार कारि ॥ हा ॥
यातें सीता हरन अब : करिहुं जथा प्रकार : तिहि कृत हम सों उनहि
तब : बढ़ि है बयर बिकार ॥ १ ॥ मेरो जो पेरन मरन : उनके हाथ अ

जेव: ततोपाइहोंपरमपद: जोगतिदुरलनदेव॥२॥ राम हिमारोरनअजिर
कुंजोपेहव होइ: सीतातेपाऊसुगम: कहुसंदेहनकोइ॥ मारीचाछं
द पधरी॥ प्रभुराघकुकुलमानकुप्रबोध: रामसोंछांडिबियहबिरोध:
यहउद्दिमतजिलंकेसआप: पुनिजाकुग्रेहलुगतकुप्रताप॥ राव नाक
हितबेनाहिरावनसकोध: पापिष्टकरतहमकहंप्रबोध: हितउपदेस्य
नयेतुमकुमोहि: ताकोफलदेहुसबेतोहि: पुत्रहिजोजननीहुदत
पाइ: करपावतलेनुजुवादिषाइ: सोसोहिकरावतबिवरिबात: बस
कलोबिलजिहिमेबिसात: गुरनयोहमहितकथतगपान: संसार
बीरकेएमुहिसमान: मुहतेरतेरीबसीमीच: उतरजोदेहैफेरिनीच
मारीचवाचाकबित॥ महाचितीयमारीच: उनयबिधिमरनउपजीय:
लिपलिलाटबिधिअंक: जातबिधिकुसुनमजीय: मिलिरावनकर
मरन: नियततोनरकनिवासीय: हसतरामहतहोइ: बिमलबेकुठ
बिलासीय: कीनोंबिचारनिरधारकरि: लानजनमयहलेघयो॥
करउचितमरनरघुनाथके: सायकतिषबिसेषयो॥१॥ हहारकु
तोरावनकरमरन: जांउतोकोसलराज: तातेंराघवकरउचित
मरिबोनेगलकाज॥१॥ छंदबेताल॥ मारीचमुनिकेमुदितमन
रघुबीरसानुजउरधरे: जटजूट सिरकरिसटनिषंग: सचापकरब
निअनुसरे: संधानधनुकरिनिसतसायक: ममउरसिप्रभुमारि
हे: सुरबरषिसुमनसुहरषिसुरपति: अमरजयतिउचारिहे॥
पुनिदिव्यरथचढिमरदारत: प्रगटआनदपाइहों: देवीसुरासुर
मुनिनदुरलन: सुषहिजोतिसमाइहों: मारीचमरनहिकरिमि
नोरथ: चल्योचितबिचारिकै: दससीसआप्पामोहिदीजै: क
रोसोईसिरधारिकै॥ रावनाकरिमंत्रमिलिमारीचकंटक: पं
चबटीपरवेस: मृगहेकुमांमांहेमयतुम: सजकुरूपसुदेस
कबि कहै॥ मारीचरचिअद्भुतमाया: स्वरनमृगसंनाव: महस्र
गषुरबनिनीलमनिमय: नेत्ररतनबनाव: पुनिकनकआ
वाअजिनकोमल: रूपबिदसुरंग: अनेकछबिअद्भुतअक
ति: अषिलअंगनिअंग॥ छंद उथोराइहानिकटआश्रम
आइ: सारंगचरनसुनाइ: मृगदेषिजनककुमारि: अतिल
षपतिहिउचारि॥ हे सीताबाचा॥ प्रीयत्वचायहजुपवित्र: चि

तलगे॥ममम्ग चित्र॥ यहमारिओनकुआजः सुषअजिन सज्यासाजा॥कवि
रु॥ प्रभुप्रीयाबचनप्रमानः उरतबेउ हिमओनि॥लछमनबाच कविता॥ऋषि
लम्ब ष्टिउतपन॥ आदिबिघिकुनपापायोः नहीदेषोनहीसुन्यो॥ यहजुकेच
नमृगआयोः सुनकुरामराजिसः असुरमायाउपराजतः कपटबेषबनुकरत
समयलषिकारजसाजतः उचस्योलषनसिधांतयहः प्रभुव्यापकनवन्
तपरः बैनासकालनवतअबस॥ बुधिहोतबिपरीतबरा॥१॥ आयहतज
कुअनंत॥ रामयहमृगकेउराहसः कारनकनककुरंग बन्योसुंदरमा
यावसः नारिनिमतकछुआन॥ पुरुषकछुआनउपासतः जानिनकाज
अकाज॥ ऐकहुहीअभ्यासतः बिस्वेसबिस्वव्यापकबिषम॥ आसुरदु
ष्टसमथअरिः इहिगेरबीरअवधेसअब॥ करियेकाजबिचारकरि॥
श्रीरामबाच॥ दोहा॥ लछमनकुजानतसकल॥ करिबोतउसुरकाज॥
जोईकोईहोइपै॥ याहिनछांडोआजा॥१॥ इहिकोनुनराहसअधम॥
बसतदुष्टसबिकार॥ सावधानरहियोसमझि॥ बेदेहीरषवार॥२॥
नवबुधिबलबिक्रमबिदित॥ बरतकुसमयबिचारि॥ किकुकारन
येकाकनी॥ नहीछांडुबननारि॥ छंदपधरी॥ कबित॥ कटिप
टलपेटिजटजूटकेप॥ आरकतनेनहकुटीसग्रीपः कंतसजधनुष
टंकारकीन॥ निसचारबधककरबानलीन॥ मृगराजचलनिचलि
मृगहिमार॥ संधानबानसुरकाजसार॥ कबित॥ रामसोचमुनि
त्रासमोच॥ हनुमंतबिजयजसः मयतनयाबेधब॥ समरदुरधर
नरराहसः नरुपरुपलचरन॥ महीओनीनरमजन॥ अरुजटायु
उधरन॥ अचलप्रेलगोचतउग्रन॥ सुग्रीव बिभीषनराजसुष॥ मृगस
रूपमारीचमर॥ संधान इतेनरहरसुकबि॥ सुकररामसंधानसर॥
॥१॥ छंदपधरी॥ परित्रासचलेतहमृगपलाइः परबतहिलांघि
प्रभुतहापाइः दुरिजारनिकटदरसेजुदूरः मृगकरेअसुरमाया
समूरः कीनोप्रभुकोतुककछुककालः तरओटहोमृगतासकाल॥
कबित॥ कनकरतनमयकांतिः कपटमृगदेहसंकारन॥
सुघतत्रिनसंक्रमत॥ निषलदिगबिदिगनिहारन॥ धसतकबहु
अधधरनि॥ धराधरकुचढिधावतः बारबारग्रीवाबिलंग॥ तन
अंगबुजावतः सिरपरीकालछायासमय॥ सुपेचूरितयेअनुसर
नं॥ मारीचनीचमायजुमृग॥ मिलोआनिनि॥ ॥२॥

असुरआयुजीवनिजरयु मंदोदरिमंदन : त्रिकुटशाहबारिधिहिवाद असुरी
अहवातन अहनिबंधतमचरनिअब दसकमलकलेवर : देवत्रासमारी
चहेह नवनीतसहमित्तर : सुरराजतापनरहरसुकबि बलषेचरबल
पुरिहैं रघुनाथधनुषगुनमुगिते येसरछुरिछुरिहैं ॥३॥ लंकदाहसाधु
इसेत भयसुतासोकमन बिघनबालिनारद बिलास संपातिपंष
नंन दुरगरोधजोधनिबिरोध बिछुरनिबेदेही कपिउछाहरावनहि
राह सनाहसुदेही आसुरसमूहसोकंपउर भूमिनारनयनगिहैं
कररामबिसषमारीचके येउरलगेलगिहै ॥३॥ बिघिहरमुनिवरबि
बुध तपफुजिहिजोतिनपावत इंद्रीयकरिनिग्रहअनेक बपुकष्टब
ढावत मुनिराहसमारीच बिषमजिहिबेरबढायो तदपिदईवग
तिअगम देहधरिदरसदिषायो सारेवमुकतिपाईसुषद जातउग्र
तपसाधिजह हतराम बानमृगकपटधे मिलेआसुरसोईराममम
हा ॥छंद॥ धरी ॥ धरबीरराममसरसोबिराम मुषकलोमरतमृग
रामराम सुरराम पुकारयोआसुरसोइ हालछनचातसहरहोइ
सोबचनदुसहजबसुन्योसीत नयचकितनयोमनमहानीत
सीतजाइहा ॥ लेसरधनुधावफुलबन अग्रजसंकटआहि उ
चाच्योआरतबचन तुमफुसुन्योबताहि ॥ लछमनबाच ॥ तुमजा
नतरघुबरप्रकृति जदपिप्रानफुजात ऐसोबचनजुदीनयह
मुषकेकहेनमात ॥१॥ राहसमायाबफुरचत बानीबिबिधिब
नाइ नहिनसुरासुरत्रयभुवन जाहिमरेरघुराइ ॥२॥ राहसक
लुयहमरत आतुरबचनउचार कोपराम ब्रहमफुको नासहो
इनिरधारा ॥३॥ कुबचन नाषेजानकी जोनहीकहिबेजोग अ
तमूढलछमनसुनत उपजोदुषअप्रयोग ॥४॥ लछमन ॥ जा
चेंगीदुरबादती यहपेकहेनकोइ अकलंकहिलावतकलंक स
बफलहिहैंसोइ ॥५॥ दुरमनलछमनअतिदुषित सायकच
पसंनार कीनीरेषारामकी दुरगमसालाद्वार ॥६॥ कतरेषायह
धनुषकी कबिनउल्लंघेकोइ सुरआसुरनवरतसोइ इहांन
समपेहेरइ ॥७॥ कबिरुचीचरनरामकृतचितवन सोचतचितसु
जांन हाबलिष्टनवतभ्रता कहानसुनिबोकांन लषिदेवी
मायालषन प्रभुइछापरवांन आतुरचलेबिचारिउर इहा

अस्मिग्रांन ॥ कवित्त॥ कीय नाटकसुररमनि · देवदुंदुभि अक्रा
मजैतउचार: पुष्पबरषाजुत्रकासीय: अमरलोकआनंद अ
जनआगम · मृगजमस्योमारीच: बयरउपजौअतिबेषम: ज्ञा
आइसोमित्रइहो · रामचरनबंदनकरे: मृगीयासुसिधलेबी
सुनआश्रममगसंचरे ॥१॥ दूहा॥ तरकतहोलकेसतंह: पूजी
मांन: आरगयोअनमकजो: सुनेमंदिरस्वांन॥१॥ कवित्त॥
पारुनकेस · इहरांवनषलआयो: तजोबेषसंन्यास · देहरा
डुरायो: देवदत्तकीयसबद · आनित्रिनसालअंगन · मीयादे
उअतिथसाथ · बिधिजुतकृतबंदन: बिश्रामकरुकछुछंन
ल · महतरोवरलाहमुनि · आइहैबीरअबहीउनय · पूजेतुम
सेषपुनि॥१॥ रावनसीतासंबाद॥ इहाप्रछौपुलसति · कवनतु
हाअकेली · देकंकनयहदुगम · संगसेवकनसहेली · किहिपुत्री
यकाहि · बैसकोनामबषानु: अंगअंगछबिउदित · जुवतिसम
तीयनजांनु: चलचितदेषितिहिसीयचकित: लगीदैनबनक
बिमल: अंतरिषरेषयअनउचित: जतीग्रहेनहीअसनजल ॥१॥
मसुरनृपतिअवधेस · पुत्रजेगेरायवपति · पिताजनकनृपप्रसिध
हिसीयानांमसति · तरबिजितसंग्राम · लषनदेवरसुनलषन: पित
दसरथआपप्रवेस: कीनेइहिकानन: मृगकनककरनअबेरनि
लि · गिरबिचत्रदेउआतगत: यहनयोसमयआवनअबे · हेबिल
बकुबिजयब्रित ॥१॥ कबित्त॥ दूहा॥ धरबिदारिजुगचरनधरि
रेषातरहररोपि · हम्पिहलहिगदारलो · लोकबेरमतलोपि ॥१॥ क
बित॥ मानिगुहाश्रमथरम: चितबेदेहिबिचारीय: जतीबेषतिहिजो
नि · पांनिफलदेनपसारीय: बाहरिरेषाबकु · बिमलकीनेंबेदेही
आकरष्योकरत्रेचि · उष्ट लीनीसुरद्रोही · दरसाइबीसभुजसीस
दस · कंटकअपनोरूपकीय · रेअयमकौनतआहिरो · कपटीहिपू
छोजांनकीय ॥१॥ रावन॥ ब्रह्मपनातीजगबिजेत · राहसकरां
वन · सुकरबीसदससीस · सुरकुसुरराजसतावन: तुवकाजेअहकन
क · कस्योरवनांअनूतकीय · तपीबेषदुषतजकु · जनमफलतेकुजां
नकीय · पावकुनफेरितुमरामपति: जतनकरकुवकुप्रांनतजि · जां
मनीनरमनुत्रकुनवन · नेगबिलासकुमोहिनिजि ॥२॥ सीताउ॥
रेबराकदसबदन · बिहतसुनियोममबोलहि: सीयचिततवल
बिषमबात · ककुउरगनकोलहि: सियरामतुमस्वआगल · सम
यहसुनिसव: कोबलिष्टजगकहो · हमहिहातोजुकरहिहु त्रि

नतलसद्रसआकारतुव ज्वालाबाननपरजरऊ आवरतकोपआहव
उदधि पापीजानतकतपरऊ॥३॥ सीताबाचा॥ दोहा॥ दिगकुलतेरेमनदस
आहितहपिलग्रंथ। बिहतनससकहिसियबलि रेकंटकदसकंध॥
रावन॥ जानऊग्रंथसुजानकी मूरखलछमनराम अनरहाएकाकनी
बनलंकाकीबाम॥ कबित्त॥ छंदबेताला॥ बलकरषिलईगरबिहब
ल राऊ सोससिरेष अकुलातिअतिबलकरतिअपनो बिवससीय
सुबिसेषि मनमथनमाननि हेतकिऊमनु परीसंबरपानि पाछेऊ
रसरधाकपावत अहिसबसनहीआनि मिलिमनऊधूमसमूह
मध्यपंजु अनलज्वालाआहि पग्रचित्रतपुनिकामनु मरुतचक्रनि
माहि ऐकादसीहतमगनिबस सुषसिद्धबिहचंकार सुनजीवजोति
अदिष्टसंगकि अबसजातउदार आरूढरथइहिदसाअनुचित सीय
रावनसाथ नवतमसूचितप्रबलनावी हैनकाऊहाथ सीताहिह
रिलेचलोदससिर कुवजगतहाकार सुरराजजानोसुरनिसांचो नर
मिउतसोनार॥ सीताजजगदेकबीरसधीरहा रघुनाथदेवदयाल
तंकेसबसअसमथअबला कर कुअनयकृपाल हरहरनआरति
करनकारन दीनरक्षकदेव तुमसरनपंजयबिजयसबकहं जग
तजेवअजेव हरामआरतबंधुअद्भुत अंगबिजितअनंग रघुरा
जकुलकीलाजलछमन आजतोहिअंग॥ दोहा॥ रामबलिष्टन
राजसम मोहिसरुतजगमाहि जानऊअहीअनाथसो नाथसु
नतकिधुनाहि॥१॥ तबधायेषगराजतजि जानिदुषितगजराज मे
रीबेराकानयो रामगरीबनिवाज॥२॥ छंदबेताला॥ कबित्तबाचा
सुनिदीनबानीकहतसीता रामरामपुकारि अतिबलीधीयजएयु
आयो समयधरमसंभारि अवलोकिउतपथजातआतुर हरो
कोआनि पुनिकरतनीतिप्रबोधपक्षी पतितकहंपहचानि॥क
बित्त॥ जटायुनु धा॥ ब्रह्मबसअवतरन हवनमसतकपूजनह
र दुसहसकतिआपारदऊ संचारइंद्रसर कराहितोलिकेलास
ससिवकंठुकगतिकरयो हेलषेलकृतहासि धराधरधरनीधर
यो इहिकरमनहिनलजतअबुध सोईरावनतनिसचरन की
यकपरबेषरघुराजकी हेतकवनमहिलाहरन॥४॥ रावन॥ इ
बचननीतिकहिकहिबिहग करतप्रबोधप्रकास तबसमझऊ
जबरैउतुहि सरजममंदिरबास॥ छंदबेताला॥ रिसजुक्त

कहंकसौरावन रेअधमनतचार: तुहिजोनिपंहितदंडवनको किहिद
योअयिकार॥ जटायुवाच॥ रनतिष्टरेपरदारतसकर: सुनियहसंचार
ममसहहिगोसवदसकुमुकनि प्रबलतुंडप्रहार: पलरुधिरदेकतरुपू
रन सिवाअयअंगाल: हमतुमहिकैहेषेतरहिहव कविनजुधकराल
कबिरु॥ रथतोरिषलपथरे॥ किरावन कलहबिरथीकीन: उरबादकं
हिकहिहृदयदाहक दुसहपरिनवदीन रथकेतहयकृतचक्रचूरन
चंचपंषचपेट: दसमीसकेहतिमुकटदसकु: जटीधीधहिलेट: संग्रामसं
गमग्रीधदससिर जयोपरबनयांत: सेदेषिपेरुषसुरसुरेसुर पुह
पबरषिप्रमांन सहिसारमारप्रहारसनुष आपकृतउधार: इहासम
रषेतजटायुसोयो बीरसेजबिहार: कछुसाससेषजुरहेसुतकृत दरस
आसदयाल महिगिस्योग्रीधपहारमोनकु बिगतपंषबिसाल: पृ
थेसदसरथप्रीतिपूरन जनमकीनजटायु: पदीसपायोसुजसपू
रन: अंतगपूरनआयु॥॥ कबित॥ रियजारथछत्र षेतलिरिग्रीधप
सोषग: जयेरबिरथषलबिकल: गहिजुसीयचलैषगनमग इहांनिकसे
रिषमूक उपरावनअमाई॥ बसततहासुग्रीव: संगकपिपंचसहाई
सीतासत्रास्त्राकासते अपनेरूपरउतरीय! प्रतिमानरबांनरअरिपर: दु
षितहातिहिकारिदीय॥१॥ दहा॥ तेईरूपरउतरीय तबलीनेहनूम
त सोपेरावेजतनसो: स्वामिकाजहितसंत॥१॥ सीताकेनरूपरबसन: ह
नुमंतचदेजुहाथ: आगमनोसुग्रीवके: श्रीयत्रीयबेनबसाथ॥ जान
कीलंकाजवेसालेनतमारगमेथली: आयोलंकनिलाज: ताहीछनने
त्रिकुटमंह: घरघरसोकसमाज॥ कबित॥ सीयाहरीदससीस कर
मग्रतिदुष्टकमायो परीलंकआतंक बीजकुलनासकबायो सीयप्र
विसितनहीसदन बिवसराषीअसोकबन: तरसिंसपतरुंतरल मिल
नतनरहीमारिमन त्रिजटादिकरोदजुराहसी तेरावनरदंककरी
य सिद्धीसमूहबसज्योसतय करमजोगकपिलपरीय॥१॥ दुहा॥
सुताबिभीषनकीसुना निसचरित्रिजटानाम: पूरबपुनिप्रनावते
बिष्नुनगतवहेबाम॥१॥ छंदबेतल॥ इहाब्रह्मप्रेरतिआइआपुन: स
कदेबिसहाइ: निसिअरयसमयनिसाचरीसब परीसोबितपरे: पु
निसीयहिमरमप्रकासिअपनो: कस्योअनयप्रबोध घृतपांनत्रिप
करारपूरन सबेदीनोंसोध तोहिनहीबापेछुयात्रिसा पुत्रिकेप
रिमांन अपातआसुरआसुरनितें सकगोसेंसथांन॥ कबित॥
अंतहपुरआसन बिमलबिसतरअसोकबन दुसहदसाकसदी

न: तहँ अधबदन मलिनतन: सूषत अधर उसास: आसप्रीय दरसन आतु
र: रामराम मुषरटति: नयन जल धार निरंतर: ससिकला बिकत स्त्रीयन
संग: सुरसीसिंय निसचर निमध्य इहि रूप नित: रामप्रीय
षेरीरहत ॥ श्रीराम पर रत साल आश्रम नाछंद दोहा ॥ मृगकनक
लेरहो रामलछमन: उतय आश्रम आइ: सुनरूप सीता परन सालहि सो
नपाइ सुनाइ ॥ श्रीराम मृगाचा मन समुषनारी प्रीयालछमन सदा जो
सबिलास: यह आपनो किंयु नहि आश्रम परेन्द्र लिप्रकास ॥ कबि
तो व हि अंतरय हविमल नाहिनपइपंतिनिहारीय: दिष्टनहिनआव
तसुरेस मिथलेस कुमारीय वहनकिंयु आपनी परनसालाबनपाव
न: हमनकिंयु येहोहि सबलषलअसुरसंतावन कहिबीरलषनकार
नकवन कछुअनिष्ट किंयु दुष्टकीय हविप्रानतजनचाहतनहि स
हिनहिजातबियोगसीय ॥ ९ ॥ सुनिदेषिबिनसाल जगतपतित्रास
उपजीय: कछुनाहिजानकी सरनसरुतहितसजीय इहांअनिष्ट
कछुआज मोहिहरातनहिमन येकाकनीअसमथ बुमकुबुनि
नाछांडीबन केसीताषारराकसनि: कैहरिलेगयेदुष्टबल: करियबि
चारइहमंत्रकछु बीरलषनतुमहाबल ॥ ९ ॥ लछमन बाचा इहा क
रिबिधिअहिअराकसी बैरलेउतवबाम: देषकुबिक्रमदासको राज
सिरोमनिराम ॥ ९ ॥ श्रीराम बाचा छंद पधरी ॥ कीनोंनहीतुमकुउचि
तकाम: बनमांकुअकेलीतजीबाम ॥ लछमन उ ॥ तहा लछमनउत
रदीयसत्रास: प्रभुबानिपुकास्योमृगप्रकास: सोसुनतनईसीतास
षेद: नावीअनिष्टजानोमनसेद ॥ सीताउ ॥ धरिधनुषलषनधावकु
सधीर: रघुबीरबानिकिंनसुनतबीर: मैंकलोरामसुरनहिमात तम
चारमरतकैकुकरीयात मुहिकहोरहांदुरबादमाइ: जोकछुफेरिग
रिजीनजाइ: बंधनबिरोधकीबीजबाम राजाधिराजसरबइराम
श्रीराम बाचा ॥ श्री म च बिनुउचितकरीतुमयहेबात: त्रीयमतप्रमा
नकछुनहिनात: किंयुहेतकहेत्रीयबचनकोइ: सबगांबिचारिकरियेबसोइ
आकरषिगयोकोउदुष्टआज: कैकरीनहतोपेअकाज ॥ श्रीरा
मबाचा लछमनप्रतिगूढमंत्र ॥ सोकमगनअनुजहिसमुझि रहसि
मंत्रकीयराम पुराप्रसंगजुआपनो: उपदेस्योबरबाम ॥ १ ॥ तुमकुजो
नतलषनतिहि कीनोंगूढप्रकार: कस्योजुगोपनसीयको बिबु
धकाजबिसतार ॥ छंद पधरी ॥ सुनिलछमनतोसोंकछुसोइ
अबतोमैराष्योगूढगोइ: कृतकुरीपंचबरबासकीन: दिनतिहिप्रि

नमोविहीन तवपीहरहैपावकप्रमान: हिनकछुकरहु
हान: सुरकाज सिध हमकरहिसीत: पुनिमिलऊआनि हमसो
मैथलीदेहनिजअगनिमाह: हमसेवाकजैरहऊछांह॥कवि
यमायारूपीरहीसंग: अनलमहराबिआपनोअंग॥श्रीरामो
ब्रह्मपनातीदुष्टआप: पुनिरावनमारेमहापाप: त्रीयहरन
अबअतनाह: संग्रामउचितरहिबिघिसुनार: अपराधबिन
नयाहि: तातेअपराधीकस्योताहि करिबोनसोचरहासीया
रावनकोषोऊबंसराज: बरदयोजुमेब्रह्माहिंबिसेषि सोपे
नकरिबोअसेष: बससोकबैगिकरिहैबिलाप: पुनिहतिहैं
असुरपाप: उचितऊबीरचितऊनआन: जानकीषोजकरिये
जान: सुवचक्रमनकऊपाइचेद: छतिहैराक्षसबंसछेद
जिबोमोहितातेमनुजनाव: उषसोकबिरहलोकनिदिषाव नरव
खरबाहरिनिहंन: उनहीकरिमरिहैयहअग्यान॥६॥श्रीरामबाच
नीतिधरमकतरानि: तिहिमोहिकाघोराजते: जोहिममथहबुधि
नि: कऊहेतमृगकनककेरा॥कबिरुबाच॥छंदपधरी॥सबनावर
मजदपिसधीर: बिलपातकरतउमहाबीर बससोचनयेसनुज
सुनार: सुवनंगजासजगप्रलयजाइ॥ श्रीरामबाच॥कबिता
अहि ससंक हंगी कुरंग सुक बिंब बज्र कन पिक्कपेनश्रीफ
लमृनाल सरसीतरंगतंन सिंयकरी कररंत कंजनारंगमतं
गह सुरनिमलयनिस्वास रुकमचंपकतनरंगह: यहिस्तेअंसउ
तमजुगन मिलिसमगनअनिछबिमलीय: यहजानतलछमनअ
नरन हरीसननिमिलिमैथलीय॥७॥गगनअकउगयो लषनत
रछयालिजाय: अरकफथानिसिअसंनाव प्रनुचंद्रपुनिजय चंद्र
उदितयहयहां कवनलछनतुमलेषो: नवसंतापनजयो देषम
गबांहनदेषो: हहाबिदेहतनया बिमल चंद्रबदनिमृगलोचने
देषिहैंकैबैयेदीनदिग ममअंतरदुषमोचने॥॥२॥अंगगिरनितरु
सिषर लषनदावानलगीय: कग्निज्वालमालकराल अनि
रतअगीय: देवउदयद्विजराज नजतकतथ्रमअसंनाव
रतिधरनिप्रतिबिंब रसोलगिअंकजुराघव सुषधामबांम
रनीसुता गुननिधानकिहिकितगई इहिगेरनआवतिफि
अब नाम निममनलिंनतई॥॥३॥छंदपधरी॥ह

हाबैदेहीपरमहेत: मुहिदुषितदेषिकिनहरसदेत: निसिनाथबदनिह
कमलनैनि। बिश्रामजीवकोकिताबैनि: रदबज्रबिंबरछदसुरंग: कं
गीकपोतलोचनकुरंग: भुजजुगलप्रेमपासुसुताइ। करकमलपत्रके
मलकहार: करपल्लवचंपककलीकीन: नषजोति होतिउपमानवी
न: उरजातपीनश्रनकुंभश्रोप: जीयसफरश्रलकबनसीसजोप। ना
भीसरसुंदरतानिहारि: कीनीत्रिरेषछबिश्रसमकारि: मृगराजछीन
करिमुष्टमाप: श्रतिगुरनितंबतरश्रसहश्राप। जुगघंनकदिलम्ह
डुगभ्रजानि: पुनिराजहंसगजगतिप्रमानि: बरबरनकनकचंपक
बिमोह: श्रतिसोभश्रंगश्रंगनिश्रदोह। पुनरूपसीलकृतचितपा
न: पुनलछनत्रीयकोउनहिसमान: मम प्रानगरीलैत्रीयपुनीत
सुनहरसश्रानिकिनहेतसीत: रहलगीएकहारजुराम: बिस्वास
बीजकहांगरीबांम: इहिंतातिकरतबनबनबिलाप: श्रतिदुषित
फिरतषोजतजुश्राप: जलथलनभचारीजितेजीव। द्रुमलतात्रिन
कुपूछतहरिव: श्रगजगजकचेतनश्राहिश्रेत: नगवंतनिनकुपूछ
नश्रसंत: मम प्रीयबतावकुधरमबाम: नियरारत्रमनाचितलले
नाम: श्रतिबिषरीजोबिरहीश्रपोन: प्रभुकरतमनुजलीलाप्रमान: बि
धिसबिधिसमरुवतलषनबीर: श्रतिबिरहतदपिरघुबरश्रधीर॥ कबित
ब्रह्मादिकसुरश्रसुर - बिस्वबरबीरमहाबल: परिदईवीमायप्रचंड ब
सरोदतबिहबल: जोश्रक्रेयश्रनजेय: श्रमितश्रनबिद्यश्रनामय: श्रग
मश्रसरूपश्रनादि: श्रषिलईस्वरश्रजश्रब्यय। उतपत्तिपोषनासकश्रव
नि: तेजपुंजस्वामीत्रिदिसि: सोईमानुषलीलाश्रनुसरत: बनजनरुद
नबियोगबस॥१॥ श्रथ श्रथ जटायुह म र सम्बासपिदरसने
छंदपधरी॥ बनषोजकरतरहरामबीर: सानुजसषेदश्रायेसधी
र: रथचक्रपताकांध्वजाराम: सहछत्रतगनदेषेसंग्राम॥ श्रीरा
मजाच॥ श्रवलोकिकसोरघुरामयेह: सोमित्रमोहिरहाकछुसदे
ह: जोकुतेजांनुकीहीहरेजात: तासलकहंउपजीबीचघात: के
कमिलोताहिराकससकुथ: जानुकीकाजदुकुतयोजुध: सकत्र
सुरउतयकीनोसंग्राम: महिगिरीसोजयहगोमगोम॥ कबिरु॥
बनगहनबिचरतजातबीर: संग्रामश्रीधसोयोसधीर: सोदेषि
देहपरबतसमान: श्रतिकरहबलीपोरुषश्रमान॥ श्रीरामो॥

सुनि त्रातयहजिहि हरीसीत: अतिजुधअमितसोयेअजीत: करिथीध
रूपयहअसुरकोइ: सीताहिभाइपुनिरंसोसोइ॥ कबि कारघुनाथब
चनसुनिग्रीधराज: आनदकस्योकंधमअज: इहनिकटजबेरघु
नाथआइ: सोपैजटायुजोसोसुताइ: लीनोउगाइउरलाइलीन: क
रिकृपाअधकृतकृतकीन॥१॥श्रीरामोबाच॥ तवदुसहदसातिहि
कहकुहेत: खगराजकोनसोनिरषेत॥ग्रीधबाच॥ रावन हरिलेगे
सीयहिराम: मुहिनयोदुष्टतासोसंग्राम: करिमहजुधमैबिरथ
कीन: रूगिस्योनयोजबपंषहीन: नजमारगदर्हनहिसिनिहु
रि: मैथलीगयोलैमोहिमारि: तुमआदिब्रहमअवतारआइ:
कारनोकृतधरिमनुजकाइ: प्रभुदयोदरसमोहिचलतप्रानि:
निजजोतिलीनभैकृनिदानि॥ जटायुसकृति॥छंद बेताल॥अ
नगनितगुनअप्रमेयआदिजु: हेतथितजुगनासनं: नितपरमान
यनकटाछिनिरबिधि सुषअसेषबिलासनं: दुषदेषमुनिनवु
कृतदारुन: नियतबिबिधबिनासनं: परब्रहमरामनमामिपूर
न: पुरुषजोतिप्रनासनं: ममबरदसरकोदृकमंछित: पानिजो
नुप्रलंबये: समसिंधकटितनीरसजित: बिहतनारनितंबये:
रबिकोटिप्रनाप्रकासराघव: दानबंछितदायकं: नरसूपराम
नमामिनिरजित: नियतसतरतिनायकं: भवसिंधुतारकपो
तप्रभुपद: दुषबिपनदावानलं: रबिसुतातनछबिस्यामराजि
त: गिरसउरगतमंगलं: पतिदनुजकोटिसहअपापी: बिषम
समरबिनासनं: दुतिजलदद्रहनमामिराम: बिनातिबिदुतबा
सनं: परदारपरधनबिमुषपावन: अपरगुनउदधारनं: परबि
भवकृतिबिलोकिपूरन: मनसिथिरताधारनं: प्रभुप्रगटपर
हितनिरतिप्रतिमां: पतितपावनसुरपते: रघुबंसतिलकनमा
मिरामजु: गरुडअयजममगते: दनुजेंद्रसेवतचरनमोषद: नि
यतबृतरघुनाथकं॥ मुषरुचिरहास्यबिकासमंबुज: द्विगसुधा
रसदाइकं: भवसुलभनिस्पनिकामभाजन: नेदबेदसुभाषितं
तनस्यामरामनमामिसंतत: सुषदसुरमुनिसाषितं: बिधि
बिष्नुरुद्रपुनीतबिग्रह: नेदप्रतिभासयं: तुमत्रिगुनमय

अनुसरतआतम: पुरुषप्रकृतिप्रकासये: तुमहिवपतिजलपात्रह
इक: सोपिसोषकसंमते: तुमगुरुकृतेगुरगरुडगामी: तंनमामिप
तीपते: सिवहृदयसुषहनिवाससंतत: स्यामघनतनसुंदर: तुज
चारिआयुधचारिभ्राजत: मुषप्रसनमनोहरं: अनबिद्यअगुनअ
रूपअद्भुत: सगुनप्रेरकसावरे: सुषधामरामनमामिस्वामी: प
मपुजितपावरे: हससीसकेतुजबीसभंजन: कीनगमनसकोपये
अजाननुजतनमनुजआकृत: रनबिजयवनरोपये: धरनीउधार
बिहारबारधि: जपतनित्यमुनिगनजपं: दुषहरनदीननिअभयद
इक: तंनमामित्रिलोकपं: जिहिजोतिनिगमकुअगमजानत: अ
वएकअषंडये: जपिअहमरुद्रजुगादिजोगी: षोजकृतनवषंडये।
चितहनअषंडतद्रिगअगोचर: रहेहरिरिषेस्वरा: सोईदेषरिमो
कहंदिषाई: तंनमामिनरेस्वरा॥ षलजंतश्रीकुजोनिषेचर: प्रानहिस
अपावनं: पुनिरहतताकतनलततपर: अमतदयाअनावनं: पल
पिसतअसनजयानप्रतिमा: पुरापुनिप्रकासनं। अवधेसरामदयाल
दरसन: दरीअंतकत्रासनं: कामरूपअकामनाकहं: करनकारन
केसवे: संसारकरउधारस्वामी: रूपदसरथसंभवे: जोदुलभजोग
जतनिजपकु: सतनिगमनिसाधिये॥ सतकोटिरतिपतिअभि
तसोभा: संतबियनबिनासनं: बिश्रामएकअनेकबियह: प्रे
नावप्रकासनं: यहसुमोरामसतोत्रसानुज: प्रसनहोसीतापते
बरदयोश्रीयहिचित्रबंछित: प्रभुसुरासुरपूजिते॥ श्रीरामभा च।
ममलोकनिरमलपरमपदतुम: पारहोसपुनीत: नवसिंधुतिरु
षगेसनिरनय: गरहेजगगीत: पढिलिषेवानित्यपाग्पूरन करे
हतजुतकोइ: ममपरायनसोईमुकतिमंह: सारूपपावेसोइ
कबिरुबाच। यहसतोत्रजटायुबिरचित: मुकतिमारगमेक
पुनिकलोकबिनरहरपराकृत: उपजिनगतिअनेक: करजोरि
जाचंपाकरी: ममसबलषलअघसाल: गतिदेकुदीनहिआपने
गनि: देवदीनदयाल॥ श्रीरामभा च। कबित। तुमजोहोसुरलो
कसुनकुषगपरमसयानें। उहादसरथअवधेस: प्रीतिजुतत
महिपिछानें: सीताहरनप्रसंग: सषाजिनकूलिप्रकासकु।
करिबोमोहिसुरकाज: साधतुमचितसमासकु: अबचरितजु

३६

श्री रामभा

काजएतोअरेहः आकासबासरहैनकेरः संपेषैबातुलहेरसोरः
कृतघनकुरानिकंन्याकुकंतः अरपैसबसातिहिछिलेअंतः मूराजटी
निकोमहामित्र चाहैअनाथरीकैचरित्र दूषैजुतुमहितिहिलोकदे
ः अतरउदासवहिचरितएरः निरगुनअनाथलीजैननामः बिकनाहि
नजाकैगेरगांमः जाकैनमातकोउपिताजान तिषोजकरतमुनिसु
निनिदने उद्यानबासमंततअवस्थः साहसकिकुकालअरस्य तु
मकुथोंकरिहोकहताहि वैविषयरहतनिस्नेहआहि निस्नेहसदतु
मसोंनिरासः तुमकरतस्तोतुमहेतताः निरगुनवप्रईयतकुनाहि
मुनिरहतषोजिनुवचकमाहि तवकाजजतनमैकीयअनेकः आनी
मेतुहिनुजबलहिएकः अजकुनसोनेरेषोजआरः सोनहीसकतिकत
रसुनाः निसत्रनरायमबुधिनाहि हितनाहिनतोसोचितमांहि नि
कामरामनिरगतसनेहः उहिकाजेआअहकहरेहः कंआहिकामकि
करसहितः तिहिरहतसदातुहिमांझचेतः मनतजकुबिकलपनतजकु
मोहिः तातेमनबंछितदेउतोहि ॥ दूहा ॥ गंधरबीजहीनरीः सुरकंन
सुरगानः करिकृतवपरचारिकः मानकुबचनप्रमांन ॥ ७ ॥ सुनिसुनि
रावनबचनसीयः बोलीत्रिनदेबीवः मंदिरसूनेमुहिहरीः रेनिसच
रीनीच ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ सीताउ ॥ बिनुप्रकासरविबिंब तमनहर
बचकहिटरहीः बिनुप्रकासरविबिंब नहिनेवलउयरहीः बिनुप्रक
सरविबिंब मानबछानगउमिलिः बिनुप्रकासरविबिंब उयरिकंज
नउउहिअलि तवबचनरचनदसकंधरे ममनचित्तनुहयअमलः ष
द्योतिजोतिलकेसषलः कुनपरफुलहिकमल ॥ ७ ॥ रेअंगालसस
स्वानः सिंघबलिचहतअधमसतः रुदसीससमिरेष हरनबिरकी
ककरतहव धरनीतलधनरेष जतनकिकुलंघनजाकोः रनसंगम
सरयारतिवकोसहिहोताकी अपराधीतअवधेसको रेबराकनिस
चरनिलज समूलनासकैहैसकुलः अबनबचकुनूतेसअजा ॥ ३ ॥
छंदपधरी ॥ हरिलायोमोकहंसूनिग्रेह अनउचितचोरकृतकस्यो
येहः रेराकसपरत्रीयापहार गनतनहीअधमधिकारगारिः याको
फलहैअबनिकटआरः धरनस्योपापपूरनअघाः मूदतरामतुमम
नुजमानि जमलोकचलाकुनयेजानिः सरपंजरवाजतबधसेतः क
रिपंथउदधिरयुबसकेतः समुद्रसोषिकिंबाअसेषः अरबीररामआ
गमबिसेषः असुरधमसानुजरामआरः सोबंसनासकरिहैंसुनाः

बलउलटिलेकलेउदधिबोरि: जैहैमुहिलेकैसमरिजोरि: उगिजाहिदुष
हातेअपान: निजदोषनासकैहैनिदान॥कबित्त॥ इहा॥समाहि
कउपचारसब: करियकोलेकेस: काढ़ोषगडुधारतहा: लगेपाय
हनकरकेसा॥१॥ देषिसमयमदोदरी: आनितराअकुलाइ: जोग
उपरवजानिकै: पकरिरहीपीयपाइ॥२॥मंदोदरीउ॥ दृगधन
ईयहबिरहदव: आषिनमंहजीयआइ: देहैआपकिअतिदुसह
कैमरिहैअकुलाइ॥३॥प्रगटसुरसुरपुत्रिका: नगीपंनगीनारि
गधरबीजुहीजुयह: अषिसपीयतजलवारि॥४॥कबित्त॥ बिर
हनिबिषयबिरत: बिहतनीयएकपातिहत: दीपसिषासीदेह
रहीद्वेषीनरामरत: रोषानलउठिरोमरोम: हमपरजरिमरिहैं
प्रलयकालसीप्रगटि: कोपिकुलनासहिकरिहैं: प्रीयछोडिप्र
लयकोअपीय: करयहिप्रणतअनेककीय: लरताहिप्रबोध
धरिअसनुज: मिलिगवनीमंदोदरीय॥१॥छंदद्वैअषरी॥कबि
त्त॥ सीताबिषमयबचनसुनाये: नयोषिसानोमननहीनाये
रावन॥सबहिराकसनिकसोसुनाई: तहमासद्वैअवधिबि
नाई: सरबउपरकरुसमझावहु: जोमानैतिहिनातिमनाव
हु: तरजनवामनुहारिहुताई: कहिअसुहातीतथासुहाई: सम
झिअवधिकेदीनीसीता: नजैमोहिनहीजपैअनीता: कछुदिन
अवधिप्रतीछाकरिहु: टेकअपनीतिनहीटरिहु: मानोनहीब
चनजोमेरो: करुनहतोसीताकेरो॥कबित्त॥ यौंकहिदसासि
रमंदिरआयो: दलोकहयसीयबचनदुषायो॥ दृधराकसी
बाचा॥ इकराहसिसीतहिउपदेसा: बिबिधिबनावतिबचन
बिसेसा: सफलकरहुजोबनतनसोला: लेकापतितवरसहिहि
लोला: छीजतजोबनजोषनछाही: नीरकरजुलिगतथिरनाही
दुसहबचनतलेबेदेही: तबहिदयोफिरिउतरतेही॥सीताबाचा॥जे
कोउछिनपेमोहिजिवावहु: निलजबचननहीफेरिसुनावहु: देव
हबनहीसानहिदीजै: कबहुयहअभिलाषनकीजै: कहुउचिष्ट
नषेसवदेही: बिमुषरामतोहिसबिदेही: रगिसुमेरजोब्रह्मकहे
लै: बलबसजोबिप्रबिमिश्राबोले: हितजुतसियपासजोचरही

तौ अधरम सीता अनुसरही। पछिम गंग प्रवाह पुनीता। सीत धरन
तो छाँडे सीता। बृथा न ईतु मम समय बिचारु। यह अनरथ कौ मु
षहि उचारु॥ कवि रु॥ कीनै सयन जा रहसकंधर। मनि म
य पालि कहि मय मंदिर। दारुन स्वपन दसानन देखौ। बानर
आये लंक बिसेखौ। कपि तिहि हाउ पुच्छ कीनो। दुसह दाव न
हि पस्तिवहीनो। सीत हि तेरा कसि समझावति। दारुन दंत दिषा
रु करावति। कौउ बोलति बचन कराला। हसति ताल देषी वति
हाला। दुसह लोचन अरुन दिषावति। गरजि तर्जि कौउ करकस
सुरगावति। कादि षड्ग जम दाह न्यायनक। आवति मनहु चहु
दिसि अंतक। करि कुचरित अनेक रूप। संषनि हसत निजे
नष सरूप। त्रिजटा नाम बिभीषन पुत्री। बिष्नु भगत वह परम बि
चत्री। रहति जानकी निकट निरंतर। दिन निसि दुषहि बतावत दुसतर
त्रिजटा। बोली त्रिजटा बचन बिसेषा। दारुन स्वपन निसा मे दे
षा। मम बचन सुनहु राकसी माता। तुम हि श्रेय यह कै हे त्राता। अनु
जस हत आहु श्रेय रावति। इहि गत राम बिलोकै आवत। स्वामि श्रे
क आरोपित सीता। यह मे देषी परम अतीता। दग्ध लंका कालहि दे
षी। बथ रावन कौ सकुल बिसेषी। रावन तेला नंग दिगंबर। बिह
रत गो मय न दुजुत बिसतर। चलत दल पल्लव माल चंचल। तिल है
चाबत मुष्टाकरतल। दस सिर मुंडित मुंडफुटे दिग। महिषारूढ च
ले दहन मग। पुरी बिभीषन लंका पाई। सानुज रघुबर सत्य सहा
ई। अनसंष्या कपि सेना आई। दस दिसि फिरि रघुनाथ दुहाई। त्रि
जटा स्वपन सुनत उर त्रासी। सोर रही निसचरी उदासी। मुष निस
सनयन जल मोचत। सीय सती तम नहि मन सोचत। पुनि कौउ
मरन उपाइन पावति। ताते बुधि बितर्क बढावति। विषन हुन कि
वा उर बंधन। समत्र घात जल अनल सजोजन॥ सीता बाचा हि सि
सिपा मम ओर निहारो। है परके हित जन मति हारो। काम कहै
अग निक हावत। बेहु लोक सुख सत्य बतावत। आगि कारि दीजै
हि अवसर। कहत निहोरि निहोरि जोरि कर॥ कवि रु॥ हनू
मंत बुधि वंत तहां। हित जुत समय निहारि। अवसर जानि जु
आपने। दीनी मुदरी डारि॥ करधरि सीता मुद्रिका। आतुर ल
ई उगार। प्रभु यह कै सी अगनि पीय। सीय रोल गति सन्नाइ॥

॥२॥ छंद चौपाई॥ पंनक निहारि संजा रिजु देषी: यह मनि मय मुद्रि
का अवरेषी। राम नाम अंकित अति सुंदर: धरि उरछाती कोप तधरधर
स्वर नरतन मय बिहंग सवारी। राम सद्दा कर पत्र वधारी। यह हि
गेर हेत कि हिआई: सोचति अति मति संत्रम छाई। दिष्ट उरध तब
तरु तन देषो: बानर बेगे कार बिसेषो: इहां जानकी अति अकु
लानी: बानर देषि बिषम कहि बानी: रेकपि कैसे आयो तू रावन
पापी पापत्र का सि अपावन॥ कबि रु बाच॥ यह सुनि उतरि द
छिते आयो: करे प्रनाम जनम फल पायो। राम दूत हुं मारुति
बानर: उपजो साध अंजनी के उर॥ सीता बाच॥ कपि सो न्हप
निमित्र तो कैसी: असंभावना बात अनैसी॥ हनू बाच॥ मुहि
अपने किंकर जानु मन: कहु जननि सुनिये जो कारन: क
पिराजा हो बालि किकंधा: अनुज सुग्रीव हिनो अनसंधा। देस
निकालि सुग्रीव हि दीनो: कैगयो चित्त बित्त बल हीनो: यह गि
रमूक सरन तव आयो। पेकरन जुत आस्रम पायो: ब्रह्म आदि
रघुबंस बषानो: जगत प्रसिध पुरान प्रमानो: रघुबंसी नेद
सरथ राजा: बिमल छत्र पुर अवधि बिराजा: बचन कपट त्री
यन्हपति बिनासा। सानुज राम भये बनवासा: यह रावन उप
जी मति रेही: बसत पंचबट हरी बिदेही: अवधेसु रगिरमूक
हि आये। तपस बेष बिरहत न छाये: इह सुग्रीव सरन जब आ
यो: लेकर यहि त्रिनुकंठ लगायो: तहां न ईरबिसुत हि मित्राई
उदयर घुबर कहि नाई: सरन बिजय पंजर हृत स्वामी:
चचराचर अंतरजामी: नियरु बालि परम पद दीनो: कपिसु
हि राजा कीनो: प्रबल कीस चहुं ओर पगये। धरि सिख
चन दिगंत निधाये: अंगद हेया दिसक हु आये: द्वादस सुभट
संग समुदाये॥ दूहा॥ नाप उदय मेरे तये। मात पुरा कृत मू
ल: दुरलभ पाये तव दरस: सब संसय मिटि सूल॥१॥ सीता उ
रत्या दिक प्रतयदये: सीय मनै बिस्वास। आवहु न चिरजीव
अब: देव सिरोमनि दास॥१॥ सीता मुद्री प्रति॥ मनस
कलप बिकलप मति: बिक्रम पूछति बात: सानुज सरस्थ

सुवनकी: कहिमुद्रेकुसलात॥१॥ मूकनावहैधातुमय: जरुमु
द्रानिरजीव: क्रमयहलछनबिरहकी: प्रकृतिहरतबिनुपीया॥२॥
हनुमंतबोलतिनाहियह: कछुअनिष्टआहि: तातेहोतअधीरचित
दुसहउपजतदाहा॥३॥हन्न॥कहिपूछतिमुमुद्रिका: होतमोनि
रहिहेत: नामबिपरजयआपनो: तिहिउतरनहीदेता॥४॥करप
ल्लवमुद्राकविन जोहीतवसंजोग: सोयहकरआवतसुगम जननीतु
महिविजोग॥५॥मुद्रीकंचनरतनमय: सोपेगटीसुनार: बिरचीक
रकंकनबिरह: पुनिरपिजनमप्रकार॥६॥छंद॥ऐअषरी॥तहा
हनुमंतहिकहतजुसीता: जईरावनकेबचनसुनीता: निदुरतरे
मोप्रतिरघुराई: नाग्पजोग्पसुनिहनुमतनाई: कबकुनकेरहते
प्रभुकीना: देषोजबेदुषितकोउहीना: दुषप्रहलादहिथेंनबि
हारा: तहानयेनरहरिअवतारा: प्रानकष्टगजराजहिपायो: आ
तुरगरुड़छांकितबआये: सुरनिसहारहासितनसाथे: इंद्र
वाकबलिराजबाथे: परमसवितकुजबपाथे: वृंदाकहकि
सरूपबताथे: बेदबिगतिजबचितबिचारी: मीनरूपतहीन
येमुरारी: रतननिकासनसुरनिबिचास्यो: धरिगिरपृष्टिकम
ठतनधास्यो: रसाअसेषहरीजबनिसचर: कसनासिधतब
हीनयेसूकर: हयग्रीवापुनिनिगमहराये: तेऊमारिबिधि
हिपुहवाये: कोटिकलपकीबिरदकहानी: ऐसीकितकग
नोंसुधिआनी: उनहिंगम्पनहीकछुअनकर: बेदपुरानक
हतयोंबिसतर: कहुआदिष्टमेरेसुनिहनुमत: जानतहीऊंय
तहेजागत: तनममदसालिपीनहीतोते: मुषकरिकछुकहि
जातनमोते: तबजेकुतेप्रानतनत्राता: तेईअबहोतदुसहदुष
दाता॥ कसवैयो॥ कंटककपूरनयेकोतकनयानकसे
लरअहिनयेअंधियारनयोआरसो: नाहरसेनूपरपहारसे
पहरनयेसेजसमसाननयेभूषनसुनारसो: आकसोतबो
रसिरबाइसीसुबाससबे बीरनयोकेवचिसोअंजनअंग
रसो: बिषतिदुसहऐसीकपिअवधेसबिनप्रानतयोपा
कुनोसोप्रेमतोप्रहारसो॥॥१॥सषीकोनबसकाहुपुनी

[illegible]
[illegible]
[illegible]

हौ॥१३॥मंदिरबुरुवेततो सोजजरिऊरेमोंऊबसनवचायेसबेरेहबी
चबारियै-नरतकैपूछबचैनागिनामनीनसमनईमातकुसरा
ततो पुत्रजारिमारियै-नाईलयुकाठौजहादीरघकेनासनये
नागिगएमसोनागिनेयेनसनारियै॥ सुनीकुनदेषीअैसीआज
कीदुसहआगिबुझिबैनकुकहौकहाधोबिचारियै॥१४॥नयो
कहाहोइगोकहधोकेउजानेनायाचितमेबिनासकेप्रकारदु
नियतुहैयेककपिआयोतिहिगढहैजरायोगढोस्वामीताकेआपके
अगमसुनियतुहैगढमढयेहजरेपरिनासबकेपरेधनगएलागीब
इसीसेधुनियतुहै॥काढीअधकाढीकहैप्यारानिसिचारानिकीहेत
बयेषेतजेसेधानतुनियतुहै॥१५॥रनिवासबाजा॥नातिनातिआ
जतुमसबहीसयानेतरे-कालिकालबरजेनकुलकेकुंवारकुं
रूबचारितोरेकेषुधाकेलएफलषाएचंचलतालछनहेकीस
बनबारकौ-बापुरेबानरकौ बिहसिहसिलायोबाधि-कहाक
ढयाहिरंइजेतारउतारकौ-रोरोरहाथमीकिकहतमदोवेरा
नीछोहहैकटिछातीदेषैलंकाछारकौ॥१६॥रानीअकुलानीह
हाबानीकहेरोरोरामजूकेआयेकहोहमेकोउराषिहै-ऐकक
सआयोअबआगमकहतऔर-सुनियतपदमअगारकुकीसाषि
है-सोतोनबिलोकेयोकफुलकाकेजरतसग-आनीहमसोधिसे
धिअजोअभिलाषिहै-नबतोकहाहेसबसचिवसुनटसूर-सा
चीकेकहेतेअबेकेउमनमाषिहै-॥कबित्त॥कबित्त॥कुं
तत्रिकूटगढकुंड-सोजसमधासोर-प्रलयकालपावक-ज्वा
लमालासंजोई-करिराकससाकुलि-भृंगफलतिलजवप्रघल
बालघिसुवाबिसाल-होतस्वाहाकोलाहल-दधोप्रसिधहोतप्र
बल-इहाँऊमामरुतिअनय-कीयचंदनपावननसमको-जस
दीहतहनुमंतजय॥१॥करिकुंडहगढलंक-लसतदरबोले
गरन-ग्रेहकनकषितमध्य-नागपिघलेघृतपूरन-जातुधान
पकवान-तलेतिहिताइततछन-ज्वालापकेतिजोरि-प्रबल
पावकप्रीयपाकुन-पवमानपरोसप्रेमपन-भंगटेसोरनहाह
पुर-हनुमानधम्मजिवनारहत-सहसनोजिकीयत्रिभसुर॥
॥२॥उडेगुलालअबीर-धूमज्वालारंगधारीय-स्वंगउछलि
लघुदिघ-चलीचढ्यापिचकारीय-आहिआहिहोहोजुहोइ

हाहारवहासीय निरलजकै पतिप्रीया बिकलधावतपुरबासीय
आगमबसंतरावनअदिन पुरीहोलिकापरजरीय केसरीनंद
जीयोअकल कपिजुफागक्रीडाकरीय॥१॥ बढीय कंकदिनबं
क लंकआतंकजुलगीय प्रलयकालसीप्रगट लगीअनकाल
हिअगीय परिअपारपतनपुकार नयनीतजुनारीय यहैत्र
सुनउपनीयत नेरीतिहिनिहारीय परिबेषकोटप्राकारपुर
कोउअनदाहनउबरीय कारनअनिष्टदसकंधकोकुलबदन
लंकाकरीय॥२॥ आहिआहिकोउआत सबदयहजहातहासु
नियै मातताततसिसुमुकि गएकहुबनयमगुनियै सोचिसो
चिदससीस करनिधरनीधरिकुटीय दिनमलीनकैदीन छो
यजीयआसाछुटीय कतअतुलकाजसुरराजको दाहदसान
नउरदयो कपिबलप्रतापरघुनाथके नुवननुवनजयज
यनयो॥३॥ कबित्त॥ कस्योकोपलंकेस अबलबोलेतहापा
वस कतअकालमिलिजलदमाल दारुनयनदादस बा
रिदबिनोबिसेषि दयाकरिआप्पादीजै कहोदसाननजरत
लंक कछुउदिमकीजै गजसूंडिमुसलधारागरजि घो
रियोरिबरषोसयन बिपरीतज्वालबादतबिषम मनहु
नयोघृतसोमिलना॥४॥ बरषिबरषिघनबारि मेघमाला
औहरीय सोनअनलजलसाथि षिसेजलधरबलषुट
य चहुओरजलचलत बन्हिसहसगुनबादत नवअन्त
तयहनई इरिहुजलदसुदादत गुननीरइंद्रबलगरबगो
कहाआनिकीनोकहत सोईनिये षिसानेमेघसब चलेना
गिफिरिफिरिचहत॥ मेघ बा॥ मिलिजुकहीयघनमाल
उसहपावसयहदेषो रविबाउवअहिमुषअसाथि प्रलया
नलपेषो इहानकछुआपनो नियतबलचलतदसान
न सोईसुनिसुनिसुनर मंत्रिमुरुनिमनहिमन सब
कहतनाथपोलसतिसुनि कारननहिनकुसानकहे अ
नुसारबुधिउनमानियत अदयरुद्रबिकारयह॥ कबि
त्त॥ दससिरदसहीरुद्रहित करेहोमलंकेस मा
रुतिऐकादसमसिव कीनोकोपबिसेस॥१॥ जुकति
नपकतिनेदको करिबेकिहुप्रकार लंकादहजरए

कपि कीनेंअंत बिकार॥१॥ तपनलगे हनुमान तन लंकाज
रीसमूल बास बिभीषन को बच्यो सेरावन उरसूल॥२॥
कूद्यो हनुमंत लंकते अगनि बुझ ई आनि मंजन कस्यो समुद्र
महः अवधेसरउर आनि॥३॥ तहा फिरि कूद्यो उदधि तै नन
मारग हनुमंत आनि कस्यो बहु स्यो उमार्ग सीता दरसन
संत॥२७॥ सीता बाच॥ अजरामर रन जय अखिल हे कुस
दा हनुमान परम जगत तुम राम प्रीय सीता कहो सुजान
॥२८॥ छंद पधरी॥ कुसोक उदधि बूड़त सुनाइ अवलंब
नयो तू पुत्र आइ योछा किजात तुम कुज आहि गहरात चि
तन ही कुग हि मिलि कहा जरत यर आनि मेह देषि हो च
लेम मद सादेह छतिय जु फटति अति बिरह छोह मन चकि
तन यन जल नर सम मोह दस कंध मास द्वै अवधि दीन लंघि
दिवस षान मो हि बृत जु लीन पुनि आइ कहा कि रिहै कृपा
ल सो ई नषे मो हि जब सुर निसाल॥ मारु ति॥ मत करो सोच जी
य जननि मूल सब हरि हैं राघव बिरह सूल सहनान मात मुहि दे
कुसोइ हैं तजि हि राम बिस्वास होइ॥ कबित्त॥ मनि यें थित क
बरी गो पिमान सो लई छो रि सीता सुजान मनि दीनी लै हनुमंत ह
थ सो सीस बंदि लीनी सनाथ॥ सीता उ॥ सुनि प्रत्यय इक देह
सुनाइ पुनि कहो राम यें कांत पाइ॥ कबि त॥ चित्रकूट पर ब
त बिचित्र महिमा प्रसिध महि मिलि बे दंपति महीप तहा क
हि कि सिलातल इंद्रकुमार जयंत काक द्वै कस्यो दुष्ट क्रम
मुकीय सीका अध कीय अतुल पराक्रम ति हि समय
करे मन सि लतिलक नाल नाल प्रति निटयो सो कहि बो मारु
ति राम सो देवि गट प्रत्यय दीयो॥१॥ मारु ति॥ छंद पधरी॥ उ
षद रुन अबलो स सो देह अंब कछु क दिवस नव तब मयेह
अगनि तट ल बानर नाल आइ बारि निधि सेत बांधे बनाइ
निसचर संघारि दल कंत नि अबद रसन राघव दे हि आ
नि मत मान कुछ मन सो च मा इ सब नां ति राम करि है सह
इ॥ कबि त॥ सीय हि पाइ कृत साधि दाह लंके स उर हिदी
य बन बिदारि मिलि अद मारि सुर कारि जस धीय राम

श्रीयासंदेस कहेलेचलेसकारन करिबंदनपरिक्रमन नियतसी
यसोकनिवारन आगमनगमनलंघनउदधि नयेजुबिक्रमअ
तुलतुव सुरराज हरषनरहरसुकबि हनू किन्नित्रयलोकऊव
॥ दो ॥ पारप्रतीछासीतापहं चूडामनिनितचैन काजस्वामि
कोसिधकरि उचक्योकपिनक्रैन ॥१॥ छंद पधरी ॥ कपिमह
गरजकीनोअकास तिहिगरजश्रावनिसचरसत्रास सुनत
मिलतातरुनिकरअंग आकासकुतेउतस्योअंग इकअद्ध
तीसजोजनउतंग तट सिंधुबिकटअतितरलअंग तबचढेकहि
हनुमंततास पनकरेउदधिअंपनप्रकास सोलईकुमारु
तिअसेष अस्तिहनूमिथसिंगोबिसेष कपिगगनकिलकि
लासबदकीन निहचेसुसुनोअंगदनवीन ॥ दो ॥ इकसिन
सरमाआपनेंसषिसमाजअहिसंग कविनरामसीयबिर
हको पुनिसोईचलोप्रसंग ॥१॥ रामरामसीतारटति धरति
निरंतरध्यान अवलोकीकिऊआसुरी परेजुसंत्रमप्रान ॥
॥ दो ॥ रकसीबाच ॥ छंद सरमासोकहितिहिसषी यहपैबनोअजो
ग कारनकीटहंगको पुनिधोकवनप्रयोग ॥ कविनारामु
राममुषरटति नियतउरध्यानिनिरंतर नवनवबिजोकीटहं
गनहीरतसुरऊनर रामहोइजोरमनि बिरहसंकटपरिप
रबस साहिनिजाइयहपरमसाल हीयअतुलतपरहस स
रमासोपूछोतिहिसषी अबबिचारकरियेइहो जिहिंक
रनहुकुयाहोतजुध तबकेसीबनिहेतहा ॥ सरमोबाच ॥
वहसरमाहसिताहि आपउतरहीयअसो तेजुकलोसबत
नजगतमहसुनियतजैसो सीताजोरामहिसंचारि हिवध्यां
नधरतहीय जयतरामजानुकी जतनबहुकरतमिलनजी
य जोकहेहैनारीनाहहरु नारिनाहकेहैनियत इहिगोरस
बीनहीसोचअब रसबनिहैबिपरीतरत ॥१॥ दो ॥ सर
मासषीसमाजसुष समयबिलाससमेत तरकबितरकब
डाइचित हसिहसिउतरदेत ॥ अंग दाहिमा रुतिपुनरा
गन ॥ छंद पधरी ॥ आनंदकपिनिउपजेअनंत जान्योजु
हनूअयेजयंत सबतयेमहाहरषतसुनाइ इहिबीचमि

लेहनुमंतआए:लेलेसब नेटेकेंगलाए: प्रफुलेमनुनोतनजनम
पाए॥ अंग दा॥ बूझतजिहाजजोंआनिबीर॥ अवलंबदयोहम
हेअधीर: मनतलफलहमजोबिकलमीन: निरयोषमिलेतुम
यननवीन॥ कबिरु॥ उग्विलेसबेरघुचंद्रओर: चितमोदमन
कुथावतचकोर:॥ अंगदा॥ दिबाच॥ मिलिसबहिनपूछेहनूमंत
बिधिजुकतकहुकारनहृतंत॥ मा कु तिजानकीदरसकी
यनिकटजाए: अवलोकिहसाननहहआए:॥ कबिरु॥ सुग्री
वसुषदरसितसुगाम: नियराइतबेमधुबनसुनाम॥ कपिरु
बाच॥ मिलिचलियेअंगदधसहिमाहि: अतिलगीषुधाबनफ
लनिषाहि॥ अंगदा॥ जुवराजदईआग्यासुजानि: करियेफलन
हनछाडिकानि॥ कबिरुबाच॥ कीयफलअहारमधुपान
कीन: निसेषस्वादलेलेनवीन॥ रहआयेबनरक्षकअपार
मुष्टीप्रहारतिनलहेमार॥ रहा॥ कपिराजासुग्रीवकेमा
मादधिमुषनाम: सोमधुबनरक्षकसदा॥ कीनोप्रभुहितकाम
॥१॥ बागबिगास्योबानरनि: मधुरोगकासमेत: सोदधिमुष
सुग्रीवसों: हेबिनयोसबहेत॥२॥ सुनतबातकपिराजसोई
बोउरबिसवास: निसचयपाईजानकी: तोपायेफलतास॥ रक
बिरुबाच॥ सबकपिआयेतिहिसमय: अंगदअयसुओर: बिमलप्र
बरषनगिरबिषय: राजतरघुकुलमोर॥४॥ कबिरु॥ कपिसबरक
प्रनामकरि: कलोजथाक्रमकाज: प्रभुतत्रअतुलप्रतापते: सिधन
येसुषसाज॥५॥ अंगदा॥ बाच॥ त्रिभवनरामप्रभावतव: कछुन
दुकरदेव: सबकहिहेमारुतिसमुझि: कृतनवषितकेव॥६॥ बं
हितटलेगईमुद्रिका: मनिलाईहहिओर: रामप्रतापकसीयसत
फलेमनोरथमोर॥७॥ दरसमातकीनोकुलत: हेअसोकवन
माहि: तहांबिलोकीषीनतन: जुगबरछनछनजाहि॥ छंदप
धरी॥ पुनिप्रभुहिहनूएकातपाए: सबकहतनथेबिधिजुतसुना
ए: सीयदत्रदईमनिसावधान: पुनिदयेउतयप्रतयप्रमान॥
चित्रकूटतिलकमनसिलसचीन: वाएसतहाकीनोचषबिही
न: सीयकहेबचनसुनियेसुनाए: राजाधिराजरघुबंसराए॥सी
ताबाच॥ अतिबिरहसियुकूतिअनाय: हितदेकुनाथअब
लेबहाय॥ रहा॥ उयास्योप्रहलादतुम: प्रगटसुबेदपुरा
न॥ अवधिबितीतेमासदे: पुनिकोकरेप्रमान॥ लछमन

बा सीतासहे सबरन्न ॥ छंद पधरी ॥ लछमनरघुकुलकी
तोहिलाज : अनउचितबचनसुधिकरिनआज : पतिसासुजननि
सुनिनहीप्रबोध : बसप्रेमकरेमैनयबिरोध : त्रीयजनमनिकसि
बनवासबीर : परिपाकसहतेईबिरहपीर : उरषोजतफूजोकु
मतिआप : तोसहितबिरहदुसहसताप : ॥ श्रीरा मचा ॥ सोर
ग ॥ हेजीवतकिकुहेत : जनकसुताहनुमंतजो : कहियेयहसंके
त : देषीतुमजैसीदसा ॥ ॥ हनूमतसीतादसा बर्नन ॥ छंद प
धरी ॥ इकबेनीचिंताभलिनबीर : सबनावसहतपरिनवस
रीर : परिबेषराकसीआसपास : तिनबीचरहतसीतासत्रास
देषीनजातिदुषसहतदेह : सुषभरतबदतसोसोसनेह : जैसी
अवलोकीमातजाइ : कूबचनकहतनाहिनबनाइ : अवसेषरहे
कछुप्रानआर : स्वामीत्रिलोककरियेसहाइ : जैहोनदेवयहसमयजान
पुनिसुनिहोसीतातजेप्रान ॥ सवैया ॥ मेरीतोदुसहदसादेषीतु
महनूमान : जबतेबिछोहानयोसोवरेसनेहीको : नैनपैनफूटिग
येप्रानहूनछूटिगये दुषयेतेसहतनरोसोकेसोदेहीको : जलतेबि
छुरिपलमांहमरिजावेमीन : तातेलोकबेदगावेधन्यपनतेहीको
संकटकेसाथीसदादीनकेदयालदेव : बानसोलगेहैमोहिब
चनबिदेहीको ॥ ॥ दूहा ॥ जोलोसीतानयनजल : सागरमिलि
हिनआइ : प्रनुतोलोयासिंधुपर : बायफूसेतबनाइ ॥ ॥ प्रनुत
वनामजुपाहरू : ध्यानकपाटधराहि : प्रानसुजंत्रितनेत्रपल
निकनपावतनाहि ॥ ॥ छंद पधरी ॥ मोहिबिलतसीयाअतिदीन
मान : ढिगबहतनीरयोंकहिनिदान : मनरामचरनअनुराग
मोहि : तोबिसरिकिवनाहितकुतोहि : मारुतियहअवगुनऐ
कमोर : कीयनाहिगमनजीयतोकठोर : छतीयानफटीबिछु
रतसछोह : मनहयाअबेसबजानिमोह : सबजानततुमसी
तासनेह : अबकहाकहालगिकथाएह : कछुछिपोनहीतुम
तेकृपाल : दिनदसाजुसीयबरततदयाल : जगनाथजगजित
सरबजान : छनजातसीयहिजुगजुगसमान : प्रनुसीतातनम
नकष्टपाइ : जगदीससुमोपहकहिनजाइ : ऐसोअनरथमैदे
षिआप : प्रनुदयोधीरतबबलप्रताप : ममदिष्टमात्रसुनि
येजुमाइ : सबताइरामकरियेसहाइ : अनसोधतयेगत

दिवसयेहः सीतयोरामसानुजसदेहः आरहैरामलषमनंअ
नंगः साथामृगेससुग्रीवसंगः अंगदअसंकजुवराजआरः सोसद
रामसेवकसहारः अनपारजूथपजूथपअनीतः सबअयेदेषकुमात
सीतः बानरसमूहसिरसेतबंधः करिहैसनासषटवारिकंधः सग
उ्हसकलरावनसंघारि मिलिहैकृपालतवप्रभुमुरारिः बिधिवि
धिअनेकदीनेबिसासः एकसीयहिरहीतवदरसआसः॥कबित्त॥
कपिराजसहतअंगदकुमारः सबबैठिसभाजूथपसुदारः॥जाम
वंतआतवकसोरामसोजामवंतः प्रभुतवप्रतापमहिमाअनंत
कीनोतथापिहनुमंतकाजः देवनिजोदुरगमदेवराजः सीयदेषिपु
रीतकाअजारि मिलिमानदसाननअसमारि कृतकरेजुमारुति
उथकाम रसनाएकएतकककलराम॥ सुअवसरजानकरप्रभुकेरो आपुनोः सुरसुरपतिसुषसजः कहिसुकंठरहारामसो
कृतमारुतिहितकाम॥१॥ सतजोजनसागरसलिलः कूदि
गयेनिसंकः आयेसीतासोधलेः कस्योदाहगदलंक॥२॥
कीनोदरसनजानकीः दीनीलंकजराः मास्योअहकुमाररन
पुनिदेषेप्रभुपाः॥३॥ हनूबाच॥छंद पधरी॥ मोतेनतयो
कछुमहाराजः कृततवप्रतापसबसिधकाजः बानरकेप्र
भुयहबलबिप्रात जोसाषकृतेप्रतिसाषजात जारीजुत
कअघनारजान अरुहसोअहबालकअग्यानः बिनसेजु
वागजकनावजाहिः यामरुममबिक्रमकचनआहि निअलो
मोहितहामेधनाद पुनिछुटौजीयतप्रभुकेप्रसाद॥श्रीरा
मबाच॥छंदद्वैअषरी॥देवनिकटुकरअतिदारुनः काजहनूमो
कस्योसकारनः सतजोजनदुसतरजोसागरः जलअगाधधलन
तुबसतबरः नयोसुगोपदमनकुनीरजरः कूदिगयेलंकागढ
कांगुरः बीरमहाबलबुधिबिसेषीः दुरगमगोरजानुकीदेषी
सुनिसुग्रीवकहतसतनांही हनुमतेकरनहमनांही॥हनू
बाच॥तुमपरपुरुषरयापरपूरनः अपनेकरतकृतारथअपु
न॥ कबित्त॥ छंद पधरी॥ पदसीसलाहमारुतिप्रवीनः कव
नाजुतदूतप्रनामकीन॥श्रीरा मबाच॥ मिलिकेबलारदकक
लोरामः मारुतितुमकीनेसबेकांमा॥॥मारुति कहिन

पाथोनिधिनहीपीयो प्रबलनहीतेकपलरीय आननदसअवधेस
अग्र कंटकसिरकरीय संगरासिभयसुता इहासीतानहीआनी
य सुनहुदेवदेवेस मुहिनपोरुषपरमानीय करजोरिचर
नबरनकरो सोकृतकिकरअनुसरीय अषिलेसजुलावत
मोहिउर कवनसुमैबिक्रमकरीय ॥ छंद ॥ धरीबैरिनि
कटकरहिबिष्यात बरबीररामकपिपूछिबात ॥ श्रीराम
बाचाकेसोगदहेबो विकटबंक लहनप्रकारहनुकहुलं
क ॥ मारुतिबाच ॥ कनकमयकोटिमंदिरसकंक तहाबसत
दुष्टकटकअसंक सुतबंधसचिवसुतनिसमाज सुषसमृध
चितबंछितसुसाज धितद्वारचारितहाबिकटद्वार पुनिसं
जुतबज्रकृतकपार अरगलासूलसंकलअपार राकसत
हरहकद्वारद्वार अगन्यासससत्रधनुरधारीअनेक अनग
नितकंगुरनिएकेएक संष्यासहस्रराकससनध पसचि
मद्वाररहकप्रसिध मदमतगजनिचदिचोरमार दिन
रात्रिफिरतजोधादवार उतरद्वारअस्वारोह सहसनि
सकुंयसनाधसोह पूरबद्वारपयदलप्रचंड दसकोटिध
नुरधरदुसहदंड इकवीससहसरथतरअपार दारुनसदु
ष्टहलनद्वार परिषातहासतजोजनप्रमान नरनीरगह
रसागरसयान आवरितसीमसागरअगाध सबजंतब
सतनामहअसाध अतिकायनक्रचक्रअनेक अपआप
तिमंगलग्राहएक प्रभुआहिसाध्यसबतवप्रताप अषि
लेसकरहुअबगमनआप ॥ श्रीराम बाचा सानुजप्रभु
बोलेसानकूल सुषसाध्यसबेकहेसमूल कपिराजक
रहुअबगमनकाज जुतरोषकसोयोमहाराज सीता
हिदेषिआयोसधीर बससोचबिलंबकरियेनबीर ॥
जूथपबाचा यहसुनतजूथजूथपअनंग गिरमात्रदेह
कापनबिहंग चितबदेअर्षअतिजुथचाहि हमचढेतेहि
गढलंकराहि ॥ श्रीराम मग मनोदित ॥ जटजूटकरेसा
नुजसधीर बनपटलपटिकटितरानिबीर गहिमध्यना
गबांधेनिषंग आकरषिबानधनुमनुअनंग ॥ नयेरोषउ

तारनन्दमिन्तार: सकुटंबकरनरावनसंघार: हरिउगेरामआजानव
ऊ: अतिबड़ौचितआस्त्रउछाह॥श्रीरामवाच॥छंदउधोरा। अवयहै
मम्हरतआइ: पंचागसुनसुनाइ: अरुबिजयदसमीयेह: सबसिध
निसंदेह॥ कबित॥ सुकलपहरितुमास: मासअस्वनिदहन
यन: सुनकारकपंचागसुध: मिलिसकुनजथामन: मुषिसुष
वसाषाम्हगेस: अंगदअतुलितबल: अषिलरीछबानरअनंग
दससीससीसहल: आकंपअवनिनरहरसुकवि: नियतनाग
पतिफननमीय: दिगबिजयबिजयदसमीदिवस: सेनलंक
दिससंक्रमीय॥१॥ समरचलनकपिसेन: सजलमितिपंथ
सरितसरं: पयलुपीनलिरुरनिवांन: नयेसुकपंकजर: र
हिनपंकषुररवन: गवनसमबिषमभूमिजय: बातस्वरनस
बिलास: सोरईनगगनगध: बिसमयजचक्रचकीयबिछु
रि: नहअचरोयदिगंततम: सुरवंदहरषनरहरसुकवि: कृ
तयुनाथप्रयांनक्रम॥२॥ नागराजफननमीय: कबिनलगि
कमगपिविकहं: दसनटकमुषदुसह: तिष्मपरिअंकपंवितल
कोतदहनरकरकि: संपमरकटनटसंगम: धरनंगांनप
रिजातधान: अवधेसुरआगम: दिगपालकोलदिगदंतक
र: रहिनचकितसंमासवरव: आकंपकुलाचलननअव
नि: कहिजयजयजयनरहरसुकबि॥३॥ सवैया॥ पदहतउ
नगगनमगरेनथी पूरियनासिंधुसरसरितप्रमांनहैं: टूट
नउरनिचतरुनिकेमहाजूथ: मूलझूलरहेमहीहोतजुमेदा
नहैं: फाटनपहारकपिचरनप्रहारपारे: दिगेब्रहमंकुलार
असहअमांनहैं: मचेजोमचकिजात: अवनीकेअंगमूल
पृथीपतिरामजूकोप्रबलप्रयांनहैं॥४॥ छंदउधोरा। संक
म्पोसेनअसंष: कपिमनकुपरवतपंष: वनिअअष्टदिवि
रूथ: जुगपरसजूथपजूथ: गजगवयमेंदगवाषि: पुनि
दिविदितारजुदाषि: नीलनीलसबलसुषेन: संगजामवं
तसुसेन: इत्मारिजूथपत्रोर: सबग्रयेगेरहीगेर: हरिवृ
छिपरबतहाथ: सबचलेसेनसमाथ: संक्रम्योबिजरीसे
न: रहिगगनपूरितरेन: कतअंतरितरिवचक्र: वनिदिवस
कंटकबक हलहलातिधरनरहेर: ।

उठिरेनहै दिसिअंध॥धरगगनघनमिलिधंध॥पातालसातसके
पा॥संचारकपिदलसंपा॥डगमगतधरगिरकोल॥लगित्रासक
मगीकोल॥सरसुकिरेनसपूरि॥नयेनीरकर्दमचूरि॥मिलिन
लमकरिमाल॥आकासपंथउछाल॥अंतरीषसोनाअंग॥अ
नेकरंगउतंग॥बपुबरनबरनबिसाल॥जनुउनयजलधर
जाल॥जुधहेतमरकटजूह॥मिलिपंषअरिसमूह॥तरतुटि
उरचलितास॥बनगहनघनजुबिनास॥कपिसेनबहुतस
कोप॥पाथोहिमनुहरलोप॥छितिउगीनतचढिबेह॥ऊवचक
चकिसदेह॥बुकारऊपहिबीर॥मिलिगगनगतजुसमीर॥ब
ढिबीररसनुजबाह॥अतिक्रुधजुधउछाह॥कोउकहतदाहहि
लंक॥कोउउदधिबोस्त्रिसंक॥कोउकहेअहिदसकंध॥बिछुटहि
नवयहबंध॥मंदोदरीअहिमूल॥दसकंधअरुकूल॥बसकर
ऊबहनबिलो॥कोकपिमध्यराषऊरो॥कोसुतबंधुसहतसं
घार॥निःसेषकरिनिसचार॥उदमादबढिजुधअंग॥योचलेद
लअनतंग॥कबित॥बीरप्रेतबेताल भूतबिंतरपिसाचभूव
ऊवरूपानिऊंकनीय हरषजषिनजुगनिऊव॥प्रचरिचिल्हय
धीप्रसिध पंषीपलचारीय॥सिवाअदिहकगनअंगाल नष
जंतनिहारीय॥संग्रामअसंग्राहरसुष धावतकौतुकमनध
रीय॥संष्यानतासमरहरसुकबि सेनपिठिमिलिसंचरीय॥
॥चिल्लीबाच॥ नहीनससत्रसनाह बसनबनधनुषबानध
रा॥नहिनबाजरथनाग चमूचतुरंगचरनचरा॥नहिनरज
रचनानिदान जटवांनजुगमजन॥बनिबिभूतिअवधूत
तदषिनृपलछनगुनतन॥प्रातमेमातदेषेपुरुष कपिस
मूहबिचिगिरकुहरा॥अचिजपरसपरकहतयह बिहसि
बिहसिरमनीसबरा॥॥अंबा॥जयकारिजलंकाअजेय
पाथोहितरनपदा॥सबसत्रुदससीस महाभुजबीसजुड
रमदा॥देवआपसानुजजुबाह कुलराकसषयकरा॥पुनिस
हाइहामिलेआइ बनचारीबानरा॥संसारसुपोरुषसा
धिसब परिकरनाहिप्रमानयो॥कृतसिधहेतनरहरसु

कवि- पूरन फलप हवानियो॥३॥ कुलराकसनयपरीय॥अमर
आनंदउपजीय॥संकलंकलंकेस- बिकलजीयआसबिबजि
य॥मलतनयअहिवातआस उरछुटिउदासीय॥घटबिलास
घरघरनिघेर- बिनतपुरबासीय॥आगमअंगअबधेसकै
बिहतबातजगबिथरीय॥कपिनालप्रबलदलरामके-आनि
सिंधुतटउतरीय॥४॥ ॥कबित्त॥ परिमितअष्टादस
पद्म॥कपिदलनालअसंक॥तेसबआयेसिंधुतट॥लैंनहार
गढलंक॥५॥देषिगयेसोईतत्रिग॥रावनकेदलराम॥सुपेवा
तलंकासुनी॥मानकुबजबिराम॥२॥ छंदपधरी॥ घरघर
पुरलंकाय हेघेरा॥बससेचसबेसंध्यासवेरा॥दिनरात्रिदुस
हनिद्रानलेन॥बिसमयगतकाहुनफुरतबैन॥यहदसाव
रीजबलंकआस॥जुवतीसत्रासरनिवासजास॥सत्रीबाच॥
मंदोदरिआगेकहतिमूल॥सुनिहतबातउरउग्यसूल॥आ
गमनरामउरपरिउद्राव॥सुनिहोतअसुरत्रीयगरनअवे॥
इहआयेहनुमतमतएका॥वहिकरेकरमदुसहअनेक॥
बिपरीतकालबरततबिहाल॥बिललातवृधजनतरुन॥
बाल॥करिसंधिरामसोंदेहुसीता॥तुजपकरिकहेपति
सोअनीता॥पटरानीतुमआपुनप्रवीन॥यहमंत्रआजतुम
हीअधीन॥मंदोदरीउ॥मंदोदरिदैतबबचनमानि॥सबकरी
बिराकरिसावधानि॥इहिसमयदसाननयेआस॥सनमु
षमिलिमंदोदरिसुनाश॥थितनयेजुदंपतिमध्यथान॥बि
सतारमंत्रहितचितबिधान॥मंदोदरी॥ नृपनीतिकंतसु
नियोनिदान॥नयलोकहोतअंतरनयान॥आगमनर
मउतपतिअलान॥रजनीचरग्रहनीगिरतगान॥उरतजहु
रोषअरुकहुयेहा॥दुषटरैरामकहसीयादेहु॥पुनिपूत
बंधपूछहुप्रधान॥पुरलोकवृधजेबुधिप्रमान॥कुलकंज
बिपनतवराहकारि॥यहआइसीयाउतरवयारि॥दीनें
बिनुसीताअवरदाउ॥बिधिरुद्रहुनहीअपनेबचाउ

आवैनरामसामुहवारा॥चितसौलोकरियेयहविचारा॥रावन॥ त
बबोलोरावनकीयैटेक॥अहंकारप्रगटत्रैलोकएक॥अबलायहु
जातिसुनावअंक॥सुषहीमहसुचनरससंक॥अंतकवसमकर
करकआश॥आसुरसबषैहैंतिनअघाश॥ छंद हरिगीतिका॥कंपतती
नतवनममतयकरि॥सोचकरैकौंताकीसुंदरि॥यहसुनिकै
हैंलोकउदासी॥हैंअनहितसोकरिहैंहासी॥मंदोदरी॥ दोहा॥
दृष्टकुतीतवरूपरत॥पुनिअपुनबलवंत॥तोरिसरासनसं
तुकै॥सीताबरीनकंत॥१॥ चौरिजुलायैरामत्रीया॥साजिक
पटमुनिबेस॥बरीमीचकीबेलिसो॥लंकमांझलंकेस॥२॥बालि
बलीपरदोषजिहिरनमास्यौकरिरोष॥कौंबचिहोतुमसोक
हो॥जिहिसिरअपनोदोष॥३॥ तिनकीधनुरेषातनक॥लां
घीगईनराज उनसोरनसागरअगम॥कौंलांघफुगेआज
॥४॥ तिहितेस्यौकोईकहरा॥मानसुरासुरमोरि॥सोकहते
रोलंकगढ॥सकहिनछनमहतोरि॥५॥छंद हरिगीतिका॥जगतईस
ताआपहिजानत॥अतिहिमुमाननहितउरआनत॥बातनसु
नतकंतअहमिति बल॥फिरिअयाश्रषैहोताकेफल॥मनअति
मंदोदरिमुरझानी॥बिधिबिपरीतबातसबबानी॥अतिहिग
रबजुतबाहिरआये॥बैठिसिंघासनछत्रबनाये॥रह
सचिवसुतबंधवआये॥निजनिजसावबैठिसिरनाये॥छं
दपधरी॥तहाकुंतकरनआयोअनीत॥बंदनकतरावनक
हंबिनीत॥अयजसमीपबेगेसुआश॥सबसुनीदूतबातै
सुनाश॥कुंतकनंद॥ नृपनीतिकहनलगोनिदान॥सुनियै
प्रभुकैछंनसावधान॥आरंभकस्यौतुमकरमयेहा॥हैंनास
हेतसोनिसंदेहा॥देषततुमरामहिमनुषदेहा॥अब्ययअन
तभगवंतयेहा॥सीताहैलिछमीआदिसोश॥हरिमहाप्रीया
नारीनहोश॥हैंराकसमूलबिनासहेता॥मीनहिसोबनसीप
लसमेता॥तुमसबैनीतिबिद्यानिधांना॥इहिसमयकहाको
उकहैआना॥ दोहा॥ तुमआपनसमझतसकल कहीक
रतनहीकांन परत्रीयहरिआनीप्रथम ।जादिनमीचन

जानि॥१॥ जिहिबरतुमजीतोजगत॥सुतौबितीसौआजा॥अब
तोताकोसोचकरु॥औनिबनीजबराजा॥२॥ जिहिकटेचौ
दहरतन॥बीरसमुद्रमथाश॥सोइछिद्रसमुद्रकरु॥सकैनसे
तबंधाश॥३॥रावन॥काचीनिद्रातुमहिकिहि॥अधमजगएआ
जा॥ऊंघसतावतहैअधिक॥सयनकरुकुंभसाजा॥४॥ करु
मनुषकपिधोंकवन॥जानकुबेचरषाजा॥करिकरितिनकौ
उतकरषा॥कुनकरावतआजा॥५॥नहुन्नतहमतेगत॥नरबां
नरयंहिमाश॥बधेरसरीकालकी॥येघरबेगेआश॥६॥कबिर
देषौरावनकौअदिन॥हितउपदेसनहोश॥जिहिअैसीनव
तमत॥करकरेअबकोश॥७॥छंदद्वेअषरी॥याहीसमयबि
भीषनआये॥बेगेजहाप्रभुआइसपाये॥इंद्रजीतबान्हे
इंद्रजीतबोलौअधिकारी॥नरबांनरनहीदिहिहमारी॥राममम
मनुषसोजछहमारे॥बांनररीछकितेकबिचारे॥स्वांमिदे
कुआपालंकेसर॥करहिअवनितोअनरअबांनर॥रावनउ
दसमिरदहाअनुसासनदीनौ॥निजमंत्रीतुमसबेनवीनौ॥क
रिबोआजसुसबमिलिकहियौ॥रोषमानिनहीचुपकरिरहि
यौ॥कारिजकेआगमजोकीजौ॥मंत्रवहउतममानीजै॥परैनी
रतबमंत्रप्रकासौ॥नवसोपेभतमध्यमनासौ॥बीतेकाजजु
मंत्रबिचारौ॥वहैअधममतजगतउचारौ॥आजमंत्रकरियैसो
ईतमा॥ततजांनस्वामीहितहोतुम॥पुलहसति॥तुमहिराम
नयकैसोरावन॥सुरसुरराजहिसाजिसतावन॥जीतिकु
बेरजथातुमजाम्यौ॥अरुषसोदिभुहपकरथआन्यौ॥जमतु
मजयोदुसहदुषदीनौ॥कालदंडकौजयनहीकीनौ॥कोउतुमसो
बलबरननकीनौ॥दुषपरिजवतुमताकुदीनौ॥प्रगटआसुरमय
कवरिप्रबीनौ॥देवतुमहिमंदोदरिदीनौ॥महासुरासुरजेमहि
मंडला॥बरततवआप्रबसतजिबला॥संतुअरुमतुमसदा
सहयौ॥अवरदेवकिहिगणनाआयौ॥नरमहकुंनकरनतवआ
तम॥देवराजदेवनिदुषदात॥इंद्रजीतजेगेसुतअतिबला॥देव
राजबांधौजिहिहतिदला॥मानमरिबासवमदमोरयौ॥

छीयेचरनतवतवसोरईछोस्वे॥ बिभीषन बाच॥ दहा॥ बिभीषनल
सोअमगल॥ बोलतसत्यामृदुकरिकरिबल॥ नाथिदसाननबिप
रितताती॥ सबहीकहतहैंकुरसुहाती॥ सचिवबैदगुरकहैसु
हाई॥ नीतिदेहनृपधरमनसाई॥ दहा॥ बिभीषनजुगकरजोरे॥
मतिअनुसारकहुकछुमोरे॥ प्रभुकोजोअनुसासनपाऊ॥ स्वा
मिहितउपदेससुनाऊ॥ दहा॥ सरदनिसानादोसुकल॥ चौ
थिचंदचितचेत॥ तासमपरत्रीयसुषपुरुष॥ हेरतनहीकिहु
हेत॥१॥ कामक्रोधमदलोभमत॥ हैंजुनकसमहेत॥ सुषजस
चाहतजतसो॥ मनक्रमबचनसमेत॥२॥ अष्टिउपाजक
पोषसुष॥ हैंनासकुजिहिहाथ॥ तासोबयरबिरोधबिधि॥
नीतिकुसलनहीनाथ॥३॥ सीयानत्रीयसंतावन॥ रामन
रभुवपाल॥ प्रभुप्रतिमात्रममतपरहु॥ हैकलहुकोक
ल॥४॥ रावनउ॥ तोयेकोहैकहहुतुमा॥ करिनिरणयनि
रधार॥ पंचभूतकीप्रवरतिसी॥ सबदेषतसंसार॥५॥ बिभी
षन॥ छंद॥ परब्रहमराममंगलषनसेषा॥ सुग्रीवअर्कअगद
सुरेसा॥ नलबिस्वकरमअरुअनलनीला॥ सतबलीबलअजअ
जसुसीला॥ मिलिमयंदद्विबिदिअस्वनिकुमारा॥ मारुतसोईमा
रुतिअकुमारा॥ गजसरभगंधमादनगवाषि॥ सोपेकृतांत
सुरकहतसाषि॥ स्वादिसबेअमरावतारा॥ नवभूतनये
नुवहरनतारा॥ दहा॥ गोद्विजबेदसहारबपु॥ निसचय
कृपानिधान॥ भूमिउतारनतारतवा॥ नयेमनुजतनगवा
न॥१॥ सुमतिकुमतिदोउएकसंग॥ बसतसबनिकेचि
त॥ तिनहीकेफलतोगवत॥ निगमकहतयोनित॥२॥ जहा
सुमतितहासंपदा॥ कुमतिजहाबिपरीतिकालनिसासीअ
सुरकी॥ स्यामबसीमनसीता॥३॥ समयनिहारिबिसारिरिसा॥ प्र
भुउरधरहुकृपाला॥ सरनाईपंजरबिजया॥ हेअतिदीनदयाल
॥४॥ संधिकरहुरघुनाथसो॥ अरुबैदेहीदेहु॥ जुगतहुल
कासुषअनय॥ हितजनमफलतेहु॥५॥ रिषपुलसतिय

हमत्रकरि॥सिषपठ्यो समझाय॥कारनतिहिमोसोकसो॥से
मेतुमहिसुनाइ॥२॥ मालवान॥मालिवानयहसुनिसमुझि॥पु
निकहिमनसुषपाय॥कहतबिभीषनसोकरजोरि॥यहप्रभुश्रेय
उपाइ॥३॥ मालिवानतयेहृदयबिचारि॥हेअतिहितहमारासत्रु
परबोलतनुसगाइ॥कुनिकासिद्धवारा॥४॥कबित्त॥ जबकोप्य
दसासिरदुष्ट॥अतिअनिष्टगनियेहा॥मालिवानसुनिसकुचिमे
ना॥गयेतबेउठिगेहा॥५॥रावन॥कुलकषनरिपुउतकरषा॥मोहि
सुनावतमूढ॥कौनेयेमंत्रीकरो॥पानप्रबोधकगूढ॥६॥छंदपधरी
अहिजहसुरासुरजयेआप॥ताकोनरबांनरकहातापा॥येमूढ
रावतहमहिदाइ॥उरसबकेउपजीनिआइ॥७॥तुमकहिंदरसि
हामनिअपाना॥पुनिओसबुदपावसप्रमाना॥७॥लीलाकोचादत
गुमटअंबु॥बायहिजोत्रासदिमाइजंबु॥तारषकहलयुअहि
कहतत्रास॥बांचतजोमेरुकअहिबिनास॥ छंद द्वैअषरी॥
कहतपिपीलिकनयजोकुंजर॥औतिहिआषुदिषावतअति
ठरा॥रज्यजोमनिधरअवरषै॥दीनसंन्यासीसमुहमदेषै॥ग
हिसतोषजिहिराजगुमाये॥उरधिपारकपिदलतेआये॥जग
सुनावकातरहेजाको॥कहरकहादिषावतताको॥नयजो
गरबिप्रसोंनाजो॥सदाअनाथहिमेत्रीसाजे॥जाकेनाहिन
गेरविकावै॥मूढकहातकोनयमानै॥आतुरधेलीनीसरन
ईसोपेसुयोसुग्रीवसहाई॥बिभीषनवाच॥कुनकरनयन
नादनकोईजनिप्रहसतमहोदरजोई॥कुंनिकुंतमहाअ
तिकाषु॥महाप्रचंडअजतअतिमाय॥सनमुषरामवानरन
सोई॥किकुप्रकारनरहिहैकोई॥संनाबेगियेसबेसयाने
मारतकालनगालहिमाने॥जोलोलंकनकपिदललाये॥देष
बीरनहीकोटदिषाये॥गिरतनमांनतालकपिगाटे॥जोलोबी
रनहारेघाटे॥अंगदहनुमनजोलोआवहि॥चढेकंगुरनिसि
लाचलावहि॥बिनताषिप्यानअंबतबांनर॥धनहाहारव
होइनघरघर॥रामअमोघबानअनियारे॥जोलोतवबहु
हिनबिहारे॥जोलोनथोनहिगटघेरे॥मांनकुप्रभुनो
मतमेरो॥उरधिलायिजोलोअवधसर॥करकुसुधि

लौंलंकेसर॥ दहा॥ दुधारा अति तेज दिढ़ बज्र उपम सुनबान सं
महि सीता देहु फिरि जो लौं लगै न बान॥ ७॥ हे कुलकीरति नास
हर सो तजि येलंकेस सीताराम समर पिसुष बैनवन जहु बि
सेस॥ छंद द्रुतविलंबित॥ रावन॥ संधि बतावत मोकहं सग हैजै
गजयो सबै मैं अपहर अहंकार मेरो जग ऊपर मानुष सरन
जाउ क्यों हरमर बिनु पूछे हीन ति बिभीषन उपदेष्टा हमकों
नये अपन मित्र नावपै सत्रु हमारे रहत समीप होत नहीं न्या
रे जाति जाति कै बैरी जान हु प्रसन बिनासक बुधि प्रमान हु
दारु हि पंषलगत जब चहु दिस तीरत बैपुरुष तपंषीत स॥
कबि॥ छंद पधरी॥ सबक ही बिभीषन नीति सों निःमनकंटक
बात नये कसों नि॥ रावन॥ पुनि बोलो रावन रोष पार सग हम
हि प्रबोधक नये सुचार पोष्यो मैं देहे कवल पाप ओर सोई
सत्रु की नयो आप रेलाग्यो हि आवै न लाज अरि को बढावजो
करत आज इहि जगत सुरासुर कवन आहि जुधनुज बल
मैं जीतो न जाहि तपसी निओर बेलत स्वतंत्र मोकहं उपदे
सत मूल मंत्र कुलकलंक तजपंडित कहार सो नीति जा
रत पासि निसिचार लघु भ्रात जानि बांचत लबार करिस
त्रु पदबोलत कुचार॥ बिभीषन॥ उ॥ सुहृदर जो जेगे पित
समान प्रभु कहो सरब थासो ईश्रमान॥ कबि॥ सुनित
दृपि बिभीषन बचन मूल मसतक लेटक्यो चरन मूल
पारहु परत कंटक सपाप इहा हयो बिभीषन लात आप
पापिष्ठ कस्यो सिर पर प्रहार जो बिकल देह मूलो संभार
॥ दहा॥ जहा कछु मुरछा जगी ऊ ग्रोत बअकुलाइ हित उप
देस तलात हत नयो कुसंग प्रनाश॥ ॥ रावन॥ छंद द्रुतवि
लंबित॥ धिक तो हि रे राकस कुलाधम जानत हि मूढ को
ज्यो जम रिस करि कि सो ता हि बरावन इहा दिषावत बदन अपा
वन॥ बिभीषन बाच॥ काल त्रिदोष ग्रसो दस कंधर औषध लग
त अबोधन ऊपर॥ बिभीषन श्रीरामचरन चितवन॥ दु
हा॥ चरन कमल कृत चितवन पेस बछा हि बिकल प सरनर
मजै रुसुष दर मन की नो संकल्प॥ ॥ बिभीषन बाच॥

रहावोलौरावनअनुज:प्रभुमोहिकीयअपमान:दसमिरसीनाहि
नुहीयै:नहीकल्यानिहानि॥३॥पुनकुमनासदबंधुसत्र:दूषन
मोहिनिहेतु॥गुरुरसुहातीजेकहत॥अवतोकलिलेकु॥२॥कवि
ता॥रहाआयोअहाअपने:लकुविविभीषनमंत:मंत्रीरावन
केजुमुषि:लीनैंदोलितुरंत॥३॥गयोविभीषनमंत:
चुपहसागरपार:नहाउपजुवतेकमल:कोंहाहाकार
॥४॥लोकवाच॥कपोअहितिनकीकंत:दिवसनिसैंप्रम
सीस:नोपूरनविधिदुवर:दानवदेवमुदाय॥५॥दिनक
त्रातकुतो:मंत्रीमुषमुद्रि:दिनुगयेगमपा:देवहि
निहानि॥६॥घरयरयहुनिचरम:कयलोकनयदेतिप
ऊरावनकेअहिनदनीदेहिरान:हिरिपतवहु
षरी॥मनमहकरतविचारि
१रिकुजाशरानपदपंकज
रजोगागगनपथ
जपावन:
मंत्रित
नो
रहिकुचरनसरन
बलनरतमुचार
महिमानमक
नभ्रजयजय
नतजदनिकर
केपुत
॥नोमो
पिराज
कपिपति
निमद
जगपावन

यतिजयतिरघुबंसउजागर: जयतिजयतिप्रभुनवकृतकारन: ईससु
कबिनरहरउपारन: देवबिभीषनकहंसुषदायक: लेबेगरिजथायि
तलायक ॥ इतिसतुति॥ बिभीषन बाच॥ हमरकसंतामसम
देही: सुपनेहुननयेधरमसनेही: आदिजनमतामसआराधे
साधसंतवेगबलोनहीसाधे: सबहिनरलोकुसंगतिसंगा: पेन्ह
स्वेकहुसाधप्रसंगा: हमसमअधमनकेउजगमाही: जिनकहं
पापकरतनवजाही: पापतमबसरुधिरपलासी: हिंसापानसा
धसोहासी: सबेअकरमअबिद्यासाथी: अबलोनीतिनहिनआ
रथी: ऐसोहुंनसरनप्रभुआये: लेकरअहितउकंठलगाये:
यहतोतवमहिमाअधिकारी: आहिअतरघुकुलचलिआई: जगत
अनाथनहीकोउजाके: तुमप्रभुतयेसहारकृताके: जगतिहीनरा
वनकोनाई: सरनहेतउतयेसहाई॥ कबि॥ बिनयादीनता
सुनियहवानी: हरोरघुनाथहरयाउरआनी: कहिलंकेसतिलक
सिरकीनो: दुरलभराजबिभीषनदीनो: बंलमहकीयलकेसबिभी
षन: प्रभुरघुबंसयन्समहिमापन॥ दहा॥ रावनकोटसीसदस: क
रकरिहोमजुकीन: सोलकोदसरथसुतन: देवसरनहितदीन
॥१॥ बिधिहुतकीनोतपबिषम: मसतकजलनजलाइ: रावन
बरषसहस्रदस: पुनिलंकागदपाइ॥२॥ कबित॥ बरषसहस्रदस
तपबिसेष: कीनोदसकंधर: करनिकाहिसिरहोम: करेदसबार
आपकर: देवब्रह्मतबकेदयाल: दरसनतिहिदिनो: करिसं
नारकरुनाअपार: लंकेसुरकिनो: सोईधन्यरामपौरुषसुकर
हरिछिनहकहिसरनहि: बहुकिनिजुलंकबिभीषनहि॥ अन
लिनीदिनीउचित॥१॥ जदिनपंथपरचार: पटपरिधीनतुचातर:
सयनअवनिसंथरीय: अजिनकासनताऊपर मिलिनोजनफल
मूल: नसमअंगरागसुनतीय: जुतकिरीटजटजूट मृगजुवर
सनामिलतीय: कृतउधयहैनरहरसुकबि: रामचंद्रदिगबिज
तरन: हितरीझिसुदानबिभीषनहि: देवलंकदिनीयतदिन॥
॥दहा॥ इहाबिभीषनआपनो: कस्योरामदेलंक: ताकेनासे
अदिनतन: उयरेनालसुअंक॥ दुश॥ श्रीराम बाच॥ धरिअग
जगहिबसंधरा: गगनअरकउडुराज: थिरजगजोलोममकथा
रिथूबिभीषनराज॥१॥ कृपासिंधुयहबचनकहि: अ

रुकरगहिअपनार जोनिदुषितअतिदीनजन:सोराष्ट्रोसरनार
॥कबिरुबाचाछंदअथोरा। इहिसमयश्रीरघुराइ:सबबैठि
मंत्रिसुनाइ॥श्रीराम॥ बिधिप्रछितिहिरघुबीर:तुमसबैबु
धिसधीर:कपिरानउहिमकाज:इहांउचितकहियेआज:अ
तिअमतनीरअगाध:बहुबिधिपंथहिबाध:अहिकमग्म
करअमान:जलग्राहतंत्रीयजान:कषसुसिकुंनीयजोर
रत्नादिनाहिनओर:दलप्रबलपंथनदीस:जोलंघयाहिसि
धुकपीस॥ सुग्रीवबाचाहीयकीसपतिउपदेस:सरअन
लतवअवधेस:मुकहुसंसिधुमंकारि जलसोषिषलजी
यजारि॥ बिभीषनआप्रभुकरहुएकउपार:सगसिंधुक
हंसमझार तवआदिकुलगुरएहु:द्विजजानिसिष्यादेहु
लछमनआमतयहोलषननमानि हमजाचिनाहिनजान
श्रीराम मबाचा।इहअनुजकहंसमझार:अवधेसजलतट
आर॥कबिरु॥ करदरजआसनकीन.प्रभुबैठिताप्रबी
न॥दहा॥तजीबिभीषनलंकतब पाछेहुतपगार:तिनसब
लीनैसोधतहां उलटिलंकफिरिआइ॥१॥रावबाचातिन
कहंपूछतलंकपति त्राताकेसबभेद:गयोउहांतूजिलं
कगट:दुष्टजुकुलउछेद॥२॥दूत॥ करहुतकपिकरकके स
माचारसमझार:तिनसबलीनैसोधतहां उलटिलंकफि
रिआइ॥उनकेमरकटसेनमहं:यहमैंसुन्योअसेस:तह
बिभीषनत्रातातव कहियतहैलंकेस॥४॥रावना।हसिबोले
रावनइहां बातसुनीसबिषाद:उहांजाइनिरलजवाहि:प
योबुधिप्रसाद॥५॥करतगेलीजालकपि:कहिताकहलं
केस ओकोउहोरीराउकरि:सबनरहसतनरेस॥६॥क
हिबेकेलंकेसहै:काजनसरिहैकोइ:कहिकहिराजाघूघ
कहं हासीजगमहहोइ॥७॥ कहोउलंघनउदधिकेइ:चिंत
तकहाबिचार बिधिकुकरतजुनांबनै:इहकोउउपचार
॥८॥आयोकपिजुनिसीथइहां:करमचोरकरिकूर:उनकेम
रकटकटकमहं सुपेकहावतसूर॥९॥मारयोअक्षसु
बालबयः तरुतोरेजउतास:ताकोमारुतिजातताहां:पौरु
षकस्योप्रकास॥१०॥दूत॥ पूछिमंत्रतवत्रातपहं आप

उदधितट आए पंथ सुजाचत पाए परि बैठे कुश सायन ॥ ॥ रोवन
लागे ॥ करम संन्यासी राम को पेखि बल सम पार पाए धरनी
सिंधु पर अरु मचलात हैं आए ॥ ७ ॥ कवित्त ॥ बासुर
तीन जु बीत गये राम करत मनुहारि जानि सिंधु हीन द्वि
ज रहे बिचारि बिचारि ॥ ८ ॥ जग प्रसिद्ध जल नाद जल न हमो
नतम नुहारि उगिलहु मन अकुलाए हो सरको दंड संन्या
सि उर परि त्रास समुद्र आनि जानि बिकल जल जीव अंत
रहि गए अवलोकि उर देखे राम दई दिए ॥ छंद ॥ गीरा इहउ
दधि द्विज धरि देह निज राम संग तिस नेह अनेक रतन उदा
र धित करे कनक सुधार उपहार दीए अनेक बिधि जुक
त बिहत बिबेक अरु करी प्रनाम निधेव इत कंध मय मुहि
व इहि हित करि आए पान कछु लुमोना हि कान अनउचि
त करम अनेस मम छमहु राम नरेस अब करहु एक उपा
इ सुषल घहु नीर सुनाइ नल नील पुहवि प्रसंस ये बिस
करमा अंस सोरघ जिल परसेत निसि जथ जथ समेत
॥ ९ ॥ कपि तिन रिषि सेवा करी पुनि अंस सो बर पाए पा
थर करि हो कर परस सो रज जल तिर हिलु नाए ॥ १० ॥ पेषि य
हि नावी प्रगट आगे हो लिषि आप करुना निधि कारन कर
न प्रनु सब राल प्रताप ॥ ११ ॥ अरु दुष कहत जु आपने सु
निये अवधि नरेस मेरे उतरत तट बसत करत अनीति अ
सेस ॥ १२ ॥ हेतु मकलप जु थल उहो अबिलंब सत आनी
र तिन हि चलावहु राम तव तेज अनल मय तीर ॥ १३ ॥ क
बित्त ॥ अनल बान आकरषि इहो मोचो राम मुरारि उ
तर तट बासी अधम जो सब आए जारि ॥ १४ ॥ कृत जुप
राक्रम रामको सागर देषि असेष सुर कारिज की सि
ध सब बनी सुनियत बिसेष ॥ १५ ॥ सिंधु बाच ॥ राम सु
जस राम नमरन पुरी बिभीषन पाए लंका टरन सीय मि
लन अवधि निकट प्रनु आए ॥ १६ ॥ जल निधि करे प्रवेस
जल दै राम हि उपदेस कारन सागर सेतु को निसचय
करे नरेस ॥ १७ ॥ अथ श्री रामेस्वर स्तुति ॥ रामेसुर

सिवथापनी: इहाकरीरघुरइ: सेतमूलसुनासिधुतर: बेदप्र
नीतबनाइ॥१॥ पूजाअरचप्रेमपन: सबबिधिकरेसुनाइ: श्री
रामेसुररामके॥ सोईजयेसहाइ॥२॥ श्रीराम॥ सेतबंधरामे
सके: करिहैदरसनकोइ: जोहिजयातकपातकी: इहाहत
कलमषहोइ॥३॥ करिहैरसनरामेसके: अरुसमुद्रअन्ह
इ: पुनिजैहैबारानसी: जुतसंकलपसुनाइ॥४॥ लवैगंगनी
रफिरि: सिवसिरधारहैइ: मेलहैसेबससुइमह: लासुज
नमफललेइ॥५॥ ताकहगतिप्राप्तहा: देवीनिसंदेह: श्री
रघुनाथसुरासुरनि: उपदेसैमतयेह॥६॥ ममसेवकहरसे
बिमुष: हरहतममसनेह: सोबिसहस्रनिबरषसो: दुसह
नरकसनिदेह॥ कबि कहउमगेजूथपजूथइहा: आएमा
गीआइ: करियेबधनसेतकै: लंकादेहिबदाइ॥ कबि
कहा॥ इहाजरघुकुलइंकै: दूरनआइसपाइ: सेतबंधक
रनसंकल: उदेमकीनेउआइ॥ छंद बेताला॥ श्रीरा
मोबाच॥ कपिबोलितहनलनीलहितकरि: देवयहआप
दई: बलबुधिकरिकरिसेतसजऊ: महाद्रिपरबतमई: ज
लसीसप्रबलपवनजोरऊ: अबिलगिरउतंगये: कपिक
रऊतुजबलमिलिजुकीऊ: आपआपअतंगये॥१॥ कबि
कहा॥ मिलिनीलनलबलअतुलमरकट: सेतसागरसजये॥
कलोलजलबटिअमनतयकरि: गहरचऊयागजये: कपि
नालअधरउछालकरिकरि: केलिजोकऊकरे: धरिपा
निपानिअमानऊधर: धारनलआगेधरे: बलसुनयमिलि
योसेतबांधत: अतुलपोरुषअगये: पथगगनऊअहमंक
प्रति: समरसूरसुसंगये: मिलिप्रबलरामप्रतापमहिमा
तरिउपलतिहिताल: जलउपरपुरवलिपत्रजैसे: लसतप
रबतमाल: जैसतिलबोरतसिलासंगी: सहजजातिसुना
व: तेतिरतआपनअवरतारत: प्रगटरामप्रभाव॥ हा॥
कपिकेगिरउपजीविका: सोजानतसंसार: कपितेमूलतक
रकरषि: यातेतिरतअपार॥१॥
हनुमानिउपदेस: तातेगिरलागेतिरन:

उदधितरआइ पंथसुजाचतपाइपरि बैरेकोनकसाइ॥१॥रोब्रन
बाच॥ करमसंन्यासीरामकोपोरुषबलहमपाइ पाखोधरना
सिंधुपर अरुमचलातहांआइ॥७॥कलिरुबाच॥ बासुर
तीनजुबितगये रामकरतमनुहारि जांनिसमुद्रहिदीनाद्वि
ज रहेबिचारिबिचारि॥८॥जगप्रसिधजडतावजल नहीमा
नतमनुहारि उगिलछमनअकुलाइतहां सरकोदंडसंभा
रि॥९॥उरपरित्रासससमुद्रअति जांनिबिकलजलजीव अंत
रदिगअवलोकिउर देषेरामदईवर॥१०॥छंद॥उरोराइहउ
दधिद्विजधरिदेह निजरामनगतिसनेह अनेकरतनउदा
र धितकरेकनकसुथार उपहारदीयअनेक बिधिजुक
तबिहतबिबेक अरुकरीप्रणयतियेव दसकंधतयमुहिदे
व इहिहेतकरिअपान कछुसुनोनाहिनकान अनउचि
तकरमअनेस ममछमहुरामनरेस अबकरहुऐकउपा
इ सुषलंघहुनीरसुताइ नलनीलपुहविप्रसंस येबिस्व
करमाअंस सोरचहिजलपरसेत मिलिजूथजूथसमेत
॥१२॥ कपितिनरिषसेवकरी पुनिअंसोबरपाइ पा
थरकरिहोकरपरस सोईजलतिरहिंसुभाइ॥१३॥पेषिय
हेनावीप्रगट आगेहोतिषिआप करुनानिधिकारनकर
न प्रभुसबरामप्रताप॥१४॥ अरुदुषकहतजुअपनेंसु
नियेअवधिनरेस मेरेउतरतटबसत करतअनीतिअ
सेस॥१५॥ हेदुमकलपजुथलउहां अषिलबसतआती
र तिनहिचिलावहुरामतव तेजअनलमयतीर॥१६॥क
बिरु॥ अनलबानआकरषिइहां मोषोरामसुरारि उ
तरतटबासीअधमजोसबआयोजारि॥१७॥कृतजुप
राक्रमरामकेसागरदेषिअसेष सुरकारिजकीसि
धसबबनीसुनियतबिसेष॥१८॥सिंधु बाच॥ रामसु
जसरामनमरन पुरीबिभीषनपाइ लंकाटूटनसीयमि
लन अवधिनिकटप्रभुआइ॥१९॥जलनिधिकरेप्रवेस
जल देरामहिउपदेस कारनसागरसेतको निसचय
करेनरेस॥२०॥अथ श्रीरामेश्वरस्य पंचा॥ रामेसुर

सुनबांनरबारिधिबाँधियुन॰ इहांसंदेहनआनियै॰कारनप्रतापरंगुन
थको॰सोत्रयपुरनिग्रमानियै॰॥ दहा॥ कटकपारलयोसेतकै॰यह
मतनिकहीआइ॰सानुजसषासुमित्रसब॰उतरेरायवराइ॥१॥त
हामिलनकोसिंधुतट॰आएबिजईवार॰परिआतंकजुलंकपुर
प्रतिग्रहपरीपुकार॥२॥स वैया॥ प्रभुताबिनीषनकीकीरतिक
पीसकीसी॰अंगदकीसियिसुकगतिसतनाइकी॰मारुतिकीबि
जैद्रोणांचलकीबिचलताई॰देवनिकीदसादेवराजसुतदाइकी॰कुं
भकीबिनइंद्रजीतकीबिनासकारी॰त्रिजटाकीइछासुषसीयाके
सहाइकी॰कालकीसीपातीसबराकसकीसाइसाती॰रावनकीमी
चआईसेनांराघोराइकी॰॥श्रीरामबाच॥दहा॥कोसलेसक
पिनालकरं॰आपादईउहार॰कंटकरछितबाटिका॰बनचरक
रुबिहारा॥१॥कबिका॥ आइसलहिआवयेसंकोः जथजथ
बनजाइ॰बातलधुरफलअतिहरषि॰हडिहडिहछाहलाइ॰
छंदउधोरा॥ असिरीछमरकटधारि॰असुरेसबननिउजारि॰
कुलहतरहककोइ॰गहितजतताहिबिगोइ॰तिहिआवननासा
काटि॰पुनिकुंचमूंछउपाटि॰मुषकरतजबजथरांम॰करितज
ततहिअकांम॰तेनाजिबनरषवार॰इसकंधआइरवार॰प्रतिह
रलैपुहचाइ॰जहांकुतोरावनराइ॰कृतनासनासाकांन॰बन
पालदषिबिबान॥रावनासगपूछितिहिलंकेस॰कीयबदन
किहिइहिबेस॥मालीआ॥ कहितबेमालाकार॰कृतकरमक
पिनिबिकार॰प्रभुसिंधुबंधीयपांज॰मिलिकीसनालसमाज
इहिओररायवआइ॰सुषसिंधुतांघिसुनाइ॰दीयलंकहीयहिं
मिलांन॰मिलिकपिनिरलअमांन॥कबिरुबाचाबदिसोच
सुनिसुनिबात॰असुरेसथेउतपात॰सगंगयेउगिरनिवास॰बससे
चमोचतस्वास॰अतिक्रोधजवयरआइ॰त्रीयलिप्योपतिहिवित
इ॥मंदोदरीआकबिन॥ मंदोदरिमनमलिंन॰मंत्रहितकरत
पतिहिमिलि॰अनहितबकताएजु॰तप्पबससनाउषनिलि॰ब्रह्
मरुद्रबरबिहन॰जाहितुमसचजुगजीसो॰अवधिपाइवसअरिस
आजसो॰ईसबेअतीसो॰हितअहितनजानतहरिहीय॰येकगर
बसेवतअतुल॰सेछांडिसिंधिकरिरामसौं॰करियेअनयपुलस
निकुल॥५॥त्रीयसुग्पानमयसुता॰राजस्तिनीतिउचारीय॰देषि
अदिनदसबदन॰नयोउरसोचजुनारीय॰कहतिबचनहितकांन
सोनमांनतलंकेसुर॰घटवीकटजोसंघन॰

नृमिकरषतअकास ॥ सुकबाच ॥ छंदद्वैअवरीकहिसुकमत
सुनफुलकेसर: तुमअतिगरबगुरफुलेगुर: तजियेक्रोधबि
रोधकषाय ॥ अतिबलरामसियुलघिआय ॥ पंजरबिजयरा
मसरनाई: दयाप्रकृतिनिगमागमगाई: कुलपुलसतिकीरहा
कीजे: देवफेरिसीताकिनदीजे: नईजुपैनारीअवनाई: सो
सबछमिहैरामगुसाईं कबिरु ॥ सीतादेफुसुमोंजबहीम
ग: हमोसुकहितबलतमहाहग ॥ रावनामतफेरिबदनहि
षावहिमोही: कृतयनपापदेउफलतोही ॥ कबि कायहासु
कहतआपयहआये: अतिहरावनकातहिछाये ॥ अषित
सुतरसुतमंत्रीआये: निसचरसतबैगिसिरनाये ॥ रावना
सिधुलगिदेबालसंमासी: सोआयेमोहिअवतरासी: बन
वरकटकलीयेअतकबस: सुनेतुमफुआयेहैमानस: कारन
कहोहहासोईकीजे: छलबलजिहिदुजनदलछीजे ॥ सनसद ॥
हहासनासबबचनउचारे: मानसबानरजहमारे: जतीकटकके
बलहमजाने: येकपिनालकालगहिआने: कहफुलकेसतुमहिज
यककी: जगतसबेबसबरतीजाकी ॥ प्रहसतउ ॥ हहप्रह
सतनृपनीतिसुनाई: सबाकहतसबकुरसुहाई: बुद्धियिकुहि
इककपिहआये: जिहिबुधिबलगढलकजराये: इनकीषु
धागईकहांवादिन: बायोकिनहनुमततोहीषिन: जरराग
निसबकीअबजागी: लेफुषाफुनरकपिहलागी ॥ २० ॥ इक
कपिवेउतपतउगएं: अबहेपदमआगदसआएं: संधिकर
फुअबदीजेसीता: परममंत्रयहनीतिप्रतीता: जपैपारत्रीय
फेरिनजाई: बियहकरफुनिसानबजाई ॥ कबिरु ॥ सोप्र
हसथजबबचनसुनाये: अतिहीरोषरावनउरआये ॥ रा
वनबाचप्रहसतनीतिकसयहपाई: गुरपरसादबिद्यागरु
वाई ॥ कबिरु ॥ संधिनामफिरिमोहिसुनेफु: पुनिप्रहसत
बिद्याफलपेहौ: बुद्धिप्रहसतअनषउरआनी: मानतमोहि
बचनअतिमानी ॥ प्रहसतउ ॥ कानसुनतबचनहितक
रक: आनिपरीसिरछायाअतक ॥ कबिरु ॥ छंदपधरी ॥ म
हबृधआइहमालिवान: निसचारनीतिबिद्यानिधान: रा
वनकोनानोबृधबेस: रहिसमयकरेपरिषदप्रवेस: अति

हेतसुबेठोसनंआनि:मनमाहरहसाननमोहमोनि॥मालवा
नग॥बियिनुकतबोलिरहामालिवान:कछुकलोबचनजेरहेउ
कान:पुरलेकनयोसीताप्रवेस:बिपरीतसगुनतबतेबिसेस
करतजोअगनिहिजहोमकाज:जागतसोनाहिनमहाराज:अ
वरितधूमसंकुलअसेष:फुल्लिगबन्हिबरजितबिसेष:मिलिव
सतअस्वसालानिमाहि:सतजूपनुजंगमहिवसमाहि:परिजा
लपिपीलकहवनपात्र:गतबीरसुरचिनहीनगात्र:मृदगतम
तंगहयहेषमुक्कि:करसबरजिनरोमाअकुक्कि:स्वानावरहत
निसिअवनसाल:कुलकाकअसुभकूजतकराल:रीसतबिमान
आकासदेस:पुनिअयअमकुलकरिप्रवेस:सनाधसिवाहयसिध
संग:अतिअसुभथानथितकेउतंग:जंबूकक्रूरकब्याहिजाल:कुं
जतत्रिकूटद्वारनिकराल:रोधरीबुंदआवतअकास:भयकारज
थगरहतकुनास:सुरलिंगसचलस्वेदतसुनार:प्रतिनरसनग
रमूसतिजुपार:कालिकासेतदंतनिकुनार:अतिअहयहसोहस
तिआर:दीरघसथूलसिरबुनसाजि:बपुरोरुकलपिंगुलबि
राजि:येकालपुरुषरहिरूपआर:दिनरातिजातिअतिभयदिषा
र:मुषिकानकुलबरगोप्रसत:अतिजुधहेतकरकसअन्हत
अपसगुनहेतइत्यादिआर:तिहिनिमतसातिकरियेसहाइ:या
निमितिसातिहेयहेऐक:जानुकीहेकुलरहेटेक:चतुराश्रम
आयोहेअचित:ताकोसबसाधकुसमयतेत:कोबानअसथब
पुरुषधबेस:निसतारकरतअपनोनरेस:सुतदेकुराजसिरछत्र
साज:करियेअपनोउधारकाज:त्रीयसहतआपकरिअयसीत
अवधेससरनग्रहीयेअनीत:हेयहेमत्रकुलवृधहेत तुमचतु
रस्नपसबबियिसचेत:मनरुचेसुकरियेमहाराज:अनुसार
बुधिहमकहतआज:सुनिबचनऐहपरजरिलकेस:उरक्रोध
बढ्योअतिअहतेस॥रावनबाचा॥संतऐकविभीषनतुमकु
मानि:निरधारआजयहहमजुजानि:वहगयोतुमकुजेहोवअ
ह:मनमानोसरनागतमहंत:हमजानोरामहिमिलेआहि
ममबासबसतत्वितउहाचाहि:बिनुबुधितुमकुजोनऐह
ध:पनचोथोबरततहेप्रसिद्ध:बाचिहोनमोचतेकिकुविच
र:सरनेकुमरिहोअतीसार:सुनि नकज

ल: मनमालिवानपरजस्योमूल:॥ मालिवान उ॥ करिजतनहूथ
सीचकुजकोइ: हग्बितनहीफलफूलहोइ: अतिगरबतुमहिबनि
अदिनआइ: छकिराजमदहिंबुधिछाइ॥ कबिरुवाच॥ मनम
लिनतबेउरिमालिवान: अहगयेसोचजुतअतिसयान॥ इति
मालिवान रावनहिप्रबोध॥ श्रीरामहनुमंतसंवादप्रेजनं
छंदद्वैअषरी॥ कबिरुवाच॥ प्रभुबैठेबेलाद्रिसिषरपर: सानु
जसहितकपीसलकेसर: जामवंतअतिनीतिसुजाना: सबेबी
खबेरेस्वसथाना॥ श्रीराम उवाच॥ रहसिमंत्रपूछोरघुराजा: क
रियेअबेजुधकोकाजा॥ जामवंत उ॥ जामवंततवकहिकरजो
री: ममप्रभुसुनहुप्रनितइकमोरी: तुमसरबग्पलोकत्रयस्वा
मी: जगतचराचरअंतरजामी: तुमतेमतिनदुरीकेउदेवा: सु
रनरनागकरतजिहिसेवा: कलोचहतकछुतदपिकृपाला: स
मदरसीतुमदीनदयाला: थितचितयाकेअहमितिथाती: पा
पीदससिरब्रहमपनाती: याहिकालकीछायाआई: सभा
कहतसबग्कुरसुहाई: याकेनयनगरबमदछाये: अजहुन
जानतराघवआये: पापीनिजकृतनासहिपेहैं: जगतबिदि
तजमसादनजेहैं॥ हनुमान॥ मरकटनालअंगमिलि: आयो
दलअनपार: याकोमारनकाअगम: सबेकहतसंसार॥१॥
छंदद्वैअषरी॥ रामसदागोद्विजरषवारे: स्वामीचलतनी
तिअनुसारे: प्रभुइकबारबसीग्पगावहु: सग्रावनबहुस्यो
समझावहु: मेरेमततोयाहिनमारहि: सीतादेयतोबेरबि
सारहि: हैद्विजबंसदुष्टकुलद्रोही: आपकरमकरिहैषय
ओही: प्रभुअंगदहिबसीग्पगावहि: सरबजातिवाकेइस
मझावहि: ततबोधअंगदबहुनाती: सोकहिहैअसुहाति
सुहाती॥ श्रीराम उवाच॥ कबित॥ अतिउरमदकिबाअ
ग्पान: कछुअदिनजुआगम: सूनिअहसीतासतीतकृ
तहरनचोरक्रम: सोछोरहुदससीस: कहहुअंगदयह
कारन: नातरिलछमनसरसमूह: रिससहहुमहारन
छिदिकंदसहुरतउछलत: बृतसुतनातीकालबस:
संपतिसमाजग्रहछोडिसुष: अतकपुरजेहोअवस॥

छंद चौपई॥ चले सुग्रीव पासीस चढ़ाई॥ राषि सहित [illegible]
प्रतापसंबासिभ्रम करा॥ अंगद चलियहु बचन उचारा॥ [illegible]
कीनै॥ आइ सबसंग्रति तिगति अधीनै॥ कबि [illegible]
हपंथ बिचि॥ अंगद हनुमंत नेग॥ कीजतमि [illegible]
बकुसंगा॥१॥ छंद चौपई॥ कंटक सुतधनमय [illegible]
मंत्रावतमनजाकै॥ चोषबातिहिबन्धनउ [illegible]
तारे॥ बातहीबातबिरोधबधायो॥ अति [illegible]
गदकहतिहितउगरै॥ अलपंबे [illegible]
सेधरनिपछास्यो॥ रामतरावनसुदश [illegible]
ह्यायो॥ अतिअनसंकटोमनहर्यो॥ [illegible]
चलेजाहियेरेदिसिचास्यो॥ [illegible]
सोईपैराकस॥ अत [illegible]
जिहिबिनगदतर्कजराय॥ [illegible]
दिसिबिदिबिरा॥ [illegible]
[illegible]

द रावनऐकहै। इतेकहतेआइ॥१॥कबित॥ इतबाचारिमदथइसकेथ
रसापरकेतेरावन सबैइतेहमसुने परमपापिष्ठअपावन धस्यो हेहया
धीस प्रथमतिहिहतफलपायो बलिहासिनुवबांधि निलजदेक
वलनचयो नांधोजुत्रितीयममपालनै मोहिसुलजाकहतमन
उनमांऊकिधोउपजेअवर कहियेयेकंटककवन॥३॥छंदपधरी
कबिरुबाच॥ यहसुनतअवरसबगये बिलाइ येकरीसोरावनरह
आइ बेगेसुपरामुषदयेपीठि अंगदउरअजरीमनुअंगीठि सिल
हनीलाताफिरिगईसोइ हसिबोलोरावनसमुषहोइ॥रावन॥
किहियेयोकपिलंकवनकाज इहिगहरआवनभयोआजा॥अं
गदबाच॥मोहिपठयोतोपेरघुराम निसंकबीरअंगदजुनाम म
मपितातोहिभ्रातत्वमांनि तातेतिहिआयोछांडिकानि॥कबिरु॥
क॥ अंगदअपुनआइहा सनमुषबैठिसधीर रामप्रताप
अनीतउर बातकहतबरबीर॥ रावनबाच॥जोबांधोघनन
दजुध अरुहीयपूंछजराइ वहकपितहीरेअधम केअवरेको
ऊआइ॥ अंगदा॥ गनिगनिहासोसलंकगढ मांस्योअक्षकुमार
हनुमतसेमिथ्याकलो रेदसकंधगवार॥१॥हेदोरतअतिबेगवह
पत्रीबाहुप्रमान सोममदलसंतावनो नाहिनबीरनिदान॥रा
वनबाच॥छंदद्वेअषरी॥रामकोनाहन्यो॥जिहिहरधनुतोस्यो
महामानहरुपतिकोमोस्यो॥अंगदउ॥कबित॥ परुनकीयह
रधनुष बालिसंग्रामबिनासीय सप्ततालसरएक बिधसो
ईपुनिकरबासीय अतिप्रचंडगिरआनि बारिनिधिसेतबंध
यो सुषउतरिकपिसेनि रहादहनतटआयो उरधरिप्रत
पबलतेजयह कबहुनबिग्रहकीजीये सुषसंधिकरऊरघु
नाथसो देविसीयाफिरिदीजीये॥रावनाकृतबिनास
धनुकाग बालिमास्योसोईबानर तीरएकहतसाततास
जऊजोनिसुतोतर सेतबंधमिलिकपिसमूह कहाबिक्र
मकिनो करहितोलिकेलास लेषकंडुकजोलिनो सिवदेख
सगनससिसुरसरित सिवासेषबनजतसम आकरषोकेतु
ककाजवह मेजोनतबलबाहुमम॥छंदद्वेअषरी॥जीरनसं
सुपिनाकनजोमो भयोकराजोताकहतोमो बांधनपर
सधरनकेसोबल मारिनिछत्रकस्योनुवमंडल दीनजाति

मजिमहअध ॥ अंग दबाच ॥ यहसंदेसअवधसकोसुनिहसकध
संतारि गयेसरनत्रिनदतयहि नहीमारिहैमुरारि ॥ छंदपधरी ॥
पालसतिउयकुलजनमपरे सिवकरीउयप्रजासुतारे बिधिरुद्र
परदुमबरबिसेष अवनीसअसुरसुरजयअसेष संततिहित
साधतरतिसमाज संततिउआजिनृपतोगसाज जीयअरथधर
मकोमनोजाल नवमोषएकसाधतनुवाल उपदेसकरतहित
सुनकुआज रघुबीरआइराजाधिराज बैरोधिछांडिकुलहितबि
चारि सीताहिअयकरिबुधिसंतारि मेरोहरिजुतअपराधमोनि
अतुसरनजाकुजुगजोरिपानि त्रिनगहकुदंतकेचनिकुमारि हव
छांडिचरनधरिमानहारि ॥ रावन ॥ रिबनचरबोलतकवनबो
नि जगजेतारावनमुहिनजानि जनमतबबालिअहृथजो
नि मारतगलिगयोकिनरेअपानि जिहिहतेबालिसरसम
रसाजि आयोबसीठितिहिकरनआजि गहिमतकरमकलिपं
षरी ॥ आषिकानहैबीससनिउर आधोबधिरतदियरआसुर सि
वबिरंचिबंछितजिहिसेवा रामजुदीनउधारनदेवा ॥ रावन ॥
छंदपधरी ॥ कपिमतुंहबोलतकराल सहतकुनीतिबससम
बदसाल ॥ अंग दबाच ॥ नवसीलसहनताजगतजोनि बि
थरीकितिसोईबानिबोनि कोटिनगनीकेनाककान मुषदेषि
नीतिहितुषनमोनि ॥ रावन ॥ बाच ॥ सेनातवअंगेसोकोसम
थ संग्रामतिरेजोमुकुसाथ कुंवरामबिरहत्रीयतेजहीन मनत
छमननोतिहितुषमतीन सुग्रीवतुमकुनिरवलसुतार आश्रयो
तन्यासीसरनआइ ममभ्रातबिभीषनजनममद जिहियतो
त्रासससरनअगद तनजरायसितअतिजासवंत सोउतयोही
सबलजरवसंत नलनीलसिलपकरमहिसयान जुधमरमस
कुछुवैनजान रहाअयोकपिहनुमतएक ताकोहमसानतक
कटेक निअलोकुतोसोमेघनाद नहीबदनदिषावतातिहि
ष्पाद ॥ अंग दाऐकतेएककपिबलीआहि दंदोरहितव
हलंकदाहि सुनिसवनराममानुषसरीर नहीगंगसरितत
सलिलनीर पसुकामधेनतरुकलपरूष पंषीनगरुउपा

नीपीयूष : मनिनहिनउपलआहिसेषमोनि : निसचरनलोकबेकुवजा
नि ॥ रावन ॥ दहा ॥ हरिबिधिपूजेआरबहु : सुकरकहिमेसीस
होमकरेलैअनलमह : सुनिमेरोबलकीस ॥१॥ सेलउठायेहर
सहित : मेकरथरिकैलास : ऐकपिजावतजगतसब : ससपास
बहिप्रकास ॥२॥ अंगद्वा ॥ कबित ॥ कबिनाम्रहसीसबकुरूप : कहि
नहीसूरकहवत : ऐहहेलहरिरीय : पतंगसटपटकुपावत :
नारबहुतगरहना : कहाअतिबलीकहाये : कहिचीरिमोगतजु
योग : स्रिबनिकठराये : लगिछेहिछेदिसिरकीयहवन : असुकेला
सजुउधरीय : इनमाऊसुतेहसकंधअब : कवनबीरलछनकरी
य ॥१॥ दहा ॥ हेबजानिनुहिहीनछिज : पठयबसीगीमोहि : अह
मपनातीमतिबिकल : तातेहुतनतोहि ॥१॥ चोपटसोलेहि
समरचढि : नहीमारतमृगराज : बिनुसमताबिग्रहबृथा : जा
नियहेजीयलाज ॥२॥ अंग दबाच ॥ तहांउगिदोबालिसुतअ
कुयहबचनउचारि : सनामोऊतबकोऊसबल : सकेचरनसम
टारि ॥३॥ जोपेऐलकुवैरते : मेरोपदगहिमूल : तबसीताहरेत
ते : हमतुमनहीसमतूल ॥४॥ कबित ॥ यहसुनिउमगेअ
सुर : ऐकऐकलगिआइ : टरतनहीपगगेरते : छेवतजाइबिसा
इ ॥५॥ इहरावनअतिहीअबधि : उगिदेअकुमार : नरिरिसक
टकबीसभुज : पकरेअंगदपाइ ॥६॥ धरिमरकटपटकोधरनि : नि
कसेप्रानिनिदान : अपनेबलदसकंधरहा : सनकीनेउनमान ॥७॥ क
बित ॥ अंग दबाच ॥ तुमबिसेषिपोलसतिबेस : उपजेअधिकारी
य : अहमरुद्रपूजाबिधान : सबनाहसुधारीय : चरनपरतमनर
मचंद : अपराधनआनत : हेतकगतिबसहोत : प्रगटचितनावप्रमा
नत : दिगफुजाइरघुनाथपद : महाअकर्मघतचुकिहे : तवासिर
परआयोकालसोई : ममपदगहिनमुकिहे ॥१॥ कबि कवाच ॥ दहा ॥
पस्योकिसानेलंकपति : थिरबेगेफिरिथान : करमजुअंगदछल
कस्यो : मनसम्नयोमलान ॥१॥ सोगदोबिचिराकसनि : अतिब
लअंगदआप : पाथेजयजीसोजुपन : पूरनरामप्रताप ॥२॥ अंग
दा ॥ समहितबचननकरतमन : रेकुबुधीलंकेस : कटकचक्रजु
कालकोई : सिरपरत्रमोबिसेस ॥३॥ कबिता ॥ सुनिपरनसालाप

वेस कृतत्सकरकरयो। जगतमातजानकी हरीअनहितअनुसरयो
यहजिहिबलआगयो सुतेकुलहलबलसजहु नरीसुतेअबनरी
तेषअहंकारनतजहु मानोनबचनमेरोमुगध अबकोसरनउबारिहै
आयोजुसेतबंधीयउदधि हुग्रेरामतोहिमारिहै॥ रावना॥ दहाक
टिकाटिअपनेकरनि कहतोहिसुनिकीस मेलहुतसुककुंकुमह
मंगलफलसेसीस॥१॥ अबलोकेमेआपनें पावकजरतकपाल
तहाबिधाताकेलिषत नयेप्रगटपटनाल॥२॥ मैंतेईअहारम
लिका बाचेमरमबिधान तामहहैमेरोनियत नरकरमरननि
दान॥३॥ करमअंकजेब्रह्मके अंतनमिष्याहोइ सुरआसुर
मंजनसमथ कोटिजतनकुनकोइ॥४॥ सोपेहुजानतसबे लो
हसमरचहिलेउ होहुजकछुनयतब्मता अबतोसीयानदेउ
कबिता॥ कालसेवमभकरत हैजुरवितपतसीतहित हरिहि
तोदिगदेवबिहतपदरजनितबंदित चंद्रहासममषडंग दोषिस
रनारिनागरर अवतगरतअनसमय नियततहाकोबराकनर
देषहुसउतयतपसअरु दीनजंतकपिमेलिदल सुनिमे
हितपतगदलेकसिर षत्रधमआयेसुषल॥७॥ साषामृगद
लसाजि अरिजुलंकागढआये उदधिसेतबंधयो आनिगिर
नीरतिराये अबनसंधियहउचित नीतिअंगदतुमजानत॥
हमेरोत्रयलोक बिदितसुरअसुरबषानत सिरपंचहननना
येसिवहि सोनआनदिसिनाइहु चितयहेरामसरधारचढि
हुउरथपदपाइहे॥८॥ कुंडलीया॥ उतरप्रतिउत्तरअधिकहु
सहबालिसुतदेत कुवरावनतहमानहत हीयपरजरिइहिहे
त हीयपरजरिइहिहेत सबलसोकछुनबसाई मानिताहित्रि
नमात्र करतअंगदअधिकाई दुष्टसंगजितीयदुरत तिरसाग
रदुतर कपिअंगदइहाकरे असहउतरप्रतिउत्तर॥ दहा॥ ब
चनबानउरबिधयो मनसरनयोषिसान पतिषोरकपिपं
चमह इहाकोप्योअपाना॥ छंद उथोर॥ सुनिबचनजबउ
रसूल मनतापअसुरसमूल रिसकलोसकसराइ जिन
ताजिबानरजाइ गहिलेहुसबअपान कपिसुनोजब

यह कौन ॥ कवित्त ॥ बिसरि बालिसुत बीर सरत्र अवसान संभारीय ॥ इ
हा अगद अनंग महीस्वरथ निमारीय ॥ धरा धसकि धुजईय पर्यो मुख
लंकापति ॥ कनक रतन मय मुकट गिरो बिथुरे दैवगति ॥ सो मुकट इ
क लै बालिसुत ॥ कटक ओर धरि मुक्यो ॥ पुरलंक असुर आतंक परि ॥ नु
वन राम जय जय नयो ॥ ७ ॥ नभ मारग आवत निहारि ॥ आवि जउप
जीय ॥ लंकपति के असनि ॥ समय बिनु रोर जु सजीय ॥ महा तेज मय
मुकट ॥ कूदि हनुमत आकरष्यो ॥ राम अयरष यो ॥ हेरि कपि दल बल
हरष्यो ॥ सोई देखि मुकट दसरथ सुवन ॥ सीस बिभीषन समधरीय ॥
सकबंध बिजय पंजर सरन ॥ कबि नर हर जय जय करीय ॥ ८ ॥ जयति
राम जगदीस ॥ अनय पंजर सरनाई ॥ जयति राम जगदीस ॥ नबि सुख
वन सरन सारीय ॥ जयति राम जगदीस ॥ दुगम हर धनुष रिषि ओ ॥ जय
ति राम जगदीस ॥ बालि सर सकबि हरो ॥ जय राम दीन बंधव बिरद
प्रभु प्रताप त्रिभवन अभय ॥ बसि चरन सरन नर हर सुकबि ॥ जय जय
जय रघुनाथ जय ॥ ९ ॥ कबित्त ॥ छंद ॥ मारि मतंग हबेत महा जो
निरभय मृगराज ॥ उठि गटो अंगात अति ॥ जय पायो जुवराज ॥ १० ॥
कंटक सो हति हनुत कपि ॥ दीनो यह उपदेस ॥ पनमत छांह हहि आपनो
करि सम हरल केस ॥ ११ ॥ असुर कहयो आज लो ॥ सुर सुर सकी
साल ॥ सरन गये कछु किरिस ॥ कंब कबंध बैनकाल ॥ १२ ॥ मूल मंत्र
यह मानि मन ॥ मिलि सन मुख रन राम ॥ आनि बनी छह उर स
जि रावन संग्राम ॥ १३ ॥ हम तो हि मारन को हरे ॥ प्रभु के द्वेषी पाइ
अबतो मंगल सो मिरन ॥ रन महा रावन राय ॥ १४ ॥ तब चलि अगद लंक
ते ॥ परे आनि प्रभु पाइ ॥ तब प्रताप रघुकुल तिलक ॥ सुधरी सबै स
नाथ ॥ १५ ॥ अंगद बाच ॥ कबित्त ॥ चिंता कूप गहीर ॥ सोक अरहट स
दुस तर ॥ बिषम सबद हहराव ॥ सो बस को चधुर धुर ॥ नयन जंच घ
टिका सहित ॥ जुग नरन ठरत जल ॥ नासा बंस प्रनाल ॥ अंसु धारा
चलि अबिरल ॥ करि ये हथे हन हर सुकबि ॥ अमग अनेक परि जल
सहत ॥ रघुबीर धीर नवरि पुरमनि ॥ बारि उरज कुंभ निबहत ॥ १७ ॥
नहि नरागर सरंग ॥ हास सब बिलास कुतहल ॥ नहि सुषद सृंगार
केलि मंगल कोलाहल ॥ सूर बीर सनाह ॥ सार आयुध नस जारत
राम बयर दिन राति ॥ अवरत हीबल बीरत ॥ मृगराज त्रास मृ
ग जूथ मनु ॥ जीय मग्र अछुरत जथा ॥ कुल राक्स बासी लंकके

वेष कृतत सकर करयो। जगतमातजानकी हरी
यहजिहिबलआगयो सुतो कुलहसबलसजु
तेषअहंकारनतजु मानोनबचनमेरोमुग
आयोजुसेसबधीयउदधि हुग्रोरामतो हि
टिकाहिअपनेकरनि कहतो हिसुनिकी
मंगलफलसेसीस॥१॥ अवलोकेमेआ
तहाविधाताकेलिषत नयेप्रगटपुट
लिका बाचेमरमविधान तामहहै
दांगा॥२॥ करमअंकजेब्रह्मके
मंजनसमथ कोटिजतनकुनके
हसमरचहिलेउ हेजुजकहु
कबिता॥ कालसेवमम
गेदिगदेवबिहतपदरज
रनारिनागमर अवतग
र हेषकुसउसयतपु
हितपतगटलेकसि
लसाजि अरिजुलेक
नीरतिराये अब
हमेरोत्रयलोक
येसिवहि सोन
कुउरथपदपु
सहबालिसुत
त हीयपह
नमात्र कल
रकुतर क
चनबो
चमह
रसह
ना

बसीसन्नमावत:तड़ितातरकिमनकुछबिछावत:रायवलंकाग्रे
रनिहारे:वारावनयर होतअषारे:कस्योउदियतिहिसमयनिसा
कर:कुमदनिबिकसिचकोरनिहितकर:देषिबिसेषछत्रघनडं
बर:बिन्नतत्रीयकुंडलतड़ितावर॥श्रीरांमा॥ रामकसोदेषकु
लकेसर:दामनिदमकलंकपरडंबर:मनहिबिभीषनग्रावतमो
रे:छनयोघनपरिहेधोरे॥बिभीषन॥बोलेलंकबिलोकि
बिभीषन:मेघनहिनयहरघुकुलभंजन:सजिबितानबकुरं
गसवारे:वारावनयरहोतअषारे:घुमंरतनहिमृदंगसबद्यं
न:गगनपूरिप्रतिधुनिन्नबकगन:नथदमकरामनियहनाही
मंदोदरिकुंडलचमकांही:रतनकिरीटचमकंबपुरावन:नही
चपलात्रयतपनसावन॥कबित्त॥बिजयतानिमोष्योजबरघु
बर:सोहनिमुकटकरहिआयोसर:लहकफुनदेष्योधनुत
न्योः निजकौतुककपिसेननजान्योः धारेसिरलेमुकटपरेधर:मन
असगुनलषिचेरोमंदिर:पकरिहाथतबहीपटरानी:सज्यालेबे
गरिसयानी॥मंदोदरीउ॥ मानकुवचनकहतिमंदोदरि:असगुन
होतनिकटआयेअरि॥रावन॥ दहा॥रावनकहिमंदोदरी:सिर
फुगिरेमुनसर:मुनिलेधरिकुसीसपर:मुकटनअसगुनमूर॥
छंदपधरी॥ सबकरतनीतित्रीयगनसमास:उरजासअष्टल
छनननिवास:साहसमुअनृत:चपलतासंग:अतिमायासयअवि
वेकअंग:अनसोचअदयमिलिअनाचार:बिनतास्वभावअष्ट
बिकार;प्यारीहमकीनोयहप्रमान:धरिबितबचनतवतयनि
धान:सबअमरसत्रुजेमोहिसुनाए:सोसबेकहिकेसुताए॥
दहा॥सीतामहमायासती:रामअहम हीयहेरि:निहचैहमेरे
मरन:तोपेदेउनफेरि॥१॥मंदोदरीउ॥ कंतजुछायाकालकी
निसंदेहयरनास:तातेमानतनाहितुम:वृथाप्रबोधप्रकास॥
रहसिसमयमंदोदरी:रातिकहतदुषरोए:अंगदकुकीएकतुम
कहीनमानीकेए॥२॥द्वेसुतमारेबानरनि:पतिकहंउपजीय
त:अहंकारपीयरखरो:मोहिनयोफलदात॥छंद द्वेअषरी॥
अंतकंतबलगिअवतरो:नयोरामरारनतुवतारो:प्रीयसु
नियेतिनकीप्रभुताई:छातीतोहिरबमदछाई:अमरअषिल
जिनकेहैंअवयव:देवसहईदुष्टदानवदव॥बिराटरूप॥

कहत कालआगमकथा॥ इति कृतागद प्रसंग॥ कबित्त॥ दहा॥
सिषर त्रिकूटाचल बिषय रावन गढ़ आनि देषत बेलाचल दिसि
महारेषमनमानि॥१॥ परबत बेलाअंगपर उतगढ़ रघुराम दहन
आमत बनि दिट बिसवासन करबाम॥२॥ इक दिसा दिनकर उ
दित इक हित कअवास प्रतिआना दुवबाद परि समभिलिन्यो
प्रकासा॥३॥ तहा बिलोकत लंकतन सानुज राम सचेत कलित
सोनानगर की द्रिगनि महासुषदेत॥४॥ छंद पधरी॥ प्रतिद्वारद्वार
तोरनप्रचंड दुतिअंहअंहबनिधजादंड कनकमयकलसनगजटित
कीन निसबदतअमितसोनानवीन प्राकारअंहहिममयप्रमान थि
रउर्धबिराजितसतथान पूरनकि हिकिबियहबुधिपार बरनेजुल
कसोनाबनाइ थढ़ेतहारावनउरधथान निसकरामदेषोनिदान
श्रीरामबाच॥ दसमसतकमुकटकिरीटदेषि सोपूछिबिभीषनकर
बिसेषि॥ बिभीषन बाच॥ रावनयहगढ़ेअसुरराइ सिरछत्रसे
तचामरचलाइ यहसुनतरामअजोनबाढ़ आकरषिधनुषसरए
नउछाह कोमंडकरेकुंडलाकार मोष्योजुबानिसचारमार दस
मुकटमूलकाटेनिदान सोलषोबानबज्रहिसमान॥ छंद द्वैअ
षरी॥ लजितमनतिहिछनलंकेसर परेछत्रनजिगेअंतहपुर बे
लाचलऊपरप्रभुपावन बसेनिसात्रयतापनसावन लछमनप
त्रवकरनकसाये बिहतअजिनसजाजुबनाये सीसकपीसअंक
अवधेसर मारुतिचांपतिचरनमनोहर बामपांनिकोमंडबिराजित
सरअमोघदहनकरसाजित निकटनिषंग सब्ज दिसिसोहत
महिकृतसयनगतमनमोहत सावधानलछमनबीरासन
बैठेमित्रकपीसबिभीषन॥ रावनप्रभारेबनी॥ सोचति
निसानरीहिअवसर लंकासिषरमनोहरमंदिर बनिबै
ठताऊपररावन नामनिमंदोदरिमननावन राजितछत्र
बितानमनोहर धुरजनुघटाघमंडितजलधर इहांकिनरग
धरबजुआये बिधिनाटकसंगीतबनाये बाजितबिबिधिग
हसुरबाजे गगनमनऊप्रतिधुनिमिलिगाजे नाचतअंहार
करतकोतहल होतनिसानगानकोलाहल कंटकमुकटकि
रीटकनकमय मंदोदरिकुंडलनगहिममय मनहिरीझिज

हिदेऊ प्रभु करऊ सोम बिसवारबैर बिग्रह बढ़ाइ कैं अंतर देऊ च
दिबेत आइ सब देबमैं बानरसमूह जुधहरषकरत बरबीर जूह
कौतुक समुष चालत लंगूल सोरसिंघनाद गरजत समूल सुग्रीव
सेनपति जित संग्राम निसरहत निरंतर निकट राम यह नील अंगद
नंदन निसंक नल प्रबल सेनकर्ता नियंक आछो रहै छउ उत्तम अंग
नि जुवराज यहै अंगद सुजानि हनुमंत हेत जिहि लंक जारि मिलि
अंक कवरन बेत मारि यह पनस सरस अरु सरस सूर यह द्विबि
दि मयंद पेरुष सपूर कपि कहन पार कोक बिकराल संभान से
न अति बली आइ बिस्वेसराम बिस्वहि बिनास जग जननि जो
नकी प्रीय जास तिन सो बिरोध नहीं उचित तोहि हठ कूरगनि
मतनास होहि संसार अथिर यह नास संग नवनत अंतछन मांम
संग पंचभूत प्रबर तिहि देह हि प्रमानि अरु मिलत तत पचीस आनि मल
मास अस्थि पुरगंध मूल अहमेव पाक अति जो अमूल सो अंग बा
रअनेक संग सोई देह सहज उत पति संग पुनि करत ब्रह्म हत्यादि पा
प तिहि हेत अबिद्या संग आप सो लसति बिसतु जननम पार अ
धिकार लसो लोक के सआर ॥ ६॥ अहंकार तजि बुधि यह राम त
जऊ रघुराइ दुरलभ पावऊ परमपद सुरपुर बास सुनाइ ॥ छंद
हेत्रेषरी ॥ सुक के बचन सुनत हित सानि उरअति क्रोध दसानि
नआनि ॥ रा दु न ॥ अनष अतिमम हेत अनागे गुरु लोभो हि प्र
बोधन लागे दीष्म हेत जगत हंसाजत लाक हंसि ष्म हेत नल लाज
त कहत अधम जगत नीति कथ सोल नहीं सुनि बेक हंस मर
थ पुनि जो कहै नीति फल पावहि दुष्ट बदन मत फेरि दिषावहि
सुक बाच ॥ प्रभु भेस बसेवा फल पाये यो कहि सुक कपत घर
आये ॥ सुक पूर्ब जन म प्र संग कबिक ॥ आगे हुतो ब्रह्म रि
षि सुक यह सो सेवत सुष बन बनिता सह अगनि होत्र देवादि जु
उत्तम करतो हो मुचित जो द्विजक्रम बज्रदंष्ट राकस इक बेषम
इहा सो बसत निकट सुष आश्रम पापी असुर द्रोह द्विजतत पर
निसि दिन तकत घात निरंतर इहा अगसि तिरिष सुक के आये
पूजि सबिधि आश्रम पधराए सुक जो जन हित न्यो तिरिषी स
र आपन गयो तबै ग्रह तीर कस्यप सनि को रूप सुआ सुर क

लो सुक हि बिनती सुनि द्विजबर ॥ बज्र दृष्टि ॥ छांगा मिष भोजन म
मरछा : कछुक काल नये करत उपेछा ॥ कबि क्रा सुक अपकार हेत
वहि राकस : तहा सुक त्रीया रूप की नीतस : नाति नाति भोजन मन
नाये : मनुषा मिष तिन मध्य बनाये : मह करि पाक असुर अन्याये
बांटन नर हो अगस ति बुलाये : बहु तन गति अहमह बैगरे : पुनि ले
अय धरि पन वारे : ले सुक आप परोसन लागे : परम बिचित्र अनरस
पागे : नर आमिष ता महलै नाये : अगप्रत छि दिष्टि मुनि आये ॥ मु
नि अगस्त ॥ ये अमेध नर मास अनागे : आनि धरे भोजन मम आगे
पापी मुहि परुसो जु अपावन : सुक तुम हो कुमनुज मासासन ॥
सुक उ ॥ देव मांस तप अग्या दीनी : बिसरे मोय हबुधि नवीनी : कि
हि अपराध आपरयो स्वामी : जगत पूजि तुम अंतरजामी : दयो श्रा
प कि हि कारन देवा : मैं सतत्वा इकरी सब सेवा ॥ कबि क्रा जेग ध्या
न करत बरिष जान्यो : मन अपराध न सुक को मान्यो : सुक अदोष
मुनि मन अनुसरयो : कछु बिकार किहु दुष्ट जु करयो ॥ अ ग स
ति बाच ॥ द्विज अग्या तप आप मैं दीनो : कृत अबिचार अनो चित की
नो : मेरो बचन अमोघ बिचारहु : निहचै सो ई नव तब्ब निहारहु ॥
रो ऐ हे राहस को धरि हो : करम सहा इहसा न न करि हो : राम जबै
मानुष तन धरि हैं : कारन बधरावन को करि हैं : त्रेता जुग राघव अ
वतारा : तो लो राहस दे हु मुहारा : रहा रघुबीर लंक गढ आवहि
सेन रीछ बानर सम दावहि : तब सुक रुतर राम पै जैहो : हेत बचन कु
टक समझैहो : बात नीति करि अनष बदे हैं : दुष्ट तबै तु हि उतरदे
हैं : हरि पुनि राम सरन तुम जैहो : प्रभु पद परसि आप पद पैहो
कबि क्रा आगे कुतो न तब भजु ऐसो : ताते मिल्यो सुक हि अब
तैसो : इहा सुक अनषि राम पहआये : सब अपनो बृतांत सुना
ये ॥ इहा ॥ करि बिनय रघुनाथ कहै : परम प्रेम परिपाट : क्रम जु
तकी नै परिक्रमन : सुषन चित्र समास ॥ पुनि सुक पायो आप
पद : धरम देह द्विज धारि : अधम उधारन अघ हरन : ऐसे राम मु
रारि ॥ हे अनाथ के नाथ हरि : पतित दीन सो प्रीति : अषिल च
राचर अगति गति : नर हर प्रभु की रीति ॥ इति सुक उधरन ॥
अथ लंका बिरोध ना सुग्रीव बाचा कबित्त ॥ जो रिपा निक

पिराज स्वामिसोंबिनयोअैसो। तवप्रतापरघुतिलक कहारावन
गढकैसो: सहतबंधुसुतत्रीया रजुबंधीयगलरावन: गढउथ
लिषलगरबगालि पारहिपदपावन: आजानबाहुअवधेसअब
रनजयदहालीजीये कपिनालकरतउछवकलहु देवसुआ
पादीजीये: ॥ श्रीरा मबाचा। हसिबोलिअवधेस रामधरमहि
रषवारे: तुमकारनकपिअमर अंसअवनीअवतारे: यहउपज्यो
बरब्रहमबंस: पापिहृअपावन: जानियहैजुवराज सगहिपग
योसमझावन: तिहिनयेअवैनिरदोषतुम कपिपतिसोंचनकी
जाये करिअनीचारिषलकटकहि: दुष्टकरमफलदीजीये: ॥
कबित्त ॥ जयतिजयतिसुरसरन अषिलदलनवनउचारे:
उरेबीरअनंत कुलहिराकसभयकारे रामरूपउरधरीय त्रि
कुटदिगबकनिहारीय: चितफुलासआयासलाग सुरबेरसं
तारीय: संकमोसेननरहलुकबि कोलाहलजुधहरषकरि
आनरअमरपतिउपजीय: पुरहिलकआतेकपरि: ॥ छंदद्वैअ
षरी॥ दुरगमलकाचारिदवारा: बज्रकपाटसूल बिसतारा: च
रिचमूचहुओरचलाये अतिबलसाजिद्वारचहुआये दहन
द्वारआरलगिअंगद: पायोजिहिजुवराजबिजयपद: द्वारपूबदि
सिनीलप्रबलदल: करसंचालवरनरनअनबल: पछिमदिसि
हनुमंतबिजयपत: रामनगतभयकरराकसरन: अपरामल
छमनदिसिउतर: नगंतसहाइबिनासकनुवनर: सबदिसिन
येकपीससहास्क: कपिसमूहमधलीनोनास्क: सिलपर
बततरनिकरसुहाये: आयुधबानरनालउगाये: कूदहिगग
नकरहिकोलाहल: दुसहसीससहियतमरकटदल: देतबिर्ता
षनचोकीदसहिस: रामतपूगिकपिनिकीराकस: घनदलन
योलंकगढघेरो: कालआइराकसकुलकेरो: ॥ दहा॥ इहारावं
नकृतकोपअति: सजिआयुधसनाध: दुरगमद्वारनिचारिदि
सिआयेअसुरअसाध: ॥ छंदद्वैअषरी॥ अहप्रहसतपूबदि
सिआये: जंत्रबिबिधिघनद्वारसजाये: दहनद्वारेआरम
होदर: बीरबिषमदलरोकेबानर: इंद्रजीतपछिमदिसिआये
बिकटकपाटनिद्वारसजाये: उतरद्वारदसाननआये: सजि

लोसुकहिबिनतीसुनिद्विजबर॥ बज्र दृष्टउ॥ छागमिषबोजनम
मइछा॥ कछुककालनयेकरतउपेछा॥ कबि॥ सुकअपकारहेत
वहिराकस॥ तहासुकत्रीयारूपकीनोतस॥ तातितोजनमन
नाये॥ मनुषामिषतिनमध्यबनाये॥ यहकरिपाकअसुरयहआयो
बातनरहोअगसतिबुलायो॥ बहुतनगतियहमहबैगरे॥ पुनिलै
अयधरेपनवारे॥ लेसुकआपपरोसनलागे॥ परमबिचत्रअनरस
पागे॥ नरआमिषतामहलैनाये॥ अगप्रतछिद्रिष्टिमुनिआये॥ मु
निअगस्तउ॥ येअमेधनरमासअनागे॥ आनिधरेतोजनममअगि
पापीमुहिपरुसोजुअपावन॥ सुकतुमहोकुमनुजमासासन॥
सुक॥ देवमासनषआपादीनो॥ बिसरेसोयहबुधिनवीनो॥ कि
हिअपराधआपरयोस्वामी॥ जगतपूजितुमअंतरजामी॥ दयोश्रा
पकिहिकारनदेवा॥ मैसतताइकरीसबसेवा॥ कबि॥ जोगधर
नकरितवरिषजोन्यो॥ मनअपराधनसुककोमान्यो॥ सुकअदोष
मुनिमनअनुसरयो॥ कछुबिकारकिकुदुष्टजकरयो॥ अगस
ति बाच॥ द्विजअपतआपमेदीनो॥ कृतअबिचारअनोचितकी
नो॥ मेरोबचनअमोघबिचारकु॥ निहचेसोईनवतब्भुनिहारकु॥
रोद्रहरादसकोधरिहो॥ करमसहाइहसाननकरिहो॥ रामजबे
मानुषतनधरिहैं॥ करनबधरावनकोकरिहैं॥ त्रेताजुगरायवत्र
वतारा॥ तोलोराहसदेहतुम्हारा॥ रहारघुबीरलेकगदआवहि
सेनरीछबानरसमदावहि॥ तबसुकहतरामपेजैहो॥ हेतबचनकु
टकसमझैहो॥ बातनीतिकरिअनषबदेहैं॥ दुष्टतबेतुहिउतरदे
हैं॥ हरिपुनिरामसरनतुमजैहो॥ प्रभुपदपरसिआपपदपैहो॥
कबि॥ आगेकुतोनवष्मजुअैसो॥ ताते मिल्योसुकहिअब
तैसो॥ रहासुकअनषिरामपहआये॥ सबअपनोबृतांतसुना
ये॥ रहा॥ करिबंदनरघुनाथकहे॥ परमप्रेमपरिपारु॥ क्रमज
तकीनेपरिक्रमन॥ सुषनचित्रसमारु॥॥ पुनिसुकपायोआप
पदु॥ धरमदेहद्विजधारि॥ अधमउधारनअयहरन॥ अैसेरामम
रारि॥॥ हेअनाथकेनाथहरि॥ पतितदीनसोप्रीति॥ अषिलच
राचरअगतिगति॥ नरहरप्रभुकीरीति॥॥ इतिसुकउधरन॥
अथलंकाबिरोधनासुग्रीवबाचाकबिता॥ जोरिपानिक

पिराज स्वामिसोंबिनयोअैसो। तवप्रतापरघुतिलक कहारावन
गढकैसो-सहतबंधुसुतत्रीया रजुबंधीयगलरावन:गढउथ
लिषलगरबगलि पारहिपदपावन-आजानबाहुअवधेसअब
रनजयदहालीजीये:कपिनालकरतउछवकलहु-देवसुआ
पादीजीये ॥ श्रीरा मबाचा हसिबोलेअवधेस-रामधरमहि
रषवारे-तुमकारनकपिअमर-अंसअवनीअवतारे:यहउपजे
बरब्रहमबंस-पापिष्टअपावन:जानियहेजुवराज-सगहिपग
योसमझावन:तिहिनयेअबे निरदोषतुम-कपिपतिसोचनकी
जाये-करिअनीचारिषलकूटकहि दुष्टकरमफलदीजीये॥
कबित्त॥ जयतिजयतिसुरसरन-अषिलदलबचनउचारे-
उठेबीरअनलंग कुलहिकसषयकारे-रामरूपउरधरीय त्रि
कुटदिगबकनिहारीय:चित्रकुलासआयासलाग-सुरबैरसं
तारीय;संकमेसेननरहरसुकबि-कोलाहलजुधहरषकरि
आनंदअमरपतिउपजीय-पुरहिलकआतंकपरि॥ छंदक्षेत्र
षरी॥ दुरगमलंकाचारिदवारा:बज्रकपाटसूलबिसतारा:च
रिचमूचकुओरचलाये-अतिबलसाजिद्वारचकुआये-दहन
द्वारआरलगिअंगद-पायोजिहिजुवराजबिजयपद-द्वारपूबदि
सिनीलप्रबलदल-करसंचालचरनरनआनचल-पछिमदिसि
हनुमंतबिजयपन-रामनगतषयकरराकसरन-अपरामल
छमनदिसिउतर-नरांतसहाइबिनासकलुवत्तर-सबदिसिन
येकपीससहाइक:कपिसमूहमुषमलीनोनाइक।सिलपर
बततरनिकरसुहाये-आयुधबानरनालउगाये:कूदहिगग
नकरहिकोलाहल-उसहसीससहियतमरकटदल-देतबिच
षनचोकीदसदिस-राषतपूबिकपिनिकीराकस:धनदलन
योलंकगढघेरो-कालआइराकसकुलकेरो॥ दहा॥ इहारावं
नकृतकोपअति-सजिआयुधसनाथ:दुरगमद्वारनिचारिदि
सि-आयेअसुरअसाथ॥ छंदक्षेत्रभरी॥ अहप्रहसतपूबदि
सिआये-जंत्रबिबिधिघनद्वारसजाये-दहनद्वारेआरम
होदर:बीरबिषमदलरोकेबानर। इंद्रजीतपछिमदिसिआये
बिकटकपाटनिद्वारसजाये-उतरद्वारदसाननआये-सगे

किरीटदसंमुकटसुहाये: बिरूपाक्षसोमध्वरलोसक: करतसह
स्सबनिनरांतक: कंटकदुरगसुरहतकीने: द्वारद्वार जिहिआर
सदीने: अयुधसकलसाजिबलआये: सोईसोई जिहिअस्त्र
ससुहाये:॥ छंदपधरी॥ करतरीपासअकुसकटार: जमदंड
बगषंकडुधारा: सकतीसुसांगिछुरिकात्रिसूल: मुद्गरागद
कंगासमूल: धनुबांनबिबिधितोमरसधीर: बसानिकपालपरि
घाजुबीर: परसाकुमारचुगमारपांनि: घनघातप्रबलपटिस
प्रमांनि: हलमुसलमाहकरपत्रहाथ: मुक्तकाचक्रबीछूस
माथ: करग्रहेसूलतत्त्वाकुदाल: जेकपटजुधआयुधनिजाल
अरुद्देसकालप्रहरनअनेक: इत्यादिगनेकोएकएक: बाह
नहयबारनरथबिसाल: बरकरनासिंघचित्रकनिष्पाल
तहाबृषभमहिष-बृक-चदि-कुचीत: अनेकजंतबाहक
अनीत: बाजतनिसांनचहुयाबिसाल: भेरीमृदंगरवसुर
निसाल: गोमुषप्रलवआनकअगांन: डुडुभीसंषपटहनि
दांन॥ दूहा॥ कांग्चरममयतंत्रिका: पुनिजेधातप्रकार
इत्यादिकबाजित्रअवर: बसकिहिगनतबिचार॥१॥ सम
हरबाजतबीरसुर: सुनिसुनिसबदरसाल: लोलोउमहति
चितअति: नटराकसकपिनाल॥२॥ छंदद्वेअषरीरावनो॥
चोपटमारिनिजावहुबनचर: बाहुजहापावहुतुमषेचर: स
जिदलगहहुबालसंन्यासी: होरबसछित्रिनमहहांसी: पू
छकाटिछांडहिगेकपिपति: पकरिबिनीषनकरिहेगटप
ति॥ कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥ दससीसबचनराकस
डुबाह: रसरोसलगेकपिदलहिराह: रसबीरउनयदलपे
जरेप: कपिलरतनिसाचरसमरकोप: पटकहिगहिरा
कसकपिनिपोषि: मारहिछारिदिसिरामदोषि: दलम
रकटकोइहांचितमोलि: पहमदिसिटूटेनहिनपोलि॥
अथ हनुमत अंगदगदाध्वजुध॥ छंदभुजंगी॥
हुओररघुनाथराननहुहाई: करेमारलेकारलेकालराई
भनेबानरारीछनिसचारभागे: लरेरामकेनीछअसमांन

लागे॰ बकै मूरुटटै धरासूरुधावै॰ परै एकऊ मैमहामुक्तिपावै॰ चलैजं
त्रजै बूरकंगूरजेतै॰ बंचावैतहाकू दिकपिनालतेतै॰ इहाकू दिहनुमंतग
ढमांऊआयौ॰ पस्यौइंद्रजितऊ ष्टधरिरोषधायौ॰ जुरेपवनकौपूत
लंकेसजायौ॰ नयेपरबसंग्रामजोमननायौ॰ महावीरजूकैसिलासार
मोषै॰ चढैरोषदौउबदी चितचोषै॰॥छंदप धरी॥सिलमारितोरिरथह
यसधीर॰ बासवजितनोतलाबिरथबीर॰ स्वारथीअवररथलीयसं
जाइ॰ इंद्रजितताससारोहआइ॰ हनुमंतसुमास्यौलातहीय॰ जरजरित
देहगोनूलिजीय॰ मुरछागतआसोमेयनाद दससीसदेषिउपजै
बिषाद॰ बिचलेकजुरतहनुमंतबीर॰ सुनिआयोतहांअंगदसधीर॰
सुतबालिमिल्योमारुतिहिसंग॰ अतिबलीउभयबानरअनंग॰ दु
साधिबीरकपिनिरतदोइ॰ हाहंतसबरगदमांऊहोइ॰ पीटहिउर
ममतकरोरपांनि॰ धावहिसनीतअतिजातुधांनि॰ परित्रासकरहि
बालकपलाहि॰ हामातातकिहिसरनजाहि॰ बीरोदधिलंकाभय
हिषेल॰ मदराचलमंरकरभुजयमेल॰ ऐईचिदेकूदिरावनअवास॰
तहाधूविगिरायेकलसतासं॰ दाहेजुग्रेहधूजरेऊदाहि॰ कैरहीलं
कमहत्राहिहि॰ मारुतिअरुअंगदबलअसांन॰ अतिहरषकरेरघु
नाथआन॰ अवधेसजयतिजेयनपअनंग॰ नयपस्योसुनतराव
नहिनंग॰ जुधमारिकपिनिबकुटजातुधांन॰ सुवनिरतअसतमित
नयोभांन॰ आवासयेनलीनेउभारि॰ सोईकरेसमरआयुधसं
नारि॰ सजिऊपगगनमगकपिसधीर॰ बिचिआयेअपनेसाथवी
र॰ आगेजबमुरछाजबइंद्रजीत॰ अतिहरषभयोरावनअनीत॰ उ
निदुष्टनिसाचरनिसापाइ॰ सबहिनकोबाढ्योबलसुताइ॰॥अप
अतिकाय अकंपन जुध॰॥दहा॰॥इहाअकंपनउरउमगि अरुअ
नीतअतिकाइ॰ प्रगटभयेसेनापती॰ सोगवनेसिरनाइ॰॥छंदद्वे
ग्रबरी॰॥अबअतिकाइअकंपनआये॰ अलेजुधअरुमंगलगाए
तिनआसुरमायाबिसतारी॰ अरुघनमिलीरयनअंधियारी॰ औ
नहृष्टिकीनीअतिराकस॰ दारुनतमप्रसस्योदसकुदिसि॰ अंध
भयेकपिबसअंधियारे॰ सरुतनाहिनकहांसंभारे॰ भयेनिरुदि
ममरकटसाला॰ रुधिरमंडीमिलिजलदनिजाला॰ जांमोरघु
पतिअंतरजामी॰ संकटहरनसुरनिकेस्वामी॰ प्रभुतहाकरनसहा
इपगए॰ अंगदहनूमांनकपिआए॰ अगनिबानरघुनाथचलाये॰
अंधकारतिहिनिषलनसायौ॰ इहानिसाचरमायोनासी॰ पाव

कजोतिहिगंतप्रकासी: इसहहाकहनुमंतजुदीनी: गिरेगरनअसुरी
नयनीनी: राकसआयुधसरसंचारत: मरकटतिहिपरबततरमारत
धाइलेकुगहिगहिबानरषल: करतनिसाचरसमरकोलाहल: नये
कलहकपिराकसनारी: चोपटनिरेपचारिपचारी: इहासुनटअति
क्रोधअकंपन: धाइलनयेअघाइघाइघन: परेउगइलकपुहचाये:
येधाइलरावनपहआए: पतिहितमरेअसुरजसपाए: उबरेसुपेडु
रगमहआये: रनबिबहारसुनेजबरावन: प्रजरतहीयोसरोष
अपावन: सुतनहीयामंत्रीनटसाजन: निरनयपूछतनयोहसान
न॥ रावन ना॥ करिबोकजअबेसोईकहिये: सबलआपपरिनव
क्योसहिये: इसहबचनसुनियतहैहिनदिन: रोसचढेराकसछीज
तरन॥ मालवान उ॥ इहा॥ मालिवानअतिहितमन: बोलोबच
नबिचारि: समताबिनुसंग्रामसजि: हेरअंतपैहारि॥१॥ हिरण
छिदेआदिहि: असुरसूरअवनीस: अगनितमारेरामइहि: सुने
उमकुदससीस॥२॥ लीनोंतिहितकअंतलगि: अबमानुषअव
तार: हरिलाग्योहैदेवहित: नूमिउतारनहार॥ कबिरु॥ बच
नलग्योबिषबानसो: मालिवानकोमूद: उतरदीनोफेरियहु:
इहादससीसअगूद॥ रावन मालवान प्रति॥ जमकुतोहि
नूलोजरग: सोनहीकरसंसार: इहिकारनजीवतअजू: बचनन
तिबिसतार॥ मालवान बाच॥ इहागयोतबयेहउ: मालिवान
दुषमानि: देषकुगेरावनदुसह: अबजुबनीहैआनि॥१॥ इंद्रजी
त जुधा॥ छंदपधरी॥ इहाबोलोरावनसुतअनीत: जगलसोबि
रदजिहिइंद्रजीत: करियेनसोचलकेसकोइ: दलकीसकहानर
जतीदोइ: आकासदहिपृथीउथालि: करिकुअबानरीआइक
लि: योकरतमंत्रपितसुतअनीत: अगयोप्रभातउद्योतपंग: द
लतगेलरनचोकुदवार: मिलिलोहसबदमुषमारमार: सेन
पतिकेआयोसकोप: अतिबदीबदनघननादओप: इहिहिसा
आइअंगदअनीत: जुधजुरेअसुरकपिसमरजीत: राकसतबबा
लोबजरोष: मरकटकरपरवतकस्योमोष: तिहिटस्योबजरथ
धजाटूटि: छोहबलगयेघननादछूटि: राकसप्रजघ्रत्रयबान
रोपि: संपातिकीसउरबनेसोपि॥ तरुदियमारिसंपातित
स: सोगिस्योषेतगोलूलिसास: अतिकाअसुरआयुधउग
इ: सोजुस्योआनिसमरुरसुनाइ: बनचरबिनीतअरुनबी

र यरिछ्छ भारि कटे सधीर सरस्यो महोदर कपि सुषेन तनजयो सुवि
हबले बिधातेन ऋस्यो सुषेन परबतु रतः दूरो रथ उ बिनाप्रेतु रत
मकराषि असुरसर जाल मेलि कृत जामवत महासमर केलि संग्र
ही सिलाटक पुर सबीस सर जाल बिनास्यो करि सीस जुधहन्यो
बिसमहा बिरुजीह उरफो रि सतबली कपि अबीह लीला उषा
लि द्रुम सरलली न दीनी सिरआ सुरगयो दीन संग्राम धूम्रा
क्ष असंक कपि कुल मिले रसरो सकंक परिअ गनित सरपा
थर प्रहार जुरि गिरे समरहो उ कुठार जहाँ दे बीत कंन बानसा
नि आहब घबाषि उ रलगे आनि बानरति हि मास्यो तालवृछ प
रबत प्रमान तन परिप्रतछ सरमुक्ति अ सुरसार न सरोष सेल
स्यो रिषु न उर प्रान सोष वृछ हत कस्यो ति हि असुरबीर संग्राम क
सगर जो सधीर समेत सुतत्रि सरा गजा रूढ अति कोप अ सुरन्ना
यो अगूढ हत तो मरकी नो सरन हेल बेचर ति हि मास्यो वृछ छे
ल समुद्र रेन रात कपन ससार हरि करे दुऊ नि सरतर प्रहार अ
रि सम रअ कंपन कुमुद आनि परिमारउ नय मुष्टा सपानि धू
आ हकेसरी मिले धाइ इहि बान मारि हि गिरउ गइ सुकन्नासुर
की नो सरजाल ति हि बली बेगि तरु तोरि ताल आसुर नरांतक
सो जुरे आइ कपि तपन सर नि ति हि बेधि ताइ नल ह्यो सुथाप
टनि सत्वार थर गिस्यो बमत मुष रुधिर धार नागांतक आसुर
रन निहारि मरकट मयंद सो लयो मारि दुसाधि नि सचर सारद
ल कपि द्विबिद मिले संग्राम कूल राकस नि कुंन बानर जुनील
ल कपि द्विबिद मिले संग्राम कूल राकस नि कुंन बानर जुनील
समसकति जुरे समहरसुसील सजि कै प्रहसत आयो सधीर गज उ
तैगर जि मरकट सधीर इहि ओर सुरांतक असुर आइ दल राम दुरि
मुष लगे दाइ जंबालि बीर हनुमंत जुध करथा पहन्यो मुख असुर कुध
उत बीर पाछि नि सचर अंग सो मित्र ह्यो रन बान संग सतापन अस्य
न क्रोध सूर संक्रोधन कृतघन सकसमूर चढि बेत असुर ये दुष्ट च
रि मुहचरे लये सो राम मारि परबत तरु आयुध धार पूरि संग्राम अ
संष्या गिरे सूर रथ टुटे छुटे आतम सबेध कलह इहि उनय ऊ बेक
बेध पल ओन पंक कर दमे अ पार थर चली सरित मिलि रुधिर धार
पल चार त्रिप्त आहार पाइ सब नयेन षीपंषी सुनाइ जोगनी रक्त
रिपु त्रजाल करि पान के हेजय जयं कपाल काकनी नयान कर दंका
क हरनरदंकेतु कबीर हाक अथमेघनाद जुध नाग पास

बंधने॥ दो॥ मेघनाद अति क्रोध मन: सजि आयो संग्राम: मारि पछ
रतमरकट नि: रन हिं चारतराम॥१॥ षेचर गढ़ो षेतमह: रिसगरजत
हग्हो: चितवत जा दिसि कुटिल चष: कपि न सहारत कोइ॥२॥ अ
ति सरोष हनुमंत रहो: आयो अरिउ न्यार: सोमास्यो घननाद सि
र: नाग्पोर हीन संजार॥३॥ छंद पद्धरी॥ तिहि चोट टूटो रथ हय
समेत: षल जयो बिरथ तजि गयो षेत: इह इंद्रजीत चढ़ि गो अकास
तब ही अदिष्ट भयो दुष्ट तास: आवेन दिष्ट माया अगाध: वह असुर स
बनि मारे असाध: करस सत्र अस्त्र बाहे अनेक: अवधेस सुकारत
ऐक ऐक: दुरबाद कहे नहीं लगे दाव: इह करे दुष्ट षल बुधि उपाउ
बिस तार असुर माया बिकार: अति तरीस्यो न बरषा अगार: मल
सूत्र असि थक च उपल मार: नई वृष्टि पासु पूर्या अपार: इहि सम
य मिल्यो न अंधकार: पस्यो दिगंत तम लहि न पार: तिहि नये
नाल कपि अति सभीत: सब कहत त्राहि त्राहि ऐस सीत: तेज मय बू
नरयुनाथ तानि: जाजुल्य सम मोष्यो समय जानि: तम माया नई
बिनास तास: पृथी प्रसिध जो रवि प्रकास: बिधि द्यये प्रसन कै रि
पु बिनास: पहलै इसक ध हि नागपास: श्रीरामचंद्र लछमन स
मेत: षल लये बाघि अहिपास षेत: ब्रह्म अस्त्र रघुनाथ बीर:
सो पासन हि न काटे सधीर: रन गिरे जु मुरछित अवधिराव: प्रभु
कस्यो रहा मानुष प्रभाव: दुष भये सभय कपि नाल देषि: षे
चर निहरष बाढ़े असेषि: इस सिर पहुआयो मेघनाद: वृतांत सु
नायो सुरबिषाद॥ रा व ना॥ पापिष्ट कहो तब समय पा
इ: जानकी हि दिषावहु कंत जाइ॥ कबित्त॥ दो॥ रथारूढ़ तब
राकस नि: कीनी जनककुमारि: राम दिषाये रन अजिर पोढ़े
पाइ पसारि॥१॥ सीता बाच॥ कबित्त॥ मन हि देषि मैथली इ
ह अति सोक उपजीय: काल चोलय हक अग्नि मनुज सुर जाइ
नम जीय: पाइ सरपते प्रगट: नाम जिन के निसतारत: नवस
गर इक्त सभीत धरि बाहु उधारत: तुव प्रबल आहि नवतह
ता कवन ताहि अपबस करन: सो ई राम बंधे अहिपास सो राजत
सोये सेज रन॥१॥ जानि समय जानुकी नियत सुर काज निहारी
य: परम जगत अति बल प्रचंड: इह गरुड़ संचारीय: गरुत मान आ
गमन जब हि पंषारव बजीय: तुव गपास गये तजि बिषम म

यासुबितजीय: रघुनाथउठेसानुजरनहि सुरनिपुहपबरषेसम
य: हीयपस्योदाह्यहसुनतही नयोतहारावनसनय ॥ छंदहे
अषरी॥ कबिरु॥ बनअसोकआनीबैदेही सुमिरतहाहारामसू
नेही ॥ धूम्राहअकंपबजुध॥ इहधूम्राहअकंपनआये
इहिहिसिअंगदमारुतिधाये नयोसंग्रामपरसपरनारी नटं
तेईनिरेसंनारिसंनारी परेबेतधूम्राहअकंपन: रोषसोकप
रिजरिउरावन ॥ दहा॥ अनकंपनधूम्राहरन: परेजूझिजसप
इ इंद्रजीतरावनहरषे सोचनचितसमाइ॥१॥ इहरावनअति
हीअनषि: बीरसनाजुबनाइ: सुतआतामंत्रीसुनर: अगनितबे
गेआइ॥ छंदहेअषरी॥ महोदर मंत्रीनीति प्रबोध॥ इहबि
चिमंत्रिमहोदरआयो: जिहिप्रधानपदहूरनपायो॥ राव ना॥
समयपाइबोल्योकेसर: मोनिसाधितुमरहेमहोदर: हित
बकतातुमसहाहमारे: सबकाजबलबुधिसुधारे: कहियेइहउ
चितजोकारन: हियलागेराकसछीजतरन॥ महोदरउवाचकर
जोरेकहतमहोदर: प्रभुतुमचतुरसुबुधिनीतिपर: पोहितअहि
तनाहिपहचानत: जानतकरतकियुअनजानत: समझिहमऊ
तातेचुपसाधी: आजपूछियतमंत्रउपाधी: जोहितकहतसुअ
नहितजानत: मनमहंताहिदुष्टकरिमानत: आजपूछितुम
तिहिकहआयो: बिहतप्रबोधजुसुक्रबतायो: सुनियेनाथ
कहुअबसोई: हतेजिसुनहुछिनकथिरहोई॥ दहा॥ नृपति
चारिप्रकारसुव: मंत्रीचारिप्रमान: मंत्रजुचारिप्रकारमिलि: अ
गरसुलोकपुरान॥१७॥ अथनृपति॥ छंदउधोर॥ नृपसुन
हुचारिनिदान: जेप्रसिधनीतिप्रमान: महिनयोबेनमहीस
तिहिआपमानीयशीस: पदयहैलोकजुपाइ: परलोकनियत
नसाइ॥१८॥ दुवनृपतिजोहरिचंद: अतिबलीअवनीयइंद: वं
हिसत्यसाधीएक: कृतकरेउधअनेक: सोउनयलोकसंधा
इ: साएवजोतिसमाइ॥१९॥ दुवत्रितीयराजबिदेह: उषरह
सहितपदेह: परलोकतिहिसुषपाइ: सबनएदेवसहाइ:
॥२०॥ इक्ष्वाककुलनृपअंकु: कोउनयोराजत्रिसंकु: इहिलोक
करिअनथ: वहिलोकसरिनहीअर्थ: सोउनयलोकनस

ह गोधरम किन्निंगमाह ॥ अथ मंत्री दूहा ॥ एक मंत्री निजस्वारथी
एक प्रभुस्वारथ प्रीति : एक रोऊ साधक अरथ : एक रोउ हतक अनी
ति ॥ छंद उधोरा ॥ एक ऊतो मंत्रि असाय : बऊ करे प्रभु हित बाय : ति
हि नाम सुरथ सुतंत्र : मन आप प्रभु मिल मंत्र : ए ये निषत सुजन नि
कारि : सब हस्यो राज संतारि : प्रभु काज द्वितीय प्रमान : निज क
जन नास निदान : हम सहीलोचन हानि : ओ सुक बलि हित जोनि ॥
॥ कपि त्रितीय हनुमंत कीन : प्रभु आप काज प्रबीन : कृत हरस सु
नरघुदेव : सुग्रीव ताये सेव ॥ तव पुत्र मंत्री यंतेष : कृत उ नय अ
हित असेष : समतु महि निज कुल नास : प्रभु कर तव बुधि प्रकास
॥ दूहा ॥ हेत्वारि मंत्री कहे : जथा कर मगुन जोग : अब सुनिये
हे कानये : प्रभु नृप मंत्र प्रयोग ॥ अथ मंत्र ॥ बिषदा ऊ मि कन
सेबिहत : गुरसे निबुग नाह : कबिन मंत्र ये चारि कहि
ननि समझाह ॥ छंद उधोरा ॥ बिष स्वाद गुन दुसाधि : ऊ
उतपति आधि : अति स्वाद कर कस अंत : दाडिमी बीज
॥ सुष स्वाद गुन मिलि संग : प्रीय मंत्र गुरु जु प्रसंग ॥ ३
दुगुन हित गाह : समनि बुमंत्र सुनाह ॥ ४ ॥ दूहा ॥ राजा
मत : कहे जथा मति जान : देवन कछु तुमते दुस्यो : निर
निदान ॥ ५ ॥ रावन बाचा ॥ कबित ॥ राजा मंत्री मंत्र :
सुनी महोदर : तदपि मनोरथ मन हि : नियत अहर हत
राम मारि रनषेत : इंद्र आसन ते रास्यो : करि बास व पुरब
रज उ मूल उषारो : जब सुनी प्रतंग्या इंद्रजित : यह कीन
ऊर : सनाथ बध सजि सारसब : पुनि आयो रनषेत पर
के अषरी ॥ इंद्र जीत जुध अंत मारुति लाये कपि जीये ॥
दमारुति कपि आगम : कुमद नील नल सरन क्रोध क्रम
हि मयंद तारके सरित हा : जाम वत दधि मुष आ ऐ जहा
पज्र थ जु आये : सिल तरु गिरि सजि निरत सवाये : सम
युध असुर संहारत : मार मार उचरत अरु मारत : बि
नयो राकस बानर : ओ नपंक कई मन चिसमहर : घाइन जुध
उछाह निरत घन : रोष सीया जारत राकसरन : अस चतुरथम
रहे रन आसुर : उपजि सोच अति इंद्रजीत उर : तिहि राकसमा

या बिसतारी: मेघनादगोणगनमंझारी: नतसोईजयो अदिष्टनि-
साचर: ब्रह्मससत्रतिहिमारेबानर: कपिनिमारिराकसगोलंका:
सोसुनिमिटीपिताउरसंका: इहाकपिषेतगिरेअवलोके: सानुजरघु
बरतयेससोके॥श्रीरामबाच॥छंदरूपधरी॥ रिषनाचलबीरसमु
द्रतीर: तहांअमृतओषधीबसतबीर: अवधेसदईआप्राअनंत: सो
आनकुतुमहनुमंतसंत॥कबित्त॥ हनुमंतओषधीआनिहाथ: स
बमृतकजिवायेसुनरसाथ: पुनितहमेलिआयेप्रमान: मारुतिसो
ओषधछनकमांन॥दहा॥जेकपिअमृतजोगतें: मरेउगेसंग्राम
सियनाहगरजतसबे: मुषनाषतजयराम॥१॥ पस्योजुबिसमय
लंकपति: बाढ्योचितबिराम: जेअबमारेइंद्रजित: सोगटेसंग्राम॥
रावनाजंपतमंत्रसजीवनी: सुक्रनउनहिसहाइ: मरकटजीयेजु
रनमरे: यहभेकौनउपाइ॥ कबित्त॥ इंद्रजीतगटमां
कहां: मेल्योसहतसमाज: सजिआयोसंग्रामसिरि: रावनराकस
राज॥१॥छंदउधोर॥ प्रहसतजुध॥ इहिओर रामअनंग: सजिन
लकपिदलसंग: आसुरप्रहसतअसंक: कपिनीलमिलिसमकंक:
रननीलमुष्टीमारि: माल्योप्रहसतपछारि॥रावनजुधागम॥ इहि
गिरतमनअकुलाइ: अतिकोपरावनआइ: रनचढ्योराकसराज: स
मपुत्रबंधुसमाज॥श्रीरामबाच॥ सजिचापरामनरेस: समपूछितहां
लंकेस: येकौनकौनजुआइ: तेदेहुबीरबताइ॥२॥दहा॥ कटकसु
तनलबंधकि: गुनबलबिंगनाइ: कहतबिभीषनबिधिबिवरि:
सुनतरामरघुराइ॥१॥छंदउधोर॥ रघुबाघ्रबाघ्रनिकेत: त्रप
सस्तरोषसचेत: तिहिअतिकुबेरसतइ: अतिकायहरनआइ: रथ
कनकध्वजमिलिमोर: जयअमरसमरसजोर: सोरसामकातिकि
साल: करधरेसकतिकराल: यहमहोदररघुधीर: बनिदकेहरको
बीर: कृतरथहिअरकप्रकास: अहिकेतरनजयजास: महदेवअंत
कदुष्ट: प्रतिअंगप्रापसपुष्ट: तनदियहसनिकेत: करषगधितषल
षेत: सोसमरपंकितसूर: कुलअसुरकरसंकरूर: बसजिहिसु
रासुरबाम: लरछीनिसकसंग्राम: अरसुवनयहमंकरापि: स
मारपोरूषसाषि॥ अथ रावनजुधागमन॥ बनिस्वर निकि
किनिबाजि: रथजुकतनगमनिराजि: सिरछत्रमालससोह॥

अतिदुष्टगरब्बअरोह: त्रयलोककंटककास: रहिकरमजगतउदास
यहआहिरावनआप: त्रैलोकप्रगटप्रताप: जुधकपिनराकसजो
र अतिनारपरिदुकुओर: अपआपसनमुषआइ: घनघाइघइ
अघार: सिरटुटेकटिअनसंधि: फरिऊवरअंत्राफंधि: भरकटनि
रतरमार: सोनयोअसुरसंघार: रनजुटेरावनराम: मनुदुकुनिज
यसंग्राम: निसचारसरसंधान: हीयमुष्टिहयहनुमान: मुरछाइमुष्ट
मार: तुल्योलंकेससंनार: पुनिचेतनाभईप्रान: उगिलयोषलअस
मान॥सोर ७॥ सरमुक्योअवधेस: काटेमुकट किरीटकर: नयो
लजितलंकेस: षिसिपेरेगदमोरुषल॥२७॥ कबित॥ रावनाइ
हारावनयहआइ: पुत्रसोमंत्रप्रकासीय: राकसरनसंघरे सबलग
टेसिन्नासीय॥ मेघनाद उ॥ बरबुल्यो बिरदेस: इंद्रजेतारउमगि
उर: मारिरीछभरकटनि समरनिसेषकरोसुर: करियेनसोचल
केसअब: कहिनजपेऐतीकरो: दृथीप्रसिधपोरुषप्रबल: प्रग
टनामममपरहरो॥ कबिरु॥ मेघनादजुध॥ इंद्रजीत आग
मनं॥ पिताचरनबंदनसप्रेम: करजोरिजोरिकीय: इंद्रजीतउठि
चल्यो: सबलदलराकससजीय: मेघकेतजेतासुरेस: पोरुष
पदपायो: महारथीसाहसअमान अनसंकितआयो: सोकलो
बिभीषनरामसो: सावधानरहीयोसमर: परमीसपरमपूरनपुरु
ष सजकुनाथकोदंकसर॥ इंद्रजीत बाच॥ छंदपधरी॥ करस
सत्रसमरपंडितसक्रुध: जाजुल्यकरतनयोकपरजुध: क्रोधिष्ट
कबकुअनदिष्टहोइ: कृतबरितकरेदषैनकोइ॥ जामवंत उ॥
ताकहंजबकाल्योजामवंत: दिचरनहोकुममचदकुदंत॥ मे
घनाद उ॥ निजगरबबोलितबमेघनाद: बिनुसमतासोकै
सोबिबाद: तोहिजरगजानिछाकतकुजीव: दुषजरजुमाल्योहि
दईव: अबजपेजुधजाचोअजान: पगमांकितोदिटकरकुप्रा
न॥ कबिरु॥ तबअसुरकोपिबालोबिसूल: मिलिरीछअंबि
लीनोसमूल: ताहीबिसूलफिरिहयोतास: पगपकरिजमिप
टक्योप्रकास: मुरछायतराकसषेतमाहि: होबरप्रनावनिहि
मल्योनाहि: कालतरमुरछागरीकरूर: सोऊग्रोबिरतसंग्रा
ममसूर॥ कबित॥ दुसहबिभीषनगदापानि: घननादजुदे

बोल्यो जद पिपित्रीयसमरजोप बलबयरबिसेषो। बिषमबीरस्य
तनी सकतिअमोघसंजारीय यहजेदषिलछमनअनग चितय
रमबिचारीय करिअनथ्या हिलकेसकहि रामप्रतज्ञाक्योंटरे
उरलगे बिभीषनसकेतियह राहसतेनिहवेमरे॥१॥ दहा॥ जो
निबिभीषनकेजतन सरनागतहिसधीर बीरघातनीसकतिके
बिचनयेलछमनबीरा॥१॥ कबित्त॥ इंद्रजीतबाच॥ नटराकस
मनतग लालनयनीतसुनजत रनकेममसाहकसतेज लाग
नाचितलजत रनसुरेसइंतकुंत बिषमबकुबारबिदारीय जा
लासुरासुरजुध करमतहात राजयकारीय मुहिहासतेपूजेजु
मन रममिलेजोआरन प्रतिनटप्रसियसमताप्रबल नाहिन
॥१॥ रनबिचारिसेषावतार अरिबीचजुआयो
प्रमान दुवसेनदिषायो सोईअमोघआसुर
तिचलारी लषनबीरउरलगी दुसहदुकुघाद
दषीयसुरनरनि हाहाहत्रयलोकभुव रघु
रस नाहीसोयोसमरजुव॥२॥ दहा॥ चेतसिषा
नेहाथो लागिबलीसबलेकुलोथि यहबचन
दिआदि असुरबलबुधिउपाईय लोथिनर
बेतजिगथेबिसाईय हनुमंतलषनधरिलाइही
यो॥ ब्रहमंडअषिलमापकविसन देवसोक
जीतउ॥ दहा॥ सकजीतलंकेससो बिजयसुन
लषमनसमर तुमसुषमानकुतात॥१॥ श्रीराम
हालछमनप्रीयप्रान नयनमनतुजनिरंतर
नीत सेवकनटसमहर कवनकवनगुनकरम
ाई सदारलोसुषसंग समयसमबिषमसहाई
सकल मोहनकुगहरातमन सोमित्रनसोवनयु
बोलकुलषना॥१॥ प्रगटबिलापप्रलाप करतनवु
लीलाअनुसरत दुसहदुषसोकदिषावत अय
रसोषआकंप महानिस्वासनिमोचत सूरजदितसंयाम सनयम
नहीमनसोचत रोदतबिषादहाहारवन नीरधारबरषतनयन
बरबीररामलछमनबिरह बिषमदसाफुरतनबयन॥२॥ श्रीराम
आहनवेसकानयो हेतमुहिजीवननाही कहाकरोकितजाउ
प्रानअवलंबनपाही कृतकारनसोईकिरन आहिसोईपरकार

A

Subord nate to

Posted at

REGISTERED LETTER RECEIPT—to be given to

FORM IV 5

पीनो: बिभीषनबपुरेह कहनलकेसुरकीनो: आरंभअवरकछुनोअवर
ष्टथीकालमहिमाप्रबल: ममरहेमनोरथमोरमन बांतिहरिदसकंधष
लगो कबि कहो अरक बिंब अथयो जयोतम बिमभचक्रतुव: बिछुरि
चक्र चक्रहरयि हेतमुदितसरोजकुव: षलफुल्लीयषेवार: बारिबनकु
मुदबिकासीय: मिलिपलचरबसमांस हरषजुगनिकतहासीय: अ
तिआसिनजूथपजूथउर हीयबिषादसुरराजकुव: रुपिरहेअसुरक
षिबीररस नईनिसासआमनुव ॥ श्रीरामबाच ॥ जामवंतकपिराज
समयउदिमचितकुसव: इहाजोरकारनउचित अषिलमिलिमंत्रक
रुअब समुषबिभीषनकहसुग्रीव: बकुनारसबुकीय: हेसकालयु
नदेह सकलबिधितुमकहसुकीय उचस्योबिभीषनतिनहियह
जानेसेनसचिंतजब हेमहाबेदिगदलकमह आनकुलसपतसअ
ब ॥ श्रीराम बाच ॥ दहा ॥ उचस्योरामबिषादउर: सुनकुपरमहि
तसंत तुमकरिआवहिबेदिते महाबीरहनुमंत ॥२५॥ कबिकुव
च ॥ आपाअवधिनरेसकी: मानिसीसहनुमान: धस्योलंकलयुद
हधरि: बिहितबुधिबलवान ॥२६॥ पयेतसपतसतहा: सोवतमंदिरमा
हि: कोलाहलकेसंकते नहिनजगायेजाहि ॥२७॥ सोमारुतिमंदिरस
हत: बेदिउगयेबीर: आनिधरेउचकारहा: जहारामरनधीर ॥
छंद पधरी ॥ रहिसमयबिभीषननिकरआइ: बाहरिबिसासिली
नेबुलाइ ॥ बिभीषन बेदप्रतिकरियेबिचारिउपचारकेरे: ही
यछाडिकपअरुसधरहेरे: परजागततुमअधिकारपाइ: सबजाति
हमारेहितुसुनाइ ॥ कुलपतस ॥ इहातसपतसनिनिकटआ
इ: बिधिदईबिभीषनकहबताइ: द्रोणाचलपरबतदिधदेह: हेषी
रदधिमहनिसंदेह: ओषधीसजीवनियुनअमोघ: वहिअनिनिर
तरउपजिओय: सजीवनिआवेकोजसिध: परजातनयेबिनुजग
प्रसिध अबकरुबिभीषनजतनएकु: दुषटरेरामउपदेसदेकु
बिभीषन बाच ॥ सबिसेषबिभीषनसुनिसुनाइ: अवधेसअग
सोईकसोआइ: ओषधीदिव्यआवेअनेत तिहिछुवतलषनउठि
उरेत ॥ श्रीराम बाच दहा ॥ आपादीनीरामयह सुनकुबीरसब
कोइ: असमानकअनउदित आनकुमूलीकोइ ॥१॥ रहातेद्रो
णाचलअवनि जोजनअंतरजानि: साखिलषदुरगमसनय: प
रबतबनहिप्रमानि ॥२॥ रामबचनसुनिसुनतसब बोलेसमय
बिचारि: अपनेअपनेबलउचित सोइसोईकहतसनारि ॥

नल त्रिरात्रि आवगवन: द्विविरि मयंदनि सिंदेह: नीलकपीस्वरऐक
निसि: हग्जुत आवन होर॥२॥ आगमनिरगम आपनौं: जामचारिप
रजंत: अंगदबिक्रमसमझिउर: बोल्यौ तहा बलवंत॥३॥ सबहिनके
बलवेगसुनि: मारुतिबलअंमान: समयदेषि कहिरामसौं: प्रभुआ
ग्यासुप्रमान॥४॥ हनू बाच॥ कबित॥ अबनसोच अवधेस: करहु
समर हनजुकिंकर: पेठि आगमपाताल: अमृतआनौ छिनअंतर: नि
सनाथ निपीडि: सुधालछमनसुषमेल्हौं: तवप्रतापरघुतिलक: षे
लहुजबलय हबेल्हौं: हिनमनिमुहि आमेबिनुदरस: देहतनहिक
रुरौं: कहिमारुतितोहादसअरक: करनिमीछिचूरनकरौं॥ श्रीराम
बाच॥ हनूप्रति छंद पधरी॥ यहसुनतरामकानोउछाह: जसरा
तिजनमहनुमानजाकु: सुनकाजजोपयहतुमहीसंत: मूलीलेआ
वहुहनूमंत॥ हनू॥ कीनोप्रमानप्रिभुबचनकाज: जयजयतिरा
मराजाधिराज: मिलिबैदिनपूछौहनूमंत: तिहिमूलीकहियेचिन्ह
तंत॥ रूस पतूस॥ तबबैदिबताऐचिन्हतास: तिहिपत्रपत्रदीपक
प्रकास॥ कबित्त॥ दूहा॥ पवनपूत तहांबोलिपन: उठ्यौगगन
मगआप: उरधास्योअवधेसको: प्रगटसुरूपप्रताप॥१॥ छंद पध
री॥ सोसुनोमंत्रमतनिसुनाइ: धरिबिनमुलकगयेधाइ॥ दूहा॥
दूतनिकहिरावनसोनिदान: मूलीकहपायोहनूमान॥ कबित्त॥
दूहा॥ सुनोजुरावनदूतसो: मंत्रयहेदुषसूल: करमीलतअतिक्रोध
करि: सहिनपरतउरसूल॥ ३॥ ऐकदैसबलबुधिअति: कालनेमि
तिहिनाम: ताकेसमयनिसीथनिसि: रावनआयोधाम॥४॥ कालने
मिदसकंधकहं: उठितहासनमुषआइ: करिबंदनजुगजोरिकर: पु
निपूछेपरिपाइ॥४॥ काल नेमि बाच॥ ऐकाकीप्रभुआगमन: कौ
बअरधनिसिकीन्ह: कलघुकिंकररावरो: अरुअपआधीन॥
रावन बाच॥ छंद पधरी॥ सुनिकालनेमिमुहिउपजिसोच: पु
निदेहुनउतरफेरिपोच: हनुमतजातओषधीहेत: बानरअसंक
बहुरनबिजेत: करियेनबेयओषधीकाज: यहकारिजतुमहीसरे
आज॥ कबित्त॥ इंद्रजीतसकतीअसोय: लछमनउरलगीय: जो
अचेतरनभूमि: ताहियेप्रानजुसागीय: महासंजीवनिमूल जो
पिउनपतिद्रोणगिर: अमरनरनिआपात: रहतातिहिगोरनि
रंतर: ताहितजातहनुमंततहां: करहुबियनबलबुधिकरि: आ
वैनप्रथमसोरविउदय: सत्रुकाजतोनहिनसरि॥

ह्रिश्॥कालनेमिकरजोरि कहोसुनियेलंकेसर तुमआपुनअरुरंजी
त सबबीरमंत्रिबर बिद्यमानहनुमान पुरीलंकापरजारीय त्रा
हिहिसिसुत्रीय भयोकोलाहलभारीय कवनकृतासबियहकर
न हेलमात्रमोहिमारिहैं सुरअसुरनागजिहिनाहिसम हवति
हिकोननिवारिहैं॥१॥ अगमउदधिकूपयो निषलतवधमनिह
स्यो मारिसमरअक्षयकुमार बनसुषदबिगास्यो दुरगलंकद
ह्यो दुसहतुमसंबहिनिदेष्यो ब्रह्मपासबसपस्यो बध्योतउब
सनबिसेष्यो हनुमंतहतजाकोहग रावनचित्तबिचारयो तुज
बलत्रिलोकजाकेअतय बिग्रहतिहिनबधारयो॥२॥रावन॥
रहा ताहिकलोलंकेसतब महाक्रोधउरमेलि आजहमहितुम
गुरतये करतकालसोंकेलि॥१॥कालनेमिउ॥ डरुघाअयोमर
नहिन सेस्योअसुरसंबाहि याकेकरमरिबेअगति उहामरन
गतिआहि॥कबि रु॥ कबित्त॥ कालनेमितिहिकाल बिबिधिम
याबिसतारीय परबतहेमालयसमीप सुषथानसंवारीय तह
बनारमुनिबेष आपबेगोतपआश्रम सिषअनेकतिहिसंग क
रतबिबहारकपटक्रम हनुमंतआनिअप्पततहां करजोरिबंद
नकरीय सिषहोरुबीरबंछितसकल द्विजसरूपआसीसदी
य॥१॥कालनेमि कपटरूप॥ छलराकसपुछयो कव
नतुमकाजआतकत सूरबीरलछमनसंग्राम हेगि स्योसकतिह
न सालिबिसल्यामूलि आहिदोगिरिऊपर अनतासकरउ
दय मोहिलैजेबीमुनिबर अतिबटीत्रिषाहनुमंतहो क
रिबिसासलगोकहन निरुरनिवांनकरुजलनिकट बिप्रब
तावंरुबेगिबना॥१॥कपटबिप्रहाकलो कपिजुय
हतस्योकमंडल करियेपाननिसंक जतनजुतहेसीतलजल
महाबीरहनुमंत आपफिरिबचनउचारीय अलपनीरत्रिषअ
धिक बिषमनहीधरतबिचारीय सोईसुषदबतावरुसरित
सर करिमंजनअतपानकरि सुनकथासुनहिमुनिराजमुषि
बेगिरहाअवहिबरुरि॥२॥कबि रुबाचाहा॥ संगदयोरकक
पटसिष आयोबारिबतीर सरवरतिहिमारुतिधस्यो पक
स्योमकरीपारा॥१॥ तबकाढीगहिनीरतें बारिचरीबलवंरु

मारुति दुरजनपत्रजौं: बिजकीनीसंतषेक॥॥तिहिपायोपंचततहो
दिव्यलहीपुनिदेह: बालतस्वरगबिमानचढि उचास्योमुषयेह॥
॥२॥मकरी॥ इंद्रलोकहीअपछरा: धंमामालीनांउ: रिषसरापतइ
राकसी: ग्रहरोनीहहिगंउ॥३॥कीनोमकरीरूपकरि मेंतवबाधक
तंत अंपपदपायोआपनो तवप्रसादहनुमंत॥४॥कालनेमिहैदै
त्यपह: जिहिआअमतुमजात पग्योलंकेसरपतित: बिघनकाज
बिष्यातपन॥ताकोमूलिबिसासतुम: नहिकरिबोहनुमान: याहिमा
रितेऔषधी: प्रतुक्रतकरकुप्रमान॥ कबिक॥इंद्रलोकगईअपछ
रा: देकपिकहंउपदेस आयोमारुतिफेरिहो: मिलितहाकपटमुने
स॥५२॥छंदपधरी॥ कपटी॥करिमायाबोलोकपटकार: बिआ
मछिनककरियेबिचार: गुरमंत्रप्रसादहिंअषिलग्यान: मोहिहूत
नवष्यतबरतमान कहिब्रिष्टदेषतदिगंत तहालछमनहेऊ
ग्रोतुरंत: लाजेसजीवनिमंत्रलेकु: दहनासोहिगुरजोनिदेकु
मारुतिग्योकहतमात्रसिरथापमारि: सबलेकुदहनांगुरसंभा
रि॥कबिक॥ मारयोकपिथापपर फग्रोमूक: तबलग्योजारधरग्र
सुरलंक: मुषबहतरुधिरधाराअमान: पापिष्टदेतनहाहयेप्रांन मु
षकहोनरलजिहिरामनांम: धरिदेहदिव्यगोदिव्यधाम॥क
बिना॥कालनेमिकोबंधु सबललंकेससहारक कालदहनिहि
नांम: देषदेवनिदुषदारक: वहरोणगिरआर: असुरमायाउप
राजीय: तरुबल्लीत्रिनपत्रपत्र समदीपकसाजीय: मिलितोप्र
कासतुवचक्रमह मानकुपंरवतअगनिमय: रविदुष्टकपटमा
यारहसि: नाजिसुअंतरध्यानलय:॥ कबिकुबाचा॥छंदपधरी॥
स्वमित्रास्वपनप्रसंग॥ सुषसदनसुमित्राकरतिसैन: यहस्व
पनदेषिउपजोअचैन: समूलबोमतुजअस्योसाप: अकुलास्र
सुनलिषिउगीअपे: सोसपनप्रातसमयेसुनाइ: इहकलेजुके
सप्राहिआइ: बोलोबसिष्टगुरतबबिचारि: सोईस्वपनसुनायोतं
हिसंभारि: दुस्वपनसांतिहितहोमदांन: गुरलग्योकरनबेदिक
बिधांन: इहाबेगिहोमथलनरतआइ: सुनकुंकअनलप्रगट
सुनाइ: समयिमिलिबेदनअगरसंग: उचारबेदसाषाअनंग
सुनलालिकेरनीरजमृनाल: घनसारकृतपटजवप्रवाल: क
तिलउसीरसबहोमकाज: बिधिजथाजुकतसमद्रिमसा
जि: पूरनाहुतिकीनीजबप्रमांन: दीयनरतहिजनतहांउचित

हान: परबततिहिआयेपवनपूत: अवलोक्योद्रोणाचलअनंत अ
सुरीतहामायाअमान: प्रतिन्हरुहदीपकपानपान: कपिनयेतहा
बिसमयअनेक: औषधीवृछचीन्हेनएक: लीनोद्रोणगिरहाथ
मेलि: कंदुकजोबालककरतकेलि: उचक्योकपिद्रोणाचलउ
गर: अंतरिषगगनमगचल्योजाइ: देषिगिरदीपमालादिगंत
सबनयेसुरासुरचकितसंत: रहानिकसिअजोधाउपरआइ: जा
नेजुनरतकेउअसुरजाइ: दससीससहास्कदुष्टदेषि: हारुमुषबिसष
मास्योबिसेषि: मारुतिसुनिस्योकहिरामराम: तहानयोअचेतसुधिन
हिनताम: रघुनाथनामजबसुन्योबीर: अतिनयेनरतअंतरअधी
र: अकुलाइनरतबदोरिआइ: उरलाइलयोमरकटउगाइ: मूरछ
जबजगीहनुमंत: बिथिजुकतकस्कारनहंतता॥ नरंता॥ अंपातय
तहोहिनरीअज: कपिकरियेअबेसुसिधकाज: ममबानचढ़ुगि
रलेमहंत: बिनुतरनिउदयपुहचेतुरंत॥ हनूम॥ पुनिकसोह
नुरघुबरप्रताप: मुहिबिसषबिथानाहिनबियाप॥ कबिकाइह
बहिनरतकेचरनबीर: सोकाप्योपरबतलेसधीर॥ कबिताद्रोण
गिरतरपत्रपत्र: सारंगसजोईय: दुष्टअसुरमायाउरंत: कछुची
न्हिनकोईय: उदयादिसिजनुअर्क: उदयअतिजोतिअमासीय:
त्रमनुस्त्रीयनंगप्रगट: सरकंजप्रकासीय: कैगयोप्रभातयह
बीचही: स्वामिकाजनहसयो: हनुमंतपरीलजाहीयै: तबतन
त्यागनतकयो॥१॥ तहाअनंतअवधस: जीयमारुतिनयजानि
य: मायाअसुरअमान: प्रातअनंतयोप्रमानीय: अरकउदयजो
अषित: निवडितमपुंजनसावत: जोमारुतिमिलिजलदजाल
षनमहबिषरावत: नगवंतसुअंतरनावत्रम: नगतचितनय
नजयो: नहीसहतुसहुषदासको: नुवननुवनजयजयनये
॥छंदपद्धरी॥ इहमनुषनावरघुनाथआप: बिसतरबिषादरोइत
बिलाप: यासमयअरधनिसिनईअतीत: नगवंततदपिमनअतिस
नीत: योकरतबीरहनुमंतआइ: सोयस्योअपरबतसुनाइ: इहाक
पटदीपतेगयेबिलाइ: औषधअधीनसोईरहेआइ: आलंगनकीनो
रामआनि: पनपोरुषमारुतिकृतप्रमानि: करिजतनबेदिउपचार
कीय: सोछुचतमात्रमूलीसजीय: सोवतसेउगिलछमनसधीर: रि
पुमारिमारिमुषबदतबीर: लहिप्रानमनकुउरलषनलाइ: रिसहर
षबढ़ोरघुबेसराइ: इहिसमयबजेदुंदुभिअकास: सुरकाजनयो
जानोप्रकास: तिहिपस्योचितदसकंधत्रास: निहचेसुजानिनिज

कुलविनाशः दैत्यसपत्नसनिगंकलोक
हनूमंतगिरद्रोणतरुः सजीवनीसंगेत
गसोऽश्रापनिकेतः॥ प्रातसमयनररूप
रः सानुजगटे विचसमरः देवेरामउदारः
वानरवीरविरूपः सियनारगरजतसकल
श्लोकवित्त॥ कालनेमिवयुकरीय
हनुमंतः द्रोणपरवतउपारीयः
सीयः लषनकालचंचयो दुमहनुदेवरसो
आदरसः हेतनकंकनहाथके
प्रतापरघुनाथके॥ जतिहन द्रोणगि
हनु॥ कोलाहलकृतकालकपिः
दाचलविषयः यरघरसुसंजयः
सः देषिपस्योउरहाः
॥ बीरयातनीजोविषमः
विपरितहोतविधाना
नतहकेलोः ऐतोनकाल
निधमहुथो॥ कवित्त
तोमरत्रासिगरः
मास्यो स्न वातनिविधः
हुमंतयेः कोकमलिकुविरः
सहरयतनरः॥
रावनहिमुनाणि
कारयवारः विविधिपुमः
याद्रेः ग्रह मरुत्
मंत्रीः वासवजितमाय
मायामरेनतापम
वनिरिजिः
हमदिमार
सिमनुष्यः
वारुरालपुविविधिः
वार्कवहरीरा
रविनर्कवर
नहः

चरः सनमुषजरजिगिस्योरिपुसंकरः नरसोजीयप्रहसतमहानरः ब
अमुष्टिरनमस्योबिसेष्यो दुवदलअतुलपराक्रमदेष्यो प्रहसतपो
रुषजगतप्रमाण्यो असुरअचलकमहआन्यो प्रहसतगिरतडु
चितलकपति उतबेगधुनतहनतकरिरिसअति इहरावनचतु
रंगचलाये बाजेअगनितबीरबजाये सुतबंधवमंत्रीतरसाजे
बीरअसुररनभूमिबिराजे॥श्रीरा मबाचा पूछोतबेबिभीषन
रघुपति मुहियेसबेबताउमहामति बिभीषन बाचानगमनि
जरिपुकवचकसिनिसचरः कतरथजिरिचवदंतीकुंजरः षड
गपानियहमेयनादषलः बांधोरदसमहरहितुजबलः पिताअ
अगदोअतिपोरुषः रोषदिष्टचितवतअपुनरुषः देकनकमय
छत्रसीसदस अयधजीयहरावनराकस असुरअसंभासमह
रआये बिबिधिबिन्हतेसबेबताये॥कबिकबाचा बाजेबीरध
नुषटंकारव असुरसमूहसुगाजतआहव बानररीछअतंगमह
बलः करतसंग्रामहरषकोलाहलः इहसुग्रीवआइरनअंगन॥
रिसउफनातबकास्योरावनः अतिबलकीसअसुरमुहआये अ
द्धितरोवरसारउगये गद्धेगयाषिमयंदनितेनल बीरचारियेबां
नरअतिबलः इतकपिराजउतेअसुरेसुर बीचआनिगटेतए
बनचरः चारिसिलातिनकपिनिचलाई उनयउतयजोजनअ
धिकाई रनतुंयसरनिमारितेरावनः कारिसिलाकीनीषतकने
कनः इहाउतारिमुष्टिनकआयो अतिलबानसोईमारिउगयो
दुसहसुग्रीवअरिकरास्यो रावनसोईदसबानबिहास्यो इह
अहिबानचलायेआसुर अतिसतेजलएपोकपिपतिउर गिस्यो
सुग्रीवयारनअंगन राकसकहिगरजोजयजयरन सुमोजबे
यहसबरपवनसुत ऊतेअनीअवरेतबहनुमत इहअतंग
जुहनुमतआयो अतिरिमहबीरअकुलायो षेतगिस्योसुग्री
वहिदेष्यो बिषमबेरअतिरोषबिसेष्यो इहयरिबाल्कपीस
उगयो प्रनुलगिहनुमानपुहचायो॥छंदउथो राहगिफिरे
पुनिहनुमंत दससीसकेचदिदंत रिसतरेरावनराइ इहतु
जाबीसउगइ मारुतिहिमुष्टामारि सोगिस्योबकुरिसतारि
करिकोपमारुतिकीस समजुटेरनदससीस यरिबयरह
नुमतथीक हरिहयोरावनहीक परिदसऊमुषिनअपार य
रबरतओनीधार तहाकछुकरावनचेत हसिउग्रोपोरुष

हेत ॥ इहा अगनि रूप जु आइ ॥ नरजु स्वोनील सुचाइ ॥ जल बां
न पंकति जाल ॥ कृत इसो नन तिहि काल ॥ तिहि तयो नील अचेत
षिति स्वो कपि रन षेत ॥ इहा सुवट्वांन आइ ॥ अनचेत नील उगाइ ॥ रन
रेषि रावन राम ॥ करि कोप दुष्ट सकाम ॥ धायो सुआयुध धारि ॥ नन निछ
त्र रहि निहारि ॥ अवधेस बिचित बआइ ॥ तयो लछन बीर सुनाइ ॥ जुध
पस्यो पुवन जोर ॥ अति बाहन ईदु कुओर ॥ करसजत जो ईतिकेस
बसरो ससार बिसेस ॥ हरबीर लछमन होइ ॥ सरनि करछेदत सो
इ ॥ सारथी रथ हय संग ॥ इहा हयेलषन अंग ॥ सजि षितीय रथ इ
ससीस ॥ आरुलो आसुर ईस ॥ बहिबांन बीर बिधांन ॥ जुद्ध ओर सम
र निदांन ॥ इतलषन उतलंकेस ॥ बढि बीर दाव बिसेस ॥ इहि बीच
हनुमत आइ ॥ धरि अग्र करि रथ धाइ ॥ कृत त्रमुन सो ईआकास ॥ प्रति हनो
रथ हि प्रकास ॥ दससीस अद्भुत रेषि ॥ बिचगयो लंक बिसेष ॥ अ
वधेस बिजय उदार ॥ कपि नाल कृत जयकार ॥ इहा ॥ रथ टूटो इ
ओ जुरन ॥ रावन राकस राइ ॥ मुहलेआयो लंक मह ॥ हित सुतत्र
तहताइ ॥ अ ह स त ब ध ॥ घाइल कृतो प्रहसत थर ॥ बिषम सुनी
यह बात ॥ निरतयलंकातें निकसि ॥ बीर निस्चो बिष्मात ॥ ३ ॥ गयो प्रह
सत जस्र गति ॥ मिलि सनमुष संग्राम ॥ जग पायो उजल सुजस ॥ म
रत सैन तारे राम ॥ ३ ॥ कबित्त ॥ मस्चो प्रहसत संग्राम ॥ कि निराकस कु
ल किनीय ॥ दल समूह क्रम रथे ॥ जुयन कहं पि निदीनीय ॥ हाहार
बथर थर नि होइ ॥ लंकातयलंगो ॥ सुनी बात लंकेस ॥ तयो दुष
उछव नगो ॥ जुबरे जु असुर निरिनि रिअवर ॥ तयो आनि एकें बनु
ब ॥ संग्राम बिषम सटमरन सुनि ॥ हरहा इरनि बास कुवा ॥ ॥ इहा ॥
करधर पीटत सोक करि ॥ रावन अति दुष रोइ ॥ कृत अपने पूरब कुम
ति ॥ सब निबतावत सो इ ॥ ॥ रा व न पूरब कृत प्रकासनो ॥ क
बित ॥ हिंवस इक सिव देव ॥ कुतो कुगयो दर सहित ॥ परमर
बित ॥ सिव सम्पूरब तप प्रसिध ॥ कैलास थान थित ॥ तहां देषि सिव गन सम्रह
परिबर अति पावन ॥ इक नरी नामो अद्भुत ॥ आकृत कपि आनन
बोलो तब नरी गन बिहसि ॥ करत मो हि कछु हासि क्रम बिधि
दयो संतुष्ट जुतो हि बर ॥ हेति हि बाहरि रूप हम ॥ ॥ कपि आन
नगन कलो ॥ रोष जुत सुनि यो रावन ॥ कुल पुलसति उतपुन मह
जत्रे लोक सतावन ॥ अवर अंग प सुंग्रोप ॥ बदन नर कै हैं बांनर
यहे आ षि उप्तपन्न ॥ दरपत बहुरि हैं दुरधर ॥ अवतरे सु बांनर
अमर ॥ वृथा न हरसे वक बचन ॥ नवत असबे अब हे

कसकरकुअनेगरन॥२॥ इकराजाअनरण्य कुलेछत्रीरविबंसी
य बयपूरनतनहृय प्रगटनुवकिनिप्रसंसीय मैअहमितिबल
मानि कलहजाचंमाकीनीय तिहिजरनेजीरनअबलजीव ल
सिओटजुलिनीय मुहनरसुपस्यो दीयगेलिमे गरबता हिकुल
कोगयो कुहस्योताहिअनसंकहै रूपमहलजितनयो
अनरण्य॥ अनरण्यमोहिउचस्यो सुनकुधनमदलकेसुर
महाबीरममबंसमांझ निजदेहधरहिनर सोतोकहकुलबल
समेत समहरसंघारहि अमरहदकरिअनय अखिलनुवनार
उतारहि अवतस्योरामरविबंसयह हरिलायोदलमलहरि
नहीहोइबचनमिथ्यानियत कसेजुछत्रीयक्रोधकरि॥७॥ बरदे
नोमोहिब्रह्म मैंजुमागेमनमानें नालकीसमयनह एनगन
तीमहआने धनुषबानसंधान नीलआयुधयेनाषे नरबराक
कोनियत राजमदचितनराषे यहरामधनुरधारीअनय बानर
रीछअसंषिबल करिकोपलंकयेराकस्यो दसहिसिलगेदुसह
दल॥५॥ बेदमातीनामोबिचित्र इकबालअजोनीय बिवरद
रतपबिहत महासाधतरहिमोनीय मैताकोतपबलअमान कु
तषंकनकीनो दहनरोषदहिदेह देविमुहिआपजुदीनो अवत
रीजोगमायासुयह सुतानामबिदेहसुत जगबिदितसुजान
कुजानकी हगबंसममनासहित॥६॥ मोहिबचनमारीच प्र
थमजकहेनीतिपर पुनिबरजोहितचितप्रमानि बितीषनबु
धिबर नंदीगनअनरम्यनरेस इकबालअजोनीय नहिनर
तनिरधार अंतकेहेसोईहोनीय अनतंगबीरजुकेअनय रहे
कछुकअवसेषरन मैंकरेकरमजेमानिमन मिलिसंजोगअ
योमरन॥७॥ कुंभकरनबलअकल अयननिद्रअभासीय येक
छुधाआराधि बिषयलोलुपघरबासीय अषिलसुरासुरनरअ
रूप कंभाअनुरागीय अजकुसोवतअनय आनिसिरपरेअ
नागीय पोरुषप्रसिधकिहिकाजपुनि दिनपलदेजुनदाषी
ये कहिकुंभजगावकुजतनकरि रविमंडलजसराषीये॥ क
बित्त॥ छंदपधरी॥ यहसुनतअसुरदेखिअपार पुनिकरेआनि
बहुतेप्रकार हसतीपदमरदनचरनहोइ सुषसयनतदपि
जागेनसोइ हकरतअंगमुद्गरप्रहार सोलगेपोयुरवनबि

नुसंनार: निस्तयबकुबाजतस्वासनास: आकाहमनकुगरजतअक
स॥सेवकबाच॥रावनसोंसेवककहोराज: कीनेअनिकहमजत
नकाज सेवेअसंकजगेनसोइ: हमिरहेबकुतहमकछुनहोइ: पुनि
तिनहिकहोरावनप्रकास: त्रीपजतबबदेहैंकछुतास॥कुंन
कर नसत्री॥ बहुनाकुंनपूछीनिसेष: ऊपरेबचनतिनजतनएष
निश्चयिपूरनभईनाहि: जागेनतऊजोकालजाहि: अबसुनकुम
रमकहिकुउपाइ: जागिहैअवनजोनाइजाइ॥कबित्त॥सुनकि
नरगंधबमिलिसमाज: सुरकंमालाटककरेसाज: बाजित्रबिवे
कसुरबिबिधिबाजि: अहअहिप्रतिधुनिमिलिगगनगाजि: बध
नरगनाटकबिधांन: गतिजेहतालसंगीतगांन: सुनिजगपोअल
पनिद्रासधीर: बिलमयमनउपजोकुंननीर: आयोतबरावन
पहअसंक: उठिमिलेभ्रातउरलाइअंक: अपनेगोरबेगेसुआइ
पूरनभमानआइरहिपाइ॥कुंन बाच॥इहाकुंनकरनबोलो
असाध: बिनुअवधिकस्योनिरजुबाध: कारनलंकेसुरकहोक
ज: अनसमयजगायोमोहिआज॥रावन॥सुनिकलोतबेरांव
नसक्रोध: बानरनराकसबदिबिरोध: बनचरनिकस्योमिलि
सेतबंध: सुषहीषलआयेलांघिसिंधु: जाजुल्महोतबकुहरजुम
कपिसेनलेकलागेसक्रुध: सुतबंधुसुनटमंत्रीजुसूर: परिषेतप्र
बलपोरुषसपूर: करिबालसंन्यासीउनयकंक: निसचरनिमारिबादिनि
संक: आसुरअंगजरुअनेक: इहामरतनहीकपिनालपेक: जोमरतले
ततांक हंजिवाइ: आनतसजीवनिगिरिउगाइ॥कबित्त॥करिबकुजत
नजुजांनकी: कंलयोहमहोइ: रिसबिसारिमोसोंरहसि: सुषहिनवो
लतसोइ॥१॥जोरकीयेतेरोसंजरि: मरिजमसादनजाइ: कहियेकुंनबि
चारकरि: याकहंकवनउपाइ॥२॥रामरामवाकहरदत: जुगनरिछंन
छंनजात: जोंचातुकयनकुंदचित: बिपतिसहतबिललाति॥कुं
नबाच॥अवरुककुउपाइकः सुनिरावनछलसाज: करिसरूपतू
रामको: करकुजथासिधकाज॥४॥जालंधरकोकपटजुत: बिसु
धस्योजुबेष: आनिअचानकसमयरक: इंदछली बिसेष॥५॥राव
नबाच॥कबित्त॥ सुनकुकुंनमेंसमझि: यहेउदिमत्रनुसरयो
हेतजुसमयनिहारि: कपटतापसतनकरयो: बिमलबसनतक

लचा तरनबनमालस्यामतन जराजूटकरिकि सिनिषंग धरिपानि
बानधनु कृतरूपअनूपमरामको पतनीटस्यौनएकपन परत्रीय
रसकिंबापरस मेरौचलेनमूलमन ॥१॥ छंदप धरी ॥ इहिहेतजग
ऐतुमहिआज करियेबकुनरिपुनासकाज ॥ कुबनीतिप्रबोध ॥ पू
छौनमोहितुमप्रथमपोत हमसोचकीयेअबकहाहोत जानकीह
रीउपजोजजाल करियेबकहासोबसोकाल अबकहुजोपूछतमो
हिआज सुनिलोकबेदमतमहाराज ॥ कबित ॥ राजाअरुजुवरा
ज प्रगटप्रोहितमंत्रीपर इनहिकुलछनश्रुत सुनहुअतदेलकेसर
कामी कुटिल कुसंग कृपनकृतहतककुबोधी सोदुषहारकनहि
नसेव जनबेदबिरोधी पावेनजगतसोनासुपे कारनसंपति
नासके सुरअसुरजहिपनरहरसुकबि येनांजनउपहासके ॥ छं
दहेअ बरी ॥ कामी बाम मूढ कुल द्रोही क्रोधी कुपुरुष हवहि
अरोही कृतघन कातर कलह कुसंगी क्रूर कुटिल अलसी ऐ
कंगी देव दोष द्विज दोषअहाता दुरबचहारुनबचनबिष्माता
षंट क्रूर षल निलज निमोही बादीदईव कुबादी द्रोही प्रकृति
छली झूठो जेहपापी अजसी लोभी आतमथापी सरबनषीअब
बेकअसोची अजसी अदई प्रतिमापोची बातुल बधिर गंगतन
बामन अंगहीनकोढीअनपावन अंधअबिद्याअधमअमानी ग्प
तिहष्टिगबिष्टअग्यानी इतिअलिष्टनृपजेआही तिरसकारसब
करहीताही ॥ कबित्त ॥ कुमंत्री ॥ दूहा ॥ मिलेनलोकसरपसुष
बपुकिंतनबिसेस सोधनप्रजानराजपेह जहतुमंत्रप्रवेस ॥
क त नृपदेइसिरमार सचिवसोइछाचारीय काजमनोरथ
करत बिबिधिफललाभबिचारीय जोरहकमजारजथ पलपि
सतप्रयलपय जतनजोनिमनमोदमानि नृपसोवेनिरभय फिरि
षारअघारकुबुधिफल महपतिसोचतमनहिमन अतिदुसहअग
निआवहजो करतदहअंतहकरना ॥१॥ जथाजत न ॥ मदनद
लोनिरमूल उमातिहिहेतबामअंग कालकूटकृतकवल सो
मताकाजसालसंग प्रलयकालपावकप्रचंड दिगधस्यौजुदारु
न तालगिगंगतरंग सीसजटजूटसकारनु बसकरेसबलन
यदधके बिबिधिजतननिजतनबहत कोतुकीरुद्रतउसत्रुह

त-राजनीतितत्पर रुत॥१॥उषजेरोपेओनि कुसमचुनिलेयकाल
क्रम: लघुपोषेचितलाइ सरलतरछेदिकरैसम: निमतउगवेनिय
त: महकंटककरिमंडल: बिषमसंगकरिबिरल कुतनजुतसमयदे
यजल: कृतउचितजुमालाकारकौ: निसचयतिहसाधैनृपति: सुष
अनयंराजनरहरसुकबि: इथीजुगतैपुहविपति॥२॥छंद पधरी॥
नारदयहमोसोंकहिनिदान: गहिचरनकहतकुंगूढ्यान: रामहिम
नमानुषगनकुराइ: सीतनमानुषीहेसुनाइ: साषामृगनाहिनम
हसमाज: येअमरअसअवतरेआज: अबकुजोपूछतमो हिएकु पु
षटरेसकलमैथलीदेकु: सियातयहैलकेससाथि: अतिक्रोधहज
कुरहिहैउपाथि: राघवसोंकरियेसंधिराज: अपराधसबैछमिहैं
सुआज: समजावसुरासुरकरतसेव: सोईदीनबंधुदेवाधिदेव॥
रहा॥ अरथउपाजितधरमहित: संतति हितरथसाजि: सुतउपजे
तपसाधिकैं: मुकतिहोतमहाराजि॥कबि रा॥छंद पधरी॥यहसु
नतजस्योदससीसअंग: हृतमनकुनयोपावकप्रसंग॥रावन॥स
मरषहबोलोअसाध: बकुतुमहिकरतनिराजुबाध: सुषसेजज
ग्यररहुसोइ: करियेनकुंनकलपनाकोइ॥रहा॥कहावलीही
नीतिकी: अनपूछेउपदेस: सुनिबेकोंनाहिनसमथ: बिअरबमो
बिसेस॥१॥कुंनजगएजुधकहं: नहिनपदावननीति: सोवनसो
रुचिअधिकसी: पुनिनोजनसोप्रीति॥२॥केतोलरकुउछाहकरि:
मिलिसुषकरकुकथाम: करकुबिनोषनसंगकैं: बहुगदेहैंरोम
॥३॥सोररहुघरजाइसग: करिअहारअनपार: कोटिकीटमरक
टकहा: मेघनादकीमारा॥४॥मंदोदरीउ॥छंद द्वैअषरी॥आईमं
दोदरिइहिअवसर: करतबिषादमीठिकरसोंकर: रावलिष्ट
भलीकाहोंनी: कतसुनतनहीहितकीकोंनी: कुंनकरनसमहि
कनकोई: स्वामीकहेवामानकुसोई: इनहिसुरासुरगरबनसाए
अबहितकाजजगएआये: कहेसुमानिबचनप्रीयकीजे: देषि
समयकुलअनयसुदीजे: नावीबसजोमरेअसुरसट: सरसहत
स्वामीहितसंकट: रामनमानुषमानकुरावन: निगमहेतनुवन
सावन: अबलीयतुमहिकाजअवतारा: सुरतेतीसकोटिबिसता
रा: नयेनालकपिदेवमहासट: समहरकरतलंकगदसंकट:
कबित॥दीनबालप्रहलाद: दुसहतिहिपिताकष्टदीय:

पश्चाहि ऐक ॥ द्विरद नयागिरतेऔरीय ॥ जलफुजलनसंजोग ॥ प्रानजबजातपु
कास्यो ॥ दीनबंधुनरसिंघदेव ॥ अतिदुखितउधास्यो ॥ कीनोंसहाइनरहरसु
कबि ॥ पंतफटेधरथरहरीय ॥ ह्वांफारिहिरनकसिपउदर ॥ कृतसरूपअस्तु
तकरीय ॥ १७ ॥ जलअगाधतंतानिजंत्र ॥ गजग्राहसुग्रहीयो ॥ चरणसहस
दसमांहबारि ॥ अनअसनसुरहियो ॥ घरछिजोबलघरो ॥ समयतिहिंधि
रहसंतास्यो ॥ जलअलीनकरमुष्टिमात्र ॥ प्रभुहरिहिपुकास्यो ॥ वृतजास
सरनपंजरबिजय ॥ ग्रहिसमूलषनिगहिहैं ॥ निजदोषबिसरिनरहरसु
कबि ॥ छमिअपराधनछंहिहो ॥ १ ॥ जामहगनिनयजानि ॥ कवनत्रीयबेष
नकीनों ॥ करिनिछत्रकवीसबार ॥ द्विजनतुवमंडलदीनों ॥ तालुको
मधिमान ॥ गरबछनमांहगमायो ॥ बालिबलीबानरबिष्यात ॥ सरसक
नसायो ॥ कोगनेअवनिटारेकष्ट ॥ राकसमारेमांहरन ॥ बंचिहैनतुम
कुसोरोसबस ॥ निसचयममसानकुबचना ॥ १ ॥ प्रथमहरनदीयप्री
या ॥ जोगमायासीयजानकु ॥ अहिपासिनबांधेअनंत ॥ वहपेसुग्रिआ
नकु ॥ सकतिहयोतछमनसंग्राम ॥ रिसरामसहोदर ॥ अवरदोषस्ल
हि ॥ प्रगटतुमकरोगरबपर ॥ बिधिबंसबिस्वबंदितबिस्त ॥ आपुनरा
वनअवतरे ॥ कृतमारनद्विजतारकिरि ॥ कमहिआततारईकरे ॥ ह
रीसीयातुमबनहि ॥ नागपासनिसुतनांधे ॥ सोदरमास्योसांगि ॥ स
बेअपराधजुसांधे ॥ बांमनमांगित्रिपेकुभूमि ॥ बलिसरबसदीनों ॥ सो
पेबांधिपताल ॥ पग्यकीनोंआधीनों ॥ अपराधबिनाधरिद्वेषउर ॥ करतअ
कारिजआंनको ॥ बंचिहैकोंएतेदोषबस ॥ नरहरबचननिदांनको ॥ १
रांवनबाच ॥ दहा ॥ कुंतकरनदिवरअकल ॥ सुतजेतासुरराज ॥ त
ोरांवनकीत्रीया ॥ इतोकहाकरआज ॥ १ ॥ कालनबातबदावको ॥
कुंतसुनकुदैकांन ॥ करियेजोपेमनकहे ॥ बिधिआछांहिनिदांन ॥ १ ॥ यु
रमीगेसरितागहर ॥ तंतउनयसमसूल ॥ चाहतहैहैचोपरी ॥ सोतोबनै
नमूल ॥ २ ॥ छंद ॥ अ षरी ॥ जोमिलेबिभीषनषलहिजाइ ॥ सोते
नतुमकुसांधोसुनाइ ॥ यहसुनतकुंततनलगीआगि ॥ जाजुलिरोषप्र
तिरोमजागि ॥ कुंतबाच ॥ समप्रेमकुंतबोलेसुनाइ ॥ लंकेसमोहि
मिलिकवलाइ ॥ यहअंतमिलनहैभ्रातआज ॥ रनतीरथतजिकुप्रांनरा
ज ॥ कबिताताजिबिष्यादपोलसति ॥ उचितनहीसोकसमयथेहि ॥
जीयतकुंतकरनहिअजेय ॥ जगबिकलकरेजिहि ॥ कवनकालहिग
पाल ॥ रामसानुजकपिराजा ॥ कवनकाजयहकोहि ॥ समरजुरिअ
मरसमाजा ॥ मिलिजदिपबिभीषनअसितमुह ॥ कवलकलेवरकाल
को ॥ जगजेकुंतकोप्रांजबे ॥ सबलबीरसुरसालको ॥ कबिक

॥छंद॥ दैजु चलौ परदहुनां : कुंभकरन अतिक्रोध : कुवहाहारवलंक
महः पुनि कोकरै प्रबोध ॥ २१ ॥ छंद पधरी ॥ मिलि कुंभ भ्रात उरला
गि मोह : छनतास सब निउरलगे पोछोह : रसबीर कुंभ निकसे रिसाइ
कुवसब्द लंक महहाइ हाइ : रनिवास सबै इहाउ ओरोइ : हाहंत बो
नियरयर निहोइ : कओज सांत अलसात अंग : अनअवधि जगे पोराकस
अनंग : इहाहृदये सहसद सकल सआंनि : मदपांन करै मनमोदमां
नि : मिष्टांन चारि सतमन मगाइ : बलगये बकुंभ मेवा निषाइ : सत
अष्टमहिष मांन वइकीस : अनजेत सुसंभाजांनि ईस : अनेक अंन
नोजन अघाइ : सोनयो कलेऊ सोसुभाइ : पुनि करै पछावरि रूध
रयांन : उतपति सवादकछु आंन आंन : इहाकरत असुर ऊ ओरकार
आयात उठ तपंषी अपार : बिधिरंग रंग वागोवनाइ : चितवोपबिबिध
सोंधाचवाइ : सनाथ बध प्रतिअंग सोह : मिलि असुर महोछव सुरगमोह :
इक सहस अस्व प्रतिरंग ओप : रथ जुकत पताकाध्वजारोप : आरूढ बी
र रति हि कुंभ आइ : कृतहरष जुध चषरत काइ : आयात बज्र गरजत अंज
ग : इहा आइ कुंभ रनजूझि रंग : भुजधरि त्रिसूल इक सहस चार : इक
लंह उरथ आकृत उदार : सतधनुष मांन चोरी सजोप : ओसो त्रिसूल
करकुंभ ओप : मिलि सयन यरातन मांन मूल : सम बिजुलता चमकत
त्रिसूल : आरकत नैनि रलि अधर दंत : बिचिषेत सुआयो क्रोध वंत
रघुनाथ हि बोजत रन सरोस : नटकुंभ करन अपने नरोस : इहि सम
य बिभीषन अनुज आइ : प्रीयभ्रात हि सोलगे पाइ : नीयराइ आपनो क
लोनांम तिहि लयो अनुज उरला इतोम : ॥ बिभीषन बाच ॥ कविता कुंभ
बिभीषन कुंभ बीर तुम हनि प्रावस रैनायरत दराम सेतबंधन दीय आ
इस भैगहि रावन चरन मूल : हितबचन उचास्यो : सन्नामोरु अनदोष :
मोहि पदलात प्रहास्यो : कांढ्यो पुनि षगउधार कर : भ्राता मो हि मारन त
यो : इहि हेत जागि अवधेस को : तब हि सरन मेत कयो ॥ ॥ कुंभ बाच ॥
कारन सुनि तब कुंभ बचन प्रति कहो बिभीषन : कुल बिनास सिर काल
चक्र : रिसत जत रावन : रिपु पुल सति केबंस : धंस तूनयो धुरंधुर : कुल
कलंक कट्यो : सरन लीयो अवधेस : मो हि कहो ये हनारद सरम म
हानाग तें असुर मनि : मनकरम बाच जुत मोह मत : जगत ईस पद तज
ऊजनि ॥ ॥ कुंभ काल अहयस्यो : द्रिग निरोषानल दाहे : नयो वक्रोध
अंध : चिन्हको उपरतन चाहे : प्रतिमांअपनो अपर जोय हि निरधार
नजांनत : बिषमदसा बिभीयत : पेन हित अहित पिछांनत :

लेजाऊ निजसेनमंह: कुलबलरक्षाकीजीये: करिचरनसेवअबिले
सकी: जनमसफलकरिलीजीये॥२॥ कबि रुबाच॥ ६॥ कृतपरदह
नाकुंभकर्ह: ढरतनयनजलधार: इहाबिभीषनआपने: सेनकस्यो
संचार॥२॥ छंद पध्धरी॥ पुनिआइबिभीषनरामपास: प्रभुहितब
चनबोल्यो प्रकास: दीनकेनाथरघुनाथदेव! यहकुंभकरनआयो
अजेव: संग्रामहेऊ प्रभुसावधान: आसुरअसंकअतिबलअमान:
चोपटजबकुंभहिरामचीन्ह: करचादिधनुषटंकारकीन्ह: हम्चढे
रीछबानरहकारि: धरिरामधनुषकरबानधारि: आगेप्रभुजूथप
जूथआइ: सबसिंघनादकीनोसुनाइ: कुंभसोजुरेबानरसकोप:
राकसरनगढोपेजरोप: गिरवरप्रहारकृतकपिनअंग: फलअरक
मनफुलागतमतंग: इहिभांतिलागिगिरअसुरअंग: सीसीजनुफूटति
सिलासंग: उठिलगतअंगमरकटजुआनि: आहारदंसमनुगजप्रमा
नि: मिलिदेतकीसतरवरनिमार: परबततनमानऊविनप्रहार: क
पिकछुकमीठिरेसकोप: उठिगयेस्वासकोउलओप: पकरेजु
कुंभकपिलालपानि: आहारकरेमुषमेलआनि: इहिबीचबीरहनु
मंतआइ: उरहयोकुंभमुष्टीउगाइ: सोजानुभारपरिउग्रोजुध: क
टककोत्राताइसोकुध: तिहिमास्योहनुमंतउरत्रिसूल: तननयो
सुमुरछितमृतकतूल: जबलग्योलोथिहनूमंतलेन: सबगरजितह
कपिलालसैन: नलनीलअंगदकेसरीआइ: सिलचारिचकुमारीसु
नाइ: सोईचारिगिरायेमारिसूल: नटलयेजुमूर्छितप्रानअतूल: ही
यपरीत्राससबबिमनहोइ: कपिलालकुंभमुहचढिनकोइ: मुरछा
जबजागेहनूमंत: तहामहाबीरऊठेतुरंत: इकलयोदिघ्यपरबतग
गाइ: अतिरोषकुंभसिरहन्योआइ: तिहिघाइअस्वरथधजाटूटि: नो
कुंभबिरथछलछोहछूटि: कुंभचषरत्नदेसोसकोप: रनजूमिबिर
थरिसपेजरोप: संग्राममरनसचेसधीर: बढिक्रोधजुगदेकुंभबीर:
कबित॥ कुंभबिरथअवलोकि समरसुग्रीवसुसजीय: रिसराकस
कपिराज जुगमहरिनादनिगजीय: गगऊपिसुग्रीव महापरबत
सिरमास्यो: पकरिपाइनिसचरप्रचंड सोपुहविपछास्यो: तबसो
अचेतकपिराजतहां महाबीरजानोमास्यो संग्रामकोषचाप्योसुम
ह: सबललकदिसिसंचस्यो॥१॥ तिहिनिहारिहनूमंत: रोसयो
नकुंभरोकिरन: हलितताउरहयो: घाइतिहिलगोघूमन: तहा

सुग्रीवनयोचेत निकटनटदुसहनिहारयो मुषाहिनाककरउनयकं
न संग्रहेसंत्रास्यो। गोगगनतहासंकोचितनः छोहछदमकरिछु
टयो। कुंभजुत्रातलकेसंको: चुवनबुच्चनकटात्रयो॥१॥ कुंभ
करनकेनाककान दलमध्यजुकारे कोतुकदेकरताल: हसत
कपिनालनिहारे गिरयोकुंभराकसगलानि: बलमहाबिसायो
अंगसंगलोअनबि ओपअंतकफिरिआयो: बिनुअवननाक
बेरूपबपु: परमभयानकपिषयो। संसारअसतसोकाल
सोई दुसहत्रालकपिदेषयो॥२॥ छंदद्वैअषरी॥ रहाफारिमुष
समुषआये। बिचरकपिपायोसोईआयो। नासाअवनबिवर
तिबनचर: बलकरिनिकसेआयेबाहिर॥ छंदउधोरामनिकन
कमुकटअमूल: सिरधरेपानिबिसूल: बनिबिबिधिरूषनई
द: उरउपजिमरनअनंद: अतिरोषरनजुवआर: भयेत्रासक
पिनसुनार: निस्वासउठतअनेक: उरस्वासपेठतएक: तेनिक
सिअवननिनास: परिछिद्रकूपप्रकास: बलजितेमरकटषार:
सोईनिकसिहसतसुनार: सुररथनिछत्रअकास: पुनिप्रगटह
सिप्रकास: सुररमनिकोतुकसंग: अद्भुतरसबढिअंग: बलक
पिनपटकतषेत: कोउगगनगतगहिलेत॥ छंदद्वैअषरी॥ दुव
दलसोपेकोतुकदेषे: बाबीनिकसतनीकबिसेषे: कपिदल
कुंभत्रासबकुकीनो: निसचरदेषतरूपनवीनो: कुंभतहदेषे
रघुनाइक: साधेपानिबिषमधनुसाइक: आसुरबेषमबचन
उचारत: आयोरामओरचषआरत॥ कुंभ बाच॥ कबितानहिन
ताकिकानारि: मैनहरधनुषदाहमय: नहिनरामद्विजदीन
मृगनमारीचकनकमय: बालिहनबनचरबराक जमतालं
नजानकु अरदषनत्रिसरासुबाकु पोसषनप्रमानकु पाथोदि
कुनबाध्योउपल नामसुरासुरसालको: रनकुंभकरनकाकु
सथरे महाकालकुकालको॥१॥ मोतिजालभरकटनि च
कुलजलसितबधायो: तूरनकेबसअंत अवजुलंकागटन
थो: बनेथहनवतब बीरजुरेराकसरन ताकोमरक
टकटक महाअहमेवकस्योमन: नरअमरत्रालबानरनिक
र हविसोईगनिगनिमारिकु: रनबद्योतोहियुरामरे अ
बसोईगरबउतारिकु॥२॥ कबिबाच॥ छंदउधोरा॥ रनबी
ररामनिहारि: नटधस्योसलउतारि: अवलोकिषलजोई
द: कृतबयरघाइकलिद: रनतोहिबोलतराम: ममसाथ

सजिसंग्राम: त्रयलोककारकत्रास: सुरअसुरगरबविनास: न
रअमरकंपानाग: नवनोगकारसनाग: सुरराजसुरगनसाल
ऊंकुनकालअकाल: यहसुनतरघुकुलइंद: गाजीवतानियु
बिंद: आकरनषांचित्रचूक: महबिजयसाइकमूक ॥ कबि
त॥ अरधचंद्रसमउनय सरजुमुकेअवधेसर महाबीरसंग्रा
म कूनछेदेरोऊकर: पुनिसोहाडुवपाइकाटिचोरंगाकी
नो डुष्टदलोरयुदेकदेवराजहिसुषदीनो: अतिरोषजरत
लोचनअनल महानयानकफारिमुष: नवनूतअसतसो
कालचट: राकसथायोरामरुष ॥१॥ दुहा॥ कुंनहिलाग
तसरनिकर अरुफूटतिवहिओर: दामनिजेसेजलदुरि
निकसिबहोरिबहोरि ॥१॥ रतधारधरनीढरत: वलकेजलजनु
षाल: कजलगिरमनुगेरिका प्ररहीचलतप्रनाल ॥१॥ कुंनक
रनमुषबांनकरि रामनसोरनरंग: पूरनकीनोजांनिप्रनु षे
चरबदननिषंग ॥१॥ कबित॥ सोजांनौअवधेस: असुरउरवनि
नरआयो: कृतकुंडलकोदंड अरधबिधुबांनचलायो: कुंनमु
ऊकट्यो: दुसहरावनसोदेष्यो: दुरगद्वारुकट्यो बिसषहत
सीसबिसेष्यो: कृतजंत्रदसनबनिबजकन: त्राजतरजतलि
प्रनुव: काकुसथजयतिनरहरसुकबि: हाहाकारजलंकऊ
व ॥१॥ महाबीरहनुमंत करनिधरिकुंनकलेवर: पस्योषेत
परबतप्रमान: रहिओटलंकगिर: गहिमुक्योमगगगन
मृतकतनपस्योउदधिमह: देहदिष्यजलजंत: जालतिहिका
लरबेतह: तहादेषिहनूबिक्रमअतुल अमरबृंदआनंदअ
ति: संसारनयोजयकारसुर परिप्रहारउरलंकपति ॥२॥ बी
रबाहुमुनिबेष रामगदेबिजरीरन: करगबामकोदंड दु
सहसाइककरदहन: अग्रजागषितअनुज हसतकपि
सेननिहारत: जानकीसजयजयति: अषिलसुरबृंदउचा
रत सुजसोतगगनबरषासुमन: बाजतसुरदुंदुभिबि
जय: कृतनासकुंननरहरसुकबि जयजयजयकाकु
सथजय ॥१॥ छंदबेताल ॥ रंगभूमिगदेरामराघव अंगअ
मकनसोजये: बनबसनलागेरुधिरबिंदव छोहराकसछो
नये: रिसनकुलिंगतरंगरेषा: कटितटेताथाकसे: को
दंडनामितबामकरगत रनजुबीरारसरसे: रजलिप्तसा

एकस बिकररहि रतआननरोषये : प्रनुवक्रवितवत त्रिकुटप्रतिमो पै
नकपिदलपोषये सुरसिधचारनजपजयजस : परमकरुनामयप्रनो
बिप्रातबीरत्रिलोकिबंदित : बिस्वजितपालकबिनो : इहिसमयआ
इरिषेसनारद गगनमगगुनगावते नगवंतहितकवनतनपति
भुवनत्रयमननावते ॥ अथ ना ई हरिषकृत सतुति जयरमतनयत
स्यामसोना अरुनअंबुजलोचने : सरएकअंकितपानिसब्यसु म
हारिपुमदमोचने जयजगंनाथअनाथबंधु देवदेवसनातने ना
रायनेनरदेहनरमित आइनिसचरघातने जयबिस्वसाषिबिसुध
बुधे बिस्वमायाबंचने : जयमाययातनमनुजमहिमा सुषदुषादि
फसंचने जयमाययागुनग्रचमूरति सरबआतमसानिधे जय
सरबकारनरहितसबते बिस्वसंभुतबिधे जयस्वयेजोति
स्वनावसिधे : बिक्रब्यापतबिस्वए जनमीलनेदिगलोकउतपति
जगतपोषजयेजये : तवमीलनेदिगनाससंश्रित : चारिषानिचरा
चर : मनबचनकरमनिसाधिमाधव : ग्यानध्यानअगोचर : जयब्रह
मलेजगदेकबीरे प्रकृतिपुरुषेपावने : अबिक्रबिक्रसरूपअद्भुत
तुवनत्रयसंतावने जयग्यानरूपबिकारबरजित जयतिज
गदाधारने जयदीनबंधदयालदेवे बिस्वजितअबिकारणे : बेरो
धिबेदिकबेदवादिन : तिरणये नवनिश्चयं : तवप्रसादबिनयह
त्रिनीयलोकी अबुधबुधअभिप्रायं : जयअषिलमयाजालमह
मा जयाजलरबिकरहरे : प्रतिबिंबजलभ्रम त्वयाकलिप्त आप
अगमअगोचर : प्रनुकथंदस्पआदस्पप्रतिमो होतबिनसतहे
तये अवतारतवमिलिजोतिअद्भुत त्रिगुनतत्त समेतये महा
बुभिमननजतिमाधव तेतिरतिनवारणवं प्रनुसुषहिजल
नरजथापावन रहतनवअयरोरवं : देकामक्रोधहआदिदुस
ह सबलसात्रवसालए मोजारजैसेआप्युअनहित करतहैस
बकालए तवनामसरनेनिसततपर : रहतदिगतवरूपये : अ
चुप्रेमभुततवचरनपूजा श्रुतिकथाजवनूपये : तवरामसगुन
सरूपसुंदर धारहैचितधीर : तवनगतजेहैमुकतिमाधव
बिनाबारितबीर तुमरामकृतयहकरम अतुलित सुरसुरेस
सहार : तुवनारटोरतगतिनावन समरकुलनसार : ॥ अथ
इंद्रजीत अ ध आग : मबर ननना दृ दा ह हा : इंद्रजी
तकोमरनअब : कैबोलछमनहाथ कंटकवधअवधेसकर
निसचयनावीनाथ ॥ १ ॥ कबित्त ॥ कुलमजारपितुबचन

कज दुरुकबनबासीय कुंभकरनराकसअसंक बरबिसषबिनासी
य सुरसुरेसबेषमबिसेस दुषहरिजुकीनो दुसहदाहरनलगिराह
दससिरउररीनो अवधेसअमरगावतअतुल कृतप्रतापअवतारको
अगमननयोनरहरसुकबि कमबिनासनुवनारको ॥ दहा ॥ कुं
भमस्योगदथरहस्यो तहापरिआसुरत्रास नलेसेजिततितअम
त अरछुरीजीयआस ॥ ४ ॥ कबिरु ॥ रामबानहतकुंभरन जोतिमि
लेषलजोर मारिउधारतछनकमह अैसेरावरारा ॥ ४ ॥ रामहिकरिउ
पदेसरिष मिलिनारदसुरसाथ अषिलगयेअहआपने गावतह
रिगुनगाथ ॥ ३ ॥ रावनउरपरित्रासरिस करतबिलापअनेक क
रधरपीटतसोककरि टरतनअहमितरेक ॥ ३ ॥ रावन ॥ हाहाकुंभ
अचंभयह सबबिधिसुरसमाथ तेरीयहनवतब्यता होइमर
ननरहाथ ॥ ४ ॥ इंद्रजीतजा कुंभमरनरावनबिकल इंद्रजीतइहां
आइ सोकसहोदरबंधसमर करकुंभराकसराइ ॥ ५ ॥ समजी
वतयननादमहि सोचनउचितलंकेस पौरुषदेषकुपुत्रको नय
येबिहानबिसेस ॥ कबिरुबाच ॥ रोसभिरतसुरअसुररन नयो
असतमितभान रहेलालकपिसमरुपि दुगमदिसानदिसान
॥ अथइंद्रजीत निकुंभिला गद होम आरंभ ॥ कबित ॥ कबि
रुवाच ॥ त्रिकुटाचलकेमध्य गुहाअगपाता निजनिकुं
भिलानाम बिवरसुवगतबिख्याता रकतपालबासनबिसा
ल लेपनअनुरंजीय मोनवृतचषमुद्रि जथाबिधिआसन
सजीय कृतकुंभबिसदनरहरसुकबि पौरुषरिसबलबाधि
पन मिलिबाचकारसमऐकमन करमहोमलागोकरन ॥ ७ ॥
इहाबिवरथआनि सजनबाजीसंजोईय ससत्रअसत्रस
नाह सकलपरिकरजुतसोईय लेमेलसोरथकुंभमांझ प
वकपरजारीय सुरद्रोहीआसुरअसंक गुरमंत्रउचारीय अ
न्यासअसुरमायअगम अगनिधूमननसंचरीय सोदेषि
धूमधारासयन प्रानबिनीषननयपरीय ॥ छंदपधरी ॥ बि
नीषनबाचा पुनिइहाबिनीषनचरपगरु यहकवनधूमसु
धिकहुआरु कहिकीनधूमधोकवनकाज यहलेकुनेर
मोहिकहुआरु ततेगहेअतिबेगदोर पेषेकिकुछलकरि
मध्यघोरि सुथिलहीतगटमांझसोर कृतहोमइंद्रजि

तकरमकोइ: यहसुनतहतत हाफे रिआइ: बिधिकहीबिभीषनसोंबनाइ:
निजसुनीचिसंग्रामेयनाइ: बहिमहाबिभीषनउरबिषाद, अतिभीतबिभी
षननिकरआइ: सबनेदबिवरिरामहिसुनाइ॥ बिभीषनबाचारघुहामत
हैषलमहाराज: यहधूमगगनमगउग्रोआज: जहाँदबिवरातइंजी
त: यहकरतहोमअंतरअभीत: अनलमहजपेरथनिकसिआज, आप
नेतनोनिसचयअकाज: आरूढरथहितिहिंचढिअकास: तोहमहि
द्रिष्टनहीपरेतास: सबहिनबहदेषेअमरसाल: करिहैसंग्रामक
लकुअकाल, आसुरअदिष्टकैहैअजीत: मंत्रयहसुनकुअबजगपमी
त: हैमरनइंद्रजितलषनहाथ: सोपम्यदेकुहमजाहिसाथ: करिये
बबिघनजिहिहोमकाज: रघुबंसतिलकराजाधिराज॥ श्रीरामबाचा
हमचलहिकलोयेरामराइ: सुनिबोलिबिभीषनफिरिसुनाइ,
श्रीधिभिश्वबरदयोयाहिजहमबिसेस: सोसुबकुककुअवनी
नरेस: बरषजिहिचतुरंदसदुगमबीर: समछुधासुनिंद्रजयसरी
र, हैअंतजुयाकोतासहाथ: निसचयसोंसुनिकेअबनिनाथ: ज
बतेतुमछोडीअवधिराज: सोमित्रतंजेसबसुषसमाज: कृतनियम
असननिद्रानकीन: अद्यावधिरहिसेवाअधीन॥ श्रीरामबाचादीनीत
बआग्यारामदेव: तुमआपजाकुलछमनअजेव: रचतहैदुष्टमाया
डुरंत: मतनाजिआरराकसअमित: सुनिबीरजतनकरिबोसंजा
रि, बकुओरसुनटराषकुबिचारि॥ लहु मन आकरजोरिलष
नतहाप्रनितकीन, कुअवधिनाथआग्यअधीन: संकलपकरयो
लछमनसंगारि: मघवाजितराषोंबेतमारि: प्रभुयहबचनमान
कुप्रकास: तोरेदेवरावरोदास: पुनिसबेसिधरघुबरप्रताप,
अतिप्रेमलषनउरलाइआप: परिक्रमनदेयरहालगिपाइ: उ
ग्रिवलेलषनबलनुजउगर: संगदयेसुनटऐतेसंगारि: बि
खेसरामअतिबलबिचारि: बयपूरनबुधिसुजामवंत: सं
ग्रामसूरअतिबलीसंत: पुनिदयोबिभीषनसंगपचारि, मांग्योसु
नेदृढताभुसारि: अंगदअरुकेसरिनलनील: समकपिमयंदमा
रुतिसुसील: षलइंद्रजीतअतिचितषेद: बाढ्यो बिसेषपुनिअवनिबे
ध॥ श्रीरामबाचा॥ इहांउचितबिभीषनजतनआज: लछमन
हियाकीतुमहिलाज॥ कबि कहा येसुनयजुलछमनसंगआइ: सोई
होमसथलपायेसुनाइ: जुतमोनमंत्रषलगूढजाप: अतिध्यानस
मुद्रितनयननआप, सतकुंनरुधिरबालिदेतसोइ: हितबिजयम

सोतसागरतिनसजीय: हैसत्यासीबालहीन पुनिबयरउपजीय: मह
कारराकसमहीप सोकपिनसंयारे कुंभकरनअरुइंद्रजीत मानवब
रमारे अनहूतअसंतवकरभयहू अनुचितकासुनिबोनअब: हमि
बहुबलीजीईकहतजग सोईहममानीआजसब॥४॥ जहिनबीरजन
मयो धसकिहसहिसधुजीयधर गहरनहगजयो गगनमुलीयकपि
तगिर सुरासुरनिबिग्रहसंतारि समहरजरसंध्यो इंद्रजीतजयो
बिजयअंक बासवरनबंध्यो: दिगपालसालहरुनदुसह: दिगबि
कारत्रिभवनहरह: काकहियेमहिमाकालकी सोईमेघनादनरक
रमरशा५। बारबारमसतककुमार: लेउराहिलगावत: दरिअपारच
षअसुधार पुनिथाहनपावत उरथखासजीयछुटीयआस परित्रा
सअपावन: हीयबिहारहाहपुकार रोवतरदरावन: अबइंद्रजीत
तोबिनुअषिल राकसकुलदुषरोरहै दिगपालसालटरिदुसह
हिन: सुरसुरेससुषसोइहै॥६॥ कबि रुबाच॥ रनत्रयदिनत्र
यराति नमिलिरिपसोतयंकर जयपायोलछमनअजेय बिक
मअतुलितबर करहिचापटंकारकीन: जयसंषबजायो: सुमोत
लकपिनरसमूह: उरहरषउपायो: आकासअषिलप्रमुदितअमर
रनजयकिन्निसउचरीय: दुंदुभीगगनबजीसुषद: रीझिपुहपबरषा
करीय॥१०॥ दुष्टमारिघननाद सहतकुसलीनटसंगीय: मिलेतबेर
घुपतिहिआनि: सोमित्रअलंगीय: कतबंदनकरजोरि रामलेकंठ
लगाये: धंसधनलछमनसधीर इतबचनसुनाये साधतेनतुमक
ष्टसब बरषचतुरदसबीरबर अतिबली असुरघननादयह सुको
बीरमारतसमर॥ रावनबिलाप मंदोदरीआगमन॥छंद पधरीबि
लपातकरतरावनबिहाल: सुतसमरिसमरिउरअमरसाल: धरलु
गतपरतऊगतअधीर: पापिष्टसहतमनमनहिपीर: अतिदुषितम
ंदोदरिहाआइ: उरमसतकपीटतनहीअघाइ: परिसवसहरोवति
करिपुकार: बिलिलातसंतारतिबारबार: हमेघनाद दिगओटहो
इ: किलगयोबतावतनहिनकोइ: मिलिकंठलागिकिनपुत्रमोहि
तनसुंदरदेषूकहातोहि: लरिसमरगिरयोअनतेगलाल: सुरराज
सुरनिअबटरेसाल: आक्रंदकरतिरोवतिअनाथ: कैबिहबलकछु
लगेनहाथ: दुषसागरबूडतिसीनिहीन: पखेतअवलंबनआनप्र
न॥ रावन॥ रावनसमऊवतरोइरोइ: नाखीबलिष्टकाकरेकोइ
नस्वरसरीराथिररहतनाहि: जगजंतउपजिपुनिअंतजाहि: जतन

कुकरेनहीरहेजीव। देखेबलिष्टमायादईव॥ मंदोदरीबाचाछंदहेत्र
षरीनस्वरहेजपैपीयजानकु॥ तोनअनीतिइतोस्वगानकु॥ बेषबना
इजतीकेजैसो॥ अरुबिरुयक्रमकीनोकैसो॥ जुगतिनसरनैमंदिर
जाई॥ परत्रीयतहांअकेलीपाई॥ रहकबिनाकुतीसोनारी॥ आनीहरि
तुमकपटप्रचारी॥ चोरकरमयहकरीकुचर्चा॥ ऐसोबरपायोबिय
अर्चा॥ यहअनीतिपरत्रीयलेआए॥ बोटपीयमनलगुवाषुए॥ सोपेन
हपीयतुमसोराची॥ करीअनीतिपरीसबकाची॥ नागबिषमुबिषपा
सनिनाथे॥ बंधवउतथपरेरनबाथे॥ लगितुमहवेधराधरलेनो॥ बन्हि
दहेउरकहेकुबैनो॥ सकतिहयोरनआताताकी॥ इंद्रजीतयहफलहै
ताकी॥ पुनितुमलरेपचारिपचारे॥ ससत्रअसत्रगहिमरकटमारे॥
तुमकहंजानिहरनदईसीता॥ नामोअरहकबनहिसनीता॥ मईथ
लिकेकोपानलमांनो॥ जस्योतेजतुमरोसबजानो॥ अबलोरनहीं
मारेयासे॥ तुमहिआततारीकीयतासे॥ होकछुब्रह्मअंसतुममांही
सोसबहरिकस्योसहजांही॥ कुलबिधिकारनहातोकीनो॥ तुमहि
आततारीपदहीनो॥ जेतुमकरमकरमनजानें॥ पापसबेतेरामप्र
मानें॥ सुतोआहिएएईसूरे॥ पोरुषनीतिधरमबलपूरे॥ कंतनोहिअप
राधाकीनो॥ नासतिहारेकोहतलीनो॥ अछुआत ताईई कबिन
डुष्करेयहदाह॥ बिषमबिषदेखयरबस॥ ससत्रधारसंग्राम रे
षमुहआरबीररस॥ परधनपरधरसमयपार॥ परत्रीयापहारीय
उचितप्रानबधरनहि॥ यहजुमतनीतिउचारीय॥ संसारबिदितन
रहसुकबि॥ पातककरमपिछानियें॥ अबसुनकुंतषरपुरुषये
आततारकरिजानियो॥१॥ दहा॥ लंकाराजबिभीषनहि॥ मुषक
हिदीनिराम॥ तुमहिहतेबिनुसुनकुसो॥ कैसेसरिहैकाम॥१॥ रा
नबाचा॥ इंद्रजीतकेमरतअब॥ जयेकामसबनाम॥ पूरनकेहैब
चनपन॥ मुषउचरेजोराम॥१॥ कबि॥ कबिन॥ मेघनादरनमच्यो
अमरजयसबउचारीय॥ पच्योलंकआतंकतयोराकसनयनारी
य॥ उरउदेदिगदेव॥ असुरकुलनासजुआयो॥ बेरबामबेधब्र
ह्मुसहआगमदरसायो॥ जयकारतयोत्रयलोकजस॥ जगतबिछल
जिहिबिरदनसि॥ कबिनरहरदातामुकतिके॥ महाराजरघुबंस
मनि॥१॥ इंद्र जीत बधा॥ कबि॥ दहा॥ देप्रबोधमंदोदरि

हि आपसनामहआरः सरस्वतीजेबंधुसुत। इहनटमंत्रिबुलाए॥रावण
नवाच॥छंद॥ऐसरी॥सबनिसुनहुकहैलंकेसुर अबतोआनिपरीसि
रऊपर भैयहकरीनरोसेमेरे हेतकहाअबरतउतहेरे हमअपनेब
लबयरबढायो उतबंगनारसुपारनआयो उरजनकोउत्तरअब
देऊ लोहसमोहसमरचढिसेऊ सबतुमसुनरसमरजयसूरे प
रहलदलनपराक्रमपूरे सुरनरमैत्रयलोकसताये अबलोकस्वे
जुपेमनआये रिपुसनमुषजोपेरनरहिहैं लोकलोकसोईजस
लहिहैं उवहलमिलेजुचितहुलावे सोपहलहितागेसुषपावे अ
बअपनोपोरुषउधारऊ मिलिसनमुषदुरजनरनमारऊ पुत्रसो
कउरप्रजरतआगी ज्वालारोमरोमप्रतिजागी॥कबिकाउ॥अ
कवनरावनआये सीतासिरकाटनसमुहाये निकुरनिकालिष
गकरलीनो कमलसीयाछेदनमनकीनो इहासुपारसमंत्रीयआ
यो सुकरअसोहितमंत्रसुनायो॥सुपारसउ॥ बालबालअब
यिबिचारऊ महापुरुषतुमत्रीयहिनमारऊ समरअनेकजयेतु
मदसमिर सेवातनपररहतसुरासुर तुमनवजगतधनदसेना
ई अहमबंसपुनिबढीबकाई तोयहउचितकरमनहीताते जग
अपहास्यहोरप्रभुजगते॥कबि॥मंत्रीबचनजबेषलमान्यो इहि
करकरषिफेरिग्रहआन्यो इहाएकांतगयोअनिपाई असीतहाकु
बुधिउपाई दुष्टनिकोंतहअप्पादीनो निसचरउपजीबुधिनवी
नो॥रावणमायामईजानकीमेऊ षलकपिदलदेषतसिरषं
ऊ॥कबि॥सीतअसुरनिकपटसंवारी मरकटदलदेष
तलेमारी कपटसीसतबहुतोकीनो देवकटकमहारिजुदीनो
बिमनभयेसिरदेषतबानर यहवृतांतसुनायोरघुबर प्रभुतहा
मानुषभावप्रकासो ताते सुरबानरमनत्रासो अबहनुमंतकूदिगद
आये सीतादेषीकुसलसुनाये॥मारुति॥प्रभुयहमायाअसुरप्र
मानऊ मिथ्याचरितनकछुनयमानऊ॥कबिकवाच॥हनुमत
बचनसुनेसबहरषे पापचरित्रदसाननपरषे पुनियहमंदोदरि
सुनिपाई इहारावनपहआतुरआई॥मंदोदरीउ॥कहाचरित्र
करतयेकटकः इंद्रजालतेकरैनअंतकः मंदोदरिपतिकहसमझा
वति दुषरोवतिअतिमंत्रदिषावति नटजोकुंतकरनसोनाई

इंद्रजीतसुतबलअधिकाई: रनसोईमरेजगतजसरहिहैं: गदअधि
कारकनकयहगहिहैं: प्रभुसीतदेसंधिप्रमानहु: ग्रहरीछाहिकि
तोजुधगानहु: आपनबेलकस्योप्रभुश्रेसो: कुलहिनासकरिजी
वनकैसो॥मकराक्षु आवरसुतनबमकराछिअसुरबल: बोलोरह
हासकोपमहाबल: सीतादेनकहैकोहसासिर: प्रभुमोजीयतत्रि
कूटदुरगपर: कुंभकरनघननादधरमकृत: हतरनभयेधनिवेपति
हित: उनतरिपेरसयनअस्पासे: पुनिसुरयनजेकपटप्रकासे: क
हासोकतिनकोअबकीजे: देवमोहिजुधआग्याहीजे: रामहिसानु
जमारिमहारन: बंधोपकरिसुग्रीवबिभीषन: कैतोबासअजोध्याक
रिहुं: महबीरपरहलहिनमरिहु॥कबित्त॥करीप्रतंग्याबंदनकी
नें: लाइहृदयरावनतबलीनें: नेरिनिसानबजाइतयांनक: अ
निचढ्योरनषेतअचानक: हाहनरूपताहिकपिदेष्यो: बलअति
बलअंतकसोलेष्यो॥॥बिभीषन बाच॥सुयोबिभीषनप्रभुहिंसुन
यो: यहमकराछिमहाबलआयो: रायवसावधांनहोरीयेरन: राकस
यंहेतनीजोरावन: बरसुतमांन सुरनिकोषंग्रो: यहमकराहसमर
पनमंग्रो: ताकहदेषिकरेरनमरकट: अतिहिनयांनकरूपअसुरन
ट: मिटतनकपिसुग्रीवमहाबल: बेधचढे रोकेराकसषल: इहांअ
गरमारुतिदेउआये: सजिजूधरतररोषसवाये: नयोजुधराकसक
पिनारी: बहेजुप्रहरनबारीबारी: इनकुरुक्योरलोन हीआसुर: आर
सरोषबिभीषनऊपर: जुस्योनतीजाकाकासोजुध: उनयअनेकअवा
हेआयुध: समरबिभीषनसूरसंनास्यो: इहमकराछअगदासिरमास्यो
नरपिनगिस्योप्रहारबीरतस: रनलाग्योलषमनगलिराकस: लषमन
तिहिंतुजकाटनलाग्ये: असत्रससत्रनहीनिदतअंनाग: पहलेतिहिंत्रि
हमाबरपायो: समहरमुरतनजुरतसवायो: यहिलेचल्योलषनकहं
लका: इहामध्यातमरओत्रसका: अतरंनभनूनयोअंधारो: सोअ
पनेपररहिनसंनारो: हाहाकारगगनतुवहोई: कछुउपारफुरतन
हकोई: इहातेजसरामचलायो: अंधकारतिहिनिषलनसायो
अंगअंगकाटेप्रभुआसुर: धुकेतहामकराहपरेधर: रामदुष्टमकरा
इछमास्यो: अमरबृंदजयसबदउचास्यो: जयदुंदुभिसुरगगन
बजाये: अतिआनंदपुहपबरषाये॥कबित्त॥उहमनउ॥
इहालषनकरजोरि: उचितहितबचनउचारीय: कृपादयालदे
धिदेव: होसंकरहारीय: कृपिनपरीजिहिजि[illegible]

मे: नसतहोचितमात्र छेदिरिपुरीनछिकये करुनानिधानकारनक
रन कोउनसमसरकीजाये सबबिधिदयालनरहरसुकबि देवन
गतिफलदीजीये॥२॥इतिमकराङ्कबध प्रसंजनीराक्षसीसंग
कबिरु॥ इहानिसारनअजिर रामनिदगतनिरन्तर मानिबयर
अनसमय सजीषलुतालकेसर नामप्रसंजनिनिसाचारि अति
कपटअभासीय रचेसुमायारूप बिबिधिजगजीवबिनासी
य पगडीसोरावनबोयिपन रामहिसानुजमारिरन हितकरु
मातमेरो यहे मोनुतवउपकारमन॥१॥ षगपानिषेचरीय दे
हुदुष्टअतिहासुन समरसुमिसंक्रमीय तहकीयरूपपुष्पतन
पल्चानीअंगदप्रबुध करषगउनगीय धरीअचानकबीरया
ई मृगपतिमनुमृगीय जुवराजचरनगहिगेदेज्यो पानिनपर
कीभूमिपर आसुरीगईजमलोकवह सुनीसुषललकेसवर
॥२॥अथश्रीरामसीयाप्रसतकदृश्यनं॥ सीसरामसोमि
त्र रचेमायामयराकस रचितरुचिरतरूप सहतजटजूटनि
तापस श्रोनधारगलअवत नेत्रफटेबिकृतानन बारबारहि
काउबास रतलिप्तरेनरन मुषरत्तवानलवमूछनिलि असुअ
लतछबिअनुहरे अतिरोषदसनपीडितअधर धरनिसुताअ
गेधरे॥३॥छंदपधरी॥मसतकसोदेषेअकसमात सीयअस
हसोकनहीउरसमात परित्रासमनकुसिरबज्रपात वदिस
लकहृदयनहीफुरतबात सिरबारबारउरलारसोर रसरोरम
गनपुनिउगतरोर॥सीताबाचा॥ जगदेकबीरहाजगनाथ अ
तिदुषितकुतीकीनीअनाथ रघुबंसतिलकराजाधिराज यह
दुसहकोनगतिनईआज सुनियेपुकारसमसुरसमाज धरिचि
तमीचदेषरमराज नहीसह्योजातयहदुषनिदान पापीनप्रान
कीनोप्रयान॥कबि रुबाच॥ निहचैतबकीनोमरननेम प
रिनवअतिदुसहचितपेम॥ ॥देवबाचाकबितादुसहदसासीयदे
षि देवअतित्रासउपजीय यहनसीसअवयस सीसदसमायासजी
य कविनकालकोकाल अतितिहिनिकटनआवे नयकुदिष्टतव
रूप नियतछनमांहनसावे मेथलीमानिनिहचैतमन देवनित
बधीरपदई यहकपटरतमायाअषिल नवअकासबानीभई
सीताबाचाहहा॥ सोसुनिउपज्योसीयके मायाअसुरअमान नयो

निरुद्दिमनयपस्यो नहीकछुचलतनिदान॥१॥रावनमायाराक
सी सबकरिरलोसमूल ऐकेपुरीनअहिनतें करमनयेप्रति
कूल॥२॥अथ दूत प्रचारन॥ कावीपरीजुसबकरी बिद्याकपट
बिधान तबरावनरघुनाथपर पठये दूतप्रमान॥३॥कबित्त॥
समयपारलंकेस इहछलदूतपठाये देवकटकमहदुष्ट असुर
आतुरसेआये ताहिलोततकाल कपिनिप्रभुआगेकीनो
धरमजानिअवधेस निकटतिहिबोलिसुलीनो सुरकाजरामन
रहरसुकबि राकसबसबिनासरन सोरहसिहसिहेरतदूततन
महाबाहुउछाहमन॥१॥राकसनामलोहीताह अतिबलीबुधि
बर बिहतदूतआपार समझिपठयोलंकेसुर इहिअसकअव
धेस जगतपतिआनिजुहारे दयासिंधुदेवाधिदेव गहरबेगरे
सुतबंधबरावनकुसलसों कोकवनकाजिकरत आगमन
हितकहियेअखिल कलेजुतुमहिबिचारिकृत॥२॥दूत बचात
बरससिरकेदूत समयउतरअनुसरयो अपनेप्रभुकोआप
उचितगौरवउबरयो अहमअकुसरणुरबिचारि रावनपहआ
ये जुगकरअंजुलिजोरि संकजुतबचनसुनाये सबकसिप
कोबंस कोपकरिनासनकीजे देषिजथाअपराधदंड दीरघल
कुदीजे इनुदेवमनुजकहअनयदे अतुकछुकरिसपरहरीय क
रिसमाधानबिधिजीवको कहिजुबचनआपाकरीय॥दूत॥
कारनतुमपहकहनकछु मोहिपठयोराम रावननिसपूजानि
मत आपगयेसिवधामें॥१॥राम॥आदरकरितनदूतको ये
पूछोरघुराय तोकहपठयोकाजकिहि सोयोहमहिसुनाय
॥२॥दूत बाच॥सावधानचितकेसुनहु कलेजुकछुलंकेस जो
पेस्वेतोकीजाये निहवैरामनरेस॥१॥कबित्त॥सूपनषाजुवि
रूप करीतुमउचितनकीनो हमसीतातबहरी तुमहिदारुन
दुषदीनो अबुधिजलपरआनि सेतपरबततिनसाधे सुतमेरे
संग्राम नागपासनितुमनाधे नवरैनहीनवतमता प्रग
टकरमफलपाईये दैधनुषहमहिदिजरामको सीयलेआप
सिधाईये॥१॥दूत॥ सधिकरफुलंकेससों यहजोपेअवधे
स समरसुरासुरकोदुसह कटिहैतोकलेस॥१॥परसरा

मकोचापतुम:पायोबिनुहिप्रयास:ताकेसाटेलेसीया:पुनिग्रहजाकु
प्रकासमुद्रा॥ करीबिदानबहुतकी:रामचंद्ररघुराइ:नीतिधरममन
कोनिपुन:सबेकलोसमझाइ॥२॥श्रीरामजीचौ॥ संदेदरिरावनम
हल आपहोहिएकंत समाचारयेहुतसब:कहिबेतहानचित॥ क
बिकुआचा॥आयोफेरिबसीउहा:सुनिरघुनाथसंदेस:ताहीछनप्रति
हारतिहि:लेगुहस्योलेकेस॥५॥ रावनअरमदोदरी:बेगेसदनसुन
इ:सुनिबेकहसंदेससो:लीनोहतबुलाइ॥६॥ हतबाचा॥मोकहचल
तसंदेसमुष आपकहेअवधेस कहिकुप्रनुसोजोरिकर:सोसुनि
येलेकेस॥७॥ तुमअवलोकेरामतहां:सानिधिसुरहसमाज:कैसे
बैठेहैंकहो:कोनकरतहैकाज॥८॥ हत लोहीताहबाच छंदपध
री॥ मृगतुचाकनकमनिरतनमांन:बनिमृदुलबिबिधिबैचित्रब
न:सोहईलषनहतलहसाइ:राजतनरपोदेरामराइ:बामणधरयोज
यधनुषबीर:रजिदछिनदिसिअदयतुनीर:बधकारहद्रजितऐद्रब
न:ग्रामतकरहहनबंसमान:जिहिकुलकरनकेनाककान:नवक
रिरूपकीनेजयान:समजयामुकरतिहिगेदसीस:अनसकितसो
वतअवनिईस:जिहिअहअकंपनहतेआर:ज्वालानलकादी
यजराइ:तहाधरिअकपावनपुनीत:बातसुतपलोरतपदबिनीत
देवातनरातकहतकदेषि:बिस्वेसरामबिहसतबिसेषि:कछुक
हतबिभीषनबचनकाज:सोईरीझिसुनतहेमहराज:रहिनाति
बिलोकेअवधिईस:हतमंहलचहुघालालकीस:दीनेसंदेसजोरा
मदेव:सोसुनहुसबेकहिहुसनेव॥श्रीरामोक्त॥ बामनदीयर
हहिचरणबास:सोसुरनिबाससबसुषनिवास:पुनिबामनबलि
कहदीयपताल सोबिलसततहाबेनवबिसाल:द्विजरामद्विजन
हुवलोकदीन:करमेलिउदिकसकलपकीन:हमदईबिभीषन
लेकहाथ सोईसेवाततपररहतसाथ:लेदीनेऐतोतीनलोक अ
बओरसलोन हीकिहुओक:सोदेहितुमहिसोसंधिसाज:जिहिजो
रबैठितुमकरहिराज:सबनीतिअपजानतसकाज:इहिगेरनसंत
बसंधिआज॥ हहा॥ संधिनइहासंनावना:यहतोकबहुनहोइ:सो
रावनसमझतसकल कहाकहैअबकोइ॥ इतिहत लोहीताह
बाचअथरावनप्रतिदोदरीसंबाद॥ हहा॥ रावनसोमदोद
री इहाकलेअकुलाइ:अबतोकछुओरैनई:तासोकहुबसा
इ॥१॥ समयहुतोजबसंधिकी:तबतोकीनीटेक:आयोअगट

हतहरा: आपनमानीऐक॥२॥ रावन हितुजे रावरे: सबैरहेसमझाइ
तिनकेमंत्रजुनीतिजुत: ऐकोचितनआइ॥३॥ कबित॥ उदयिसेतस
जयो: उतरिइहितरिपुआयो: द्वारद्वारदलदुसह: रोकिसंग्राम
सजायो: भ्रातपुत्रनटचिरे सुतोकछुकाजनसरयो: धरमस्वामि
उरधस्यो: हतरनउधजुकरयो: कीनोकुलनासपोतसंतिको: अरुषल
सोंचाटीषई: कहियेप्रीयकारनसंधिकी: नलीजुअबईछानई॥ हीनेदे
षिनगनीसदु:ष: नासाभुतनासीय: बीरभ्रातमातुलबिसेषि: सुतमं
त्रबिनासीय: दुरगदाहबारिधिहिबंध: सेनासंघारीय: नयोबिनीष
नजीयतनोहि: लंकाअधिकारीय: येतेअनरथसुनिसुनिअसह
हमकुत्रीयादाहत हीयो: पठयोजोअबकुहतप्रीय: कवनसंधिउ
छवकीयो॥२॥ हरा॥ कुंभभ्रातसुतमेघसुर: रनमरिनयेजुराष: अ
लाप्रीयबलवानयह: अजकुजीयनअभिलाष॥३॥ कबित॥ समय
बितीतेसंधि: कंतय हमंत्रजुकेसो: लेलेलावतलोंन: जरेऊपरकेो
जैसो: आकुकाजजोबिषम: सोकके गीतसुनावत: सबैसुरासुरसुनत
यहोकछुचितनआवत: संसारप्रगटअहंकारसोई: अपनोआरनिव
हीयो: जैलबूहतगहरतरंगजो: हाप्रीयहाथनिबाहीयो॥१॥ किंकु
लअतिकलह: तयोदेवासुरभारीय: तहाबीतेकछुकलप: दुसहल
वनहुआरीय: बलबिधानबितये: नियतहरिहरजयमानो: महासक
तिकोत्रासमानि: उरध्यानजुआनो: रामसोंकबलरि होरनहि: प्रजुता
नुगतकुलंकपति: जोलरीदेविदुरगासजय: असुरबंसकीयनास
अति॥२॥ सुनिबोलोलंकेस: कंपरमेहतजुकीनो: परसरामकोचा
प: लेनकहंदावसुदीनो: ७ नारायनकोधनुषबान: अपनेकरआ
वत: बासवसंजुतबिष्णु: नियतरनमारिनसावत: तोप्रीयेकाजते
रेपकरि: लछमीदासीलावतो: तबकादिअमरनिजलोकते: बैकुंठ
असुरबसावतो॥३॥ कालसेवमभकरत: हैजुरबितपतसीतहित
करिहीतेंदिगपाल: बिहतपदरजनिसबेदित: चंद्रहासषलषग
दुसहसुनिअमरनारिकर: आवतगरतअनसमय: नियततहाको
बराकनर: निरषकुजबालतपसीनिलज: हीनजंतकपिजोरिद
ल: सुनिमोहितपतगदलंकसिर: षत्राथमआयेसुषल॥४॥ जो
मृगेसगजमारि: थापफरीयकुंभथल: लेतकवलरतलिप्त
हैजुबिथुरेमुक्ताहल: यहजुरामअग्यान: मेलिवनचरदलमरक
र: मेंजुजबलमेथली: हरीसोममग्रहसंकर: ससकहतकंग्व

येसफल जतन करत जिहि हेतु जौं मनमोदक खात अघाइ मुष तपसी
ईछत सीय हिसौं ॥१॥ अपरां च न गूढ होमादिम प्रसंग ॥ कबिस्राप
दहा ॥ जोई जोई कीनो कपट जुध निफल गये निदान दस सिर खाये दुस
हुष उहि मूरे न आंन ॥१॥ छंद उधो रा अकुलाइ रावन आप परित्रा
सउ रबदि पाप गो बिकल चित गुरग्रेह निसि अध जगति सनेह सु
कहि जुनाये सीस वहि दरीस्वसति असीस पुनि जोरि कर परिपाइ
सब दुसहु षसुनाइ ॥१॥ रावन बाच ॥ बीय राज छत्री य बाल बनि
जती बेष बिसाल नट जूट सीस सजोप करष्यनुष बान सकोप कटि
कसे सुतग निषंग तरपत्र आवृत अंग लसि उर निदुरसी माल बपु
जाकंध बिसाल बनि दिष्य नयन बिचित्र मनुरत पंकज पत्र मुषकम
लसोल अमाप प्रतिअंग देत प्रताप आजानबाहु अंग उपमेय बरजि
त अंग संग्रालकी ससहाइ इहा जूथ जूथ पत्रार सिर जलधि बंधाय
सेत तेई उतरि सेन समेत इहा लंक घेरी य आंनि प्रतिवार जुध प्रमांनि
परि बिषम रूप अपार सब नयो असुर संयार षल सार सहि परिषेत
सुत बंध सुन्दर समेत रन कुंभ मरिजि सराषि सुत इंद्रजित रबि साषि
अबरहि चतुरथ मग्रेस सब बिनसि राक सबंस कछु चलत नहीं बल
कोइ हम माऊ य हगति होइ मकि राम कपि दल माऊ सोर सोर नहि
नसाऊ ॥ दहा ॥ सुक्र जु तुम से गुरु सदय हम म ग्रेसी होत सुनि
सुनि हसत सुरेस सुर यह कछु करम उदोत ॥१॥ सुक्र बाच ॥ सुक्र क
लोल केस सों होनी होइ सु होइ अब बलि कृत्य वत मत कहा करे
तिहि कोइ ॥२॥ नहीं सुरासुर बस नियत सत अंत कछु संग असं
भव संभव बनां नावी करे अनंग ॥३॥ सुक्राचारिज सुनि सबे द
यो मंत्र उपदेस जाइ करो य हहोम जप बनि हैं काज बिसेस ॥४॥
अबिघन जो पि होम य ह पूरन होइ प्रमान तो तो रे हो अजय तुम
दस सिर य है निदान ॥ कबि रुबाच कबित ॥ सुक्र मंत्र उपदेस इ
हा रावन सुनि आयो बस गुरु बचन बिस्वास छो ह उर गर बजु छ
यो मन अपने त्रिन मात्र जगत जन्तु सुजानत अब फूटी उर
आषि पतित प्रतु कुन पिछानत ससजो अंग लमृगराज सो कु
दिन हेत क्रीडा करत कंटक तो बल हि हिमके आपना सकृत
अनुसरत ॥ दहा ॥ गुट बिवर रावन गयो कपट होम के काज
आनि करे सब सिध रहा समय उचित मष साज ॥१॥ छंद उधो रा
गत बिवर जोइ सग्रीव सोल गिपयाल हि सीव यकांत अजिन

अवास : निजगरतहोमनिवास : अनपरसमारजितअंग : आरंभहोमअर्ज
ग : बिधिबसत्रथोतबनाए : इहाथपोआसनआए : उछाहबढ़िपुनिआप
त्रैलोकप्रगटप्रताप : संकलपकृतहृतसाथ : हितउदिकसंग्रहिथ :
कृतकुंकुमबिहतबिसाल : कीयप्रगटअनलकराल : सभिधाजथाबिधिसा
धि : प्रजालिरहतउपाधि : हृतमोनतजीयबीर : रहिदिगनिमूरिसधी
र : बिधिदिब्यबारहीबार : आहुतिमंत्रउचार : रथमहाहयजुतराजि
अंसकलपरिकरसाज : समससत्रअसत्रनिसेंग : पुनिचापअरुयनि
षंग : प्रतिअंगकवचप्रमानि : इत्यादिआरथआनि : कृतकुंकुमेलिमंत्र
रि : इहउचितमंत्रउचारि : मिलिअनलउठ्यथोम : बसबातबढ़िचढ़ि
ओम : दुषनोबिभीषनदेषि : बाढ़ोजुसोकबिसेषि ॥ बिभीषनउ
हैगदथलयहहोम : धारजुबढ़िचढ़िधोम : तबदुरगपठ्येतत : यह
तेहुसोधअरुत ॥ कबिहुबाचारुहा ॥ सुपेहुतसबनेहसुनि : इहाक
पिदलमहआए : बिबिरिबिभीषनसोसबिधि : बातेकहीबनाए ॥३॥
बिभीषन ॥ कहोबिभीषनजोरिकर : रामसुनहुमहाराज : गोलंक
सनिकृतिला : कपटहोमकेकाज ॥ ॥ कहतहेरथहोमकरि : अगनि
कुंडतेओर : सायुधसकवचसोजसब : ठीकभोरकीभोर ॥३॥ गमनता
सरथरुगगन : जथायुधकेजाए : बहिरथजोषलआरुहे : अपनीदिष्ट
नआए ॥४॥ आयुधधनुषअंतगतैं : तेईअद्भुतबीर : बिसषअमोघ
जुकवचबपु : सहजअनेदिसधीर ॥५॥ जोवहनिकसयरथसजय : अ
जयहोइबलआप : हैनसुरासुरसायियह : पापीत्रिपुरप्रताप ॥६॥ अब
प्रभुकरियेमंत्रयह : होमबिघनजिहिहोइ : याकेसबसाधनअफल :
कारिजसिधनकोइ ॥७॥ छंद ॥ श्रीरामबाच ॥ रामकहोतब
मुनिकपिराजा : करियेहोमबिनासनकाजा : हविमर्कटतरुबली
पगवहि : होमबिघ्नसकरहिफिरिआवहि ॥ कबिहु ॥ सुषीनएअंगद
हनुमाना : बानरसंगलुतबलवाना : निकसिचलेप्रभुकहेसिरना
ई : रिछियराषिमूरतिरघुराई : इहकपिलंककोटचढ़िआए : छोटिदयेइ
हगजनिअछाए : बारनछूटेनिरहिमनबल : यहप्रावहिगरतयोको
लाहल : इहांजितेराकसमुहआए : समहरकपिनिसुमारिनसाए :
निसेरईहोमबिवरनहीपावहि : दूटतफिरिप्राकारहिधावहि : होम
जेवरषोजतकपिहारे : दिसिदिसिधावतहोतदुषारे : सरमानामरा
सीसुंदरि : कुतीबिभीषनत्रीयानगतिहरि : दि

रकरदेषे : बिकलतयेतिहित्रीयाबिसेषे : बिनतानेनेनिसेनबतायो : दुरग
मबिवरद्वारदरसायो : दयेकपारबिकरसिलद्वारे : निकरआरसोबीरनि
हारे : बालिपुत्रसोसिलाबिदारी : महाबीरपदतललेमारी : बिवरद्वारज
बछुलोबिसेषो : दसमिरहोमकरततहादेषो : इहाकपिहोमबिवरम
हआये : सबेउपद्रवकरतसवाये : चषमुद्रितजुतध्यानिसाचर : बे
गेद्रिटआसनसाधेबर : हरेनरावनफिरेनहोले : बीरपचारततदपिन
बोले : मांगतमरकरजुधमहाबल : षेचरवृतनहीतजतमोनषल : इ
हाअंगदयहमंत्रउपायो : आसुरकेअंतहपुरआयो : ॥ इहा॥ सुरआसुरकि
नरसुता : नागजक्षसुबनारि : समयबिचारिजुअनुसरे : प्रतियहदुरीपु
कारि : ॥ कबित्त ॥ अंगदअतिबलउमगिआप : अंतहपुरआयो : ऊव
हाहारवग्रेहग्रेह : दुसहदरसायो : नामनितिहिछिनलाजिलाजि : प्रति
मंदिरपैसी : आहिआहिकरिरुदति : कहेयहनरीजुकेसी : जुवराज
फिरततदतसजय : महलमहलमदोदरी : पावेनकहुपदरणनी : अबल
चितचितापरी : ॥ चित्रग्रेहप्रतिमाबिचित्र : बिनतजुबनाई : मयत
नयातिहिग्रेहमांऊ : उरकंपतआई : मंदिरतिहिपुतरीनिमांऊ : मिलि
गईमंदोदरि : अंगदषोजतअंगअंग : सोलहतनसुंदरि : कपिपुरे
जुसंत्रमचितकछु : हाथनमेलतचकितऊव : कैबिमनसुधाकेषो
षोजिहग : नरगदोतबद्वारजुव : ॥ सुरकंन्यास्कतहां : दुचितग्र
वलोकेषोअरद : नैनसेनसंग्या निदान : तिहिबनाइहईतद : फि
रिषेगेतिहिग्रेहफांदि : अंगदअधिकारई : उरकंपतअनुसार : प्री
यालंकेसुरपाई : करकरषिग्रेचिकादीसुकपि : जोरमृगीमृगराज
जो : धकधकीपरीछतियांअधिक : तरनिबिलोकतनीतसो : ॥ इ
हा ॥ ऊकऊरतगहिगहिऊपरि : बांनरत्रीयाबिहाल : जलजल
नागजमत्रजो : आंदोलतअसराल : ॥ कबित्त ॥ अबसतईअब
लाअचेत : इहाबाहरिआनी : छुद्रिघंटिकाईछूटि : टूटिनाबीसिथलांनी
फटिकंचुकितनप्रताफैलि : हारावलिटूटीय : मदनपुरीमनुबयरमं
नि : लीनीसिवलुटीय : आंनीकदोरिकचकरषियो : होमकरतरावन
जहां : हाहाबलिष्टतावीअसह : तिहिनसुरासुरबलतहां : ॥ सुतबं
धवमंत्रीजुसर : जूऊजगजांन्यो : रिषपुलसतिकोबंस : इथीनयोन
सप्रमांन्यो : पुनिजुबिभीषनअनयपाइ : प्रभुतागदपायो : करषिक
रषिकचकपिन : दुसहदुमत्रीयनदिषायो : हममांऊबिपतियेहो

तहै मोनमंत्रपीयपदिहो तिहिबलबिसेषलकेसतुम कितकक
लअबकदिहो॥२॥ अरिकिंकरयरआर अबलकृतमुठउयारि फ
रिफारिपटक्रमनफेरि हरिअंगनिहारे सकलहरअंगार तेरिरे
दिसिदिसितन सुनीकरतअनसुनी मंत्रतुमजपतमोनमन जि
हिजीवनहैधिकारजग जपेकलपसतजीजीये हीयवदेआनिदुज
नदुसह कंतपराक्रमकीजीये॥३॥ मेरोपुत्रजसेघनाद सोनहिहहि
अवसर मोसीताकीमातबीरस्यामदोहरि तिहिकवकरगहिक
पिनि औविपतिआगेआनी कंतमोनजपकरत आबिबोलेनअ
पानी गुनअहंकारलजागरे होमकरतजिहिजीयनहित कहि
नातिधरमनरहरसुकबि बहुतातेमरिबोबिहल॥४॥ करमरक
टकरमांऊ रहतहाहामदोहरि हमअनाथजोयहो कहाकरिहो
बहोमकरि कंतपानिअहकरे अबलतुमआहिजुआनी करतेर
बानरकरषि धारहरतरुधानी अनतरीनरीहममांऊयहसो
सचराचरसाषिहै दुषसोकसिंधुबूडतदुगम हमहिकहोकोराषि
हो॥७॥ कबिकबाच॥ छंद॥ अरी॥ बोलीफटीछुटीछुटखलि
बिगलतबसनचषनिअंजनचलि अंअंषऊजुउरधउसासा
उरनासीअहवातनिआसा छुटेकसनतनधकधकछाती रोम
उनारोषदिगराती करमरहतबलियाबलिकरकी तनरोमा
चकंचुकीतरकी चकितमृगीसीचकुयाचाहति थकीबिपतिसि
धुसोथाहति मगनजरीदुषसागरमांही निरषतकछुअवलंब
ननांही पटरागनिमरकटपरिनावति सोसोसुरकंसांसुषपावत
नानेकनकरतनमनिजषन करीसुनगमुकतावलिकनकन जो
जोकपिकरगहिकऊरत मिलिमिलिसोतिहसतिमुषमोरति अे
सीदुषदहसाअकुलांनी रावनआगेगदीरांनी॥ मदोहरीउलवतुम
कंतकरीबुधितेसी अबहममांऊतईगतिअेसी आपमोनबृतचषनउ
धारत मरकटहमहिदुसहदुषमारत कंतयहोमकहाप्रीयकरिहो
मोनगुमाहपुनिहतोमरिहो सबसुतभ्रातजतीजसंघारे मंत्रीसु
नटमरकटनिमारे अेसेपतितुममंत्रउपयो रिषपुलसतिकोवे
सनसयो हमहिपकरियेकपिलेजे हैं कोजानेताकेसीकेहैं कि
हिकाजेतुमकरतहोमक्रम हैधक

पुकारि मदोदरि रानी: इहिमन मांझ गला निनआनी: परम दुषित मय
सुता पुकारत: यह बृत हेतन आषि उघारत ॥ दो ॥ पावत जग्य प्रसाद
नप: कुलबैभव अहंकार: सो तेतुम इहि बुधि सो: सबै करि षय कार ॥
कबि रुबाच ॥ छंद ॥ षरी ॥ देषि त्रीया बिललात दुषारी: तो हनुमंत
क्रोध मन नारी: बिहत होम सब करि बिथारे: लेसा कुलि दस कुदिस क
रे: बारि मोलि कृत कुंभ बुझाये: पुनि रावन कछु अनल न पाये: लै
कर अवास मुख मारयो: पुनि थापट दस मुष मन्य प्रहारयो: दुसह ल
तत बउर मह दीनो: कपि इस्त दिअ नेसी कीनो: बिन स्यो होम सुमन
हि बिचारयो: कैउ दिन रुत रावन हारयो: काज होम कपि हातो कीनो
पुनि कटक उगि पाप प्रबीनो: जोगनी दत्त जग्य जैसो: कालकराल
प्रलय को केसो: लै कर गदा दुसह मरकट दिसि: रावन धायो चित मह
रिस: अंगद मारुति बाहरि आये: धीग्द सानन पाछे धाये: कोत कहो
म बिधंसन कीनो: निसचर उर बटि दाहन बीनो: कोट कूदि कटक के
संकट: मारग गगन गये ते मरकट: थे बिजई कपि दल मह आये: न
लेत ते सब हिम मन नाये: राम चरन तिन लो सिर नाये: प्रभु की कृपा
परम जय पाये ॥ कबित ॥ चं सुनो सुक उपदेस करम आरंभ
होम कृत: बिवरग दग दबीच हरि जुत हा बेगि बिजय हित: माह
ति अरु जुवराज सुबीअंगद इहां आये: करे उपद्रव तिन अनेक दुष
दुसह दिषाये: सो ईस्यो समय नर हरसु कबि उरन्य पस्यो अ
धीरके: कीनो जु होम बिधंस कपि: कृत प्रताप रघुबीर के ॥ अ
थ रावन मंदोदरी प्रति ग्यान प्रबोध कर ना ॥ दो ॥ है उपजत हग्क
रम हित: दुष सुष नाव दुरंत: नुगवत है तव कृत सब: तिन के फल हित
रंत ॥ १ ॥ कबित ॥ रावन बाच ॥ दैवाधीन दुसाधि सरब हित अहि
तजु सुंदरि: आनि मिलत अवचित अषित सजन असहन अरि: सुष
दुष करम संजोग इष्ट अनइष्ट अभासत: असत वत अबिसेष: प्रग
ट चित्त तव प्रकासत: सब गति जुये कन रहस कबि लघु दीरघ नह
लेषि है: जो जीयत जेत बहु काल जग दुसह कहा न देषि है ॥ २ ॥ छंद
षरी ॥ करमाधीन अहिताहित कारन: मान निग्यान प्रकास
कु निजमन: सो कमूल अग्यान सुजानकु: पुनि तिहि नास कग्यो
न प्रमानकु: उपजत है अग्यान हि अहमिति: मूढ इन हि अपने के
रि मानत: देही देह पुत्र धन दारा: है सब बंध सकुटुंब हमारा: हरष

सोकतयक्रोध्जुमोहा: लोभमदादयदारुनद्रोहा: जनमजरारुजम
रनसुजानहु: यहअग्यानप्रवरतिप्रमानहु देहयीनइतेसबदेष
हु: लोचनमध्यउघारिसुलेषहु: जगतचराचरबिनसतजानहु:
ग्यानीपिंडसंजोगप्रमानहु: निसचयग्यानसुतोअबिनासी: प्रगन
जोतिअषंडप्रकासी: सुधअलेपकसाधुअसंगी: आनंदरूपअरू
पअनंगी: भावाभावबिबर्जितनामनि हैबितरिक्तसंजोगबि
जोगनि: वहतनमेंतोलोअपनाई: सोबिछुसोतनगईसगाई:
वहतोगयोहुतीजिहिअहमिति: रानीअबकहिकजेरेवति: इत
बधुसुतपोत्रहमारे: जीवगयोतबतनलेजारे. जीयतेहुतोसजातनजो
नों: प्रगटनबेदपुरानबषानों. सोकतजयुयहजानिसयानी: पिंड
बिनासनबिनसेप्रानी: प्रीयेजातहुंबाधिबयरपन: रामहिसानुज
हतोमहारन: यहत्रिकूटगरजीयतजुअेहूं: प्रीयेप्रसिधजगतज
सपेहूं: रामबानउरबिधमहारन: रामजोतिमिलिहैकेरावन: जब
रघुनाथमांहमिलिजांहूं: बिधियहकरीयोतुमहिबताहूं: दानज
थाबिधिदेषिसुदीजहु: हमअग्यासीतहितवमारहु: तुमसहग
मनिधरमउधारहु: कागबिताचढिमोसंगकामनि: ववदेहजो
मनिधरमउधारहु: कागबिताचढिमोसंगकामनि: ववदेहजो
तहुतुमतोमनि: सुषसाधेइहिलोकसुनाइक: पुनिपरलोकस
धहुजरिपावक॥ मंदोदरी बाचाकबिता॥ कहोमंदोदरिसुनहु
कंत: तुमप्रगटकरतपन: नयेनहैकैहैनरूप: कोउरामजई-रन॥
बीसभुजाइससिरबिसाल: जदपिजगजेता: मांनहुआपनकितक
मात्र: सबबंससमेता: येस्वयंब्रह्मनरहरसुकबि: आपधरमहि
तअवतरे: नवनूतत्रिपुरदाहकअतय: हैतयकरहंताहरे॥१०॥
छंद द्वैअमरी॥ प्रथमकलपतनमछप्रकासो: बारिप्रलयमंह
संषबिनासो: पुनितयेकमग्रसंमाग्रातम: ग्रमनअसिकृष्ट
षिसयनग्रम: आदिबराहतयेप्रतुग्रोई: महीअषिलरदअग्र
समोई: येईइहिनरहरिअवतारा: सत्रुहिरनकसिपसंघारा: सुरप
तिहितबावनतनसाधो: बलित्रयलोकदयोतउबाधो: असुरन
येषलछत्रीयआकृति: छीनिलईइकवीसबारछिति: सोईद्विजरां
मद्विजनिलेदीनी: करुलमेलिसंकलपकीनी: ऐईरामरघुकु
लअवतारा: स्वयंरूपनरहरिअवतारा: कतहुतनतोहिनरतनकी
नों: लोकप्रसिधजतीहुतलीनों: तुमजोहरीसीयातीयताकी: ब
नहीअकेलीबसतबराकी: प्रीययहकीनीबुधिअपावन: राकस

बंसनासहितरावन॥रावनबाच॥परब्रह्मकुंजानतरघुपति:सी
तालछ्मीयहेबचनसति:मेरेयहमतसतिमंदोदरि:मिलिहैराम
रामसरकरमरि:सनमुषरामबानउरसहिहै:लोकदुलसपरमप
दलहिहै:अबतोप्रीयेयहेबनिआई:जोपेरहेजाइसोईजाई:
कबित॥लंकापतीमरनहृतलीनो:कामनितसामोनमुषकीनो
दहा॥होमगूदबिध्वंसकुव:सोदपतिसमबाद:सुरासुरनिनरह
रसुकबि:बाद्योबयरबिबाद॥१॥इतिरावनाकवटगूदहोमबिध्वं
सनरंभ॥कबित॥दहा॥हेप्रबोधमंदोदरिहरसरिसराकसराइ:बा
हरिआयोबलतसो:बेगोसत्राबनाइ॥१॥पुत्रनतीजेसुनटपुनि:जे
पूरषहितपूर:मारतबचेजुमरकटनि:सोमिलिबेगेसूर॥रावना
जेरनमारेराकसनि:हेरिहेरिहग्होइ:आनिजिवायेअमृतउन:कपि
तेमरेनकोइ॥३॥हैसबकूकेस्वामिहित:बिषमजुधकरिबीर:
असचतुरथमआपने:सेनारहेसधीर॥४॥तुमनिसचरबिद्यानि
पुन:कपटजुधबलकाइ:कारननामजुअमरकुल:ऐसेकरुउ
पाइ॥५॥कबित॥बेचरबंसपचारिषल:रनवटबाध्योरान
होइहाहारवलंकमंह:निहसिदिसानदिसान॥६॥छंदप धरी॥उत
मजलमंजनकरीयअंग:पुनिकरेमंत्रबिजईप्रसंग:बिधिबरनबरन
बासनबनाइ:चितरुचितबिबिधिसोरंतचढाइ:सनाहकसेप्रतिअं
गसोह:उतरीयमुंछनोहनिआरोह:तूरंतकसनतनफूलितेष:रस
बीरबिकटहकुटीत्रिरेष:आरकतनयनतनकचउतार:संसारमन
कुकारनसंघार॥कबित॥दसनिषंगकटिकसिसुदेस:दसासिरष
लदारुन:हकुटिदसकुलुवहंग:सकलसोचनअतिसारुन:दस
हसतनिकोदंड:बिषमबिजईटंकारु:धुनितबहुरधरुधार:अ
तिसयरनउछव:सजिसमयसिधआयुधसकल:बिषमबयररिसि
उरबसीय:हितसमरमरनआनंदकुव:हरिकटकहदहटहसीय
॥१॥दहा॥इष्टमनाएआपने:अरुमातायहआइ:पाईअप्पाबंदि
पद:प्रेमअसीसजुपाइ॥१॥मिलिरावनरनिवासमह:सबहिन
सोहितसाजि:आयोबाहरिआपरहो:बीरकुंजुबाजि॥२॥छंदप
धरी॥मनिमयकिरीटनगमुकटमंड:दससीसछत्रबनिकनक
दंड:रथजथाजुकतध्वजदंडरोप:आवरितससत्रसनाहओप
करबाजिबृषभषरजुकतकीन:नगजटितकनककिंकनिन

वीन: समरमुषचद्रौद्रसकंधसाजि: बनिबीरकुरुउबीरबाजि: नेरीमृ
दंगयनसंषताल बाल्ली: नूर त्रंबककराल रनअंगनेरि किंकिगर
वद: सहनसद्दोलगोमुषासद: दारुमयधातमृगशंगबाद: निरधारजि
बिधिअनसंषिनाद: प्रति देसषंकसंतवप्रमान: आजित्र बिबिधि
महिमाबिधान: इत्यादिगगनगतधुनिअनेक: आजित्र बिधानकरम
षबिबेक अष्टादसषोहनिमिलेआर: सबसुघरबजंत्रीजेसुनार
आरोहसुरथरावनअनेग: तुवकोलकमग्रहिराजतंग: कगम
गतहिसाजहमंकोल त्रयलोकत्रासमांनीअतोल धसमसति
धरापरबतनिदार: अतिबेगपवनथकिजलअथाह: ॥छंद उधो
राअनचितअसगुनऐक: इहाहोतअसुभअनेक: रविकिरनिमंदप्र
चार: बहिपवनसमुषबिकार बढिअजयसुरनभवानि: जहांगि
रनआयुधजानि: नहहोतसयचितभंग: अरुबिसनसिंदनअंग
कुजतकगोरकुलास: बनजंतकाजबिनास: भुजअंबेगीअथ
पतिअहितस्रचित्रसिध: पलवारयंषीयपुंज: गोमायुघरहकगुंज
अनमितहोतअनेक: नउतजतनाहिनेक ॥ छ ॥ सबेजंतकुंज
तअसुभ: करिकरिसबहकुलास: मनुअंतककेरतमिलि: बा
लहेतबिनास ॥१॥ जोअपराधीरामको: तिहिसुभसगुननहो
इ: लोकबेदकोधरमलगि: कहतयहेसबकोइ ॥ छंद पधरी ॥
सजिचलोसेनचतुरंगसार: रजउगीगगनमिलिनोअधार: बिनु
निसाचकचकीबियोग: सेनारजचढिमारुतिसंजोग: सुरमंप
धनुषटंकारसूर: प्रतिअनीकजेबाजित्रपूर: हयहीसगरजंगजंघ
रहाक: कहकहेमरुकनीयकाक: सबचलयेनादमिलिएकसंग
पूरितअकासमंडलपतंग: धनअलयकारजनुगगनधार: अतिप
रीतासतुवओरओर: मिलिसातसिंधुमरयादमुक्ति: मरमरिन
गहरगएनीरसुक्ति: दिगपालदिरदकुंगमगतकांन: रविपवन
गवनगतिअतिअलोल: गजमत्रचलेअतिदिव्यगाजि: वसवान
मनकुवादरबिराजि: बिरदैतमिलेआसुरदुवार: रनदुअकपदनु
धरुयनराह: रनचढोआनिरावनसरोष: दिगपालसालरतद
वरोष ॥ कबित्त ॥ दिवरामतनदिष्ट रोषरवमारमारन दि
गफुटीयदसदन दिष्यतनवरनसुअंजन: अतिप्रचंडसजीय
अनेक आयुधअसासत: पापनयानकरुपपेषि तजामरक
टत्रासत: नकनूतवराचरमानिनयु: दीयकातरअकंपदु

बंसनासहितरावन॥रावनबाच॥परब्रह्मऊंजानतरघुपति:सी
तालछ्मीयहेबचनसति:मेरेयहमतसतिमंदोदरि:मिलिहैराम
रामसरकरमरि:सनमुषरामबानउरसहिहै:लोकदुलसपरमप
दलहिहै:अबतोप्रीयेयहेबनिआई:जोपरेहैजाइसोईजाई:
कबित्त॥लंकापतीमरनहृतलीनो:कामनितहामोनमुषकीनो
मंदोदरी॥होमगूटबिध्वंसऊव:सोदपतिसमबाद:सुरासुरनिनरह
रसुकबि:बाद्रोबयरबिबाद॥१॥इतिरावनाकघटगूटहोमबिध्वं
सनंबा॥कबित्त॥दुहा॥दैप्रबोधमंदोदरिहरसरिसराकसराइ:ब
हरिआयोबलतसो:बेगोसनाबनाइ॥१॥पुत्रनतीजेसुनटपुनि:जे
पूरषहितपूर:मारतबचेजुमरकटनि:सोमिलिबेगेसूर॥रावन
जेरनमारेराकसनि:हेरिहेरिहग्होइ:आनिजिवायेअमृतउन:कपि
तोमरेनकोइ॥२॥हैसबऊऊस्वामिहित:बिषमजुधकरिबीर:
असचतुरथमआपने:सेनारहेसधीर॥४॥तुमनिसचरबिधानि
पुन:कपटजुधबलकाइ:कारननासजुअमरकुल:ऐसेकरऊउ
पाइ॥५॥कबित्त॥बेचरबंसपचारिषल:रनवटबाध्योरान
होइहाहारवलंकमंह:निहसिदिसानदिसान॥६॥छंदप धरी॥उत
मजलमंजनकरीयअंग:पुनिकरेमंत्रबिजईप्रसंग:बिधिबरनबरन
बासनबनाइ:चितरुचितबिबिधिसोरंसचढाइ:सनाहकसेप्रतिअ
गसोह:उत्तरीयमूछनोहनिआरोह:तूटतकसनतनफूलितेष:रस
बीरबिकटहकुटीत्रिरेष:आरकतनयनतनकचउतार:संसारमन
ऊकारनसंघार॥कबित्त॥दसनिषंगकटिकसिसुदेस:दससिरष
लदारुन:नकुटिदसऊतुवनंग:सकललोचनअतिसारुन:दस
हसतनिकोदंड:बिषमबिजईटंकारव:धुनितबरुरथरुधार:अ
तिसयरनउछव:सजिसमयसिधआयुधसकल:बिषमबयररिस
उरबसीय:हितसमरमरनआनंदऊव:हठिकटकहटहटहसीय
॥१॥दुहा॥इष्टमनाएआपने:अरुमातापहआइ:पाईअप्पाबंदि
पद:प्रेमअसीसजुपाइ॥१॥मिलिरावनरनिवासमह:सबहिन
सोहितसाजि:आयोबाहरिआपहो:बीरऊऊबाजि॥२॥छंदप
धरी॥मनिमयकिरीटनगमुकटमंड:दससीसछत्रबनिकनक
दंड:रथजथाजुकतध्वजदंडरोप:आवरितससत्रसनाहओप:
करबाजिबृषभषरजुकतकीन:नगजटितकनककिंकनिन

बीन: समरमुषचद्रौद्रसकंधसाजि· बनिवीरकुरुउबीरबाजि: नेरीमृ
दंगयनसंषताल· बाहली: नूर· त्रंबककराल· रनअंगनेरिलिगर
वद· सहनसदोलगोमुषासद: दारुमयधातमृगअंगवाद: निरधरबि
बिधिअनसंषिनाद: अति देसषकसंनवप्रमान: बाजित्र बिबिधि
महिमाबिधान: इत्यादिगगनगतधुनिअनेक: बाजित्रबिधानकरम
षबिबेक· अष्टदसषोहनिमिलेआर: सबसुघरबजंत्रीजेसुनार·
आरोहसुरथरावनअनंग: नुवकोलकमग्रहिराजनंग· रुगम
गतहिसाजहमंकोल· त्रयलोकत्रासमांनीअतोल: धसमसति
धरापरचलनिदाह· अतिबेगपवनथकिजलअथाह:॥छंदउधो
राअनचितअसगुनऐक: इहाहोतअसुनअनेक· रविकिरनिमंदअ
चार: बहिपवनसमुषबिकार· बढिअजयसुरननबांनि: जहागि
रतआयुधजानि: नहहोतनयचितभंग: अरुबिसतसिंहनअंग
कुजतकगोरकुनास: बनजंतकाजबिनास: भुजअबेगअथ
पतिअहितसूचित्रसिध: पलचारयंबीयपुंज· गोमायुषरहकपुंज
अनमितहोतअनेक· नउतजतनाहिनेक॥हूहा॥सबेजंतकुंज
तअसुन: करिकरिसबहकुनास: मनुअंतककेहतमिलि· बो
लतहेतबिनास॥१॥ जोअपराधीरामको· तिहिसुनसगुननहे
ह: लोकबेदकोधरमलगि: कहतयहेसबकोराम॥छंदपधरी॥
सजिचलोसेन चतुरंगसार: रजउडीगगनमिलिलोअधार: बिनु
निसाचक्रचकीबियोग: सेनारजचलिमारुतिसंजोग· सुरसंब
धनुषटंकारसूर: प्रतिअनीबजेबाजित्रपूर· ह्यहीसगरजगजब
रहाक: कहकहेकमरुकनीयकाक: सबतयेनादमिलिएकसंग
पूरितअकासमंकलपतंग: घनप्रलयकारजनुगगनघोर· अतिप
रीतासतुवओरओर· मिलिसातसिंधुमरयादमुक्ति· सरसरित
गहरगएनीरसुक्ति· दिगपालहिरहकंगमगतकोल: रहिपवन
गवनगतिअतिअलोल· गजमत्तचलेअतिदिग्धगाजि· बसबात
मनकुबादरबिराजि· बिरदैतमिलेआसुरदुवाह· रनदुष्टकपटजु
धदुयनराह· रनचढोआनिरावनसरोष· दिगपालसालरतदे
वरोष॥कबित्तदेवरामतनदिष्ट· रोषरवमारमाररन· दि
गफटीयदसदन· दिग्धतनबरनसुअंजन· अतिप्रचंडसजीय
अनेक· आयुधअस्त्रासत· पापतयानकरुपषेषि तहामरक
टत्रासत· नवनतचराचरमानितय: हीयकातरआकंपकु

दसबदनअरुनदारुनदुसह॥ नरअयोसेयमनुव॥१॥ रावनजु
धाग म॥ सोहरावनसमरसूर॥ कंठकत्रय लोकीय॥ गिरतसुरा
सुरससत्र॥ बिषमरनमोहिबिलोकीय॥ मेकंदुककैलास केलिहे
हरजुतकीनो॥ कहिमानुषतूकवन॥ दाहसुरपतिउरदीनो॥ करि
हथसहरकदीनकपि॥ लाघिसिंधुआयोलरन॥ अबिनाषमरिक
रिहुअबे॥ महागरबबादेजुमन॥३॥ त्रीयामातताडिका॥ दीनहिज
रामबिनादत्त॥ मृगमतीतमारीच॥ बृधसुतिहिकहोकहाबल॥
सप्ततालजरुजोनि॥ दुंदुभीमृतगदेहहिग॥ बालीसाषामगबर
क॥ हतिगरबजुतिहिलगि॥ कोजयोबीरतैंजुधकरि॥ मिथ्याअ
हमितिबहतमन॥४॥ कबित॥ राघवगदेबिरथरन॥ रा
वनरथआरोह॥ देषिबिभीषनतोउचित॥ हैबाहोउरछोह॥ बि
भीषन बाच॥ रावनषोउसचक्ररथ॥ सजेसनाहसरीर॥ केसेजीत
हुगेकलह॥ बिनाकवचरघुबीर॥ श्रीरामबाच॥ सुनहुसषा
हमपहसुरथ॥ जगजीतहिबलजाहि॥ जदपिदससिरबीसभुज
यहकेतिकषलआहि॥५॥ कबित॥ ग्यान प्रबोधन॥ सरतन
धीरजसुचक्र॥ सीलसतथजादृढधरि॥ अरपरहितहतबलबिबे
क॥ क्रमजुकतबाजिकरि॥ छमादयासमतासंजोग॥ बनिरासि
जुबधीय॥ बिस्वईससमरनबिस्वास॥ सारथरयसंधीय॥ संतो
षषगदानसुपरस॥ बिरतिचरमबुधिसकतिबस॥ संसारबिषयबि
जरीसहज॥ सुकबिकहैनरहरसुजस॥६॥ सुनलछनमितिसुन
ट॥ ग्यानबंधवगलगजीय॥ बिस्वबिदितबिग्यान॥ सदिढकोदंडसु
सजीय॥ मनथिरतातूनीर॥ नियमसमयनदृमसाएक॥ सुरगुर
निसपूजासत्रेम॥ सोईकवचसहाएक॥ अवरनउपाइयासमग्र
षिल॥ हेजुबिभीषनबिजयहित॥ इहिरथाहूनरहरसुकबि॥
निगमहेतहमरहतनित॥७॥ मानिबिभीषनबचनमम॥
सिघासनतेबिसास॥ अबदसकंधरदुष्टयह॥ निजकृतपेहैनास॥८॥
छंद॥ अषरी॥ इतरावनउतरामअगजीय॥ समहरखदेसेनयनसजीय
असुरसमूहनालकपिआये॥ स्वामिअअतिरोषसबाये॥ हुकुयांसेन
मरादरसाई॥ अतिबलसरनजुबरषनआई॥ असुरअनीगजघटासुआव
हि॥ दंतपंतिमनुबकदरसावहि॥ तपतकुंतदिनकरकरतैसे॥ जलदबि
तानसुरंगरंगजैसे॥ अनलफिरेदलसनमुषआये॥ दियजुमछधजा

रसाये: नेजासुरंगमेघतहाताने पवनबीरअनकूलप्रमाने: बिसरिउ
ठाऊवाजतबाजे जैसेंगगनसघनमिलिगाजे: आयुधचमकतकरनि
उघारैं: बिजलताचमकतबरषारे अतिसुरलेसुरश्रीधउचारहि: किधु
मयूरामत्तपुकारहि: इंद्रधनुषसेमनुषजआहव: रोषसघोषहोतरकै
ख: पवनरोसचढिअनिछबिपावत: धीरसुभटबादरजनुधावत: अ
मरचमरीछनिकेआवन: स्यामघटाउनईमनुसावन: कपिनिटवर
नबरनबनिकैसे जलदअनेकरंगमिलिजैसे अटकनिवारिनिकट
दलआये: रोषारोहछोहबलछाये: सघनधारसेछुटैअसुरसर: रन
हैमओमनफुलग्पोफर: कपिउरलागिनिकसिसरकैसे परबतम
नफुपनगसेपैसे: धरहैरतरुधिरघनधारा: करनअरुनधातसेफु
रा: तेषकपिनिसिरअसमरिटहि: छरामनफुपरबतपरछूटहि
अगनिबानतहानिकसतअैसे: नूतनिछत्रगगनमगतैसे ताडत
कपिराकसमूरुनितर: असनिपरतमानफुगिरफुपर: घाएनकर
रुधिरचलेघन: परबतसिरबरषतजोपूरन: बफुसुरयावसुनटय
ब्रोलत: फरलामनफुपवनफुकोलत- बरषततरपाथरलटबो
नर: काटिनचरमअसुरबोरकर: हयहेयामाच्योहाफुरव: कातरक
पबीरमनफुछव: बानररनमबहतअबाहत: चफुयाफुदिलातदेवा
हत: मुहराकसथापटकपिमारहि: पुनिअतिबलमुष्टीनिप्रहारहि
पकरिपाएकपिराकसपटकहि: हीयचढिबीरदुफुदिसिहटकहि
दैहिडारिबलीगहिनजदिसि: महीबोदिदाढहिकातिकमिस: फ
रहिउररनषनिगहिफेरहि: मुहषलचदैसुमारिनिवेरहि: रनलो
टहिमरकटकेमारे: बिवसनयेमानफुमतवारे: छतमुषरुधिरभा
रयरछूटे: फबेकलतमाटसेफूटे- करवरिघाएअधधरकाटत: बी
रमनफुघरवातनिबाटत: गरजिचलतबफुगोलीगोले: अएअषा
ढहियलयुओले: सोनाहैतसघमरिलुसमहर: नाचतमत्तमयूर
धरनिधर: चफुयाधूमरेनचढिनतचलि: महाअंधारमनफुरज
नीमिलि: हिसिहिसितेपरबतकपिआरत: महाप्रमानराकसनि
मारत: काटतपाषएरषाकय: नाजिचढेगिरगगनमनफुतय:
करदमओमासबसकेरो: घाएनओनीचलोघनेरो: पूरिरुधि
रपरिससत्रप्रहारा: धरनिचलीसरितासतधारा ॥ छंद पधरी ॥
कपिनालअधधरकटेकोपि: रनटकनिरतनटपाइरोपि: महि
परेमुकहिमारमार: धरधसहिकैकरधरिदुधार: फटिबी
रुकवरयरफैलिअंत: उरुतअतेगजुगचरनजंत: बादरनि

करेनघउदरखादः पवगांनि अंत्रमूलहिपटादः केकानश्रोननननकं
तकुष्ठः मांनकुपषालछुटिउत्तयमुष्ठः धरधरनिपरेलोरतसधी
रः बीररसरसेउगिलिरहिबीरः नालकपिजयेनरउत्तयनाग बल
रेषिउगहितेईटेकिषग आदबदहोतकोउअधअंग अतिकोप
नालमरकटअंगः करवतनिकाउमनुषकुकीनः नटनयेनाग
बिबिरोषनीनः सिरकपिनअबाफुतअसुरसारः बीजजनुकर
नपरबतबिहारः कटिअंगहोतउलटेकरालः बिनिपालअमनु
निकुष्ठालः पदपानिसीसबिथुरेत्रमांनिः जुधइंद्रजालबकुरूप
जांनिः कपिसीसनिकटपरिरीछकाइः सिररीछदेहमरकटसु
नारः बिपरीतअशिषगधारबांनिः अदभुतचरितजुधनयो
आंनिः परिबीरषेतप्रतिमांपहारः अंगअंगघाउआयुधअपारः उतर
हिरुधिरषितपथअकालः षलकेजनुपरबतदरीषालः बिपरीतषेत
नयोरनवानः अवनीचलिओनीअप्रमानः मिलिरुधिरसुषेनहीन
समाइः सतधारबहतसरितासुनाइः कपिलातमारिकुपहिअक
सः तिनकरहिषगबिबिषेकतासः धरगिरहिकटेमरकटसधीरः
बीररसरसेउगिलिरहिबीरः निसचारनालकपिजुधनिदानः भूतो
ननवषमतयहनयांनः जयजयतिरामकहिकीसजोधः कहिजयज
यरावनअसुरकोधः॥ ६॥ सहजमिलेपरिकरसकलः नयेच
राचरनीतः अबबरनतअदभुतयहः रनसरितबिपरीतः॥ छं
द दैअषरीतहांउनयदलबनेबिकटतटः सरितानरसाज
रनसंकटः रुधिरप्रवाहसलिलचलिराते मजतबीरबीररसमाते
तिरतकबंधतरंगनिमिलितनः जलक्रीडासेकरतमृतकजनः
करीसूडिगजमकरकिलोलतः दिसिदिसदालकमगसेकोलतः पा
निकटअसीछबिपावतः धाराजूथमीनमनुधावतः सिततरचम
रफेनतरसोहतः मिलिकचउरफिसिवालबिमोहतः श्रीधकेकच
कवाकहंसगनः जलमानससेक्रीडतबृकजनः सिलासदिघमध्यप
रिसिधुरः टूटेजिहाजतिरतरथआतुरः भ्रमनचक्ररथत्रमतनयोन
कः बसनतरंगरंगबकुबांनकः दाहेगिरतमरतकुंजरदहिः बारिधि
रतिनऊपरिबहिबहिः अतिसबेगतिरिऊपरआये छत्रपत्रपुरव
निसेछाये बिसषसकतिनिननिकसिफूटिबहुः सोईनयेमनुलयु
दीरघजलसपः बनिचोफाउबिबिधिदलबिकसेः निरमलकमल
कमलसेनिकसेः बाहिगजदालबिसालबिराजितः छतरीमनुसु
रितबिचछाजतः बीरउदरफटिअंत्रबहावतः मांनकुआहतनमु

कलावत अंत्रावलि जंबुक धरि श्रैंचत वेतमीनवनसीसीधे चत जोधाणि
रेसंबधारीजहो नेईतरिसंब चलेसरितातहा महासरिता चलिसमरस
ठारी तरेरुधिरकाबरसरनारी दुरुसरितातटघाइलकारे मनकुअर्थ
जलमरतउतारे थितपानीपातीपूलवरथट तेईमनुसहसुतोज्यस
रितातट बिहरतजूथजूथबनबासी दौउरसेवरतरउवदतिहितबि
लासरासरसकाकनि हटहटहसतबीरकरिहाकनि नरतअनूत
जुकुजतनथोनक बिकटसरिरअनेसेबानक हरषतनयेसुव
लवहसिहसि धोयतसमरबिलोकतधेसिधसि धनुषतरंगतिर
हिउगितेते मृतकबुहतजलचरसेजेते करतधाररतसुनटकर
रे नरमिगिरतनेजातरनारे मंजाकेनसेततिहिमाही जनुबसबा
ततरनिचलिजाही बकुषगृधमृतगधरनिपरबैसे जलचर
तरतजेसे पत्रनरहिजोगनिपनिहारी तहामालाहितहोमिनि
पुरारी दहतकमलसमरबिचिधावत वैसिवसरितापाहन
पावत बिहसिपिसाचीबालनचावहि जनुकपालकरतालब
जावहि गहगहसुरचामकागावति रासदेतरनचरितरिझावति
ऐसीनदीरामअवलोकी तहाबिहसतहैनाथत्रिलोकी पलचर
त्रिपतथेतरपूरन रामहितअसीसमहारन इतरघुपतिउतरा
कसराई दोउदलकूकतकरतदुहाई नाषतहैहसिनागेनागे ल
रतरोसरसअंबरलागे नाजेअसुरनिमरकटनाजहि गहचढिलर
हिसिंघजोंगाजहि मारमारकहिआयुधमारत आपआपप्रनुजे
तिउचारत कालरूपकपिमारहिराकस प्रगटदोहिरावनउरप
रहसगरजहिबिषमनालकपिगाटे ग्रेलहिबलराकसदलगटे
तिरेनिसाचरमरकटनाला करेपरसपरजुधकराला राकसस
बेनिरोहितरावन नयोमहासंग्रामनयावन अतिबलस्वामिध
रमउधारहि बिजरईनकपिनालबिहारहि इहदससीसगेलि
दलआयो दुसहमनुपरबतदरसायो मनिमयकनककिरीटबि
मोहत सिरदससेतछत्रअतिसोहत रथसिरधजापताकारा
जहि बिबिधिससत्रनुजबीसबिराजहि सोहतअवनकनकन
गकुंडलहि मिलिचषरोषजरतमनुमंगल तानतबानधनुष
टंकारत अतिदुसहबिषबचनउचारत बिषमनोहजादिसिक
रिबिकट मनमुरझरजातसोईमरकट ॥ छंद उधोराहिइह
कपिहनुमान पुनिआरजुधजमान दससीससोत्र

दिबीररसबलवंत: बषरत्नषलहिपचारि: पुनि हीयहिमुष्टिप्रहारि।
रथमध्यराकसराइ: तिहिगिस्यौचोटबिताइ: कछुजबेबीतोकाल
सोउग्रोसुरपतिसाल: तिहिषलहिदेषितुरंत: हसिकहतबहनु
मंत: कहिमुष्टिममधिकार: लहिजपेचेतलबार: लंकेसमुष्टी
लाइ: धरत्रम्योकपितिहिघाइ: छंनमात्रउगिसछोह: हनुमंत
रोषारोह: मुहचदेउगिहनुमंत: तजिषेतअसुरतुरंत॥मारुति
यहकलोहनुमतआप: पगमांहिदुष्टसपाप॥कबिरु॥उरपर
त्रासअसेस: सोईनाजिगोलंकेस: चितहन्धरमबिचार: लाग
नतगेलार॥ अथ अम्मबर्णादिक जुध॥छंद॥ अषरी॥सोच
तअतिदेषोलंकेसुर: उग्रेसंनारिचारितबअसुर: अगनिबल
अहिरोमांअतिबल: षउगरोमाबीछुकरोमाषल: प्रजुहिजुहारि
बाधिपोरूषपन: रोषचदेराकसआएरन: येचास्यौराकसइतआ
ये: धरिउरक्रोधउतेकपियाए: बीरबालिसुतमारुतिअतिबल
निकसिसेनतेसुनटनीलनल: राकसचारिचारिबिरबानर: आप
आपजूटेरनअवसर: अमोअम्मप्रहारिआयुध: जुरेबीरराकस
सनमुषजुध: ससत्रअसत्रस्तउततरपाथर: नटकोउमिटतन
पस्यौसमरनर निरअनंगअसुररनमारे: सोईषिलचास्यौकपि
नसंयारे: इनकेगिरतदसाननआयो: छलबलछोहमहामद
छायो: दसतअधरदसकुमुषदारुन: सोकयसतलोचनअतिस
रुन: रामरामसुषकहतलंकेसर: प्रलयअनलसोदुष्टरोषपर: आ
सुरमनकुबिलोक्योअतक: धीरजछुटेकपिनउरधकधक॥अ
थ ऐंद्र रथ आगमन॥दहा॥ रथारूढदससीसरन: बिरथ
रामबरबीर: इंद्रतहाअवलोकियह: अंतरजयोअधीर॥१॥
सुरपतिअपनोसारथी: मातुलिलयोबुलाइ: मेरोरथलेजाउ
महि: रामचदहिरघुराइ॥२॥ हरितबरनजोतेहरषि: बेगपव
नजितबाजि: इंद्रधनुषनाथाअक्षय: सक्तिकवचरथसा
जि॥३॥मातुलि॥ रनबिजईहितदिब्यरथ: इंद्रपगयोआज
कलेजुमतुत्पजोरिकर: रामचदकुमहाराज॥कबिरु॥क
रेजथाक्रमपरिक्रमन: बंदनबिबिधिबिसेस: रामचदेति
हिदिब्यरथ॥ निसचयबिजयनरेस॥४॥रामनयेआरू

दरथ संपेषेसुरराज: महउपजो बिसवासमन: संपेषेसुस्सब: सिय
नयेसुरकाजा॥ छंद दैत्र षरी॥ रथआरूढ रामकहंरावन: देषेदुस
हदेवदुषदारुन; नयोसोचरावनउरभारी: तबराकसमायाबिस
तारी: दुसहअसुरअनीमहदेषे अंरामहीरामलषनअवरेषे: दे
वहिसत्रुसेनमहदेषत बिपरितअद्भुतचरित बिसेषत: रह
केलछमनकीसनालदल: चित्रलिषेरहेचितचल: सेषसहत
मरकटदलसोचत: मनअमपरउसासनिमोचत: योलंकेसुर
रकपटउपाय: ऐकहीरामनआपीमाय: देषोराम बिवसअ
पनोदल: बिस्वईसईननकेबछल: मायाअरिकरीछनमां
ही: निरषेकपितहाकछुबनाही: दससिरक्रोधनस्योअतिदा
रुन: रूपोकालकेरूपमहारन: इतरघुनाथकाकिरथआये
सजिसारंगबानसमुहाये॥ श्रीरामचंद्रजीकाबिनाकस्यो
नासताऊका सबलषरत्रिससंघारे सूरपनषाअुतनाकछेदि
मायामृगमारे: करिमंजनतिहिरुधिर: कुंभयननादकीनयट
कलहनिसकृतकरीय प्रगटममचापबेलिपट: दससीसस्व
दत्राभिषदुलभ: सोईपेचहतअमोघसर: बिजनअनेकराक
सबिबिधि थालदिष्यरनभूमिथिर॥ श्रीरामजीमंसुजउ॥
मिलेरामरावनसंग्राम दारुनअतिदुरधर: सुरबिमानआ
कास तासछंनछयोनिरंतर: करतासोकोदेऊ रामलंके
सुरमारन: बधिदहनसोबांम बचनतहाकलोसकारन
नेजनजुदानसंमयेअजय सदाअग्रबरतीसुकर: अबन
येदृष्टिगतआपसे समयबिषमअवलंबसिर॥२॥ दहनजु
उआच॥ करदहनतवकलो बामकछुतत निचारऊ: अ
नसमझेकरिनअकाज: बकबादबधारऊ: ममजुगपल्लवमु
कत तोरषुतोलगअेहै मुष्टिछुटिरनमांऊ नियतषलज
लनसेहै प्रभुअवनलागिपूछतेप्रगट कंटकमसतकबांन
करि: एकएकहनोकेध्अषिल: ईकहीबेरबिषमअरि॥
॥३॥ इतिश्रीरामबांमदहनजुजसंवादा॥ छंद दैत्र
षरी॥ धायोरावनअगनिबानधरि: काटोरामसुअगनिबां
नकरि: दहदेवतसरअसुरअस्त्रासो: बिसषदेवसोरामबि

नासौ: सजेससत्रजोईजोईलिकेसर: सोईसोईषिऊकरतअवधेस
र: अवदससीसउपाधिउपाई सरपाकारबानसमुदाई: स्वर
नचित्रबिषवदनमहासर: पंकतिदुसहपरतरामपर: बिषधरबा
नदसाननबरषत: हसतरामकौतुककरिहरषत: मुषतेबानअ
गनिकनमोचत: सोसागततननाहिसकोचत: बिषमय बिसष
जालरनबरषौ: पापीकपटदसाननपरषौ: जितितनागसम
हनिहारे: समयरामतिहिगरुडसंनारे: इहासुपरनबानअव
धेसर: धरिगुनमुष्टिदिष्टसारंगधर: कठिनचापरघुबरकृतकुं
ठल: बाऊअवनलगितानिमहाबल: छूटेगरुडबाननतलाये
अवधिईसचकुओरचलाये: गरुडाकारसरनितहागनिगनि
षायेसरपरूपसरषनिषनि: षगपतिबयरनावलगिषाये: नाग
बाननिसेषनसाये: ॥छंदउधोरा॥ रिसतसोराकसराइ: सरचा
पकरनिसजाइ: देवेसरथयनदेऊ: षिजिकरेहतिसतषंऊ: मातुलि
हिसरइकमारि: पुनिअस्वसरनिप्रहारि: दुसाधिराकसदेषि-ब
ढिपितरसोकबिसेषि: सुरराजसिधसुसंग: नयोबिबुधगन
मनतंग: नयोबिभीषनदुसुनाइ: कपिराजकेपतकाइ: जुधरा
मरावनजोर: सोनयोकपिदलसोर: दुवबीरनोप्रतिबाद: बढि
बिषमबयरबिषाद: षलगरजितहषचार: कहिबचनसहत
बिकार॥रावनाते हकेरिपुहमहोइ: कहितहामोसोकोइ: ॥छंदद
अषीरावनकहिगबिजईराजा: कीयेसुरनिकेसबेअकाजा: का
रायहदिगपतिमेदीने: कठिनयहनिपरिपायेकीने: नांषतिऊ
रनिगरनसुरनारी: मेबिनताअयलोकनिहारी: सुरपतिमो
नयसुषहिनसोवत: रातिदिवसदुषस्वासनिरोवत: तैमारेत्रि
सराषरऋषन: आधिकरमकरिबालिबिऋषन: आधकबधकि
तेकबिचारे: महाआलसीकुनजमारे: मेयनादसोअसमयमा
स्यो: बसहोध्यानसुपैनबिचास्यो: दुसहबेरसबहिनकोहेहो
जोपेरामजाजिनहीजेहो: मोबसपरनलेसमझेऊ: हगिसबहि
नजमसादनदेऊ: कपिराजाकीपूछहिकाटो: आजबिभीषन
तुजाउपाटो: कहानलकपिमारो किंकर: चंचलजातिबराकबनेचर
श्रीरामबोल॥इथीप्रसिधतिहारेपोरुष: मानिगरबसोईकहतअ
पमुष: कुतेफिरतुमदिगबिजईहित: करबालितुममहबेसेऊ
त: पुनिबलिद्वारगएकरिपोरुष: सुतोतहापायेतुमसबसुष: ताते

बरेपुकारेतेरे·सुहतोस्यौकपिथापटमेरे:निपुरकपिनिगहिनारिनि
गाई:वाहुसमयतुमकुरिसनाई:यातेहमकहुलजाआवत·करहि
कहाजोतुमहीकहावत:तेईतेईरावनबिरदतिहारे:सोतोलोकप्रगय
हैसारे॥६॥अबपुरुषातनआपनो:दसासिरबेगदिषाउ:इत
उतगोलनचितयह:जरवाजिजिनजाउ॥७॥नाहिनतनिसचर
निपत:बिधिसिवसरनबचाइ:परीआनिजबसीसपर:अबस
नमुषलरिआइ॥८॥रोषेरावनरामरन:बलबोलेबलवंकधरकि
चराचरमरनिधसि:किगनलगेब्रहमंक॥९॥कबित्त॥इतहिराम
अवधेस·उतेरावनलंकेसुर:इतहिधरमआधार:उतेषलधर
मषयंकर:इतद्विजबेदसरा:उतेद्विजबेदसदोषी:इतहिपाप
अपहार:उतेकुलपापनिपोषी·इतछत्रीयउतराकसअधम:म
हावीरसंग्रामभिलि:समलोपिआगमनरहसुकबि·निरनमनक
गजमनचिलि॥श्रीराम॥बीरबाकुरयुबार·रोसबसबचनउ
चारो:यहअसाधअसुरेस·बादसोबयरबधारो:षलयाक
हेचहिषेत्र बोहिजडमूलउपारो·सोधिसोधिसंसार·महाराकस
रनमारो·सुरसाधबिदितनरहसुकबि·अबजीरनउतराइकु:द
ससीसमूडमालाउलन·हरहिआजपहराइकु॥४॥कबि॥सा
रथिमातुलफेरिसनारि:सुरपतिरथसाजो:धजाबेगिमारुतिस
धीर·गहरेसुरगाजो:कृपाद्रिष्टअनुकरी·बाजिबरबिथाबिन
साथ:सुरसुरसेहरिसोच·सिधबिसवासप्रकासीय:जानकीन
थकाकुसथजय·जयतिरामत्रिभवनजसी·संग्रामसमयनरह
रसुकबि·यहअकासनाषानसी॥५॥इंद्रधनुषआकरषि·चाहि
करबानचलायो·कारिसीसलंकेस·अकुटिरामहिंकरआयो
एकोतरसतबार·नवजुषलमूकनसाए:अहयनयेअनेकवा
र·आकासहिछाये·सधानरातिसूकेदिवस:परीत्रासससंत्रम
परे:दृगमूटकहतकपिनालदल·हाहातुमरहाकहरो॥६॥कटे
सीसदसकंध·अबिलनतमंकलछाये:उकिअसंधिसिरअसुर:
उसरषलचरितदिषाये:हाकननन्दूलगिदुरंत·नसिरहेनया
नक रुधिरअवतरवमारमार·यहहोतअचानक:अतित्रासप
स्योकपिनालउर·असरुवरितअसुरेसके·कोपितमनुआएरा
हकुल·कृतसहाइलकेसके॥७॥छंदपधरी॥ओओसिरउप

जनअसुरजोइ : हरिसोसौंकाटतहगहिहोइ : इहिक्रीडालागेअवधि
ईस : सोईचरतकटेआकाससीस : इहिचांतिबदतबलसिरअपार
बिघीयानिजतनोंचितबिकार : नवहोतनमसतकबुधिभंग स
बमनकुअबिद्याकुइसंग : कोतुकयहदेषतनालकीस : सहसकर
अतरितनयेसीस : अनसहनगगनमिलिअंधकार : बलबढ्योअ
सुरमायाबिथार : तिहिमांकुरतरथरबिउदोत : थकिबातप्रात
ज्यों कुहरहोत : बलपैजातनमननअषेष : नालकपिलहतुतिहि
नाहिनेद : देषैनबीरतिहिदुष्टदेह : सोरहेथकितचितपरिसंदह
पापीसुकरेसिरपरप्रहार : कपितयेबिवसबसअंधकार : कष्ट
अदसपोचहिअकास : तहालिष्योरामकपिदलसत्रास ॥ छंद ॥
अषरी ॥ रामकहालछमनकपिराज : मारमारकहिमूरुसमाज
धुनियहासिरमरकटहिसियावहि : पगनिरहहितेकीसपलावहि
देवदुवितमरकटतदेषे : बीरसुबिसमयबसीहबिसेषे : तहांमो
षेसाएककुलरघुपति : हातेकरेमूरुननहति हति : मूंकपरतेज
लनिधिमाहीं : षोजिषोजिजलचरसबषाहीं : कछुलेमूरुमाल
सिवकीनें : लहेसमरसोबीनिजुलीनें : निसचरमायाकपटबिन
से : प्रगटजोतिदिवसेसप्रकासे : दसमिरतबेबिभीषनदेषे
बाजषुलतचषलवाबिसेषे : धरिकरसकतिआतपरधाये
इहारघुनाथबीचचलिआये : जाकोपननिगमागमजांनौं : पंज
रबिजयजुसरनप्रमांनौं : दुष्टबिभीषनसनमुषहारी : असहअ
मोयसांगिअनियारी : सांगिलगीरघुनाथगुसाईं : ओठिलईबिन
कीसीनाईं : इहारामकहमुरछाआवत : देवमनुजसोतावहिषाव
त : कोप्योतहाबिभीषनरकस : प्रगटबिष्यादबादपरपरहस : क
हनलग्योबसक्रोधकराला : बचनबिषमबिषमुषसेब्याला
बिभीषन आअरअतागेअबुधअमारी : चितआईसअनीति
चलाई : सुरनरनागजुसाधसतायें : प्रभुत्रिलोकपतिचीन्हिनपा
ये : दुष्टब्रहमहितसीसजुदीनें : कृपाकरीतिहिअहयकीनें : सि
रतेकाटिहोमकृतसाजे : येकएककेकोटिउपाजे : याहीगरबत
येतुमआये : सगजोपेचषबीसकसाये : अजहुताहिनदेषतअ
सुर : आनिकालनाओसिरऊपर : जोसिवबिधिकुप्रभुकरिजि
न्हों : पापीसोतेनाहिपिछान्हों : जगतसबेतेबिधिबरजीतौ : अ

बतोरावनसुपेअकीतौ॥ कबि॥ निरतसुजांमोजेगेनाईचि
तरिसरोकिनगदाचलाई॥ रांव ना॥ रहाकारसेवासत्रुकी॥ कर
तछाडिकुलक्रोध मुहकौनेफिरिआनिमुह पापीहेतप्रबोध॥१॥
कुलद्रोहीकातरकुबुधि कुनहीमारतनोहि कोटतजोनयमी
चके मुषनहिषावकुमोहि॥ छंद पधरी॥ अतिबिरतक्रोधअ
तमअनीत कंटककुजोनितामसकुरीत पुनिकरतबानबरषा
अपार मरकटप्रहारमुषमारमार रनरोषसुनतहलकारिराम
मरकटनिसुरोक्योगमगोम उपराजिकपटमायाअकूत ततछ
नोअतरधानधूत इहाभयोअदिष्टषलरूपअक आयोसुद
ष्टरूपनिअनेक एकतैनएरावनअपार करबीसबीसदसासि
रकुचार॥ छंद दे अ पधरी॥ रनकपिनालनालतिनरोके बीरब
रदिसिदिसनिबिलोके बिकलकीसदलकछूनबूझे सबदि
सिरावनरावनसूझे ब्रह्मअष्टिमनुगई बिलाई यहरावनम
यनवबनिआई नालकीसजितहीतितनाजत रावनरूपराकिगत
गाजत योरूपराकसकीयथेरा बिहबलभएअमरतिहिबेरा
धरेससत्रषतकोटिनधावहि पैककपिकुअवकासनपावहि
कपिकु॥ सुरकपिनालसरूपपरीसक करतअसाधिएकहो
कंटक पापीतिहिसबदेवपजाए अबतेदुष्टइतेकेआये निस
चरयापहउबरननाही जुधछाडिगिरकंदरजाही नयेनेचकि
तकीसदलनाला देवत्रासिअबरामदयाला दिनकरकुलम
ंडनजबदेषे बानरनालसभीतबिसेषे रनबानररघुनाथपचा
रे अतिबलपौरुषबचनउचारे जेरघुराजप्रतापहिजानै सो
निरभयभटनिरभसबानै हनुमतअंगदनिलनीलनल बि
सरिलरतलगिगगनमहाबल बीरअमितरघुबीरबिलोके
राकसमारिसिरतितहरोके रामबानदुसहअतियारे मायारू
पदसानेनमारे गयेबिलाइकपटकेरावन रसोएकतुव
चकनयोवन प्रभुसबमायारूपबिनासे जोरबिउदयनि
षलतमनासे रावनएकरसोरनरोप्यो देवसमाजगगन
रथदेष्यो॥ रा॥ ना॥ निरतदेवमेसबेतजाए अबनिरलज
साजिरथआए अमरपुगनिरहीयोकुआयो य

दिपाग्रिहसाननगाजत: अंगदअमरलषेजबअतुर: कृद्धोपथअंस
नथेकर: कपिगहिचरनपछास्योकंटक: अवनिगिस्योजोमास्यो
अतक: इहारावनकहमुरछाआई: प्रगटजैतिअंगदकपिपाई
दुऐकमहचेसोहाकुन: सुरसंतारिउग्रोचषसाकुन॥ छंदउ
ग्रो॥ रनउग्रेरावमराइ: धरिसलदसकरधाइ: रथरामचंद्रतु
रंग: सोहथेसलनिसंग: सरतीसधनुसंधान: नरनाथमुकिनि
दान: संघरेतिनदससीस: बिछेदिसिरकरबीस: सिरतुजाक
दिइकसंग: ऐरीहोतनबूतनअंग: तुजसीसकदितयाने: सो
ईचदेउकिअसमान: दिसिबिदिसगगनदिगंत तेईरहेइरिअनं
त: सिरराहमनुकरकेत: कुवक्रोधनिग्रहहेत: रविराहबयरबि
राम: रविबंसराजाराम: सोईआदिबैरसंतारि: मिलिजूथगग
नमंझारि: नबराहकेतसुताइ: इहारामघेरआइ: सरअनलत
वअवधेस: बसक्रोधमुकिबिसेस: जिहिजरेमायाजाल: कर
असुरजूथकपाल॥ छंदपधरी॥ दससीसबिनीषनसमर
देषि: बसबयरअसुरथायेबिसेषि: यहबीचबीरहनुमंतअ
इ: रोक्योचदिहीयेलंकराइ: उरदईलातझप्योअकास: तिहि
पकरिपूछधरपटकितास: छोकेनप्रछरावनसछोह: उवहोतप
रसपरदावद्रोह: कपिलीयेषलहिक्रोधअकास: तहचलोप्र
लंबितअसुरतास: तनदिव्यदसाननकरतताक: हनुमंतक
रीइहबीरहाक: कपिकिस्योगगनहनुमानकुध: जाजुलनथो
उवबाझजुध: पुनिकरतलातथापटप्रहार: आयातबज्रमुष्टिक
मार: संग्रामभइत्रसमरोषसंग: आसुरकपिजूटतजुधअनंग॥
खबीरकरतननद्रोहदाव: निरयातपातबाजहिनिलाउ: अंतरषि
जुधअदुतअनंत: कलिलगीकनकगिरमनुकलिद: तिनदेषि
मरउरपरीत्रास: सोईरथनिलतेनाजेअकास: इहाकरदउ
रुतिअनेक: तउगिस्योनरावनगहटेक: रघुबीरदेषिकेतुक
ाल: सरहन्योदसाननअमरसाल: तिहियारतयोरावनअ
त: षलपरहूमिसंग्रामषेत: कंटकगतमुरछाउग्रोकोपि,
रोइमरननटपाउरोपि॥ छंदद्वेषरी॥ अमरबिमानिअ
छायो: कंटकतिनहिदेषिअकुलायो: रा न मिरेजहमि

सोतुमनगे: अबसोईमभकोतुकअनुरागे: तोसुरराजबदोब
लतोही: मोहिपावआवनदैमोही॥कबि॥कहियोंचद्रोगग
नमगकटक: धरकेउरसुरपतिकोधकधक: अंगदइंद्रादिक
अवलोके: सबतजेरथहाकिससोके: सुरइहांजुवराजसंन
स्यो: पकरिपाइदससीसपछास्यो: देउरलातकूदिगोअंतक
उष्टअचेतनयोतबउरमद: इहांदसाननउठ्योआतुर: अति
हिषिसानोरोषजरतउर: गहरेसुरगरजोरनगदौ: गोरगे
रयेस्योषलगदौ: तहादसधनुषदसकुलुजतानत: मरकटद
लत्रिनमात्रप्रमानत: महासुनटदसदससरमारे: उसहनि
कसितेअंगउसारे: आयुधबीसकुकरनिअबाकुत: चकुदिसा
निकुटिलद्रिगचाहत: जोईमुहचदेताहिषलमारे: पकरिसु
लकपिधरिनिपछारे: असुरपानिगहिगगनउछावे: धसेहसे
रनबजरेधावे: मुसलकपीसपरिघनलमास्यो: पटिसनील
सरोषप्रहास्यो: जामवतअसितोमरमारुति: परससुषेनकु
तकेसरिहति: सूलगवाषिहिगदाबिभीषन: मुद्गराद्विबिद
कुमदनेजातन: तारकुगरानिरुपालगजज: बिटपशवयजुव
राजसिलासज: दधिमुषचक्रसरतहनिअकुस: सेषसुकति
हतकस्योजगतजस: बीरकछुककरपत्र बिनासे: इत्यादिक
सबसुसत्रअभासे: श्रीरघुनाथहिमारितीनसर: इहागर
जतमटोस्नआसुर: घोरलजयोसबनिकपिघेस्यो: मरेन
मास्योफिरेनफेस्यो॥दोहा॥ काटतबलकेकोपकरि: चा
दिरामसरचाप: सोसोहोतअनेकतहा: ज्योपरबसमनपाप
॥१॥ इसहतहारघुनाथदल: धाये सुनटसधीर: मरेनकरसि
रकटतझ: बिरसिलरतरनबीर॥२॥छंद॥ देखेमरी॥इहासुथी
वजुअंगदआए: धसिनलनीलद्विबिदिबलधाये: हनुमत
आयोएकदसमहर: बीरअनेकबालनटबानर: मरबृछि
परबतसिरमारहि: पुनिदतनिनषदहबिदारहि: कूदिजा
हिदेलातअचानक: करमेलतगहिबेकहकटक: करनच

दतकपितानन्त येकर: मोगिरकंग बिहारतबनचर: चढ़ेसीसनलनी
लबनेचर: दांतनिपातकपालनहीकर: दससिरकोपकस्योतहाहासन
कपिनिबिकारिकरेरनकनकन: नयेनालकपिधाइलनारी: नहीनि
सासमहरनयकारी: निसातमीनिसचरमनमानी: जननीसीजुसह
रकजानी: इहानिसिसमयरीछपतिआयो: स्यामबरनदलनीयेस
वायो: धरिमारुतिकाटतधरधावत: कारेयाकीदिष्टनआवत: हव
लांपोराकसरनहटकत: पावतताहिमूमिगाहिपटकत: जामवंतज
रीरनजोधा: कालसरूपजुआयोक्रोधा: कूदिलातउरमास्योकटक
ऐसोहमोबज्रमनुअंतक: दरतदसकुंमुषश्रोणीधारा: परबतजे
सैंइंप्रहारा: रथपरसोमुरछागतरावन: पस्योअचेतनअसुरअपा
वन: घेरिरहेराकसप्रभुयाइल: हाहाकरतनयेसबराइल: जबराव
नहिअचेतनजानो: इहारथहांकिलंकमहआनो: ॥ हाकाटेराय
वसीसकर: मलजीवततउषेत: निसिरावनसबसेवकनि: आमेरे
हअचेत॥ अबसीताबिजयसंबाद॥ त्रिज ट॥ अरथनिसात्रि
जटाअसुरि: इहासीतापहआइ: समहरकीबातेसनय: सोसबक
हीसुनाइ॥ सीताजाकरतसिरतुजसरनिकर: पुनिपुनि होतअ
पार: हात्रिजटेकेहेंकहा: क्योयहमेरेकुचारा॥ रामबानेहन
हीमरत: सिरकरकटेअसेष: आहिकछुबिपरीतयह: बिधिकृत
जननिबिसेष॥ येतेकुषमहअजे: मोहिजिवावतमात
देषोबिधिरचनाकुसह: धारबचतषलयात॥ ५॥ छंद धोरा
जिहिकनकमयमृगकीन: हिनुष्टबुधिमुहिदीन: कहिबच
नकटुककराल: लगिहीयेलछमनलाल: मोहितजिअकेली
मात: जोनयोरछकजात: नवकरमफलममभोग: बिधि
दयेरामबियोग: उपराजिजिहिकृतएव: सोरहितकुषबिधि
देव: येकरेचरितअनूप: सबनयोनारसरूप॥ त्रिज ट॥
सिधांतममसुनिसीत: पुत्रीसबचनप्रतीत: सुमहृदयतिहि
नवबास: नवरामतुवउरजास: तिहिरामउदरत्रिलोक: वह
अषिलथिरचरओक: तिहिहतनहीउरनाहि: यहसुदनाव
जुआहि: बिनुछेदउरवहबाम: इहिहेतरामअनंत: सरउर
नहनतअसंत: रघुबीरकरिरनरोष: जबमहासारकमो

पः प्रतिअंगरहिबलपापः अवधेसकारहिआपः यहमहापीडापाइ
सग्रहेइबिकलसुनाइः चढिलोहछाकअचेत पलहेइजबरनबेत
निसचारतजितबधमानः पुनिहोइपरबसप्रानः जोबिसरितोकहेजाइ
रनमारिहैरघुराइः नवकरहिअबउरनेद छेनहोइत्रिभवनछेद
सुधहनतनहीयहजानि प्रभुबिस्वपालप्रमानि यहजेदत्रिजटि
बताइः नयेसीयहिसातिकनाइः नईरामबिरहनयानः सोनि
साकलपसमानः ससिरथहिनिंदतसोइः हाप्रातकबधोहोइः बिधि
करमदेषिदुरंतः इहासीयाइछीयअंत ॥ दहा ॥ कहिनकालबेदे
हिके मिलिफुरकेअंगबाम सगुनबिचारतआपसुनः सहीमि
लिहियनसोमा ॥ १ ॥ कबित्त ॥ छंदपधरी ॥ इहाजयोप्रातनम
चरप्रकार उठुनिनिसानबजिद्वारद्वार सुनिसोरजग्योरावनअसाध
बिपरीतधरमकृतधमबाध पुनिदेषिकनकमंदिरप्रकार रिसहनतध
रनिकरबारबार ॥ रावनबाचारनबेतछंकायोहिरानि धिकारते
हिकातरकुजाति ॥ कबित्त ॥ रथसाजिबकुरिषलतंकराइ अति
बेगहांकिरनकमिआइ दलनालअबलमरकटदुगाम मंकलम
हसानुजदेषिराम इहादुष्टरबीमायादुरंत निहछनतोअंतरग
तिदुरंत रनकस्योकपटमायाबिधार पाषंडचंडदुसहप्रकार
बेतालभूतषेचरनयान आकृतअनेकतनआनआन बिनुसं
ध्याजेतपिसाचबीर स्वरबिषमबचनबेकृतसरीर करजोगनि
लेबितनरकपाल बिकरालरुधिरअवदिष्यनाल परिपूरिप
त्रकरिश्रोनपान गहगहेकंठबिपरीतगान तनिमारमारबो
लीकुनास यहसबदपूरियरनीअकास षेचरीधसहिमुषबा
इषान परित्रासरीछबांनरपलान नटकीसजाहिजिहिदिसा
नाहि आगेतहदेषेजरतआगि कृतदृष्टिरूपजोगनिकराल
थासिंघोहिबोलहिकुटाल रजदृष्टकरहिकचरुधिरराष नयका
रगगनबांनीकुनाष बिकरालचरितकपिनालबीर यहदेषिन
येअंतरअधीर पाषंडअनरइकरचेपाप आकृतअमानहनुमा
नआप इहिरूपनिसाचरनिकटआइ लांगूलतपेरिमरार
दहा ॥ मंदराचलमथानहित जनुआवृतअहिराज सोहतग
टेनिहिसमय रनमहराघवराज ॥ १ ॥ कस्योबिचारजुबसक
रि निग्रहनिसचरनीच रामहिअबउचकाइरन

गरबीच॥ २॥ जाम्बोराघवअसुरजब: भायतन हनुमान: तिल तिलका
पूंछ तब: बीरहन्मोउरबांन॥॥१॥ पुनिछलमायाअवधिपति: ज्वा
मुषसरजालि: कपटनसायोअसुरको: मारेउष्टमुरारि॥ कबिताक
खसिरकटेलंकेस: नहिनतउमरतनिसाचर: बारबारछेदेबिचारि
उपजेअंगआसुर: रनक्रीडारघुनाथ: करतअगजगभयकारी: सुर
सुरेसउरासिय: भयोतहात्रासजुचारी: बिषीयाष्टिकसेवितनिर
बिसन: चहतकामभोंकामबस: आसुरीकपटमायाअगम: मो
मोंउपजतअंगतस॥१॥ छंदद्वैअषरी॥ सुरनिसचितजगतपतिजा
नें: प्रभुरनषेलनिवरतप्रमानें: जनकीरामप्रतीछाजोई: हसेबि
भीषनसनमुषहोई॥ बिभीषनउ॥ सुनकुमंत्रइकचिन्तवनस्वामी
जगतचराचरअंतरजामी: जानिबिभीषनजुगकरजोरे: मरमद
सांननसुनिप्रभुमोरे: नाभिकुंडलीअमृतनिरंतर: याकोजीवब
सतताअंतर: अमृतप्रभावनमरतअभागो: लरतकटेसिरअं
बरलागो: करतबानधारामसतककर: अंगअसंखिउपजि
त्योंआसुर: मारकुजीवमरमतोमरिहैं: कंटकचरितबिबिधिय
हकरिहैं॥ कबिक॥ निसचरहतनरामपनकीनो: नानाअसयु
नहोहिनवीनो: करहिसबहत्तव्रजूतकराला: स्वानबिनोषरस्वा
नअगाला: पखबिनांउपरागप्रमानें: अरकसोमकहसंकअनें:
दीसतराहुकेतप्रतिमांहिन: उलकापातगगनतारागन: धरनिकंपहि
गहाहसधूमर: पुनिनिरघातपातपुहमीपर: प्रतिमांचलजलनय
नपमुकहि: कुथलअकालनषीषगकुकहि: बरषाकेसरुधिरर
जबादर: अतिबिपरीतिभूतचलिअतुर: महासोकउरकंप
मदोदरि: प्रगटअकारनतनभूषनपरि: इनहिआदिअनमितअ
पारा: बरतनभूननबिबिधिबिकारा॥ देव बाच॥ छंद॥ अबु
लोकतअनमितये: अमरसिधअकुलाइ: कहतसुधोकेहैंकै
हा: हारघुनाथसहाइ॥१॥ कबिक॥ कतरघुबरस्वकुटीकुटिल
षबदनचषरत्त: अवलोकेराकसअषिल: प्रलयकालसा
त्त॥ छंदद्वैअषरी॥ इहबानरघुपतिकरआयो: पारसमय
तुलिपुहचायो: ब्रहमदत्तसुरपतिहिसकारन: उसहस्वस
बिषधरसोदारन: महाप्रमानसरीरगगनमय: तेजअरकपा
कमिलिफलतय: मंदरमेरसगोरवमान्यो: पवनउकुदिसि

सजबप्रमान्यो। लोकपालजिहिपवनप्रकासित: तनजांजुलिअरक
अस्तासित: लोकलोकत्रयनिबलनसावन: परमप्रसिधदिब्यस
रपावन: सोप्रभुबेदमंत्रबिधिसाध्यो: निस्तयचापपनिचसरना
ध्यो।।।दहा।।तानिसरासनमुक्तितहा: अगनिबानअवधेस: नानि
कुंकनिसचारके: सोध्यो अमृतअसेस।।१।। सरपावकजास्योसु
धा: जीवजस्योतिहिजोग: त्रैलोकीकंटकतहा: रावनमस्योअरो
ग।।२।।छंद दुरे अ बरी।।जबहतप्रानदसाननजान्यो: तहारघुना
थवहेसरतान्यो: छोड्योबानतयानकतिहिछन: दुष्टमरुकरि
कोटिदसानन: परमप्रसिधबानजयपावत: असुरबिनासिअ
गफिरिआवत: करासिरकटेअसेबनुकटक: असहरुधावतज्यो
अंतक: धरउरचाहिसुकपिनधकोवत: परिऊपरमरदतसुष
पावत: मूरुकरेतउदुष्टनमरई: कटकचरितअनेकसुकरई
कुंभाकरबहोतयहेरट: मारिमारिधरिधरिनिरमरकट: कह
रामसुग्रीवबिभीषन: प्रबलप्रचारतफिरतकीयेपन: दुष्टचरित्र
दुसह्यहदेष्यो: अमरसिधअतितयअवरेष्यो: कपटिकबंधकट
कुकुकोलत: ऊकेरतनहाइदासनकोलत।।छंदिकबाच।।सोच
अमरगनप्रभुहिसुनावत: षितिपतिकलपिसाचषिलावत: ना
थहमारोत्रासनिवारो: महादुष्टअबतोरनमारो।।कबित्त।।स
नयसुरेसजबेप्रभुजान्यो: अरधचंद्रमुषतबसरतान्यो: कुंड
लधनुषरामतहाकीनो: दिब्यबानसावनतनदीनो: मध्यलग्यो
सासिबानमहाबल: षंडउनयकेपस्योमहाषल: ज्योंनीहाउपरत
षलब्याकुल: तहाधूनिधसक्योधरनीतल: डिगतकुलाचलन
नकुगकोलत: बिकलचराचरहाहाबोलत: इहाकपिराजरीछ
पतिआये: प्रभुप्रतापसेवाफलपाये: मस्योलंकपतिनाचतम
रकट: नयोहरषअतिबिहसिचालतट: धायेकपिषलसीसक
रनिधरि: करिलेअगनमंदोदरि: पेषित्रीयनितहाबिसंमयपा
यो: देवचरितयहबिषमदिषायो।।कबित्त।।इहारावनबपु
आनि: प्रभासतअरकप्रकासीय: सोदेषतदिब्यदेव: प्रगटअ
तिदेवप्रभासीय: जोतिराममहजास: परमसोईबिगतिपाई
नावएकइहांतयो: जानिकछुनेदनजाई: अदभुतकृपाकार
नप्रभुल: नबसोचतनवन्हतहा: सोभितबिनासरवनअ
सुर: मेलितयोप्रभुआपमहा।।छंदबेअमरी।।देव

उडुनीरीनी: नजबरषाकुसमनिकीकीनी: बिबुधहोतजयजय
नवानी: पूरिरहीब्रह्मंडप्रमानी: सुरसंतुष्टभयेमुनिसिधा: प्र
भुकहिचारनसुजसप्रसिधा: गहगहकिंनरगंधरबगावहि: सु
रकंन्यानित्यहीसुषपावहि: ॥छंद उधोर॥ इत्यादिकजातहाक
हतसुरगनसिध: प्रभुसुनकुप्रनितप्रसिध: यहुसहषलहु
साधि: प्रतिदिवसरचतउपाधि: दुरमतिदुरातमदुष्ट: पुनिपा
पकरमसंपुष्ट: सुरसाधसातिकसिध: प्रभुकृपापात्रप्रासिध:
नवत्रमतहमजुसनीत: तेसहतदुषअनचीत: दससीसयह
दुरबोध: कृतघातकुटिलसक्रोध: द्विजहतकतामसदेह: ह
ग्लिगतपरत्रीयनेह: कंटकत्रिलोककुचेत: संसारद्वेषसहेत
नवनूतरेषतनूप: सोनयोतवसारूप: मिलिजोतिजोतिसमा
ह: जोंदीपदीपहिजाह: ॥कबित्त॥ इहिसमयनारदआर: सोक
हतसुरनिसुनाह: ॥नार॥ दा: यहदैवकरमदुरंत: तुमसोनजा
नोंतंत: सबदेवतुमकुसुजान: निजसुनकुनिगमनिदान: द
ससीसकीनोंदोष: रघुनाथसोंचदिरोष: तबबद्रोबेरबिरोध
नहीसुमोपतितप्रबोध: नयेतथाद्वेषप्रभाव: रहिहृदयकोस
लराव: तिहिरामभयनवनूत: अवलो: किछबिअदभूत: जाग
रतस्वपनसुनाह: रहिचित्तराघवराह: बिसेसबयरबिचारि
मिलिरहोचितमुरारि: रनहत्योसोरघुबीर: संगरहेपापसरी
र: अबिनासजोतिअनंत: तननासमूचतसंत: महाजोतिजो
तिसमाह: निसेषकरमनसाह: ॥कबित्त॥ पापरतपरदार: पतित
परबित्तपहारीय: नयसनेहकिकुनाय: भरेउरसारंगधारी
य: सोक्षेत्रतरसुध: पापसतजनमपहारे: साधुयहेसिधांत
उचितमतबेदउचारे: सुरसिधसबेनरहरसुकबि: निंदतकर
मनसाहे: पुहपकबिमानबरषतपुहप: सुपेपरमपदपाहे:
॥१॥ मिलिसंजोगमेथलीय: मिलोअवजोगमंदोदरि: इकहा
रअंगार: इकहारावलिउतरि: इकबलयकरबनीय: इक
बलयाबालिफुटीय: इकहिरतिअनिलाष: इकअनिलाष
अकुटीय: नयटरोचूमित्रिभवनअनय: नारअसुरकुल
कहनयो: सुरसिधहरषनरहरसुकबि: हग्जिरामरावन

हयो॥२॥ सिरजुसेनुकहेनये अवरसुररहेअनामितः काटिकाटि
निजकरनि हवनकीनेबिरंचिहितः अगनिकुंडमहआपः जथा
मंगलफलजारेः बरषसहसदसतपबिधानः अतिकष्टउथा
रेः सुरराजअनयनरहरसुकबिः समहरत्रिप्तअमोघसरः दयी
प्रसिधपोलसतिकेः कटेसुसिररघुनाथकर॥३॥ नरआकृत
त्रैलोकनाथः कोसलानंदनः बेदप्रणितपितबचनः बिषम
सेयोदंडकबनः सेतबंधिमरकटसमूहः लंकागढलगीयः
सुरनिसोचयहबंधमोचः अवनीनरनगीयः सुरराजकाजन
रहरसुकबिः भुवनतीनउछवनये देवाधिदेवदससीसके
दससिरदसदिसिबलिदये॥४॥ जिहिरसचीउसासः सरि
तआकासजुसुकीयः जिहिरकरिदिगदेवः महासुषनिद्रासु
कीयः जिहिरत्रयपुरनरनि रहतसेवाटिगटकीयः जिह
करमुनिगनसुरबिधान चिंतालीचुकीयः जिहिरनिकी
लिब्रहमंडगिः अमरबृंदमदउतरे सोईरावनसोवत
समरसुष रूमिसेजमुषरजनरे॥५॥ नयेअमरआनंदअ
मरपुरबजेबधाये नयेजगपआरंभ नये बिप्रनिमनभाये
नयेरघुकुलसोभागः महीनरदरिद्रप्रमानो चोराकसकुलभंगः नये
गढलंकभंगानो बिसतारथरमतोबेदबिधि असुनरहरकबिउधर
नः करनये बानरनरामके रामजेतिरावनमरन॥६॥ परिपुकास्यह
ग्रहअपार आतंकलंकपरिः परेसमरराकसप्रचंड आतमबलउप
रि परेमतमातंगः परेहयपुंजसपषरः परेकालनकनयः बीरर
नबिजईबानरः पुरतीनचोटतनीसानपरिः सोकुष्टउरसंचरीयः
काकुसथबिजयनरहरसुकबिः पानिरामरावनपरीयः॥७॥ सु
वेयाप्त अथमभाथउथास्योतेसोहीकबधुतास्यो अमरजेजे
उचास्यो बिजैरघुबरको जेदसोनरेतीजानी अगेजगदेवआ
नी भूजेधरानजाउथानी उरथरको आगेअरेआपआरेसन
कपिलेसहाये बेदनिबतायेजोनरोसोभुजबरको प्रभुताहि
नूमोपायो ताकतकुतोबितायोकरुहिबतायोपंथरदनकेय
रको॥८॥ छंद द्वै अक्षर कवि कहै चंद इहसोगिदकाम आ
ऐः सबनिदसाननमरनसुनये रावननसोसुनोपरानेः

अचनिपरीमुरछितअकुलानी। इहाअहअहतैजुवतीआई। अतिअचे
तमयसुताउगई। निकरनिकरआरीपुरनारी। पुनिरोवतिअतिदुषि
तपुकारी। राजलोकआयोतहारोवत। सुपारनरावनजहासोवत
पतिगतिदेषिस्त्रीयाअकुलावति। सोकसमुद्रहिपारनपावति।
मंदोदरीउवाच॥ रोवतिकहतिमंदोदरिरानी। बिगलतकेसबि
कलबिलषानी। सिरउरतोरतिमनमनसोचति। मुषनिस्वा
सनयनजलमोचति। कंतमहाबलयहगतिकैसी। अबलौं
होतनजानीअैसी। अरकनिसाकरतुवतपआगे। लोकबि
लोकिहीनसेलागे। इसदिगपालधारतवकोलत। बाहरिगि
ढेऊचनबोलत। सुरगनकरतजथाक्रमसेवा। दीनसत्रास
रहेनदेवा। अमरसमरनहीसनमुषआवत। प्रीयतोहिआयो
सुनतपलावत। कालजीतिजिहिअपबसकीनो। दुसहदाहत्र
यलोकनिदीनो। कारायहसेवतयहकातर। नुवगकमग्न
हीसहतकोलतर। धसकतिकंपतअयनरथरनी। करीसक
लमहबससोकरनी। सोप्रभुतुमधरनीतलसोवत। जाकीकृ
पादृष्टिजगजोवत। पतिअदृष्टियहनीतिपुकारा। रहानकुल
कोउरोवनहारा। रघुपतिबयरउचितयहरावन। पिअयसी
टतजतअपावन। स्वानअगालसिवामिलिसगहि। अैवतषातअघात
सुअंगहि। बचननीतिजेकहेबनीषन। षारलगेतुमहिकुलरूषन
स्वयंब्रह्मनवरूतसपेष्यो। देवसुतेमानुषकरिदेष्यो। प्रीयताकेो
यहफलतुमपायो। गरुसमेतकुलमूलगमायो। अतिहिगरबयहअ
कोआयो। पुनिगदराजबिनीषनपायो। सबपतियेकहीकाजेसीतो
बिधवाकरीरतीबरबिनता। बामांआनीचोरिबिरानी। रांकरीअप
नीसहरानी। इनकेनूषनबिबिधिउतारे। सीताअंगसिंगारसवारे।
पीयथहअहंकारफलपायो। रिषपुलसतिकोबसनसोयो। बनमह
सतषनमंदिरषोये। सोतुमसमरनमिसुषसोये। ब्रह्मआदिसुर
जिहिसिरनावत। पतितजजततेउगतिपावत॥ दहा॥ पापउपासे
जनमप्रति। इहाकोकहेगनाइ। तोरुदीनोपरमपद। अैसेराघव
राइ॥१॥ सुनतसुरासुररामसम। हैदयालकोउनाहि। जोगतिदुर
लभजोगने। मारिहिरीछनमाहि॥२॥ सबतुमकीनीरामसो। सो
जानीसंसार। उनतुमसोअैसीकरी। अैसेरामउदार॥ नावीत्र

अलंकार कविता। गढ़त्रिकूटपरिषापयोहि स्वामीदसकंधर: आ
तकुंभकर्ननादपुत्र बिभेसबिभयर: सुनरबलीराकससमूह आ
पआधीनै दहिंत्रिलोकआहिसुरअरेव कृतदुःकरकीनै:सजीव
नमुषबिद्यासुगम सुकगुरजुसाधतसमो: हाहासुकालमहिमाअ
कल: नवसोरराखननपृनो॥१॥ जिहिकैलाससंगु पानिधरिउ
कठुथप्यो: जिहिकिरकसप्रहरनप्रचंड: कुलअमरजुकुप्यो: जि
हिबिसेषतुजबीस: सरबबसकरेसुरासुर: नयजिहिनामनि
गरन: प्रगटहैअवतिकुपुर: रेषकुसतपीमांनुषडुतुज: जगज
सलीनोमारिजिहि: बियिजाकीयहकरनीबिषम तातेदेवनम
मितिहि॥२॥ करासीतअकलंककुल: बसराकसअपबाद
लातजुकरमबिपाकको: पुराअदिष्ट प्रसादा॥३॥ कबिताजहमि
गीतसंगीत तहमिसुनीयतहाहासुर: जहाबिलाससुषबास
परीयपंछिनलकापुर: जहासुषदमाकृतिसुषंध: बसमासजुब
सीय सुनमयूरपिकसबद प्रगटतहाधप्रकासीय: रनम
रतएकलकेसके पुरमतयानकपिषयो: दुमरोएकहतमदोदरी
हानवेसयहकानयो॥ दहा॥ इहिछनरावनअंथयो: जगतम
रतनयजाहि: अरकंनतपतरसोअब: यहकछुपाकषआहि
कबित्त॥ छंदद्वेअ षरी॥ रावनजहापस्योरनअंगनै: बिकलचित
तहाआइबिभीषन: देषीमंदोदरी दुषारी: रोवतहीबकुनातिनिहारी
इहाबिभीषनप्रतुपहआऐ: रामबिलोकिनयनसीयराये: रोवतसु
नीमदोदरिरांनी: अवधेसरकरुनाउरआनी॥ श्रीरामबा रावन
आतरामसमझायो: जतउपजिसोईअतनसायो: निहचेताहिज
तनकछुनाही: जानहारतबचूतसुजाही: दाहबिभीषनन्रात
हिदीजै: कुलअपनेआचारसुकीजै: छनछनकीयाकालहैछी
जै: दाहजुकतजलअंजुलिदीजै: कुलअपनेआचारसुकीजै: छन
छनकीयाकालहैछीजै: दाहजुकतजलअंजुलिदीजै: जसताजन
लछमनतुमजावहु: सोकबिकलरांनीसमझावहु॥ कबित्त॥ द
हाबिभीषनलछमनआये: महासुगंधजुकारमगाये: देहप्रमो
नरओरनमंदिर: सोरनतेलसीचिकृतसुंदर: रावनअंगअंग
परिमारे दिसिदिसिबीनिचितामुहकारे: हांमदोदरिमोहिजरा

वऊ छीजतसमयनसंगछिकावऊ सोतछमनबऊबिधिसमऊरी
अबतोतुमहिलगीगकुरारी सबहीराजलोकसमऊयेत्तबोध
जोबेदबतायेो॥मंदोदरीबाचा॥रामहिकहोमंदोदरिरानी उरत
वबिरहबिथाअधिकानी॥दूहा॥दुषजुतबचनमंदोदरी रामहिकु
ओरिसार यकहरेवनहारकोउ राषोनहीरघुराइ॥१॥पुत्रनती
जात्रातपे रावनकुलमहकोइ रघुबरएकोराषते रहतोजोदुष
रोइ॥२॥चौ॥ मनाचाकोउगावऊकंगकछु नहीजामहहरिनाम
सोरावनकहरोरबो मानऊसहतबिराम॥ छंद॥ घरी॥कबि
ऊबाच॥ इहमंदोदरिमंदिरआई सालनयेनऊऊरयसमाई
घीटहिउरसिरत्रीयालंकपुर सुनीयतजहांतहारोदनसुर कपि
नअसेषहतेरनराकस बिनतातिनहिसंगारतदुषबस हाहाख
सुनिसुनिदुषहोये जीवकहजऊजंगमरोये पुनिरावनतनअन
लप्रजारे सोधिजथाबिधिअगसिकारे देसकालकुलधरमजुदे
षे बिधिजुतकीनीक्रीयाबिसेषे त्राताषितानपुत्रसंचारे येक
राजलोतहिअनुसारे जदिपराजनकाऊजानत पेकछुदेहसुन
वप्रमानत नथोबितीषनसोकमगनमन अयजत्रातादुषअति
असहन तहालछमनबऊबिधिसमऊवत ताकहनीतिभर
मरहसावत॥लछमनजी॥कालकवलहैजंतकलेवर होतम
रतनवनतमहत्तर जलतरंगजोबदतबातबस तोनवनत
तबिलातउपजितस जाकेकाजसषतुमसोचत मानतदुषनैन
निजलमोचत कोयहहोकोधोतुमयाके जीवसहतदुषकार
नजाके आगेअबऊस्वोरहाआई इनसोतुमसोकहासगाई
कईबारछाऊतुमइनकहे तुमइनतजेअनेकबारतहे सरित
नावजोकागसगाई योसबंध मिलतसबआई बातबिधु
तकगिजोरजकन बिचरतनवसंजोगबिजोगनि योहीउ
पजनाससंगमअर करमकालबसभ्रमतकलेवर देहदेह
संजावितदेषो जैसेंबीजहिबीजबिसेषो देहबुधितहोसबे
सगाई मामनिपुत्रपिताअरुताई देहदेहसगपनदरसावे
बिनसेतहाकछुनबसावे देहबिनासगयोजबदेही तहास
बंधनकोउसनेही समऊऊमिथ्यादेहसगाई तवतोप्रानज
तीजनताई आनीलगिसबंधप्रमोषो सोकितगयोनकाऊ

जो मो : देह बुधि तजि हम हिनगानऊ : पूरन देही बुधि प्रमान
ऊ ॥ कबित्त ॥ सब बिधि ग्यानलषन समझाये : इहां तब उरेज
लासय आये : दुषत जिन्हा तिनंजु लिदीनी : कीया बिभीषन
कुलक्रम कीनी : इहां लछमन संग हिले आयो : सोक बिभीष
नहु : षन साथो ॥ बिभीषन जाबेरि चरन तहां कलो बिभीषन
देवदीन के बिपति निकंदन : नाथ अभय पंजर सरनाही : सद
दया निधि नगति सहाई ॥ श्रीरामबाच ॥ कबित्त ॥ बीरलषन
सुग्रीव बोलि अंगद मलनील हि : जामवंत हनुमंत : समझि नि
रनय गुनसील हि : दीनबंधु देवाधिदेव बाचा प्रतिपालन : सर
न बिजय पंजर सुनाइ : षल मूल उपाटन : अवधेस दई आग्या
इन हि : जाकु दुरग नृप ग्रेह जह : कमजुकंतराज दस सीस को : ति
लक बिभीषन देकु तहां ॥ ॥ मो हि उचित न हीन गर मांऊ : आवन
इहि अवसर : भ्रात सषा अरु सुभट : सबे तुम हे हथरे सुर : मंदो
दरि मंत्री जु मानि : सब ही के समत : देस को सदल दुरग : सकल र
जश्री संगत : मो हि मिलो बिभीषन वहि समय : पे बिकस्यो मेल
कपति : सुनल गन अजनर हरसु कबि : सुपे बचन मम होरस
ति ॥ ॥ लंक आनि लंकेस : दिब्य सिंघासन दीनो : राम अनुज क
पिराज : कपि न मिलि तिलक जु कीनो : बेद प्रनीत बिसेष : सा
जि अनेक सकारन : बजि निसान मंगल बिधान : घुमरत मां
नऊ घन : परजा गत संपति राज सुष : तिहि पाये गढ लंक तह
अनिलाष बिभीषन मिलि अषिल पुनि आये रघुनाथ पंह
श्रीरामबाच ॥ दूहा ॥ कहो राम हनुमंत कहं : जहां सीता तह जा
इ : कुसल हमारी उन हि कहि : उनकी हम हि सुनाइ ॥ ॥ कबि
त्त ॥ मारुति कूद्यो गगन मग : इहां असोक बन आइ : सीय हि सु
नाये बिजय सुष : सीय कुसल रघुराइ ॥ ॥ हनूमत उषल
पेयो निरमूल षनि : नव दास्यो नुवनार : अवसीत हि अवधे
स उर : दीज कुदरस उदार ॥ ॥ सीता श्रीरामदरस न पुनरा
गमन ॥ हनूबाच ॥ छंद द्वै अषरी ॥ कहि हनुमंत जुगल जोरे
कर : सुनिये कछु बिनती अवधेसर : जिहि हित करम दुरंत

कमदुरंतजुकीनै: लोकप्रगटजयरंनवृतलीनै: जुधनब्रह्मपनातीजो
यो: बलदलसीसवंसबनियोयो: सोईफलउदयलयोअबस्वामी: जीव
सकलतुमअंतरजामी: सबबिधिसमरथरामसनेही: बंछितचरनर
सबेदेही॥ कबिरुबाचा॥छंद॥ सुनिबचनरामसुजानः हित
कहेजेहनुमान: सुषउपजिरामसुनाव: भयोतहासातिकनाव॥
श्रीरामोबाच॥ तहाकहोप्रभुहनुमंत: सीयबेगलावहुसंत: जुवुरा
जतुमामिलिजाहु: यहकाजआजउछाहु॥ कबिरुबाचा॥ सजिलेक
पतिदयोसंग: उठिचलेबीरअनंग॥ छंद॥ इहांअसोकबं
नमारुतिआये: छिनतिहिनयनरुदनजलछाये: कपिगतिदेषिजा
नुकीकेरी: हीयचकिंपजातनहीहेरी: बिरहभगनतनबसनमली
ना॥ दिगजलधारबवनमुषदीना: बेनीएकअंगमुषबांमा: सोचतस्वा
सबिमोचतस्यामा: रहतिससोकराकसनियेरी: हरनीमनहुबयकत्री
हेरी: हीयचकिंपजातनहीहेरी: तरमात्रिजटासाधसुलछन: बोलि
तिनहीयोंकलेबिनीषन: मिलिसुषसीयहिकरहुतनमंजन: अंगसु
रंगबसनदिगअंजन: बानकउचितसिंगारबनावहु: चित्रकुचितसौ
गंधचढावहु: अतिबहुमुलिबुसतसबआनहु: पाइनपरिउरजगति
प्रमानहु॥ कबिरुबाचा॥ भूषनबसनबनायेनांमनि: देहधरेमनुग
टीदांमनि: मिलिअहनतसोनसकुमारी: निरषितोरिनिसच
रनारी: आहीसमयसुषासनआनी: नरश्रीरूदरामपटरानी: त्रिकु
टआरतेनिकसिततछन: पटहिलपेरीसिवकापूरन: असुरत्रीयाके
लुकअनुरागी: लषनिधावतपाछेलागी: बरचमरकरमारुति
धारत: अंगरजयजयजननिउचारत: बेत्रपानिलकेसबिनीषन
आगेचलतपयादेआपन: निकटआनिकपिनालनिहारत: निरुर
कंचुकीतिनहिनिवारत: इहांहनुमंतहिरामबुलायो: अंतरनावक
मंत्रबतायो॥ श्रीरामबाचा॥ जोहमकहेप्रमानसुजानहु: अब
सीताहिचरनचरआनहु॥ कबिरुबाचा॥ रामसमलिमोअनीता
सबिकाछोलिचरनचलीसीता: देषतलोकनबहनुरारे: इहा
सीतारघुपतिपहआई: देवलषनकहआगपाहीनी: काम्बहुल
सालातहकीनी: इहासोसालप्रजारीआगी: ज्वालअनलअक
सहिलागी॥ सीताद्विअसमय॥ बेदेहीबाचा॥ चितहुकरम
ममबचन: स्वपननिद्राप्रबोधसंग: बिनुरायवरसनाव: अम
अवलोकपरसअंग: ततोदहोयहदेह: प्रगटसुरमुषतुमपावन

करमसाषिउतमनिकृष्ट संसयजुनसावन: देषतसुरआसुरकीस
दल अनगसुतासतउधस्यो: मनमोदबिकासितकमलमुष अनल
प्रवेसनआचस्यो: ॥ कवि रुवाच ॥ दोहा ॥ कीनोबंदनपरिक्रमन
अनलहिसीतआप: आननरविद्वादसउदित: मनबढिहरष अ
माप ॥ छंद ॥ अरीप्रगटज्वालमालजुप्रजारी कीयोप्रवेसबिदेह
कुमारी: ऐसीकछुअछाअवधेसर: सोपावतनहीनेदसुरासुर:
हाहाकारलोकत्रयहोई: कहतसुनतसमउतनहकोई: त्राहिरामन
कदूतपुकारत: असहनचरितदेषिनयआरत ॥ दोहा ॥ देवअसुररि
षनरनिदीय: प्रलयरामप्रकास अनिसमयसोजानकी: बाढ्यो
उरबिसवास ॥ कवित ॥ प्रलयकालसीप्रबल मनकुजगीज्वाल
नल: परबसपरिलोकपबाद लागिचितजावषल: बपुछायामाया
बिलास सीयरूपसुधास्यो लोकबिलोकतसस लागिज्वालान
लजास्यो: पहलेसीयपावकमहप्रछन हगिराषीरक्षन ह्यो: कुरु
नरामकारनकरन: देविदुसहप्रलयदयो ॥ स वै या ॥ बिकसे
मुषारबिंदअंगअंगसोनाअति मंगलमेंकीनोमानोपीहरअवेसमे
नावीसोनबलकछुकीयोचाहेसोईकरे सोपेसमोदेषिसिरधुनत
सुरेससो: हाहारवतीनलोकफेरलेबसातनाही उपजोचरावे
रकेउरमेंअदेससो: रामरूपउरसीताअंतरिअनीतअतिलाग्यो
नबसनकुपावककोलेससो ॥ ॥ राक्षसी ॥ दोहा ॥ समयबिलो
किनिसाचरी: नरपतिकरतिअनीति करमीकतिअतिसोचउर: न
हीचकितभयनीति ॥ ॥ कहतिपरसपरराकसी: पायोसतप्रमा
न: जरीनकैहैत्रयतवन: सीतासतीसमान ॥ ॥ कविरुवाच
कवित ॥ भरमरूपद्विजदेह्यारि: बैसानरआयो सीतापुत्रीसंग
बिहतउरहरषबढायो: पयसागरलछमीप्रबीन: अरपीनारायन
योसीतारघुपतिहिआनि दीयप्रेमपरायन: करबामसंगरघुनाथ
के राजितअतिछबिनामनी नवनीलजलदमिलिनेहनव देह
वानसीदामनी ॥ ॥ स वै या ॥ भयोहोबिजोगसीतारामभमनज
नकी नवकेसैंटरेजोकरमरेषभावनी अनलमेराम्योदेहपा
ईपतिआप्यअैसीछायाकीनीपंचबटीप्रतिबिंबछावनी काठ
अेहयेगिजारिछायातनछारकीनोसुधकैनिकसीसोसतीनि
समझावनी पावकैकेसथआनिप्यारकेदरसपायो पितकेसे

अहतैपथारीपुत्रीपावनी ॥ अग निबा चा॥ कबित्त॥ देऊक बनरथुदेव
यहैअछाउपजाई: सधसतीसीयसमुझि: प्रछनममयेहपगई: कहे
समरजयकरे महराकसबलमास्यो: कटकपतितकुजोनि अंतसो ई
दुष्टउधास्यो सबनाहकरनकारनसमथ देवबिसवसुषदीजीये जे
नकीजोगमायाअजय कृपाअनुग्रहकीजीये ॥ श्रीरामबाचा ॥ ॥
आग्यादीनीरामयह: मातुलिहिबिमान: पुल्लावकुसुरराजपह: पुनिक
हिकजप्रमान॥१॥ लेरथसारथफिरिचलो: इंद्रलोकतबआइ: रामबि
जयरावनमरन: सबेकहेसमझाइ॥२॥ मातु लिबा चा॥ कांमारतबामी
कुटिल: दुष्टबिस्वरतद्रोह: सोरावननिजदोषसब: छनमहगयोसंछे
ह॥३॥ सुरदोषीहमगरबसंग: सदाकुमारगसाथि: नासनयोदसस
रनिलज: अपनेंकरमउपाथि॥४॥ छंदद्वैअषरी॥ कबि रुबाचादेव
सबेदसकंधरकेरु: सकेनआइनिकटलगिसमहरु: सुनिषलमस
बिमानसजाये: इंद्रकुबेरबरनजमआये: ब्रह्मरुद्रमुनिसिधस
चारन: साथिक किंनरपितरसकारन: रिषगंधरबरुनागदिगे
सुर: मिलिइत्यादिकअषिलचराचर सबेआइसुरत्रीयासमानी
महाहरषसीताहितमानी: अमरकोटितेतीसजुआये: छाजतगग
नबिमानसजाये हसतपरसपरकरतकुलाहल: षेचरमस्योद
सानसोषल: होइआनंदबिबुधगनबरषहिं: बारबारनन
पुहपनिबरषहिं: बिबिधिबरनरथबसनबनाये: आगमरि
तुजानकुघनआये: सुरकंमानतनाटकसाजत: बिबिधिबि
धानतानसुरबाजत: बिहसहितालमृदंगबजावहि: गहगहकं
ठरामगुनगावहि: ॥ ब्रह्मसतुतछंदबेताल॥ तुमआदिब्रह्मअ
नादिअस्तुत: ऐकआनाना सिन: अजअकलअगुन अरूपअन
जित: अनगतनअबिनासिन कल्यानरूपत्रिलोककरता ब्रि
सतुमबिस्वंभरे प्रभुजगतरक्षकभरनपोषन बिस्नुतुमल
छमीबरे: भवनासकारनरोद्रभावन रुद्रतुमहीरायवे: सुरथो
नलीनेछीनइनसब महाबलषलमाधवे सुनसकतिसदा
अमोयस्वामी सुरसहारसदोदयं संग्राममास्योसकुलदस
सिर असुरईसअसाधयं: अबदेवहमस्वसथानपाये प्रभु
प्रसादसुपावनं: तुमआदिमध्यजुअंतफलो: जगतिहितभव

नावनं ॥ ६६ बाच॥छंद॥ तुम गी॥ नजेरामइंदीवरनीलआंगं॥ न
जेअंतनिरंतपदमंसनाने॥ महापातकंकाननंदाहनामे॥ जयोरु
दबहुसथंतरूपरामे॥ नवानावसंनावनंरूपरूपं॥ अकामंअ
गमंअनामंअरूपं॥ नराकारदेहंसुरंदुषनासं॥ परानंदपापोघ
हंताप्रकासं॥ कपीसेसमित्रंदयारूपदेवं॥ बिदेहसुतानोगिना
जंसनेवं॥ स्वयंब्रहमतूरामबेदेसहाया॥ सीयाबामभागेसहजेण
मायां॥ अहंकारमद्यातमतंमहीसं॥ अनाचारचारीवलीबाकुबीसं
॥ तयाक्रोधदीपानलेतोपतंगं॥ दलोदेवदोषीसुतंदंदसंगं॥ कि
नीरदनीलसोभातिस्यामं॥ छटापीतबासंकलाकोटिकामं॥ जटाज
टसीसंबपंबनबासं॥ ग्रिंअंतरतंमुखेवारुहासं॥ करंबामकोदं
डनामसकामं॥ तुजंदहनंबानसोभासत्रामं॥ करीसिंघतूनीर
बंधंसकोयं॥ उरंसुदरंतुलिसिकामालओयं॥ ६६ बाच॥छंदपध
री॥ तुमसोहसघनकेबिषमबात॥ बनसंसयकेपावकबिभात॥ त्र
मअंधकारकेरबिउदार॥ बिपीयादिकंजबनभयतुमार॥ मनम
अमतंगकेसिंघमान॥ नवबारिधमंदरगिरप्रमान॥ दूहा॥ तव
देषोंनृपतातिलकः अवधिपुरीप्रभुआइ॥ मंतुकलोयहरामसौं॥ य
नसुधंमसुषदाइ॥१॥ अबनहिचितबिलंबयह॥ राजराजरघु
राजः रनजयपायोमारिरिपुं॥ करेसिधसुरकाजा॥२॥ सुरमुनिचा
रनसिधसबः जथानावमतिजासः कलहुंयतिरघुनाथकी॥
कीनोकितिप्रकास॥३॥ कबि रुबाच॥ छंदबेअषरी॥ इहपिता
दसरथनृपआये॥ पितआगमनरामसुषपाये॥ करिपरिक्रमन
दंडवतकीनो॥ आपरामनयेप्रेमअधीनो॥ लेदसरथसुतकंठल
गाये॥ बिछुरेमनहुप्रानसेपाये॥ नृपबिलोकिनयनजलतरिभरि
अतिआनंदरोमतमउभरि॥ उभयओरआनंदउमाये॥ जेसुषसुक
बिकवनकहिजाये॥ बिगतभास्तुवसमयबिचारो॥ इहादसरथ
नृपबचनउचारो॥१॥ राजा दस रथ उ॥ सतिवंतीअकलंकतसी
ता॥ पावनपरमप्रसिधपुनीता॥ आदिमध्यअवसानअरेही॥ बिस्व
बिभातसुधबेदेही॥ रामकृपाग्रिसीयहिनिहारे॥ उचितधरमहित
रचितअनुसारो॥ कबि रु॥ पूजेरामपितासुषपाये॥ इहादसरथवैकु
ंठसिधाये॥१॥ इंद्रो बाच॥ इंदबचनकरजोरिउचारे॥
देहुमरारे॥ [illegible] बाच॥ रामकहोतः

ऐहतैपयारीपुत्रीपावनी ॥ अग निबा चा॥कबित॥ इकबनरघुदेव
यहैअछाउपजाई: साधसतीसीयसमुझि: प्रछनममयेहपगई: कस्यो
समरजयकार महारकसबलमास्यो: कटकपतितकुजोनि अतसोई
दुष्टउधास्यो सबकारकरनकारनसमथ देवबिसवसुषदीजीये जो
नकीजोगमायाअजय कृपाअनुयहकीजीये ॥ श्रीरामबाचा॥
आग्याहीनीरामयह: मातुलिदिअबिमान: पुल्चावकुसुरराजपह: पुनिक
हिकजप्रमान॥१॥लेरथसारथफिरिचल्यो: इंद्रलोकतबआइ: रामबि
जयरावनमरन: सबेकहेसमझाइ॥२॥मातु लिबा चा॥कांमारतबामी
कुटिल: दुष्टबिस्वरतद्रोह: सोरावननिजदोषसर: छनमहगयोसंछे
ह॥३॥ सुरदोषीहमगरबसंग: सदाकुमारगसाथि: नासनयोदससि
रनिलज: अपनेंकरमउपाथि॥४॥छंदहरिगीत॥कबि रुबाचादेव
सबेदसकंधरकेर: सकेनअइनिकटलगिसमहर: सुनिषलमसो
बिमानसजाये: इंद्रकुबेरबरनजमआये: ब्रहमरुद्रमुनिसिधस
चारन: साथिक किंनरपितरसकारन: रिषगंधरबरुनागदिगे
सुर: मिलिइत्यादिकअबिलचराचर: सबेआइसुरत्रीयासमानी
महाहरषसीताहितमानी: अमरकोटिनेतीसजुआये: छाजतगग
नबिमानसजाये: हसतपरसपरकरतकुलाहल: षेचरमस्योद
सानमसोषल: होइआनंदबिबुधगनबरषहिं: बारबारनन
पुहपनिबरषहिं: बिबिधिबरनरथबसनबनाये: आगमरि
तुजानकुघनआये: सुरकंमानतनाटकसाजत: बिबिधिबि
धानतानसुरबाजत: बिहसहितालमृदंगबजावहि: गहगहकं
ठरामगुनगावहि: ॥ब्रह्मसतुतछंदबेताल॥ तुमआदिब्रहमअ
नादिअद्भुत: ऐकआनंदासिन: अजअकलअगुन अरूपअन
जित: अनगतनअबिनासिन: कल्यानरूपत्रिलोककरता: ब्रि
सुतुमबिस्वंभरे: प्रभुजगतरक्षकतरनपोषन: बिस्नुतुमल
छमीबरे: भवनासकारनरोद्रभावन: रुद्रतुमहीरायवे: सुरथो
नलीनेछीनइनसब: महाबलषलमाधवे: सुनसकतिसदा
अमोयस्वामी: सुरसहारसदोदयं: संग्राममास्योसकुलदस
सिर: असुरईसअसाधयो: अबदेवहमस्वसथानपाये: प्रभु
प्रसादसुपावनं: तुमआदिमध्यजुअंतफलो: जगतिहितभव

नावनं ॥ इंद्र बाच ॥ छंद ॥ तुलंगी ॥ नजेरामइंदीवरनीलआभं ॥ न
जेअंतनिरंजनपद्मसनातं ॥ महापातकंकाननंदाहनामं ॥ जयोरु
द्रबंदसथंतरूपरामं ॥ नवानावसंनावनंरूपनूपं ॥ अकामंअ
गमंअनामंअरूपं ॥ नराकारदेहंसुरंदुषनासं ॥ परानंदपापोघ
हंताप्रकासं ॥ कपीसेसमित्रंदयारूपदेवं ॥ बिदेहंसुतानोगिना
जंसनेवं ॥ स्वयंब्रह्मतूरामबेदेसहाया ॥ सीयाबामनागेसहजेग
माया ॥ अहंकारमद्यातमतंमहीसं ॥ अनाचारचारीवलीबाकुबीसं
त्वयाक्रोधदीपानलेनोपतंगं ॥ दलोदेवदोषीसुतंदंदसंगं ॥ निं
नीरदंनीलसोनातिस्यामं ॥ छटापीतबासंकलाकोटिकामं ॥ जटाज
टसीसंबपंबनबासं ॥ ग्रिंअंतरतंमुषेवारुहासं ॥ करंबामकोदं
डनामसकामं ॥ सुजंदहनंबानसोनासनामं ॥ करीसिंघतूनीर
बंधंसकोपं ॥ उरंसुदरंतुलिसिकामालओपं ॥ रुद्र बाच ॥ छंदपध
री ॥ तुममोहसघनकेबिषमबात ॥ बनसंसयकेपावकबिभात ॥ न
मअंधकारकेरविउदार ॥ बिषीयाहिकेंजबनमयतुषार ॥ मनम
अनतंगकेसिंघमान ॥ नवबारिधमंदरगिरप्रमान ॥ दूहा ॥ तव
देषोंनृपतातिलक ॥ अवधिपुरीप्रभुआइ ॥ संतुकलोयहरामसों ॥ य
नसुधंमसुषदाइ ॥ ॥ अबनहिउचितबिलंबयह ॥ राजराजरघु
राज ॥ रनजयपायोमारिरिपु ॥ करेसिधसुरकाज ॥ ॥ तुरमुबिच
रनसिधसब ॥ जथानावमतिजास ॥ कलहजयतिरघुनाथकी
कीनोकितिप्रकास ॥ ॥ कबि रुबाच ॥ छंद ॥ अंत्रअरी ॥ इहपिता
दसरथनृपआये ॥ पितआगमनरामसुषपाए ॥ करिपरिकमन
दंडवतकीनो ॥ आपरामनये प्रेमअधीनो ॥ लेदसरथसुतकोअ
गाये ॥ बिछुरेमनकुप्रानसेपाये ॥ नृपबिलोकिनयनजल
अतिआनंदरोमतनउनरि ॥ नयओरआनंदउमंगे
बिकवनकहिजाये ॥ बिगतनास्तुवसमयबिचा
नृपबचनउचास्यो ॥ राजा दस रथ उ ॥ सतिबे
ता ॥ पावनपरमप्रसिधपुनीता ॥ आदिमध्यअवसा
बिभातसुधबेदेही ॥ रामकृपाप्रिगसीयहिनि हरे
चित अनुसारो ॥ कवि रु ॥ पूजेरामपितासुषपाये
ग्रसिधाये ॥ इंद्रो बाच ॥ इंद्रबचनकरजोरिउचार
देहुमुरारे ॥ श्रीरा मबाच ॥ रामक

येहउचितममकाज: बिहसयहेअबअमृतमगावऊ: जरुरेरनतिनक
पिनजिवावऊ: इहअमृतबरषाअनुसारी: बांनरमृतकजीयेअबिक
री: जथासबेसोवतसेजागे: लीलारामचरनउरिलागे॥ दहा॥ सुरस
मूहसुरराजसम: बाजतबिजयबिसेस: अपनेअपनेलोकयह:
कीनोप्रगटप्रबेस॥१॥ छंद॥ प्रगटेराकबिरुबाचा। रघुनाथसुतट
निहारि: इहाकृपाबचनउचारि: अवलोकिलछमनबीर: कपिर
जअगदधीर: अरुजामवतसुबुध: नलनीलहनुवप्रसिध: इ
सादिजूथपजूथ: थितसबेबीरबिरूप: अरुनिकटलंकानाथ: हित
जुकतजोरेहाथ:॥ श्रीराम मबाच॥ प्रभुकलोकृपाप्रसंस: सबआ
हितुमसुरअंस: तुमबाऊबलबिरदैत: मैलसोजुधजसजैत: रन
हयोरावनराइ: लीयलंकबिजयबजाइ: प्रभुताबिभीषनपाइ: त्रय
लोककीतिप्रकास: तवहोऊकारनतास॥ दहा॥ जोलोंससिसूर
यजगत: उदितहोहिप्रकास: तोलोंजसकपितालको: प्रतित्रयलो
कप्रकास॥१॥ पौरुषमहिमांआपनी: कपिसुनिहोकछुकाल: सं
चलिहोमेरेसंगमिलि: पुनिबेकूंगबिसाल॥२॥ मोसमकीरतिकपि
निकी: सुनिकहिहैसबिसेष: नवसागरतिरिहैजगत: सोअनया
सअसेष॥३॥ श्रीराम मबाच॥ बिभीषन नहिबरदांना॥ दहा॥ प्रभुनरहरहा
कैप्रसन: बरदयोबिभीषन: ममप्रसादगदमोऊ: महासुषकरऊ
अनथमन: पारप्रगटप्रभुताप्रताप: पुनिपाइनपरयो: करिअ
पनोराकसकुजोनि: धरिकरउरधरयो: अदभुतप्रभावमहिमा
अतुल: आपादीनीजीतिअरि: जगिरामनामजोलोसजय: कलिजु
गनिरभयराजकरि॥४॥ दहा॥ बिभीषन बाच॥ कहोबिभीष
नजोरिकर: सुरसुरपतिदरिसाल: मंजनबिजयसुगेहमम: करि
येदीनदयाल॥१॥ श्रीराम मबाच॥ अबतोबिनुपूरनअवधि: सुन
कुसमलंकेस: मेरोआवननगरमह: नाहिनबनतबिसेस॥२॥ ज
तीधरमपालतजथा: भरतसहानुजभ्रात: अलंकारमंजनबस
न: ताबिनुकछुनसुहात॥३॥ करकुसअूषाकपिनकी: जथाउचि
तबिधिजानि: इहाबिभीषनआनियह: सबकीनोसनमान॥ क
बिरुबाच॥ कबित॥ मारिरामरावनसंग्राम: लंकागढलिनो: असु
रबिभीषनसरनआइ: तिहिदीनहिदिनो: महाबीरहनुमत: से
वसुग्रीवकपीस्वर: अगदभतअतेग: तालपतिअसुरतयक

रु मिलि अनय अयज अय समर । तिन त्रिलोक जयु सबरु ब । ज
रु तन अखिल जय जय जयो । जयो जै तिरहि तारसुवा ॥ ॥ समर सिवहि
दस सीस । श्रीन अंतर धरनि समर पीय । पिसन मास पल चरनि । अति
तर्क काल जु अपीय । बीर श्रेत केतु कबि नाग । बे श्रेत नवान नि
जोति जोति सिज जोग । पवन लेगो मिलि प्रान नि । कृत सरन हेत नर
हर सुकबि । रीन बिनीषन लंक दीय । कंटक यट बै नव दुरग क्रम । क
पिरा मद हुव यट कीय ॥ ३ ॥ एक उनय । दस । अयत । नगा हय चर
नचार नर । रतो गिरत सुवरक । जिरत ऊगत कबंध नर । ऊग हि
कोटि कबंध । तामब जयट कारव । सुकर बिजय सारंग । रोष स
जित रन राय । कृत यह अनत नर हर सुकबि । समर दसानन स
जयो । रयु बीर धनुष यट कारवन । आरत्र यो दस बजयो ॥ ४ ॥ ताप
कंटक नय यट स्यो । लोक लोक निमिलि मंगल । कुलर कंस षय क
स्यो । बेतमा स्यो रावन मल । महा अहनि यह मोष । नयो थिरचरम
नन्यो । बेदयर मबिष स्यो । समय सो रिषि नि सुहायो । त्रैलोक से
कत मोत हिन । अमर समर जय उच स्यो । साध्यो अ साधि लंक से
वर । कृत अन्तर युपति क स्यो ॥ ५ ॥ दिपरावन रन रोड । महा गदल
कादुरगम । पद लंघन पयोधि । दुसह सु निद सादे दह म । तट स
हा स्क सि नाल । ससत्र पेषा नि धन बसर । बयु सु बाल बिनत
बियोग । हैजल फल आहर । मांसो इ रा पो रुष बेद मत । पुनि स
पति न प्रमानिये । सुर असुर नर नि नर हर सुकबि । नियत काल
सिध जानिये ॥ ६ ॥ निसा चार कीय नास । कबि नि के हेत्व बानक
र । रन अंगन रघुनाथ । सबि के रत बिजय सीसर । रोष नयन सा
रत । बिबिधि छिन तरे । बिकासित । श्रीन बिहंबन बसन । प्रना
रबि कोटि प्रकासित । कसि नाल मय मंगल अकल । करि गहे
प्रभु बिजय क्रम । करुनो निधान बर हर कस । महा बाहु अध
रम म ॥ ६ ॥ इति श्री रामचंद्र बिजय रोव नव धव रन नं ॥
अथ अजो ध्या प्र तिग मन ॥ कबि रुबाच ॥ ६ ॥ श्री नि बिन
षन अय कीय । पुष्पक रामबिमान । तिहि बैठे रघुनाथ तह ।
सीता लषन सुजान ॥ श्री राम बाच ॥ कलो राम लंक से कहे । प्र
रम कृपा प्रचोर । अपस नार कुजारु हो । राज श्री यस समर ॥ ।
रीषन उ ॥ अब चिंचलो गो । सग अब । देवा बरन बिसेस ।
नबि रहे दयाल को । सहि नजा ह अवधेस ॥ ३ ॥

पधारीजथाजोग्यरथ दिब्यजुरीनो: कपिपतिअंगदआरोहनकीनो
बिहतआनिरथरथेबिभीषन: तहाआरूढभएजूथपतिन: सुन
रथचढ्योबिभीषनसोहत: हितुबंधुनिकेचितबिमोहत: आपप्र
यानकरेअवधेसर: बाजेगगननिसानगहरबर: बाजेबिबिध
लंकमहबाजे: गोमब्योमसुरनिहिमिलिगाजे: मिलिउतरहिस
चलेबिमानो: कृपानिधानसहतकल्यानो: रामप्रतापसुरूपउ
रराषे: बेचरअमरनिजयजयताषे: इहारनभूमिमध्यप्रभुआव
त: तेईतेईसीतहिगोरबुतावत॥ श्रीरामबाच॥ राजकुमारिबि
लोकिमुहारन: करहमओनअलिकृतअंगन: मिलिकपिरीछनि
राई: गिरेलषनषलसकतिलगाई: कुंभकरनकोसिरइहाकाट्यो
हारुरगजिहिपरतहीकाट्यो: गदलंकायहयहबेलागिर: समह
रमध्यजुमास्योदससिर: यहमरकटनिनीरनिधिमाष्यो: सेतबां
धिरामेस्वरथाप्यो: इहाबिभीषनसरनेआयो: प्रभुतासहतलंक
गढपायो: यहप्रबरषनअरिकपिआये: इहातेजूथपजूथच
लाए: कपिपतिकोयहनगरकिकंधा: इहाबालिमास्योमहअंधा
पपासरषिमूकजुपरबत: हमकहआनिमिलोतहाहनुमत
इहातईसुग्रीवमित्राई: उतरीयनूपरइहासुपाई॥ सुग्रीव॥ कहि
कपिराजसुग्रीवजोरिकर: इहाकछुनाहिकिकंधाअंतर: रघुप
तिआजउहापाउधारी: होइपावनकुलयेहमारी: कृपानिधा
नअनुग्रहकीजे: देवचरनमेरोसिरदीजे॥ श्रीरामादीनबंधुबे
लोहितदारक: कपिपतिमुसबहीकतलारक: जोपेअवधिबिती
तेजाऊ: प्यारेभरतहिजीयतनपाऊ: मेबनबसितपकरमप्रक
सो: उनसोईग्रेहबसतअसासो: अबनबिलंबउचितमोहियाते
जीतनपषकुतेउकिजाते: कुंभादिकराकसषयकीने: रावनमारि
लंकगढलीने: प्रभुताउरगबिभीषनपायो: भयोसुरकाजजथा
मनभायो: हितअनिलषजुपूरिहमारे: तेबलबुधिकपीसतिहा
रे: निकटरहातेतवरजधानी: पुरीकिकंधासुषदप्रमानी: अब
यहजारकरऊसुषअपने: पुनिममकृपानहीभयसुपने: जूथ
पजूथसबेयहजाऊ: कबऊसंकनमानऊकाऊ॥ सुग्रीवबा
चा॥ दोहा॥ कपिकपीसइहाजोरिकर: बिनयबचनबिसेस:
अपनेकोगोरवअधिक: आपदेतअवधेस॥१॥ कऊसहार

जुग रुइकै। हिमसकापे होत। कछु दिन प्रभु सेवा करी। यह ह
मत्कृप उदोत॥२॥ करुनानिधि यह सबनि कै। इछा है अभिले
स। राम तिलक सुष अवधिपुर। इरसन करहि सुदेस॥ कवि
कबाच। कपि पति जूथप जूथ कपि। सबै चले सुषपार। इहा
सीता तारा सषी। लीनी संग बुलाइ॥३॥ जिहि जिहि ओर नज
गत पति। सुषकृत चरित सुनाइ। पुनि सीतहि ते जात पथ
बिहसत देत बताइ॥३॥ श्रीरामबाच। छंद द्वै अषरी॥ बनकी
नो तपबेस बिहाई। सबरी इहा सुरलोक सिधाई। इहा कबंध हते बलराकस। इहा जटायु
धउ थास्यो। महा जुध रावन जो मास्यो। बैदेही यह बिमल प
चबट। सबै बेस हम गोदावरि तट। यह जुग सति सुतीछ
न आश्रम। द्विज बसन हमल हेतु षेम। यहे जु पंचसरोवर
अद्भुत। जलरुह फूले निरमल जलजुत। इहा सरभंग परम
गति पाई। आपदेह जरि अगनि उगाई। बिसवरब्ध नासर हा कीनो
देवद्विज नृपहि अति दुषदीनो। अनुसोया अरु अत्रि बसत इहा। हित
उपदेस करे जिन तुमकहं। चित्रकूट यह बिष्यात। माता मिलीं नुर
तप्री यत्रात। बालमीक आश्रम यह बंदित। देहि जु जि हमरे अ
तिहित। तरल तरंग बिमल जमनातट। काटत सकल पाप दुष संक
ट। सीय यह त्रिपथगामनी सरसरि। इहा मंजत अघ कारक उधरि
कबि कहा। आश्रम नारद जु के आये। पूछत कुसल परम सुष पाये।
श्रीरामबाच। इहा॥ देव सिष्य गुरु आदि द्विज। पावन मातु कृपा
ल। आतम रत सानुज कुसल। कहिये देस सुकाल॥ नारद द्विज
उ॥ सुनहु राम सब ही कुसल। प्रभु तव कृपा प्रसाद। आज दन
आगमन ए। देस बेस उदमाद॥२॥ नारद द्विज नावन नरत। देवहि
कलो निदान। आज चतुरदस बरष ए। पूरन होत प्रमान॥३॥ छं
द द्वै अषरी॥ आज अवधि पूरन अवधेसर। पितत वचन आगम होत
धरम पर। यहे बिचारि धरम गति ऐसी। कोजानै ये कहे कैसी
राम राम रट मुष चषरी वत। जथा स्वाति चातिक मुष जीवत। क
रन करन बिलंबन कीजै। प्रभु तुम आगम सुनत पतीजै॥ नर
तट सा॥ महा बिषाद बरत चिंतत मन। ६ ५

निसादिन आजअवधिपूरनदिनआयो: पैकछुराम संदेसनपा
यो: सोचतमनमोचतनिस्वासः आनिरहीइकदिननिसिआ
सो: आजकुतोरघुनाथनआये: दारुनआगमअंतदिखायो: दि
गतुजनरतपुरेरहादहन: निसचयभयोबिस्वासमनहिमन
कछुधीरजकछुचितअकुलावत: डुबध्यासिंधुपारनहीपावत
श्रीरामबचा कबित॥ यहबिचारिअवधेस: बरषदसचारिबिह
ईय: अवधिघोसयहआज: वहैपंचमतिथिआईय: सुनकुब
चनहनुमंत: संतअबबेगसिधावकु: ममआगमनरतहिस
मूल: सुघबातसुनावकु: चंचलअतिनाहिनरहतचित: ह
मपाछेहीअइहै: सुषकेहैंतवनरहरसुकबि: हितन्रातहिउ
रलाइहै॥१॥छंदचौपाई॥ कबि कुबाचा॥ धीरबीरहनुम
तउबिधाये: अतिसबेगनदीपुरआये: आनिमिलेनरतहिअ
तिआतुर: कलोकतकरघुबरकिंकर: आजरामसीयलछम
नअहैं: दलबलकुसलदरसप्रभुदेहैं॥ नरतानमिसिरकन
रतजुतन्राता: बातसुपनकिधुसतिबिधाता॥ कबिकुराम
कतसुनिउठिउरलाये: सात्विकनावनयनजलछाये: अैसेरू
पनरतअवलोके: भूमिबिवरसमउरुषससोके: दरनासनम
गछालमंडित: बिंतिबेतपसअनषंडित: तनमलपंकतिब
सनतुचातर: स्वातिनखमनजटजटासिर: अवनिसयनफल
मूलअहारी: सांतउदासधरमबृतधारी: कामक्रोधमदमोहन
मायो: कीनेमुनिबृतदुखलकायो: अंतरभूमिरहैऐकासन: ऐ
करामरटरामउपासन: प्रभुपवरीसियासनपूजत: केकीजो
धनआगमकूजत: रामरामरटपंथनिहारत: तहाकलपससजन
छनटारत: सोधअन्पनसुरामउपासी: पूरनजोतिसरीरप्रका
सी: कृतरघुनाथजुबनबसिकरयो: सोईनरतअहअनुसरयो
भयेअधीरमिलनकहंतारे: बिछुरीमनकुपरमनिधिपारे
धरमधुरंधुरसानुजधाये: सिरपरचरनपीठिसुषदाये: पाएफ
टअरुरहतउपानां: धायेउरधरिकृपानिधानां: आगेहनूसजव
फिरिआये: सानुजआवतनरतसुनाये: करिहीतेजबनरत
हिदेषे: प्रभुसोईआनसमानसपेषे: बारबारकपिपतिहिब

तावत: रतरघुनाथ हांकिरथ आये: धीरनर सोंनरत उतधाये: उतरेरथ
तेरामअतीत: संपासीपाछेहीसांता: कृतहितचरतदंडवतकीनें: नाथ
उगरहलाइउरलीने: प्रभुयेचरतमनोरथ पूरन: उनयत्रातउपजेसुष
अनगन ॥दहा॥ मिलतचरतरघुनाथमन: उपजेजेसुषआहि: तासु
षकेपरिपाकतच: तेईजानतताहि॥१॥ जीअमृतकेगुनअषिलपा
नकरेसुप्रान: हैबेगेजोनिकरही: जनओताकहाजानि॥२॥ जैसेवा
रिजगंधगुन: जानतभ्रमरसुजान: वेकरतनिसंगनव: पावतना
हिप्रमान॥३॥ कहिनसकेनरहरसुकवि: अनुभवविनुअपात: क
हतासुषउपजातके: बिछुरेमिलतविषात॥१॥ छंद पधरी॥ सीयच
रनचरतहनाचरसीस: इनदईचितअदयअसीस: पुनिलछम
नलागेचरतपारे: करकरषिहरषिलीयकंठलाइ: नमिरामचरन
अहिहासनेम: प्रभुलइलयेउरसहतप्रेम॥ नरतजाच॥ कहि
नरतधंसलछमनअतीत: जसरातिजनमतेजनमजीत: निजरा
मचरनकीनेनिवास: प्रभुकरीसंगसेवाप्रकास॥ श्रीरामोबा
च॥दहा॥ कहिकहिसबकेगुनकरम: प्रभुसेवासुअपार: कपिन
मिलावतनरतकहे: रीझिरीझियुराइ॥१॥ छंद द्वैअषरी॥ श्रीराम
बाच॥ मित्रपरमसुग्रीवहमारे: संगरहेसबकाजसुधारे: को
ननाकरनहीहांतेकरि: महाषिसानोकुंनछुट्रोमरि: महजुव
राजमहाबलअंगद: मिलोसनमहरसमिरकोमद: येहनुमंत
सोयसीमलाये: चिन्हपाइहमसेनचलाए: जामवंतयेजोधा
जीरन: प्रभीप्रसिधबुधिबलपूरन: येनलनीलसेतजिनसा
धो: बाटकरीगिरसागरबाधो: रथपजूथमहाकपिजानहु
पौरुषइनकेअमितप्रमानहु: येममसरनबिभीषनआये: तिनरिप
केयरमरमबताए॥दहा॥ कृतपौरुषहनुमंतके: करोसिधसुरकाज
नरतकुसलतुमसोंनवसि: आनिमिलेहमआज॥१॥ इनआनीसजी
वनी: लषनजीयेरनमाहि: नातरिमेरोजीयनतह: निसचयजानहु
हि॥२॥ छंद द्वैअषरी॥ कबिकुवल॥ आपसमीपचरतवैगये: चढि
रघुनाथविमानचलाए: अंगमेरपरबतआयेसुष: महिमारामबत
बतसनसुष॥ श्रीराम॥ अंगमेरयहपरमसुषआश्रम: इतिनिसिव
सेजयकीनीहम॥ कबिकु॥ इहानिषादरजगेहआयो: लेरघु
नाथसुकंठलगायो: चढिरथमिलिअतिबेगचलावत:

नबिहसतसुषपावत: अनुक्रमनिकटअजोध्याआए: दीरघधजाकल
सदरसाए॥ राम ॥ बांमांकऊकरसाषबताई: देषऊअवधिपुरीसु
षदाई: लोकप्रसिध्पुनिथललेषऊ: बंदनपुनरागमनबिसेष
ऊ॥ दहा॥ कीयआगाहनुमंतकहं: अवधिप्रवेससुआज: कहे
जाइमाताकुसल: सानुजसेनसमाज॥ कबिकबाच॥ इहाहनु
मंतअजोध्याआयो: सीतारावकुसलसुनायो: आगेजननीहे
नबुलाये: अहयहमंगलउछवगाये॥ कोसल्याबाच॥ कहऊपु
त्रसुनरामकहानी: कबअे हैप्राननिकेप्रानी॥ दहा॥ प्रभुहेबस
तपंचबरपावन: राकसकरेतहाछलरावन: इहानालकपिअ
गनितआये: सेतबांधिगढलंकलगाये: दसदिसिरोकेदुस
हदवारा: पदमअगरहवारनपारा: दुसहजथपजथबिषम
दल: षेतरामभास्योरवनषल: महासंग्रामसकुलरिपुमास्यो
इहादिकजयसबदउचास्यो: सानुजसीतानाथसुनाए: अबपु
रनिकटजननिहेआये॥ कबिकबाच॥ सुनतजथाबिधिमंग
लसाजे: बाजेबिसदअवधिपुरबाजे: क्रमचोकोलपंथसुषद
रक: लेलेदयेजथाबिधिलायक: गुरत्रीचलीअअसुनगावत
इनपाछेमातासमआवत: गुरमंत्रीअरुसूरसुनटगन: इहां
चतुरंगचलेदलअनगन: लोकमहाजनजोहितलायक: साजि
चलेबाहनसुषदायक: कृपापात्रबिधिबिधिकृतकारक: पं
थपंथजनपंतिप्रचारी: प्रभुहिमिलनपुरजुजापसारी: बाल
कतरनवृधपुरबासी: प्रेमसहतचलिरामउपासी: इहाहनुम
तरामपहआयो: सुनजननीआगमनसुनायो: सजवहाकिर
थत्रिभवनस्वामी: आयेलोकचितअनुगामी: जननिबिमान
दिष्टपरिजबही: तजोरामपुहपकरथतबही: धरिअतिबेगध
रामप्रभुधाए: उरआनंदमातपहआए: क्रमजुतरामदंडवतकी
नें: लाइउरहिजननीतबलीनें: अतिप्रीयप्रेमहरषअधिकाई
पूरनमनऊरकनिधिपाई: सुरनिबछमिलिमनऊसत्तागी:
लेतबलाइलोनहितलगी: आकुलमीनजोनिजलपाए: दाद
रदुषितसघनदरसाए: महामनोरथरूतमयूरी: पानसआ
एआसापूरी: इहांजयेदुऊंघासुषअेसे: नेकबिनहिनसकत

कहितेसे॰ सानुनिचरनलगीसुनसीता॰ गहिउरलाइलईसुनगीता॰
भरतलषनअरिघनत्रयभाई॰ जननिमिलनसुषकहिकिनजाई॰
सबजनकेउरहरषसंचारा॰ बिस्वरीसमिलिएकहीबारा॰ मोहि
मिलेरामसनमांनी॰ जुगतिलोकयहकहुनजांनी॰ अपुनचलेजन
निरथआगे॰ अवनिपयादेउरअनुरागे॰ आगामातरथनिआरोहे
समबधवहिनकरसेसोहे॰॥नदीआम आगमन॥नदीआमहिरि
मनरेसुर॰ आएभरतअहअवधेसर॰ बाजेमंगलहारबधाए॰ आ
सकलरामअहआए॰ पुनिमातायहमांऊपधारी॰ समसीतातारा
सुषकारी॰॥भर तजाच॰॥ छंदपधरी॰॥ करजोरिभरतहाप्रनि
तकीन॰ प्रभुबिस्वकरयव्यापकप्रबीन॰ चितमधचराचरभावचि
ते॰ तुमतेनअगमकछुहेअनंत॰ केकरईकरेअनुचितकाज॰ राजपु
हजाचेकपटराज॰ लोराजतिहरोबेदसाषि॰ रघुरामबिनाकोसुकै
राषि॰ यहराजतुमहिसोहेअनंत॰ तुमहीप्रतिपालकआदिअंत॰ रघु
हकतुमतुमहीबनेराज॰ रघुबंसतिलकराजधिराज॰ पावरीस्ट
पूजाप्रमानि॰ इहारामअअलेधरीआनि॰॥श्रीरामबाचातुमसाध
सदानिरमलसुनाइ॰ लयेरामभरतकहंकबलाइ॰ तबहरीराम
आग्यासुमंत॰ तुमकरहुभरतमंजनसुतंत॰ कुलभरतजटाभो
चनसकाज॰ सानुजसुनमंजनबसत्रसाज॰ आवरितबसनभू
षनअनेक॰ बनिबिधिगंधलेपनबिबेक॰ बिधिजुकतससत्र
असत्रनिबनाइ॰ समअनुजबहीसोभासुनाइ॰ इहाभरतसत्र
यनभगतिभ्राज॰ रघुरामजुहारेमहाराज॰ पुनिरामजटाभोचनप्र
कार॰ सानुजतनमंजनकृतसुहार॰ इहाभरतअवधिपूरनप्रमान॰ सं
न्यासभावछांडेसुजान॰ सोगयसलिलमंजनसवारि॰ तनबसन
धोतअवधेसधारि॰ निसकृतजपपूजासनेम॰ प्रभुकरेजथाबि
धिसहितप्रेम॰ अतिमुद्रिबसनआवरितअंग॰ खरनमयसत्रबि
रचितसुरंग॰ आपुनसमलछमनबसनआप॰ जुगमदनमनहु
मिलिप्रेमजोप॰ कनकमनिरतनमयषचितकील॰ बनिअंगअंग
भूषननवीन॰ अरचितसुगंधआमोदअंग॰ भ्रमतसुसबदमि
लिमत्तभंग॰ समरूपससत्रअसत्रनिसुधारि॰ चितहतबेमि
लिबंधचारि॰ त्रयबहनप्रथममंजनसुतंत॰ सीयआग्यासाथे

त्रीयासंत ॥ ८ ॥ कौसल्याआगपासकल : मिलित्रीयचतुरसमोह : कृतहि
तमंजनजानकी : सलिलसुगंधससोह ॥ ७ ॥ आन्हवनबासनसलिल : ग्र
जितअंगबिभाग : सासुचरनलागीसीय : सतिअतुलसोभाग ॥ ९ ॥ स
हजसुबाससरीरकी : उठततरंगअपार : नामनिपरमधुमतत्रमि : भ्र
रतमधुपझंकार ॥ ३ ॥ मानकुलछमीत्रीयमिलन : सजिसोरहअंगार
प्रगटबिराजितसासुपह : अद्भुतरूपअपार ॥ ४ ॥ सकलसमंग
लसुतदिवस : सुषमिलिदेवसंजोग : कीनेमंत्रीउचितक्रम : पुरहि
प्रवेसप्रयोग ॥ ५ ॥ छंद ॥ इहबजेबिबिधिबाजितबिसाल
मनुगरजयबनमिलिजलदमाल : आंनोबिमानपुहपकबनार
आकृदनयेतिहिरामआर : अतिप्रेमनुजाधरिनरतआप : बेगारि
निकरमनसुषअमाप : सबचढेआतबाहनसजाइ : सबिसेषब
ढीसोभासुभाइ : सुग्रीवबिभीषनसुतदसंग : आरूढजथाक्रम
रथअनंग : आरोहजननिरथदिब्यआनि : सीतासमेततारासमा
नि ॥ अथ अजोध्या नि ग मन ॥ रसबढ्योचलेचढिअवधिराव
घनपरेगहरनीसोनयाव : सतसहसअस्वआरोहसंग : रथअयं
तअयतमिलिगजमतंग : पुनिबीसलछपयदलप्रमानि : धानुष
सेकासाबधान : चतुरंगचलीसेनासचाल : निलिपदमअगारहकै
सचाल : एकक्रोधमात्रअंतरजुआर : पुरअवधिसुनदीआसपाइ
सुतबाग बिबिधिबनिसुषदसंग : अवलोकतउद्दीपनअनंग : त
बआएअजोध्यापुरीतीर : बंदनकृतपुनिरागमनबीर ॥ छंद ॥ ऐ
षरीसगुनतएरघुनाथहिसोई : जाकेमनसुतअछाहोई : पुरपेठत
दहनहिसिपायो : आननअसनगरुउठिआयो : आएकलसस
मुषमिलिअैसे : जुवतिगानमंगलसुतजैसे : छिरकीगलीसुगंध
सुहाई : अतिसोभाजितनितअधिकाई : छबिबढिहटपटअवछा
रे : बारबारसोगंधबिथारे : बंदनमालाय हयहबांधे : सबेसम
गलसमयेसांधे : तोरनधजापताकाअंकित : जनअवलोकिहरष
बढिजितनित : उजलधवलउतंगअवासनि : प्रतियहअछबि
अतुलप्रकासनि : पुरमहकस्योप्रवेसरसपति : जथाजोगिसुर
पूजासाजित : द्वारद्वारप्रतिनेहिषावहि : प्रभुसनमाननगर
जनपावहि : ग्रहग्रहसोधसोधचढिगाएत : बिनतासुरंगअ
बीरउगावत : पुहपबृष्टिराघवरथऊपर : करतपसारिपसा

रिकमलकर: घरघरबजतबधाईअतिघन मिलिनारीनरमोद
महामन छिनतिहिगगनबिमाननिछये अमरसमूहअवधिपुर
आये ब्योमनगरबाजेबहुबाजत गहरअसाढसघनसेगाजत
बिबुधबृंदकुसमावलिबरषत हसतपरसपरसुरत्रीयहरष
क इहिछबिराजद्वारप्रभुआये बिनतामंगलसबधाये बिधि
नुतपूजिद्वारकृतबंदन कसौप्रवेसजुअसुरनिकंदन ॥छंद
पधरी॥ परब्रह्मराजमंदिरप्रवेस आनंदतएत्रयपुरअसेस क
पिनालउचितनेरूपकीन निसेषबिलोकतसुषनवीन अव
धेससंगमंदिरहिआइ बैठेजुरामपरिषदबनाइ आदरहिजथा
क्रमबैठिआनि बानरनररकसनालबानि मंत्रीसुमंतहिआदि
मोह सबकरतराजकारिजससोह पुनिजननीअंतहपुरपधा
रि कुलदेवनिपूजिहेतकारि ॥श्रीरामबाच॥ दहा॥ इहाअनंत
सुमंतकहि आपदीनोएकु सबासुग्रीवहिआदिसुष केरा
सबकहिदेहुधा ॥छंद उधोर॥ हेकवरपरममग्रेह सबसोजस
हतसनेह जहाराषीयेकपिराज सनमानसहतसमाज ॥छं
दपधरी॥ सुनग्रेहतरतपरिकरसमेत सोदेहुलंकपतिसहत
हेत पुनिजथपजथनिजथजोग पुररषिकरहुसेवाप्रयोग
छंदउधोराकबिरु॥ सुग्रीवसहतसमाज रथरोहराकसराज
प्रभुबिनयआपापार अतिहरषकरेनिआर कपिनालनेरतिक
ज करजोरिकहिसराज जिहिजथामनसुषजोग प्रतिआय
नगतिसंजोग प्रभुआतसुनतप्रबीन दैमानआपादीन लहि
जथाआदरलोक उचितअपनेओक इहामातअहअवधेस पुनि
करेमध्यप्रवेस ॥छंद हेअबरी॥ क्रमजुतजननिहिबंदनकीनें रा
मसप्रेमलाइउरलीनें बधूसमेतनिकरबेसारे आनिआनिन
बछावरिवारे आनंदसलिलनयननरिआये पुत्रमिलेतनमन
सुषपाये पेयहबुधिकवनकबिपाई बिहतमिलनसुषदेखब
तई ॥ दहा॥ इहारामगृहसुषउचित सानुजकरतबिलास
सक्रजथासुरलोकसुन बिनताबसनसुबास ॥१॥ कलहजुरा
वनरामको ताकीप्रेरनकिन्नि करुनाजुतमनबचक्रमनु न
रजोपदिहैनित्ति ॥२॥ लिषैसुनैबाचैनियत कहुसुनवैको

र॥ बिजय बिभूति बिसुधमति हरिप्रसाद तिहि होइ॥३॥ अवर
हि देव उपासना कारन बिषय बिसारि ताते नर हर राम कहु सास
उ सास संसारि॥४॥ तेकी नैन बन बन अकृत जो कछु जानअजा
न कहत बिजय रघुनाथ को कै है नास निदान॥ कबित्त सि
षनाग कुल सिरोमनि तनबर तिमेरत हो सघन तेल मिलि सि
धु जोति बाद सदिन सजहो कोलक मम आधार भामत बच
क सुधारीय नयन बात संताव प्रगट निसि दिवस प्रचारीय
आकास असित कजल अषिल केबीजरत पतंग कुल काकुसथ
राम नर हर सुकहि नव प्रताप दीपक अतुल॥५॥ सवैया॥ मथामृ
ग मारि मोष्यो बालि सो बली बिदोष्यो सुग्रीव संतोष्यो अंगद
हि अपनाए है पार बार मार्यो सेत बांधि राम सेतु रथाप्यो सुकही
संताप्यो देव दुंदुभी दिवाये है रावन सबंस मार्यो कारी छंन सो
उधार्यो पृथी चारटार्यो तव बृत सुष पाये है लंक गढ़ लीनो
दीन बिभीषन सो पिदीनो अवधे सरामयो अवधि पुर आए है
॥६॥ कबित्त॥ कबित॥ सबल राम रावन संग्राम चित कित्त बिचा
रहि सारद निगम गनेस सेस धरि ध्यान उधारहि कलपको
टि अमकरहि पार तर पिन हो पावहि सुन हिजथा यथ निसुने
र गुन मानुष गावहि मैं कलो जु कछु अनुसार मति साधसु
कबि पंकित सुनहु करजोरि जोरि नर हर कहति गुरु तुम सुहि
सिष करि गिनहु॥७॥ कलह कित्तिकाकुसथ कहन मन सा
हस करयो आपस कति उनमान अगम कारन अनुसरयो
आकरषन जो उकि अकास मसका अस्मास्पो उदयि तिरन
नर कर उगार पुरुष तप्रकास्पो करुना प्रसाद गुरदेव के हिति
हित मारग लहो रघुपति बिलास रन बीररस है कछु कबि न
र हर कहे॥८॥ इति श्री चतुर बीसत श्री अवतार चरित्र नाम
बारहट नर हर दास न बिरचित॥ इति लंका कांड सपूरन॥
॥ श्रीरामो जयति॥ अथ
उत्तर कांड बरनजो॥ कबित्त॥ महा॥ ॥१॥
अब उत्तर आरंभयो राजतिलक रस रीति पृथी रहा धरम पन
पुर बासनि की प्रीति॥१॥ कबित्त॥ महा द्विजन सनमान रा

ज सिरछत्रधारीय। पारबीररनजयप्रसाद उरहरषबधारीय।
लवनासुरबधबिहल पुत्रलवकुसउतपनै। प्रगटभावपसुप
ति करमहयमेदसुकिनै। कुलराजबरषदससहसकृत अषि
लअवधिपुरउधरीय। कीरतिपुनीतिरघुपतिकहन कबिउत
रआरंभकीय॥ कबित्त॥ दूहा॥ सतसुरपतिकेसीसना बैठे
रामबिचित्र। बंधवमरकटभालबनि राकसमंत्रीमित्र॥१॥
द्विजबसिष्टजुरआदि दै बामदेवजाबालि। बालमीकगोतम
बिमल आइप्रेमप्रतिपालि॥२॥ छंद पधरी॥ कस्यिअगसति
भृगु अत्रिब्यास अंगिरा कपिल द्विज दुरबास मुनि बिस्व
मित्र परबत सपेषि इत्यादिआदिरिषबरअसेष उठिदयेर
मआदरअनंत सोबैठिजथाक्रमपरमसंत॥ दूहा॥ पारसम
यपरिषदप्रसिध पुनिआयेसप्रमान चारनसिधजुचतुरबि
त गुनगंधरबसगान॥१॥ अथ राम नाम अधिकारपना॥ स
त्रघ्न बाच॥ दूहा॥ सत्रघ्नप्रछिबसिष्टसों सनामधसानं
द रामरामयहनामको कहियेमहतमुनिंद॥ बसिष्ट बा
च॥ यहपितासोंमेप्रसन कीनोंहोइककाल प्रानीकोउधारय
र देहुबताइदयाल॥१॥ छंद द्वेअषरी॥ जोगजग्यकीसकति
नजाकें तीरथगमनदाननहीताकें पुरनिगुरगम्यगपातनहीपा
यो नदकतफिरेकुसंगभ्रमायो बिनुबलउदिमदीनबिचारे
तोप्रभुताकोंकोनिसतारो॥ ब्रह्म बाच यहजुगबीतेकलिज
ग्रेहैं तबसबसाधनसिधसेहैं करिहैबिप्रसरूकीक
रनी बारबिषमसुहिजातनबरनी॥ दूहा॥ नवचदिहैकलि
जुगनरन बिनसैबेदबिचार धरमहोहिसबछिनधर सीद
हिसाधससार॥ कबित्त॥ निगमपुराननिदान जबैनिरमू
लनसैहैं कृतद्विजगोअधिकार महततीरथमिटिजैहैं तप
सासंजमनियम आनआसपमुकहि बरनधरमकुलकृत
बिधान चतुराअमचुकहि इत्यादिकरमबसकालके जगनि
सेषबिनिजाइहैं कलिकेवलरघुनाथकहि प्राठपरमपदप
इहौं॥१॥ जदिनआनतपजापनियमदानननसेवौ पित

मातसेवाप्रकार: पुनि भोजनपेबो: सतसंगतिसेवानसाथ: अथासुतल
छन: नगति नावपोरुषप्रताव मानेनमूलमन: सांचोबिस्वासनरह
रसुकबि तबसबकाजसुधारिहैं: करुनानिधानरघुरामको ऐसो
नामउधारिहैं ॥ छंदहै अषरी कहिहैसुनिहोहितचितकोई है
द्विजवाग्रेतिजकिनहोई: इहनबरनअबरनबिचारो: पसुपंछीअ
गजगरुउचारो: कुंजरकवननेमहतकीनो: देवआहअहमोषजुदी
नो: कहासरटअजगरकीकरनी: बिदुषपुरानतिनकुगतिबरनी॥
अनामेलकोकरमअराध्यो: सुतहितनामभरतजोसाध्यो: करम
अहलाअनुचितकीनो: देवताहिताकोपदहीनो: गनिकाकहोक
हाजसगायो: निसिकेजागेपापनसायो: ब्याधकरमकीकोनबम
ही: प्रभुकेहतेपरमगतिपाई: कीरकहासाधनधोकीनो: देवक
गेताजलतरिदीनो: दुष्टकबंधकवनसुषदीनो: करहतकरिगध
रबजुकीनो: पुनिग्रीधहिकिहितलषदायो: लिप्तकुधिरतिहिप्रभु
उरलायो: कुंतकरनषलमागतकेवा: दईदेवगतिताकुदेवा: क
रकरावनदुष्टत्रिलोकी: बिधिताकीतवकृतिबिलोकी: जगतउ
धारनामसोईजानहु: बारबारछलछाडिबषानहु: गनिमनबाचराम
गुनगावै: पतितसुपेपूरनपदपावै॥ दो॥ रामनामपीयूषरस: प्र
गटजुबेदपुरान: ताकोनेदसुततयुन: जानतसंतुसुजान॥१॥ प
डमरनकासीपुरी: जीवकिऊकतजोग: हरताकहउपदेसिहैं: प्रभु
कोनामप्रयोग॥२॥ प्रानीकहिहैहेतपर: मरतरामयहनाम: पापी
महापुनीतपै: मोषलहैहरिधाम॥३॥ इतिरामनामअधिकार॥ अथ
दानाधिकारप्रश्न॥ श्रीरामबाच॥ दो॥ नारदाजसोतगतिजु
त: यहपूछीरघुराइ: कहियेपवितदानकी: जैसीबेदबताइ॥१॥
नारदाजबाच॥ पापकरेप्रानीपुहवि: जोकछुजानअजान: तुमि
हनगोचरगत: पावैनासनिदान॥ कबित्त॥ जव अगुल इक
मुष्टिअगुलचवमरीय षटमुष्टीकरइक सप्तकरदंडअषमीय
मुषत्रिसतदंडमान गोचरमगिनजय: रसगोचरमप्रमान त
मिद्विजदीनजुदिजय: तिहिचरममात्रमहिदानतें: होइनबिप
तिबिष्मादबस सोलहेस्वरगनरहरसुकबि जगनरहेउजलसु
जस॥१॥ दो॥ देवजुषोडसआदिदै: करियतदानअनेक: हेष्टथी
समकोनही: बचतबेदबिबेक॥१॥ दानसकलफलदातहै: षेत्र

पात्रहिनदेखि। पैसबतेपूरनपुरुष। बसुधादानबिसेषि॥१॥तातेतुमर
घुकुलतिलक। दानरूमिकोदेहु। लिखेपुरानजुगतलो। अहायपुनि
सुयेहु॥३॥पात्र कदान॥ आतमपरदत्ताअवनि। हरेजुकाहुहेतु। ता
कैपापप्रभावको। लाभनरकपरिलेत॥४॥अवनीपतिआपात्रनय। प
तियाहकदेतपः कुलतिनसातहुकुनिके। पुरुषलुगतहिपाप॥५॥ष
थीउहिकप्रलोकके। बाढतपापबिधान। ताकेमोचनजतनतहां। नि
गमनिकहेनिदान॥६॥अबलोअतुलअनरथयह। किहुनृपतिनहीकी
न। प्रायाश्चितताप्रगट। बेदबतारनदीन॥७॥अथउत्तमादि कदान
उत्तम मध्य कनिष्ठअरु। देवअफलजेदान। सोसुनियेअवथेसअव
निरलायकहतनिदान॥८॥ द्विजअहजोअचितदिन। पूजिजथाबि
धिपाइ। जोकछुदीजेसकतिजुत। उत्तमदानकहाइ॥९॥पात्रआनिग्र
हआपने। समयसहतसनमान। करेजुहितचितनावकरि। देवमध्य
सोदान॥१०॥कीनेजोचमाकछु। दयोजुपात्रहिदान। ताकहकहत
कनिष्टतब। दृथीनाथप्रमान॥११॥कीनेसेवाकष्टके। पात्रदानजो
पाइ। तातेयहेत्रिलोकपति। कृतहेअफलकहाइ॥१२॥सातिकराजस
तामसी। तिथ त्रय बिधि हेदान। आदिमध्यअवसानलो। पुनिसो
सुनहुप्रमान॥१३॥अथ त्रिबिधिदान प्रकार॥ जोरिगाबित्रीयस
जुगति। पढिबिधिमंत्रप्रयोग। अपनेकरदीजेउचित। सातिकदानस
जोग॥१४॥कछुजदीजतअप्पकर। मानिपात्रसनमान। आलसवापेस्व
र्थते। देवसुराजसदान॥१५॥पात्रअनादरहितरहत। हेकछुदीजतजा
हि। धरमसुजसहितहीनबिधि। तामसजानहुताहि॥ अधनेईमि
लनिसदान॥ कारनकिबानियमकरि। हेतमहीपतिदान। निगमक
हतनैमितिते। देवअधिकनिसदान॥१७॥ पात्रअनादरहितरहत
दानपिछानिनहेत। जसताकोनहिबदतजग। महिमाधरमसमेत
॥१८॥अथअकाम सकाम॥ सो र गा॥देवउभयबिधिदान। हेबै
रततसंसारमह। निगमनिकलोनिदान। इकअकामसकामइक
॥१९॥त्यागिधरमकेहेत। समरपबताइअकाससो। तेकछुइहानदे
त। लहतसुपेपरलोकफल॥२०॥करिमनइछाकोइ। काहुकारनह
नकीय। जगसकामयहजोइ। याकोफलबिलसतरहो॥२१॥इहा
॥ कहीजथाबिधिदानको। नारदाजरिषराइ

मातसेवाप्रकार: पुनि बोजनपेबो: सतसंगतिसेवानसाध: अथासुतल
छन: नगति नावपोरुषप्रभाव मानेनमूलमन सांचोबिस्वासनरह
रसुकवि तबसबकाजसुधारिहैं: करुनानिधानरघुरामको एक
नामउधारिहैं ॥ छंद ॥ अबरी कहिहैसुनि हो हितचितकोई हैं
द्विजवाग्रतिजकिनहोई: इहनबरनअबरनबिचारो: पसुपंछीअ
गजगइउचारो: कुंजरकवननेमरतकीनो: देवआहअहमोषजुदी
नो: कहासरटअजगरकीकरनी: बिदुषपुरानतिनकुगतिबरनी॥
अजामेलकोकरमअराध्यो: सुतहितनाममरतजोसाध्यो: करम
अहलाअनुचितकीनो: देवताहिताकोपदहीनो: गनिकाकहोक
हाजसगायो: निसिकेजागेपापनसायो: ब्याधकरमकीकोनबरु
ही: प्रभुकेहतेपरमगतिपाई: कीरकहासाधनधोकीनो: देवक
गेनाजलतरिदीनो: दुष्टकबंधकवनसुषदीनो: करहतकरिगध
रबजुकीनो: पुनिग्रीधहिकिहितनपदायो: लिप्तरुधिरतिहिप्रभु
उरलायो: कुंतकरनषलमागतकेवा: दईदेवगतिताकुदेवा: क
रकरावनदुष्टत्रिलोकी: बिधिताकीनवरुतिबिलोकी: जगतउ
धारनामसोईजानहु: बारबारछलछांडिबषानहु: गहिमनबाचराम
गुनगावे: पतितसुपेपूरनपदपावे॥ ॥ रामनामपीयूषरस: प्र
गटजुबेदपुरान: ताकोनेदसुतनगुन: जानतसंभुसुजान॥१॥ पा
हमरनकासीपुरी: जीवकिऊहतजोग: हरताकहउपदेसिहै: प्रभु
कोनामप्रयोग॥२॥ प्रानीकहिहैहेतपर: मरतरामयहनाम: पापी
महापुनीतपे: मोषलहैहरिधाम॥३॥ इतिरामनामअधिकार॥ अथ
दानाधिकारप्रश्न॥ श्रीरामबाच॥ ॥ नारदराजसीतगतिजु
त: यहपूछीरघुराइ: कहियेपवितदानकी: जैसीबेदबताइ॥१॥
नारदराजबाच॥ पापकरेप्रानीपुहवि: जोकछुजानअजान: नमि
दानगोचमगत: पावेनासनिदान॥ कबित्त॥ जब अंगुल इक
मुष्टिअंगुलचवमकीय: षटमुष्टीकरइक: सप्तकरइअषमीय:
मुषत्रिसतइकमान: गोचरमगिनजय: इसगोचरमप्रमान: न
मिद्विजदीनजुदिजय: तिहिचरममात्रमहिदानते: होइनबिप
तिबिष्मादबस: सोलहेस्वरगनरहसुकबि: जगतरहेउजलसु
जस॥१॥ ॥ देवजुषोडसआदिदे: करियतदानअनेक: हेपृथ्वी
समकोनही: बंचतबेदबिबेक॥१॥ दानसकलफलदातहै: षेत्र

पात्रहिनदेषि । पैसबतेपूरनपुरुष: बसुधादानबिसेषि॥१॥तातितुमर
धुकुलतिलक: दानरूमिकेदेऊ: लिभेपुरानजुगतलो: अहयपुनि
सुयेऊ॥३॥पा त कदा न॥ आतमपरदत्ताअवनि: हरेजुकाहूहित: त
केपापप्रभावको: लाभनरकपरिलेता॥४॥अवनीपतिआपाअनय: प
तिआहकदेतापः कुलतिनसातउऊनिके: पुरुषजुगतहिपाप॥५॥ष
थीउदिकप्रलोककके: बहुतपापबिधान: ताकेमोचनजतनतहां: नि
गमनिकहेनिदान॥६॥अबलोअतुलअनरथयह: किऊरूपतिनहीकी
न: प्रायाश्चिततातिप्रगट: बेदबतारनदीन॥७॥अथ उत्तमादि कदान
उत्तम मध्य कनिष्ठअरु: देवअफलजेदाम: सोसुनियेअवधेसअव
निरलयकहतनिदान॥८॥ द्विजअहजोरअचितदिन: पूजिजथाबि
धिपाइ: जोकछुदीजेसकतिजुत: उत्तमदानकहाइ॥९॥पात्रआनिग्र
हआपने: समयसहतसनमान: करेजुहितचितनावकरि: देवमध्य
सोदान॥१०॥कीनेजाचनाकछु दयोजुपात्रहिदान: ताकहकहत
कनिष्टतब: पृथीनाथप्रमान॥११॥कीनेसेवाकष्टके पात्रदानजो
पाइ: तातेयहेत्रिलोकपति: कृतहैअफलकहाइ॥१२॥सातिकराजस
तामसी: नियत्रय बिधि हैदान: आदिमध्यअवसानलो: पुनिसो
सुनऊप्रमान॥१३॥अथ त्रिबिधिदान प्रकार॥ जोरिगोत्रीयस
जुगति: पढि बिधिमंत्रप्रयोग अपनेकरदीजेउचित: सातिकदानस
जोग॥१४॥कछुजदीजतअमकर: मानिपात्रसनमान आलसवायेस्व
र्थते: देवसुराजसदान॥१५॥पात्रअनादरहितरहत: हैकछुदीजतजा
हि: धरमसुजसहितहीनबिधि: तामसजानऊताहि॥ अथनेईमि
त्तनिमित्तदान॥ कारनकिबानियमकरि: देतमहीपतिदान: निगमक
हतनैमितिते: देवअधिकनिमित्तदान॥१७॥ पात्रअनादरहितरहत
दानपिछानिनहेत: जसताकेनहिबढतजग: महिमाधरमसमेत
॥१८॥अथ अकाम स कामा॥सो र गा॥देवउभयबिधिदान: हैवे
रततसंसारमह: निगमनिकलोनिदान: एकअकामसकामएक
॥१९॥त्यागिधरमकेहेतु समरपवताअकाससो: तेकछुरहानदे
त: लहतसुपैपरलोकफला॥२०॥करिमनइछाकोइ: काऊकारनह
नकीय: जगसकामयहजोइ: याकोफलबिलसतरहो॥२१॥रहा

तोषअति: सुनिश्रीरामसुनाइ॥ २२॥ इति दोहा प्रकार श्रीरा
रा॥ राज्याभिषेक॥ कबि रुबाच॥ छंद॥ मुनिबसिष्टदेवगप
मिलि: सुभलछनदिनसाधि: धरीलगनपंचागसुध: उतम
रहतउपाधि॥१॥ द्विजसबहिनआग्याद्दई: सुनियेभरतस
जोन: रामतिलकअभषेककौ: परिकरकरुप्रमान॥२॥ मंत्री
राजसुमंतसौ: कलेभरतसुभकाज: करियेरघुबरतिलक
म: सकलसमंगलसाज॥३॥ भरत सुग्रीव सुमंत समा: मिलि
अंगदहनुमान: जामवंतजथपजथजय: कृतउरिमकल्यान॥४॥
छंद॥ दोहा॥ इहाकपिनालकपीसपगये जेबलबुधिउचितउर
आये: सबसरितासागरजलसंगम: समदीपमृत्सकामहातम॥
सरबअरिमनिधातजथासुभ: देवबृक्षपल्लवफलतुरलभ: पत्र
अटारभारबनपावन: मिलिपंचागजथामनभावन: सबतीरथ
केनीरसकारन: आनेतारकनकघटअनगन: औषधमूलीउचि
तअसेषित: दिब्यबुसतजेबिहतबिसेषित: अतिहीरामभगति
कपिआतुर: बसतषोजिबनबनपतनपुर: उतमबुसतसरब
लेआये जेबसिष्टगुरमंत्रबताये जथाअंगनषसिषरोमनिजु
त आनेसियचरमत्रयअद्भुत: बिधिबतचतुरदंतसितबार
न: गुंजतमत्तकपोलमधुपगन: सुभलछनतनबरनसुहाये: बा
जिउतंगसुराजिबनाये: ऊमरिकोगसमयसिधिआये बिहत
बिचत्रसुपीठिबनाए: कंन्याषोडसबिप्रकुमारी: स्वरनाभूषन
रतन सिंगारी: प्रतिग्रहधजापताकातोरन: बंदनमालबिचित्रप
त्रबन: कलसकनकग्रहग्रहप्रतिकीने: नगमनिजटितजुकवच
नवीने: किनरगंधरबगानिरत्सकर: आनिमिलेमंगलमयु
अवसर: बिहतबितानिसानसुबाजत: गहरमनऊनाऊबय
नगाजत: हयगयरथपयदलअनगानहि: पूरनमिलिचतुरंग
प्रमानहि: सुरमंदिरसबपूजिसजाये महिमाषेटकदेवमनाए
॥छंद॥ चौ॥ ग्रहग्रहपुरमंगलजुवतिगान: बाजित्र बिबिध
बाधेबितान: मूलाग्रसहतकुसपत्रमोलि: तुलसिकपत्रतरु
तरलकेलि: त्रयतीसकोटिइहाअमरआइ: छबिअमितबिमा
न निगगनछाइ: अपछरानलउछाहअंग: आकासरचेनाटक

अनंग: सबनऐ आनि संनारसिय: प्रभुतिलकसमय घटिकाप्र
सिध॥ अथ तिलक॥ तहासुनगहेमसालपुनीत: बैठे बसिष्ठरि
षबर बिनीत: करिहरषजथाक्रमतिलककाज: सुनदेहधारिसु
रगनसमाज॥ ६॥ रामतिलकआनंदउर: सुरकपिनरतनसा
जि जहजंगमनवनृतजे: बिधिक्रमजथाबिराजि॥ १॥ छंदपधरी॥
ऊबरिकेपीनिबेदिआए: औषधीसकलजलसोंअन्हाए: सुनमंजन
कीनोरामसीत: परिधानबसनभूषनपुनीत: अपरसहोममंडलहि
आए: बिधिजुकतसमयभूषनबनाए: सिंघासनदसरथनृपतिसा
ज: कनकमनिरतनमयतिलककाज: बनिबैठेरघुपतिसीयाबो
म: कारुन्यरूपरतिमनकुकाम: कृतकुंकुमअगनिदीपतिसकाज: सि
थसमयसाजिगुरमुनिसमाज॥ छंदद्वैअमरी॥ रिषबरबेदमंत्र
उचारे: बिबिधिबिधानहोमबिसतारे: देवजथाक्रमआहुतिदे
नी: कारनउचितजुपूजाकीनी: सांषोचारपढेबिधिसंजुत: सबे
बसिष्ठगुरब्रह्मासुत: कस्योबसिष्ठतिलकसुनकारन: रामचंद्र
मसतकबिजईरन: मरकतमनिथालमुकतागन: मनुजलबि
दपत्रगतपुरवनि: सोरहकन्यासहतसवासनि: तहाआरतीक
तअहवातनि: इहांगुरबधूअरुधतिआई: करीआरतीपूजापाई:
आइजननिसबप्रेमअधीनी: देषितिलकसुनआसिषदीनी: पुनि
मातासबग्रेहपधारी: करतिगानजुवतीसुनकारी: नरतलभनभ
रिधनत्रयलाई: राजतिलककीनोरघुराई: इष्टदेवकेमंदिरआए
राजतिलकपायेरघुराये: कुलदेवीमंदिरहितकारन: प्रभुकीनो
जुतहोमजुकतपन: ससत्रअसत्रपूजातहासाजी: बिधिवतपूजि
जुरथगजबाजी: इहांप्रभुराजसभामहआये: बैठेसिंघासनहि
बनाये: तहासुग्रीवबिभीषनअतिहित: जामवंतअंगदसमहर
जित: जूथपहनूमानसमजेते: तिलककरेदेषतसुषतेते: र
घुबंसीनरपतिजेराजा: करेतिलकमिलिमंत्रसकाजा: बरन
चारिप्रभुचरननुबंदित: आनितिलककीनोआनंदित: पर
आसनदरसप्रभुपाये: औदरलहिआनंदउपजाये: होततिल
कदुंदुभिहरषे: बिबुधनिबिजयपुहपनतबरषे: बसुधा
गगननिसांनसुबाजे: गिरकंदरप्रतिधुनिमिलिगाजे: बाजे
घरघरनगरबधाये: प्रभुअनेकमहासुषपाये॥ अथ दो

॥ नियमसबोमपूजिपदगुरगन: प्रथमहिकरेमनोरथपूरन: नगर
सप्तसतसासनकीनें: देवउदिककरिबिप्रनिदीनें: सुरनीलछसुअन
सिंगारी: उदिकजुकतबिप्रनिअवधारी: अस्वद्विरदरथमनिआभूषन
ऊरनसत्रपरबरअनगन: अनसंष्यातरोप्यकृतअरपन: बिसतकोटि
कनकमुद्रातन: दसतसहस्रचारिगुनअतिबल: हेतद्विजनदीनेस
जुतहल: नावसहतजोजिहिमनभाए: प्रभुअभिलाषसकलसुषपा
ये: इथीचक्रजाचकजनपूरन: याहीसमयदानकृतऊरन: सेतछ
त्रसुतकनकदंडकरि: सोभितअतिठालरिमुकतासरि: सत्रयनल
येछत्रसोईसोहत: मनुपावसकेजलदबिमोहत: बिमलचमरसुभ्री
वबिभीषन: दारतदुकुदिसिमहामोदमन: दरपनलेजुवराजदि
षावत: बिभिनुतलछमनपानषवावत: जामबतनलनीलजथा
क्रम: हनुमंतादिसेवजुतसंजम: बेत्रपानिदिगपालबिचक्षन: अ
ग्यानरतकृतकृतअनअन ॥ ६ ॥ आनंदेसुरऋषिअभिलस
मयबिलोकिसुनाइ: करजोरेअसतुतिकृत: प्रेममगनसुषपा
ग ॥ ७ ॥ अथ अस्तुति कबित्त ॥ तुमहीमहाअजाद: बिस्वकोहि
तबिसतारीय: सोपेटरतअसेष: धरमकारनतनधारीय: रजस
तमसत्रिगुन: आपइछाउपजाये: इकतेरूपअनेक: बरनलछन
जुबनाये: अद्भुतअनंतमायाअतुल: रामदेवप्रभुरावरी: सुररहे
नलितामहसकल: कहुनसोपेबसकरी ॥ ८ ॥ रजगुनतेतुमराम:
नमेबिधिसृष्टिबनाई: सततेबिष्नुसरूप: बिबिधिकृतपोष
बढाई: तामसगुनत्रिपुरारि: बेषसंघितजुबिनासीय: आदि
नमध्यनअंत: ऐकतुमहीअबिनासीय: अनबिद्यअनोपमअसह
अति: रघुबरछायारावरी: करनीदुरंतकारनकर: उरधारीसोई
अनुसरी ॥ ९ ॥ माधवतुमजगमांझ: जगततुमहीमहजोनी: च
रिषानिरकवीसचोक: नवनतप्रमानी: जथाकुंनसंतजलसंजो
ग: प्रतिबिंबप्रकासत: प्रगटचंदप्रतिमाप्रमान: आनआन
सत: घटनष्टहोतमहिनारमिलि: कालकालबिसेषबस: संबंध
रहतनरहरसुकबि: सुपेऐकआकाससमि ॥ १० ॥ तुमहीआदिबरा
ह: अषिलअवनीउधारीय: सकरसूपबेदनिसहाइ: षलसंष

संघारीय कमग पीविकारन्प: महामंदिरजन्त्रमायो: सुधाकलिमथि पी
रसिंधु अमरनिअचवायो: नरसिंघफारि थंतानिकसि रनहिरनाकु
समारियो: बैरारिअकबालकअवल अरुप्रह्लादउधारियो॥२॥ब
मनतनबिसतरयो बांधिबलिदेतबिगोयो: बिप्रराम्रकवीसवार पत्र
कुलघोयो: रामतुमहीसंन्यासरूप रनरावनमारयो: इहिओसरक
उतअसेष धरधरमउधारयो: द्वैकलतुमहीकृजबिहरिहो हरि
कंसासरमारिहो: कलिअंतकलिकअवतारकरि सबेअसुरसंघा
रिहो॥३॥इ हा रामभिरतमरजादमहि करतसरूपअनेक सिधि
नयेनरहरसुकबि तुमतोएकहीएक॥४॥अलबाच॥कबितान
गतिअमनजुनाव तिलकउछवगुनकृततव सुनेलियेबांचेस
प्रेम रनबिजईरायव लोकबिधेलहिलोक सकलसंतानसु
संपति अयुकिनिउहिमअमेय मनसाबिसुधमति अधसेम
तनरहरसुकबि अहीजनीकोउगाइहै तेईसाधअबारितलाभ
तव अनुप्रसादतेपाइहैं॥५॥इहा करुनानिधितवनगतिकरि प
वनपंथपुनीत तातिदुखसागरतिरत नवनवसंतअनीत॥६
तिअलु सतूनि ॥ अथइंद्रिकअमरसकृतिछंदचेताल॥
जयरामदेवजुदेवरहक अवनिरनरतनअवतरे रनमारिदुष्ट
मदंधरावन हेतसुरनुवनरहरे जयनिराकारनिरंहनिरगुन
निकटनितनिरंजने जयसकृतिकायसुसकतिसंगुत वरन
नीलयनायने तवमायथावसवहिनिरंतर नागसुरअसुरा
नरा नवनूतनावनवप्रनावन चारिवरनचराचरा तत्र
मतनिसिदिनदुखतांजन करमवसगुनकालक जगदीसनि
रप्रसादजगती जनमुकतनवजालक संसरनासकुष्टअ
सुर नगतद्वेषीअघतरे रनमारिहमदंधतसुरावन अवि
तपापीउधरे मुनित्रीयापदरजपरसपावन नरपतिननना
वती सिलरेहवजिगोविंदगुनगुनि गई निजपदगावती॥
बिधिसंतुअमरसुरेसवंदित चरनजेसचराचरा धजव
जअंकुसपदमअंकित तवमोमिनरेसरा बंदनरुअवनि
सकंटकरकर दिवसनिसिनिरंजनेय अनुनमनआन

मृगनिपाछे ईसरहतबुपानये मषनाग अमरनिरयेमाधव गंधहार
सुहमग्रहे मिलिबिबिधरसबसहवनसुरमुष रिष्टपुष्टसदारहे मष
करेबाधअसेषदसमुष नागबरजितहमनये अबपारसोईतवक्त
हपूरन मानजुतकरुनामए सुषहरेजिहिलंकेसराकस देवहमन
येदीन रनमारिचेरुप्रचंडरावन निषलनिरनयकीन तजिआसअ
वरउहाससबते हेतनवगुनगावही प्रभुनामनगतिप्रतापपूरन
परमपदसोईपावही॥॥ दो॥ प्रभुयहमोगतबाधिपन नयेबिबु
धबरुनाग कीनोदरसनताप्रकृत अबचरननिअनुराग॥ इति
इंद्रादिदेवस्तुति अथ रिषिसतुति॥ छंद घेअषरी॥ रामनमा
मिस्यामतनसुंदर नीलकमलदलबरनदेहनर रामनमामिदुष्टद
लदषन राजितअंगअंगआभूषन रामनमामिसिंघासनराजि
त बामअंगजानकीबिराजित॥ छंदप धरी॥ तुमआदिमधअ
वसानएक आकाररहितमायाअनेक दुसाधिसुरासुरहुदुरंत अ
षिलेसरतवमायाअनंत तुमतिहिअलिप्तमायाउदार इंछासुकरत
लीलाअपार तुमअसअवनिअवतारलेत हरिसंकरसहतजुदीनहे
त अनादिकअषदआपअंस प्रभुअजेहेतमायाप्रसंस उदधिजसमि
हरअनिलआप मिलिपोषकरमहिमाअमाप नोजनहितप्रानीनहि
मिरूप पाचकप्रसिधहुतवहसरूप जलआवकसोषकरिनि
जाल भवभूतहेतदिनकरतुवाल सूरतनप्रताधेरजसुनाव प्रा
नीजुबहतसोईप्रभुप्रताव बिधिबिष्नुरुद्रतवतनबिनेद सेस
रचतपालतसछेद मिलिकालकरमग्रहनिसामान मिहिरससि
भूतआयुषप्रमान तुममीनरूपकीनोमहंत उधरिबेदआनेअ
नंत यहबेदधरमहैअषिलअधीन महिकंधोप्रगटतनहैवमीन
प्रभुधरमहेतुमहीप्रमान आधारउपाजककोउनआन॥ दो
॥ तवमायाप्रेरितअगम नहीजानतअपान भवतानेभूलेभ्र
मत हेतवभूततयानि॥॥ दिग्पतिसतीकबित॥ दिगर
हाहिनदेव हमहिदिगपतिपदहीनो जथानीतिबिबहरजो
ग कृतउचितजुकीनो करमदुष्टलकेसपाप जबकरतपया
नो तुवनछांहिरसदिससतीत नवपुरतनगानो काकु
सथरामनरहहकरि जगअजीतराकसजये सबटरेसालनर

वेदस्रोहजरपवनि आयोसहतजहाहः
हरषबियादजोमध्यहीमेः हितहिगनीरप्रवाहः।।
हरसुकवि आजअकंटकहमनए।। अथ वेद सतृति।। कबित्त।।
दहा।। हरेहमहिहवहेहः दुष्टसंघासुरदारन नष्टजपधरधरम ब्रह्म
हिगमूदबिचारनः जग्यहोमजपजोग बिप्रबिद्यासबिनासी। द्विजपी
येसूद्रतं होतजितहीतिनहासी बिब्रहरचलतनहीबेदबिधि दहा
बिरंचिचिंतसोचअति कीनीपुकारकारनकरन त्राहित्राहित्रयले
कपति।।१।। धरमसहाइकधरउधार प्रतिकलपनिकीनेः दुष्टिदे
बिजनदीन देवनिरनयपदहीनेः नयेमहातनमीन अषिलगत
निगमउधारे करमहमकबादि बिबुधहितजगतबिधारे क
रुनानिधानबिधिबेदके दुसहसलससयहमनः संत्रितसह
इनरहरसुकबि रामजयतिसीतारमना।२।। अथ जक्ष सतृति।। ज
हबाचा। हतेजुबाहकतारहमः रावनकेघररामः निद्रानेननि
सेनतिसि सुषनहीतोजननाम।।१।। सतयरहेहहिदुष्टसो प्रति
छंनकंपतप्रानः सोरावनमास्योसकुल नरतनकृपानिधान।।
।।२।। मुकतनतयेदुषजालहमः टरेसबेनयतापः नयोजहमंकल
अनय प्रभुरघुनाथप्रतापः।।३।। पितरसतृति कबित्त।। गया
अधकृतकुंभ करतजोमनुजउचितकमः अन पिंड तिलउदिक
हमकबादिलहतहम सुपेअसुरहससीस बाधकीनेंजुकर
मबलः दलकुलजुतरघुदेव षेतमास्योसुमहाषलः हमपितरले
कसुषपाइहेः कृपात्रिभरघुराइके आनंदपितरगनउचरे करु
नांबचनसुनाइके।।१।। गध रंब सतृति।। दहा।। कृतेनिपुनसं
गीतहमः गावतनिसिगुनग्रामः आनंदामृतपूरिउर रामतिह
रिनाम।।१।। दुष्टदसननकरदुसह कलिनयेदुषनाजः गाव
कलासांगीतगतिः आईसवसुधिआज।।२।। गं सतृति।। सीस
तपेतुवनारसोः पीडितनयेजुप्रासः कलोमहोरगजोरिकर दुस
हटरेदुषदापा।३।। रथी सतृति।। सुरनीरूपबसंधराः करिहि
तप्रनप्रतिकीनः महानारटरिअसुरमृतः देवअनयमहिदीन
।।४।। पसुपहीनवंनतपुनिः जेजकजंगमजंतः कंटकमास्योस
हतकुल टास्योदुषदुरंत।।५।। अथ सिव सतृति।। छंदत्रो
टक।। जयरामअनाहिअनंतरयं अनबिद्य अषंकअजंअन
यं निरलेपनिरंजननिरंजनयं अवलोकनतत्रहिगंजनयं

निरनीतनिरामयधरमनिधे वपुनेदसिवेनहरेनबिधे अघमत्तम
तंगमृगेसमहा प्रणितारतिपातकपुंजपहा नवसागरतारनपोतन
ये जगती अघदुष्टसमूहजये अननीतिनिसासजनानिरये महि
जसुताहितअरकमयं अघपुंजअंधारनिवारनयं अनघंकसुजोति
सुदीपकयं अघअरनवहेतसुमेरहरे इंद्रादिकनावदरीउबरे
नवनामउपाइनआनतहो जनआसितआमयपापजहो बनप
पबिनासकृतासबिनो घनपातकघातनबातप्रनो नवमंगलरे
खपुंजनये जलधारनिवारनरामजये बिषीयाकृषिउतरबात
बहे दलकूपलसेअतिलाषदहे रबिकोटिप्रभासुप्रतापरजे
नगवंतअनंतजुसंतनजे बिधिकोटिनवंरचनारचने जमको
टिबिनासकबेरजने बलकोटिप्रभंजनरामबली थितकोटिसु
रसबिलासथली गंभीरथकोटिसमुद्रगने ब्रह्मंडजुबिग्रहको
टिबने महिषंमाकोटिकमोहमने मिलिसोनाकोटितनमदने
पदतीरथकोटिसुपापपहा मिलिसंगतरंगजुगंगमहा हयमेदसु
रोरवकोटिहरं कलपतरकोटिनासिधकरं गनिकामदकोटिककं
मगवे चिंतामनिकोटिजुबेदचवे रघुरामअकामजुरामरसे बिप
हासमबेतवचितबसे रघुबीरसधीरजुतगतिरये नवसागरपार
सुसाधतये परसेपदपारसप्रेममये नवभूतकजोनिसुजोनिन
ये जगपावकपातकरापदजे असुरासुरबंदितसंतुअजे नवहे
तनहाउतपतिनई मरकनिमूरतिपुनिमई श्रुतकुंडलसीसकि
रीटसजे भुजबामसकांससबामतजे कमलारतलोचनकार
नयं मुखबाचसुधासमसतिमयं पटपीतबिसालसरीरबने त
डितघनमानहुसोनसनें करिषंग बिजैजमदादकसी लील
दिसिबामजुचरमलसी सुतनालजुजाजुपचाननसे कटिसिंघ
अनंगनिषंगकसे करकंजमहाधनुबानधरे कृतमानहुकामुअ
भ्यासकरे क्रोधानलराकसजूथजरे हितदेवनमामिनमामिहरे
हरिबीसभुजादससीसहयो नवनीतसनीतअनीतनयो महा
राकसरावनषेतमस्यो तवरामकृपानुवनारस्यो कृतरे हनरेसहि
नेसकुले असुरेसअसेसजुमानमिले प्रथेसनरेसहिनेसप्रना
नुवनेसबिसेसनरेससना॥ श्री सिद्धयंथ फलाकबिताराम
तिलकउछवरसाल सुनिपढेसुनावे पुराकलपकृतपाप निषलछ

नमाऊनसबै: संपति बिजयसमेत आयुआरोगिअनंदित सब
दिवसतुष्टबसमहहोइसुबंदित बंधमपिपुत्रपावैबिनीत पतिसुहाग
पदपाइहै: अरथासमेतनरसुकबि हैतरामगुनगाइहै॥२॥ अर
थधरमअरुकाम मोछिबेछजुकरैमन रहसिरामसुनिरीझि रासि
कबाचैपारायन उरबिसुधसुबिअंग नियमजुतरहैनिरंतर जती
हतीसंजमी अहीबिषईबिरागवर कृतबिजयरामनृपतातिलक
जोमनबाचसंभारिहै निश्चैनरेसहसरथसुतन तिहिअवधेसउ
धारिहै॥३॥ दोहा॥ कृतरघुपतिअभिषेककौ क्रमसरघाजुतकोइ
सुनैसुनावैप्रेमसों हितबांछितफलहोइ॥४॥ सोपावैसुषसंपदा
आयुरबलजसआप भरतरामकोबांममुष प्रगटैनजनृप्रताप
बिषईबिरकतनबबस रामरूपउरराषि साधैरोकनबसुगम
सुषपावैसुरसाषि॥५॥ प्रभुतवनगतिप्रतापतैं कासीबसिनिक
म सबप्राननिपरबोधिहो रामतिहारोनाम॥६॥ सोरघ्रा राम
रामयहमंत्र चतुरअहरतारकअतुल सीतबंधुतसतंत्र अंतक
लेउपदेसिकै॥७॥ दोहा॥ करिदरसननृपतातिलक संतुगये केला
स जिनहिरामरसरूपकौ सबबिधिउरबिसवास॥८॥ कबितार
हाअवधिपुरआर निषलत्रयलोकनिवासी देवमहोछवतिलकदे
षि अतिनगतिउपासी चारनसिधप्रसिध गीतहितबिरदजुगाये
सुरनिबरषिनभसुमन बिजयनीसानबजाये पायेनिकंटकआप
पद क्रमअहअहमंगलकरै कृतबिजयकहतनरहरसुकबि स
बसबथानकसंचरै॥९॥ अथबीरजयप्रसादप्राप्त॥ अथबे
हुगमन॥ श्रीरामबाच॥ दोहा॥ कस्योहिबसषटमासकौ प्रभु
कपिजनकीप्रीति सेवाफलपावतसकल राजनीतियहरीति॥१॥
रामकहतकपिराजसों सुनियेसषासुजान मेरेकीनिकाजतुम
केतिककरौबषान॥२॥ ममहितसुषअहसंपदा सोसबतजसु
नाइ क्रममनबचसेबाकरी अंगदजुधजयपाइ॥३॥ छंदप
धरी॥ कबिकहबाच॥ पहरारसबनिजषनप्रमान धरिपानिसी
सकरुनानिधान अरपीकुमेरमालाजुआनि प्रभुदरीरीलिसुंदरी
वपानि॥५॥ दोहा॥ अंगदकपिकरुआपने अंगदरदयेअनंत हि
तबकतअतिबलहरी सेवकपरमसुसंत॥७॥ छंदप धरी॥ मुनि
अंगदमसतकदयोपानि जयवंतजोधअतिबलीजानि कीने
जुबिराकपिमहाकार जुवराजकिंधाकरुजार

सहतअहजाकुबीर सुषसमयजोगबिलसकुसरीर किकुकालक
रुतयनहिनकोइ हमकृपाबसकुनिरसंकहोइ सुनतारारीमाहे
सनाथ सीयबरिचली नरतारसाथ ॥ दहा॥ जामवंतदेआदिजे
जूथपजूथसुजानि सबनिदये भूषनसमजि प्रभुबकुसुहित्रिप्रमा
नि॥१॥ छंदपधरी॥ सनमानजथाजूथपसजूथ बरबीरचलेबान
रबिरूथ जरजीरनबिजईजामवंत सनमानकस्योसोबिदासंत॥
दहा॥ देवबिभीषनकहंदये आभूषनसबअंग पुनिकीनीमनुह
रिप्रभु पूरनप्रेमप्रसंग॥१॥ छंदपधरी॥ अवधेसचितेलकेसओ
र कहिकृपाबचनदसरथकिसोर हितसहतबिभीषनअहजा
इ सुषलंकतजकुसंपतिसुनाइ कुलउचितकरकुकमजुकतकाज
राकसदलसंजुतत्रिकुटराज मतकरकुसंकके उचितमाह छित
पालकुतवममछत्रछाह करिअतयबिभीषनबिदाकीन देवाधि
देवसिरछत्रदीन नरपतिनिष्पादनिजसषाजानि पहराइसभूष
नआपपानि गृहिराजबालसेवकबिचारि उरलाइउचितबचन
निउचारि आग्यायहदीनीअवधिईस महियेहजाइसुगतकुमहीस
सुषपाइचलकुपुनिहमहिसंग अवकछुककालबिलसकुअनंग
कबिकु॥ सबहिनकेकरिकरिसमाधान प्रभुकरेबिदापूरनप्र
मान नरतादिकमिलिरयुबीरत्रात पुहचाइप्रगटबिनयबिष्मा
त॥ दहा॥ केकंधाजुवराजजुत इहाकपिराजाआइ बिजईजू
थपजूथकपि सबअहगयेसुनाइ॥१॥ पाइअकंटकराजपुर
आइबिभीषनअहि परजागतसंपतिप्रभू बिलसतसहतसने
हा॥२॥ मांगिनदिजआसामुषी प्रभुप्रसादसबपाइ जाकेजीय
बंछितजथा आदरसहतअघाइ॥३॥ रामचितेहनुमंततन पूर
नकृपाप्रचार बरमांगकुबंछितबिहत मारुतिजोमनमानि॥
॥४॥ देवनिजोप्रभुताकुलत तीनलोककीलेकु सबबिधिमारु
तिसंतसुष सुगतकुसहतसनेह॥५॥ मारुतिकहिहनुमंत
सजोरिकर पूरनब्रह्म हमपुनीत बिस्वंभर ममजीयबसकु सानु
जसंजुतसीता॥६॥ नेनदरसमुषरामरट हितमुहित्रिप्तनहोइ
यहमेरअभिलाषउर संतततकरियेसोइ॥७॥ रविमंडलजोजो
रिध्र रामतिहरोनाम मेरोतनतोलोअमर करकुसपूरनकी

म॥ कबित्त॥ पीयदीनो सीतहिप्रथम: हितमुकताफलहार: नै
नसैनकृतजानकी: अग्पारामउदार॥१॥ सीताहारउतारिसो प
हरायो निजपानि: हेतसहतहनुमंतकहि: जनितधरममत
जानि॥२॥ सीता बाच॥ कहसीयासुनिपुत्रकपि: जहरहिहि
सुखजोग: जरामरनबरजितसजय: नवमनवंछितभोग॥३॥
श्रीरामबाच॥ अग्पादीनीरामयह: तपकरियेहिमवंत: त
केफलनुगतकुअतुल: मनबंछितहनुमंत॥४॥ अथश्रीराम
राज्यप्रताप महिमाबरननं॥ कबित्तबाच॥ कबित्त॥
सिंघासनदसरथनरेस रघुराम बिराजित: सयनबरनत
नसाम: तडितपटपीतसुछाजित: अजाकोटिदिनकरप्रताप: ससि
कोटिसुसीतल: मदनकोटिसोभामहीप: बाढति प्रतिपलपल: राज
धिराजरविवंसरवि: बिस्वरीसममउरबसकु: करजोरिकहतनरह
रसुकवि: रूपअनूपमद्रिगरसकु॥१॥ सुतनसोकसंताप: पुत्रपि
तनगतिपरायन: आलब्याधबेधब: जगतनयचोरचटजन: अहि
तसोकअनकालअंत: करप्रेतनकरुन: रिपुअनरथनयरहत: सक
लकुलचलतसुनाइन: चवबरनचारिआश्रमअचल: ऐकधरमहत
आचरत: बानीबिचित्रबाचासहत: रामराजजनुअनुसरत॥२॥
फूलफलतनलबाग: बिचित्रबटरितहिबिराजित: सुरलिद्रुमधव
कअवत: सिंघगजबयरनसाजित: सरसरितासंततसनीर: सा
रसिजसरसावहि: सदामतमातंग: पापफलपापीपावहि: मोच
नरकमानुजमांतनी: बालकगुरसज्यागमन नवनहिअनय
हालिद्रनय: राजरामसीतारमना॥३॥ त्रिविधि रोग: कफ: वा
त: पितसबरहितप्रानसुष: तीनतापनहीतहो: देहनुतिकेह
विकदुष: समप्रीतिसंजोग: मिलनसलनासुषमूया: चक्रअप
पस्चक: अतिहिबरषाअनबर्षी: गनिधरमअरथअरुकामगति
सामनसाधसधीरके: सुषबसतलोकबरजितबिसन: कृप
राज्यरघुबीरके॥४॥ जरामरनजमजाल: नियुतसपनेनयनो
ही: संपतिबिद्यासरूप: सबोबिलसतसदनोही: धुजा: कंप
चकीबिजोग: हितकी: चितचोरी: बयमुगधाअनुनवबिहीन
नामनिमतिजोरी: निरदईपलासीजंतनित: येकसरबनर्ष
अनल: सकमारिसारिचोगनसिर: रोघघावघगसी

सबलसरिसबलसाज बिबिधिसरबापीबधन : कसाधानयहकरनबि
षममुकताउरबेधन आतपत्रहिटदेह राहअगरहिगहिहिजय वचन
निगुरनबिषम फलुनिरलजफिरजय करियेकरएकअलेषके लोल
धरममनलेषये बिद्याबिबादबानी बिबुध रामराजअवरषये ॥४॥
सहजबातसंत्रमी रमतहोरादिनगारी सनिसदनसंचार महाछल
कृतमंजारी स्वरनतेरकहीसुनार नरछायानिंदित सहजबक्रगति
सर्प त्रिषाग्रहुरचितकचित बिपरीतअंकमुद्रबिहत बिद्याबिस
नबधारीये बारनबिसेषअकुसबहत हगिजवामहहारीये ॥५॥स
घनकालरुचिअवहि निषलनुवअननिरंतर : बहहिबिबिधिसुष
भात मगरचवबरनपुनिपर : नृपतिनीतिअनुसरत : सकलबिधिसा
नकूलसुर जथासुरालयकाल प्रजापतनपुर : पतिबृतानारिपति
प्रेमपन : येकनारिबृतपतिअषिल : काकुसथराजनर हरसुकहि
आहिचित्रप्रतिमाअमिल ॥६॥ गमननीचपथनीर बधुजदालिरद
याबिनु : कामनिकुटिलकराछि बिषमअषलगजबंधन : सप्तद
पनवषरु बसीपृथीधनपूरन पुनिचलेचकुपाइ अषिलजये च
जाचिकऊरन करुनानिधानरघुरामकै कृतराजबरननकरे : सु
नमुकतिजाचिनरहरसुकबि आपकरमकृतउधरे ॥७॥ जयतिरामरा
जेस महारघुबंसहमंडन जयतिरामराजेस थगराकसकुलषंड
न जयतिरामराजेस बिजयपंजरसरनाई : जयतिरामराजेस स
हासुरसाधसहाई जयरामराजराजेसवर बसतलोकत्रयबाहु
बल, जयरामसुकबिनरहरसरन : तरनहेतरहिचरनतल ॥८॥ पृथीक
रिपचास मेरमरजादामंडित महाउदधिमेषला : षानिचरअचरअषंड
त आनंदितदिगदेव दसकुदिसिकूणनडोलत : बरषहिपुहुपबरसे
ष बिबुधजयजयनतबोलत नवषंडमंडनुवबेनरहि तपप्रताप
दिनकरतवे अवधेसराजमहिमाअतुल एकछत्रमहिभुगवे ॥९॥स
बे या ॥ इंद्रकेबिलाससुषबासमतानआवे संपदाकुबेरसतस
मनसुनाइकी कोटिकोटिनासकर पूरनप्रतापपुंज पुनिजल
चलेयहमहिमाजुपाइकी पूरनजगतिकबिनरहरदानपायो चे
पबदीसुजसकहनचितचाइकी सातदीपसांतोसिंधुमध्यबासी
द्वारसेवे ऐसीरजधानीमानीरामरघुराइकी ॥१०॥ कीयबर्णन
नरहरसुकबि सकतिजथामतिसंग : सेषसहसजुगजीहसो आर

नलहतअनंग॥७॥ अथ चरतप्रसन॥श्रीरामपानेपदेस नो॥कं
बित॥ ऐकसमयऐकांतरामबैठेरघुराजा॥ ऐकचरतइहिसमय संगसे
वकनसमाजा॥ तहलोछिकोतन चरतपूछोमनतायेरामहृदयग
तजोरहिसि बिधुजुकतबतायेरअधारबिस्वनासकअखिल प्रगटउ
दयरविप्रातके ग्यानोपदेसअगमोगौप्रकासउरप्रातके॥ अथ
अनाधलक्षन प्रछ तिन रतजी॥ श्रीरामप्रति॥ हहासाधअ
साधजुसहजहीं बिधिजुतदेतबताइ नेरयहेपूछोतरत रामचंद्र
रघुराई॥७॥अथ साध लछ नरा मबाच॥ कोऊसतुतिनि
दाकरऊ जिनकेसबेसमानउपजेहरषनरोषउर तेप्रांतीमम
प्रानप्रा॥संतनिकेलछनसुनऊ सीतलसरलसुभाव प्रेमपराय
नतगविपर परहितबचनप्रमान॥छंद॥ऐअषरी॥कलिकुपु
रुषबचननहिभाषहि रामचरनचितनिसचलराषहि परदुष
दुषीसुषीपरसंपति अवराकिनिसुनिबिरसहिअतिअति परन
द्यानहिमुषहिप्रकासत तनमनसुधकुसंगहित्रासत परदारापरद्र
व्यपरामुष सबरकहहिपरमारथकेसुष पापहिबरजितधरमपरा
यन निसचयऐकनगतिनारायन लाभहानिकछुचितनलेषे परब्र
हममयबिस्वसंपषे पगबढ़ेजोधरमप्रबोधे बयरकरेतासनबिरो
धे साधसदासबहिनसुषदाई पावहिदुषसुनिबिपतिपराई
सत्रुअजातसाचकेसंगी परउपगारीपुनिप्रसंगी आपतिरेअरु
अवरहितारे ऐसेईमुषतेबचनउचारे जोकोउआरसंगअनुसर
हीं काउनावज्योपरहिकरहीं अवगुनकीनेगुनहिउपाजत लषि
कोउनिलजआपअतिलाजत जसप्राप्तजीयअतिहितजानत प
नुबिस्वासजुसत्यप्रमानत परसुषसुषपरदुषहिदुषारे परअ
पबादमूकपरप्यारे जथालाभसंपतिसुषजानैं परत्रीयमातस
मानप्रमानैं गिनहिसदासमअसतुतिगारी करनचंदनजथाकुगरी
बहुकारेजडमूलनसावे बहलेधरसुगंधबसावे चंदतिलकदेवनि
कोचंदन यरियतदाहिकुंदनअहरनिघन पावेसाधसदाउतमपद
दुसटदुसहदुषसेवहिदुरमद नयबरजितअरुविषयबिरागी अम
रषक्रोधरहतनिसतागी कामनक्रोधमोहमदमाया अहंकारत्रिस
नउपाया सीतसरलतासमदमसंजम आस्रितनीतिअघंतितआत
म हिंसाबिसनरहितहितकारी संतनिकेगुनरतेसंतारी सामतजन
रतसदासुसंगी अहमितिरहतअकामअनंगी तेनरसुष दाऊ

पतिसरपमुष बिषअपार पेपानजुकरिये हितप्रहार सुनबसनछि
रस्त्रीसंजोग पुनिकरतताग टंकनप्रयोग जारीयतअगरलेअ
गनिज्वाल तउउपजतसोयातातकाल षनिपेलि जुदहीयतई
षदंड अतिहितमधुररसतउअषंड कृतदाहकनकज्वालाकर
ल नउबढतबानमहिमाबिसाल करिबेधनमुकताफलहिके
र हितकंगनषनतदपिहेर बकुजंतबनोरचदिबिसाल ब
पुदंकतदपिबासनबिसाल बिषिजुकतबतायेसमृतबेद न
वनतजुदुष्टदुष्टबेद इत्यादिबतायेप्रतुअनंत श्रीमुषसुन
बअनसंतसंत ॥ दोहा ॥ दुरजनबुरेदुजीहते बिषबादेपयपान
कुचपरीधरीजलोकजो पीयेरुधिरप्रवान ॥ ॥ अथ रामराज
नीतिधर्म बर्नन ॥ संन्यासीस्वानप्रसंग ॥ कबिरुबाच ॥ दोहा ॥
ब्रह्मसंन्यासीजातहो मगमहसोयोस्वान ताहिप्रहास्योदेख
तिहि अनकारनअग्यानु ॥१॥ बिकलतयोतिहिचेटबपु कूक
रकरतपुकार बरिपरिक्रमतत्रमतपे दुषितआरन्पद्वार ॥
समहिकुजीवनसंचरे देवनृपतिगुरद्वार दुषजुतगादोमरि
ते प्रतुसोकरतपुकार ॥२॥ स्वान बाच ॥ सोवतलोकनचि
तसब ऐकतरोसेआप जागतजोअहनिसिसजय पृथीनाथ
प्रताप ॥४॥ श्रीराम बाच ॥ हीनस्वानजानेदुषित लीनोमध्य
बुलाइ अगमकारनआपनो कहियेस्वानसुनाइ ॥ स्वान
बाच ॥ पुरसंन्यासीतनपुष्ट बिचरतनोजनबार राजरामके
नयरहित बरजितबयरबिकार ॥६॥ ऊसोवतबाजारमह
बसनिप्रअबिचार कारनबिनुमोकरयो पापीदंडप्रहार ॥७॥
कबिरुबाच ॥ छंद पद्धरी ॥ प्रतुयहसुनतहीमतपगयो आ
तुरतपसीकहलेआयो ॥ श्रीराम ॥ तुरबिरकतनहीधरमबि
चारयो स्वानबिनाअपराधप्रहारयो ॥ संन्यासीबाच ॥ सुनि
यहफेरिकलोतिहितापस बासुरसंध्याकृतोषुध्यावस यातो
अतिकुजातजुआतुर कीनोसयनपंथमहकुकर यामसिंघ
मेंचितबिचारयो पेताकेतयस्वानप्रहारयो ॥ श्रीराम बाच ॥
संन्यासीतुमअमिलकहीसब येनप्रमानबातमानेअब मा
रगासिंघषुध्याअरुतयमन येतेतापसकहअपलछन नीति
रामरकयहेसुनाई रहिबिधितोतापसअन्याई ॥ बासिष्ट

बोल्यो॥ इहा असिष्ट बोलेगुरबानी॥ बेदबिदितनृपनीतिबखानी॥ देहिकर
द्विजहिनहिदीजे॥ कूकरकहेसुतोअबकीजे॥ सभासद॥ दूहा॥ नी
तिप्रबोधककष्टद्विज॥ सोतिनपूछोस्वान॥ याकहंरुजुउचितअ
ब॥ पैसोईकरोप्रमान॥ स्वान बाच॥ तपसकीजैमरुपती॥ हितमेरो
नबहोइ॥ कूकरयहतिनसोकहो॥ करोबिचारनकोइ॥ कबिकाक
पैपीतपरिधानपट॥ पुनिगजचढिपुहुचाइ॥ कीनोंमरुपतिसंजुको॥ सं
मासीसुषपाइ॥३॥ गयोसिद्धालयतापसी॥ गीतसहतत्रीयगान॥ त ह
करेआनंदजुत॥ पूजासरुप्रमान॥४॥ देवालयकोद्विज द्विज॥ स
बेषाइबिसेष॥ तातेद्विजप्रसादतिहि॥ अतिसुषबढ्योअसेष॥५॥
काहुलिनेनद्विजकरि॥ नेनछये धनछाक॥ तिनप्रमानेजानेजग
त॥ देसबजीयहुकाक॥६॥ छंद॥ देखअरी॥ अबिरज परमसभासदपा
यो॥ बकुरिस्वानसोईबेगिबुलायो॥ सभासद॥ हमहिसमझियह
पेकछुनाही॥ स्वानतोहिपूछतसदनाही॥ द्विजकहंजोमरुपतिपद
दीनो॥ निग्रहकियुअनुग्रहकीनो॥ स्वान उ॥ स्वानकसोसुनिये
अबसांची॥ कहिकुआदिअंतनहीकाची॥ द्विजकनोजरेकरेवालय
अमितउतगमेषलाअतिसय॥ ऐकबिप्रताकोअधिकारी॥ बिमलच
तुरतुजदेबबिहारी॥ अवनीसुरजबहीकोउआवे॥ बागेबीरदेवबन
बे॥ आजपुरुषबीयकोरनआई॥ जटिदेवालयउगियरिजाई॥ नाव
हीनसोपूजप्रकासे॥ सेवाफलतदपिनहीनासे॥ मनउपराजितधन
अनमानें॥ धनपात्रनोजगसबजानें॥ मेरोपितापरीसाताको॥ स
धसुनावजगतहितजाको॥ वाकेऐकपाकुनोआयो॥ निमिधिमग
तिहिपाकबनायो॥ लीनोंमेरोबाप बुलाई॥ पाकनिपुनिकीनोपरु
साई॥ ताकेघरकोछोलघिताही॥ ममपितनबनिअंसरहिमो
ही॥ नहारहलकरिपितुघरआयो॥ अतिअघोरुसनमुषधायो॥
लाडकरतमोहिगोदीलीनों॥ मधनातबेलातरिदीनों॥ मरोउ
समेरुधनषायो॥ सोपितुअंगुरीमेलिसिरायो॥ पियरोषत
तबनषतपपायो॥ वाकोअसरुधमहुआयो॥ वहपेपीरुअधि
कअघनों॥ जोनिअनीकनजीसनजानों॥ ताहीपापस्वानतनपा
यो॥ अबकिछुनागिअजोधपआयो॥ कछुअपराधइतोनहीकी
नो॥ दंडअधिकमेतपसीहिदीनों॥ अबसोमरुकेद्विजअयेहै
पुनिकलपांतनियतपदपैहै॥ दूहा॥ अनमरीअनंतो॥

तातेग्यातअग्यात: कीजेपरसनअगनिकै: तदपिजरावेगाता॥२॥कै
अनमगेसकै: करिहैतहनकेर: इतचंद्रायनकरिसबिधि: हेत
यतोहोइ॥३॥परसैजोद्विजमरुपतिह: ततोसचैलसनांन: कर
धरमनितनेमकी: पावेसुधिप्रमांन॥४॥पत्रपुहपजलफल
ल: दिब्यअनमगदेव: उसहनरकइकवीसद्विज: सोपरिकरिहैं
व॥५॥देवमहेसहिआदिहै: हरेजुकालहेत: लानअथोगतसो
है: महपुरुषनिसमेत॥६॥ राजासत्यकेत प्रस्नाहहा॥बिक
नृपकीबारता: सुनियेरामसुजान: अवधिपुरीसोबसतअब
बसकारकेबांना॥७॥ सत्यकेतनामांनृपति: तोकासीकिउक
ल: सूरप्रतापीधरमधुर: बाचासतिबिसाल॥१॥छंदपधरी॥
द्विजकस्योएकधरमाधिकार: पापीसउदिकबिनापहार: ग
निकानिदुष्टरंगसंजोग: नवकरैबिबिधिदासीनितोग: सं
कलपदिब्यमूसेअसेष: बिनदयोसुतेबिलसेबिसेष: नृपस
तिकेतदलप्रबलसाजि: बानेतबीरनीसांनबाजि: संग्रांमनि
रेहवसबलसेन: मिलिहिवससोरअधारमेन: तहागिस्योजजि
नृपसत्यकेत: मिलियारसुतसेनासमेत: संग्रामभस्योनोपे
समथ: हग्रिहेजदपिजमदूतहथ: नृपसत्यकेतसातिकसु
नाइ: जमअग्रकरेजमदूतजाइ: पूछेकृतांतआदरप्रमांन: नृप
सत्यकेतकहियेनिदांन॥८॥जम बाचा कहियेनृपतिबिचार
करि अबिलकरमकृतआप: इमहबिलसोगेकहा: पहलेपुनिक
पाप॥९॥सत्यकेत बाचा॥कीनोजममैनाहिकछु: अपनेजानिग्र
धरम: तुमहीकछुजानतततो: मोहिबतावहुतमर्म॥१०॥छंदप
धरी॥जम बाचा॥तुमकरेधरमबिप्राधिकार: संकलपदिब्यपूछी
नसार: सोबारदिब्यरंगनिसंग: अतिमनचितसियोअनंग: अध
पंथदिब्यतिहिनजोआप: सोपस्योतिहारिमूरुपाप: धनकरम
सुकलपकीन: उपजोसुपापबिप्राधीन: वहजुतोराजतुम
हीअधार: बसुनीतिकोनकीनोबिचार: जोकस्योधरमतुमचि
तजांनि: सोईपापपुंजउपजोप्रमांनि॥११॥कलिनधरमहै
राजको: दारुनषगडुधार: आलसकीनेतेअबिल: उकयोबिष
मबिकारा॥१२॥जानेकोकेतेजनम: तजेनरकतिहिरूप: अवधिपु
रीमहबसतअब: पापकोलकेरूप॥१३॥अथद्विजपुत्रजीव

तब प्रसंग॥ कवि रुवाच॥ गाथा॥ कृतजुगे वर्षकरयं: पुरुषं सत
सहस्र आवपरमानं: त्रेता अयुतजुरकं: द्वापुरे सहस्र बरषाणि॥१॥
बिहतसवासतवर्षं: कलिजुग आयु अलप बिधिकरनी: सुष दुष
जीवसमानं: जुगवेकरमतावेणि॥२॥ छंद द्वैअषरी॥ बानतएक अ
वधिपुरबासी: अषिलधरमषटकरमअभ्यासी: बहुतकुटंबमो
हअतिमानें: पोषनतरनबिसेषअमानें: बानतअरधआयुबीतिजब
ताकेताप पुत्र उपजोतब: ऐकहीपुत्र पिताअतिप्यारो: जाकेदेष
तग्रेहउजारो: सोरहसेबरषनिकोसुदर: नयोबटेसोजादिनदिन
बर: ऐकदिवसद्विजबालकअंगन: लीलाबालकरेसुचलछन
घुटरनिचलेकरैकिलकारी: मुषदेषे हरषेमहतारी: जोगदेवक
छुकहिनहीजारे: याकहंमीचअलपजोआरे: बालअकालमरे
सुतबालन: घरकेसिरपीटैरोवेघन: द्विजलेपुत्रघाटपरिकासो
आनिमृतकनृपद्वारउतासो: राजसभाबैठेरघुराई: देवरिषीसुर
तहासुषदाई: बेदबचनमुनिबिदुषबिचारहि: बिधिजुतनीति
धरमबिसतारहि: ब्रह्मादिकसुरसभाबनाई: राममध्यसो
भितरघुराई: द्विजसोमृतकलीयेनृपद्वारे: पस्योरामहारामपु
कारे॥ बिधिबाच॥ मस्योअकालबालयहमेरो: त्राहित्राहिरघु
नाथकतेरो॥ कवि क॥ आरतिबानिसुनीअवधेसर: बोलिल
योतीतरसो द्विजबर॥ द्विज बाच॥ रघुबरगो द्विज नृपद्वारे
महादुष्टइनकेहितमारे॥ कवित्त॥ बरषसहस्रदसबिहत पु
रुषआयुषपरमानें: त्रेतजुगकेअंत चरन चोथेजुगजानें: ब
यसोरहसेबरष: रमतअंगनकीऊरस: कारनकिऊअकाल
देवतोबालकालबस: पितमातकिधुयहबालक: प्रजुनिदान
कछुपाइऊ: द्विजकलोरामसोरोइदुष: हरितोमृतकजराऊ
॥१॥ कवि रुवाच॥ दूहा॥ संजुत इंद्रादिकसभा: बैठेरामबिन
त: भ्रात मित्र मंत्री सुभट: अतिसोभितअनवीत॥ श्रीरा
मो॥ कलोरामजमराजकहे: यहसबजानतआप: बालमरे
जिहिनगरमहु: सोधोकेसोपाप॥ करमपिताकेमतिकेरो
आतमकृतअसराल: कहियेसोनिरधारकरि: बालकमस्यो
अकाल॥२॥ कलोधरमतबजोरिकर: सुनियेअवधिनरेस॥

पुर जिहि साधत सूद्र तप। सो सिसु घात बिसेस॥ छंद॥ घेरि अघ॥ के
तो अंत कहो जो रेकर। यह कारन कहि कुअवधेसर। सूद्रादिक अति
जत पसाधे। धरि अभिलाष देव आराधे। करि मन मांझ कामना
कोई। हम्हि दुष साधे तापस होई। करै अधम नर सिल पर सकर।
धरम बिरुध कर मय हु उरधर। सूद्र करै तपसा तिहि घातक।
कारन यह रामा सिसु घातक॥ सहज हा बिरुधाचरन जग। पु
रति हि होत संताप। पितमाता जीवत प्रगट। पुत्र मरै कहि
पाप॥ कबिरुवाच॥ रामउरे श्रोतत सुनि। बिबुध सभा बहु रार। अ
त्वारो हित अवधिपति। आपम हा बन आइ॥ आराधत तपसा अ
गम। प्रभु तहा सूद्र जु पार। पाद पलै बित उरध पद। सिर नीचे सत
ना॥ अंगल जारे निकर मुष। धूम्र पान निरधार। नासा आनन
नेन मग। येक यहे अहारा॥ कग्नि तपसा सूद्र की। यो देषी अवधे
स। तहा पूछे प्रभु कवन ल। कृत कि हि करत कलेस॥ पा॥ सूद्र बा
हेत कि लो तिहि सूद्र हनि। साधत तप स्वछंद। देव करत दहीद
मन। अति संजुत आनंद॥ याको मसन कछे दिहा। कीनो रा
म कृपाल। ताको हंदीनी परम गति। ऐसो देव दयाल॥ जीयो त
छन बाल द्विज। सूद्र मस्यो तप सिध। आनंद सुर मुनि अषिल
प्रभु लीला जु प्रसिध॥ पा॥ अथ काक भुसुंडि कृत कोप संग
श्रीराम बाच॥ कहत राम सुनि येत रत। साथ भ्रात हित संग। सू
नवानी सो हसि। आगे कही अभंग॥ ५॥ अनंग रिसि जुत उमा। ये
क दिवस येकंत। राम चरित बरनन करत। संजुत परम हित संत॥
रुद्र बाच॥ येक कथा हे रद अति। सो येक कु सुनार। काक उपास
करा मको। संतत साध सुजार॥ कबित॥ बाइस बध बिष्पात न
यो इक काक भुसुंडी। जुग जुग हि जिहि जनम। आयु कलप अ
षंडी। राम नाम रट रसनि। नयन छबि राम निहारत। श्रवन राम
जस सुनत। चित हित राम बिचारत। मिलि तये प्रान रघुनाथ
मय। उपजि बाद अद्वैत उर। आनंद मगन बिहरत अवनि। प्रग
ट गम गम तीन पुर॥ छंद॥ कारन काक भुसुंडी। राम रू
प परसरत। सूद्र नवानी सो रहसि। बिनयो बिषय बिरत॥ ७॥
नवानी बाच॥ छंद पधरी॥ भगवती फेरि पूछो नवेस। स
देह हा मेरे सुरेस। कुकृत कुजीव कुछित कुनास। बिनु बे

रबिहंगबालकबिनास· बिहंगाधमबारसबिदितबेद· षलअष
लप्रांनद्रोहीसषेद· रघुबीरपरायनधरमरत· क्यौंहोस्कहे
कउचाकुचित· रघुनाथकथारतदिवसराति· क्यौंनयोक
हेबारसकुजाति· कहांलहोरामनामांधिकार· सोजीवन
मुकतिबिहरतसंसार· सबकालनिकटबरतीसमांन· स्वामीसोसेव
सावधांन· हरिनगतगरुड़हरिचरनहेत· बिसंभरबाहनजगबिजेत·
काकसोसंगकिहिकातिकीन· इथीसछांहिमुनिवरप्रबीन· संता
षननोहिनउचितसोर· हितकाकगरुड़किहिहेतहोर· अनगारि
असंतबकहतयेह· सुनिनाथमोहिउपजोसंदेह॥ रुद्रबाचरुह
संतुनबानीसोरहसि· उतरदीनोयेह· सुनोजथामोजिहिसमय
सबबरजितसंदेह॥१॥ आदिअंतलोरहसियह· कहिहोप्रीयेस
कांम· सुनकुंजआक्रमदेअवन· रूपचरितरघुराम॥२॥ सतीजुद
छासुननकी· उपजीतोउरआर· धंन धंन्यतुधरमधुर· संतुकहो
सुषपार॥३॥ काकनुसंगीगरुड़को· सुषदमिलनसंबाद· आरंभो
सिवकहनयह· धूरनरहितप्रमाद॥४॥ छंद पधरी॥ तुमप्रथमद
हुअरुजनमपार· सुनसतीनांमपायोसुनार· दीनीतुममोकहं
पितादांन· पुनिकियोब्याहउछवप्रमांन· सबनारनसेवासावधांन
संगरहतमोहिप्रानिसमांन· पितग्रेहजग्यतुमसोयपार· सुरज
तदेषिसुषनोसुनार· अनमोतीपितग्रहगरआप· मैबरजीतदपि
हुअमाप· सबनयोअनादरमनमलीन· दहिक्रोधानलतुमप्रांनदी
न· पुनिकुतेसंगममगनसमाज· करिकेरपजग्यबिध्वंसकाज· अतिदु
षभयोमुहिसुनतयेह· दिनरातिदहतबिरहदेह· गहराइनहि
चितकहुगेर· अनचितअसंचवनरीओर· तुमजरीक्रोधउपजो
संताप· बनबनफुरोलतदुषबिमाप· सरितासरगिरनरहछांस
ग· अतिभ्रमोबिरागीअंगअंग॥ दहा॥ उतरनागसमेरकेनील
सेलयहनांम· चारिसिषरतिहिहेमयअतिसुंदरअभिराम॥१॥ ति
नसिषरनपरचारितर· वटपीपरबिसतार· पाकरिआंबसपल्लवित· म
तभ्रमरगुंजारा॥२॥ तिनसिषरनिकेमध्यतट· सरवरसुषदसमांन·
जलअगाधविकसेजलज· प्रतिमनिमयसोपांन॥३॥ मीनकमठ
कीमकर· बिबिधिप्रकारबिहंग· बनपुहपतिचकुओरवनि· संग
तगंधसुरंग॥४॥ तरुतरलतअरुफितन· सफलसुभमयसार
बिधिअनेकतहांजंतबसि·

पुरजिहिसाधतसूरतप सोसिसुधातबिसेस॥ छंद धेश्रम॥
ताश्रंतकलोजोरेकर यहकारनकहिकुश्रवधेसर सूरादिक
नतपसाधे धरिश्रनिलाषदेवश्राराधे करिमनमांझकोमन
कोई हरिउपसाधेतापस होई करेश्रधमनरसिलापरसक
धरमबिरुधकरमयहुरधर सूरकरैतपसातिहिपातव
कारनयहेरामसिसुधातक॥ दहाजहाबिरुधाचरनजग
रतिहिहोतसताप पितमाताजीवतप्रगट पुत्रमरेकि
पाप॥ कबिरुबाच॥ रामउगे श्रोततसुनि बिबुधसनाबकुराइ श्र
त्वारोहितश्रवधिपति श्रापमहाबनश्राइ॥ श्राराधततपसाश्र
गम प्रभुतहासूरजुपार पादपलबितउरधपद सिरनीचेसत
नारा॥ मंगलजारेनिकरमुष धूम्रपाननिरधार नासाश्रानन
नेनमग येकथहेश्रहारा॥ कग्निनतपसासूरकी योदेषीश्रवधे
स तहापूछेप्रभुकवनतू कृतकिहिकरतकलेस॥ पा॥ सूरबा
॥ हेतकिलोतिहिसूरहनि साधततपस्वछंद देवकरतदेहीद
मन श्रतिसंजुतश्रानंद॥ याकोमसतकछेदिरहो कीनोरा
मकृपाल ताकहंदीनीपरमगति श्रेसीदेवदयाल॥ जीयोत
नछनबालद्विज सूरमस्योतपसिध श्रानंदेसुरमुनिश्रषिल
प्रभुलीलजुप्रसिध॥ पा॥ श्रथकाकजुसंकिग रुद्र कोप्रसंग
श्रीतमबाच॥ कहतरामसुनियेसरत साधश्रातहितसंग रुद्र
नवांनीसोरहसि श्रागेकहीश्रनंग॥ ९॥ श्रनंगारिसंजुतउमा ये
कदिवसएकंत रामचरितबरननकरत संतुपरमहितसंत॥
रुद्र बाच॥ एककथाहेरुद्रश्रति सोमेकहुसुनार काकउपास
करामको संततसाधसुनार॥ कबिताबाइसद्धबिष्पात न
श्रोइकाकजुसंकी जुगजुगादिजिहिजनम श्रायुकलपांतश्रे
षेकी रामनामरटरसनि नयनछबिरामनिहारत श्रवनराम
जसुसुनत चितहितरामबिचारत मिलिनये प्रानरघुनाथ
मय उपजिबाद श्रद्धतउर श्रानंदमगनबिहरंतश्रवनि प्रग
टगमगमतीनपुर॥ दहा॥ कारनकाकजुसंकको रामरू
परसरत्न रुद्रनवांनीसोरहसि बिनयोबिषयबिरत्न॥ १॥
नवांनीबाच॥ छंदपधरी॥ नगवतीफेरिप्रछोनवेस स
हिरहामेरेसुरेस कुकृतकुजीवकुछितकुनास बिनुबे

रबिलंगबालकबिनास· बिहंगाधमबाइसबिदितबेद: बलअब
लप्रानप्रोहीसबेद: रघुबीरपरायनधरमरत: क्योंहोइकहे
कउचाकुचित: रघुनाथकथारतदिवसराति: क्योंनयोक
होबाइसकुजाति· कहांलगोरामनामाधिकार: सोजीवन
मुकतिबिहरतसंसार· सबकालनिकटबरतीसमान· स्वामीसोसेव
सावधान: हरिनगतगरुड़हरिचरनहेत· बिस्वनरबाहनजगबिजेत·
काकसोसंगकिहिकीनि: इथीसछांहिमुनिवरप्रबीन· संग
षननाहिनउचितसोइ· हितकाकगरुड़किहिहेतहोइ· अनगारि
असंतबकहतयेह· सुनिनाथमोहिउपजोसंदेह· रुद्रबाचहह
संतुनबानीसोरहसि· उतरदीनोयेह· सुनोजथामोजिहिसमय
सबबरजितसंदेह॥१॥ आदिअंतलोरहसियह· कहिहोप्रीयेस
कांम· सुनहुजआकमदेअवन· रूपचरितरघुराम॥२॥ सतीजुइ
छासुननकी· उपजीतोउरआइ· धंन्य धंन्यतुधरमधुर· संतुकलो
सुषपाइ॥३॥ काकभुसंडीगरुड़को· सुषदमिलनसंबाद· आरंभे
सिवकहनयह· पूरनरहितप्रमाद॥४॥ छंदपधरीतुमप्रथमद
हअरुजनमपाइ· सुनसतीनांमपायोसुनाइ· दीनीतुममोकहं
पितादान· पुनिनियोबाहुउछवप्रमांन· सबनारनसेवासावधांन
संगरहतमोहिप्रानिनिसमांन· पितगेहजग्यतुमसोधपाइ· सुरज
तदेषिसुषनोसुनाइ· अनमोतीपितगहगईआप· मैबरजीतदपि
हुअमाप· सबनयोअनादरमनमलीन· दहिकोयानलतुमप्रानदी
न· पुनिकृतेसंगममगनसमाज· करिकोपजग्यबिध्वंसकाज· अतिदु
खनयोमुहिसुनतयेह· दिनरातिदहतबिरहदेह· हराइनहीं
चितकहुगेर· अनचितअसंचवनईओर· तुमजरीकोधउपजो
संताप· बनबनफुरोलतरुषबियाप· सरितासरगिरनरछासं
ग· अतिनिरमोबिरागीअंगअंग॥ दहा॥ उतरनागसुमेरकेनील
सैलयहनांम· चारिसिषरतिहिमयअतिसुंदरअभिराम॥१॥ ति
नसिषरनपरचारितर· वटपीपरबिसतार· पाकरिआंबसपल्लवित· म
तत्रमरगुंजारा॥२॥ तिनसिषरनिकेमध्यतर· सरवरसुषदसमांन·
जलअगाधबिकसेजलज· प्रतिमनिमयसोपांन॥३॥ मीनकमठ
कीमकर· बिबिधित्रकारबिहंग· बनपुहपतिचुकुओरवनि· संगु
तगंधसुरंग॥४॥ तरुतरलतअरुझितन· सुफलसुधामयस्वाद
बियेअनेकतहांजंतबसि· बरजितबयरबिबाद॥५॥ रुद्रबाच

॥छंद ॥ दोहा ॥ काकभुसुंडि बसैं तिहि कानन : सखा गिरा
सुहावन : मोह मनोज न ही मद माया : छुवै न ता हि काल की छाया
आये अंतन कलप बिती ति : जिहि मथ्यो क्रोध अवगुन जीति : तीन क
ल्प चहुँ छिनि तर हर : बाइस न गति उपासे घुवर : पीपर छाँह बै
ठि सुख पावै : ध्यान अषंड राम पद ध्यावै : पाकर हे जिग पत पा
वन : नियत करत अघ पुंज न सावन : मानसी कृत जाप मन मानी : बि
ट पआँ बत कर बिग्यानी : बट तर राम कथा बिस्तारै : तहँ जो सु
नै ता हि नि सतारै : बाइस आश्रम आनि बिहंगा : प्रति दिन सुनहिं सु
राम प्रसंगा : येक दिवस ऋति हि सिर आये : प्रगट राम जस सुनि सु
ष पाये : सुनत बिहंगम देषि सुहाई : रीझो कथा सुनत रघुराई : पु
नि कुहँ सदेह धरि पावन : बसो काल कछु पाप बिहावन : परिषद
ति हि हम बसि सुष पाये : इहा कैलास सिषर फिरि आये ॥ अथ का
कभुसुंडि रुद्र को संग ॥ बिधि जिहि काकभुसुंडि बिहंगम : मि
लि सुष सत योग रुद्र सो संगम : सुनहु प्रसंग जथा क्रम सोई : हित
जिहि राम चरन रति होई : नरतन धरे राम रघुराई : देव सुमाया प्र
बल दिषाई : त्रेता जुग महँ ओ अवतारा : अषिलेसर रघुनाथ खर
रा : आए पावित दंडक बन आये : पंचबटी बसि अति सुष पाये : त
हाँ हरी दस कंधर सीता : परम सती अति प्रेम पुनीता : इहा कपि
पद म अगार हि आये : लेर रघुनाथ लंक गढ़ लाये : दारुन जुध च
ल्यो चहुँ द्वारे : परि परि ऊँचे बीर संभारे : स्वामि हेतु दुहुँ घोर तहँ सूरे
परे असुर कपि पोरुष पूरे : या ही समय रुद्र जित आये : सुर निप
चारत निरत सवाये : नाग पासर न संग्रह नाये : बिहँसि राम ल
षमन दोऊ बाँधे : हरि सीता हर रुद्र हकारे : बिष मुष सा
ऽक्कारि बिकारे : देष्यो चरित असंत बहु सतर : अचिर जत
यो सम मातन हीउर : नयो संदेह रुद्र कहँ तारी : बिसमु
य पस्यो बिचारि बिचारी ॥ रुद्र उवाच ॥ दोहा ॥ नव बंधन
राम तजि : नये मुकत नव सूत : राम बये अहि पासरन : यह
येअगम अनूत ॥ ॥ छंद ॥ येक समय अनचिंत
आये : पुनि षगराज सुनारद पाये : मिले गरुड़ नारद मग मा
ही : नये मिलाप सहज सत नाही : सो संदेह गरुड़ नारद सं

बिधिजुतपूछेराज बिहंगम· बिस्वरामअवतारबिसेषो· देवत
हाकछूनहीदेषो· प्राकृतनरजोक्रीडापार्ई· रननुवरूफिरे
धुराई· मनअवतारहेतकिहिमांनैं· सोनारदतुमकहोसयांनै
नारदबाच॥तबमुनिपिताबिरंचिबताऐ· ग्यानवंतनिगमागम
गाये· पूछहुजाइपरमसुषपैहैं· नियतअपांनसंदेहनसैहैं· य
हगरुडबिधिलोकहिआयो· छोहबद्रौमनसंत्रमछायो· अ
हमलोकसुरसनाबनाई· देषीजाइगरुडसुषदाई· करषगेसप्र
नामसकारन· आंपापरसबेगेआसन· कहिरघुनाथप्रतापक
हांनी· गावतप्रेमसहतमुनिगांनी॥गरुडबाच॥हरारामबिलो
कैमांझरन· परेबंधेअहिपास· कारनइहअवतारको· सुपेनमो
हिबिसास॥१॥कलोषुगेसबिरंचिकहै· बिसमयचितबिभ
ट· मेरेमनसंत्रममिटै· प्रभुकेकृपाप्रसाद॥२॥बिधिबाचाहरि
बाहनबज्रनबली· साधपरमहितसुध· काकुकरमकुबुधि
यह· उपजोबेदबिरुध॥३॥कलोबिरंचिषगेसकहै· अतिसं
त्रममनयेह· ऐसीतोनाहिनउचित· साधनकेसंदेह॥४॥अ
तिबलमायाईस्वरी· अद्भुतचरितअगाध· बचेनकाकुतेबि
षम· जोअसाधजोसाध॥५॥ जतीहतीमुनिसंजमी· जोगीजग
तअजेव· सबेनचाऐकरमसंग· द्विजनरराकसदेव॥६॥ इंद्रदे
अमरी· बिहसतइहांब्रहमतबबोले· षगपतिसोमायाएनषो
लि· इहिमोकहंबकुबारनचयो· पुनिमेयाकोथाहनपायो·
बिस्वचराचरइहिनहिबांधो· नगनकरेकोकोनहनाचो· म
हमोहनीदेवीमाया· छननहीछांडतमोतनछाया· इयतरनसब
हीनिबिगोवत· द्योसनिसायाकेदुषरोवत· महापुरुषतुमकृय
हमायाः नगतमहाबलतवहिंत्रमाया· रामहिमनुजनावर
वरेषत· दीपकलेदिनकरदिनदेषत· मनत्रमजोपूछोतुमम
हीं· ताकोजतनबताउतोहीं॥ ८॥कृतमहिमांरघुनाथकेअ
तुतअगमअनंत· पावतनेदनपचिरहैं· सबेसुरासुरसंत॥१॥
तरजागसुमेरकै· परबतनीलप्रचंड· बूसतजुगंतअनेकवहि
सुषतहाकोकतुसंक॥२॥ बानिबिहंगबिहंगकी· समझे
हजसुनाइ· उनकोतुमसंदेहयहं· आपुनपूछोजाइ॥

रामप्रभावजु रूपरस : जगतरहिमनजोइ : तिनकी महिमा जेद्युन
सिवजानैकैसो ॥४॥ रघुबररूपपीयूषरस, अतिहितजनअषम
गरुवतताकेस्वादद्युन : समऊतकाकजुसंऊ ॥५॥ समाधानकरिहै
सबै : जोतुमपूछ्छुजाइ : कारनत्रमरहिहैनकछु : सुषहीमिल
तसुजाइ ॥६॥ छंद दोहा षरी ॥ बिनुसतसंगनकथाबिहंगम : जाजे
कथाबिनानमहात्रम : त्रमजागा बिनुजगतिनजावन : नहिनरा
मअनुरागउपजिमन : बिनुअनुरागनमिटैबिकारा : रहतबिका
रमुकतिषुलिहारा : जोगबिरागनग्यानबिग्यानां : सबेनाहिएक
जनसमानां ॥ ऊहा ॥ तवब्रह्मांउपदेसतै : सेवकरथहरिसंत
आश्रमकाकजुसंकिके, आयेगरुडअचिंत ॥७॥ सरवरतरगिरनी
लसिर : बैठेसजाबनाइ : काकजुसंऊअनंतकृत : गुनगावतरघुरा
इ ॥८॥ बालकजुवजुवृधवय : सकलबिहंगमसंत, काकबचन
सुनरामके, मनकमसुनतमहंत ॥९॥ छंद दोहा षरी ॥ याहीसमय
गरुडहांआये : परिषदबिहंगदेषिसुषपाये, बिहसिसजासबउठे
बिहंगम : काकजुसंकिकरेआतिथकम : आजतलगमसषगपतिआ
ये : पयोदरसपरमसुषपाये : करिहितअगतस्वागतकीनें : देषि
जथाबिधिआसनदीनें : बाइसवृधगरुडषगबानी : कारनआगम
पूछिकहानी : बिहसिगरुडमृदुबाइकबोले : षगबरअंतरजावजु
षोले ॥ गरुड ॥ उपजिसंदेहएकमेरेउर : येस्योफिरतलीयेमो
हिथरयर : पूछोमैनारदमुनिपांही : नियतसंदेहमिटोतहानां
ही : तबनारदबिधिपिताबतायो : अतिसुषब्रह्मलोकहुआयो :
कहेतहामैमनत्रमकारन : महाबिचारबिरंचिकीयोमन : दुषित
देषिमोहिआगपाहीनी : मोहिनरषगबुधिमलीनी : देवरामतुममां
नुषदेष्यो : बिसमयपातकयहेबिसेष्यो ॥ काकउ ॥ रामप्रभाव
सुनहुषगराजा : जाइकुबुधिसरैमनकाजा ॥ ऊहा ॥ रतिउपजे
रघुनाथके : चरनकवलबसिचित्त : त्रमजाजेउपजेनगति : माय
व्यापिनमित्र ॥१॥ काकजुसंकीरामके : चरितजथाक्रमचीन्ह
बेदपुरानजुबांचही : कथाप्रकाससुकीन्ह ॥ कबिरा कारनर
घुपतिजनमकी : बालचरित्रबिसेष : तीनलोकलोछत्रनप अनु

मिथिराजअसेषा॥३॥कहेजननदमकंथके:प्रथमसुतीयप्रकार:हरहा
नाथअनाथहम:अबतुम्हीआधार॥४॥श्रीन गवानोबाच॥नाषाने
नतवषना:श्रेसीनहीअरह:करुरूपसुरजालकपि-ऊंधरिऊनर
देह॥५॥कीजेयहक्रमजतनकरि:सबरावनसंघार:कारनसोकत्रिले
कको:नृमिउतारहितारह॥६॥छंदपधरी॥आजनमचरितरघुबर
अवंक:नवलगेकहनबरसतुसंक:प्रभुजात्रमात्रनोजनप्रकार:को
सल्यादेषोकृतकुमार:बिसतारबाललीलाबिसाल:दीयमातपिता
कहसुषदयाल:बिद्याबिनोदआरंतबीर:सुनससत्रअसत्रधारन
संधीर:इहिसमयेबिसवामित्रआर:संगरामलषनलीनेसहार:
अतिबलाबलाबिद्याअनंग:सीषेसोईबिसवामित्रसंग:पथजातह
नीताडकापाप:सोईनईशकसीरिषसराप:बीरासनबेठेजगपबीर:स
प्रदिनकरीरक्षासधीर:सबअसुरमारजीतेसंग्राम:बयसातबरषर
बुबसराम:आरंतधनुषमषनपअनंग:सोदेषनबिसवामित्रसं
ग:रसबीरबढउरहरषराम:सुरकाजचलेबिजईसंग्राम:आश्रम
गोतमहिआनिश्राप:सोसुनिबिलोकेषोरिषसराप:रजचरनकरि
लिहिसीसराम:धरिदेहदिब्यगईकतधाम:तबआएरामसुरसरि
ततीर:करिकृपाहकारेनावकीर:मिलदेहअहल्यातजिसकाम:
रजचरनपुरासिउधरीराम:सोचरितदेषिबषटसुताह:नजिगये
सुलेनोकालगाह:उठिगईसिलापदछअकास:उठिआएनावह
मकोनआस कोउलाएउदयकेतयेकीर:निकटतरिकेगोतआ
निनीर:रजकारिषबारेचरनराम:कृतकीरसपूरनतएकाम:बे
गरिनावरायबिनीत:पुनिसरितपारकीनेपुनीत:बिहसातहस
तमगजातबीर:करिकरिचरित्रसुधिबचनकीर:रिषसंगजनक
पुरआएराम:नव धनुषतजिसीयबरीनाम:सीताबिवाहिलछ
मीसरूप:प्रभुतजिसुरासुरगरबरूप:अरुचलेरामनीसानगाजि
संगपिताअतुलचतुरंगसाजि:इहरोकिपंथहिजरामआनि:प्रभु
मांनतेगकीनोप्रमानि:जुवराजतिलकअतबेपजोग:पुनिदस
रथकृतमंगलप्रयोग:केकईहाछलमंत्रकीन:उषपतिहरामबं
नवासदीन:रघुनाथचलेउठिछांडिराज:परजागतसंपतिसुषस
माज:सबरामलछमनसनेह:हतसीयासंगकवरीबिदेह:जब
गमनसमयकीनोजुहार:इहमात्रमंत्रहाउचार:बढिबिरह
नगरबासीबिसार:मिलिचलेरामसीयकुलमजाद:हाहार

बघरघरनगरहोइ: कारनअनरथनहिजोनिकोइ: सीयरामलषनउगि
बलिसकाज: सुरराजनयोसुरसुषसमाज: पुरसुनीजबेघरघरपुक
र अवधेसदुःषउपजेअपार: सोमित्रबोलिनृपकहिसकाम: रथजा
ऊबेगलेजहरराम: सोमित्रआनिरथसमयसंत: आरुहितसीयासु
नुजअनंत: सुनअंगमेरआएसुनाइ: इहानृपनिषादगोहमिलो
आइ: सिसिपाइ छतिहिसुषहिसाम: रहिगुहिसमेतनिहिनिसारा
म: जटजूटकरबटपयसजोग: पटपंत्रआहितपसीप्रयोग: करिक्र
पासुमित्रबिहाकीन: पटचारलएरथतजिप्रबीन: प्रभुउतरिगंग
आयेप्रीयाग: नवनूतकरतदरसनसभाग: बलिचालमीकआ
श्रमबिसाल: कीनोंतहाफलभोजनकृपाल: पुनिचित्रकूटआगम
पुनीत: बसिकछुकहिवससमलषनसीत: मंत्रीसुमंतफिरिग्रे
वधिआइ: जरिकृदयसोकनहिबोलिजाइ: प्रभुआअजबेआयो
प्रधान: रहिरामरामनृपतजेप्रान: कृतरामबिरहनृपकस्योक
ल: नावीनमिटेजोअकाल: अवधेसमरनपुरदुषअसेष: सु
नबरनिजारसुरसंतुसेष इहाजननिबधुचित्रकूटआइ: अन
धेसमरनरामहिसुनाइ: क्रमजथाबेदबिधिकीयाकीन: द्विजरा
मतिलोहिकपितहिदीन: मिलिमातनरतमंत्रीसुमंत: सबजोरिसु
करकहिसुनरसंत ॥ नतीहिकोबाचा अवधेसचलफुफिरिग्रे
हआज: रघुबंसतिलककरिअवधिराज: जगअचरकोनइहिरजजो
ग: प्रभुकरफुपृथीरछाप्रयोग: कहिरहेसबेमानीनएक: तहातजे
नहीरघुनाथरेक: पाइकादईनरतहिपुनीत: बनचलेरामसुरमु
निबिनीत: सिरधरिपावरीप्रभुसुताइ: इहानरतजुनंदीग्रामआ
इ: अत्रिअइआगमनअवधिईस: सुषमिलेमुनीसुरदेअसीस: बि
सतारगहनबनबधबिराध: सरभंगजस्योजोजोगसाध: द्विजमि
लेसुतीछनरामदेव: आएअगसतिआश्रमअजेव: रषिअगसतिके
दिवराज: सरधनुषदयेरामहिसकाज: पुनिकीनोदंडकबनप्रवेस
इहामिलिजटायुपोरुषअसेस: अवधेसपंचबटबसेआइ: बिधिजु
कतपरनसालाबनाइ: द्विजकीयसनाथसबरामदेव: अनेकम
रिआसुरअजेव: इहिसमेइंद्रकोसुतजयंत: सोकाकरूपआयोअ
संत: सरसीकमलिनिहिकृदयसाल: करिअरधअधछोरेकृपाल
पापनीनमतपदचिन्हपाइ: अवलोकेसीतारामआइ: सुपनषा

धसीसोसीयहिषोन:कटेगहिलछमननाककोन:वरदूषनराकस
सुरषेत:सोमारिलयेसेनासमेत॥छंद॥ऐअषरी॥इहाबिरूपसुपन
षाआई:दुष्टछबिरावनहिदिषाई:अरूषरदूषनमरनसुनायो:
पपीरावनअतिदुषपायो॥३॥दूहा॥कंटकसुतमारीचके:अरथनि
सागतआइ:वरदूषनकोमरनषल:सबेकसोसमझाइ॥१॥मा
यामृगमारीचमृत:बदेबिषमबिषाद:हरिछायासीताहरी:राव
नबैरबिबाद॥२॥छंद॥ऐअषरी॥पंषिजटायुपरमपदपायो:निस
चरबधसमूलनसायो:प्रेमजुकतसिवरीगतिपाई:बेदबिदि
तजोसमृतबताई:बनबनभ्रमतबिरहसीयरघुबर:सानुजस
हुकआइपेपासर:बकुरिरामनारदसंबाद:मरमबतायेधरमम
जाद:पुनिगिरमूकआगमनरघुपति:मिलिहनुमंतबसीगमह
मत:मारुतिआनिसुग्रीवमिलाए:राममित्रकीनेउरलाए:निस
चयबालिबधनबृतलीनो:देवजथाबिधिप्रसयदीनो:हनोब
लिसुग्रीवसषाहित:करअपनेदेराजतिलकहित:पायोराजकि
कंधाकपिपति:तारासहतसबेसुषसंपति:अबरघुनाथप्रबर
षनआये:छीनिबिरहपरबतसिरछाये:बसितहाबरषासरदबि
हाई:पुनिलषमनकपिलेनपगाये:अवलोकेलषमनकपेउर
कीयआगतस्वणताकपीस्वर:आनरजथपजथबुलाये:इहाअ
हसपदमजुआए:अबसुग्रीवप्रबरषनआए:लेकपिसुतदूत
मपदलाए:सीताषोजनबीरसयानें:पठयेचकुदिगंतप्रमानें
जामवंतजुवराजसमरजस:दहनहिसिपठयेजोधादिसि:इहा
किकुपरबतहनुमतआयो:पैगेबिवरनीरतहपायो:सुनिअवता
रामअवधेसर:नयोसंपातिसपंषीअवसर:इहासंपातिआ
धसुयिआई:बनअसोकमहसीयाबताई:अबकपिषारसिंधु
तटआये:तहांअपनेबलबुधिबताये:बोलोतबहनुमंतमह
बल:बेचरकितकमातएबनषल:कपितहांकोगगनअस
का:लाघिसमंदगएगंहलंका:कपिलंकामुहयापटमारी:म
सकातनयदिगयोमंझारी:आतुरअहअहकिरिअकुलायो:पु
निकपिरावनसोबतपायो:देखोआनिबिनीबनमंदिर:मोरिअ
गनतुलछीमंजर:बनअसोकमहसीयाबताई:इहाबिनीब
मिलिसुषदाई:आनिअसोकसीयाअवलोकी:सि

महाससोकी बनअसोकक पितोरिबिगास्यो मिलिरनअथेकुमारहि
मास्यो दससिरकहउपदेसजुदीनो कपिलकागद दाहनकीनो सि
धुकुदिआयोमारुतिसुत अगदादिदेखो बलअद्भुत आयेबीरज
हारघुराई बेदेहीकीकुसलबताई सजिमरकटदलसीयासुह
ई अवधेसरसागरतटआए मिलोबिभीषनबहुतमलीनो क
रसिरदेलंकापतिकीनो बनचरनिकरबारिनिधिबांध्यो सेतआ
निपरबतबहुसांध्यो सेतमूलथपिरामेसुर जिहिदरसनत्रयताप
मिटेजुर सेनअगारहपदमनिसंका लांघिसेतलागेगढलंका जु
धजेतारबाजिकोजाये इहाबसीगअगदआयो दलकपिला
गेचहुदवारा सारमारपरिसूरसंघारा राघवसजबअवसेषरहे
न बासुरफिरयोबिलोकेरावन इंद्रजीतरहाअरअचानक
जिरिकीनोसंग्रामतयानक बहुरिरामअहिपासबधाई देवजु
लीलामनुजादिषाई परअचेतसमरजुवपावन राकसदेषिह
रषतयोरावन याहीसमयगरुडतुमआये बलबिषमुषनिसे
षतषाए लागीसकतिगिरेरनलषमन प्रानप्रयानकेरपोरुषप
न इहामारुतिद्रोणगिरलाये अरीछुवतहीलषनजिवाये या
हीसमयजगायेआयो समहरहरुतकुलसवायो महाउसह
राघवसरमास्यो अरलंकताकोसिरकास्यो रोयेरहामहादुष
रावन सुरनिसालसुरराजसतावन लषियननादबिजयबृत
लीनो दुषषितकरधीरजदीनो कपटहोमकंटकसुतकीनो
देवहितेदबिभीषनदीनो पुनिलषमनरघुनाथपगयेअग
दहनूबीरसंगआये मेल्योरथहयजुकतअगनिमह तिहिषल
रदजुमंत्रजप्योतंह ॥ कवित्त ॥ हमिकीनोरथहोम अहुरिजप
जोसुमंत्रबल अगनिकुंडहयलुक जरेनिकसेज्वालानल ति
नहिदेषिहनुमंत बारिलेअनलबुझयो बिगस्यो होमबिलोकि
इंद्रजितबाहरिआयो करिसारमारासिरमरकरनि कलहम
हाहाकनकस्यो करसरप्रहारसोमित्रके महाउष्टराकसम
स्यो ॥ ७ ॥ छंद दोहे अषरी ॥ त्राताप्रत्रतनीजमहानट सरसचि
जरुरेनसंकट दाहपस्योहससिरउरदारन महासोकसोचत
नहीमन इहाषलमायाकपटउपावे जोईजोईकरेसुनि फ
जावे राकसमायारचिरचिरावन पुनिपुनिपीरेमूरुअपाव

निरायवसोंसमहर:तिरेपचरिपचारिनयंकर-कछुदि
निरंतरकीनो-दृष्टीलोकत्रयसंत्रमदीनो॥सुरबाविजूजो
रामबिलखत:मोहिंदृष्टिमहादुषपावत-प्रभुकरतरने
पावन:माधवहमथिरनाहिरहतमन:अवधिनाथउ
उतारो:महाराजदुष्टहिकिनमारो-अवनिनाररघुनाथउ
यो-मूलउषाघोरावनमाघो-बिहतलोकत्रयबजेबधाये
बिमलसुरत्रीयमिलिगाये-रावनमरनमंदोदरिरोवन-
बुधबृंदसुषराजबिभीषन:सीतारामदरसहितसजन:मु
नसरमाष्टिककीनोमंजन:कष्टोबियोगदरसप्रीयकीनो
रुनहिअगनिबदिदीनो:दृष्टासाजिपुष्पकरथआयो-
चढ़ियुनाथविमानचलायो-अनुक्रमरामअजोध्याआये
बिमलनगरत्रयबजेबधाये:मातत्रातमिलिधरधरमंगल
जेसेसफरमरतपायोजल:कमजुतजटाबिमोचनकीनें-
निजतनभूषनसजेनवीनें:बंधुबालकपिसनाबनाई-
रामचंद्रबैरेयुराई:कछोतिलकअनंतषेषराजक्रम॥
साथसकलमुनिवरगुरसंगम:नीतिधरमनृपकरमानि
रतर:बेदप्रनीतचलतसीताबर:कीनेमावस्वानदिजके
रे:नीतिधरमरघुनाथनिवेरे:निहतोसदकरततपसा
धन:बालकजोयोतिहिछिनबानन:मावपसुपषनिके
कीने:नीतिधरमप्रभुपरमनवीनें:पुनितवधरमचले
बकुपारन:सबेचलतकुलरीतिसुनारन:जनमचरित्र
अनुक्रमजेते:तुमसबसुनेकहेमैतेते:बिवरिरामक
राकवनबषानें:सहसबेदकहिथकेसयानें:जोरनमहदेवत
नजानकु-मनअवतारचरित्रनमानकु:सुपेप्रकासकरहोवगे
स्वर:ताकेतुमहिदेहिप्रतिउतर:कार्कतुसंकिकहेहुतकारन
मेतुमसोबिनयोबाचामन:नाशिउदयमनसंत्रमनागे:गस
कुपारनाइसंकेलागे-मनकेसबेअग्यानमिटाये-बारसस
प्रबोधबताये:येरघुनाथउग्रअवतारा-कयेमनुजटारनु

वनारा। नियतत्रिलोकनाथतबजानै। पूरनबेदपुरानप्रमानै।
जगतपितामहकहैनजिनके। कृतकोजानिअनुक्रमतिनके। मै
ममबुधिप्रमानप्रमानै। जगतउधारजितेकछुजानै॥ महापे
रुषरामप्रतापकौ। करेसदेहजुकोइ। आगमनैगमनिदानथे
सोपैसाधनहोइ॥१॥ उपजोमनसंदेहअति। पूरबकरमप्रस
द। मोहितयोतुमसोमिलन। बिसमयगयेबिषाद॥२॥ मा
यादासीरामकी। यहनवनूतबिगोइ। सोकाहूबसनातरी
रहेसबैरदरोइ॥३॥ निसाकरैबहुतेषनट। नाचैतैसेनाच। क
तिहिमायारामकी। सोपैदिवसकसांच॥४॥ छंदपधरी॥
बरनीनजारदेषीबिचारि। क्रीडाब्रहमादिकमोहकारि। जह
जहरामबिहरैजयंत। तहातहासंगकौलैतुरंत। जोतीसरूपत
जिकहुनजाउ। षिसिपरैरूगिलैलैसुषाउ। एकदिवसबालल
लाउदार। अवधेसकवरकीनीअपार। सोबचनमनहुरुगम
सरीर। सुधिहोतहोतपुलकतसरीर। अद्भुतचरितमायाअ
मान। ममकहहुकछुममबुधिप्रमान। पृथीपयेहअंगनपवि
त्र। चवबधूकराहिसैसवचरित्र। बिसतारबीरबालकबिनो
द। पितमातदेहिबंछितप्रमोद। घनस्यामसुतगसुंदरसरू
प। प्रतिअंगअषिलसोभाअनूप। राजीवनैनमृदुचरनराजि
चिचिचिन्हजुकुलसादिकबिराजि॥ छंदहेअषरी॥ ससि
दुतिहरितनषरअतिसोभित। ललितकरनपल्लवअतिलोभि
त। रूपररनितचारुवरजे। बिहतबीरकरिसिंघबिराजे। ना
लिगंभीरसुचिरत्रयरेषा। बिसबिमोहकरूपबिसेषा। बाहुप्रलंब
अतुलआयुतउर। सिंघनषरफूलतमोहतसुर। अरुनकंजकरत
लछबिअंसे। नषमनोजरथनोदनजैसे। ग्रीवत्रिरेषबिराजित
गाढी। करिछबिसीवामानहुकाढी। कंधबिसालमनहुबनिके
हरि। अवलोकतसकतमदगजअरि। चिबुकबिदमेचकछबि
छाई। अषिलसोकसोभाजनुआई। अरुनअधरजुगराजतअ
सि। सुतगसपक्कबिंबफलजैसे। दोइदोइदंतअरनअधकरय
बचनअमृतमोहतहैबिधिबिध। नासाबिमलकपोलबिरा
जै। स्वासबिलाससुगंधनिसाजै। सारदचंदजोहासिप्रकासै

नियतविलोकिनगतनयनासैः कमलस्तलोचनकुलकांही। मीनम
नकुउछलतजलमाही। जुगलबक्रचंचलजुवजैसैः बालमधुपमां
नकुमिलिबैसैः नालबिसालबनीछबिनारीः राजतस्यामअलकघु
घरारीः तिलकबनोगोरोचोनजैसौ। जगजनमनमोहतहैजैसौ।
लसतकुटिलभ्रुकुटीचलचंचल। मत्रचरित्रबिलोकतसतघल। प्रफु
लितबदनसरदससिसुंदरनः तेजपुंजहरससमरवितन। नीरदनी
लनवीनबरनतनः कुंचितकेससुदेससस्यामघन। राजतअंगअंग
ससिरूपन। लीलाबालबतीसैलछनः किलकिनहसनिचलनित
जिवितवनि। बचनबिलासतोतरीबोलनिः नाचतनिजप्रतिबिंब
निहारतः बालकेलिरूपअजिरबिहारतः निकटजातकुरूपनिहारत
पकरनमोकहेहाथपसारतः कुंजजिचलोधरनमोहिधावहिः हाथ
पसारहिरूपदिखावहि। आपनहसहिनिकटजबआऊं। पेरोवहिज
बमरिपलाऊं। आऊंजबपरसनपदअंबुजः लाजहिकरिकिल
कारिमहाजुज। मनुजबालजोचरितमनोहरः करहिममोसंबिन
बनकरः। महारघुबरप्रेरितरहिसमय। मायाव्यापीमोहिः नावी
बसजैसीकरैः तैसीकहुबतोहि।१।(मायाबससबमांनेई। जग
तचराचरजीव। तिहिमायाबसत्रिगुनमयः देहनअगुनदईवि।२।
रहेअबितपानजोः सबहीकैबगराइः ईस्वरजीवहिनेदतोः के
सैकैकहिजाइ।३। जेअभिमानीजीवजगः जेमायाबसमांनिः सो
मायाबसईसकेः नियतकरमगुनषांनि।४। बिनांनगतिनग
वंतकी। मुकतिहिंचाहैकेइः जेनरपूछहषांनबिनुः जदपिप
नीहेइ।५। जोषोउससंसिनतऊवहिः सबउठगनमिलिसंग
जोअनेकगिरदवजरहिः रविबिनुरजननिसंग।६। मायाभ्रा
मीमोहिजबः जांनीरामसुजांनः करतसहारजुदासकैः भ्रम
नंजननगवांन।७। छंदः जैअषा। बऊस्यौमोहिबिलोकैरघुव
रः करिकिलकारिपसार्यौनिजकरः धरनमोहिऊवरनतर
धाये। सुंदरस्यांमसरीरसुहाये। मैउठिनाप्योगगनमझारीः रं
मझालयुतुजापसारीः कुंजहांजहांउठिनतचदिहार्यौः नाथ
हाथसोतहानिहार्यौः कुंजबगयोब्रह्मपुरमांही। तउ देखे
गुलीबीचतहांही। गोअपनीगृतिलोनतगांमी। सप्नाबरन
नेदिऊस्वांमीः भ्रमतभ्रमतभयाआकुलनारी। हाबलय

औसुनऊउरगारी: जबगतिथकीआपनीजानी: मूदेनैनहरिमेमानी।
इहादेषतअवधिपुरआयो: छोहघयोमनसंभ्रमछायो: मोहिबिलोकि
राममुसकायो: उदरमांऊमेरोजीयआयो: देषोउदरमांऊब्रह्मंडे: अ
षिललोकपतिलोकअषंडे: सिवबिरंचिसूर्यससिसागर: उरगनस
रितानूमीनूथर: नांनिअनेकअष्टिनवखूता: अगनितजमसुरमुनि
अवधूता: अगनितकालकरालनागनर: चरिषांनिबिधिअष्टिचरा
चर: जोनहीदेषासुनानजांनो। बरतमांनूनवखूतबषांनो: जनमन
बचनअगोचरजोई: कहिनसकेरचनांनिहिकोई॥ दहा॥ एकए
क कचकूपमह: सतसतबरषबिहाइ: रचनांबिसअनकरंग: तहा
अवलोकिअयाइ॥ छंदूपधरी॥ प्रतिलोकलोकबिधिनिनपेषि:
हिननाथनिसाकरनिनरषि: दुनिनिनबिलसिवनिसापाल: बि
करालनिननिसचरबिताल: आसुरनरकिनरओरओर: गयेप्र
पंचसबगेरगेर: सबअंऊकोसप्रतिनिजसरूप: पुनिअवधिओर
ओरअनूप: कोसल्यादसरथअवधिराइ: सबदेषतरतादिक
सुनाइ: इहाइदेषिमेगमगम: रघुबीरनदेषेएकराम: त्रमिलोक
लोकऊसहतनीत: तहागएकलपसतएकबीति: दुवदंऊमांऊ
सबचरितदेषि: बिभ्रमेप्रदेवमायाबिसेषि॥ सो॥ दो॥ बिह
सिरामबरबीर: ऊंनिकस्योमुषऊरऊ: प्रभुजांनतपरपीर: सद
करनकारनसमथ॥ छंदूऐअषरी॥ इहाबिलोकिमोहिमुषआ
गे: लीलाबालकरनपुनिलागे: अतुलप्रतापदेषिअधिकाई: सा
निकउपजिदसाबिसराई: ऊंबिहबलऊपसोधरनियसि: त्रा
हिआहिकरिकंपप्रानत्रसि: आतुररामसोहिअवलोक्यो: क्रम
अपनीमायाबलरोक्यो: देवकमलकरममासिरदीनो: लीलाहि
त्रमसबहरिलीनो: मोहबिगतमोहिकस्योमुरारी: हितदाइकसे
बकदुषहारी: नियतदेषिप्रभुतारघुनाइक: कस्योहरषमेमन
बचकाइक: नयेनैनजलरोमउनारा: बिनयकरेबऊबारबा
रा: सहतप्रेममेसबेसुनाए: दीनदयालदयादरसाए: इहाप्र
छेप्रभुअधमउधारन: काकनुसकिमागिमनकारन: अनमाहि
कसबसिधिअनंतर: सहतनवेनिधिमोषदुलभतसुर: बिरति
ग्यानबिग्यानबिबेका: उरअभिलाषजुहोरअनेका: मांगऊको
कजपेरछामन: निहचेसबेकरूपरिप्रन॥ दहा॥ कछ

नदुरलनरामकहे:देतलोकत्रयदीन:दीनउधारनहरनदुष:त्रम
नंजननगवाना॥१॥कलोनुसेरीजोरिकर:नाथदीनपरिनेह:पू
रनलगतिजुग्रपुनी:देवदयाकरिदेऊ॥२॥अवगतिउचितबि
सुधगति:बेदपुरानबषान:जिहिबोजतजोगीजती:लगतिदेऊ
नगवाना॥३॥गीरांमबाचा॥करुनासुनीतुसंकरी:ऐवमसतक
हिग्रप:जोदेवीमायाउसह:कारसतोहिनब्रापा॥मायासंन
बन्धमग्रमित:मनक्रमसुमिरतमोहि:देवासुरनरकुउषद:कब
कुनब्रापेतोहि॥५॥सुनिबाइस सिधांतयह:जोबिधिबेदबष
न:ममममायासंनवसकल:जीवचराचरजानि॥६॥छंदद्वेग्रष
री॥संग्रितमैंनबन्धतसवारे:नषसिषअंगसुन्मारेन्मारे:पुनि
कुकरनलरनग्ररूपोषन:बोजतदुषसुषतिनकेषंनषन:स
वधानतिजकरम निसरे:येतिनमोकमनुजमुहिप्यारे:नवतिन
महमोहिद्विजहैनावत:बेदधरमषरकरमबढावत:तिनकुम
हजोबिषयबिरागी:ततबादीमुनिसंपतिलागी:तिनमहजेम
मसेवासांचे:अवरग्रासविसवासनबांचे:तिनमहलगतप्री
यग्रतिनारी:नीचोहोरध्यानहतधारी:हीनलगतिजोबिधि
किनहोई:सबप्रांननिसमदेषूसोई:जोपितएकपुत्रबकुजा
ए:प्रथकसीलगुनलछनगाए:कोउतापसकोउग्यानीपंडित
कोउग्राचारीधरमग्रषंडित:कोउसुचिसूरदयापरहाता:क
उगुनवंतसतकोउग्याता:कोउधनपात्रदरिद्रीकोऊ:हितके
उग्रहितदुष्टकिनहोऊ:ग्रानप्रकृतिगुनलछनगाए:निगम
पुरानजुग्रगरबताए:जदपिपिताकुकरमीजानै:तदपिको
धतिनसूनहिगानै:करैतथापितरनपोषनकम:सबपुत्र
निसोदयाएकसम:पिताकछुजोऊषप्रकासे:नियतततोसं
पतिसबनासे:जोपितमातलगतिहिततसर:निहचैसेवाक
रैनिरंतर:नवसोईपुत्रपिताकहंतावे:ग्रानसमानपरमस
पपावे:पुनिचराचरयहबिधिजोई:ग्रसुरनरनरातिरयगकेई
इत्यादिकमेंसबेउपाये:गरगेरगुनलछनग्रे:मोहिनजेत
हमितिमाय:करैलगतिमनसावच:जदपिनिपुन
नारी:जीवचराचरविस्वविहारी:
ग्यानेचितनहजीग्रासा:सतिकुल

अंतरकोई॥ दोहा॥ आसन्नरोसातजिअवर: नजिमोकहंसतताइ: क
कनभाषेकालतोहि: संततसाधसुनाइ॥१॥ सुधाबचनप्रभुकेसु
नत: सातिकपुलकिसरीर: आनंदनाहिनसमातउर: नयनसप्र
रितनीर॥२॥ सोसुषजानैमनश्रवन: जीहनबरनोजाइ: रामपर
मसुषरूपरस: अतिदुर्लभतेअघाइ॥३॥ काकभुसुंडाइहिं
बिधिमोहिप्रबोधिअति: करिअवधेसकुमार: क्रीडासिसुलागे
करन: नरहरकेनिसतार॥४॥ करिरूषोसुषनैनभरि: चितयम
तकीओर: लगीबुधाअंगनलुब्ध: कोसलराइकिसोर॥५॥ आतुर
जननिबिलोकिदोहो: लीनोकंठलगाइ: देविसुतहिकुचदानदे
बकुरोलेतबलाइ॥६॥ छंदपधरी॥ करिबेषअसुनजिहिसुषहे
काज: रतध्यानरहतनिसिनरतराज: निजपुरानिवासीपुरुषन
रि: रसमगनरहतसनमुषनिहारि: हितरूपनिहारतस्वपनमां
हि: निहचेसुसुरगसुषगनतनाहि: कैरलोकालकछुअवधि
मांहि: अवलोकतसुषनहीदिगअघाहि: यहचिरतनकोकलि
बोओर: मैसुजकरेरघुबंसमोर: प्रभुकेप्रसादबरनगतिप
इ: आनंदमगनकुथे हम्राइ: आपैनमोहिमायाबिषाद: प्र
भुरामकरेकरुनांप्रसाद॥ दोहा॥ तातेअबतेगरुडतुम: संस
यतजकुतर्क: रामनजेभ्रमनासिहैं: रजनिउदैजोअर्क॥१॥
सोरग॥ सबनिजमतिअनुसार: प्रभुप्रतापकरुनांप्रगट
कहीजुछाडिबिकार: सोषगेसतुमहैसुनी॥१॥ मैसबनैन
निहारि: गिरमांरामप्रतापगुन: यहजुकहीउरगारि: माया
भ्रमजातेमिटो॥२॥ मैअपनेउनमानि: रामचरितगायोरहसि
जोबिधिबेदनजानि: पैसुरमुनिसांसयपरत॥३॥ आदितुम
हिषगराइ: लीलाउरतजुदंसलो: पारगगननहीपाइ: आ
पपुहचिगतिआपुनी॥ कबि कबाचा दोहा॥ कारनबोधजुस
किको: दहासुनोषगराइ: आमोरामप्रतापउर: बिसमयबु
धिबिसराइ॥१॥ मायाजनितसंदेहमम: उपजोहोकछुआ
इ: समरिसमरिअग्यानसो: पुनिषगेसपिछताइ॥२॥ आदि
ब्रह्मअबिनेसये: रैजानेरामसुजान: नयेमनुजतनहरन
चुव: नारबिषमनगवान॥३॥ भ्रमनाजोबाढीतगति: जो
उपदेसतुसंभु: रामप्रतापषगेसउर: उपजोग्यानअषंड

॥छंद पद्धरी॥ करि काकप्रसंसा हरषकारि: बांहन हरिबोलेपु
निबिचारि: पूछो तुसंकि कहंलागि पार: संदेह चित उपजो सुतार
तुम साधसंत सम मति सुजान: बिद्या बिबेक पूरन प्रमान॥ छंद चौ
पाई॥ संत गिनत तुम राम सनेही: हेत कवन यह बात सदेही: पु
नि यह राम चरित्र अपारा: सो कहाल लो जगत निसतारा: प्रभु के
बालबिलास सुपावन: निसचय मोह कुबुधि नसावन: सिव मो
कहं तव सेद सुनाये: प्रलयकाल हू काल न पाये: महाप्रलय बी
तेन बमांही: निसचय नास तहां तव नांही: सिव के बचन सुनि
प्यास्वांमी: गिनये कब कुन हिन नगांमी: मन कु बुधि मद मो
हन माया: कब कुन तव न हीं बापे काया: जीव चराचर यह जग जे
ऊ: कनि करम बस काल कलेऊ: मम संदेह होत मन मांही: हे
तु कवन तव अंत सुनांही: आपे तुम हिन काल कलेसा: सो कार
न कहि मिटै अंदेसा: यह बल जोग कृपा नग्रासा: निथ तक
ल तुम ते जो नासा: जो तुम मुहि पूछी हरि जांना: निगम प्रनीत सुसु
न कुनिदांना॥ काक बाचा॥ जोग दान जप तप मख संजम: बिषय
बिराग सांति इंद्रीदम: पूरन प्रेम राम पद पंकज: आन अलेपनी
रजो अंबुज॥ दूहा॥ राम चरन रत रूप रस: आने चित न आन
सुख दुख संग निवर्त सब: जीवन मुकति सुजान॥१॥ छंद दोहा
री॥ अंथ यह देह परम सुख मांही: जीवन मुकति आप कहं जांही: स
मो साध सब ही मो हि साधन: ऐकै राम भगति आराधन: नीच
कुराम भगति जो जानै: बिस्वता हि कहि साध बखानै: पार कीट सं
नव सब पेखो: बिमल पटंबर होत बिसेखो: पावन होत तास पार
बर: सुख रस रंग परिध्यान करत सुर: पार मूल उतपत्ति अपाव
न: गह तन जगत लगे गुन गावन: बिमुख राम ब्रह्म कि न होई
करे न ताकौ बंदन कोई: राम भगत यह तन उरगारी: पावन मो
हि लगत अति प्यारी: तातें तन तजो यह देही: साध गिनत मो हि
मम सनेही: निबिधि जनम कुमो हि बिगोये: राघव बिमुख महा दु
खरोये: जनम अनेक करम बस कीने: जोग जग्य जप दान कु
दीने: जो निकवन जिहि मांफ न जायो: यो हि भूमि भूमि जन म
गुमायो: दुख सुख सबे करम बस देखे: बिस्व आज लो सुख न बि
सेखे: मो हि अनेक जनम सुधि मेरे: तहां तहां

दोहा॥ कथा जु पूरब जनम की सो सब कहु सुनाइ। अब कैसे सुनियेहु
कवित रहसि कथा षगराज॥ अथ काक नुसंधि पूरब जनम
प्रसंग॥ कलिजुग जोप हलै कलप सो अपने स्वाधार। कु जनम मेल
बस सूद्र ग्रह अवधिपुरी मह आइ॥ छंद॥ अ षरी सिव की तह
कहु सेवा। दुष्ट नावनहि सब देवा। अति बाचाल उग्र बुधि आ
पुन दंभ कपट मद मान महाधन। बसो अवधिपुर जदपि बिसाला
तदपि कुबुधि कुचाल कराला। नई कृतिन साधन सब नासन। पुरु
षनारि तहा पापपरायन। कलिजुग ग्रसे धरम सब केरे। गए लुप्त
रिषि ग्रंथ ग्रंथ नेरे। निज मति कलिप्त दंभ निनाना। प्रगट करे बहु ग्रंथ
प्रमाना। चारि बिरन नहि धरम बिचारहि। बेद बिरुध करम बिस
तारहि। बेचहि बेद बजार निबासन। सरबाग्रहि नरपति प्रजा
सन। आपा निगम न मानै कोई। जगत करे नवै जिहि जोई। जो
बाचाल सुपंडित जानै। महा दंभ ति हि पस मानै। जग बंचक मो
नी बृत जोई। कहै संतता कहै सब कोई। परधन हारक सुपै सथा
नै। जो ई कपटी आचारी जानै। बोलै झूठ लोक बहकावै। कलि सो
ई अद्भुत गुनी कहावै। बिनु आचारी सुपै बिरागी। तेई गुनी निगम प
थ लागी। नष जटबाल जु कांष बढावै। कलि सो ई परम हंस पद पावै
कर हि जुनेष अनुचित नय कारी। नियत जोग रत ते ई नर नारी। नषी
अनष अप्रेय अनावै। कलिजुग सो अवधूत कहावै। जो लबार बक
ति हि जानै। महाधनेस बकोसो ई मानै। रहत अनेक एक त्रीय रावै
निसि दिन नरमर कट जो नाचै। द्विज न सूद्र उपदेस दिषावै। बांचे
बेद पुरान बचावै। पूजे सिल जनेऊ पहरै। नाहि कुदान बिप्र को
चहरै। करि करि बेष अनुचित बहकावै। धरम जती बाहन चढि धा
वै। बिधवा बिबिधि सिंगार बनावत। पै सो नाग निबस न पावत
। नर पर त्रीय रत पर पति नारी। आप आप इछा अधिकारी।
सुन हि न पूत पिता हित सिष्या। देय चंगार द्विज न कहै छा। पि
ता मात जो बालप दावहि। सिष्या उदर न रन समझावहि। भ्र
म घात नर नारि बिचारहि। हेत बिराट बिरध गुरु मारहि। ब
रन धरम जे बेद बषानै। सुनि कलारकू नारक हानै। तेल कर्ड
पाको लकिराता। जे इस्त्री कुल घुकुल जाता। नासी संपति म
गई नारी। जोगी नये मूंड जटधारी। ऐसे मे कलिजुग अव

लोकौ। रहैनजीवत्रमतअतिरोकौ। बानप्रसथकीनेबन
वासी। नासेकछुदिनग्रेहनिवासी। हसिहसिद्विजसोचरनपु
जावहिं। आपनेपूजनयेग्रवरनसावहिं। बिप्रानिरहारकीया
बिसारे। हरिहरिलेतकुदाननहारे। चूकेकलपतधरमचं
लावे। बेदबिरोधसुपंथबतावे। करहिबरनसंकरअहंकार
बेगैमेध्यसुनोजनबारा। धारहिकुमतिकुमारगधावहिं। ध
रमबिरोधरोगदुषपावहिं॥ छंदबेतालाबंकुदानदेहैंज
नीबिधिबिधि। स्वरनधामसंवारही। बिषीयादिलपटबिर
तिबिसरी। बिसनकामबधारही। धनवंततापसग्रहीनिर
धन कुलबधूबिनिकारही। अहराषिचेरीकुपथिगामनि
सुनसिंगारसिंगारही। सुततबहिलोपितमातकेबस। न
वनतामनिबसनए। पुनिब्याहिकैत्रीयलेपीयारी। अहसु
मरकैउगिगए। पितमातत्रातकुटंबपरहरि। सुषनिवासीस
सरे। सांच्योसुषाइषवारसालनि। नयेनिरधनदिनतेरे। न
पसावधानग्रनीतिनिरनय। प्रजादंडप्रचारही। मतनीच
कैलेचोरमोषहिं। सायमारिसंघारही॥ द्विजसूत्रमात्रअब
सत्रतपसी। प्रगटचिन्हप्रमानियै। मातानतीरथबेदमानहिं
जगग्रसम्पसुजानियै। कबिपंडितनसोहितनकाफ़ रीफि
नांमनिसोरही॥ कलिकालधरमबिलोपकीनै। सुरनिपूज
यटिसही। परिबारबारदुकारपृथ्वी। मेघधारनमोषही। अ
कूरग्रासितअवनिआतुर। सरसरितजलसोषही। बिनुअ
नत्रिनबकुबिपतिआपति। मनुजपसुतिहिदुषमरे। महिप
रतदुसहमहामारी। सकलप्रानीसंघरे। बिहंगसबरततबि
षमाबिधिपुनि। कपटहगपाषंड। मरमोहमारजुदंभअहम
ति। आपिबकुब्रहमंड। महाबदंग्रबिहतधरमतामस।
निवुरतामषदंनः। रहिदोषदेवनवरषिग्रवनी। नहिनजा
मतग्रोनः। बपुरोजपीडितधरमबरजित। लोकसुषनाहिं
लहैं। अभिमानबिषमबिरोधअबिहत। ससबादीदुषस
हैं। सबनयेजातिकुजातिजाचिक। येकलोनहिआ
करि हीरषाकौ। दोषकारय। प्रबलहुए

गतबरनआश्रमधरमधारन । मिलनतनमनदुरमती : सग्रपुष्टु
ष्टसदोषतामस जगतयेजावरजती ।।। कबित्त ।। सत्यवृतसत
जुगहि कृतजुत्रेतातपकीनो । द्वापुरअतुलितदान देवदानवन
पदीनो : जबजेसोजिहिसुन्यो प्रगटतहातैसोपायो : स्वरगमृत्य
पाताल गुनजुनिगमागमगायो : संध्यात्रिकालनरहरसुकबि
संततसाधसंगारिहैं : कलिजुगदुरतरघुनाथको येकनामउ
धारिहैं ।।। दूहा ।। करैजुकलिजुगमाहकोउ : पुनिमानसिकपा
प : ताकोफलसोपेतहो : अंतनिपावैआप ।।१।। याजुगकोअधि
करयह : करहिबिसासजकोइ : रामरामयहमंत्ररटि : अंतमुक
तिहिहोइ ।।२।। ताकलिजुगमहबरषबहु : कुजबसोतिहि
काल : नयेतहाडुरसष्यनव : गयोबिदेसबिहाल ।।३।। छंद प
धरी ।। जबबसोउजेनीपुरीजाइ : हरिहरसतनमनहुषाइ
पुनिकछुतरुमेबिनपाइ : नवजगतिकरोसेवासुनाइ : सिवसेव
कद्विजरकअवरसाध : अतिहेतकरेपूजाअराध : परमारथसाधेसह
तप्रेम : नीदैनबिस्नुदेवहिसनेम : संगकपटकरुकृतहासेव : द्विज
सोदयालनवलिष्यानेव : करिपुत्रमोहिअतिदयाकीन : पुनिस
बपढाइबिद्याप्रबीन : अरुहमंत्रदीनोअनेक : उपदेसबिधि
बिधिकरिबिबेक : जपकरोसिवालयनितजाइ : सोदेनहृदयअ
हमितिसुनाइ : कुनीचजातिमनअसितमोह : हठिकरोबिस्नुसो
महाद्रोह : निजसाधदेषिमसजरहिनैन : चितबढैद्वेषउपजैअ
चैन : गुरकरैमोहिदिनप्रतिप्रबोध : कुलकेसुनावतउचढैक्रोध : क
पटीकैनीतिहिकहाकाम : रसकामरतनहीतजैराम : इकबारमो
हिगुरलीयबुलाइ : सबनीतिधरमबिधिबिधिसिषाइ ।।। गुरबा
चा ।। सुनिपुत्रकहुइकअदग्पान : निरधारहुदपूजानिदान : आरा
धहुदफललहैएह : सुतबढैबिस्नुचरननिसनेह : जिहिबिस्नु
तजहिसिवब्रह्मसाध : अरुकरहिजीवथिरचरअराध : जि
हिबिस्नुतजहित्रयपुरबिष्यात : बहुस्वोनरपामरकितकबात
।। दूहा ।। हरपूजकहरद्रोहकर : पावैसुषनप्रमान : संबतसाठिस
हस्रसो : नरकहिकीटनिदान ।।१।। हरिसेवासतगुरकही : जा
गीममउरज्वाल : यहअनीतिसुनिअतिअसह : बाढ्योक्रोधकरा
ल ।।२।। कबहुप्रबोधकुजातिकह : हितसिष्यानसुहाइ : बाढै

अहिमुष विषमविष: कोउपयपांनकराइ॥३॥छंदपधरी॥काक
वाच॥ पाईकुजातिबिद्याप्रमांन: इहाबदीमोहिअहमितिअमां
न: अधिकारबिसुजबसुन्योऐह: सगतातेबाद्योमनसदेह: घटि
घटिबिचरोगुरहिघात: बिषलगीमोहिसोसुनतबात: पावेकु
जातिजिहितेप्रमांन: दुष्टतिहिमलबोवेनिदान: चितमोहिज
हिपदेषीकुचाल: कछुकरिनक्रोधदरसीत्रिकाल: पैधूमअगनि
तेजनमपाइ: बादेसुआपअगनिहिबुझाइ: गुरमोहिसिषावैनि
त्यपांन: सोलगैसुनतमोहिबिषसमांन: इकदिवससिवालयज
पतजाप: वहिसमयतहांगुरआइआप: मैउठिनकरेआदरआ
जांन: अतिहीदयालगुरजीयनआंन: अवलोकिअनादरगुरआ
नांति: वेसहिनसकेसिवधरमप्रीति: ननबानिनरीतहांसिव
निकेत: सिवनिगमसहाइकधरमसेत:॥सिव बसवाइहा हैत
वगुरउरकोधनहि: द्विजसोईसाधदयाल: अनुचितअतिहिअ
नीतिथह: सहिनसकउरसाला॥१॥तातेहैउसरापतोहि: मोसो
कलोमहेस: नीतिबिरुधनकसक: उरबाद्योअदेसा॥२॥करुन
तोकहंदेकछु: जोइतनेअपराध: जहिहोइतोपंथतव: सहिनस
केसुरसाध॥३॥करेअनादरगुरनिकोः अथवागरबअगपांन:
नजैसुरोरवनरकजव: पावेसुषनप्रमांन॥४॥ मिलेसुतिरज
गजोनिमह: प्रयतजनमतिहिपाप: पस्योरहेबिनुनदंतव: मे
पैअजिगरसपा॥५॥महाबिटपकोटिरबिकर: तामहवसिहे
जाइ: ऐअधमाधमअंतलो: पापीअधगतिपाइ॥६॥ बाइ सब
च॥ ममगुरइहाकरिमलिनमन: सुनिसिवदासनआप: मह
सकंपबिलोकिमुहि: पायोद्विजपरितापा॥७॥करिप्रणामगु
रजोरिकर: सिवसनमुषद्विजसंत: येअनादिअवगतिअमि
त: अद्भुतरूपअनंता॥छंदत्रोटक॥ गुरप्रणीता॥सिव
सतुति॥ सिवदेवनमामिसुरेससुरं अखिलेसमहेसरिप
असुरं त्रयमूरतिब्यापकएकतनं: जगदीससहाइकसंतज
नं: निगुणतमसतरजतमस: रतध्यांनबिग्यानजुजोगरस
उंकारउदारसुमारत्रे, संसारबिकारहरेसगरे, महिकालहि
कालकपालकरं: धरजोगप्रयोगत्रिसूलधरं: गुनवारनपार
संसारगती: हिमवंतसुताप्रीयप्रांनपती: पहारतुषारसरी

रप्रनाः ऋतेसरमहितऋतसता ॥ छंदु तुजंगी ॥ लसैसीसगंगाजटा
जूटलागी ॥ जटाकामतीजैनयनआगिजागी ॥ चलंकुंडलंलूलतासी
मनालं ॥ सुधाआवकंबैननैंनबिसालं ॥ बिरूपेबपेबिस्वहारंबिका
रं ॥ सदासंतुस्वामीसंसारंसधारं ॥ रदनंछदनंबिंबरातेबिराजे ॥ सु
धाचंद्रहासंरदंबज्जराजे ॥ ऋतेनीलकंठंमहारुंडमालं ॥ बलेबाहु
दंडंप्रचंडंबिसालं ॥ उरंआयतंमध्यतागंमृगेसं ॥ पदंपंकजंसाध
बंदेसुरेसं ॥ धरेखेतबिभूतित्रिसूलधारी ॥ बनीअद्रिजाबामता
गेबिहारी ॥ मृगाधीसचरमंबृतंदेहमानं ॥ कपटीपटंकृसनांजि
नंकोपयानं ॥ प्रसनंबदनंमनीधारमालं ॥ करंकोपरंधारमनुजं
कपालं ॥ प्रचंडंप्रताकोटिभानंप्रकासं ॥ बिरागीबितोथानउग्रा
नबासं ॥ अजंदंगअहिफेनमत्तअनंतं ॥ तबेमतबीजंसुजगतीजयं
तं ॥ कलंकालकूटंसकलातकर्त्ती ॥ हरेहेललीलात्रयंतापहर्त्ती ॥ सि
वंसांतरूपंसदासाधसंगं ॥ अकामंसकामंसदाहअनंगं ॥ कृपासि
धुसोताचिदानंदकारी ॥ हितंसाधसंसारसंतापहारी ॥ नतोहंस
दाईसअवधूतअंगं ॥ पिनाकीप्रियंजोगतानंप्रसंगं ॥ हरेनाथअन
थपापोघहारी ॥ बिग्यानंबिधानंमसानंबिहारी ॥ जराजनमदुखं
बिसेषंबिनासी ॥ निराकारआकारकैलासबासी ॥ नजानोमयं
गंनजोगंनजापं ॥ प्रीयमेसदापादपूजंप्रतापं ॥ प्रभुपुनिपूजा
करूनिसप्रेमं ॥ महादानमांगोयहैकुसवेमं ॥ दहा ॥ कसोसतो
त्रमहेसको ॥ नरहरमतिअनुमान ॥ काकतुसंठीगरुडकहं ॥ पूर
बकथ्योप्रमान ॥ १ ॥ द्विजकीदेषीदीनता ॥ प्रभुऋतेसअपार ॥ पुनि
तहांकीनोकरिकृपा ॥ नतबानीनिरधार ॥ ॥ श्रीसिवबाच ॥ मांग
ऊजोकछुमोऊमन ॥ द्विजऊतयोदयाल ॥ हितअभिलाषापूरिऊं
कलोजेवसकृपाल ॥ बिप्र बाच ॥ प्रभुतवमायामोऊपरि ॥ य
हजुत्रम्योअग्यान ॥ यातेउचितनकोधअब ॥ ऋतेसरभगवान
॥ ४ ॥ येप्रभुसूद्रकुजातियह ॥ मनमायाभ्रममान ॥ कलोजुयह
अपराधकछु ॥ नियतछमऊतभगवान ॥ ५ ॥ श्रीसिवबाच ॥ भेदे
योपरमारथी ॥ बांतनतोहिबिसेष ॥ कृतअक्रमयासूद्रके ॥ सो
मेषमेअसेष ॥ ६ ॥ सोर ठा ॥ स्वलपकालममश्राप ॥ सोपेहोइ
निवरतसब ॥ यहद्विजजानऊआप ॥ काजसिधयासूद्रकी ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ जो दयो श्राप मैं दुसह जानि । नहीं वृथा होइ यह सत्य
मानि । इक सहस जनम दुख देखि श्राप । सो पै निवरत पुनि होइ श्राप
नवनरेंजु अंतर्यामी नाव । कहि बिप्र सूत्र सो यह कहाव । कु
कालकरम प्रेरित कराल । बिप्राचल महब सिनयो बाल । जोग
नमल रूब सकरम जोग । पुनि तजो दुष सहि अप्रयोग । इहिं ज
तिन जेतन थरि अनेक । बिस्वोनग्यान पहलो बिबेक । जिहि
जिहि जोनि महब सो जाइ । सुनराम तग तिउ पजै सुनाइ । पुनि न्र
मन जोनि द्विज जनम पाइ । सब नीति कुलन निगम निसुनाइ । बड
लेउ संग बालक बुलाइ । सुनकरो राम लीला सुनाइ । पुनि समु
ठि नई कछु अवधि पाइ । पितमो हित हा बिद्या पढाइ । बासना गय
सब चित बिकार । सो ई राम प्रेम उर ब्यो सार । ऐसो अग्यान के
धो अनेव । सुरधेनु छांडि करि षरी सेव । रस राम मग्न ह्वै दिवस रा
ति । सुष अवर न कछु बिद्या सुहाति । हरि हे मात पित सबै हारि । बि
द्या न कछु पाई बिचारि । पितमात जबै पंचत पाइ । यह समय जबै
उ द्यान आइ । जिहि जिहि सुथान मुनि लहो जाइ । सुनराम रूप
पूछो सुनाइ । गुरु सबै बतावै यह ग्यान । सरबमय राम आपक सु
जान । निरगुन हि चित्त मल गैना हि । मन रलो अट किछ बिस
गुन माहि । रघुबीर चरित गंऊ रसाल । बन बान हि फिरु पख
त बिसाल । इहा । मेरु सिषर बट छाह बर । लोमस आश्रम आ
इ । रिषि दरसन कीनो रहसि । पुनि कुलागो पाइ ॥ १ ॥ लोमस पूछे
निकटले । कारन आगम काज । कहेतबै मैं जो रि कर । सुनि सब
सिध समाज ॥ २ ॥ जो निपुरातन मुनि जथा । मैं बरनो श्रुति सार
कलूमाँ रघुनाथ को । एक नाम आधार ॥ ३ ॥ सगुन बषानो
मैं समुझि । मुनिवर निरगुन मानि । इहां छन लोमस केरु । उर
स उपजी आनि ॥ ४ ॥ साथ निके काकु समय । उपजे कछु नकथ
इ । ज्यों चंदन के षंऊ गुन । अतिघसि अगनि उगइ ॥ ५ ॥ लोमस
बाच ॥ यातें लोमस केअधिक । उग्रो क्रोध उरआनि । मैं उपदेसो
गुन मत । मूरख सुतें न मानि ॥ ६ ॥ प्रतिउतर उतर प्रगट । करतमो
हि तिजि कानि । तब रस जो जय त्रसत । मन बिस्वास मानि ॥ ७ ॥ त
तिबा रस हो कुत । करमकर कुबकुकाल । ल
ल । चकुदिसि बिहंग चकाल ॥ ८ ॥ काक बाच ॥ ८

श्रापमो: दारुनदुसहदुरंत: मिटैनसोमानवअमर: जोनावीनगव
ना॥ तबहिनयोकंकाकतन: मनकछुक्रोधनमानि: तबजेसी
नवतबना: ऐसीनईजुआनि॥१०॥ छंदइ अषरीरिषरषन
नाहिनषगराय: महाप्रबलरघुपतिकीमाया: दारुनमतिलोम
सकहंदीनी: नाथप्रतीछामेरीलीनी: मोकहंरामदासनिजमानो:
यहमतप्रभुलोमसउरआनो: द्विजतबमोहिसाधअतिदेषा: बि
गतक्रोधबिस्वासबिसेषा: मोकहंफेरिकलोतबलोमस: बि
प्रकलोसोबिहतदयाबस: करीकृपापरिसोषनकीनो: द्विजमो
हिरामसंत्रतहांदीनो: बालबिलासध्यानजोरघुबर: पेमोहिक
लोरिषीसदयापर: कछुककालमुनिराष्मोकहं: तारकरा
मचरित्रकहेंह: गुप्तप्रभावजुबेदनिगाए: सबरघुबरकेमो
हिसुनाए॥ लोम सबाचारुउपदेसरामगुनगावकु: सोनअ
साधहिंलिसुनावकु: अबगतिरामनगतिउरअंहे: नियत
सबेदुरबुधिनसेहे: हितजुतरामनगतकहेहे: इंछामरनपर
मपदपेहे: तुवआश्रमजोजनरकतोई: सदाकुबुधिनआरुसो
ई: आपिनकबकुतोहिदिनबंका: कालकरमगुनजनित
कलंका: अषिलपुरानअरथअतिहासा: पेहोतुमतेबिनुही
प्रयासा: रामनजननिसततपररेहो: पूरनमनइंछासरिषे
हो: सुनिमुनिबानिप्रेमरससानी: गगनगिरातबबेदबषानी:
कलोसबेकहेमुनिकेरो: मनक्रमबचननगतहेमेरो: आरसत
दपिअनबेरागी: गतिमतियाकीमोहीलागी: सुनिनभबानि
नयोबिसवासा: अषिलनदीमोहिपूरनआसा: मुनिपदबंदिपर
मसुषपायो: यहमेरोहोआश्रमआयो: बसतरहोमोकलप
बिहाये: सांतबीसऊपरसुषदाये: प्रेममगनऊरामपरायन
मिलिगोजोप्रभुसोजलजलमन: मतिगतिऐकरामहीमेरे: कर
मबालदेषोतिहिकेरे: बिबिधिचरित्रबषानेरघुबर: सुनहि
बिहंगआनिसबसादर: रामअवधितबनरतनधारहिं: बाल
बिनोदबिचित्रबिहारहिं: अवधिपुरीकंतबतबआऊं: प्रभु
हिबिलोकिपरमसुषपाऊं: धरिसोईबालरूपउरध्याऊं
अवधिपारआश्रमरहआऊं: काकदेहपायोतिहिकारन
मैतुमसोबिनयोबाचामन: पेयहमोहिदेहतिहिप्यारी: राम

चरनरतिअतिउरगारी: जेयहनगतिजुछाडिअपानी: पानतजहिस
मकरिबिपानी: कामग्रावग्रहनीतरत्यागी: करहिआकपयबोज
अनागी: चितजेछाडिनगतिसुषचाहे: हगकरिआनधरमअवग
हे: तेईसगसंधुनावबिनुतिरही: पारनलहेत्रमनत्रमपरही:
सुनिनुसंहिकेबचनषगेस्वर: पुनिबोलेमृदुबानित्रेमपर:
गरुडा हितप्रबोधबारसपतितेरे: मनत्रमकछुनरलोमनमेरे
संसयएकमोहिपुनिस्वामी: तुमहिजनाऊंअंतरजामी: संतकहेसब
पानसमानो: नाहिउपारतरनकछुआनो: पानतगतिमहकेते
अंतर: निसचयबारसकहोनिरंतर ॥ कविरुबाच ॥ हरा पूछेक
कतुसंहिप्रति: जोकछुगरुडसुजान: पानतगतिकेनेहगुन: पूर
नकहेसमान ॥ १ ॥ अथसप्त प्रसगरुडबाइसप्रति हरा कसो
गरुडतहजोरिकर: सुनहुतुसंहिसुनार: प्रसनसप्तक्रमजुत
प्रगट: तेमुहिदेहुबताइ ॥ १ ॥ छंद पधरी ॥ सुनित्रथमप्रसनब
इससधीर: संत्रितमहुरलतकोसरीर: दुषकवनकहोहरुन
दुरंत: सुषकवनबषानेजाहिसंत: नवकहोसंतअनसंतते
ह: गुनदोषबतावहुबिहतबेह: पुनिकोकहहुअरुकवनप
प: इनकेप्रतावतुमजानिआप: मानसिकरोगकेसोमहंत:
तुमतेनदुरयोकछुपरमसंत ॥ कवकजा ॥ बिहंगेससुनहुसुष
पबात: तुमप्रसनसातपूछेजुतात: दुरलभसंसारमानुषीदेह
हैजासरामचरननिसनेह: जाचेजिहिथिरचरअबिलजीन: दे
जेजिहिपमासमदुर्ग ॥ छंद ॥ ऐश्वरी ॥ नवनरजोगभोगकै
नांजन: अस्वमेधलोधरमउपाजन: सोतनलहिरघुनाथसंत
रे: आपुनउनयबसउधारे: मुकतिपात्रहेऐकैमानुष: स
धेस्वरगसहेसुषदुषसुष: हेत्रअवरनरसमसरदेही: सहज
सधरघुनाथसनेही: हेहरिहरसमदुषकोनांही: जिहिसरूपस
षसपतिजांही: उतमकोमध्यमकरिमानें: पेनसषाकोउबंध
पिछानें: नगरबसतहीजिहिघरसूनो: आवैअतिथजाइक
रिऊनो: साधसमागमथहेपरमसुष: मनजानैकहिजाइन
हिनमुष: नगतिनजननाहीसंगतारी: प्रेमसहतसोपेनिध
पारी: संतसहजनवसतसनेही: दुषसुषहरषसोकनही

देही: परसुषदेषिआपसुषपावे: निषिकुलहिनहिगरबजनावे: जग
गनवन्तब्रह्ममयजोने: परसुषदुषीअनागेपामर: सोरअसंतप
रसोहनततपर: मनमोषलपरवेधनसाधे: अगदुषसहिपरदुष
आराधे: षलबिनुस्वारथपरउपकारी: तकतरहेजूमूषमजारी:
परसंपतिदेषेदुषपावे: निहचेताकोकाजनसावे: अहिमुषआमि
षकवलनआवे: आसेताकेप्रानगुमावे: निहचेअमरअसंतक
नांही: हतेअनओरगलिजांही: दयासमानपुनिनहीकूजा: प्रेम
नेमसोसुरगुरपूजा: मनजिहिबेदमजादामाही: अहनिसिनीति
धरमअवगाही: कूलिकुबेदबिरोधनजावे: कमजुतसोरपुनिक
होवे: परनंद्यासमपापनप्रानी: जिहिनरहरिगुरनगतिनजानी:
निंदासाधद्विजनजोकरई: धीरजबिनुबारसतनधरई: निगम
देवनिंदकजोईनर: रोरवनरकनोगवेदुषनर: सामिद्रोहपतिन
द्यासाधे: आपअलकहोइदिनआधे: फलबिनुपरअवगुनकरि
फूले: होरबागुलितरअधमुषफूले: जिनमहयेअवगुनजगजोने
पापयहेअतिबेदप्रमाने: ॥ अथमानसिकरोग ॥ सुनियेमानमरो
गषगेसर: पूजोजोतुममोहिपानपर: छंदपद्धरी: हैआधिब्या
धिकोमूलमोह: सबबेदसूलछिनउपजिछोह: कफलोनबिवे
धिबसकामबात: यनक्रोधपितजगजीवघात: नवमिलहिजा
इयेतीनन्रात: उपजेत्रिदोषपुनिसमपात: बिषीयादिमनोरथ
कुमतिमूल: तेईनातिनातिमिलिसकलसूल: ईरषाबादअ
हमतिउपाधि: येईमिलतआनिअतिअसाधि: दुषषईजर
निपरसुषहिदेषि: करिकोदुरतषलबिसेषि: कहरूवादुस
हअहंकारअंग: मदहरूकपटसबनहरूसंग: बढिलोभजलोद
रउदरब्याधि: तेजरागरबयेअतिअसाधि: अबिबेकअसहजु
रअनउतार: इत्यादिकमनआमयअपार: जगब्याधिमरहिअ
नेकजीव: अनकालदुसहइछादरव: बपुदहेबिषममानसिक
ब्याधि: सोप्रानजानिओषधअसाधि ॥ इतिमानसिकरोग
अथऔषद ॥ अपनेमधरतपजोगजाप: आचारदानसतजा
निआप- इत्यादिकहैतेषजअनेक: कहिकितेगिनाऊएकएक

निवोरेग
ो नहचे
रमरषनो

योगमेकदाचितमनसिरोग: नवलहैजीवतबकरमजोग: मानसी
व्याधिदुषसहैमूढ: नवसोकबिरहगनिप्रीतिगूढ: अतिदुषदपरान
नअप्रयोग: रघुनाथकृपातेजाहिरोग: याकोउपायहैयहैएक अग्पा
नमरहिकरिकरिअनेक सउजपेअबिद्या मिलिकुसंग: अग्पानउप
जिहोइबिवसअंग: पुनिउपजेबिषीयाकुपथिपार: सोईरोगदुसह
संततसुनाइ: अवधेसकृपाफिरिकरेआप: सतगरुबेदिमिलिहरि
संताप: उपवासयहैतजिबिषयआस: सतगरुबचनउपजेबिसास
रहिसंजमतोपेजाहिरोग: पेतजेकुपथिइंद्रीप्रयोग: रतिचरनसरन
गहिअबथिराइ: अनुभगतिसजीवनिमूलिपार: अनरोगहोइतब
सकलअंग: अनुरागबढैअतिबलअनंग: बढिबुध्यासुमतिनवनव
निदान: सुभगपानभोरउपजेसनान: दुरबलतानासैउरदुरास: बढिदे
हपुष्टिउपजैबिस्वास: सुषसाधिनजनकरिहरिसनेह: अबिकार
बेहमततजएह: बिनुरामभगतिजाहिनबिकार: श्रुतिसाधकहतय
हमंत्रसार: हरिभगतिबिनानहिमुकतिहोइ: करिजतनआनहठि
लनकोइ: जगजीवनभगतिबिनुगतिनजाइ: अनभूतअसंभवमिले
आइ: मिलिउपजैकमंडपीडिरोम: अरहोइमुष्टिगतअगहओ
म: पुनिबांझकदाचितपुत्रपाइ: अरुमृगत्रिस्नातेत्रिषाजाइ: फू
लेपनिचलदलबिमलफूल: ससीसअंगजामेसमूल: रविउदय
तनासेअंधकार: अरुआवैनिसाकरकरअंगार: करिमथनबारि
घृतकादिकोइ: हगिसिकतापीलेतेलहोइ: इसादिअसंभवबने
आइ: पुनिभगतिबिनाभगतिकिकुनपाइ: करिदेषकुबकुतेजतन
कोइ: हरिभगतिबिनानहीमुकतिहोइ: हरिकिरिहिमेरतेलहा
थ: सममेरकरहितलहिसनाथ: हेसमृतबेदसिधांतयेह: ह
रिछांकिरकुरघुबरसनेह: हरिआहिअबिलमायाअजीत: मू
सेकुजीवसोपरमप्रीति: बुझरामकथापूछीसुतंत्र: मेकहसबे
मिलिमूलमंत्र: सकुनाथसुमोकहकरसाथ: अरुदरभगतिअप
नेअराध ॥ दहा॥ जदपिअपावनजीवजग: सुनियेकृपाबग
स: महाभगततबदरसमुहि: आजदयेअवधेस॥१॥ करमउ
दयिरघुनाथके अदभुतअमितअगाध: नेतनेतजाकहनिगम
सदाबतावतसाध॥२॥ कोउसुनैजुयहकथा: पढैलिषैजुतप्री

ति: सिधमनोरथ होइसब: उरब्यापेनअनीति॥१॥ करमकथारघुबी
रकी सुनि श्रुतिसंमतसार: गोपदसोंनवसिंधुगनि: प्रगटनरेजन
पारना॥२॥ हेतुसंहीआपनो: पूरबजनमप्रसंग: कारनबाइसदे
हको सबेकलोहिसंग॥३॥ सातप्रसनपूछेसमझि: बाइस
सोबिहंगेस: समाधानतिनकेसबे: कीनोनासकलेस॥ गरुड
॥कलोषगेसतुसंककहे: प्रभुतबबोधप्रसाद: मायासंभवदु
षदमम: बिसमयगयेबिषाद॥४॥ मैअबजानेजनममम:
मोकृतकृतसुनाइ: कृतप्रतापरघुनाथके अषिलबसेउरआ
ग्रह॥प्रभुमायासंभवप्रगट: उरबाढ्यअग्यान: तेबाइसतवबो
धते: बिषमबिषादबिलान॥७॥ रामचरनरतिरूपरस: उ
पजेचितअपार: मोहजनितसंदेहमम: बिनसेबिबिधिबिका
र॥८॥ आदिब्रह्मअवधेसये: पूरनपुरुषप्रमान: मायाजो
गसुमेथली: लषमनसेषसुजान॥९॥ कबित॥ अगुनब्रह्म
अवतार: प्रगटरघुनाथप्रमानै: महासकतिमेथली: जो
गमायाजगजानै: थलराखनषेकस्यो: लागिलकागदलीनो
सरनबिजयपंजरसुनाइ: दुरजनकहंदीनो: सुनिरामचरि
तनरहरसुकबि: नाग्पउदयमेरेतये: बाइसप्रसादतवअ
तिबिषम: मोहजनितभ्रमतजये॥१०॥ कबिकबाच॥ दोहा॥ अ
अमरलोसुआपनै: बाइसप्रेमबिदेह: संसयमिटप्रबोधस
नि: गरुडगयेनिजगेह॥११॥ काकभुसंडीगरुडको: साधस
गुनसंबाद: कलोसुषदनरहरसुकबि: प्रभुरघुनाथप्रसा
द॥१२॥ इतिश्रीरामचरित्र काकभुसंडगरुड बाद॥प्रसंग
सपूरन॥ अथ बसिष्ठआगमना॥ कबिकबाच॥ कबि
त॥ येकसमयअवधेस: रामअतहपुरराजित: नामज
नकजाबाम: नागजुतप्रेमबिराजित: द्विजबसिष्ठगुरदेव
दहानतमारगआये: प्रभुप्रलोमकरिप्रीति बिहतआस
नबैगये: करिकृपातहारघुनाथकहि: नगतबिछलजुग
जोरिभुव: गुरराजतिहारेआगमन: हमसुआजकृतकृतभुव
॥१॥ बसिष्ठबाच॥ दोहा॥ देनलगेमोहिनृपप्रभ: पोरोहि
तपदप्रीति: तहानकाखोकुंतुरत: नवउपजीमननीति १

पुनि मोकहँ लैनो परे दुष सुष कारन दीन। नृप आग्या मानी नहीं
ऊँ न टिरहो निदान॥१॥ तव ब्रह्मा मेरे पिता आग्या दीनी यह कु
यामहँ अतुलित फल अषिल है सुत निसंदेह॥ ब्रह्मबचा कै देह
रिय्युबंस महँ त्रेता जुग अवतार। रामचंद्र नर देह धरि नवह
रिहैं तुव नारा॥३॥ जप तप संजम जोग जिग तेरवा दिय टसंग
इन कुन जो फल पाइयै सो याम कै अंग॥४॥ पुत्र पुरोहित प
द प्रगट तेऊ अबै चितलाइ आगे यातें फल अषिल मो पै कहो
न जाइ॥५॥ जगत पितामह अजअमर मेरो पित हितमानि
हि मिथ्या ताको बचन पैय हबेद प्रमानि॥६॥ तव पुरोहित पद प्रग
ट मेलीनो हितमानि ताको फल पूरन पुरुष पायो अबै प्रमानि
॥७॥ जो पै दरसन जोगने दुरलभ दुरगम देव मेसुष हो पायो सुग
म अवधेस अजेव॥८॥ तव प्रताप महिमा अमित दिब अमानु
ष देषि सब बिधि परमानंद सुत बादत चित बिसेषि॥९॥ प्रत्य
ष बरमांगो प्रसिध पो रोहित पद पाइ जनम जनम तव तग
ति जस मम उर होसमाइ॥१०॥ रूप अलोकिक रावरो अषिल
ईस अनंग मेरे लोचन प्रानमन सदा रहै छबि संग॥११॥ क
लो राम तब जो रिकर परिबसिष्ट के पाइ करत मनोरथ तुम जु
कछु सो सब होऊ सुनाइ॥१२॥ गये बसिष्ट जुगगन मग पुरी
अमर सुष पाइ गावत महिमा राम गुन मन आनंद न माइ
॥१३॥ अथ बिधि आग मन॥ श्रीराम प्रति उ पदे स॥ कबि
त्त॥ सोरग॥ इक दिवस रघुराइ सेग सकल सोदर सुत उ
तम थल नन आइ सुष संजुत बैठे सभा॥१॥ अवलोकत प्रभु ओर
सबै निरंतर बदन ससि जैसे चंद चकोर पलक न लावत प्रेम पर
बेद धरम रघुबीर उपदेसत आतम निअषिल धरिये चित सधीर रूप
तिजाते टरत नव॥२॥ छंद॥ अथ श्रीराम बाच॥ मेरे मत अनुसार
नमानें सो मम बल जस साधु सयाने॥ कबि रु बाच॥ रहा चतुरानन
मुनि सुर आये बदन करि आसन बेगए॥ श्रीराम बाच॥ कहो बिरंचि
आगमन कारन तुम जगपूजित गति बिसतारन॥ बिधि बाच॥ कहो
बिरंचि हाजो रे कर रामदेव तुम गुरु कृतेगुर समस तत्त्वारस
हा सुरे सुर अतपवे सपे ग्यान अगोचर बिधि जुत बेद पुरान

ति: सिधमनोरथ होइसब: उरब्यापेनअनीति॥१॥ करमकथारघुवी
रकी सुनि श्रुतिसमतसार: गोपदसीतवसिधुगनि: प्रगटतरैजन
पारमा॥ हरतुसंकीआपनी: पूरबजनमप्रसंग: करनबाइसदे
हकी सबेकलोहितसंग॥२॥ सातप्रसनइछेसमुझि: बाइस
सोबिहंगेस: समाधानतिनकेसबे: कीनोनासकलेस॥ गरुड
॥ कलोषगेसतुसंकहे: प्रभुतवबोधप्रसाद: मायासंभवदु
खदमम: बिसमयगयेबिषाद॥४॥ मैअबजानेजनममम:
नोकृतकृतसुनाइ: कृतप्रतापरघुनाथके अखिलबसेउरआ
ग्रह॥ प्रभुमायासंभवप्रगट: उरबाढ्यअग्यान: तेबाइसतवबो
धतें: बिषमबिषादबिलान॥७॥ रामचरनरतिरूपरस: उ
पजेचितअपार: मोहजनितसंदेहमम: बिनसेबिबिधिबिक
रा॥८॥ आदिब्रह्मअवधेसये: पूरनपुरुषप्रमान: मायाजो
गसुमेथली: लषमनसेषसुजान॥९॥ कबित॥ अगुनब्रह
मअवतार: प्रगटरघुनाथप्रमानें: महासकतिमेथली: जो
गमायाजगजानें: बलराबनषेकस्यो: लागिलकागदलीनो
सरनबिजयपंजरसुनाइ: दुरजनकहंदीनो: सुनिरामचरि
तनरहरसुकबि: नाग्पउदयमेरतये: बाइसप्रसादतवअ
तिबिषम: मोहजनितभ्रमतजये॥१०॥ कबिकुबाच॥ दोहा॥ अ
अमरलोसुआपनें: बाइसप्रेमबिदेह: संसयमिटप्रबोधसु
नि: गरुडगयेनिजगेह॥११॥ काकभुसुंडीगरुडको: साधस
गुनसंबाद: कलोसुषदनरहरसुकबि: प्रभुरघुनाथप्रसा
द॥१२॥ इतिश्रीरामचरित्र काकभुसुंडगरुड बाद॥ प्रसंग
समपूरन॥ अथ बसिष्ठआगमना॥ कबिकुबाच॥ कबि
त॥ येकसमयअवधेस: रामअतहपुरराजित: नामज
नकजाबाम: नागजुतप्रेमबिराजित: द्विजबसिष्ठगुरदेव
दहानतमारगआये: प्रभुप्रनामकरिप्रीति बिहतआस
नबैगये: करिकृपातहारघुनाथकहि: नगतबिछलजुग
जोरिनुव: गुरराजतिहारेआगमन: हमसुआजकृतकृतकृत्यव
॥१॥ बासिष्ठबाच॥ दोहा॥ देनलगेमोहिनृपमनप: पोरोहि
तपरप्रीति: तहानकोस्योकुंतुरत: नवउपजीमननीति १

पुनि मोकहँ लैनो परै दुषसुषकारन दानः नृप आपा मानी नहीं
कै न टिरलो निदानः॥१॥ तव ब्रह्मा मेरे पिता आज्ञा दीनी ये कु
यामह अतुलित फल अषिल है सुत निसंदेह॥ ब्रह्म बचा कै देह
रिय बंस मह त्रेता जुग अवतार रामचंद्र नर देह धरि नवह
रिहैं नुवतार॥३॥ जप तप संजम जोग जिग तेरे बाहिर अंग
इन कुन जो फल पाइयै सो याम कै अंग॥४॥ पुत्र पुरोहित प
द प्रगट तेरु अबै चितलाइ आगे यातें फल अषिल मो पै कहै
न जाइ॥५॥ जगत पितामह अजअमर मेरो पित हितमानि
हि मिथ्या ताको बचन पैय हबेद प्रमानि॥६॥ तबै पुरोहित पद प्रग
ट मेलीनो हितमानि ताको फल पूरन पुरुष पायो अबै प्रमानि
॥७॥ जो पै दरसन जोगने दुरलभ तुरग मदेव मेसुष ह पायो सुग
म अवधेस अजेव॥८॥ तव प्रताप महिमा अमित दिव्य अमानु
ष देषि सब बिधि परमानंद सुत बारत चित बिसेषि॥९॥ प्रत्य
ष बरमा प्रसिध पुरोहित पद पाइ जनम जनम तव नग
ति जस मम उर होस माइ॥१०॥ रूप अलोकि करावरो अषिल
ईस अनंग मेरे लोचन प्रानमन सदा रहै बिसंग॥११॥ क
लो राम तब जो रिकर परिबसिष्ठ के पाइ करत मनोरथ तुम जु
कछु सो सब होऊ सुनाइ॥१२॥ गये बसिष्ठ जुगगन मग पुरी
अमर सुष पाइ गावत महिमा राम गुन मन आनंद न माइ
॥१३॥ अथ बिधि आग मन॥ श्रीराम प्रति उ पद स॥ कबि
त॥ सोरग॥ इक दिवस रघुराइ सेग सकल सोदर सुनर उ
नमथल बन आइ सुषसंजुत बैठे सजन॥१॥ अवलोकत प्रभु ओर
सबै निरंतर बदन ससि जैसे चंद चकोर पलक न लावत प्रेम पर
बेद धरम रघुबीर उपदेसत आतन निअषिल धरिये चित सधीर रूप
तिजाते टरत न वार॥ छंद दुहै अथ श्रीरामबाच॥ मेरे मत अनुसार
नमानै सो मम बल न साध सयानै॥ कबि कुबाच॥ रहा चतुरानन
मुनि सुर आये बदन करि आसन बेगर॥ श्रीरामबाच॥ कहो बिरंचि
आगमन कारन तुम जगपूजित जग तिबिस तारन॥ बिधि बाच॥ कह
बिरंचि हाजोरे कर रामदेव तुम गुरु कृतेगुर समस्त तत्त सरस
हर सुर सुर अलप बेस पेषे पान अगोचर बिधि जुत बेद पुरान

किसीताहिबीर: सोलग्योरहसागनसधीर: करिथावरजंगमहाहाकार
इहांतरंगगनबानीउदार॥ आकासबाणी॥ करिबोनहिसाहसलष
नकोइ: हरिइंछासोमिथ्यानहोइ: बिलपातकरतफिरिमहाबीर
सीयचलेछांडिलछमनसधीर: मुरछाइगिरीसोधरनिमांहि: निहचे
कछुचेतनरहोनाहि: सीयदुषितदेषिइकमहासाप: पुनिकरीआं
निफनछाहआप: इहाबालमीकरिषत्रमतआइ: सुषगहनमांहिअप
नेसुताइ: तहदेषिअतिहिअबलाअचेत: महसोचतयोमनक्रमसमे
त: इहकरेपवनपुनिनिकटआइ: सीयतरकछुकसंपासुताइअबा
लमीकबाचातुमकवनइहांकिहितआइ: सोचयोबिप्रपूछतसुताइ
सीताबाचमिथलेससुतमम सीयानोम: बिस्वेसनृपतिकीधरमब
म: निरधारहतमेंकछुनजानि: इहदसाछांडियेइहांआनि: तहबे
लमीकसोकहेसीत: प्रभुकवननामआपुनपुनीत॥ बालमीकउ
मिथलेसगरुरुबालमीक: इहांआश्रमहैबरजितअतीक॥ कबि
इहा॥ सीयआनीसनमानसो: बालमीकनिजबास: राषीपुत्रीहे
तकरि: पूरनपुनप्रकास॥१॥ रिषपतनीसूरिषकलो: महलछम
अवतार: करफुलगतिजुतजोरिकर: प्रजाबिबिधिप्रकार॥२॥
हांतरपूरनअवधि: सुतबीतेदसमास: लवकुसनामहेसकुल
प्रगटेपुत्रप्रकास॥३॥ जाएसुतदोजानकी: एकहिकालअनेग: ज
गतबिदितजुगजोरवा: अरुलछनजुतअंग॥४॥ बालमीकृतजा
बिहतजुबेदबिधान: कहेजथाक्रमलिवकुस: पोरुषनी
ना॥५॥ छंद चौपाई॥ पुनिमुनिबिद्यासकलपढाये: सस
त्रजयमंत्रसिषाये: अरुनिजराजधरमअभ्यासे: बालरिष
निसंगबननिबिलासे॥ इति लिव कुस उतपति अप्र अलमे
थ कबिकबाचासोरठा॥ एकदिवसरघुइंद: सुनमंडपबैठेसभा ब
सिष्टादिमुनिबृंद: सोनितबिसवामित्रसम॥१॥ श्रीरामबाच॥
पुनकुबसिष्टसुजान: कसोरामजुगजोरिकर: सीताप्रीयासमा
न: मैंकीनेसबदानमषा॥२॥ अबरछामनआइ: करनजग्यह
यमेदकी: सबरिषहोफुसहाइ: सुपेकरावफुकरिकृपा॥३॥ ब
सिष्टबाचाछंदपधरी॥ उतरबसिष्टतहांदियोएह: सुनिये
जुबेदमतनिसंदेह: करियेजुकूरमधरमायिकार: सोसंगहो

तत्रीयजुतसंसार: त्रीयबिनजुकरियेधरमतंत: अगहीनसुनि:
फलहोरअंत ॥ श्रीरामबाच॥पुनिकहोबचनयोअवधिरूप
स्वरनमयरचोसीतासरूप: वहुवामअंग हमधरहिओनि: सुन
जोरिअंथिपटजुप्रमोनि ॥ कबिकाकीनेप्रमोनिगुरजग्यकाज:
सबबोलिरामसुनिवरसमाज: कीनेतहाजग्यारंभकाम: सित
बाजिकरनतिहिबामस्याम: तनहिघलछनजुतसकलताम: अ
जेजुजथाबिधिबोधिपट: सुकलाइद्योसंगसुभटथट ॥ ६॥
हयमुक्योअवधेसथह: करिमसतकमषअंक: बहुविधिजो
नपकेबली: सोपेअहोनिसंक॥१॥ सत्रयनपठएसंगतिहि: ह्य
रहाकेहित: पाछेपाछेफिरतपुनि: सेनासबलसमेत॥ छंदपध
री॥सुवनमतजहाहयआपनाइ: घनघुरतहुहिनीसानयाइ
जिहिजिहिसंगरहतउचितजोग: पाछेसहोतपुरनप्रयोग: इहिंगो
तिभ्रमोहयअवनिअंत: तहांवीतवरषसवमिलेतंत: तहांअस्वअ
पनेसहजआइ: सोपेरोमषसालसुनाइ: करिअरचापूजाविबिधि
कीन: पुनिरागमहयद्विजदानदीन ॥ ६॥बालमीकमुनिरहि
समय: मिलिबहुविप्रसमाज: आयेलिवकुसअग्रले: रामजहरि
षराज॥१॥देवजथाबिधिपूजिदीय: बालमीकसुनबास: होम
मंत्रजहातहरूरष: पुरआनंदप्रकास॥२॥ मुनिबरबालकसंग
मिलि: गावतलवकुसगीत: सरिताबनसरवरसुषद: पुनिज
हारमतपुनीत॥३॥ कृतचरितरघुनाथके: बालमीकबाषानि
सुपेपढायेलिवकुसहि: बालबिप्रसुतबानि॥४॥ करनिबज
वतकिनरी: सवगावतमिलिसंग: सुनतहोतथिरचरथकित: उ
पजतहैसुषअंग॥५॥छंदद्वेअषरी॥ सुनतलोकतिहिअधिक
सुहावन: अमतसंगबिछुरोनरीतावत: सालजग्यमोकअवध
सर: बसिष्टादिसबबेरेमुनिबर: इहलिवकुसरिषबालकआ
ये: संगफिरतजेसषासुहाये॥ बालमीकउ॥ बालमीकत
वतबिचारयो: यहलिवकुससोबचनउचारयो: गावहुपुत्र
रामगुनगीता: पावनपरमप्रसिधपुनीता: येरघुनाथचरितमि
लिगाये: सुनतसनामनपरमसुहाये: जोकछुबालमीकमुनि
गाये: सोपेनोतनगीतसुनायो: मनआनंदितभयेनमुनि
नि: सुंदरसुषदगीतधुनिसुनिसुनि: पुनिरघु

षपाये सिसुनिअपूरबपाइसुनाए तंत्रीरवबाजन मिलितेसी
जथागानअमृतश्रुतिजेसी मनअतिरीझिरामताप्रोमुष सुनो
नगीतआजलोयहसुष निथतरीझिअतिदसरथनंदन कलो
नरतसोरोरनिकंदन ॥ रा म ज ॥ तहा ॥ अयतस्वरनजुदि
अअब इनहिसमरपेआनि द्विजबालककेअहदिन होइहरि
हकीहानि ॥१॥ द्विजसुतजानिजुदिअहीय करिदयोइनतरि
करिनकुरीचचलकुटिल मनकुछुरीबिषमरि ॥२॥ लिवकु
स बाचाक सुनकुनरतयाइअसु हमहिनहीकछुक
ज करिजाचेनालेइकछु रीझिदेकुतिहिराज ॥३॥ हमतोज
चिकनाहिनै हथओरिपुनिलेहि दुषितदरिद्रीदीनको देइ
वकुपाकरदेहि ॥४॥ क बि रा ॥ जाकेकुलिजेसीजुगति हतस
हतसुहोइ लालचप्रानअतलो करिहेअकरनकोइ ॥५॥
कबित ॥ बालबचनसुनिसुनिबिबेक नयोअचिरजनारीय
बातनतकजुतकरत बिप्रचितहतबिचारीय चितयबदनत
बरामचंद्र लवकुसहिबिलोके सोचकोरनिसिचंद्र र
हेइकटकपलरोके दुकुयानिहारितइस्पबदन रीझिरीझि
रघुनाथरुष सुनिकहुपरसपरमिलिसकल मनकुमुक
रप्रतिबिंबमुष ॥१॥ पतिकीनोपरित्याग सीयानिसिअर
धनिकारीय हमपुरअवधिअनीति नयोहाहरवनारीय
बालमीकअपनोबिचारि आश्रमलेआये पुत्रीनावपुनीत
बिधिहितचित्रबराये तिहिगरभमोषपायेतहा उपजे
द्वैबालकअतुल सुंदरसरुपएईसुपे करहिप्रकासदिनिसकु
ल ॥ ॥ क बि रा ॥ आपबदनअवयस हसेअवलोकिमुकरम
हि अरुलिवकुसकीओर रहेजुतचितेचितेतहि नवननेद
संताप नाहिकछुइहानिरासो बालमीकसोहसिबिसेषि
यहबचनउचारयो कोयेअद्भुतउपजेकहा संजुतसह
जसुनावरे अषिलेसप्रबलमायाआजित रामपुत्रयेरावरे
॥ बा ल मी कृ ॥ तहा ॥ बामायरमसपतिब्रता गरभवती
गुनआम ताकोकीपरत्यागतु मनछायहरा ॥१॥ मेरेअ
ग्रमनोजनम सीयागरभसत्रूप कितरनकेजोजातक

म पिता राम ये पूत ॥१॥ जानो राम सुजान जब ये सीता सुत आहि । न
हीलजाकछु नीति तय रहे अथो मुष चाहि ॥२॥ चलि रे बाचा बसिष्ठ
हि द्विज कहि बिमल । मुनिवर बिस्वामित्र राघव माया बरी ॥ त
के अमित चरित्र ॥३॥ रहे सुरासुर षोजि हहि । साधरिषी सुर संत । म
या अति बल मोहनी । याको लखो न अंत ॥४॥ पावन परम पतित
न । सीता हे सुत साथ । आन कुमति हि आपने । हेतजु कत धरि हाथ
॥५॥ परनी ताग रूप दमनी । मिलि संग धरम कुमार । अति मंगल क
रि आपने । आदर सहत उदार ॥ छंद पधरी ॥ सुनि बचन जथा बि
धि अवनि ईस । सुर गुर के बंदे चरन सीस । प्रभु करे बचन सबके
प्रमान । जानु कीहतरघुबर सुजान । सत्रघन बोलि अंगद सधी
र । बानर सुषेन हनुमंत बीर । इन को प्रभु आपे दीये कु सीय
आनो आदर जुत सनेह । सो चलत हाचव कोल साजि । बालमी
कज हा आश्रम बिराजि । आरो हित बेच कोल आप । पतिव्रत
सती पावन प्रतप । सो आश्रम पसाला समीप । पग धारि सुहे स
बरिषीप । करि बालमीक आगे रिषेस । पुनि करे जग्य साला प्रवे
स । रवि तेज बिस्रु रघुबंस राज । अति छमी सीया सकल तिलज
निज बाम अंग आनी निहोरि । जुग बसन बिमल गुरगा बिजोरि
कृत जग्य जथा हय मेद काज । संभार सार सपति समाज । बिधि
बेद करे सब मष बिधान । पूरन कुतिहीन अमान । मष तय
स्वाग पूरन सुजाद । नीसान सयन तय गहरनाद । जय जय सब
त्रय लोक जान । पुनि बजे गगन दुंदुभि प्रमान । सुर मुनि स
जे नाट कसमूल । लहि समय हरष सुरबर षि फूल । नव नुवनि
सान मिलि एक नाद । पुनि रये राम मुनि मष प्रसाद । बिधि जु
कत बसिष्ट पूजा बिसेष । अभिलाष करे पूरन असेष । जग्या
धिकार द्विज चारि जानि । पुनि तिन हि प्रथम पूजा प्रमानि । गज
अयत एक गनि अयत बाजि । त्रय अयत सुरलि द्विज एक साज
संतुष्ट करे सब द्विज समान । गनि कोन दान तिन के अगान ।
अति विप्र ग्राम जाचक अनेक । बिधि जु कत दान आदर बिवेक
मष तय सपूरन स्वाग सिध । पुरतीन तय बाजित प्रसिध । व
निरामर जबे बिमान । तय प्रतापसीता समान । तरतादि
रत्न चलि अग्र ताग । सुन पत्र चमर दार हि सुनाग । सुजिष्ट

ष्टिअमितचतुरंगसेन: मिलिगगनरेनमनुदिवसमेन: निरयोषबा
जिनतनुबनिसांन: बहिअवधिपुरीमंगलबिधांन: रघुनाथपथ
रेराजद्वार: आरतीकलसबाजितअपार: हितजुतनोछावरिदिब्य
होर: कुकुवारपारपावेनकोर: प्रभुरहामानअहपाउधारि: अने
कपीवहिजलवारिवारि: पुनिलगेरामजबजननिपार: उरलाइ
हरषलीनेउगार: क्रमजुकतजननिसोमिलनकीन: पेलगीस
यासमुनिप्रबीन: सुतसनासाजिबेसधीर: बिसेसरामरघु
बंसबीर: नरबानरराकसमनुजजाल: सुतसनासबेबेसु
टाल: इंद्रादिदेहधरिमनुजअंग: सबसोनितबेगेसनासंग: ब्र
हमादिसकलमुनिवरसमाज: बिधिक्रमबिसेषआश्रमबिराज
सबकीकरिपूजासमाधांन: सुरपूजिसिधचारनसुजांन: बंदीज
नकिंनरगांनकार: बाजित्रबिहतनारकबियार: रघुराजकरत
योअवधिराज: सुतबंधुसुनरसेनासमाज॥ अथलवनसु
रबधप्रसंग॥ कबित्त॥ एकदिवसअवधेस: सोनितबेग
नृपसनाः मिलिसंगचिवनमुनेस: पुनिसोआयेरामपंह॥१॥ग
दहेवद्वार: द्विजकालिंदीकूलके: हाथजोरिप्रतिहार: कीनोअ
निरघुनाथकहा॥२॥उठिप्रभुसनमुषआर: कीनेबंदनजोरिकर
लीनेमध्यबुलार: बेगरेक्रमजुतबिहता॥३॥श्रीरामबाचाह
ता॥ इहाजुकारनआगमन: द्विजसोईकहोनिदान: अभिलाष
जोईमांझउर: पूरनकरोप्रमांन॥४॥ द्विजबाच॥छंदपधरी॥
हमबसतबिमलकालिंदकूल: सुरसायकरतसेवासमूल: तव
राजदुषितकोउनाहिदेव: नवसूतसुषीसबआपतेव॥चिव॥
मधुनामदैतकृतजुगकुचार: अतिहीप्रतापतोबलअपार: तिहि
करीसंतुसेवासमूल: करिकृपातोहिदीनोत्रिसूल: सुरअसुर
सीसबहपरेसूल: सोरतिसमतहाकैहैसमूल: आरहेफेरितवह
थयेह: दुरजनहिदाहकरिनिसंदेह: मधुसोनिजुल्योद्विजपरसराम
सुनितासनामनजिगोसंग्राम: निसचरीनामकृतीनसोय: तिहि
देसग्रहबहुनारीय: सनूतउदरतिहिअतिअसाध: उपजेसोल
वारनसुरबलअगाध: सोमहादुष्टअतिबलीसूर: सुरअसुरबि
ग्रहिसकसमूर: अतिदुषितसपीडतअधीन: देवकेसरनद्वि

जग्राइदीन ॥ श्रीरा मबाच ॥ बिसेसदर्ईबाबाबिसेष: अबबिप्रअ
नयमानोअसेष: ममबचनबिप्रकरियेबिस्वास: निहचैलवनां
सुरहोइनास: यहिचितधीरद्विजजाकुअ हे: अपनेअकरमषय
जाइए हे: प्रभुकरेतहाकहनांप्रचार: ज्ञातनिकोंदीनोंजुपनार
हमदयोद्विजनकोअभयदान: पैकरोबीरकोउ प्रमान ॥ नरत
करजोरिनरतबोलेसकाज: आप्यमहमोकहंदेकुआज ॥ सत्र
यन आ ॥ न हातमकिनिवेद्यो सत्रुघात: बिबेससुनोयहलत्व
त: देवाधिदेवपावरीदीन: करिकृपतरतनिहिपूजिकीन: सुषर
हेलषनबनवाससंग: अतिकरीसेवदुषसहेअंग: मोहिआइस
दीजेयहेराम: करिकृप्रतापतवसियकाम ॥ श्रीरा मबाचा ॥ ग
बंतकलोसुनिबचनप्रात: तुमकहंदृजमंकलदयोतात: निजक
रकुआपमुथरानिरांन: पुनिपुत्रपोत्रबसिहेप्रमांन: पैकिकुजुग
तरहेतपार: अवतरिकुंकुंजदुबंसआइ: तिहिमंकलले कुलावतां
र: नवनृतसुषदजबहरोनार: मेरोवहबलतदेसमांनि: जहाबृंद
दीबासजांनि: ॥ कनिकुबाचारीनोंदृजमंकलराजदेव: अजुषे
षकस्योप्रातहिअजेव: निसचयकरिदीनोंदिअबांन: प्रभुदृईत
हासि: व्यप्रमांन ॥ श्रीरा मबाचा ॥ सोअसुरनिसपूजितत्रिसूल
मनिकनकपीठिकुपूरसमूल: पुनिजातआपकुंहतनप्रांत ब
नजलबिधिनहनबिधांन: तिहिसमयदुष्टकोरोकिद्वार: न
यरहतुमहिआयुधसंजार: लषितुमकहंद्वारप्रवेसकाल: करिकोध
जुधकरिहेकराल: तिहिअवसरमारकुअसुरताहि: जतनसोरहोमति
जागिजाहि: पुनिमधुबनपुरीबसाइपूर: सयामजीतिमुहिमिल
कुसूर: ॥ कबिका ॥ हितकरिप्रबोधप्रभुप्रसनहोइ: संगप्रबलसेन
दीनोंसजोइ: बनिसहसपंचसतसजबबाजि: तिहिअरथबिमलसिंद
नबिराजि: मिलिअग्रेसुरषरसतमतंग: अरुअयतनीनपयदल
अनंग: सत्रयनकोकीनोसमाधांन: पवयोप्रचारिबलदलप्रमांन
षटदनदिवससंक्रमीयसेन: रविरुधगगनमगचढीरेन: सेनाअ
नंगसमरुरसधीर: तहादीयमिलानरविसुतातीर: लवनांसुरक
रिपूजात्रिसूल: मिलिअजनबदनमंत्रमूल: पुनिकस्योनिसामुष
बनप्रवेस: इनआनिद्वाररोकेअसेस: पूरेअहारषलत्रिमपार: अ
लसातगातपुरद्वारआइ: स

कोपआनिजूटेकराल: कछुकालनिस्योसंग्रामक्रुध: जाजुलिनयोउ
बीरजुध: तबदिव्यबानउरहयोतास: सत्रुघनजैत बाजेप्रकास: उष
रेबिप्रनऐहरषवंत सुखबसेतहांरिषसायसंत ॥ दो॥ मधुबननि
करजुमयुपुरी: रवितनयाकीतीर: बस्योसुपतनअतिबिसद: नि
पजतअनसुषनीर॥ बसेजथाक्रमपुरबिमल: मथुरामंडलमाहि
चिंतनसुषलहिबरनचव: निषलरीतिनयनोहि॥ कुललवन
सुरनासकरि: बाजेजैतबजार: कीनोदरसनरामको: इहांसत्रुघन
आसा॥ अथ कालपुरुषआगम लछमन पतीग॥ कबि
द॥ दो॥ धरमराजद्विजरूपधरि: कालपुरुषइककाल: पुनि
सोआयोरामपह: बेगेसनाबिसाल॥ छंदपधरी॥ प्रभुतबेराज
मंदिरपधारि: सोबिप्रबोलिलीनोसंनारि: नरनाथलषनसोकहि
निदान: निजद्वाररहहुतुमसावधान: नरनाथलषनसोकहिनिद
न: इहिंहआवरआवेजकोइ: कहतोतुमहिनिसकहोइ॥ श्रीराम
॥ द्विजताहिदछितबरामदेव: नवआगमकारनकहेतेव: किहि
पग्येहोतुमकवनकाज: अनसककहोबिरतांतआज॥ कालपुरुषवाच॥
मुहिकालपुरुषजानहुमुरारि: कारनतवदूतबिनासकारि: प्रभुपास
मोहिब्रह्मापगार: संदेसकहुसुनियेसुनार: बिसेसकरेसिवज
प्पबिनास: तहांबदेनीरलोगेअकास: तिहिमध्यकरेतुमसेषसे
न: निजइछारघुबरकमलनैन: तवनाभिकमलतेकमलनाल: ब
स्तियोमहाबारिजबिसाल: वहिबारिजतेमोकउपार: सोदयो
प्रजापतिपदसुनार: निजमायामैबिसतारकीन: निसचरउपरा
जेदैनवीन: मधुकेटभनामामनमलीन: नवनयेअसुरदोउपाप
नीन: बेचरसोलागेमोहिथान: देवतुमकरीरहांनिदान: मधुकेटभ
दोऊदुष्टमारि: मुहिराषिलयोतुमहीमुरारि: असुरनिकेनिकसीमेद
अंग: नवरचीमेदनीतिहिअनंग: असथानिकेपरबतकरिअमान: थि
रमोहिप्रजापतिथप्योथान: हिरनाषिहिरनकसिपसहित: तहउ
जेआसुरदुष्टचेत: सोमारेतुमहीसुरसुहार: राजाधिराजरघुब
रार: अतिबलीनयोबलिदैत्यएक: बिसतारधरमबाचाबिबेक
रलोकनयेतिहिजुधसाधि: अरुकरतनयेनानाउपाधि: तुमबाधि
हापग्येपताल: सुरलहेलोकदरिद्रसाल: पुनिनयेदुष्टराकसस
प: तिहिरावनसुरकीनेसंताप: सुरकाजताहिमारनसनाथ: न
हनयेतुमअवधिनाथ: तहांबरषसहस्रहपारबितीत: ब

पीसनारटाश्चौपुनीत:-अवधेसअवधिअबनिकटआए: भगवंतकरउ
जोचितन्नाए: कछुअजकुष्टथीजोराजकाज:रघुनाथकरहुनरदेह-
राज:सुरलोकगमनजोमनसुहाए:करियेसुनाथसुरदेवकाए:कहि
कालपुरुषयेबिधिकहाव: रोकेहरिबोलेअवधिराव: ।। श्रीरामजी
कलोकांतनुममंत्रजानि: मेरेसोईइछाहीप्रमानि: रघुनाथकलेरघु
बंसराज: हमकरेजथाबिधिदेवकाज:अबरछमनमहरहीयेह:
सोईबकरोमेरेअतिसनेह:सबमनुजजालबानरसमाज:करिबो
अबरनकोमुकतिकाज:सामीपमुकतिमभरहेसंग:अबयहेकाज
करिहुअनंग।।कबिरुबाच।।दुरबासायाहीसमयआए: सोईराजह
रगदोसुताए: मांहजबजानलागेमुनीस: सोमित्रकलोपदबंहिसी
स।।लछमना हैराजकाजमहबिघ्नहराम:ग्रहरावबिघ्नछनहिग
म: कहियेमोहिजोकछुआहिकाज:रघुपतिहिनिवेदोरिषराज।।
दुरबासाउवाच।।इहिछिनकेंकरिहुदरसआज:कैहैसरापकरिहुअ
काज:द्विजकलेजुदारुनबचनदेषि:बससोचभयेलछमन
बिसेषि-इहाआइरामपहलषनआप-दुरबासाआगमकहिसर
पं:यहसुनतमात्ररघुपतिप्रबीन: पुनिकालपुरुषकहंबिदाकीन:
रामबाच।।अवधेसतबैसामुहेआए: पूजेदुरबासाबंदिपाए:रिषक
हंतबपूछेमहाराज:कहियेमुनीसआगमनकाज।।रिषबाचसुहि
सहसबरषउपवासमांनि:जगदीसपारनांदेहुजानि:इहांबिबि
धिनांनिभोजनअलाए:जुगतिसोरामरिषबरजिमाए:अनेकनां
निदीनीअसीस:सोईत्रिप्रगयेआश्रमरिषीस।।इतिकालपुरुष
प्रसंग अथलछमनपरित्याग।।छंदपधरी।।कबिरुबाच।।बि
स्वसकरेइहांचितबिचार: हैबचनभंगपातकअपार: दुषसोच
कलितरघुनाथदेषि:बिसमयमनलछमनबढिबिसेषि-जगदीस
अंतरजानिजांनि:पुनिकहेलषनतहांजोरिपांनि।।लछमनउवाचकरि
येनप्रतंगपालंगकाज:अषिलेसकुंबधजोगिराज: ममआहिकलेव
रकवलकाल-पुनिनईअवधिप्रभनकृपाल:जोकरहिनाथममहित
कलेस:हुंनरकपात्रकेहुनरेस।।श्रीरामबाच।।बोलेबसिष्टमं
त्रीसुमंत: तहांकहेपुरुषआगमनतंत।।बसिबाच।। प्रभुसोबसि
ष्टकहिजोरिपांनि:ऐसीहीनावीबनीआनि:जावीनटरेअनंतई
रूप:सुरअसुरखेअनेकरूप:प्रभुबधनेहुसहपरित्याग:सोक

रियेलछमनकहंसनाग: बिधिबेदकहीजोगुरबिचारि । सोईलईमानि
मनक्रममुरारि: बिस्वेसप्रतग्याकरिबिसेषि: सबधरमनासकैहैअसेष
बिधिधरमटरहिमानोंबिसास: नरनाथहोइत्रयलोकनास: तुमसर
धरमरहकत्रिलोक: सोकरहुदेवअबतजहुसोक: गुरबचनमानि
रघुबरसग्यान: निरधारयहकीनोंनिदान: यहसमयसनाबेगेउदार
हितकरेआनिलछमनजुहार ॥ श्रीरामबाच्य ॥ बससोक लषनसों
कहिबिभात: तुमजाहुजहामनरुचेतात ॥ कबित्त ॥ सोसुनतमा
त्रलछमनसधार: निजग्रेहबंदिपदगयेबीर: दयेबेदबिहतब
हुद्विजनदान: सुतराजतिलकदलक्लसमान ॥ ६ ॥ लैलछमनबे
राग्यपूत: तिहिछनसरयूतीर: करिकुसपल्लवतलपकरि: बेगेनि
रनयबीर ॥ ७ ॥ कस्योस्वासअवरोधकरि: धरमधारनाध्यान: प्रभु
आग्यालछमनप्रगट: पायोपदनिरबान ॥ ८ ॥ इंद्रादिकसुरसि
धसब: इहासामुहेआइ: सैदेहीलछमनसुषहि: दिब्यआसन
बैसाइ ॥ ९ ॥ चमरदरतबरषतकुसम: सुरगनसंगसनेह: लछम
नआग्यारामलहि: आयेसुरगसदेह ॥ अथमातकोसल्यादिक
बैकुंठगवन ॥ कबित्त ॥ सोरग ॥ एकसमयएकांत: बैठे
रामबिरागबस: करुनानिधिर्श्रीकंत: ध्यानबसथितधरमधुर
॥ ॥ छंद ॥ अषरी इहिछनकोसल्यातहांआई: ब्रह्मजानिसुतन
वबिहाई: नमसकारकरिबेगनिसचल: पुत्रजदपिपोषेहैपेलप
ल: नियतइहांसुतबुधिनिवारी: चीन्हेपूरनब्रह्मबिचारी: तवनहीआ
दिमध्यअवसानां: जगतआदितुममेयहजानां: पूरनपरमानंदपरा
तम: एकतुमहिब्यापकसबआतम: जदपिमनुजदेहमेंजाय: लेते
अंकनिसंकालमाय: अंतअवधिसबनीयरेआई: मोहनमोहतथा
पिमिटाई: बोधनउपजिछेदनबंधन: मुकतिहोइजातेक्रमबच
मन: जुकतिअबोधकरहुअबजाते: तुमपरब्रह्मदिष्टहोइजाते
कबित्त ॥ मातबचनसुनिअंतरजामी: समयजानिबोलेजगस्वामी
श्रीरामबाच्य ॥ मातमोछिमारगत्रयमानहु: प्रथमहिकरमजोगपह
चानहु: दूजोग्यानजोगहितदृष्टक: समझहुतीजोभगतिसुतारक
मारगतगतिसुगमहैमाता: सोपित्रिगुनमयबिस्वबिष्याता: सात्वि
करजसतामससंगी: येसाधनतवनूतअंगी: हिंसाअरथदं
भमिलिमछर: क्रोधबिरोधकतेदृष्टिकर: वहपेतामसदृष्टि
कहावै: प्रानीकरेतगतिफलपावै: अंतरतेदबुधिआराधे: सा
धकहवैतगतिहिसाधे: राजसतगतियेजुतअहमति: पुनिता

केतेसेफलप्राप्तःरहतकामनोकरिमनबचकया:नेदबुधिबरजि
तजोनिस्तय:सोपेसरबनिमतनारायन:प्रभुहिसमरपेनजन
परायन:रहिबिधिबरतेमुकतिउपावै:क्रमसोईसातिकनगति
कहावै:जिहिमनहुमरहेममभाही:होरकबकुपेअंतरनाही:जो
गंगासागरमहजारी:रहेपेकहैतहांहराई प्रानीसरबब्रहममम
यपेषै:दयादिष्टिसमनावहिदेषै:सदाकुसंगबिबरजितसोई:हेतप्र
तिसतसंगतिहोई:बेदप्रजादसतमुषबानी:पुनिमोमांझमिलैसो
प्रानी:तातेपुत्रनावसुषदाता:ममसूरतिमनराषकुमाता:रामथ
रमसूरतिउरधारी:धन्यास्वरगसदेहसिधारी॥ हा॥ हैसालोकि
कस्वपमुन:मुकतिसजोजिसऐव:बेदबिहितयेचारिबिधि:दु
रलभकहिद्विजदेव॥१॥तीनमुकतियेलांघितव:मिलतधरमम
रजाद:कोसल्याचोथीमुकति:पाईरहतप्रमाद॥२॥जोगजगति
साधीजतन:केकेईनि:काम:पायोस्वरगसदेहपुनि:मातप्रबो
धतराम॥३॥साधसमित्रासत्ससंग:पावनइहीप्रकार:स्वरगसिध
रीदेहसो:आप्यारामउदार॥४॥इहासुमित्राकेकई:पतिसमीपप
दपाइ:तनतिहिसेवाकरतते:रहिसंगकोसलराइ॥५॥ कोस
ल्यादिकमातकहु:दीनोंमोछिसंदेस:सफलतयेसाधनसबै:
रामप्रसादसनेहा॥६॥अथ सीताप्रसथांन॥ कबित्त॥सो
रग॥ ब्यापतलषनबियोग:रामअगनिप्रजरतउरहि:पेनहि
रग॥ बिपुरतप्रयोग:असनबसनबिससेतयो॥१॥रहतसोकबसराम:बि
धतउरभ्राताबिरह:ममलषमनसुषधाम:हाहापुनिमिलिहै
कहा॥२॥ बिहबलकरतबिलाप:तरफतयाइलसतबै:यहप्र
कारप्रभुआप:नावमनुजदाषतकुवना॥३॥श्रीरामबाच॥ एकदिव
सअवधेस:मंत्रगूढकहिमैथली:प्यारीकरकुप्रवेस:आगेतुमबै
कुंठअब॥४॥यहपेसलोनजाइ:ब्यापेलषमनकोबिरह:नामनिमि
रैनाइ:सुनिलगतसंसारसब॥५॥कछुकबितीतिकाल:हमपाछे
हीआइहैं:स्वरगपयानसुढाल:करिबोहेपुरअवधिकै॥६॥ये
कसमयअतिराम:सोजितगुरिषिबरसजा:मिलिबेगेरघुराम
धरनीधरसिरछत्रधरि॥७॥अंतरनावअंग:जांमोपतिकोजो
नकी:अतिहरषतअंगअंग:आनिनईगदीहहा॥८॥श्रीसीता
बाच॥ छंदपधरी॥ पुनिसूर्यसनमुषजोरिपांनि:बिधिबेद
बाच॥

कहोसीयबिमलबानि: सुनिमातधरनिममबचनसार: बिस्वासम
तिदीजेबिहार: कंसतीजपेपतिहतासाथ: अंतरगतममरयुबरअ
राथ॥ कबिकु॥ यहसुनतसतीबाचाअषंड: पृथीदरारषाईप्रचंड
पातालदेखिहितचितप्रमानि: बिचबिवरदिव्यआनेबिमान: पुनिथ
रिदेखिमैथलीपानि: आरोपितदिव्यासनहिआनि: नीसानगगनन
तनुवनिनाद: संसारअषिलजेजयासद: पातालबिवरमारगप्रवे
स: बैकुंठगईसीताबिसेस: सुरपुहपकरीबरषप्रकास: पायेसु
रेसआनदप्रकास: इहिबिधिसोसीतास्वरगआइ: सोलईबिबुधब
निताबधाइ॥ अथ श्रीरामचंद्रपुत्रजनतीज निजमिलाग करन
कबिरुबाचा॥सोरठा॥ जनतीहिकरयुरूप: करतनिनहिउपदेसक्र
म: रामआपअनुरूप: मनक्रमबाचानृपधरम॥१॥ इहा॥ पुत्रजनत
जनकहंपृथी: बारिदईबिस्वेस: अवनिबसारसुषसहत: बिधि
जुतबेदबिसेस॥१॥नामजुधाजितजनतकी: इहिबिचिमातुलिआर
गयोसहारनिमंतलो: प्रभुकीआप्रपाग॥२॥ इहगंधरबनिसोनयो
नरतहिजुधनयान: तीनकोटिमारेतहां: अतिबलसत्रुअमान॥३॥
षितिलीनीसबमारिषल: नारथनरतअंग: नगरबसाएडैनये
तहाकरिकोटउतंग॥४॥ तहसिलापुष्करवती: नगरीरुवधरिनि
म: तहांकपुष्करकवरतहां: कीनोबाससकाम॥५॥ गंधरबनिसो
जीतिजुध: पुनिआयेप्रभुपास: करतसुसेवारामकी: संततनरत
प्रकास॥६॥ पुत्रजुलवकुसआपनें: राजधरमरघुराइ: तिनकहं
दीनोबारितहां: देसनगरसुषदाग॥७॥अपनीरजधानीअषिल
पुरीअजोध्यापाट: दयाजुकतलिवकहृदये: निजकरतिलकनि
लाट॥८॥ कुसकहंपुरीकुसावती: दुरगममालवदेस: सुषदराजद
लबलसहत: आपदयेअवधेस॥९॥ पारसरामआप्रगट: अंगेल
षनअंग: सत्रुहयेजीतेसमर: सेनाअतिबलसंग॥१०॥कलोऊते
प्रभुलषनकहं: उतरदिसाअषंड: मल्लालोकअनेकमिलि: बसत
तहांबलवंड॥११॥करोतिनहिनिरमूलकुल: सुतबसाइतिहिदेस
आनिमिलहुमोकहंअनुज: बल्लनप्रानबिसेस॥१२॥लहउतयम
ल्लालषन: मारेषेतमहीप: करनआप्रारामकी: सेनासबलसम
प॥१३॥लीयउतरधरसीमलगि: मल्लाकीयनिरमूल: उहंबसाएं
पुरउतय: सत्रुनराषेसूल॥१४॥लषमनकेसुतसुनलषन: पोस

रूपसमरप्रबीन। जेरे अंगद जानिबो। चंद्रकेतलयुचीन्ह॥१॥ अं
गदपुरदीयअंगदहि। सौंपसमृधसजूप। चंद्रकेतचंद्रावती। नग
रीदईअनूप॥२॥ देससत्रुघनकहंदयो। दृजमंडलबिख्यात। पुत्रव
सायेतहप्रबल। पुरीरहतउतपात॥३॥ पावनभूमिजुमथुपुरी॥
हितहाबसतसुबाह। सत्रघातकनवजबसो। रनअजेगरिपराह॥४॥
प्रबलसुरक्षतकरिरथी। इहिबिधिपुत्रबसाह। कस्योअकंटकराज
कुल। ऐकछत्ररघुराज॥५॥ छंद पधरी॥ पुनिकरतरहसिष्याप्रबो
ध। सुतउचितनतीजनिनीतिसोध। मिथ्याबचनबोलहिसीप
सबतजहिमूढमैत्रीसमीप। दैसुकरफेरिलीजैनदान। नहीतोरिमि
त्रसोहितनिदान। पुनिसातबिसनबरजितप्रधान। सबछांडिदुष्टदु
रजनबिसास। मंत्रीरूखेदिबयरथमानि। कबहुनबिप्रयुरतजहु
कानि। आखेटकरमकरिबोअकाज। रिपुभूमिसेघनहीउचितराज।
मूरखसोंतजियेमूलमंत्र। सबजातिमोनलोजनसुतंत्र। बिधिगूढमं
त्रकरियेबिसेषि। षटकरनपस्योबिनसेअसेष। अनकारनहुअनु
चितउपाधि। आरंभनिरथककृतअसाधि। अहनिसगजारहाअव
रु। दीजीयेजथाअपराधदंड। नवसावधानतपमंत्रभेद। दुष्टतात
जेपरमरमछेद। द्विजदेवबालधनत्रीयबिकार। बिषअगनिजानित
जियेबिचारि। पाउयेप्रजानहनिरपराध। सचिमानभंगकरियेनसा
ध। महक्रोधलोभनरुकाममोह। दुखादतजेनृपचितद्रोह। अनघि
थसुषनतजियेअसंक। करियेनहीनसोकलरंक। परत्रीयादिष्ट
पुरत्रीयप्रमानि। करियेजुअगम्यागमनकानि। इंद्रीरिपुनिग्रहक
रिअसेष। बिधिधरमसुजससंग्रहबिसेष। बिसतारकरफुनित
सोयबुधि। सबकालप्रकासफुजीवसुधि। मानियेहितसिष्या
मजाद। बरजितकुसंगमिथ्याबिबाद। पापीनवाकिनिहाप्रमा
न। अनदोषदोषदईजैनआन। करअकरसीसकरियेनकोइ। हि
तवानिकटबरतीसहोइ। पुनिदुष्टबुधिबरजितप्रधान। निहचे
नहुतकरियेअग्यान। सेनापतिगटवेउचितसूर। दुबध्यागतत
जियेसुजटक्रूर। कामीसलोभद्विजअकृतकार। करियेनताहिध
रमाधिकार। संकलपदिब्यसोंसावधान। दीजेसुआपनेहाथदा
न। राजश्रीआपबसकरेराज। बसतासमयेउपजेअकाज। बि
सतारधरमबिद्याबिबेक। इत्यादिदईसिष्याअनेक। सबन
इरहोसुतसावधान। नित्यनीतिधरमसाधफुनिदान॥ दूहा॥

इहि बिधि हित उपदेसये: दीने सुत निसुदेस: पृथ्वीरक्षा करि प्र
बल: नरहर प्रभु हि नरेस ॥ अथ महाप्रस्थान अजोध्या उध
र न ॥ कबित्त बाच ॥ लछमन के परिसागते: सोक कलित असे
ष: रघुपति मंत्री मंत्रि षि: बृथ निबोलि बिसेष: ॥ राम बाच क
हे बसिष्ट सुमंत कहे: अब थे सरमत एह: अब निराज अभिषेक
रि: नरत हिंदी कादेहु ॥ ॥ चाले लषन बिमान चढि: हम हु चा
लन हार: महाबीर ताबधु बिनु: सूनि लगत संसार ॥ ॥ कबित्त
करुना बचन जु रामके: सुनि पुरबासिन सोइ: परि परि लोट
त भूमि पर: राम राम कहि रोइ: ॥ छंद पधरी ॥ बिस्वेस बचन सु
नि तरत बीर: अकुलाइ नये अंतर अधीर: दारुन सुनि बाइक
नये दीन: करजोरि भरत तरप्रनित कीन ॥ नर ता देवाधिदेव द
न दियाल: सुनि बचन दुसह मो हि नये साल: रघुनाथ पृथीव
इंद्रराज: करुनानिधान मो हि नहि काज: तव संग पथ सुनहु
ममजीवतंत: अषिलेस चरन छाहो न अंत: रघुराइ देहु अबलि
वहि राज: सब सुनत पूछि मंत्री समाज ॥ बसिष्ट बाच बोले ब
सिष्ट गुरु बिहत बानि: प्रभु करहु काज समयो प्रमानि: तव बि
रह नये कातर सजीत: सुरलोक गमन सब देषि सीत: नुवगि
रत बिकल नाहि न संसार: पुरलोक सोक रोवत पुकारि: ध
रिय करहु तिन समाधान: प्रभु अबे जु कछु समयो प्रमान
श्रीराम बाच ॥ करि दया लोक बोले कृपाल: बिनवो जु मनोर
थ पृथ बाल ॥ लोक बाच ॥ यह सुनत लोक बोले असेष: बि
स्वेस बिरह दुसह बिसेष: सब बसहि देव तव चरन संग: इछा
यह सब हिन के अनंग: पुर स्वरग बसहु बामन पुरान: जग
दीस संग राषहु सुजान ॥ कबित्त ॥ अनुराग जानि सब के अनं
त: बिस्वास दयो तव दयावंत: करि निसचय रघुबर समय
काज: लिव करे तिलक दे अवधिराज: अभिषेक कीये एरम
त्रि आइ: सुन छत्र सीस चामर चलाइ ॥ कबित्त ॥ सहस अंग
जसुरथ: सहस इक जूथ पसंगीय: सहस सा हिय सजव
अषिल असि बाह अनंगीय: यह प्रमान सेना अनीत दुइ पु
त्र निदीनी: समृथ संग सब राज: साज निधि बिबिधि न वी
नी: पित बिरह समय दारुन दुसह: नुवरहात तप परनये

करिनिमसकारेरघुनाथकहः अहनिरहालिवकुसगयेगा। कबिरु
सजवरतअवधेस-रहासत्रघनपंहआये:कालपुरुषआगमन-सह
तुरबाससुनाये:प्रभुलछमनपरिसंग-पुनिरामप्रतपा:बिषम
लोककोबिरह-अवधिपतिकीयहआपा-सत्रघातबातयेदुसहसु
नि-उयपुत्रनिकहराजदीय:सुरसाधिस्वरगरघुनाथसंग:कमप्र
यानिसचेकरीय॥१॥छंदा॥मुथरामंहलकोकरयो:हितकरिन
पतिसुबाह:कीनोंस्वामिकनोजकेः सत्रघातससनाह॥२॥दे
वउनयपुत्रनिदये-सेनासंपतिसंग:समाधानकरिसबनिके
आवेअवधिअंग॥३॥करिबंदनरघुनाथकहः सत्रघनकहेसुनाइ:दुव
पुत्रनिकहराजदे पुनिआयेप्रभुपाइ॥४॥छंद पधरी॥ प्रभुकरोचरन
सेवाप्रमानेः नहीतजोंसंगकरुनानिदान-दिदंगतिजानिबोलेदयाल
करिबोपयानमध्यानकाल:याहीबिचिजूथपजूथआर सबकरेव
रनबंदनसुनार॥कबिकु॥ आयेजुबिभीषनसकुलआपः पावन
सिरजाकेरामछापः सुरआरअषिलमुनिवरसमाजः रघुनाथबं
दिराजाधिराज॥ सुग्रीवबाच॥हितकरिकपीसतबनोरिहाथ
सर्वथानछोंचरनसाथः अंगदहिदयोमेतिलकआप-पुरबासकि
कंथाप्रभुप्रताप॥श्रीरामबाच॥ मतकहोबिभीषनफेरिमोहि-ह
ग्करोंतअबममसपथतोहिः दृथीयहजोलोअवधिपाजः कबिक
रकुबिभीषनलंकराजः॥ श्रीरामआज्ञा हनु मत प्रतिसु
धिलायोजबतूप्रीयासीतः पदअमरदयोलोकहंपुनीतः सोबच
नहयानहीहोरसंत-महिबसकुलगतिजुतहन्मंतः जगदीसक
लोसुनिजामवंत:अवनिपररहोद्वापुराअंतः कालंतरकारनक
लहकाजः हमतुमसोंकेहेरीछराजः कृतनाबीउपजेहेतकोर
हउछुटैतहासुबंधहोर॥कबिकु॥रघुनाथसंबागोहआरराज
करिसबेसंगकेगवनकाजः निरधारकसोयहन्मपनिषादः प्रभु
करुचरनसेवाप्रसादः दिदबुधिसबनिकोरामदेषिः बिखेसदरअ
ग्याबिसेषि॥श्रीरामबाच॥अछाअषंकजिहिचिन्तयेहः संगचल
कुहमारेनिसंदेहः पुनिअपरदिवसबेलाप्रभात-तहायुरबसिष्टक
हकहीबातः हमकाजमहाप्रसथानहतः मुनिकरुहोमसबबिधि
समेत॥कबिकुबाच॥ परिधानबसनधोतपुनीत-आनेबसिष्ट
अतरअनीत-कुसपानकरेसबबिधिसकाजः तंगसोतरुएसुहेल
समाजः नगरतेनिकसितयलोकनाथः हस्तिलेचलकोरहेहाथ
प्रभुअरकोरिप्रतिमांप्रकास-सासिकोटिरबिरेसेलेहे
लोंगसंगकुलाबिसेषि-

कसहचरिसुनगसंग अतिमत्तकरतगुंजारअंग गाइत्रीअंबासहतआ
इ सबदेवदेहधारेसुनाइ पुरलोकचलेसुतत्रीयासंग पुनिबालवृध
पुरजनप्रसंग अंतहपुरबासीदासिदास पुनिचलेबरनचास्योप्रका
स पुरद्वारपुलेछांकेप्रसिध बेकूंठ्हेतचलिबालवृध तवकूत
चलेमिलिसंगरूप जडथावरजंगममनुजरूप क्रमकीटअधम
जनअखिलआंन सबचलेरामकीनोपयान इत्यादिकजेप्रांनीअ
नंत सबचले हरषिअनसंतसंत रघुनाथरूपमनमांहराषि नव
कूतचलेजयजयतिभाषि प्रांनीनेरलोकोउपमांन लोनगरस
निलागतनयांन तबआयेसर्यूसरिततीर बिस्वेसरामरघुबंस
बीर सबहीनदईआपानरेस पुनिकरेसरितसरयूप्रवेस मंज
नकरिआरोहनबिमांन सबजेतचलेसुरपुरसमांन गतकलम
षगुनरघुनाथगाइ सबगयेस्वरगअपनेसुनाइ ब्रह्मादिस
कलमुनिवरबिसेष आनंदजुकतआयेअसेष मिलिकोटिके
टिनतसुरबिमांन आकासतयेआवरतअमांन पुनिअर्कके
टिनतनोप्रकास सोगंधपवनचलिसाबकास हितपुहपबृ
ष्टतहगगन होइ सुरदुंदुभिसजोइ सुरकिंनरमि
लिगयखनाग पुनिनारकसुरकंन्याप्रमांन कृतरामचरनमं
जनकृपाल सयूजलनिरमलअघनिसाल ॥ बिधिबाच ॥ बि
धिकलोतहबांनीबिसाल पुरपुरुषराम तुमजगपुनीत ॥
परमीस्वरपूरनबिस्वपाल देवाधिदेवरघुपतिदयाल अनचित
अनामयचितअरेह बिस्वतुमततबेताबिदेह आनंदजुकति
अबगतिउदार अनंतअनोपमनंतअवास आकासतिग
तुमपुरुषएक आरतदेहकारनअनेक सुनियेबिसेषिममदीन
बांनि अबकरहुप्रबिरतबिधिलोकआनि ॥ कबिबाच ॥
जाचंन्यासुनियहकमलजात प्रभुकीयप्रमांनबांचाबिख्या
त रघुनाथपलटितबमनुजरूप तयेइहाचतुरभुजदिव्यरू
प अरुतयेलषनसेषावतार त्रजतजिहिकनपरभूमि
भार तयेभरतसत्रघनतनसंजारि धरिदेहचतुरभुज
चक्रधारि रघुनाथबिस्वतयेमहाबीर सीयधारेतहाल
छमीसरीर रुद्रादिदेवरिषसिधआर मुनिपितरपितम
हदरसपाइ जोगेसजरूपरबतप्रचंड अंबोधिसरित

सखनअबंक ॥ दोहा ॥ मिलिसबहिनकहँलोकमह पावनमक
रतप्रबीन प्रभुआयेबैकुंठपति पुनिबैकुंठपुनीत ॥१॥ पू
जिमानिप्रतिलोकप्रभु सबहिनकरेसनाथ आयेअपनेलो
कप्रभु सानुजसीतासाथ ॥२॥ कारनबानररूपको अमरअ
बिलंबुबआइ सुरपतिकार्यसिधकरि पुनिअपनेपदपाइ ॥३॥ ति
रजगहिनवहुततहा सदगतिपाइअसंक नवबंधनकटिकठिनये
तेनिरबंधनियंक ॥४॥ कबित्त ॥ रामचरित्ररसाल यहअद्भुतसिवु
गायो प्रछो सिवासप्रेम सुगमकहतेससुनायो लिखे सुनेबांचे
निसंक पुनिभावप्रकासे जनसहसकीयअकृत जाल निरमूल
सुनासे सोलहैतगतिनरहरसुकबि अरुएकोतरउधरे करुन
निधानरघुनाथको यहचरित्रकृतउचरे ॥१॥ धरमरूपअवधे
स बरनसप्रसनबिराजित द्विगनिसुधाअवतदयाल सिरछ
त्रसुसाजित उरआयुतआजानबाहु सोभितसिंघासन प्रगट
कोटिदिनकरप्रताप मिलिछबिजुमथनमन अंकूरधरमकोनो
उदित रसोअटकिमनरूपरस कारिअक्रमनरहरसुकबि जथ
सकतिभाषेसुजस ॥२॥ सयनबुंदरजरेन कवनतरपत्रगानक
रि अकलपंथकिहिकलो धराधरमनुजकरहिधरि उदधिक
वनथाहयो पानिकिहिधरोप्रभंजन नावतअनवहुत कपिन
बसकीनोकाकुंब सतकोटिरामसंभासुजस कबिसकवनप्र
रनकहै सोलहैमुकतिनरहरसुकबि रामचरनहितचितरहै
॥ दोहा ॥ दससहस्रअरुदससतबरष रहेमनुजतनराम तीनल
कउछवअबिल सुरमुनिलहिबिश्राम ॥१॥ इति श्री चतुरबि
सतश्रीअवतारचरित्रेय ॥ भाषाश्रीरामायणेमहामुकतिमार्गे
या ॥ श्रीउत्तरकांडरामायणसपूरन ॥ भाषाबारहस्रनरहरदासेन
बिरचितो ॥ अथश्रीदसमकृष्णचरित्रबर्ननाकबित्त ॥ गवरीपुत्रग
णेस बुधिदातालंबोदर बारनबदनबिसाल सकलकारि
जअग्रेसुन बरनअरुनबिथरीय सीससिंदूरसमंगल कवि
कपोलमदरेष करतमधुकरकोलाहल कीनोउछाहनरहर
सुकबि कृष्णदेवजयजसकरन सिधिहोइबिघनबिलसेस
बि धुरबटोपरसीधरन ६ ब्रह्मसुताबागेसरी सारदा

सरसति: कृष्णचरितमंगलकरु: मातादेहु सुमति: ॥ गाथा जयजय
रनोजयंती: जाला मुषीजोतिजालपा: जगजननीजयकारी: जुगल
करजोरिकरोजाचंपा॥१॥ नाषासुमतिरसनेद: अषिरछंदअरथ
गतिउतम: पावेसुकबिप्रमान: भगवतीभगतिभावेन॥२॥क
बि ना॥ ब्रह्मबिष्णुअरुबिस्वनाथ: रिषसहसअग्रासी: अमरकी
रितेतीस: पंचपालगरप्रकासी: नवदुरगानवनाथ: द्विजसुगि
धरगिरदीहत: दयाकरहुनिजजानिदास: हरिबियनमानिहित ही
हासुकृष्णजदुनाथकी: जोपुरानमतिजोनिहो: हरिकृपाजनमउ
धारहित: बुधिप्रमानबाषानिहो॥१॥ दूहा॥ महाकबेसुरजेमनु
जे: सुजनसगुनसुजान: कबिनरहरबंदनबिहित: मानहुप्रेम
प्रमान॥१॥ सवैया॥ कृष्णकृष्णहरिकेसवकृपालहरि करुना
निधानहरिकारनकरनहे: नवकेतरनहरितयकेहरनहरिक
मलनयनहरिकमलाबरनहे: बृजकेबिहारहरिकंसकेस
घारहरि गिरकेधरनहे: दुषकेषयारहरिअघबनकेकुगरहरि
जोगसिधातकेसार नरहरकोसरनहे॥१॥ दूहा॥ जगरहकर
घुनाथजब: प्रनुबेकूरूपधारि: पुरीअजोध्याउधरीय सब
नवकृतसनारि॥१॥ छंद द्वेअषरी॥ दूषुरअंतआदिकलिक
ला: असुरबरेबहुकरमकराला: बसुधामहापापबिसतारे
नियनसोधिसबधरमनिवारे: जेहिअयपीडितहथीपुनीता
गाराकोतिनरनियनीता: सुधिनरहीकछुअयनरकेसंग अ
तिबिहबलहेगईसकलअंग: हथीधेनकेरूपपलाई आतम
बिकलब्रह्मपुरआई: सबदुषकारनबिधिहिसुनायो: नयो
गुकछुनायोअननायो: यहसुनिसोचनयोब्रह्माउर: संगल
येइंद्रादिकसकर: दहाषीरसागरतटआये अवनिसकलसुरग
नअकुलाये: कमलजातप्रनुसुमिरनकीनो: अतिजीयनयोस
रूपअधीनो: सोइकुतेमथपयसागर: अषिललोककेरहक
हीसुर: करीबेदधुनिब्रह्मसकारन: नरहरप्रनुजानेनारायं
न: दयानिधानदरसप्रनुदीनो: कारनब्रह्मनिवेदनकीनो
॥ अथआकासबानी॥ दूहाआकासबानिनहीअसी: त
हासुनीब्रह्मादिकतेसी: सबेदेवतुमरूमिसहाई: जदु

कुलमोंऊअवतरहुजाई॥ दोहा॥ कैहैंनृपबसदेवतहां॥ नुवमंऊ
लनवरूप॥ तिनकेअवतरि हैंतहां॥ नारायन निजरूप॥१॥ सेषन
गतेहीसमय॥ सुनवलनदसनेह॥ प्रनुअजकैहैप्रवल॥ प्रानपे
कहैदेह॥२॥ रामकृस्नरहिनामकरि॥ कैअंसाअवतार॥ नुवमंऊ
लमेंबिहरिहैं॥ नवहरिहैंनुवचार॥३॥ मायाजोगमहेस्वरी॥ नू
रनप्रनप्रकास॥ हितनुतनंदअहीरके॥ वहअवतरिहैआप॥४॥
कबित्त॥ यहअकासबानीनसी॥ धरारहेतनिरधार॥ सोसुनिब्रहम
दिकसबै॥ बिसरेसोकबिकार॥५॥ ब्रहमआदिसुरनरमिलेग
सबनिनयेसंतोष॥ आयेधामकआपनै॥ मनहरषतदुषमोष॥६॥
रजधानीजदुबंसकी॥ बृजमंऊलबिसतार॥ कृस्नतहांक्रीड़ाकर
त॥ सदासुगतसुषसार॥७॥ अथजादु उतपति॥ सोमबंसरा
जाधिराज॥ जदुनयोनरेसुर॥ तातेजादवबंस॥ बढ़ोसंसारसाधि
सुर॥ तिहिसाषामहसूरसेन॥ महीपतिकुलमंऊन॥ ताकेसुत
बसदेव॥ बिजयरनबैरबिहंऊन॥ नुवपालराजश्रीनोगवत
सहजबिजयपंजरसरन॥ सुतनासकृस्नकैहैंसुषद॥ कृतअनंत
करनकरन॥ दोहा॥ परमरम्यमथुरापुरी॥ सबसंपतिसुषसा
ज॥ करतराजहजदुकुलतिलक॥ राजाआहुकराज॥१॥ कबित्त॥
आहुककेसुतउग्रसेनि॥ राजासुधरमरति॥ देवकनामदूतीय
सुरदाताबाचासति॥ देवककेदेवकी॥ साधकंनगुनसुंदर॥ ब
सुदेवहिमांगीबिचारि॥ पुत्रीसप्रेमपर॥ मंगलबिधानदुऊग्रेस
दलि॥ उरअनंदउपजेअतुल॥ धनसेनिसांनयुमरतसयन॥ की
यउछाहजजातिकुल॥१॥ दोहा॥ इहिक्रमजादवअवतरे॥ मुथरामंऊल
माहि॥ सुरसमाजरजनीसहत॥ बासुरसुषहिबिहाहि॥१॥ कंसउतपति
कबित्त॥ छंदपधरी॥ इकसमयसुषदरितवसंतआइ॥ सबफूलफ
लतवनयनसुहाइ॥ तिहिकालबिमलचलिबिबिधिबात॥ सोगंधमंदसी
तलसुहात॥ तरलतपुलमकोमलतमाल॥ बनिरंगपुहपमंजरबिसाल॥
सरसरसरोजफुल्लीयसुगंध॥ अलिजूथभ्रमतमदगंधअंध॥ बनिबनि
बिसालबिनतनिदंद॥ जलकेलिजथाआतमअनंद॥ सुनवनबिह
रनृपउग्रसेन॥ मिलिसमयसमयसुषदिवसमेन॥ छंदपधरी॥ आ
गेमहादुष्टकोउग्रासुर॥ पहलेनयाऊतोजुगरपुर॥ सोनिरमलहलो

नारायन पापी तिहि जीय बांधि बयरपन बहुत्यो सो ईश्वर जिमहाबल धे
चरकाल नेमि नामा षल बैर भाव सो असुर बिचारे बिसरै नाहि बिरो
धा बधारे ताक तबयर रहे सो निसचर अवलोके कोउ वैसो अवसर
राजा उग्रसेन पटरानी मंजन करि बैठी रतिमानी पापी यहे जु अवसर पा
यो आसुर काल नेमि सो आयो अतिहीन न मारग रथ हाको तिहि षल
छिन्न यहे जो ताको दुरजन त्रीया अवसर देषी बिषम बिरोध अनेग
बिसेषी उग्रसेन को रूप कस्यो अर निसा समय आयो सो निसचर रग
हि कपट जु ऐसो गम्यो पटरानी सो नाहि पिछान्यो इहां रति दान दयो ति
हि आसुर जात अपान नयो आनंद उर उग्रसेन सज्या ग्रह आयो पेताक
न समय यह पायो असुर गरन थित न त्रीया के तब ते उदर ताप बढ्यो
के हेत त्रीया के गरन जु दारुन करत दुष्ट अभिलाष सकारन बिबरन व
दन देह अति बिह्वल दिन दिन होत सुरानी दुरबल नृपति त्रीया तन
दुसानि हारी पुनि ताकी एक सषी प्रचारी ॥ सषी बात ॥ तिहि छो स्व
मिनि तेरो तन षीन होत काहे ते षन षन रानी ॥ सुनि सषि तो कहे मर
म सुनाऊ पति को कछु कलेजा पाऊ मन अभिलाष फलै तो मेरो ता
ते मुनि मानो बहुतेरो सषी नृपहि इतो तो सुनायो बहुरा एको उगु
नी बुलायो कागद मय राजा तिहि कीनो देह मध अजकालि जदीनो
नूषन बसन सुगंध बनाए उग्रसेन नृप मान कुआये सो पुत्र एक
त सचायो बिनता कहे ते सषी बतायो इहां रानी मन हरषत आई
पंथ परीमान कुनि यि पाई बेगी उचकि हीये पर अतिबल षा स्कले
जात ईत्रि पत षल ॥ दूहा ॥ राजा सो तिहि सषि रहसि सबे कलो
समझाइ दुष्ट गरन त्या के दुषद कोउ अरिष्ट हे आरा ॥ १ ॥ राजो बाच य
ह मंत्र निसो मंत्र यह रहसि कहे सब राज हे अनिष्ट उत पति यह क
रु कुसजन यह काज ॥ मंत्री बाचा कबित ॥ उग्रसेन निसो इहां
कस्यो मंत्री निमंत्र मिलि यह अनिष्ट कछु आज तिस्यो नाबी सजोगति
लि बैसे नर अरु बयर साधि दिन बदन न दीजे जथा जतन काचे सु
जानि निरमूल करीजे पिरथी सआपअरथी प्रगट करत रहे राजास
कल ॥ १ ॥ सचिव मंत्र उग्रसेन यह बचन उचास्यो कुल जादव निकलंक
बैसको धरम बिचास्यो अबला बध अनउचित यह जु हमते न हो ई
दई बीमया दुगम करो तिहि लगि कहा कोई सुत अस न करम सम
त सब जगत सुरासुर जोइ हे सो टरै नाहि नर हरस कै बि होन ह

रसो हो इहैं॥१॥ अवधि पाख्र असुर अंस इहा कंस उपजौ। चरन चलौ न
यौ चत चेत जन देव सुसजौ। देवी कौ देवल सुदिष्य पै चरषै लहि षल
नत प्रेत बेताल कर हरजनी कौ लाहल क्रीडा सुकंस तिन महकरै वे
सी ही बुधि आचरै। मानै न बेद कुलौ कमत अहित करम सो ई अनुसरै।
अथ बस देव देव की बिबाह॥ इहा देवक सुता सुदेवकी सुंदर सयु
न सुजान। दई कुंती बसदेव कौ पहले प्रीति प्रमान॥१॥ लिषि पठयौ त
कौ लगन पंचअंग सुधपार। करि मंगल बसदेव कहं बिप्र निआनि बेध
शार॥ कबि ता। ब निबरात बसदेव आइ मधुपुरी उछाहनि कनक
लसतोरन उतंग। मिलि थंन बंचित मनि सजि चौरी मंडप सुरंग बिबि
हार जथा बिधि। बरबरनी सो ना बिसेषि सुन जोग महासिधि। कृत हे
म द्विजन नर हरसु कबि बेद मंत्र बानी बिहत। जुग बसन गांठि जोरी ज
तन। कुंवर अनंद बिबहार हित॥१॥ करि सेंग्रह कर कमल रमन रमनी
रंगरस। बिबिधि बेद बिबहार बिमल बिसतार बिहत बस। परिनावरि ले
कि कुमकार सुत कज सवारीय पूरन आकृति प्रगट अषिल जग जस उच
रीय। नृप उग्रसेन बहि हरष अति दिव्य सकल दाइज दीये। मिलि जुवति ग
न मंगल धमल जग बंदिन जाचिग जीये॥२॥ छंद हेअ घरी॥ कनक अष
दस सत रथ कीनै। देवक प्रसन कारज दीनै। गज मद मत्त भ्रमर गुंजार
न। बहत छरित बन सरित बिहारन। बनपट बसन कनक मय किंकनि
धावत धरा गगन मिलि प्रतिधुनि। निकर तरा रत सहत नवीनै। तुरद
मतंग चारि सत दीनै। सोना जीन जरा इन साजै। बिबिधि सोध पट कार
राजै। उपजि सुषेत जाति अधिकारी। असि सहस पंद्रह अवधारी। कार
न बसत गांन कि हिकीनै। दिव्य अनेक दाइजे दीनै। दासि तीन सत कुल
हितकारी। सबै कनक पट बसन सिंगारी॥ छंद पद्धरी॥ बिधि जु
कत सबै रस रहि बिबाह। इहा जान बिदा कीनी उछाह। संग चले
हरष सो कवर कंस। पुहचावन बहन हित प्रसंस। जग नीरथ
हांकत चित नार। इहां नयो सारथी कंस आइ। तहां आइ एक जोजन
बरात। बस करम बनी नवतब बात। जैसी कछु तावीद दीजोग। पु
निमिली आनि सो ई प्रयोग॥ आकास बांणी॥ कबि ता। गगन
गिरा अनगूढ। नई यास मे जुग्रेसी। सुनी कंस सो सबै। तहा उरद्धा क
तेसी। रे मद धमति मंद। करत तत सारथ जाको। तेरो हेत अहित गल्ह
अष्ट मह्यो को। यह सुनी गगन बांनी असह। पापक कंस उरत्रास
परज स्योचित रथ तेपि सन। इहा उष्ट बदो उतरि॥१॥

काढ्योषगासिषागहिगाटी: कंसदेवकीनाहरिकाटी: कटनमूंकलपोजुक
लंकी: बिनओसगपनदिष्टजुबेकी: अबलाबाहिबाहिउचारी: नयोस
बनिकोत्रासजुन्तारी: इहबसदेवनिकटतवआयो: पापीचरितदेषिउ
षपायो: महाअनरथबिलोकियरममन: करजोरेधरयरउरकांपत:
इहबसदेवबिचारयोऐसो: कंसकवारमरोसोकैसो:॥बसदेवबा
बायहतोपतितसुरापीपापी: महाबलीआतममतथापी: अबतोकोऊम
त्रउपाऊ: बिषमकालतेंत्रीयाबचाऊ: जोसुतजामेकिधुनजामे: आहि
महासंदेहजुयामे: जोपेयहबीचहीमरिहैं: हैंकछुकरतकछुपुनिकैहै
नयोहोतनवतभजुजैसो: ताकोकोजानतहैतैसो:॥बसदेवकंस
प्रतिबाचा॥तुमछत्रीयजदुकुलमहजाए: अरुनृपनीतिचलावनआए
अबलाबहनभाऊकोअवसर: घनआसाजुतचलीआपयर: बालाबि
प्रगउअरुबालक: इनकोबधअपनोयरघालक: इतेअबधनृपतिउ
त्रानो: निजअपराधकबेदनिदानो: निंदककरमजुधरमबिनासीय
सोनकरैजातैजगहासीय: जोतुममहामीचनयमानो: पापबकोयह
चितपिछानो: करऊजतनबऊजीबैकारन: दिनबहतदपिनरिहै
दारुन: आयुरबलयहदेवअधीनो: कलिजुगबरषसवासतकीनो: प
रमअवधिजोनृपतिपिछानै: जगमहधरमाधरमसजानै: जतनकरे
जिहिजिहिनृपजोई: कालबलिषूनछाऊकोई: पापाचरतकरैनहीनृप
ति: सुषहैअलपदिष्ठदुषदुरमति॥कंस बाचा॥याकोबधमेरोहितता
मैं: जीयतरहैतोसुतजामैं: करियेबधरहिबिलंबनकीजै: जोनहिआ
पहिजमहिसुदीजै॥बसदेवबाचा॥जोतुमदुसहमीचतेंकरऊ: कंसक
ऊरकजतनसुकरऊ: याकेजोकोउबालकहोई: आनितुमहिदेऊं
ऊंसोई॥कबित्त॥निसचययहबसदेवजुकीनो: उग्रदेवकिहिअ
नयजुदीनो: अहबसदेवदेवकीगए: नयजुततहाबसतसोनये:
जोसुतप्रथमदेवकीजायो: कीरतिमंतसुनामकहायो॥छंदपधरी॥
इहप्रथमपुत्रबसदेवआनि: पंनजुकतदयोसोकंसपानि: बऊसोत
रूपबिलोकिबाल: इहदुष्टकंसकछुनोदयाल: जबबचनसाचब
सदेवजानि: पुनिदयोफेरिबालकप्रमानि॥कंस बाचा॥ताते अबसो
पतबालतोहि: मांगोजबदीजऊआनिमोहि: बसदेवचलेलेयेह
बाल: कंसपहआरदरसीत्रिकाल॥नारदमनचितवना कंस
जोहतेनहबालकोइ: सुरकार्यहेतबिनासहोइ: चितमऊयहै

नारदबिचारि: सुरकाजआजजेहुसुधारि: कंससोंमंत्रनारदजुकीन
हारुनबिसेसउपदेसदीन: करिगिनतीअष्टमगरभकोर: आग्वेगं
रभतोयहैहोर: निहचैनबालछठंकुनरेस: सबहतोजितेदेषकुअ
सेस: नंदाहिगोपजादवनिजानि: येअमरअंसअवतरेआनि: इनकेबि
नासकरियेनआज: कछुकहतकरतकछुओरकाज: उपजोभषेत्रज
पुत्रआहि: मतिउग्रसेनकहपिताभोनि॥ कबिरु॥ बातनिअनर्थना
रदबदार: परघरहिघालिपुनिगोपलार: जोलोनहपुहचोयेहजार:
बसदेवफेरिलीनोंबुलार: बसदेवलीयेआयेसुबाल: कृतजोगसीस
तिहिन्रमोकाल: पुनिलयोबालबसदेवपास: सिलहनेदुष्टउपजीन
नास: बसदेवदेवकीपकरिबाह: लैमेल्हेकारागारमाह: पुनिजरेलो
हबसदेवपार: निहिगेरओरकोऊवजाहि: पहराइतराषेचऊपास: ८
बिप्रातबीरजैमनबिसास: सुतजनमभयोऊजोसुषेन: सुतदीजेउ
पजोभद्रसेन: सुतचोथोमृदुनामासरूप: अरुपंचमसमदनजोअ
नूप: पुनिछठेनामतिहिभद्रपार: इहिक्रमसोंउपजेपुत्रआर: कंसपि
तेदीनेसबकुमार: पापीसोमारोसिलपछार: जादवसुधरमजुतजिते
जानि: अवरोधकरतेसबेआनि॥ अथउग्रसेनअवरोधकंसतिलका॥ जरिसद्दिदलोहपाइनजंजीर: पापिष्टपिताकहेदईपीर: संक
टमहदीनोंउग्रसेन: बलकंसपाटिबेगेसुषेन: कंसासुरजबहीराज
कीन: निःसेषपापबरतेनवीन॥ अथसंकरषनप्रसंग॥ देवकीगर
भसप्तमसुताइ: अंसावतारबलभद्रआइ: प्रभुजानिगरभयहस
प्रतीत: पठईसुमहामायापुनीत: बसदेवरोहनीनंदबास: पहले
हीराषीअप्रकास: देवकीगरभसप्तमदुरंत: आकरषिगूढलईअनं
त: यहमेल्योरोहनिगरभआनि: जगमरमसुपेकाऊनजानि॥ दू
हा॥ अतिसरूपबलभद्रहो: पयोजनमप्रकास: जातकरमकीनो
जतन: आपुननंदअवास॥१॥ नंदमहरकेग्रेहतब: हेतसमंगलहो
इ: दुतीयनामबलभद्रको: संकरषनभयोसोइ॥२॥ इतिश्रीभागव
तेमहापुराणेदसमसकंधानुसारणेभाषाबारहटनरहर
दासेनबिरचितं॥ प्रथमोअध्याय॥१॥ कबित्त॥ छंदपधरी॥
इहिसमयमिलेसबदुष्टआनि: पापनिजिननहियरमहिपिछा
नि: सबसुसरकंसकोजुरासंध: अबआनिमिलोसोईमदअंध

अघबकीबकासुरअलंबआइ: त्रिनचक्रधरासुरकेसिताइ: इत्यादिपाप
सबजुरेओर: गयेअरिष्टजेगोरगोर: जबलगेजादबनिदु:खदेनें के
उगएसेतनचितअचेन: अक्रूरआदिकोउमनउदास: देखिजुसमयदे
रहेदास: मानेनअहितहितमिलिसमाज: जोकहेकंससोईकरहिकाज
॥ अस्तुतिकाछंद॥ तयोजुसमगरनगत: प्रभुकछुकारनपाइ: कं
सहिकेलोअस्तुतिका: सोएकोतसुवार: गरनदेवकीकोगयो:
पाएकछुउतपात: मथुराघरघरनगरमह: बातनईबिख्यातगा॥
अथश्रीकृष्णदेवकीगर्भउत पति॥ तबईस्वरअंसनिसहत: कृत
कारनकरतार: कृपासिंधुबसदेवके चितकस्योसंचार॥ कीनोप्र
भुबसदेवके: मनहिप्रवेसप्रमान: ताछनतनमानकुउदित: नएक
हादसनान॥ छंद पधरी॥ मनताव धरेदेवकीमाहि: निजधात
हितसबंधनाहि: भगवंतजोतिदेवकीनासि: सुतमनिमहजोदिनक
रप्रकासि: आसासोमंदिरमाहिआइ: नोकरमहदीपकजोतिताइ
॥ कबितादेवकिउदरदयाल: अखिलभुवनारउतारन: अष्टमगरभ
अन्हत: कृष्णप्रभुआइसकारन: इहब्रहमादिकआनि: गरभअस
तुतिगुनगाए: जयतिजयतिजदुनाथ: अमरगनरक्षकआये: रज
केअनेकहरिहोबिघन: हरिबनबनहिबिहारिहो: करिपावननर
हरपतितकहे: हरिकंसासरमारिहो॥ अवधिपाएकलिजुगहि
आदि: पूरनकृतपावस: नभजुमासरोहनिनिछत्र: बसिसिघबि
नावस: असितपाषअष्टमीय: हेतमिलिसिधजोगयह: अरधनि
साबनिबुधबार: श्रीकृष्णजनमतंह: कृतउग्रफलेबसदेवके त
गउदयसनमुषतए: त्रैलोकनाथसुतअवतर्यो: यहअनिष्टसि
गरेगयो॥ कबिरुवाच॥ दोहा॥ अनसतुतिब्रहमादिकन: वंदोकी
नीकरजोरि: गावेसुनेगरनके: बसनहीपरेबहोरि॥ इति श्रीभगव
तेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेभाषाबारहटनरहरदा
सेनबिरचितं॥ द्वितीयोअध्याय॥ कबिरुवाच॥ छंदपधरी॥ जबन
योजनमश्रीकृष्णजानि: पयबहीकोउकसिरताप्रमानि: महमंगल
घरघरअकसमात: सुरसिधहरषमननहीसमात: सरसरसरोज
फुल्लीयसमोह: मिलिकुसमततातरचितमोह: चलिपवनत्रि
बिधिदिसिदिसनचार: अतिसुषदमनफुरितबसंतआइ: इह
बुरीअगनिजरिउठतआप: प्रगटीसजोतिजनुप्रनुप्रताप: आ
नंदभयेअमरनिअसेष: बाजेअकासदुंदुभिबिसेष: लहिसम

प्रहरषसुरबरबिकूल: सुरलोकलोकमंगलसमूल· किंनरसुरगंधर
बगांनकीरंन· नाटिकसुरकेंमोरचिनवीन: देवकीदिसाप्राचीअनं
द· दीपतिन्तरेपूरनकलचंद: सिरमुकटकनकमनिमयसुदेस· कुं
चितअतिसुंदरसघनकेस: रतनमयश्रवनकुंडलसुरंग· अरुमंद
हासिआकृतअनंग· मनिसोनउरसिमुकतानिमाल! बनिअंगअंग
भूषनबिसाल· तनसामसयनबानिबरनतास: कंरिपीतबसनत
डितबिकास: चक्रादिकंआयुधभुजाचारि: निसेषतसुभलछननि
हारि: देवकीतबेसुतओरदेषि· बिसेसपुरुषलछनबिसेषि· ब
ह्मबारबारलेलेबलाइ: सुतजनमहरषउरनहीसमाइ॥ दूहाइष
कंसकोदुसहहर· हितछबिपुत्रनिहारि! नरिनरिलोचनप्रेमनर
धरनिअंकितधारि॥१॥ दुसहदसासोदेवकी· देषीदीनदयाल· क
ह्मतबेहसियोंकहो: करोनतय इहिकाल॥२॥ बस देव बाचा॥
छंदपधरी॥ बसदेवदेषिअदभुतबाल· करिबारबारबंदनकृ
पाल: प्रभुपरमपुरुषपूरनप्रमांन: पायोनतेदबेदकुपुरांन: अ
नबंकजोतितवअनाधार: पेलहिनसुरासुरवारपार· ध्यावतजिहिमु
निगनध्यानधारि: चितबाचअगोचररहिबिचारि: निगमागमसो
जतजोनजांनि: अवतरीजोतिममग्रेहआनि: कहुताप्रवानमोसो
नकोइ· हितकृपाअंतरपरकहोइ॥ दूहा॥ हेजाकेकवकूपमह
मिलिब्रहमंडसमात: तेप्रभुमेरेअवतरे· बृजकेहेयहबात॥१॥ रूप
अलोकिकराखरो· बेदबिदितबृजराज: समयनिहारिबिचारिसो· व
हउपसमीयेआज॥२॥ अबतोअद्भुतरूपयह· नहीदुरहिजदुदेव
वहहमारेआइहे· तवकुलहिहैनेव॥३॥ अगेमारेबालहन: नि
रदयनिठुरअनीत: सुघिआयेआवतसहमि· पापीकहाप्रतीत॥ अ
हुलबाचा॥ अगेकालतरकिंकु: नोरिषसुतपानाम: ताकेनरपति
हुता: हुलिसुनामोबोमा॥५॥ तपसाओअतिउग्रतिन: मिलिरिष
त्रीयासमेत· देवनिजोदुरलजदरस: हरिदीनोकरिहेत॥६॥ छंदप
धरी॥ इहांकहेबचननगवंतयेह: जिहिहितकरेबनदमनदेह· याको
अमोघफलतेकुआज· कृतकरकुजपूरनचितकाज॥ रिष बाचक
रजोरिकलोदंपतिसकाम: बरदेकुहमहियहधरमधाम: अवत
रकुनाथमभउदरआइ· तुमसदादेवदीननिसहाइ॥ आज गवांने॥
मेदीनोतुमकहंबरमहत: यहयोहीकैहैकैहित्रनंत: बरदयो
जथाबांछितबिसेष: स्वसथानपधारिसयनसेष॥ दूहा॥ इहि

मातसुतपापिता॰ बिहतधरमबिश्राम॰ प्रगटत्रयेपूरनपुरुष॰ पृथ्वि
गरुत्रयहनाम॥१॥ कालतरबीतेकछुक॰ जनमसहजेजानि॰ कसि
पत्रयेप्रजेसपति॰ पतनीअदितप्रमानि॥२॥ अदितगरभकेअव
तरयो॰ वावनबिप्रबिनीत॰ कीयसहस्रतबइंद्रको॰ पुनिबलिछलै
पुनीत॥३॥ तेईकसिपबसदेवतुम॰ अदितदेवकीमाइ॰ तीजेजन
मसुअवतरे॰ यहहजमंगलआइ॥४॥ छंदपधरी॥ मैलयोजनमत
वउदरमात॰ बरदयोकृतोपहलेबिषात॰ कहिबचनजथामेसम
कीन॰ यहरिअरूपप्रतयजुदीन॰ अबकृष्णनामसूरतिउदार॰
हजमांझबिबियिकहिहैबिहार॥ श्रीकृष्णबाच॥ दोहा॥ करतम
हानयकसको॰ सोतुममोकहजानि॰ करहुजतनजोकुकह
त॰ पेयहसमयपिछानि॥१॥ महरनंदकेग्रेहमह॰ अबदेहुपु
हचाइ॰ हितजसमतितहाघोषिहैं॰ पयकुचपानकराइ॥२॥
कबिरुबाच॥ छंदपधरी॥ योकहिकृष्णतनतनककीन॰ पु
निबालतावबरतेप्रबीन॰ इहालयेमातदेवकिउगाइ॰ लेलेब
लाइअरुकंग्लाइ॰ तहादेषेअद्भुतचरितितास॰ बसदेवतयो
अंतरबिसास॰ आनंदसलिलबढिउरअमान॰ समतासकरे
सुतकसनान॰ इकअयुतधेनबिधिजुतनवीन॰ करिमनहि
दृढसंकलपकीन॰ दीनेलपेरिपटजनानिदाइ॰ लीयपिताकृष्ण
तवउरलगाइ॰ जंजीरचरनछुटिपरीजानि॰ बसदेवपुत्रदेवतप्र
मानि॥ गोकुलप्रतिगवना॥ बसदेवचलेलेजहीबाइ॰ दुरगम
कपाटछुटिगयेघाइ॰ इहापरेपहरुवानहिनग्पन॰ निद्राजुक
लरूपेनिदान॰ नतनिसाअरधघनगगनघोर॰ अंधारनिसा
मिलिचहुओर॰ छायोनतछादसयनदुरंत॰ पसरोतमदु
रगमदिगदिगंत॰ मयाबमिलिबरषतमंदमंद॰ कृतजोतिबरन
आनंदकंद॰ इहासेषनागफनसहस्रआइ॰ छतनाकरिलीनेचलीनै
चलेछाइ॥ दोहा॥ मायाजसुदाउदरमह॰ आपुनबसीजुआइ॰ नयो
जनमताकोअनय॰ पेयहअवसरपाइ॥१॥ ताकहलेसोईतबै॰ माता
अतिहितमानि॰ देष्योसंततिमुखदुलत॰ जनमसफलकरिमानि॰
छंदपधरी॥ तबतरनिसुताकेआइतीर॰ बसदेवजुगदेतयेबीर॰ ज
लचढेतरनिमिलिलहरिजोर॰ आवरतबिषमपरिओरओर॰ पावैन
घाटकुथाहपाइ॰ इहिगेरफुरतनाहिनउपाइ॰ बसदेवकृष्णचिंत
वनकीन॰ नदिजमनातबहीघाइदीन॥ छंदपधेअषरी॥ उतरिनदीज

ोकलआये: पुरबासीनि प्रबसपाये: दुगमकपाटघुटेग्रहद्वारा: सं
करेबसदेवसंचारा: पलिकापरसोवततहपाई-जसमतिलीयेसु
जोजाई: इहजसुदाहिगकृष्णसुआये-आपुनसोकंसालेआये: पुनि
सदेवबंदिग्रहयेसे, जगिगयेबिकटकपाटजुजेसे, पहरिजंजीरआ
नेपाइन, सोइरहेबसदेवसुनाइन॥ कृष्ण जनमबसदेवकेदे
किउदरदयाल: कीयनिवासग्रहनंदके: प्रतुहजकेरिषपालाभाइ
श्रीभगवतेम हापु पुलेदस मसकंधानुसारणेनषाबार हटन
हरदासे नबिरचितं॥ त्रितीयोअध्याइ:सपूरणश्रीकविरु॥ कबित
हामायाअंसावतार-कीयरुदनजुकंसा: दयाजुकतदेवकी:ध
लेगोदसुधंसा: बालरुदनसुनिसबद-जगेजांमिकंसेजांन्यो:आ
रुकंसहिआंनि:चिवरियहमरमबषांन्यो: आउवोंगरजनयोनो
अब, सुन्योबालरोदतसही:करजोरिकंससोंसेवकनि-हितबद
सगरीकही॥१॥ अतिजनातअरसात-उग्रोसजपातजिआतुर-सु
पांनबसबिकल-गिनतनहीदधर्मत्रिगुर:जयजिहिअहमगर
त-सुपेनयोमोषंसुनायो: रोषनयनपरजरत-धरेकरबगसुधा
यो: आयोत्रसाधअवचिंतयु ह-जनकाहुनहजानयो: प्रतिमाबि
लोकिउत्रासपरि-प्रांनबिनासप्रमानयो॥२॥ छंदपधरी॥ इहांके
सजुमंदिरमांझआइ: पुनिबहनगोद्दपुत्रिकानिपाइ-उचकाइलई
कंसांअनीत: कछुनाहिदयालजाकुचीत-कंसासुपछारीसिल
प्रकास-उडिगईकरनितेछुटिआकास: सोनईदिब्रअपनेसरूप
अतिप्रनामहामायाअनूप॥ म हा मायाबाचाबोलीसुगगनम
हबिमलबांनि:पापिष्टनतेहंतापिछांनि: सोप्रगटोहैंदधीप्रमांन
मारिहैतोहिमंसकासमांन: अनकाजबालमारेअनाथ-हमारेअ
रोकहाहाथ॥कबि रु॥ इतनोकहिमहामायाअनीत-पुनिअप
नेथांनकगईपुनीत-बिलपातकंसकहंतोबिहांन: निसिनुरी
दंडदेबरषमांन: करिसनाकंसबेगेकुचीत: हत्पुरुषमंत्रिआयेअ
नीत: सुधिकरिकरिकंसाबचनसाल: करिक्रोधकंसमनमंहक
राल: तहमिलेआंनिनवतमतंत्र: मंत्रनिसोंपूछेमूलमंत्र: कं
निकाबचनसबप्रगटकीन-पुनिमंत्रिमिंत्रबोलेप्रबीन॥मंत्री
बाचा॥करियेनसोचरहिगेरकंस-अवतारजपेजदुअमरअंस
अमरनिकेदेषेबलबिधांन: निरनेथलअतिपो
लित्रासकंपउठिचितमाह: जबपरेकगिनतब

हमासोतपसीअबलबृध पूजैनताहियहकोउप्रतिप्रसिध हैरुद्रनिषा
रीरहतराग बनबसतरहा बृतजुतबिराग हरिहुरोरहतयेकातहोइ कि
कुताहिदिष्टदेषैनकोइ मुनिआपदगधलजाइमान सुरराजरहैकुलय
समान हैसात्रवजदपिमहाहीन पैसंकनीयनदपिप्रबीन अजुदेषकुक
टकतनप्रमान पदगऊतकरतहैबिकल प्रान अगनिकनअलपआ
मयउपाधि येहोइहथउपजैअसाधि बदिपरेतबैकछुनहिबसार प्रभु
करकुसमझिपहलैउपाइ निहचैसुरपोषकमषनिदान सोकरोबाधबि
प्रनिसमान अमरनिकोसाधकयहउपाइ रावरेश्रैयलगिकहतराइ इ
कमंत्रसुनकुप्रथीसआज कीजैनबिलबयाजतनकाज बृजमंडलम
हबालकबिसेषि दसयोसउरैजनमेजुदेषि पुनिहतकुजितेजिहिति
हिप्रकार बलछलकरिअबतोयहबिचार हैनिपुनप्रानहिंसानिदा
न प्रभुतिनहिदेकुआग्याप्रमान कृतदुष्टतितेसबबिदाकीन पर
प्रानघातबिद्याप्रबीन पूतनाआदिदेचलेपाप छलकारकबांधे
सीसछाप पापिष्टचलेआदेसपाइ अजजूथजूथबृकछुथितआइ
गतिनईअगमयहचरितगूढ मायाप्रपंचजानैनमूढ मषबांधकरेअसु
रनिसमूल सुरराजसुनतउरउग्रसूल ॥ कंसबाच ॥ हा ॥ इहाबिचारो
कसयह जोबनधनमदराज बालहतेमेदोषबिनु कछुसरोनहक
जा ॥१॥ बचनअमरबिस्वासतैं मेजुबहनकेबाल सोनकजोमारे
सबै कस्योअनर्थअकाल ॥२॥ कहिकरअष्टमगरभकोइ अमरबांनि
अकास जैगहरकंपानई सुरनिकहाबिसवास ॥३॥ कारायहतै
देवकी दयेकादिबसदेव कंसजुसामउपाइकरि नाषतबचन
सनेव ॥४॥ नलीबुरीनवतबमता होनीहोइसहोइ अमरकुबोल
नकूगअब कहाकरैतिहिकोइ ॥५॥ जोनटरैभावीअनय सुरासुरनिकु
साध करियेसंपाकरिकृपा यहमेरोअपराध ॥६॥ बसुदेव बाच ॥ क
लोजोरिबसदेवकर चितमहसमयबिचार नावीबसजोकछुनयो
ताहिनहीउपचार ॥ कबिरुबाचा ॥ गयेतबैबसदेवग्रह मानिकुसल
ग्रहमोष कहानरोसोकंसको देतअदोसनदोष ॥७॥ कंसहिकर
नरनरनकों आयेनंदअहीर समझायोबसदेवसो बेगजाकुय
हबीर ॥८॥ करियोरिष्याबालकनि अहोमित्रइनकाल अबबृज
महउतपतिअति सुनिहोअतरसाल ॥९॥ इति श्रीभगवतेमहापु
राणेदसमस्कंधानुसारणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिर
चितं ॥ चतुरथोअध्याइ ॥४॥ कबिरुबाच ॥ छंदपधरी ॥ अबनंदम
हरकेघरअनूप सुतभयोस्यामसुंदरसरूप बतीसपुरुषलछ

नबिसेषि: अंगअंगबिराजितहैअसेष॥ अरथपु बितीतेजुतआनंद: नि
रखौमुषसुतकोमहरनंद: प्राचीनकरमफलअबिलपाइ: उथोरउन
यकुलपुत्रआइ: दावानलपसस्योजोउरंत: अरुथरनिधानसूकत
अनंत: चकुओरबरषिघनचितचाह: योंनयोमहरघरघरउछाह
सुषदेषिउतारेलोनमात: रसबद्रोसुपेनहीउरसमात॥ गोकलदे
मंगलग्रेहग्रेह: हितरुधनिबरषेमेह: बनिबनिहैआवतजुवतिबृंद॥
मिलिचलतउरदगतिमंदमंद: गरुगहेकंमंगलसुगांन: बासनब
निजूषनबिबिधिबांन: आरतीकलसमंगलबनाइ: बृजबधूनि
नंदरानीबधाइ: क्रैबदननिकटबालकनिहारि: आनंदपीवहिजल
बारिवारि: दैदैअसीसजाचहिदईवि: जसुदाकेबालकचिरंजीव: अ
ह्यहतैआएगोपग्वाल: सोलीनेदधिनांजनबिसाल: आनंदमगन
सुधिनहिनआंन: सबकरतपरसपरदधिसनांन: बनिदहीहरदमि
लिपीतबांन: जनुअजिरकाचदारेअमांन: इहाबहीदहीसरिताअपार
दधिकादमसचेनदद्वार: आनंदकेलिकरिकस्त्रिन्हार: पटबसननं
दपेसबनिपार: अरुआमग्रामतैआरगोप: आनंदितलषनबस
नओप: इहाआपनंदसुरगुरअराध: सुनकीधोनांदीमुषसराध: बृ
जपंडितद्विजबोलेबिप्रात: पगधोइकरीपूजाप्रभात: सुचिनंद
नीरकीधोसनांन: आवरतबसनपटबिहतबांन: कृतजातकरम
बिधिबिहतबेद: अरुदानपुनकीनैअमेद: जेप्रथमप्रसूतासु
रनिजांन: आकृतउतंगबकुरूपआंन: कनकमयउचितरूषनजु
कीन: बनिबिमलपाटलोईनवीन: सुघाटदोहनीकनकअंग: आ
छादितपाटंबरउतंग: इत्यादिकपरकरिउचितआनि: दोइलहधेन
दीयद्विजनदांन: अरुतरिदहनांदीयअनेक: बिधिवतबिधांनकी
नेबिबेक: जाचकजनमागधसूतजांनि: बहुपाइकोलिजयजयतिबांनि
ध्वजकलसबनेप्रतिधांमधांम: उबिबंदनमालाद्वारगांम: सुनधेनथपेग
गनउतेग: नीसांननादपूरितनिहंग: संमिलीजूथजूथनिसबह: गाव
नफिरिगोपीचलीग्रेह: कीयअवधिपारपूरनसकांम: नाहत्रजेगन
येकलनांम: ॥ इति श्रीभगवते महापुराणेदसमस्कंधानुसा
रेभाषाबीरहटनरहरदासेनबिरचितो॥ पंचमोअध्याय
:५॥ कबिरुवाच॥ छंदपधरी॥ एकहुतीपूतनांत्रीयअसाधि: पु
निकसकरनपउईपाधि: बिधिजुकतबसनन्ह
निअतिकरतीहवनाव: लटछुट

मावदिघनैन: उचकतकुचसोनाअंगअंग: मुरिमुरि हेंचितवत
गतिमतंग: पापनीषातमुसकातिपान: उफनातरूपसोनाअमान
सबगोपगेसेरहेगेम: बिसमोहपरेसोदेषिबाम: तनरूपअनूप
मबसनचाहि: बसनावीकाऊनपूछिबात: तकौनआहिअरुकह
जाति: यहसमयनंदकेयहआर: चकुघालगिचितवतचितचाहि: क
नकमयबिहतपालनाकीन: नगलटकतमुकतासरिनवीन: घनमो
लरतनमनिजडितघाट: पटबसनबिराजितकोरपाट: पलनांति
हिकूलतकूलपार: इहदुष्टपूतनानिकटआर: डरिबालदसामहर
हेदेव: नसमझोअगनिकनिकासतेव: बिषलेपकुचनिअंतर
बिकार: पापनीलगीतहाकरनपार: लीनेउगरतिहिनंदलाल: षत
बालषिलावतिकरतभाल: पापिष्टदीनेउरजपान: पयसंगसोषि
पूतनाप्रान: मुषमांझकूलकुचएकमेलि: कुचद्वितीयअलोकरबीम
केलि: मुसकातमनोहरमंदमंद: अतिबिथाबढीनयेबिकलअं
ग: गयेकूतनावबलबुधिसंग: इहालगीछुकावनकुचअधीर: प्रति
अंगअषिलजरीबिषमपीर: छूटेनजबेबलछलअछेह: दुष्टासुक
रीआसुरीदेह: इहाकूलपयोधरधरिउछारि: दीनीसोबाहरिनगर
झारि: सबपरीकोसषरपाइसीस: चकालिमरतिहिकरीचीस: त
रलतादबेजेपरतताहि: येतेसबचूरनभयेआहि: जीयजातकरी
पापनिपुकार: सुनिगिरलोकनूलेसंभार: इहांआइगोपगोपीअंग
न: सोपरीदेषिपरबतसमान: उरऊपरदेषकूलआर: सुनषेलत
हैअपनेसुनार: उरलाइलयोजुवतिनउगार: बहुबारबारलेलेबल
इ: उनदयोपूतजसुदाहिआनि: मातायहसुतकीकुसलमांनि: अवले
किलोनराईउतारि: अरुदेतकूलपरदिबचारि: गोमयमिलिगोरजल
इअंग: गोमूत्रनूवायोनीरगंग: बहुधेनदेयबिप्रनिबुलाइ: सुर
कवचरामरहासुनार: सुतकुसललगपोषेलनसुनार: पुनिमनकुज
सोदाप्रानपाइ: लालहिलकारउरलाइलीन: दुषटरेदुसहकुचपान
दीन: करतरहेकसहिसावकास: इहानलेनंदसोचतउदास॥नंद
बाच॥ मिथ्यानहोइबसदेवबानि: जिहिदियेनेदषलमरमजानि
कबिक॥ सोचतसमोचतउरथसास: इहानंदमहरआयेअवास
इहा॥ कुतोदसोवनकोदिवस: इहापूतनाआइ: करेजुजेसोकर
मकोई: पुनिवेसोफलपाइ॥१॥ गोकुलआयेनंदअह: करतरिया
हीकाल: पायेमानकुप्रानसे: कुसलबिलोकेबाल॥२॥ मरीपू

तनांकृष्णकरि। पुनितिहिसद्गतिपाइ: हैसोसाषिजुदसममह: सुनिहैसं
तसुनाइ॥१॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमसकंधानुसारणेभाषा
रहट नरहर दासेनबिरचितं॥ षष्टयमोअध्याइ॥६॥ कबित्त॥
दोहा॥ ऐकमासकेजबभये। कृष्णदेवश्रीकंत: महाउपद्रवघोषमह: उ
पजनलगेअचिंत॥१॥ देवसथलइकदेविकी: कुतोमहाबनवीच: त
हमिलिषेलोकंसषल- निसचारनिसोनीच॥२॥ इहिअवसरवेअसुर
मिलेसषासबआइ महाउपद्रवघोषमह: करिहैकंससहाइ॥३॥ छंद
द्वैअषरी॥ यहमायाबलकृष्णउपाये: जसुमतिजानेमेरोजाये: स
महिमातचुषाइसुवाये: पलनाकनकरतनछाविछाये: पछिमभागस
कटकेपलना: लैतिहिछाहसुवायेललना: सुतकेगरनहिमहरिसन
गी: ग्रहबिबहारकरनपुनिलागी: निसचरऐकसकटतिहिनिरदय
कीनोआनिप्रवेसमहाकय: पूजीघातजुअसुरप्रबीनो: कृष्णहिद
बनदावसकीनो: अंतरफुतेनिकटलषोआवन: प्रनुतहादेषोस
कटअपावन: मोहनबामचरनसोमास्यो: प्रबलपृष्टिधरधरनिप
छास्यो: अगनागधरनीमहअटक्यो: पेसोईसकटउलटलेपुटक्यो
॥दोहा॥ सकटासुरतोस्योसहज: अंगबिथुरेचहुओर: कीनोऐक
हिमासके: क्रीडानंदकिसोर॥१॥ इतिसकटभंग॥ कबित्त॥
छंद द्वैअषरी॥ इकदिनगोदलीयेआनंदहि: मातषिलावत
बालमुकुंदहि: जबप्रभुअसुरआगमनजान्यो: आवतत्रिणावरत
उनमान्यो: आरोकस्योमातसोआपुन: उतरिगोदतेलोटतआगन
याहीसमयत्रिणावरतआयो: दारुनबातचक्र दरसायो: उठे
पातत्रिनचक्रअकारो: अरधदिवसतबजयोअधारो: उठतरेन
कांकरीअैसी: जिहितनलगतगिलोलजैसी: पुरजनभाजिअहन
महपैठे: जथाबालतरनेअरुजैठे: पापीअसुरदावयहपायो: अति
रिसभस्योत्रिणावृतआयो: इहाषेचरतिहिकृष्णषिलाये: मरुतचक्र
महघालिउमाये: सीसअकासलगेतबआसुर: सगहीलग्योगयोर
हकसुर: कंठअंहनबालककीयताको: इहाकपटबलछूटोयो
को: सिलपरपस्योनिसाचरसोई: अति दारुनरवबृजमहहोई: त्रि
णावरतकेप्रानतजतन: निकसेनयनबारछूरेतन: कृष्णबालकोतुक
यहकस्यो: परबतमनकुबजहतपस्यो: इहयोषजनआतुरआए:
पनुतिहिकुपरषेलतपाये: नंदउगंइलाइउरलीनो: कुसलबा
लपायोहितकीनो: पूतहिइहांजसुदानहिपावति: मनसोचतिअ

तिदेवमनवति: अवधेलतबालककिनगयो: हाहादईवकहायहतयो:
याहीसमयनंदजुआए: पूतकुसललहिआनंसेपाये: घरनीकहलेदीनोबा
लक: घरकोसुरिजअरियरयालक: लालजसोमतिसुतउरलायो: लेले
लोनसुबाललगायो: जूथजूथबृजबिनताजेती: दोरीआइअसीसनिद
ती॥ बृजबिनतबाच॥ अहोमहरिनवतूबकुतागी: लालहिनेकचो
टनहिलगी॥ कबिरुवाचागोदानादिकदानगनि: करेनंदतिहिकाल
मंगलबजेनिसांनमिलि: बधोकुसलसोबाला॥१॥ असुरत्रिणावृतके
रहो: नासकुरेनदनंद: मंगलघरघरघोषमह: उपजेअतिआनंदा॥२॥
त्रिणावर्त बध कबिरुवाच॥ असुरनिकेबलकाअति: अरुसुतक
बयअंग: कमजुतमनमहमहरिकै: अचिरजभयोअतंगा॥३॥ सिसुदेष
तकोतनकसो: अतिपोरुषबलएह: मनहिसमातनमातक: हैउप
जोसंदेहा॥४॥ घटघटव्यापकस्वामघन: अंतरजामीआपु: हारकसदा
सुभावय: परचितकोपरिताप॥५॥ छंदहेअषरी॥ एकदिवसजसुदाअनु
रागी: सुतहिबिलोवतिअंकसभागी: इहाकुलकहंआरजंताई: देवी
मायाअगमदिषाई: बदनकोषजहमंडबिलोकी: रचनाबिसवनिरष
मनरोकी: सरसरितापरबनबनसागर: धरनिअकासहंसउडस
सिहर: षानिचारिनवभूतअषंडित: महचवरासीलषजुमंडित: ज
गजडजीवचराचरजेते: तिहिछंनमातनिहरेतेते: तहाजसोदामा
डत्रिलोकी: कान्हकेमुषहीमांडबिलोकी: पूतहिपूरनब्रह्मप्रमानी
जगआधारजगतपतिजानी: पुनिप्रभुमायाप्रबलप्रकासी: वहेमा
तसुतमतिआभासी॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंध
नुसारेभाषाबादहटनरहरदासेनबिरचितो॥ सप्तमोअ
ध्याइ॥७॥ कबित्त॥ छंदउधोरा॥ जबलगेउरवनिलाल: करतेकिच
लनकुपाल: हरिरिंगतअंगनमाहि: जबकछुकअंतरजोहि: इहांले
तमातउरइ: जिनबालबाहरिजाइ: कचस्यामसघनसुदेस: बनि
अलकबिथुरिबिसेस: सुभबिकसिबदनसरोज: मनुलजितसुम
नमनोज: जुगनयनषंजनजोप: अतिचितवनिदृगनोप: मिलिकु
टिलतोहमरोर: जनुबालमधुकरजोर: अधरतरतअनूप: रदब
जकनिकारूप: बिथिजुकतनुतरबेन: मनहरनमंत्रजुमैन: रहि
कंठसुषदत्रिरेष: बनिरूपसीमबिसेषि: उरसिघनषरसचाल
बीथजोगमनुससिबाल: लसिकमलकरतललाल: बनिबाहुदंड
बिसाल: करिकनककिंकिनिकीन: नगजुरितओपनवीन: सुष
डुनकनूपरसद: बनिचलनपेडबिहद: लगिजबेदोरनलाल

बिचकाचअजिरबिसाल: सुषनिरखिहरषतमाइ: सुषअतुलउपजिसुना
इ: यहसमयनंदकुमार: बृजकरतबालबिहार: अबरामकृष्णअनूप: सु
नगोरस्यामसरूप: संगलीयेसघनसमाज: बयरूपसमजुबिराज: इकगे
पिकाकेआइ: पुनिसूनिमंदिरपाइ: मिलिधसेग्रेहमंझारि: नवनीतपात्रनि
हारि: सीकाप्रलंबितसोइ: हेहंसतगतनहीहोइ: ऊचोसदुरगमआहि:
तहाकरनपुहचतताहि: यहकृष्णबुधउपाइ: इकधरेऊंषलआइ: बेग
रितिहिपरबाल: ताकंधचढितकाल: निसेषमांषनलीन: निजसषनि
बांटिसुदीन: इहिबीचग्वालनिआइ: सोद्वाररोकिसुनाइ: सुषमांझ
धजुमेलि: कीयकृष्णताइसकेलि: त्रीयनयनमांझनिहारि: दीयबदन
तेपैझारि: इहीनेनमीजतनारि: मिलिसषाजजहिमुरारि ॥ छंदहेग्र
षरी अवरदिवसकाकृष्णआये: पुनिदधिदधनबाहरिपाये: तहाइक
सषाधस्योत्र हनीतर: अवलोकेनाजनतिहिअंतर: अंधियारेसोइत्रि
त्रकुलायो: बाहरितेतिहिकृष्णबुलायो: तयोप्रकासरतनमनिन्ह
षन: बांटिदयोदधिअसुरबिरूषन: इहांषारदधिबाहरिआये: पह
चानेग्रहनीतेपाये: मटिकारिकतबिलोकेमंदिर: करिप्रलापमीठत
करसोकर: इकदिनकृष्णअकेलोआपन: हेकोउसंगसषातबनाहिन
इहागोपीकेग्रहमहआयो: पैमांषनबकुतेतहापायो: मनिमयथंभ
मांझमनमोहन: निजप्रतिबिंबबिलोकिचकितमन ॥ श्रीकृष्णबाच
लग्योकहनताबिंबहिलालन: मिलिहमतुमघरीयेयकुमाषन: पेम
समातहिसोनसुनावकु: अरुहमसंगबेलननिसआवकु: येककव
लमेलतमुषआपन: तामुषदेतद्वतीयप्रफुलितमन: याग्रहकीस्वे
मनितबआई: मोहनचरितदेषिमुसकाई: लालउगरलालउरलीने
कृतयहप्रगटजसोदहिकीनो: महरिबुलारललेमुसकावे: लालअ
पनोछतीयांलावे ॥ जसोदाबाच ॥ मुदितबचनयोजाषेमैया: क
हेपरयरजातकन्हईया: मेरेगृहदहीअरुमांषन: अतुलितलाल
सुषदीयेआपन: घरयरजाइकवनपरपावत: कान्हरमांषनचोर
कहावत: अवरदिवसकाकृष्णआये: संगबलराऊसषासुहाये
पुनिसबग्वालग्रेहमहपैसे: जनबंचकअद्भुतगतिजैसे: जतनथरे
छीकादधिभाजन: मोहनभयेबिलोकिचकितमन: अतितेपात्रप्रल
बितऊंचे: हेतिनलगिनहीहाथपहुंचे: कृष्णतहांअद्भुतमतिकी
नी: लांबीलकुटीकरधरिलीनी: सबमटकनिकेलकुटिसंचारी: न
येछिद्रतिनतरहरनारी: धसीतहाअबिरलदधिधारा: इहांआप

दई कृष्णकुमारा। औकमाकि सबसषा आये। पानकरे दधि अति सुषपाये।
याहीसमय ग्रेहमी आई। करि चोरी न जिय ये कन्हाई। हेदधि पात्र जु छि
निहारत। बिसमत बालचरित्र बिचारति। दिवस अपर जसुदा के ने
छानो करत मुसकात दान। कृष्ण तहा कु सषा बिलोक्यो। रहैन
ताकु जोरो क्यो। यह बाल सो देषि रिसायो। इहानि कसि जसुम
त्यायो। छोहबड़ो बालक ताही छन। लाग्यो कहन कान्ह के लछन
बालके॥ मेरे अबही देष्यो री मईया। करयु वमारी षात कन्हईया। लेछ
टिका जसुदा रिसलागी। सो आई तहा देषि सतागी। लीलिलई मुष
माटी लालन। तहा धरयर कोपन लाग्यो तन॥ मातजा मन रिस पूछति
जसुमति माई। क्यो रेषलतै माटी षाई। श्रीकृष्ण बाच॥ द्रिग जल
रेल कुटीया के ऊर। धरनि निहारत कोपत धरधर। लेले बरेउ सास
उचारे। मईया मो हि छिटिका जिन मारे। हे ये सषा षि जावत मोही
तिल बार बहकावत तोही। सग कि कुरुहे ही आनि सिलाई। मेरे मु
षअवलोकि री माई। पुनि यो कहि लयु बदन पसार्यो। नियत मात
तहा बिस्व निहार्यो। पुनि भूगोल बिलोक्यो पावन। सप्तदीप नव षं
ड सुहावन। सात समुद्र नवासे सरिता। सात पताल जु यंगम सहिता
अबिलबन सपति तारअगारा। परबत अष्टकुली अनपारा। सोल
कला ससि द्वादस दिनकर। नवन छित्र तारागन नन चर। निगम
चारि नव ऊन पुरानां। मिलि चत्र षानि चराचर मानां। देषे राक सदे
त जु दानव। किंनर जक्ष गनेसुर गंधरव। सगन कोटि तेतीस सबे
सुर। सहस अग्यासी तहा रिषि सुर। मेघ त्रयोदस नन घन माला।
पुनि तहा अष्ट प्रगट दिगपाला। अणुपल दंड पहर दिन तिथ पर। मा
स अयन रितु सब समसर। पंच सलिल त्रय काल अनल त्रय। मा
रुत मंद सुगंध सीतमय। त्रगुन देव त्रय पंच तत्त तहा। जोति चक्र
अनष कित है जहा। जीव जोनि चतुरासी जेते। तहा बिलोके जु समति
तेते। इत्यादिक जु वचक्र अषंड। बदन कोष देष्यो ब्रह्मंड। ब्रह्म
अष्टि जो बेद बषानी। जननी सुपे बिलोकी जानी। मुषमूद्यो पुनि क
वरमनोहर। अदभुत रस उपज्यो तिहि अवसर। पुत्र हि मात ब्रह्म
प्रमान्यो। जग करता हरता सो जान्यो। दैवत अदभुत नाव दिषा
यो। आदिपुरुष सो ईश्वर तहि आयो। प्रभुत व देवी माया प्रेरी। है
तव जननि मनुज गति हेरी। नाव ब्रह्म हू जरानी भूली। फिरत

पुत्रहितफूलीफूली॥ इहालीनैसघाअनेकसंग: सोबयरूपसमान: मांधन
यरयरस्थदयि: मूसिघातदिनमांन॥१॥यहजूचलोचवावअति यहत्रह
गोकलग्राम: मिलतजहातहगलिनमें: वृंदवृंदवृजबाम॥२॥ बालवि
नोदविचत्रवर: अद्भुतचरितअपार: बिबिधिअगोचरमनबचन: क
रतवृजेसकुमार॥३॥इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदसमसकंधानुसा
रेनभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥बालचरित्रअष्टमो
अध्याइ॥८॥कबित्त॥ इहापहलेहुपुरजगप्रगट: कृतयहनयोप्र
कार: मुनिनारदकेश्रापमरि: उनयकुमेरकुमार॥१॥सुतद्वैकुतेकुबेर
के: नलकूबडमनिग्रीव: धनजोबनमनमदमहा: सोदुष्टनिकीसी
॥२॥त्रीयनसहेतअबसत्रते करतगंगजलकेलि: सुरापानबसमदन
मत: मनतनलजामेलि॥३॥मुनिनारदयाहीसमय: सरितातटसत
नाइ: बीनांपानिजुबांनिवर: आपुननिकसेआइ॥४॥सोरगणालये
बसत्रबसलाज: देषेजबनारदद्वैवस: सकुचीत्रीयासमाज: चित
नांमनिअतिभयचकित॥५॥छंदपधरी॥ येकवरमहामदअंध
आप: परहरिभयलजाप्रगटपाप: इहामिलेअसुनलवतमआनि
कछुकरीननारदद्वैषिकांनि: करजोरिनबंदनप्रनितकीन: द्विजब
रबिसेषआसिषनदीन: तनकृतेमगनमनमदमत्त: सोहीजरहरस
रंगरत्त: रिषरोषबचनबोलेरिसाइ पापिष्टछकेअतिबिभवपाइ: बज
द्विमयेहबैअवनबाप: मातेधनादितुमभयेआप: तनरूपगरबतु
मछकेतास: सोनासहेतकेसोबिसास: पोषतजिहिनिसिदिनसमय
पाइ: नवअष्टद्विमभोजनबणाइ: सोगंधबिबिधिबासनसुरंग
अनमोलिकभूषनअंगअंग: सुषबासकुसमसजासमांन: सतज
थदासिकासावधांन: बिनताजुमध्यमुगध्याविसेष: अतिरसबिल
सबिलसतबिसेष: इहिदेहगरबतुमबद्योआप: सुषपाइराजसपति
समाज: पुनिसुनकृदेहताकेप्रकार: छनमांझजलतनजरिहोतछार: ज
लसहसकारकिकृतसंजोग: तवनहुतोजलजंतलोग: अ
रयातकिकृमिकुलअघाइ: बिटहोतकलेवरसोसुनाइ: परिना
मपिंडयेत्रयप्रकार: तिहिहेतगरबमांनतगवार: यहदेहदुष्टतुम
तजकृआप: पुनिहोकृजमलतरमहापाप: पेमुथरामंकलजनमप
इ: जरुजोनिसुगोकलतजकृजाइ: निसिदिवसनगनतननिरा
धार: पुनिसहोसीततपजलअपार: मिलिजोरजमलअरजनसमू
ल: कृतजोगहोकृकालिंदकूल: छिनमांझउतरिनवगइ.

बपुकंपबदननहीफुरतबाक: पच्चात्तोतहांनारदपुनीत: स
रिकरअतिसनीत॥ नलकूब उबाच॥ बसदीनतावकहिबिमलबा
मुनिदयोआपहमलयोमोनि: तुमदेअनुग्रहजोगिदेव: तवकहो
महिउधारतेव॥ नारद बाच॥सतहिब्यबरषजहजोनिसंग: पा
ष्टरहुरमदप्रसंग: कलिप्रथमचरनकृष्णावतार: तवहो
रनहमिनार: अंबाकरअंषलबंधिआप: पुनिकरहिंतिहरिनास
पाप: रिसदेसरापनारदरिषेस: पुनिकरेबहिरकाअमप्रवेस:
लकूवरअरिमनिग्रीवनाम: कोबेरउनयकिंकरसकाम: पुनित
हातासपंचतपाइ: जहजोनिसुगोकलनयेजाइ: लहिजोरजमल
अरजनअजान: नारदसरापनुजततनिदान॥ इति श्रीभागव
त महापुरांतेदसम सकंधानुसारेनाबाव
दासेनबिरचितं॥ जमलार्जनआपोनांम॥ नवमोअध्याइ
॥ कबिकबाचाइहा॥ सुतकाजेमोषनसुकर: मथिकादतद
मोह: हेतकृष्णकेजननिहवि: छिननपितावतछाह॥ छंदचेअ
षरी॥ मातप्रातहीमांकिमथानी: अदनुतनेतरइतिहांआनी:
रहलोमेलतोतामांही: सुषहिकरतमथानसनांही: सबही
हरिसवारे: दहीबिलोवतअचरकारे: करतआपअमसुतहितकाजे
बिमलकरनिबलियांबलिबाजे: सुषसज्यासोवतहोसुंदर: कु
ष्णोचषमीजतजुगकर: कहतसुआयोकवरकन्हईया: मोकहमां
नदेरीमईया: गहिरलोकान्हमथनीयागाढी: थकितजसोदाचितव
तगढी: लैउबलाइमथनदेलालन: मेरेपूतहिदेकमोषन॥ कि॥
कान्हरकाजेदधकदायो: याहीबीचसुपेउफनायो: मथनांछांडिज
सोदामाई: इहांदोरिमंदिरमहआई: लैदरबीकरदधचलायो: बार
छांटदेजतनबनायो: कान्हषुधाबसअतिरिसकीन्ही: दहीम
नीफोरिजुदीन्ही: अंगनकाचफेलिदधिअंसो: सोभितमही
वरजेसो: ॥सोर गा॥तबेकृष्णअतित्रास: नाजिदुस्योइजेतवन
इहापायोअनयास: नाजनमोषनसोंतस्यो॥१॥छीकाघस्यो
पाइ: सोपेमोषनजतनसों: चढ्योअलूषलआइ: कादि
सोकवर॥छंदचेअषरी॥इहांजसोदाजबफिरिआई: कृ
लोक्योकवरकन्हाई: महीगिस्योअरफूट्योमटिका: छोहच
ढ्योकरलीनीछटिका: दूधतसुतहिंफिरेअतिधाई: मनरिस

व्याकुल जननि माई : महरि जबै आई तिहि मंदिर : मोषन चोर रतलि
ष्यो मनोहर : लालत रतन कांपन लागे : भय तैं तीन नवन पति न
ग्यो : इहा महरि हिलोनो आतुर : मरदन महाबली षल मधु मुर :
मुंह पर दीनी चनगट माई : इहा सुत अषिया जल भरि आई : मं
दर रोदत मन मोहन : गिरत मन कुआंसु वा मुकता गना : मा
ज अरे दीन्ह बिगस्यो अैसो : तो कोदे कुअ बफलते सो : तो न तफि
रत रुधदधि तजन : मुसि मुसि षात पूरा ये मोषन ॥ कवि रु ऊ
षल इहा निकट हैं आन्यो : गट पूतक हे बांधन गन्यो : इहा पाट की
लो रे आनी : तासो बांधो ऊषल वानी : लो रे अरध नाग लै न्ह
ध्यो : बालमुकंद हि चाहत बांधे : सुत कटि कसी दावरी सोई
लग कीये न प्रन होई : सरल दावरी दुजी सांधी : बकुस्यो गांठि
न पूजित बाधी : नांधी बृज की जे तिक नोई : हीन तरु है अगु
ल होई : भयो जसोदा कहा मन्त्री : देषी जननी होत दुषारी :
कृष्ण कृपाल दया तब कीनी : दावरि गांठि जसोदा दीनी : जाके
आदि अंत नहि जान्यो : ताकहु बांधि अलषत मान्यो : देव गुरु
बिधि दया दिषाई : गूढ प्रगट निगमागम गाई : प्रेम भगति केव
ल प्रभु पूरन : अति सुषकर तदासक हे करन : जाकी गति न सुर
सुर जानी : रसरी सो बांधो नंदरानी : तहि परम सुष बृजपति लल
नो : पय कुच पाइ फुलाये पलनो : बालगुपाल जसोदा बांधे : सब बृज
जुवति हासि रस साधे ॥ बृज बिनता ॥ प्रति दिन मोषन मुसत पर
ये : प्यारे लाल सुपे फल पाये ॥ कबिसा नैन सैन दे नोहन चावति :
बेलत आपुन कृष्ण षिजावति ॥ गोपी बाचा ली नैं अबे करम फलल
लन : मुसि मुसि बकुस्यो बे हो मोषन ॥ कबिसा सुत को ऊषल बां
धि सन्नागी : ललित करनि ग्रह कारि लागी : सिधुर महा मत्त जो सं
कुल : अैसे बालक दोरत ऊषल : नाथ इहा तरु जमल निहारे : दे
षि जहा जहु जो निदुषारे : प्रभु नारद को बचन प्रमान्यो : अगिलो
कारन सो सुधि आन्यो : आनि निकट तिरछो करि ऊषल : बिच स्यो
दुम बिचि बालमहाबल : ऊषल अटक्यो दुव दुम अंतर : निकसि
गये उत स्वामी नरहर : तहा जमल अर्जुन हु तोरे :

जहाँ बिछोरे पापआप हतधरनि पछारे। भये मुक्त तहाँ होउ भाई
सुत कुबेर के कृष्ण सहाई। उबरि परे तरु अति अरुराने। भये सबद
रजलोक भये नै। इहाँ जसोमति दौरी आई। मानुष प्रान निकसि हे
माई। महरि बिलोकी कोन्ह अचयमन। ऊखल बाँधे कोल तरु
गन। लोई छोरि लाइ उरलीनो। कहति जु हाहा मैं कहा कीनो। बड़े
बिघन टारो बिस्वंभर। कुसल लह्यो मेरो कान्हर। मुष चूमि
रति चुंबति मईया। बार बार सुत लेत बलईया। तरन मांझ ते निक
सि तछन। तहाँ जहाँ देउ दिब्य धरे तन। अति छबि तेज बिराजि
त ऐसे। जलन काढ़ते निकसे जैसे॥ जय जय जय
तिरघुबंस उजागर। स्याम सरूप जयति तन सुंदर। कृष्ण जयति
जन सुषकारी। हितजुत बृंदाबिपन बिहारी। नागरि जयति जस
ोदानंदन। निगम हेत बृजबिपन निकंदन। देह जहाँ धरे त्राता
देऊ। स्वसथान कहरषत गये सोऊ। त्रिभुवननाथ अथो गतत
रे। थो कुबेर के पुत्र उधारे॥ इहा आपु दुषी दुष ओर के। ऐसे कृष्ण
उदार। सरनागत पंजर बिजय। नरहरि के निसतार॥ नाव बि
बरजित नागवत। कहे सुनै जन कोइ। दरबीपरु सत सरब दिन
हेत स्वादन हि हेश॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंध
नुसरे नाव बाप हट नरहरि दासे नबिरचितं॥ जमलारजुन
उधारे नाम॥ ९०॥ कबित्त॥ इहाँ महा उपद्रव होतये। हेरि जम
हबिपरीत। महरि करत सब मंत्र मिलि। नंदादिक जुत नीति॥ ॥
अब चलिये अनि त्रकहु। तजिये गोकुल ग्राम। बाल उपद्रव अति
बढ़े। मनमथ दुसह बिराम॥ उपनंद बात कहे उपनंद
बा। घन जल पूरन घास। हरी बृंदाबन प्रगट। बसिये तहाँ सुष
बास॥ देषि तरु लता कुमनिकी। बालक बेस बिचार। बिनाप
वन हीं टूटिबो। अचिर जो होत अपार॥ कबित्त॥ बृंदाबन की
जा बिमल। मनज बधरी मुरारि। नंदादिक बृजगोपकै। प्रेरे बि
त्र प्रचारि॥ सब निकस्यो निरधार सो। बृंदाबन को बास। अ
पने अपने सकट साजि। करत प्रयान प्रकास॥ साधि दिवस
पंचागसुध। निरनय गवने नंद। आकृत तरंग अनेक अति। बनि

गोधनके वृंदा॥१॥ मिलि सुषगोधूलकसमयः वृंदाबनपरवेस
सबकेसमत सुनसगुनः कीनोबासबृजेसा॥ इति वृंदाबनबास॥
छंदहेअषरी॥ महरबसौवृंदाबनमाहीं। सुरभीजूथनषरकसमाहीं
आकृतरंगअनेकउतंगनि: सोभाबनीबिबिधिसमश्रृंगनि: सेतद
षनउजलखराजे: गहरजलदसेदिसिदिसिगाजे। बछराबृंदअ
नहबदावत: उरधपूंछधरिधरिमिलिधावत: बालगुपालजुहर्षब
दावै: धरिनुजनुजनिसुअंगनिधावै: घुमरतदधिमथानघरनिघर
घरनिधसैमनुगाजतजलधर: संपतिदेषिनदृग्रहसोहत: बरनकुबे
रसुरेसबिमोहत: गोपबसैसबगावनिगावनि: परमबिसालसक
तसुषपावनि: कृष्णतयेइहपंचबरषके: हितकहिजाइनजननि
हरषके: ऐकदिवसजननीपहआये: संगसषामिलिकृष्णसुहाये
श्रीकृष्णबाच॥ कहतमातसोंकवरकन्हैया: अबकूबकोतयोरी
मईया: जननीकूबछरनिसंगजैकू: हेतसहतचकूओरचरैकू: मो
कहंपनहीनईमगावकू: आतिकमरीयाअसुनउदावकू: लालकु
टीयांकूकरलैकू: बंसीदैमुहिबननिबजैकू॥ कबिकाइतनीसु
नतमहरिमुसकाई: लयेउगइलालउरलाई॥ माताजाबारबारले
महरिबलईया: करिहैजोकछुकहैकन्हईया॥ कबिकाबालबि
नोदबलसंगबनबन: महिमामनुजबिहारतमोहन: अषिलेसु
रकौसीकछुईछा: दुष्टनिदेतदुखमयदिछा: सरवरसरितगहनब
नसुंदर: लताबितानपत्रमिलिमंजर: कुसमतिफलतिसदासुष
कारी: कुंजकुंजबृजबिपनबिहारी: फूलेसरनिसरोरुहसोहत
मिलिमधुमतमधुपमनमोहत: अतिसुषलाषबिहंगमअनग
न: तरुबमत्तमयूरचित्रतन: ऊंगीनषजुदंतीसुंदर: करतके
लिबनजंतमयंकर: बनमृगबरनजातिकोजानै: मिलिमिलि
जूथचलतमनमानै: साषामृगतरुपतसोहै: जूथपजूथम
हामनमोहै: बछराकृष्णचरावतबनबन: तहबलदाऊसंगगे
रतन: सषाअनेकबंसबयसुंदर: आलबनावबिचत्रकीयेबर
बनबनकोलतबंसबजावत: बेलतअपसषानिषिलावत॥

आयो बछरूपकरि असुर: निकर बछ मह मिलिगो निसचर: पापी सो कालनपि
छान्यो: जनहिंसक ओ मासुर जान्यो: ओच किहरि ताकी दिग आये: प्रभु कि
कुसंग सबान हपाये: आसुर सो गहि चरन उठायो: महा कोप करि गगन न
मायो: पटक्यो षिलहि धर निअपावन: तजि गये प्रान असुर छूटत: मह
प्रमान बछासुर मार्यो: रोइ सरीर सबानि निहार्यो॥ रूहा॥ बछासुर मारे
बिषम: प्रभु नर हरग हिपाइ: बाल बिलोकि बिलोकि बपु: निरभय भ
ऐसु नाइ॥१॥ छंद द्वै अषरी॥ भयो बालक निअबिरज जारी: निसचर देह
निहारि निहारी: बकु ह्यो एक समय बिहरत बन: गये सरोवर तट बाल
कगन: मोटो एक बुगला तासरमह: बेगि तीर दुष्टता कतहह: तहां भये
बालक बछ त्रिषातुर: सीतल जल पीने अति सुंदर॥ बालको॥ बिस
मय भये बिहंग बिसेषो: काग्रेसो अबलोन हो देष्यो: या हो दिस बलु
तेजु अगे: संग कृष्ण सब सषा सुहाये: भये पीयत जल दोउ जाई: इहा बल
के दिग एक न्हाई: लीलि लयो तिहि बक नंदलालन: धाइ धरन आसुर य
रघालन: बक को कंठ जरन जब लाग्यो: तब छन ताहि मुष के मग त्याग्यो
चोंच उघारि लग्यो बक चाबन: दुष्ट चलो तन चरन न दाबन: कृष्ण चंचपु
टजुग मग हेकर: निठुर त्रिनाज्यो फाड्यो निसचर: तीर नीर द्वै भाग बि
गतन: बाल बिलोकत परे अपावन॥ रूहा॥ बक मार्यो दार्यो बिघन
नर हर प्रभु नंदनंद: प्रगट कंस उर त्रास परि: अमर भये आनंद॥१॥ छंद
द्वै अषरी॥ बछ चरावत बाल बृंदाबन: आये कृष्ण संग अह आपन: बछ बक
सुर मरन बषान्यो: जान्यो नहिं तिन कुपु निजान्यो: ग्रेह ग्रेह ते मिलिगो
पीगन: आरी सबै जसोदा अंगन: लेत बलाइ कंठ लपटावत: गह गह कंस
मंगल गावत: नंद महर की नाग बकाई: बिघन उपजि जो रजात बिलाई: म
रि मरि जात जु आवत मारन: कान्ह कवर को उपु रुष सकारन: इहां कछु
यह दई वीछा: दुष्ट निदेत दंक मय दछा॥ रूहा॥ बृंदारनि बिलास सब
नित बिहरत नंदनंद: कबि नर हर उधार करे: अमर बृंद आनंद॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधानुसारणे भाषा बारह टन
र हर दासे न बिरचित॥ एकादस मो अध्याय॥११॥ कबित्त॥ क
बिता॥ बकी नाम इक बहनि असुर षलता अधिकाई: अधम बकासुर
एक भयो अघ जो नाई: प्रथम बकी पूतना जबे षलता बजनायो:
ताही छन ताहि हतो पापफल कंस्यो सुपायो: अजगर धरि देह जु इहि
मे: अबे अघासुर आइ है: कबि नर हरन दलालकर: प्रगट करम फल
पाइ है॥१॥ छंद द्वै अषरी॥ मिलि निकसे बलदाउ मोहन: सषा अ

नेकसंग बृजसोहन: सुंदरबछराबृंदसुहाये अपनेअपनेसबलेआये नंद
घोषतेबाहरनिकसे। बिमलसरोरुहसेजनुबिकसे: करतबिलासहास
कोलहल: मिलिधावतबोलतमुषमंगल: बिहसतनाचतबेनबजाव
न: गोपकुमारमधुरधुनिगावत: सुंदरबालमदनसेसोहत मुषछबि
देषिचराचरमोहत ॥छंद पधरी॥ इत्यादिकरतकौतुकउदार: कीनो
प्रवेसबनयनकुमार: बनगहनधसेतबबछबृंद: अपनेसुनारसंजुत
अनंद: दिनमध्यबितीतेप्रहरदोइ: केषुधितबालऐकत्रहोइ: याहीबि
चिबिजनछाकआइ: पुत्रनिकहंजननीदीयपगाइ: पुनिबैठिसबेसि
सुपांतिपांति: नरिदोनानोजननांतिजांति: करिजथाछाकनोजननकु
मार: सबग्वालबालबेगेसुदार: इहिसमयअघासुरकरिउपाइ: अ
जगरहोइरोक्योपंथआइ: मगमांझपरेतनअद्रिमान: प्रतिमांसुतास
जोजनप्रमान: तिहदुष्टधरिउरमांझदाव। करिजगनीत्रातबेरतावे
मारूपदेइअपनोसुनावे। मुषविवरकोसकंदरामांन: अधरअवनीसो
मिलतअंग: पुनिउरधअरधननसंप्रसंग: दृढाकरालबिकरालदंत: उ
पमेयतासकबिलहिनअंत: कृतमध्यकोसघनअंधकार: पावेनकछुक
छुवारपार: बहुजनथजूथउठिबछबाल: षितिचलेजातमिलिकरतष्या
ल: अघरअसुरपनंगतनदेषिआहि: चिंतवकितरहेसबबालचाहि॥बा
लको॥ यहकहोकराधोंतीयाकोइ: यहहेतबतावहुसजनदोइ: यहप
रबतहैकोउमहाकाइ: इथीतेनिकस्योहेतपाइ॥कबिकु॥ इहा॥मन
मनतर्कबितर्कमिलि: बालकरहेबिचारि: प्रभुमायाप्रेरितप्रबल
मुषतिहिधसेमंझारि॥१॥बालको॥ करिहैकलसहारकछु: निह
चैनयकछुनाहि: नईजुपैनबतबता। मिलिचलियेथामोहिनरा
बछासुरमारयोबिषम: दुष्टअसुरबकदेह: करिहैतेईकलकछु
उनहिनदुरगमयेहा॥छंदपधरी॥कबिकु॥ इहिसमयकलसे
पुनिइहाआइ: सबबालधसेदेषसुनाइ: प्रभुकरेकलआपुनप्रवेस: अ
षिलेसबिसरकअसेस: मुषरोकिसर्पकोसर्पमार: करिजथाजतन
जसुमतिकुमार: अजगरमुषसंपटजटितआइ: सुरनासस्वासरुधित
सुनाइ: निजब्रह्मरंध्रफूटेनिदान: पंनगकेतिहिमगएप्रांन पापीमरि
आसुरइहिप्रकार: कृतअमरबृंदजयजयाकार: बजिदुंदुभिबि
सेस: आकासकुसमबर्षेअसेस: बिचिउदरबचायेबछबाल: करिसु
धादृष्टिमोहनकृपाल: निकसेतहांबिहसतनंदनंद: बनिपाछेबछ

राषालेबृद: इहिरूपकृस्नप्रनुनिकसिआइ: सबकालग्वालबालकस
जोकुतीअसुरमहदृस्वजोति: बलबिक्रमताहीहेतहोति: वहजोति
कसितबगईअकास: पुनिनयोतासपूरनप्रकास: सोईजोतिउत
नतेसमूल: तबआईउलकापाततल: इहिजोतिकृस्नमहमिल
इ: संबारवजोयनमहसमाइ: करकृस्नहतेजदुष्टकोइ: हरिमा
हेऐकत्रहोइ: इनुदुष्टबिजयकरिकृस्नदेव: अषिलेसयेहआयेअजे
बनचरितकहेलरकनिबनाइ: रसअहनुतउपजोनंदराइ: बालहिउ
वतबारबार: अरुकरतदानजननीअपार॥इहा॥नंदजसोदाकेनि
ल: उअपुराकृतकोइ: इजमहजोउपजतबिघन: नासहिपावतसे
इ॥१॥बीतेइहिबिधिषटबरष: सेसवबयघनस्याम: प्रनुनरहरदृ
वतप्रगट: करेसपूरनकाम॥२॥अघासुरमारेअधम: राषेबछराबा
प्रनुनरहरपूरनपुरुष: देवनिहीनदयाल॥३॥इतिश्रीजगवतेश
हापुराणेदसमसकंधानुसारलोगिभाषाबारहसनर हरदासे
ननिरचितो। अघासुर बधनाम॥१२॥ कबिकुबाच॥इहा॥ कै
हैअबबछाहरन: अहमाचितबिचार: काजप्रतीछाकृस्नकी: नृमिउ
तारनतार॥१॥छंदपधरी॥इकसमयसुषदरबिसुतातीर: बछरानि
चरावतउतयबीर: बनिसंगसषाबहुगोपबाल: रसरतरमतबानी
रसाल: बहुकरतबाललीलाबिनोद: पुनिबदतचितनांनाप्रमोद
क्रीडाअमतोमधानकाल: बैठेमिलिमहलग्वालबाल: जबतयो
छाककोसमयजानि: अपआपसुपकतिबैठिआनि: दोनांनारिबिजन
बिबिधिदीन: क्रमजुकतसबनिआहारकीन॥इहा॥ कृस्नहितईअबे
रकछु: भोजनकरतसुनाइ: बछराजमनाकछुबिचि: चरतफुतेचित
चाइ॥१॥ताकतफुतेबिरंचितहां: प्रजीघातप्रमान: इहिकीनोंब
छाहरन: हितसुरकाजसुजान॥२॥कृस्नबछासुधिलेनकहे: इहांआपु
नचलिआइ: तहानपायेबछते: सोचतनयेसुनाइ॥३॥तबब्रहमाअ
येतहां: जहासषासबजानि: बालहरेतेउबहुरि: प्रगटअसेषपिछां
नि॥४॥उहानबछराबालइहां: पायेकृस्नकृपाल: अबदेवीमायाअ
गम: प्रेरीबृजप्रतिपाल॥५॥वैसेईताइसपअषिल: बछराबालकबृंद
सबअपनेपरिकरसहत: कीनेंबालमुकंद॥६॥मातपितासोंहितमि
ले: वैसेईसबआनि: अहनुतरछाआपुनी: प्रनुसोईकरीप्रमान
॥७॥बछराराषेऐकबिधि: बासुरदेवदुराइ: संकरषनकृतासमय

पेसोईमरमनपाइ ॥ छंद द्वैअषरी ॥ बिबुधनिकोबीलोजबवासुर: इहांआये
ब्रह्मातबआतुर: तनघनस्यामकमलदललोचन: मुरलीपानिमदनम
दमोचन: बसनकबरीयांबेतबयांनां निरषेमोहनरूपनिदांनां: ग्वालम
ठलीमिलिमिलिगावत: बिहतबंसुरीमधुरबजावत: हैकोउडुमचदि
बछराहेरत: फिरिफिरिलटुवाचकरीफेरत: सरिताकछनिबछरासोहत
मिलिधावतमारुतगतिमोहत: चढ्यांग्वालचरतचितचाइन: सोनि
तषेलतआइसुनाइन: तेईबछराहजबालकतेते: जातसरोजहरेहेजे
ते: पुनिवेइहांबिरंचिपिछांनें आपहरेहेतेउतहआंनें: इकुंघांजरथदेषि
बिधिदोऊ: कृतमकहेजातनहकोऊ: प्रतिमांबयसजेदनहीपावत: वि
धिमनतर्कबितर्कबढावत: बारबारप्रतिमांबिबिलोकत: रहोकमल
रूपलकनिरोकत: ब्रह्माअंतरभावबिमासे: सोअबकृष्णमईआ
नासे: दिव्यदिष्टब्रह्मातबदेष्यो: बिस्वमूलश्रीकृष्णबिसेष्यो: मो
हनकेप्रतिरोमनिमंडित: अषिलतहब्रह्मंडअषंडित: प्रतिब्रह्मंड
चराचरप्रांनी: षेचरभूचरचारयोषांनी: आदिब्रह्मसुरसंकरआसुर
पंचभूतपचीसप्रकृतिपर: अषिलिबिभूतिजोगद्विजदेवा: सबेरहतअ
इसबससेवा: जोतिचक्रमहदादिकजेते: कालकरमभवकारनकेते: मह
बिलोकीदईबीमाया: छंनकब्रह्मपरपरीसुछाया: भयोमोहबसचेत
नभूलो: लहरिअपानसमुद्रहिझूलो: आपुनसुधिबुधिरहीनअैसी:
जगकीरचनादेषीजैसी: अषिलप्रपंचबिलोकेअद्भुत: सातिकभ
वभयोबारिजसुत: इहांबिरंचिभयेजबआतुर: स्यामदयालभयेरह
कसुर: मायाबिषमनिवारीमोहन: चेतभयोतिहिछनचतुरानन: दिष्ट
उघारिब्रह्मजबदेष्यो: वहजुवृंदारनबिसेष्यो: सरिताकुंजपुंजबन
सोभा: लहरितरंगकमलबनलोभा: नाचतमोरमदनमदमातेः क
लरवकोकिकलगनकुहकाते: भावअनेकबिहंगमभाषा: सोभात
रप्रतिसाषासाषा: बनबनजंतअनेकबिहारत: गुहागुहामृगपति
गुंजारत: फलअमृतमयतरवरफूले: लतामाधुरीमधुकरझूले: बंदर
इंदअनंदबढावत: इकडुमकांपिअवरडुमआवत: इत्यादिकबनसो
भाअनगन: चितवतब्रह्मगनभयेचतुरानन: महाग्वालमंडलबिचि
मोहन: अतुलितनछबिप्रफुलितआंनन: आदिमध्यनहीअवसा
ना: जगकरताहरताबिधिजांनां पूरनपुरुषनंदसुतपरष्यो: हेतबि
चारिबिधाताहरष्यो: स्वनांदेषिब्रह्मअनुरागे । ..तप्रेम

रसपागे: नयनदरतआनंदजलधारा: नये अरुनतरसरोमउन्नारा: क
मलसुतनपदबंदनकीने: लालबुगरलालउरलीने: हरेहरैचितवत
हरिमांही: अचवतछबिनहीनैनअघाही॥ बिधिबा चाबिनयसहत
बोले बिधिबानी: प्रभुमहिमामैनाहिनपिछानी: सापराधकुत्रि
भवनस्वामी: जगकरताभुमअंतरजामी: देवउचितमोहिदंडसुदे
जे: कारनकरनबिलंबनकीजे: कुंअपानअबुधअपराधी: सरनबृ
मायाचाहतसाधी: अगितेकनिकाउछलिअपारा: बनिदिषावतजा
बिसतारा: बारुपदहतजाकेबटे: चलिताहीकेसिरपरचटे: सोहीमै
अपानतुम्हारी: लैनप्रतीछाकुछिबिसतारी: ममबलबिक्रमसकलबि
लाये: राषकुत्राहित्राहिजुराये: मेदुरमतिबसहरेमुरारे: तेहबालकबछ
तिहारे: सबैसंभारिलेकुअबस्वामी: जुतपरिकरजगअंतरजामी॥ स्ता
करिकरिबंदनपरिक्रमन: ब्रह्मानगतिबिधानि: अतुलकृस्नछबिधारिउ
र: नयेसुअतरध्यान॥१॥ आयेबछराबालतेः संध्याग्रहयंनस्यामकी
डाकोतूहलकरत: मनबंछितअनिरामभुर॥ मातपितासोहितमिलेः सब
जथाप्रकार: बछराबाछीधेनबन: बरततप्रेमबिहार॥३॥ इहिबिधिबछ
राहरनबन: कस्योबिरंचिबिकार: नरहरप्रभुमायानियत: पायोतदपि
नपार॥४॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारणे
भाषाबारहहनरहरदासेनबिरचितं॥ त्रयोदसमोअध्याय॥१३
अथ ब्रह्मस्तुति॥ कबित्त॥ कबित॥ महिमाकृस्नअमेव निरषि
थकिरलोअजोनिज: सयननीलतनस्याम: परमकरुनानिजपंकज
बिमलबदनकचबक्र: करनिमंडितचलकुंडल: भ्रकुटितबंकुब
रंग: लसितमनुअलिसुतचंचल: आमोदस्वासनासोअतुल: अरुन
अधरदाडिमदसन: सोभाअद्भुतनरहरसुप्रभु: मोहतमहामनोजम
न॥१॥ कंबुकंठमृगराजकटि: भुजजानुप्रलंबित: उदररषसोभा
अद्भुत: उनतउरअच्युत: बनिनितंबनरबिहत: कदिलजंघाकटिके
हरि: चरनसरोरुहनषरतन: कृतचालमत्तकरि: कमलाउरोजकुंक
मकलित करपल्लवमरुनकरे: सबनाहहोकुकाहिकमलसुत: हितम
मपदपंकजहरो॥२॥छंदपद्धरी॥ बनिधातचित्रमंडितबिचित्र: तरतर
लपत्रबेजंतितत्र: सुनसिषसिषंडसिरमुकटसोह: अंगअंगउचितन
षनअरोह: आनानवनीरदनीलअंग: समबसनपीततडितासुरंग॥

उधारमूलअवतारऐहः दुषदेवहरनधरिमनुजदेहः अपराधमोहिछमि
ऐअनंतः कृतकारनकरनजुरमाकंतः यहदेहधरयोममहितउदारः सि
ध्यामोहिदीनजगतिसारः पावैनहिमहिमावारपार पचिमरैजदपिमे
सेअपारः दुषसाधिजोगमषतपुदुरंतः पावैनहिइनकोकछुअंतः त
जिआनआनसाधनअनेक अनुसरैचिंतवचरितएकः दुषसाधिआव
उधारसोइः कृतगावैहृजलीलाजकोइः येचरितितुम्हारेआदिअंत सु
षलहैध्यानकरिपरमसंत उधारमूलसाधनायेहः ह्वमरतजोगकरि
दमतदेहः वयबालतिहारेहृजबिहारः सोईगीतआहिउधारसारः करि
सरधागावैजपैकोइः सुषवेछितपावैसाधसोइः कछुनाहिपांनबिगपं
नकाजः आचारबिचारनहेतआजः करिनिरगुनसाधपुचैकोइः सनेग्र
कासपावैनसोइः जाकेनरूपरेषानरंगः पुनिक्रीयाकरमसंगनप्रसंग
मनकरमअगोचरवचनमूल साधैकहाप्रांनीसानकूल निरधारपारनि
रगुननिरांन पावैनकछुपचिमरैप्रांन परहरहिधानेकूटहिपरालः कन
हाअनलागेकुकालः तजितोगजोगसाधैजुतंत आगैअनेकपचिम
रैअंत हवमुअसाधिलषिन्रिसतहोइः पुनिसगुनउपासीतऐसोइ
जिनलहैसुलतअतिसगुनतंत सुषकरैमुकतजीवनसुसंत अवत
रललैतातअजेवः दुषहरतहरतदेवाधिदेवः तुमसगुनरूपमारगब
ताइ करिदेतसुगमउधारकाइ। छंद चौपाई। धन्यसुरतियेजिनसंग
धावत चितहितलावतुमजुचरावत लेलेनामदुरततुमनिजकर
सगुनसरूपस्यामघनसुंदर जिनकीकृपालोकत्रयजीवत तेईतुम
टकपातपयपीवत गोपीधन्यनिगमयोगावत कृष्णहिजोपैटहल
करावत सबधन्यथेबेलतसंगनि पलपलउगरतप्रीतिप्रसंगनि
महरजसोदधन्यहैतमन बदनबिलोकतलेतबलईयां पयकुचप
नपिवायेपोषे सुतकेनाश्लकारसंतोषे महरनंदकीधन्यकुमारी
कहीयतजाकेकवरकन्हारी हृजगोपिनकेपुनिबिचारो होतजुत
मसोहितवाचारो धन्यधन्यथेहृजकीधरनी वेदचरनतवअंकि
तबरनी प्रतुयहधन्यउगतपदपंकज रिषबामोपावनतरी जिहि
रजः तिहिबनधन्यधन्यसोईतर बेगेजिहिछयासुंदरबर जमना
धन्यपुलिनतेजानें मोहनजहाबिहरतमनमानें बिहंगधन्यतेईपसु
बनबासी निरषतजिनहिकलअतिनासी सरवरधन्यकमलवनस
नाः लालकरतक्रीडाजललीला आदिद
तिनहिनंदनंदनहरषे धनियराबादरमिलिधावत

हैंपगराजनदोषहमारो। यहकालीकोचरितकुचारो। घेलसुघरजानि
कोघेलै। पेषगधारकंगधरिपेलै। प्रतुहमसोकछुदुषजिनपावो। सर्प
थमवाकोसमझावो। बिषधरसबयहनेदबतायो। पुनिकालीअ
पराधीपायो। इहांगरुडकालीकेआयो। सतफनमाहिदुष्टसमझ
यो। ऐसतलोचनताकेदारुन। सोबरषतमनुअनलसकारन। ल
हलहातजीहाबिषज्वाला। क्रमद्वैसतअतिहंतकराला। बिषमजुध
नोतारषबिषधर। चकितभयेनवन्नतचराचर। बामपेषहिममय
बिसतास्यो। मुषपरगरुडभुजंगममास्यो। त्रमतभयोजबकाली
नाग्यो। लसेसंगषगराजनलाग्यो। अहिकालीहृदाबनआयो। पे
सोदहनिरभयथलपायो। मननिसंकबस्योफनमाली। कहियत
सोतबतेहकाली। बिनसंकातहारहैमहाबिष। चढैगरलगरुडहे
षतहीचष। याकेजोईषलनिकसेऊपर। अतिबिषेचढैगिरसोऊ
पुर। जलकीछीटलगेजबजाके। ततछनदगधहोतभनताके। जिहि
जलकीमहिमायहजानी। पानकीयेकाकहिबोषानी। महाउष्टबि
षमयफनमाली। कुटंबसहतरहेतहाकाली। सोतरिआपजुसंक
पावे। यादहगरुडनततेआवे। ॥इतिकालीदहप्रसंग॥ जमु
नादहमेकालीजबते। तारषआपआनिरसोतबते। जोजनजोज
नचऊयोजेते। तिहिबिषजरेचराचरतेते॥ अथकदंमप्रसंग॥
दुमकदंमएकतहांनदाढो। बिमलतरलपल्लवफलबाढो। ता
कदंबकोसुनहुवृतंत। आगेकहुकलपकेअंत। कविनसुरा
सुरकीजाकीनी। निकमेउपजीबुधिनवीनी। नुजाषुजानल
गीजबनारी। चितमांहतबबातबिचारी। कविनमथानपमु
निधिकीजो। लाभरतनचवदहतहालीजो। क्रममथानजथाबि
धिकीनो। निकासिसुधायरप्रथमनवीनो। दिव्यकुंभसोगरु
डहिदयो। नयतजिजातगगनमगतयो। इहानिकस्योहृदाबं
नआए। अममगताकोनयोसहाए। याकदंबपरबेगेआनि
महासुषदजमनातटमानि। अमृतप्रभावभयोदुमयाको। त
रलगरलहुलगीनताको। आसपासतरजरेअनेक। यहफ
लफूलतरसोयेक। ॥छंदपधरी॥ धरिअदिवसएकजु

पथेन॥ चलियालबालअति चित्तचैन॥ बनपथसमातनधेनवृंद॥ इह
चलीकरिजितातितआनंद॥ पाछेनबीचकछुनीरपाइ॥ याहीदहना
वीजोगआइ॥ निरदोषकरनयहबननिदान॥ प्रभुइछाकछुअैसीअ
मान॥ बकुनयेत्रिधातुरधेनबाल॥ तिहिपीयोयहजलतातकाल॥ वि
षचटेसुरभिगोपालवृंद॥ दिटपरेसबनिकेकालफंद॥ करिनोजनपुनि
जसुदाकुमार॥ बनदाऊगवनेबनबिहार॥ तरलतातरलकुसुमित त
माल॥ मिलिमदनमत्तभ्रमिभ्रमरमाल॥ देषतबनसोभाकृष्णदेवर
जमनादहत्यायेतबअजेव॥ कालीदहकेतटअसेकाल॥ बकुपरोबिले
केधेनबाल॥ करिसुधादिष्टचितयेसकाम॥ सबउठेकहतघनस्याम
स्याम॥ बालको॥ जलपीयोसबनिहमत्रिषाजानि॥ अबकृष्णजिवाये
तुमहीआनि॥ यहजलमहहैकोउआरिष्ट॥ आगीसुनजान्योहमअनिष्ट॥
श्रीकृष्णबाच॥ सुनिनंदनंदबोलेसकाज॥ महनीरकरोंनिरदोषअज
सुनकिंकनिमनिनगमयसमेटि॥ पटपीतबसनकटितटलपेटि॥ वह
कदंबसिषरपरचढिउछाह॥ अविलोकिनीरतहआतिअथाह॥ पुनि
लरकंपपोरुषप्रमान॥ जलजंतबजआयातजानि॥ सतधनुषनीस्व
कुदिसिसुनाइ॥ पसरयोअगाधअवकासपाइ॥ अवगाहसालिलगज
मतओप॥ कैधोंमदराचलकृष्णकोप॥ कोलाहलसुनिचकुयोकरा
ल॥ कालीसुजग्योमनुप्रलयकाल॥ रसनासचालज्वालजुनैन॥ फु
कारसबहसुषकरतफैन॥ अरसातअंगमोरतअनीत॥ उफनातरोस
आयोअनीत॥ इहकृष्णबालअवलोकिएक॥ अहिबद्योगरलअरुथ
लअनेक॥ लीनोंलपेटितनंदलाल॥ करिकोपमहाकालीकराल॥
श्रीषंकृष्णजोपनयसंग॥ आवरितकृष्णप्रतिअंगअंग॥ बालको॥
अंगयेंनागिकोउबालग्वाल॥ कहिकृष्णनागलीलाकराल॥ इह
तसबरतबयोषहोइ॥ कहातयोकछुजानैनकोइ॥ सबगोपनदअ
यसत्रास॥ पावैनकृष्णकरुनाप्रकास॥ जसुदामिलिरोइनिजुवति
जाल॥ बिलपातकरतआईबिहाल॥ बलनदआइतहोमहावीर॥ न
बरहेचकितह्वैसरितीर॥ आवरितअपनहाकृष्णआनि॥ जलऊ
परनिकसेसमयजानि॥ यहदेषिनंदउपज्योअचैन॥ निकसैनबोल
सूकैनैन॥ इहा॥ जसुदादेषोकृष्णजव॥ अहिलपटानोअंग॥ पुनि
बाहतजलमहपस्यो॥ उपज्योसोकअनंग॥ १॥ देषोजातनयहुसह॥ पु
नहमरेकैसाथ॥ दोरिदोरिकंपतिदुषित॥ हगिबलपकरतहाथ॥ २॥ जित
तितकंपतिहजुवति॥ तहगोपगहिलेत॥ बिलप॥

ल: हाहामेरे हनहेता॥१॥ सुर-नीतांकृत बिषम सुर: बाडीबछरा बाल:
हाहाकब बनघन हम हि: लेचलिहैं नंदलाल॥२॥ बृंदाबनके सब बिक
ल: हैंजकजीव जितेक: मिलिमिलिकांपतिनीरमें ह: ऐकनिपकरतऐक
॥३॥ देषेमोहमजबदुषित: ऐबृजजीव अनंत: पूरनलीला आपनी: कर
तनयेश्रीकंत॥४॥ छंद पधरी॥ अहिकलनयो समहर अनंत: दुकुलो
रदाव घाव निदुरंत: नियय लोदेह अपनो निहारि: महिमा अमेयफू
लेमुरारि: टूटनतनलागे पंषमगतास: मोनयो सिथल आचेनसास
रह्यो उछारित बकुलसरि: पटक्यो लेतरसो रोषपूरि: यहसमयन
योकालीअचेत: सुरछागईऊ ग्रीवलसमेत: करिफनउचारफुका
रकीन: महिमाबिलोकिमननयो मलीन: चढिगयेकलफनमालचा
हि: तहामदनिलागेसीसताहि: अहिकमलउगतजोईजोईअमांन:
निरतताऊपरबलनिदांन: प्रतिफनफनऊपरनंदपूत: इहांरचेम
हानाटकअद्भुत: मिलिकरेजोजरेचरनमारि: अहिसकतनहीकोउ
फनउचारि: फनपटकनलगेमुषफुरतफेन: नहीसुरतमुछितहोतनें
न: मनिगिरतफननितेबिषमसार: तहालेतमनेपदतलप्रहारि: अ
हिनयेबिकलसबअंगअंग: नयउपजेजांनोदेहभंग: पतिकेजबनि
कसनलगेप्रांन: मिलिआईनागतिदीनमांन: नयकंपदेहलूषनबित
नि: मनमहासोकनहीउरसमाति: सूकतअधरचढिउरधस्वास: बि
परीतकालजानेबिनास: बालिकाबालबिललातिजांति: अषिलेम
अयलेधरिआनि:॥ नाग नीबाचा॥ कहिआहिआहिकीनीपुकार: क
रियेसहारजसुदकुमार: दुरबुधिदुष्टकहंदुदीन: करतारअनंतसुम
उचितकीन: दुष्टकोदेयराजानदंड: अवनीअनरथउपजेअषंड: प्रज
तजेनीतिअनुसरेपाप: अवनीसकरेतिहिजतनआप॥ कबिकबिष
धरीबचनसुनिसुनिबिसाद: प्रभुदयोरहानिरनयप्रसाद: उतरफ
नमालतेअजेब: दंडदयोसामर्थदेव॥ श्रीकृष्ण उ॥ हहा॥ कलकलो
हसिनागकहे: रेपामरषलजेत: ऐसेदुष्टनिकोउचितनबासअनंत॥१॥ काल
बाचा॥ तनबिहबलकालीतहा: बोलोसमयबिचारि: अबतारषकेत्रास
तेमोहिबंचाउमुरारि॥ श्रीकृष्णबाच॥ यहबृजमंडलमेबिहत: बृं
दाबनममबास: पषनप्रगटपुरांनप्रति: जपतसाधनिसजास॥२॥ त
तेजास्अनिवृत: बसियेसरसबिकार: बृंदाबनमेरोबिमल: हैयहनिस
बिहार॥३॥ तामसजोनिदुजीहत: बैरअकाजबिसेष: मरेहुसोसउ
रिक्रमुष: दंतनलोकदेषि॥४॥ सिरतेरेमेरेसदस: हैपदचिन्हपुनी

तिकेवगराजतैं: यहतवनयोअतीतार। अबतोरमनकर
बसिहैसकुलबिसाल: प्रभुकीआग्यापाइपुनि: तहागयोततक
३।कालीदमनजुकृष्णको: कहिहैलीलाकोर: ततोसंतनवसर
हेतजुतनिरतय होर॥४॥क्रीडानंदकिसोरकी: कविनरहरजस
नैसुनैताकहंनगति: बादैनित्यनवीन॥५॥इति श्रीभागवत
हपुराणे दस मस कथानुसारणे भाषाबारहरनरहरदा
नबिरचितं॥ इतिकालीनिग्रहोषोडसो अध्यार॥१६॥ कबिरा
हमातजसोहकहंमिलें: इहामनमोहनआर: छरलायेआनंदआ
नंमृतकमनुपाश॥१॥सबैनिहारतहेतसो। एककृष्णकीओर: सु
पिबावतनैनसुष: जैसैचंदचकोरा॥२॥ मनकृष्णहजैजनम:
आयेहजअवतार: पाईनिधिरंकनिप्रगट: सुलतनयेसुषसार॥
३॥बडेउपद्रवतैंबचो: मोहनंदकुमार: बेदप्रतीतजुधरमवि
पुनिसोईनयेअपार॥४॥धिनधुरधुरबसनधन: मनिगनरतन
अमोल: कोऊकछुवेछाकरत: तेरतेरलहतसतोला॥५॥ करिकरि
नोछावरिकनक: दानजथाबिधिदेत: गोपीगोपगुपालगन: लान
धरमसुषलेत॥६॥ इहिबिधिकरतछाहअति: नयोअसतगतिनो
न: तहानतपसथोबिषमतम: मिलिबनयनअमनंत॥७॥चलिन
सकेतिहिसमयचित: पंथअगमनिसिपार: वैरिरहेजहांतहांबिह
न: सबहीसहजिसुनाराज॥ नयोहरषअमदिवेसतर: व्यापितषु
आबिराम: सोइरहेजहांतहांसुषहि: करिबनतलपसकाम॥ छंद
ध री।पुनिअरथनिसाकेसमयपार: अग्यानउपद्रवनयोआर: च
औरअसुरमायाप्रचार: बिसनरेअनलचकुंयाविकार: हजनयेबि
नमरुजीवजंत: दवदाहमनुप स्योदिगंत: अरहतअगनिलगीअ
ल: कृतघोषुदुसहज्वालाकराल: मिलिअबिलअनलचदिगगनअ
हातहापुकारजीवजंत॥गोप बाच। हाकृष्णकृष्णयहवांनिहे
कुमातत्रातत्रातानकोर: कहित्राहित्राहिकृकतकराल: प्रभुकृ
षिलीजैकृपाल: कछुहमहिनाहिनयमरनकोर: हाहाबिजोगत
नहोर: प्रभुउठेइहांदिगमीजिपानि: जगरहककलपाअंतजा
हएकसकतिप्रेरीअनंत: दुसाधिअगनिपीनीदुरंत: तहाजरेल
त्रिनतमाल: दिगदिष्टसुधासींचीदयाल:

रसमूल: फलतारनमितबकुरंगफूल॥ ६॥ इहो॥ इहो अमंगलकालतह
गावतमंगलगीत: पुरबासीसबप्रातही: आये धरनिअत्तीत॥१॥ गो
दोहनब्यापारयह: करनलगेसुषकाज: जथाजथाक्रमयोषजन: म
हरनेदकेराज॥२॥ महिमाकलसअमानुषी: देवीसकतिदुरंत: बृज
महजोकोउबिघन: उपजतपावतअंत॥३॥ यहलीलाहरिअनलकी
कबिनरहरकहिकोइ: पापअनलकेपुंजमह: साधनपरिहैसोइ
॥४॥ कालिंदीनिरदोषकीय: निग्रहकालीनाग: कृष्णकृपातेघोषके
नयेसबभूतसभाग॥५॥ इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदसमस्क
धानुसारणे भाषाबार हटनरहरदासे नबिरचितं॥ दावा
नलपनकरनोनाम॥ सप्तदसोअध्याइ॥ ७॥ कबित्त॥ छंदद्वैअषा
बनयनसुषदबसंतबिहाई: इहाक्रमजुतयोषमरितआई: नरछ
टुमबेलीफलभर: फरेपत्रकाननभयेहरे: चारिप्रकृतिमानिगुनि
सचय: मिलिसबचहीयेकतेजोमय: पृथीअकासपवनअरुपानी: म
हाप्रकृतिजिअनलसमानी: ऊंमारुतिकेसीऊपटे: लुवाबहुतअति
तातीलपटे: सरवरलघुसरितजलसूके: कमलबनतृषालुरकूके
सूकिसरोजलतासंगसरवर: जहातहाषदहसानहीजलचर: सफ
रसरेजलयटेसुषदसर: दुरिदुरिरहतपंकमहादर: उरगमकरक
मठीअकुलाने: जलबिनुप्रलयकालसेजाने: सबेजलासयकरदम
सूकत: कहिकहिसघनसिषीकूकत: सलिलभावसरऊसरकेसं
ग: मृगत्रिलाभमिमरतजूथमृग: संगसषालीनेबकुसोहन: मिलि
बनधेनचरावतमोहन: तहाबिलासतरनितनयातट: बनतेंडीर
समीपमहाबट: मायाषेलसुरछामोहन: करतभयेबृजबिघन
निवारन: तबमिलिआषिमिचनयाषेलत: ऊपरतरुतबीचिगहि
ऊलत: चढिचढिसाषावृछचलावत: हहिहहिकुसमतिलताहलाव
त: मोहनहसिहसिसषारमावत: पुकुघांस्वालचमूदरसावत: चतुरबे
लिफलबिसदचलावत: तेतेछलकरिकरिसबटारत: मांऊअरधफ
लतेगहिमारत: बानरकेकोउबालबिहारत: तरतरसाषऊंपिबु
कारत: कबकुकमोरमुकटधरिभाये: सबनिरतमिलिमोहनसं
थे: कबकुकग्वालसमसुरगावत: बिबिधिमधुरधुनिबसबजावत: क
बकुबांधितरफूलाफूलत: फिरिफिरिहसतलालदेषूलत: इत्यादि
कलीलाअधिकारी: हेतअसुरबधरचीबिहारी: असुरप्रलंबग्वाल
केआयो: पुनिमिलिषेलतकाकुनपायो: जगबंचकजनहिसक

जान्यो: पेवहबलमुकंदपिछान्यो॥ श्रीकृष्णबाचा॥ दूहा॥ स्यामकलेवलरामसो: दाउ सुनकुनिदान: अबतो खेलकुषेलयह: चितलाइचेगोन॥ कबित्त॥ ऐकओरदाऊनऐ: अरुमोहनइकओर: अरधवालइतअरधउत नाइकनंदकिसोर॥ आपदिसालीनोंअसुर कंसप्रलंबकुनाउ: रमनलगेउहागेदेरस: देतदावपरदाव॥ पनकीनेदुकुओरप्रभु: हरिजीतिजबहोइ: येकऐककेकंधकरि: बउहचावेसोर॥ निहचेऐसोनेमकरि: खेलनलागेग्वाल: नारीकेलाहलनयो: गोपबालगोपाल॥ लेगोदाऊदावलगि देदोदावलदेव: कुरीजेरिजीत्योहरषि: अहिअवतारअजेव॥ कांधेलेलेकृष्णके बलकेबलीजुबाल: पुंहचावतबटलोंप्रगट: तहाहसतदेताल॥ असुरकंधप्रलंबइहां: ओरोबलपहआर: अपनेतीनेदावअब: सोहसिचढेसुनाइ॥ कंधकीयेबलदेवकों: असुरअवधितजिआइ: यहसुनचलोंआपनों: दीरघदेहदिषाइ॥ अंजनतनकारेअसुर: दसुनदंतकुदाल: बिवरनासद्रिगकूंपबनि: बिकटबदनबिकराल॥ कपिलेकचभ्रकुटीकुटिल: अरुबरषतद्रिगआगि: तरकतिजिह्वातडितसी: बारंबारइजागि॥ पहचांनोंयहतोप्रलंब: बलजदपिबयबाल: मारौमुष्टामुकमहु: कृतसतषंडकपाल॥ गदेकरिकंगअहन: निग्रहस्वासनिदान: पटक्योषललेसिलपरे: पिंगएतजिप्रांन॥ बज्राहतमानकुबिवस: परबतपस्योअचंक: महाविषमतुवचक्रमहु: नोआघातअषंक॥ आतुरआयेकृष्णइहु: सुषदसाथसबसंग: तनअवलोकेअसुरतहां: अचिरजहोतअनंग॥ अतिहितदाऊलाइउर: बारंबारबिसेष: नरहरप्रभुलीलानिगम: सोनजांनिसुरसेष॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमसकंधानुसारेभाषाबार हटनरहरदासेनबिरचितो॥ कबिकुबाच॥ दूहा॥ बनबनकरतबिहारहरि: रामकृष्णघनस्याम: गोधनबृंदगुपालगन: आहिहितजुतअभिराम॥ प्रातहीगोदोहनप्रगट: करिकरिग्वालसकाज: बोरिदयेजितितिबरक: निकसेसुरनिसमाजा॥ अरगलमुटिछुटीअटक: घनचलीसबधाइ: तबैहरितत्रिनगंधतें: इहांजमुनाबनआइ॥ तरलसकोमलघासतहां: बहिबहिरहेबिसाल: मुजासरचढिगगनमग: मिलिमिलितातमाल॥ छंदपधरी॥

धारमध्यबनआसपास: निरधारयहेपसुकुलनिहान: त्रिनतरलजुपाव
नगधथान: मिलिधसेसुमुजारनिमांऊ: सूकेनतहाकछुदिवससांऊ।
बऊधसेसंगसबगोपबाल: त्रिनसयनउरहिसुजातमाल: पावतनहीगो
मनमनसपीर: धनगयेकृपनजोंतयेअधीर: पदहतत्रिनतदेचिन्हपाइ
सुरनीनिसंग लीनेसुनाइ: पावेनकऊबनवारपार: करियेननामलेले
पुकार: कऊलहेनहीजबगउकोइ: हकलकलअबकहाहोइ: देखेनि
रउदिमसषादीन: करुनानिधानतबदयाकीन: ऊचेऊमऊपरचढेआ
प: इरनप्रनावपोरुषप्रताप: बिधिपूबजथावसीबजाइ: लैलैजुनाम
सुरनीबलाइ: पैअवतिथननीअतिहितप्रकास: सबचलीहरषजुतस
वकास: हनारकरतआईअनंद: बंसीरवगोचरधेनवृंद: इहामोहन
ऊमतेउतरिआनि: पेषानकरतदोनोप्रमानि: अैसीकछुइछानरअनं
त: दावानललागेबनदुरंत: फिरिगईअगनिचऊओरफैलि: गहनब
नकऊलाप्तेनगेलि: त्रिनवृंदजरतबहुतमाल: मिलिअनिलअनल
चढिज्वालमाल: चढिधूमगगनअंधारचीन: दिननयेदुषितगउपाल
दीन: प्रतिग्वालबालकीनीपुकार: अबकृष्णदेवतुमहीअधार: अषि
लेसरगोधनजुरतयेह: रक्षकतुमतुमहीराषिलेह: घनस्यामसम
यरहितुमहित्रात: जरिदावानलहमअगतिजात: बिनसतअकालगो
पालवृंद: निरनयप्रभुकरियेनदनंद: धरिचितधीरतुमग्वालधेन
निरनीतहोऊछनमूदिनेन: दिगरहेमूदिसबदुषदुरंत: इहांअगनि
पानकीनोअनंत: प्रभुकीनोदावअनलपान: निसेषगगनबाजेनि
सान॥ इहा॥मोहनमुजारनिमंह: पीनोबांहिबिसेष: देष्योबाल
कबोलिदिग: इहानकछुअवसेष॥१॥तेसेईबनतरलतर: मिलिमं
जरफलफूल: कृष्णकरनअहमतकछु: कुंजतषगअनकूल॥२॥दाव
नललागेदुसह: जरतग्वालगउजोन: नरहरप्रभुकारनकर: प्रभु
इछाजुप्रमोन॥३॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधा
नुसारणे भाषाबार हट नर हर दासे नाबिरचितो। मुजारनि
प्रवेसा। अग्निपानकरनोनाम॥१९॥ कबिकाइहा॥याहीक
मक्रीडाउचित: वृंदाबिपनबिहार: पावसरितआगमप्रगट: सुषद
इकसंसार॥१॥छंद उथोर॥ आषाढजजलदअकास: प्रतिरंगरंग
प्रकास: संघरानतघनघोर अरुघटाबढिचऊओर: दिसिमतसधन
सहप: चढिरंगसुरपतिचाप: बगपंतिउजलबोन: प्रतिघरामधप्र
मोन: चऊओरबीजचमक: नहीदुरतनजहिनिसक: संबारवसि

षरसलाव: प्रतिमा अनेक प्रभाव: मिलिजलदपवनमरेर: अतिग्र
जिमनचकुओर: सरसरितदादुरमोर ठिलीरमोरकुगोर: रजिअरन
बदनिरंग अवलोकिबदतअनंग: अतिअवतिजलआकास पृथीस
पूरिप्रकास ॥ छंदपधरी ॥ त्रिलगुलमलताअंकुरितत्रास: बसुध
सुनीरअंबरबिलास पानीनिवानपृथीप्रसंग: आनूषनमानकुओ
गअंग: महिनियोसयनदपतिमिलाप: रतिबढीबिबिधिगतिबिर
हताप ॥ कबित्त ॥ महिबिजोगसहिअष्टमास गनिजलधरआगम: र
हिसबेदयासितअकूर सहिसीतलतापसम: पीयआगमपतिहृत अ
षिलआनंदसुसजीय मिलिदपतिरतिमानि: अषिलआनंदउपजीय:
सुनतजोसंगनरहरसुकबि मासचारिरतिमानयो निसिदिवसप्री
याप्रीयनेहनव पूरनप्रेमप्रमानयो ॥ १ ॥ छंदप धरी ॥ बरिषाबदित
रबहुबिसेष: अतिसयनकुंजउपमाअसेष: सोभाबकुपल्लवतर
लसाष: नवसजतनीरपंषीसभाष: परबतनिलतातरगहरपुंज
गिरगुहागहरमृगराजगुंज: बनजंतबिबिधअनेकबास सुषबसत
बसबससावकास रतिकालत्रीयापसुपंषिरंग अतिसयप्रसंगउद
नवअनंग: जलबराषिरनिमिलिजलदजाल पलकेदरीनिचलिबि
पुलषाल गिरगुहाचलीसरितागहीर: निसेषतरुबरनरनीर: सिष
रनिसिषंकुंजतसुभाए अनेकजलदमिलिधसतिआए धरबरषिस
घनबंकेनधार ठिल्लीरवजितलितकातकार: जलजातबिकसिनसिमु
धुपजाल गुंजारबिहतबानीबिसाल: मिलिमीननिकरलयुदियमा
न: प्रतिमाअनेकबिहरतप्रमान कमगीनुमकरतंतीकुंजंत: आकारा
नषजलचरअनंत ओषधीअनउतपतिअसेष: कुलधरमहषीबरत
नबिसेष नवनृतपृथअनेकजाति जगषानिचारिअनेकजाति: ब
ससरितानीरसमुद्रपृथ: सबप्रानीपावतकरमसिथ ससिसूर्यसत
मारगसमोह: आछादितबादरत्रिनअरोह: मिलिसयननीरछुटीमृज
द बरजितप्रमानदपबेरबाद: दलचलतनहिनचतुरंगदेस निरउदि
रतिबिलसतनरेस: गतिमंदपृथपेकुचनिगाउ: ससथलअंगअपने
सुनाव: प्रिलिपीयोकिरनिजलअष्टमास पुनिउगलितरबिमानुकुप्र
कास: बरषानिसिसंकुलतमबिसेष: अवरतजलदनजयनअसेष
पेकरतऐकचातिकपुकार: अतिनरजिदिपबरषाअपार ॥ कबित्त ॥
बर्षाजथाबिलास बिबिधिकीनोबिहारबन: स्यामरामिलितिसथा
संग पृथीहजपावन वृंदाबनगोधनबिसेष

नजुत जमनांजल बिहार आनंद उमाये: कृतफलेजसोदानंदके: ना
नगतिजुतहितनईय श्रीकृष्णदेवनरहरसुकबि यहबरषारितबितई
इति बर्षारित अथ सर्द रतिबर्न ना॥ दहा॥ सुषहिनयोआगम
रद: क्रीडतकृष्णकुमार: पदअंकितपावनपृथी: वृंदारन्यबिहार
॥ छंद बैत्रषरी॥ दहा अति सुषद सरद तिआई: उजलननसोभा अधिक
ई निरनयचात्रिगत्रिषानसाये प्रमुदितस्वातिबुंदजलपाये: पुंजपय
दिबिचत्रबिहाये सीतसुगंधपबनसमुहाये कंसारासिआगमनदिन
कृत: पितरप्रतोष हम्पकब्याहित: देबीनंगतिनिसानवनवदिन: पू
दसमीसहतबिजयपन होतपयाननरेसबिजयहित: कारनसंपति
सकलबिलोकत: मालादीपबिराजितमंदिर: घनउछवजुतहरषतग
रघर: जामोसीतनयोनिरमलजल: प्रतिदिनघरतबदतनिसिपलपल
पेकप्रमुदितपृथीसपेषी सतमारगउयरेसबिसेषी: सुरनीषीरस्व
तिअतिसुंदर: परमबिचत्रबरनसोभापर: निरमलनीरगिरनिचलि
निरझर कुंडनरेअतिजितततितसुषकर: सालिषेतमरजादसचारी
कृषीआसपूजितहितकारी: प्रगटसकलउदिमफलपाए: दिसिदिसि
अंनषेतदरसाये दहाहंसअवनीतलआये: सूकेकरदमनीरसुहाये
पुहपवतीत्रीयलताप्रसूता: संपतिसकलप्रसूतपुनीता पूरनकला
ससांकप्रकासे नवजरुजोतिवंतअतिभासे सरनिसरनिकुमदनिबं
नसोहे मिलिनिसजोंन्हसरदमनमोहे: दिनकरउदेप्रकासकमलद
ल करतमधुपनिकसतकोलाहल ॥ दहा॥ इत्यादिकसोभासरद: ब
नबनकृष्णबिलास संपतिजथाअनेकसुष: कहिनरहरकबिदास॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कंधानुसारणे भाषाबार
द नरहरदासे नबिरचितं॥ इति सर्द बर्षारित बरनना बीस
मोअध्याय॥२०॥ कबित्त॥ दहा॥ येकसमयक्रीडाउचित: कृ
ष्णभगवनबनकीन: महाजूथसुरनीनिमिलि: पुनिहरजबालप्रबीन
॥ बेनबजाईबिमलबन: सुंदरस्यामसुजान: थिरचरमुनिषगमृग
थकित: सुधाश्रवनपुटपान॥ कबित्त॥ जथासुनतमृगमृगीजूथ
रसबिवसबेनरव बिकलतरहरजबधू नवनतुस्त्रीयंसकाजनव
कृष्णचरितचितवन: बिबिधिअनिलाषबढावत: प्रेमसमुद्रहियरी प्रग
टकरुथाहनपावत धरिध्यानअतुलछबिउरधरीय: जथाजोगजोगेस
वर: नजिकीटभृंगतनुमयतई ग्यानमदनउपदेसगुरु॥ छंद॥
धरिचितअद्भुतध्यान: प्रतिमासरूपप्रमान: बनिबिहतनटबरबेष

सबअंगअंगविसेष: रजिमुकटपछिमयोर: कचकुटिलसामकिसोर
जरिकनकरतनसजोप: प्रतिश्रवनकुंडलओप: कृतरुचिरजुगलकपो
ल: लसिबक्रअलकसलोल: त्रयरेषत्रकुटीनाव: सुवचापचक्रव
राजि. विधिवचनअमृतबिराजि: रचिचिबुकफंगत्रिरेष: तोरिस्तुपसी
मअसेष: बैजंतिमालबिसाल: मदमत्तचालमराल: मुषचंद्रबिबसमा
न: पुनिनेत्रकमलप्रमान: लसिअरनअधरप्रवाल: रवबेनरुचिररसा
ल: श्रुतिबासुरीधुनिसंग: सुचिनैनदरसप्रसंग: श्रुतनेत्रबानसुजा
न: प्रानीसुधमप्रमान: नहबासुपुनिप्रसंस: नरीबासुरीजिहिबंस
उलिअरनपल्लवअंग: रोमांचहृदसुरंग: कुलवालमंडलकीन: बनि
मधसामप्रबीन: नदिथकितनीरनिदान: पुनिपवनगवनप्रमान
पसुपंषिउतपतिप्रेम: निमसुनतबेनसनेम ॥ ६६ ॥ इत्यादिकरच
नाअषिल: अतिसेस्तोअतिअंग: करिकरिसुमिरनगोपिका: पूरन
प्रेमप्रसंगा ॥ १ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसा
रणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं ॥ दिवसबिरहगो
पिकागीतबरननोनाम ॥ इकबीसमोअध्याय ॥ २१ ॥ कबि
त्त ॥ ६६ ॥ उपजीदसाअनंगकी: रूपनयनअनुराग: कृतदेवीकृत
कनिका: गोपसुताबहुभाग ॥ १ ॥ पंकमईप्रतिमाप्रगट: कात्यायन
कीकीन: पूजाअरचानगतिपन: कीनीनिमनबीन ॥ २ ॥ सबमि
लिअरलोदयसमय: अरकसुताजलन्हाइ: कमजुतनगतिहब
ष्यकरि: हितहृतकालबिहाइ ॥ ३ ॥ हिमकृतअघहनमासहव: हृ
तकीनोहृजबाल: कृतदेवीकात्यायनी: बासुरनिसाबिसाल ॥
४ ॥ गोपीबाचा हृतसनानपूजासबिधि: भगवतिनयेजुनाइ: वछि
तफलमांगतबिहृत: यहेमनोरथमाइ ॥ ५ ॥ जगजननीजोगेस्वरी
हितजोलगतिसनेह: कंसाजाचेजोरिकर: हमहिकसवरदेह:
॥ ६ ॥ कबिरुवाचा छंदद्वेअषरी ॥ पूरनभयोमासजबपावन: न
गतिसनेहमिलनमनभावन: अरनउदयअघ्यहतेआई: सम
बयकंमामिलीसुहाई: पूरनदिनहृतमासप्रमांन: जनमह
तारथअपनोजांनै: गोपीचलीकुलगुनगावत: नुजधरि
अंसमनभावत: हसबिलासकरतकोतूहल: जगपा
रसपोजमनाजल: बसनउतारितीरथरिवांनो: कर

नानबिधानसकोमो ॥ दोहा ॥ महाजोगजोगेसवर: समनि
कामसुनाव: स्यामलिषेरैवीसकति। नामनिअंतरनाव॥१॥
घटघटव्यापकस्यामघन: आदिब्रहमत्रिनअंत: रूतनवषतब
रतमन: तिनतेकछुनदुरंता॥२॥कबिरुवाच॥छंद॥
अंतरनाव: अनुजानिजोगप्रनाव इहोआइकलअचीत:बरह
नहेतबिनीत: तरमगनजलमहनाम: क्रमकंअवधिसकाम
हरिबालली लाहेत: तहाकलजदुकुलकेत: लेबसनतबनदल
ल: सोचदेछबिसाल: ॥छंदहैअ षरी॥कतकदंबआरोहक
न्हाई: चितवतबचनकरतचतुराई: दरचदेहुमचीरदिषावे
त: हसतआपअबलानिहसावत: ॥कलबाचा पुनि बोलेश्री
कलप्रबीनां: तनहतषेदनईतुमषीनां: येकयेकनावेतुमआवहु:तो
सबआनिबसनलेजावहु: देषहुयाबिधिअंबरदेहु: जथाजतनके
घरलेजेहु॥कबिरु॥ सोसुनिबचनहसीसबसांमां: बिषमलगपे
लजितनईबांमां॥गोपीबाचाबोलीकुलबललीयेबकाई: काहेकर
तआनीतिकन्हाई: जांनतनंदमहरकोजाये: पेषिमहरिकुचपांन
पिवाये: जपेलहेतोसबबृजजानें: पेसबगोपजुग्पातिप्रमानें:
कहानयोगोधनअधिकानें: सबेगोपकुलजातिसमानें: केहमजा
इमहरिसुकहिहें: स्यामउपाधिनअैसीसहिहें: लछनयेसीषेनं
दलाला: बहुतेहसतिगोपकीबाला: प्यारेकिहियेनीतिपदाई:
महरिवहेहेजसुमतिमाई: तनकमहीकेकाजेतादिन: महाअल
षलबांध्योमोहन: कटिमहगमोदावरीकरकस: पुनितुमरहेबं
धेईपरबस: अंगनफिरेकदोरतऊषल: अंतमहरिहीषोलेआकु
ल: देहिचीरहमतेरीदासी: होतसषिनमहअतिउपहासी: स्यां
महमहिअबसीतसंताई: कहिहैजोतुकहेकन्हाई॥श्रीकृष्णबा
च॥ तुमहिकहतहमदासीतेरी: मांनोतोयहआग्यामेरी: येकरे
कनावेतुमआवहु: जांम्योत्योअंबरलेजावहु॥गोपीपरसप
रसंत्र॥करतपरसपरमंत्रजुकेन्हा: धरिधरिरसनादंतनिधेनां
सुनहुसषीतुमसबेसयांनी: इहिगतेअैसीअबगांनी: जिहि
तिहिबिधिकरिअंबरलीजे: कहिमपरेतबकहानकीजे: क
रसंपटमदनोलयकरिकरि: बेपथतननिकसीसबबाहर

येसबजबैकदेवतरआई: इतनैउतरेकवरकन्हाई: जबयेसुध
नावसबजानी: बोलेमनमोहनयहबानी॥श्रीकृष्णबाचा:ई
हिजलतोतुमनगनअन्हाई: पयदेवनिसुअवपपाई: तुमहि
नयोअपराधसुतातें- ऐसेजतनकरहुअबयातें। मसतकला
ईजोरिकरहितमन: बरनदेवकहकरियेबंदन: ततेयहअपर
धजुदरिहैं: केजलदेवकोपअतिकरिहैं: नयतेत्रिसतंत्रईअति
नावनि: करजोरेकृतबंदनकामनि: सुधनावजानीकेन्पास
ब: तहाअसननयेमोहनतब: उपजोतबेहासिरसअेसो: जान
तकृष्णकेनिकाजैसो: दीनेबसनसुधमनदेखो: पूरनप्रेमअ
नंगपरेखो॥ श्रीकृष्णउवाच: कारनबृतबृजकेनिका: हमकि
नोजिहिहेत: सोफलतुमलहिहोसरद: मनक्रमबचनसमेत॥
॥१॥सुकलनिसाराकासरद: हमरचिहैबनरास: तबकेहैसबक
तहो: पूरनआसप्रकास॥२॥ बिनतापूरनमासबृत: पुनिबंछि
तबरपाइ: सोकैतनमयकृष्णसो: अति हरषतअहआइ॥३॥ब
सुरथेनचराइबन: करेजथाक्रमकाज: संध्याआयेयोषसुष: रो
मकृष्णबृजराज॥४॥ समयजुबसत्राहरनसुष: कीनोनंदकुम
र: कलोसुपेनरहरसुकबि: आपसुमतिअनुसार॥५॥ इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेदसमसकंधानुसारणेभाषाबारहटनरहरु
हासेनबिरचितो इतिबसत्राहरनअध्याय॥२॥ कबिस॥ छंद
त्रेअषरी॥मिलिसबसषाअपरदिनमोहन: गयेसघनबनगोध
नगोहन: कुंजकुंजमिलिक्रीजाकीनी: नावअनेकउचितरसभ
नी: चढ़ोग्रामदिनबछचरावत: बनबनबिहरतबंसबजावत
अषिलबिहारअमतअकुलाये: इहाअसोकबिपनमहआये: म
ठलग्वालबालकरिमोहन: साअजमध्यकृष्णतिहिसोहत: कलो
सुदामोकवरकन्हाई: अजहुबिलोकतछकनआई: नयेषुधा
रतहमतोतारी: कछुमगावहुचितहितकारी: प्रनुसरितातटनि
करप्रमानें: जग्यकरतरिषिबरजहाजानें: पुनिमोहनतहासषा
पगये: नोजनलेआवहुमनभाये॥सषाबाच॥जाचेंसोहम
तोनहीजानी: पेयहजाचिकरतेंप्रमानी: यहसुनिसषाकर

तनयेउत्तर देव हम हियहतोकृतदुसतर॥ श्रीकृष्णवाच॥ जग्य
प्रसादन निक्षाजानहु पैय्यहग्रनप बिप्रप्रमानहु कहोकृष्ण
अबकारिजकीजै देषहु समयनउत्तरदीजै॥ कबित्त॥ यहमु
निसषाजग्यथलआये रिषकहआनिचरनसिरनाये करजुग
जोरिकहोतिहिकारन मुनिवरइहाबेरहेमोहन द्विजबरकछु
प्रसादहुदीजै कारनउचितबिलंबनकीजै॥ कबित्त॥ द्विजन
मोंनिहृतलीनादृष्या सोनहीबोलेगुरकीसिष्या इहांतेईश्व
लबालफिरिआये सबेकृष्णकोमरमसुनाये पुनिवेमोहनष्ट
रिपगये कारनरिषपतनीनिकहाये इहांसोईरिषपतनीपंह
आये कहेबचनजेकृष्णकहाये॥ सषीबाच॥ माताजोजनकृ
ष्णमगाये सबग्वालनिहृतांतसुनाये॥ रिषिपतनी॥ यह
सुनिरिषपतनीअनुरागी जग्यपु
रुषनिगमागमगाये उनहमपैसाधीनमगाये॥ कबित्त॥ पुनि
त्रीयजोजनबिबिधप्रकारा पूरनकरेबिसदपनवारा चारि
प्रकारअहारसविकन कीनेकृतेजग्यकेकारन ग्रेहग्रेहतेमि
लिगजगांमनि जोजनलेनिकसीमनतामनि आनिकुटंबक
रेअवरोधन पुनिइनमांगोंनाहिसहतपन इहात्रीयातेआई
आतुर मुषछबिनिरषतमदनमनोहर जोजनअग्रधरेमनता
ये जग्यपुरुषहितसहतजिवाये मोहनबालगुपालमुदितम
न इहालयेसबहिनिजलअचवन॥ कृष्ण उ॥ अबतुमजरीनगति
हितकरन पुनिअभिलाषजुकेहेपूरन देवकृष्णइहांआपादी
नी परमतपोथलजाकुप्रबीनी येरिषपतनीसबग्रहआई बि
बिधिफेरिमषसोजबनाई पतनीयेकओरग्रहपेसी त्रासद
ईताकहपतितेसी बहतजिदेहजोतिअकुलानी सोपेकृष्ण
हिमोकुसमानी जोगजागजपतपवृतसंजम देहत्यागतीर
थआतमदम येसबबिबिधिबिभूतिबदावन येकेंनावमु
कतिसंनावन॥ इहा॥ तिनरिषपतनीनगतितेकरेसफल
मनकाज प्रभुनरहरपूरनपुरुष रामकृष्णवृजराजा॥ इ
ति श्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कंधेनुसारेनाबा

हट नर हर हरसे नबिरचितं॥ रिष पत्नीअनुग्रहोनाम॥
त्रयविसतमोअध्याइ॥२३॥ कबित्त॥ सुरपतिहितप्रति
बरष करतमघगोपजथाक्रमः पनप्रनातलअवधिपाइ सबनयेसउद्दि
म सकलसारसंभारः करतघरघरहितकाजे बिप्रबरनबेदिकबिधा
न सुनमंगलसाजे ओहितप्रधानमंत्रीपुरुष आपआपकारिजअन
य सबकरतसिधनरहरसुकबि महरग्रेहआनंदमय॥१॥श्रीहल
वाच॥ अखिलदेखिउछाह कृष्णपूछेजुनंदकहं कवनजग्य किहि
काजः हेतफलतत कहोतेह सरबमईसरबग्य सरबआतमसर्ब
बनः तदपिबालली लाबिचित्र कीयकृष्णजुपावनः पितुकहोमो
हिकिरिकैकृपा धरमपरायनधरमधुर त्रतिग्रेहग्रेहमंगलप्रगट
प्रतुयहउदिम होतपुर॥ नंदबाच॥ छंदपधरी॥ अंगिरसनां
मएकमघअनूपः रिधदानसुपेबरब्रहमरूप हमकरतइंद्रगवां
नहेत हिनबंछितसोफलअखिलदेत इंद्रातमजानकुजलदजाल
बसअवधिमिलितहेनबिसाल पृथीजुइहारितवतीपाइ सुरराज
मोदउपजतसुनाइ मघनागपाइसंतोषमानि अतिहुष्टमिलिहि
जलजालआनि सुषअवतसयनजलरेतआव आनंदउपजिहुकु
यांअमाव रजबीर्यजोगदंपतिरसाल सुनकालगरभाधितहोइसु
दाल औषधीअनंतिनतरअपार नवउदभिजषानिअदभुतार
नवनतलहतिहिसुषअंग संतोषपोषआनंदसंग॥श्रीहरि
बाच॥ पितुसुनकुकरमबसअवधिपाइ अवतरतजीवकिकुजो
निआइ कछुकालबाललीलाअकाम अपांनगभावतदिनअबाम
उनिअंगहोतजोबनप्रवेस बलसंगबदतबिषीयबिसेस चषअ
वनरसनकरचरनआहि सबहिनकैबरतमनसहाइ इंद्रासंजो
गमनमिलिअसाधि इहाकरतनयेनांनांउपाधि येनयेकरमक
रकअतीत निसिदिवसकरतनीतिहिअनीति सुनअसुनकर
मसाधतसुनाइ पुनिबिलसततेईपरिपाकपाइ उतपतिजुत
करमहिंउदोत हेसाधिकरममहलीनहोत दिनहोतकरमकरि
दिव्यदेह हेनासकरमबसनिसंदेह सुषदुःषलाभअरुहानिस
ग येसबेकरमकारकअंग करमाअधीनकाजकुअकाज इह
इंद्रप्रयोजनकवनआज करताजोप्रेरककरमकाल दुषरहतहेत
सुषसोईदयाल अबपिताछोडिकलपनाआन पुनिकरियेमतमेरो

प्रमानि: बिश्राम हम हिबनषेरु बास: पसुजीवनि हे परबतप्रकास: निरुरस
रुखबस्तरतनीर: त्रिनबृथहोतत हातीरतीर: धनमहा हमारे यहै धेन: सेई
जीयतबदतचरि चरिसुषेन: निहचैसबछांडुअवरनेम: पूजुगोवरधन
सहतप्रेम: ईस्वरीदेहमैजानियाहि: तातेप्रसनअबकरहुताहि: पूजाय
हबहत्रनमुहिप्रमानि: निसेषकलोतुमकहनिदान॥ कबिरानंदसो
कलजोकहिनिदान: पितुयहैमत्रकीनोप्रमान: संसारसारनरिसकर
साज: कृतगोपुरमनमिलिचलिसकाज: इहागोपसबेगिरनिकटआ
इ: बिसतारकरेभोजनबनाइ: करिसहसभोजिद्विजत्रिप्तकीन: बन
धेनजाइचित्रतनवीन: मंदिरनसीसनिसिदीपमाल: बाजित्रबिबिधि
उछवबिसाल: इहाआनिआनिभोजनअसेष: बलिदीनीपरबतक
हंबिसेष: आवरतअद्रिनयोचकुओर: कछुरलोनषालीकिकुकोर: क
नीगोवरधनअनकूट: लेकुलषवायोसषानिलूट: संसारत्रिप्तनयो
अनसंग: परबतहितपूजासुनप्रसंग: इहिभांतिमहोछवकुवअनंद
मषभंगइंद्रगोगरबमंद: कुलमिलिगोपपरिक्रमनकीन: मनन
येदेषिबासवमलीन: सबपूजापूरनकरिसुनाइ: इहांकुलगोपमि
लिगेहआइ॥ इहा॥ कस्योबाधमषइंद्रको: नरहरप्रभुनिदान ब
सवकस्योबिरोधबस: अतिबलक्रोधअमान॥१॥ इतिश्रीभगवते
महापुराणदसमस्कंधानुसारणेभाषाबादहटनरहरदासेन
बिरचितं॥ गोवरधनमहोछवनाम॥२४॥ छंदपधरी॥ कबिरु॥
अबइंद्रकोपकीनोअपार: पग्येजलबादलप्रलयकार: सवरतक
नांमायनसचेत: हरिप्रेरेघोषबिनासहेत: घनबरषनलागेअतिसि
घोर: आरोपजलदमिलिओरओर॥ इंद्र बाचा॥ इहांइंद्रकोप्रतिअ
मरईत: धनमदयेछायेगोपथीत: इनकेइकउपजेपुत्रआइ: प्रति
मासुकुलमानुषप्रताइ: आश्रयलेताकोयेअपांन: मषभंगकस्योमेरे
अमान: बूडेसहयेतकेबिसास: निरमूलसकरिकुयोषनास: बाचाल
बालकारोबिबान: मनमेसुगरबअतिपांनमांन: जलबिंबकरुतुम
सयनजाइ: ऐरावतआरुहहमकुआइ: धरअवतबुंदगजसुंडिधार॥
परमानअंतदेवलप्रकार: पेपवनगवनसंघरनपार: लेकारगगन
गरजासुनाइ: कृतघटासामनतअंधकार: कर्कासिलबर्षीप्रलयका
र: बनितडितलताबिभ्रमबिहार: चकुओरकरतअतिचमतकार: नव
रतनयेकंपतसमीत: संपातधारामिलिबिषमसीत: गोबिंदगोपगोपि

कपाल: कीनीपुकार लषि प्रलयकाल: करि त्राहि त्राहि नीपुकार: अ
षिलेसकुलतुम हीअधार: नवनृत सरनतुम हीसुतार: स्वामीत्रिलोक
करियेसहाइ: सोसुनतस्याम ब्रजकेसहाइ: इहागिरगोवरधननिकट
आइ सोलीयउगाइपरबतसमूल: विहिकालबालछत्राकतूल: क्रम
कामपानिपल्लवकनिष्ट: प्रभुधरेअग्रपरबतप्रतिष्ट: देवाधिदेवदीन
निदयाल: करिदयाकृष्णबोलेकृपाल: मतसहोकष्टजलसीतमाह:
छिनरहोजीवसबअछिछांह: बरषाविसेषसुरपतिविकार: जैहैविल
ह्यसबजंजार: मतडरहुजंतकोउत्रासमोनि: परबतहैद्रिढमभग्र
अपानि: नवनृत सरबमनतयेअतीत: पुनिअरछांहपरबतपुनीत
निद्रानछुधात्रिषमापिनाहि: मनरहेसरबआनंदमांहि: गोपिकागोप
गोजबाल: पसुपंषिकृषीसबवृत्तपाल: दिनसातजईबरषाबि
सेष: ब्रजबसोअछिछायाअसेष: वयबरषसातकृष्णहिविलोकि: र
हिबलतरंगमनबुधिरोकि: विथकोकरिउदिमब्रजबिनास: तबइ
इकिसानोंपरीत्रास: जबरहेबरषिसबजलदजाल: बृतनंगजयोस
रपतिबिहाल: संकलपनष्टितहाजोसुरेस: इहिगोरनिवारेघन
असेस: फटिजलदजयोउजलअकास: पुनिकिरनिमहादिनकर
प्रकास: हुतिगोसुरेसबलनंगहोइ: कृतउदिमनाहिनफुरतकोइ
प्रभुदईतबेआग्यासमांन: निकसेजनबाहरसबनिदांन: थितक
रिधराधरधरनिथांन: गोपालबेनरवकीनगांन: रोहनीजसोदानंद
राइ: इत्यादिकनेटेसकलआइ॥ दहा॥ अतिसनेहकातरअषिल
ब्रजनरनारिबिचारि: स्यांमहिदेतअसीससब: चिरजीवनंदकुमार
॥१॥ सुरजीकृतहजारसुर: धरनिअवतपेधार: कृष्णहिबितवतए
करक: उरआनंदअपार॥२॥ मुनिवरसिधप्रसिधमिलि: अरुच
रनचितचाइ: करजोरेअसतुतिकरत: बारंबारबनाइ॥३॥ पुहप
बरषिहितहीयहरषि: डुडुभिबिजयबजाइ: कीनेबंदनपरिक्रमन
भ्रमरवृंदतहआइ॥४॥ महरआदिसबगोपमिलि: सुतजुतकुलसह
इ: अपनेअपनेघोपरहो: सबआये सुषपाइ॥५॥ राषोब्रजगिरवरध
रयो: मांनहरयोमघवांन: प्रभुनरहरपूरनपुरुष: नयेनरतनगवां
न॥६॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दसमस्कंधानुसार
गे नारायनदास हरदास नाम्नि रचितं॥ गोवरधन
र न॥पचीसमोअध्याइ॥२५॥ कवित्त॥ दहा॥

नग मिलि इक समय: बैठे गोपबिनीत: कृष्णचरित्र बिसेषकम: प्रगट
नलगे पुनीता॥१॥ कहत भये सब नंदकहं: बिसमय बात बिसात क
हबे सय हरि कृष्ण की: पुनि ब्रजके उतपात॥२॥ छंद॥ अषरी गोपबा
च॥ बिहसत कहत भये ब्रजबासी: बासुर दस के बकी बिनासी: मास
त्रितीय सकटासुर मार्यो: पतित सुबाये चरन प्रहार्यो: मास बरष
त्रिन चक्र जु मारे: अरजन जुगत्रय बरष उधारे: बछासुर बक अघ
अद्भुत: अरु प्रलंब काली अहि अनुहित: महदुष्ट सब हरि क्रम
मारे: इहा गोबरधन गिर उधारे: कीने सात बरष महा हरि: हे अ
वतार कृष्ण ब्रजके हित॥ नंद बाच॥ तिन कहं नंद दयो फिरि उतर: य
हकलो होमो हि गरग गुर: आगे त्रिजुग तीन अवतार: स्वेत अरुन
भये पीत सुदार: इहि चौथे जुग कृष्ण जु आये: बिधि याही मो हि गि
रग बताए॥ इहा॥ कलिजुग कहियो कृष्ण बासदेव यय हनाम
भव उधारन भये तये: बिहत बेद बिश्राम॥१॥ बारिन तेज जाने इन हि
मैं परब्रह्म प्रमानि: चिरजीवो ब्रज हित बिहत: बिलस कुप्रेम बि
धान॥ कबि रुबाच॥ अय नासन जग उधरन: कृष्ण कथा हित
काज: कबि नर हरमुनि जन करि: साधल हे सुष साज॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दसम स्कंधानुसारेण भाषा बारहटन
र हरदासेन बिरचित॥ नंदे नंद श्री कृष्ण प्रभाव बरननो नाम
२६॥ कबि रुबाच॥ इहा॥ सुरराज असुर येन संग: आये याही कलि
ग्रव लोके एकांत इहां: मोहन मदन गुपाल॥१॥ छंद॥ अषरी इंद्र स
तुति॥ करजोरे बंदन बहु कीने: इंद्र तये इहा अति आधीने: तीन लो
क प्रभुता मैं पाई: याते भयो गरब अधिकाई: तिहि मद अंध भयो हंते
सो: जग करता जान्यो न हि जैसो: माया बस हरि सरता मानै: कारन को
धलो न अधिकानै: जाकहं दुष्ट करम करि जानत: प्रभुता हरी हाहं
प्रमानत: याते पंथ चलत सुर असुर: तुम गो बिंद गुरु कुगुर: जेष
लई स्वरमानत आतम: ताहि तिहि छाड़ पंथ रत तुम: मैं अपराध करे बेत्व
मद: प्रभु षम्या करि दे कुअनेपद: यह मत नाथ मो हि फिरि नावै: प्रभु
दीन यह बंछित पावै: गोकुल नाथ चरन अनुरागी: तेई तव भूत भ
वे बहु भागी: मेरो जग पनि नास्यो मोहन: मो कहं उपज्यो क्रोध म
हामन: प्रलय मेघ मैं पवन पराये: याहि जनासकरन को आये॥

सुनि हसि बोले जगस्वामी: मह करि हो तजु उतपथगामी, संपति
करु कंति हिसव: हैनि हचे मेरो ग्रेसो हग: अवसुरराज जाकु यह
पनै: पुनि ग्रेसी न विचारु सपनै॥ रुहा॥ इंद्रलोक बसि इंद्र अव
कुतजुइंद्र अधिकार: करियेरहा अष्टिकी: सब विलसहु सुषसार॥
कांम धेनि बाच॥ छंद ध्रैग्रषरी॥ कांमधेनबोली धीरजकरि: होतुम
गुनब्रह्मनिगुनहरि: जगतपिताजगदीसजगतगुर: बासदेवहज
गयबिस्वंतर: इंद्रकस्योहेउ हिमग्रेसो: जनगउबीरजरहैनजेसो
जगोधनजो प्रभुनबंचावत: तोइनकोकहु नांमनपावत: निरन
नदीधेननंदनंदन: हजबसि हैसुषसोजगबंदन॥ कबिकुबाचा
रुहा॥ सुरपतिसुरसुरनीसहत: सबेकितसंदेह: प्रभुनरहरगवतप्र
सिध गयेआपनेग्रह॥१॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्क
कथानुसारेभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥ इंद्रनश्री
कृष्ण अनबेककरनेनाम॥ सताईसमोअध्याइ॥२७॥ कबिकु
रुहा॥ वेकसमयएकादसी, निराहरकीयनंद: कालिंदीहसनान
कृत: आयेसहअनंद॥१॥ असुरकालसंध्यासमय: बेदलोक
बिवहार: सलिलप्रवेसजुइहिसमय: सोनउचितसंसार॥ छंद
ध्रैग्रषरी॥ इहबरनकेकृतजुआये: पुनितिननंदनीरमहपाये: अ
नंदतिनकृतनिगदे: करबिजुगलकरजलतेंकाढे: पलमहंबरन
रेकपुहचाये: पुनिसेवकइहानंदपगये: सेवकआरतबचनसु
ये: इहकृष्णप्रहआतुरआये: बिरहबिलापकरेहजबासी अ
कृष्णहजहितअनिनासी: कारनपूछिकृष्णकरुनाकर: बरनलो
यबिस्वंतर: सनमुषआनिबरनसनमानें: पूजाकीनीब्रह्म
नें॥ बरनबाच॥ सबेदीनताबरनसुनाई: प्रभुयहयेनंद
ई: नयोकृतारथदरसनदेवा: सदाहुकृपदृपंकजसेवा: प्र
थमनोमरमपिछांन्यो: इहानंदअनजानेआन्यो: यहअप
मकुअबिलेसुर: गोबिंदहीनदयालजगदगुर॥ कबिकापु
नंदपुहचाये: इहलेकृष्णयोषमहआये॥ नंदबाच॥
रीब्रह्मनिगउपाला: परमातमपूरनप्रतिपाला: सकल
नंदसुनायो: लोकपालइहिबालनवायो॥ कबिकागे
गोबिंदगुनगावत प्रभुपोरुषकहिक

रहा॥ तातछिकायोबरनतैं इहांतयेआनंद: हराबिलगायेमातहीय क
लकवरसुषकंद॥१॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे दसमसकंध
नुसारणे भाषाबार हट नर हरदासे नबिरचित॥ बर्णन नंदमे
हनोनाम॥ अष्टाबिंस स्तोअध्याइ॥२८॥ अथ पंचाध्याइ॥ क
बित॥ सरदकालनिसिसुषद बिमलकुमुदीयसरोजबन: बिबिध
बरनसोरंतबिसेष: कुसमितलयेकानन येकाकीउद्यान इहाम
नमोहनआये: नंदनंदआनंदकंद: तवबंसबजाये: सुरबेनसुच
ज्योरिसंग अगमगमनतेउतरीय बसप्रेमनेमबिहबलबिकल
सकलचलीहजसुंदरीय॥१॥ छंद हे अषरी॥ कोउअंजनमंजन
अनकीनी: अरुकोउयहबिबहारअधीनी: कोउपितमातलतीजेज
ई अधतोजनदीनेउठिआई: इहकोउधेनदुहावनआवत: धरि
पयपात्रधरनिउठिधावत: छांडेपयकिऊचलचलाये तेअनज
तनगयेउफनाये: कोऊअरधालषनकीनें कोऊदधिजावन
अनदीनें: कोउकुचपानबालअनकीनें दीपकअहचोकाबिनुदी
नें इत्यादिकसअषाअरेज: कोनगनें छांडेअहकारज: इहिगति
प्रेममगनबनआई: अतिआतुरमनमेंअकुलाई: बिहतकुटंब
मातपितबरजी: तउनरहीजोपेपतितरजी: बिकटपाटजटिकत
बिरोधी: करिहाहारवदीनतिकीनी: दुष्टगोपपतिजाननदीनी
प्रेमबिवसनहीजाननपाई: अबत्रीयप्रानतजेअकुलाई: करि
सोईध्यानधारनोकामनि: गईकुलमहमिलिगजगामनि॥ कबित
गनेप्रथमनेत्रानुराग चितसंगबिलगीय: प्रेमबिवससंकलप
नावतिहिनिद्रनगीय: तनसुधीनबिषीयनिवृति तहात्रीयान
सावे: मिलिअंगउदमाद इहात्रममुरछाआवे: पावेजुप्रानपंच
तपे यहअंतगतिअंगकी सुरसिधकहतनरहरसुकबि: ऐहसद
सअनंगकी॥ छंद हे अषरी॥ मिलीप्रथमजोरोकीमंदिर: यहकछु
प्रेमभावअपरंपर: आगेचलीसुपाछेआई: आतुरजदपिमदनअ
कुलाई: इहामदनमोहनअवोलोक रहीएकटगपलदिगरोकोक
छ ३॥ तलेजुतुमआई बृजभामनि: कारनकहोआगमनकाम
नि: बृजहेकुसलग्वालसबगोधन: अबरहिमयतयोक्यों आवन
कछिननिसाउद्यानतयेकर: निकसेकालब्यालरहिअवसर जोत्री
यचतुरबरेकुलजाई: अमननिसाबनकवनतलाई: तुमहिकुटंब

सुषोजततति: अनपायेहुषउपजतयाति: हुरलननवतसोनिसिदे
षी: बेगजाकुअवनुवनविसेषी: बेदबिदितरिषबरयहवानी: वि
नतापतिदेवतावषानी: पतिसेवाहितसोंकरिप्यारी: नियतलहेसो
सद्गतिनारी: जऊजोगीषलजरगजवारी: बामनबसनृष्टिबिन
चारी: बिगुनबिरूपबिरागबिसेषी: निंदकदेवदुष्टद्विजदोषी: द
याहीनदुरमतिदुरवादी: बेसकबिसनदरिद्रबिबादी: कलही
कुत्सितकुरकमकातर: पापआपहतपतितकुपातर: अंधअलसअ
गहीनअनागी: आतममदअनबिदसुषत्यागी: कृतघातककृत
चोरकुकरमी: धूतधृष्टसम्राहिअधरमी: नारिनथापतिजेपति
नाही: सहकुलछनयेजिनमाही॥ दो॥परमधरमपतिबरत
को: पतिसेवाफलपार: पतनीपावतसुषपद: साषीबेदसुनार
॥१॥गोपीबाच॥ हाहाहाहजनाथहरि: उचितबचननहीएकु: त
तेअसरनसरनतुम: देवनउतरदेकु॥२॥ कबित्त॥ उरकंपत
सकतअधर: दरतनयनजधार: गद्गदसुरगोपांगना: बाढेस्वास
बिकार॥३॥गोपीबाच॥परपल्लवनबनुवालिषत: बोलीसहतबिबे
क: तुममतितुमपतितुमहिगति: अंतरभावजुएकं॥४॥छंदपधरी
येनरमगनतुममांझआए: सुतकंतअरहछांडेसुनाए: जगदीसक
हेअबकहांजाहि: निसेषचलतकछुचरननाहि: उपजोजुत
पउरमदनआए: सुनदिष्टसीचिबुकवोसुनाए: नातरियेबिरह
अगनितल: मिलिदेहदगधकेसमल: मनजोगध्यानधरिमूलम
त्र: सबतुमहिमांझमिलिहेसुतंत्र: तवरमाउपासतपदपुनीत: हमसे
वतहेबनबसिबिनीत॥पदरजतवतुलसीतरीप्रेम: निहचेहमपाई
सहतनेम: करिकृपाहमहित्रनुप्रनितपाल: दासिकाताबकरियेदया
ल: ऐसीकोत्रीयात्रिकुलोकआहि: तवमुरलीरवमनहमिनताहि
सबअंगअंगसुंदरसरूप: रतिरंगरमतमनमथनरूप: इहांदीनव
चनसुनिकेदयाल: करुनानिधानप्रनुप्रनितपाल: बिनताबिला
सकरिमहाबीर: तहाआयेदिनमनिसुतातीर: रतिकरतिबिबिध
रसरीतिरंग: अवलोकिहासिकरपरसअंग: बिधिबिधिबिलासबि
नताबिहार: करिक्रिप्रसकलजसुमतिकुमार: गोपिकारीझिरह
बेनुगान: गरबिष्टनरंग्रतिरतिगुमान॥ दो॥इनकेमदमोच
नअर्थ: नरतनछद्मनिदान: हितजुततबेअभिष

येअंतरध्यान॥॥॥॥ नरहरप्रभुकेतबनिपुन: इछाअगमअ
पार॥बिलपतिछांडीहजबधू॥ अैसेचरितउदारा॥ इतिश्रीनरा
यनजीकेहपुरांणे दसमस्कंधानुसारेभाषाबारहदनरह
रहसेनबिरचितं॥२९॥ कबित्त॥ दहा॥ गरबबिगतगोपांगन
धरिउरमोहनध्यान: करतभईलीलाकृष्ण॥ जथासमयजी
यजान॥॥॥ छंदउधोरा॥ गतिहासभाषनगान॥ अवलोकितां
रवतांग॥ मिलिपरसपरभुजमेलि: सबभईबेजतसांम॥ बनबदतबि
रहबिरांम: सोसकलब्यापकस्यांम॥ अनमिनमिनअकांम: नवभतअं
तरभाव: सबमांझबसतसुभाव॥ गोपीबाचा बहुजांनिपूछनआए
हेकृष्ण बनघनराए: सोकहुदेषेस्यांम: बिललातततजिगयेबांम: हेतु
लिसिकाप्रीयतोहि: मेमलेगयेमनमोहि: हेसषीपुनिप्रबीन: क
मतीनबामनकीन: रहअंधरिबारारहु: उधारिसलिलअथाहु: येई
कृष्णप्रगटेआए: बसुमतीहुबताए॥ कबित्त॥ तेसकलकरमसुत
त्र: हजबधूकरतबिचत्र: ॥ छंदपद्धरी॥ अषिलेसबिस्वब्यापकअ
नंत: तहालसोगोपिकाहृदयतंत: बनओटनिकरतरहांनिबीर: इ
कप्रेमबिवसजांनीअधीर: बालिकासुपेलीनीबुलाए: लेगयेकृष्ण
तिहिसंगलाए: सोलीयोफिरतअछाअनूप: बनबनबिहाररतिकांम
रूप: योफिरतअमतभईबालयेह: दिनतुछमहासकुमारदेह: सो
चलिनसकतअतिअमतअंग: आपुनउगएलीनीउछंग: अनेककुस
मएहांबीनिआंनि: प्रीयगूथिप्रीयाकवरीसुपांनि: भुजमेलिपरसप
रअंसताए: सोईचलेपथदपलिसुताए: आधीननिहारतबदनआप
बिस्वेसबिषमभनमथबियाप: गोपिकाकरतिहिअतिगुमांन: आ
धीनतयोमोहिछांडिआंन: कृष्णयहलिष्योत्रीयगर्बकीन: प्रभुगये
छांडिताकृष्णप्रबीन॥ छंदउधोरा॥ वेअवरगोपिउदास: प्रभुदरछां
डिप्रकास: इहांभमततेत्रीयआए: पतिचरनपथतिपाए: बजाहिचि
न्हबिसेषि: इहांदेषिअतुलअसेष: येचलीतहीअनुसार: पुनिचा
रनचारिप्रकार: देकृष्णकपदृदेषि: अरुउनयत्रीयअवरेष: पदजुव
तिजांनिप्रमांनि: उरबदीस्तलअमांनि॥ गोपीपरसयरमंत्र॥ बहुत
गकोउयहबांम: संगलयेजातसुस्यांम: निसेषहमअपमांनि: पेत्रीय
येकप्रमांनि: बहुतजोगोपीयेक: बनभ्रमतसोहबिबेक: बिनतासु
करतिबिलाप: यहएकबनयनआप: ॥ दहा॥ बिलपतिदुंदतस
घनबन: बिनताबिहबलबांनि: यासोबिरहबिषादअति: इहांमि
लीसबआंनि गावतगुनगोबिंदके: त्रीयगरजिमुनातीर: इहांनि

हरतअगमनः अंतर बिरहअधीरा॥१॥ यहरछाअबिलेसकी लील
अगमअगाधः कबिनरहरतेसीकरी सुनिजथामुषसाध॥२॥ इति
श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसा
रणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥ गोपीकृष्णप्रेमवर्णनं॥३०॥ सोरठा॥ भामिनि
आसालंगः सोधिसोधिनईबिनसकलः उपजोतापअनंगः बिरह
बिथाबाढीबिषम॥१॥ छंद कथा॥ प्रीयबदनकमलप्रकासः अलिनयन
सोरंनआसः रहछदनसुधासरूपः प्रीयदेकुलेकुअनूपः सुनबचन
अहतस्वादः प्रभुकरकुअवनप्रसादः नवदिष्टनेदनरंगः इषुलगेम
नकुअनंगः भ्रुवभंगभृकुटीनाव: दुसाधिबसकृतदाव: करजोनि
लेबितलाल: कुचपरसकरकुकृपाल: तुमसगुनस्यामसरूप: आ
लिंगकरकुअनूप: प्रभुचरनपंकजप्रेम: मिलिसुरनिसंगसनेम
बनिसीसकालीआल: तवचरनअंककृपाल: सोईचिरनममकुच
संग: प्रभुकरकुपरमप्रसंग: आलपेहासिअनेक: प्रभुदिष्टनेदबि
बेक: रसरहसिबिबिधिबिलास: अनेकपूरेआस: तेईनयेफिरिबिप
रीत: प्रभउपजिमनतयेनीत: सोईबिरहअंतरसाल: प्रभुहरकुमिलि
सुकृपाल: इवगरलजलजयदेषि: इजलयोराषिबिसेषि: अबहम
हिमारतहाथ: बिनुससमत्रकतइजनाथ॥ इहा॥ इहिबिधिकर
तबिलापअति: उरधस्वासउस्वास: कबिनरहरप्रभुदूरसकी: अ
तिबाढीउरआस॥१॥ करिअपमानकुटंबकी: बनआईनिसिबाम
कपटीतुमबिनुअवरकी: अबतातजेअकाम॥२॥ महासघनउघ
नमहः बिलपतछांडीबालः कहीयतबेदपुरानकरि: नीतिनिपुन
नंदलाल॥३॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसा
रणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितं॥३१॥ गोपीपरस
परबिलाप॥ इहा॥ करतमनोरथमिलनकी: बिनताबिरहबिराम
चितचिंततजोंचातुकी: स्वातिबुंदघनस्यामा॥१॥ प्रगटेइछाअपुनी
इहिसमयेअबिलेस: गोपीमंडलमध्यगत: सुंदरस्यामसुबेस॥२॥ छंद
उधेराउहसकलसनमुषआइ: मनुपरमनिधिप्रीयपाइ: कोउकर
तकरकरधाइ: कोउमिलतमदमुसकाइ: तहालेतकोउतावोल चा
कुधरतरसमयबोल: सुनकुलचरनसरोज: आलिंगकरतउरोज
भ्रुवभंगभृकुटीनेद: अरुझिगकटाछिअषेद: कोउधरतउरप्रीय
ध्यान: झिगमूदिप्रेमनिदान: नयेबिरहटरिउरनाम: कृतउदित
अंगअंगकाम: इजगोपबिनताबृंद: निसिजोंन्हमिलि

हारविसुतातरआइ: सबजातिसुषदसुनाइ: बनकुमदफूलिसुबास
बहिन्नि बिधिपवनबिलास; मधुमतमधुकरमाल: रसलबदृन्दमतर
साल: बिनतानिउतरबास: प्रतुलयेप्रेमप्रकास: तेईबिसनपीग्बना
इ: सुषबेगिस्यामसुनाइ: जेगेइउरजगजिव: जेबसतदेवनिदेव: सो
ईमध्यराजतस्याम: तुवसनाबनिबृजनाम: तेईकूलजमुनातीर
बिचगोपमंडलबीर॥गोपीबाचा॥तहबचनकहिबृजबाल: बसरो
षतरकबिसाल: हितसबदअमरषहास: पुनिदिष्टचक्रप्रकास: प्रतु
कहानीतिप्रकार: बसकपरछाहिबिकार॥दूहा॥कोउनजतेकहि
जे: कोउनजतेननजेत: नजतेअननजतेअनज: कोहैसोधोंकेत
॥कृष्णबाचा॥हसिबोलेयहसुनतहरि: नागरिसुनकुनिदान: ततजुप
छेमोहितुम: पैसोईकहुंप्रमान॥छंदपद्धरी॥नजतेकहंजोपेनजे
नाइ: कृतवहआपस्वारथकहाइ: सुरनीजोनेजनपाइसुध: देहै
तहनंतरततोसुध: नजतेननजेकोउकिकुनाइ: कमउदासीनसो
पेकहाइ: नहीनजतननजेतजअनजमान: निरधारआरिबिनके
निहान: सुनियेजुमानसीप्रथमसोइ: हितपूरनकामसोद्वितीयहोइ
कृतयनपैतीजोसोकहाइ: सग्बजनकृदयचौथोसुनाइ: इनचहुमां
कहुंनहीअनीत: गोपीयहजानकुयूदगीत॥कबित्त॥पतिबृतनि
पुनयहसमयपाइ: सबहसीपरसपरत्रीयसुनाइ: जगदीसगोपिका
परमजानि: प्रतुततबतायेचक्रपानि॥कृष्णउवाच॥पूरनदरिद्रो
निधिहिपाइ: जगबदेगरबसबन्धलिजाइ: निधिनासहोइजबयहनि
दान: पुनिअरकेतहीमांझप्रान: तातेतुमकीनोंपरित्याग: सोसमझि
लेहुगोपीसनाग: ममहेतलांघितुमकुलमजाद: मनबचनकरमकरि
अप्रमाद: हितजानितजीबननिगुरहोइ: करिबोबिष्मादताकोनको
इ: द्विलोकबेरसकुलहुरंत: तुमतोरिमिलीमोकहतुरंत: प्रसेष
कारताकोप्रमान: सोपैनहोतयहसतमान: सोअबेतिहरेहीसतो
ष: मैकैहुअनरनदोषमोष: इहिगेरजतनकछुनहीआन: यह
परमप्रीयेमानहुप्रमान॥दूहा॥सुनिरसादिकस्यामके: बिनताब
चनबिनोद: उमगेप्रेमसमुद्रउर: पूरनप्रेमप्रमोद॥इतिश्रीलगव
तेमहापुराणे दसमसतकथानुसारणे नानाबाद हटनरहरदा
सनिबिरचितं॥कृष्णगोपिकासमागमोनाम॥३२॥दूहा॥कृतआ
रंभजुरासको: सजिमोहनयनस्याम: सरदनिसाराकाससी: उदितत
योअतिरम॥१॥हैनिकुंजमंडलतहां: बिचमलताबितान: सीत

नंदसुगंधसुष पवनचलतहितप्रांन।२।।रंगन्नृमिराजतसुचिर:प
नबिबिधिप्रकार:नामनिमिलिनिरतसुतये मोहननंदकुमार।।
।।छंदपधरी।।प्रीयमध्यसांमसुंदरसरूपं:अरुउकुओरबिनताअ
प.इकइककोन्हगोपिकारेक:अवलंबकरनिकरछबिअनेक।
सबढेहेतबिलासरास:अमरनिबिमानछायोअकास:सुररागनेद
।तिहालसं:अनेककलासांगीतअंग.नरकुचनितंबकटिषीनभार:
नुनृमनसंगमतिदृष्टिजार:नूपरकटिमेषलबलयनाद संमिलिन
नदुंदुभिनुमलसाद:मिलिनीलकनकबनिकानिमाल.बनिमनकु
रासमंकलविसाल:अमस्वेदबुंदमुषहासमंद:अरुउरतबासबासन
अनंद,चमकतकपोलकुंकुलसचाल:मिलिचंचलहरावंतीमाल
उकिअंचरउघरतउरजओट:जनुदरसदेतजुगसंतुजोट:मिलिस्प
मजलदमनुतडितमाल:बंनमओरासमंकलसुष्माल.नारायनजो
कमलानिदान:बसकलगोपिकप्रेमबांन.सुरत्रीयाकुसमबरषास
हासं:पुनिबजेअमरदुंदुभिप्रकास:गंधर्व मिलिकिंनरकरतगांन.अ
पछरगांनरसआंनअंन.अवलोकिरासमंकलअनूप:ससिनगोहब्याप
तसरूप:गातिपंगनयेअहगननिसंग.नहिचलतथकितरथरहिजि
ग.निसिबदीयहेकारनिदांन:पुनितईअयनपूरनप्रमांन.रविकानु
दिहतेतेसरूप:अबिलोकितितीगोपीअनूप:येकहीबारसबहिनअ
नंद:मिलिदयेमदनमोहनमुकंद:हेएकजदपिनिसनिराकार:अ
कारचेतदपिअपार:आषिलेसआपइछाअनंग:येकतेअजतअ
नेकअंग:अमस्वेदबुंदक्रीडासमंद आपुनहरिपूंछततरनिअंग.इ
हाषेलसहतरमनीउदार.बिस्वेसआइजमनाबिहार:जलमांझ
सेलेजूवतिजूथ:बारनजोमतकिरनीबिरूथ.अवगाहकेलिज
लतटनिअंत:करिआयेउपबनरमाकंत:।।१।।हहाहजकेसांलेमा
सहत:सरिताकरेसनांन:सपूरनतयोमागसिर:बरदीनोंतगवां
।।६।।।सरदनिसाराकासमय.बिभ्रमरासबिलास:याकोफलपू
रनइहां:पायोप्रेमप्रकास।२।।हितगोपीबसत्राहरन:कृष्णप्रथम
जोकीन:अबताकोअभिलाषइहां:देवकृपाकरिदीनसआपरीहत
बाच।।इहांपूछोसुषदेवसों:रहसिपरीछतराइ:हेनारायनधरम
हित:संततबेदसहाइ।४।।नारायनअवतरे:अवकृष्णअवतार।
कुलजादवबसदेवके.नृमिउतारनतार।।५।।अवलोकनपरत्रीयउम
ग.परसनबचनसप्रीत:साधनकोअनुचितसदा:यहतोपरमअर्न
ता।६।।मुरलीसुरमहमोहनी.पटिपटिमंत्रप्रयोग.अर्थ बनि बन

धनअबल: सोनयरमसंजोग॥१॥कहीयतजोगेस्वरकृष्ण: तेजोमयज
गतात: ऐसीकेसेंआचरी: बेदबिरोधकबात॥२॥मनहिबिचारिबि
चारिसो: असंतावनायेह: तुमकरिमिटिहैंजीवतें: दुषदारुकसंदेह
॥३॥श्रीसुकोबाचा॥छंदउथोरा॥ नृपकलोनीतिनिदान: यहसाधम
नसुग्यान: पूछेजुराजप्रबीन: द्विजब्यासउतरदीन: येजोतिमैंजग
दीस: अरुकरनकारनईस: ऐसअजतपालतसंत: मतयहेबेदमह
त: इनकोनपुनिनपाप: अनबिद्यअनगुनआप॥१॥ छंदपधरी॥अ
गनिजोसरबनषीअमेव: दारुकतउसुरमुषप्रगटदेव: बिबहारब
दबिद्याबिबेक: अगनिबिनुकरमनहीहोतयेक: आचारकरेजो
पेअसेष: बाप्योनसिवहितबुबिषबिसेष: येस्वयंजोतिपरपुरु
षजानि: पेकरमदोषनिहिनप्रमानि: कछुकरेअदईवतकरम
कोइ: हवहेततासतेनासहोइ: हेलीबुरीजोयहेहाथ: नियत
नउकृष्णत्रैलोकनाथ: अबिवत्रानअगनिहिअकाल: तिहुलोक
तरपिबंदितत्रिकाल: आचरेहलाहलकोउअग्यान: निसतनास
पावेनिदान: श्रीकृष्णमहजोगेस्वरेस: रहिषेलमदनजीतोअसेस
आगेजोबियवासबअमान: निरदेहकृष्णकीनेनिदान: योंकरीअतुल
लीलाअनंत: सजिमनुजदेहउधारसंत: गोपिकाग्रईसबआपग्रेह
निसचेमनबंछितसहतनेह: यहअजितदेवमायाअमान: जानो
नमरमकाफुसुजान: निरगमनआगमनगोपनारि: समझेनकुछ
नबुधिसार॥ ६॥ इहा॥कृतहजलीलाकृष्णकी: अद्भुतचरितअ
नंत: सरधाजुतगावेसुनें: सुषपावेतवसंत॥१॥कबि ताबनबजाये
निसिबंस: कृष्णइछायहकीनी: अषिलचितआकरषि: नारिहजबो
लिजुलीनी: बिभ्रमहासबिलास: रासरससुषदरचायो: नयछ
प्रासनिसिनई: इहांअद्भुतउपजायो: क्रीडाबिलोकिश्रीकृष्णकी
आनंदेथिरचरअमर: सुतरानियहेनरहरसुकबि: पावेमुकति
प्रसादपरा॥१॥इतिश्रीभागवतमहापुराणेदसमस्कंधानुस
रणेभाषाबारहट नरहरदासनाबिरचितं॥ रासक्रीडा
बिनेदोलांम॥३३॥कबिकबाचाछंदपधरी॥सकुटंबनंदअ
पनेसुनाइ: इकदिवसअंबिकाजात्राआइ: सरसतीसरितकरिक
रिसनान: बिधिजुकतकरीपूजाबिधान: दिवसेसअसतमितभ
योदेषि: बसिरहेगोपतिहिंबिसेषि: उमावासदनतीरयअन
दृ: निसिकरेसेनतिहिंगेरनंद: इहामहएकअजगिरअसंत

रुषोअतिआयोतहाहमंतः नंदकहेअसनलाग्योनिसेकः इहावने
आनिबिधिलिषतअंकः पुनिनंदपुकारेकेष्टपाइ। हाकृष्णकृष्णकरि
येसहारः यहसुनतगोपआयेअपारः पेनगकहंकरेउलमुकप्र
हारः इहांकृष्णआइत्रैलोकईसः सोरुयोलातअहिफओसीसः प्रनु
चरनछुवतअहिगयेपापः अपनोंपदपूरनलहोआपः सोछोंकित
होअजगरसरीरः धरिदेहदिव्यथदोसधीरः सुंदरसनाबिद्याध
रसोकुमहाबीरः सुंदरसननामराखासधीरः मोकहंजोपूछोतुसम
रारिः वृतांतयहेसुनियेबिचारिः देषोमेसुंदरआपदेहः सुनरूपबि
षबधोसनेहः तपसाधतमुनिसरसतीतीरः समरजितनयेजरज
रसरीरः इकदिनकुंनिकसोतहाआइः सुनरथाकरूअपनेसुनाइ
तनदुरबलतापसदेषिनासः एकसोतहमैंप्रगटहास॥अगिरा॥रिष
कसोअगिरातरिसाइः कतदुष्टहोकृतसरपकाइ॥सुंदरसनातनका
लहीमेजोनितासः नुगतेमेअबलोजुतदुरासः अबनऐउदयमम
करमआनिः पहसीसहन्योमोहिचक्रपानिः उपछुओआजमोहिदुष्टदे
ह अपनोपदपायोअगरयेह॥कविरु॥ प्रनुकरेचरनबदनप्रम
नः सुनदेहपाइआयोसयांन अवलोकिकृष्णदेवतअनंतः सब
हरषेहजजनसाधसंतः करिसकलदेवजात्रासकांमः धीरजसोआ
येनंदधांम॥छंदकुंधोरा॥ इकदिवसजुतबलदेवः बनआइकृष्ण
अजेवः कृतउदेससितिहिकालः बनफूलिबिबिधबिसालः म
नमुदितनमिअलिमालः सुनकुंजकुंजसजोगः पुनिबदतप्रेमप्रयोग
इहाकृष्णबेनुउदारः बजिसप्तसुरएकबारः सुनिगोपिकारसरंगः अ
तिसीरबिवसअनंगः जोबिसतनषनजोट अंगउकतअंचरओट नि
ईप्रेमबिहबलनाइ सोजानिपरिनसुनाइ इहिसमयआसुरएक
कृतदुष्टकीनेटेकः नरिबाथलेचलोनामः निजसंषचूडसनाम
कीयत्रीयनताहिपुकारः हाकृष्णदेवउदारः नयसबदसुनिजुन्न
पः उठिलगेसंगअनूपः जबकृष्णपुहचेजाइः पुनिचलेअसुरप
इः मुष्टिकामारेमूंकः तिहिलगेभरनीनूंकः पापिष्टछोंकेप्रांनः मह
परेपरबतमांन सुनकृतीमनितिहिसीसः सोईकाढिलीजगदीस म
निकृष्णसोसनमानि अअजहिंदीनीआनि॥ इतिश्रीनरायनकृतेम
हापुरांणेदसम सकंधानुसारिनाभाषाबारहटनरहर
दासिनबिरचितंगा संषचूडबधोनामाः॥३४॥ दूहा बीतीबि
बिधिबिलासबनः सबनिसिसोमासोमः बि
नः बासुरबिरहबिरामा॥१॥छंदपधरी॥गोप

पास: बहुसबासंग बृजगोपबाल: बसबिरहपरसपरकहतबाम: सुनि
सखीअबेयहरूपस्याम: करिबामबाहुऊपरकपोल: धरिअधखेन
अतितनअकोल: करपल्लवपूरितछिद्रकीन: पुनिबंसबजावतअति
बीन: सुरबधूजदिपिअरनारसंग: अतिहोतसुनतबिसमोहअंग: त
नषिसतबसनसुधिनहिनास: बसीधुनिसुनिफूलतबिलास: ता
कवनमात्रहममनुषदेह: सुनिहोतबंसधुनिबससनेह: बनजंतु
सुरलितजिबनबिलास: अहिरहेतबिनपत्रग्रास: चहुओरग्वाल
करिधातचित्र: बांसुरीबेत्रकरधरिबिचित्र: धरिमोरपछासिरगुछध
रि: सुनपुहपमालउरधरिसंभारि: जलजंतबिहंगमबिबिधिजं
नि: यहरूपबिलोकतनिकटआनि: इत्यादिकृष्णकेचरितअंग:
सुधिकरिदिनबितयोप्रेमसंग॥ दोहा॥ सुरनीरजरंजितसुअंग: स्या
मसुगोधनसंग: संध्यासुषआवतसुयह: अद्भुतसोभाअंग॥१॥
गोषगोषगोपांगना: चदिचदिचितवतचाह: बिछुरजैसैंकरमब
स: प्रेमसहतनिधिपाह॥२॥ इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदसम
तकथानुसारणेभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितांगे
पि कादिवसबिरहनाम॥३५॥ कबित्त॥ छंदपधरी॥
आसुरअरिष्टनामअनीत: कृतदुष्टकुटिलकपटीकुचीत: इह
कृष्णमहामहिमाअसेष: सोसहिनसक्योहजसुषबिसेष: ध
रिहषभरूपआयोसधीर: बपुदिष्घककुतिगरअंगबीर: च
षअरुनकुटिलसोगूलचाल: किंचतसमूत्रप्रतिमाजुकाल:
आकृतअनूतमुषषरिकआह: भयकारगरजकीनोसुनाह:
भईगरभआवसुरनीसत्रास: त्रीयगरभगिरेसुनिसबदतास: पु
रयोगितहाहजजनपलाह: सोदेषिकृष्णनिकसेसुताह: षिति
षभतषुरनिनभचदीषेह: अवलोकेमोहनदुष्टयेह॥ कृष्ण
आबसरोसकृष्णबोलेबिजेत: दुष्टनिकृदीष्मादकदेत: दुष
भाधमजोकृसमरबीर: रभआवपचारतकृसधीर॥ कबित्त॥
हसुनतअसुरतडितासओप: कृतपूंछउरधधायोसकोप: ध
रिसिंगउभेमोहनसधीर: बसुमतीपछास्योमहाबीर: इहालयेअं
गदेऊउषारि: मास्योसिरहीसिरसोमुरारि: पापीदृषभासु
रतजेप्रान: मोहनग्रहआयेबिजयमान: दृषभासुरकेदेषो
बिनास: पुनिआयेनारदकेसपास॥ नारदबाच॥ मुनिकसो

कंससोंमूलमंत्र। तहां मिलेआ निसुरकाज तंत्र। रिसकरिबुमकंसा
हतीरार। वहमहरिजसोदागरनआइ। रोहनीपुत्रबलदेवराज। सोनयोनंद
कैयहसकाज। देवकीगरभनयोकृष्णदेव। नवसुपैनजांमेलुमकुनेव।
हेछलकरिपठयोनंदग्रेह। सोपोष्योजसुमतिअतिसनेह। जोहतीदेवकी
सुताजांनि। वूहमायाधरिगईइहांआनि। अनसमझि बालहत्याअपान
पुनिकरीसुपेतुमअप्रमान। बसदेवपुत्रहैमहावीर। सोआहिनंदके
ग्रहसधीर। निश्चैसुकरुवतनंदनंद। वेतोहैजादवकुलअनंद। बंसद
वनंदहैमित्रबीर। सुतराषेलेहजमहसधीर ॥ कबिरु॥ यहसुनतन
योरिसकंसराइ। धरिषिग्रसुरआयोसुधाइ। बसदेवमूंकाटत
बितार। सोबरजोनारदमुनिसुनाइ। देवकीसहतकरिमहाद्रोह
लेजरेबुरुरिबसदेवलोह। सवस्थानगयेनारदसकाज। करिसिधर
हासबदेवकाज। इकदेतनामकेसीअसाथ। बिपरीतकरमधरथ
रमबाथ॥ कंसबाच॥ हैकृष्णनामसुतनंदग्रेह। सोहतकुजारतुमनि
संदेह। पठयोसुकंसकेसीपचारि। मिलिआइमोहिसोबालमा
रि॥ कबिरु॥ इहासा॥ जिसनबेगेसुनाइ। रिसरोसनरेअतिकंस
राइ। इहांआइमित्रमित्रीअसेष। बियिजथाथानबेगेबिसेष। ग
जपालबोलिलीनोसंगपान। सनमानकरयोअतिहिसमान। चाण
रमल्लमुष्टिकसवेत। सलतूसलमिलिपरिगहसमेत॥ कंसबाच॥
इहांकलोकंसतबबचनग्रेह। हेरामकृष्णदोउनंदग्रेह। छलकरित
हाराष्योलेछिपाइ। यहमोसोनारदकलोआइ। सोबासदेवहैअसु
रसाल। करउनकेमेरोलिष्योकाल। उनकेअबमारनकोउपाइ। सा
करकुसवेमेरोसहाइ। निस्चययकमंदिरसुषनिधान। थितकर
करहुअबसमथान। करियनुषजज्ञसोइहकाज। अबआनिलेके
मिलिहैसकाज॥ कबिरु॥ सुगफिरयोदिवसउरबटीसूल। मारन
सिसुआगपाइरसमूल। उगितबेइहायेकोतआइ। अक्रूरतबेलीनोबु
लाइ। अक्रूरयेकहितकाजआज। सोकरियेमेरोबुधिसाज। येजर
दवहैजेतेअनेक। इनमहहितकारकतूहीएक। कारनतोहिराषत
बकेकाज। वहआनिबन्योसंजोगआज॥ इहाहैदेसुतबसदेवके
रामकृष्णयहनांम। इहांजोल्योकरिआनियेबसतनंदकेधांम॥
॥॥ कारनकहिकरबरषको। सोनंदादिसमाज। इहासोहगिलेआ
ईये। कपटधनुषमषकाज॥२॥ कितोकुबलयापीडकरि। मरिहै

निसचयमूढ: कैमच्छनिकरिमारिबौ। अहहोउलोगेगूढ॥१॥ जोजदुस
रत्आदिनव: जिनेकजादवजानि: करिसबहिनकोनासकुल: मैयरमंत्र
प्रमानि॥२॥ जरायसितमेरोजदपि। उग्रसेनपितआहि: कछुइछापुनिरा
जकी: तदपियहीनहिताहि॥३॥ येतोहतिबेहैअवसि: दैवकअरुबस
देव: वाकीपुत्रीकैउदर: वाकोपुत्रअजेव॥४॥ हत्यिसबहीमारिहो:
दृष्टआदिदैबस: अनकंटककरिआपनो: करोराजतोकेस॥५॥ छंदपधरी॥
सुसरोहैमेरोजरासंध: संबरनरकासुरप्रीतिसंध: अतिबलवानासुरद्विवि
दबीर: येसंगसबामेरेसधीर: येकंत्रकरोयेसबेआज: समूलउबारोसुरस
माज: दानपतिसुनकुयहनिसंदेह: हैअतिप्रायममचितयेह॥६॥ हमी
चबंचावनकेमरम: अबतोयहेउपाय: इहांबचनअक्रूरयह: सुपैकलोम
मकाइ॥७॥ परममनोरथआपनो: प्रतिदिनचिंततआन: सियअसिधनुसु
नअसुत: देवोधीननिदान॥८॥ सुफलकसुतआयेसदन: तहथापियह
मंत्र: नवजेसीनवतब्यता: तैसेमिलिहैतंत्र॥९॥ इतिश्रीभागवतेमहापु
राणेदसमस्कंधेभाषानुसारेनाबाबारहनरहरदासेनविरचितेअ
क्रूरोकलआगमनोनामाध्याय॥६॥ दहा॥ अपरदिवसकेसीअसुर: र
हांदाबनआइ: प्रातसमयरोकेप्रगट: सुरजीपंथसुनाइ॥१॥ का
रनअसबसरूपकरि: दिघनयानकदेह: षिति हिबिदारतअयपुर:
षेमगचदीसुषेह॥२॥ छंदपधरी॥ तहयुनितसटलेगूलतास: यह
पवनजलदबिथुरेअकास: नवनीलजलदतनबरनतुंग: मुषबिव
रोषचषरतरंग: याहिसमयधेनसंगकृष्णआइ: देष्योसोरअसु
रबयरदाइ: अवलोकिकृष्णइहानिकटआइ: जुगलताचलाईबज
जानि: आकरषिचरनलीनोअंग: अरुगगनत्रमायोअसुरअ
ग: हग्दियोफरिहरिकुयहोइ: सतधनुषमात्रयहपस्योसोइ: पुनि
उग्रोअसुरकछुचेतपाइ: धरिकृष्णसमुषआयोसुधाइ: कंदराका
रमुषमुकतकीन: देषेजुकृष्णजुजमोफदीन: करकरीछितिहिम
ध्यकाइ: सोफारेकरकरिजोसुनाइ॥१॥ दहा॥ इहांमारेकेसीअसुर
पोरुषकृष्णप्रकास: अतिहरषेनंदादिउर: दुंदुभिबजेअकास॥
१॥ छंदउधोरा॥ इहिठोरनारदआइ: सबचरितदेषिसुनाइ: कर
जोरिअसतुतिकीन: प्रभुपरमपुरुषप्रबीन: नवरूपतनावनमत
प: अदभूतरूपअनूप: तुमआदिमध्यजुएक: अरुकरतरूप
अनेक: जोगेसतुमजगदीस: अप्रमेयआतमईस: तुमबासदे

वविनीतः जदुदेवत्र थपुरजीतः तुमसरवआतमासिथि: प्रभुस्वयंजोतिप्र
सिध:सतपुरुषमायासंग:नवजतस्त्रजतअंग सोईराषिकरतसंयार
इंछासुआपउदार:यहदुष्टमास्योआज:कीयकलतुमसुरकाज:इहिवीचप
रिहिनएक अरुकरकुकाजअनेक कतदुष्टमारकुकंस निसचारकरिनि
रवंस:यहसकलविधिसमझाइ: अरुगएअहरिघरराइ॥ कविरुबत्वावन
चंदेगोधनवृंद:बलिसंगश्रीहजचंद:॥ छंदद्वैअवरी॥ विविधि प्रकारक
रतक्रीडावन: मिलिसबग्वालबालसंगमोहन: कतमसेषजथसिसुकीने
देवग्वालकेउरदकदीने: लालबालकोंचोरलगाये नावअनेककरत
मनभाये:कछुपसुचोरचलतलेतसकर पुनिकोउबालहोतरदापर:उप
राजीक्रीडाकछुअसी: जुकछुकोतमनआईजैसी। मयदमंतकोपुत्रमह
बल: पेचरब्योमासुरनामोघलें: तबतिहिरूपअसुरआयोतह: मिलिगोआं
निबालचोरनिमह: लैलेजाइमेषसिसुलंपट: सोरोकेगिरकंदरसंघट
सब हरिलयेकछुबालकुसब: तहकृष्णदेषेथोरेतब: प्रभुतबजोरध्यां
नपहचान्यो: जनहिसकब्योमासुरजान्यो: पुनिलेचल्योमेषसिसुपामर
पुहचेदोरिकृष्णतापर: प्रकरिकंसोईअसुरपछान्यो। मषपसुजो
सुष्टहतमास्यो: पदपछितकंदरमुषपाई करिसिलकंनकनधसंक
न्हाई पुनितिहिमाऊग्वालसबपाये: इहनेदनंदतिनहिलेआये महा
दुष्टब्योमासुरमास्यो अमरवृंदजयजयतिउचास्यो: इहबलदेवकृष्णअह
आजे: संध्यागोधनअंगसुहाये॥२॥ इति श्रीनरवतेमहापुराणेदसमस्क
ंधानुसारणेभाषाबारहटनरहरदासेनविरचितेः। केसीब्योमासुर
बध॥३॥ कबित्त॥ सोरठा॥ आगेबसअक्रूर: चितहितनंदबे
नचल्यो: सदादानपतिसूर: नीतिधरमपालकनिपुन॥॥ छंदपधरी॥
सुनरथपरआरूढसाबकूल: सांतरसुनगतिउपजीसमूल: उरकृष्णद
रसकीवदीआस: बसप्रेमचितउपजोबिसास: नवचिंतनमनमहगट
नेत्र: दरसनमोहिदुरलनजगतदेव: अबजाप उदयममभयोआज: क
मतातेपूरनहोतकाज: अवलोकिकृष्णकोमुषउदार: पुनिछेकृष्ण वस
मुद्रपार: अरुमादिचरनवंदितबिधान: सेवतनिसकमलासावधा
न: मेरेसिरधरिहैचरनमूल: करधरिहैमोहनसोनकूल: ममफिरी
प्रदछनमृगनिमाल: जैहैसबिलयअकरमजाल: अबरीघआदि
देनृपतिओर: थितराजतिरेजेलोरगोर॥ ६॥ रचिसुदरस्यान
रंग: जतनकुकारीऊनजो: अहनेहजोरंग॥॥ छंदप: [illegible]
कंधोचितअंगः

तिनहकेयोषआइ: रहासुफलकसुतसातिकसुनार: अवनीबिलोकिहरिच
रनअंक: जलहीमनकुनियिमहारक: लेलेरजलावतमुषलिलाट: पैरत
जनुप्रेमसमुद्रपार: पायेगोदोहतप्रभुप्रबीन: करिबंदनदंडप्रनामकीन।
अवलोकिकृष्णमूरतिउदार: पावेनउदधिआनंदपार: तीनोउगरअक
कंगलार: सुषरामकृष्णनेटेसुनार: देषेजबमोहनबालदेह: अक्रूरस
योसंदेहयेह: कहाउष्टकंसवहमलाकार: प्रभुबालकृष्णसमतानप
इ: करकृष्णदिषायोचक्रअंक: सबमिटेरिदयअक्रूरसंक: आकरषिक
रहिकरयेहआनि: पुनिधोइचरनआसनप्रमानि: अतिहरषमिलेतबनंद
आर: सोकरनलगेबातेंसुनाइ॥ नंद बाचा तहापूछिनंदकुसलातत
हि: वहदुष्टनिकटक्योंरहतआहि: किहिनातिनुमहिराषतकुचीत: अय
तेनकरतअंतरअनीत॥ अक्रूर॥ अक्रूरकहोफिरिबचनयेह: सुनि
येजुनदयहनिसंदेह: अनयोषतजेसेसुनकआनि: पेरहततातिनहिआप
नेपानि: हेकरतपापसेउदरहेत: मानेनत्रासमनक्रमसमेत॥ नहाकार
नजीवनराजके: करहिअनरथअनेक: ऐसोकंसअसाधयह: हेकलिजु
मयह: करतराजकेकाज॥२॥ बसीयतवाकीसीवबिच: पुनिसुषदेषा
प्रात: हमकरंजोपूछतमहर: कहुकहाकुसलात॥३॥ नातिनातिनोजन
नगति: कीनेनदअनेक: अतिसुषजुतअक्रूरदहा: बसेनिसासबिवेक
॥४॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधानुसारेनाषांबारह
नवहरहासेनबिरचित॥ अक्रूरगोकुलेआगमननाम॥ अथाइ॥३८॥ कबिकाइहा॥ सुफलकसुतसजासुषद: बिमलकरबि
आम: बेगेनिकटसनेहबस: सकरषनयनसोम॥१॥ मिलेमनोरथ
चितमह: करिअक्रूरसकाम: मिलिकीनोसंजुतमहत: सबेसपूरनकाम
॥२॥ पुनिपूछेअक्रूरप्रति: बासदेवयहबात: प्रगटसुनावहुदानपति
कुलजादवकुसलात॥३॥ अक्रूरबाच॥ छंद॥ ऊधोरा॥ कहिबचनतबअ
क्रूर: सुनियेबजदुकुलसूर: जिहिबंसकंसकुरोग: प्रभुबदतरहतअयो
ग: तिहिबंसकीबिप्रात: कहापूछियेकुसलात॥ कृष्ण॥ पुनिकहे
कृष्णसप्रीति: अक्रूरसुनहुअनीति: ममसातभ्रातामारि: पेबहनासि
लहिपछारि: ममहेतपुत्रनिमारि: पुत्रिकासिलहिपछारि: देवकीअरु
बसदेव: जरिपगनिलोहअजेव: दुषसहतदुसहदेह: अहिदियेकारागेह
उग्रसेनऔआवनसाथ: तबदुसहसहजदुषबाथ: आगमनकहियेआज

कमजथाकहुसकाज॥अक्रूरवाच॥दूहा॥तबकेलोअक्रूरप्रति: सुनियै
सुंदरस्याम: जातेकंसरुजादवनि: बाढेबयरबिराम॥१॥कबित्त॥कंस
नेहनारदसकाम: अवचितआये: करिपूजाऐकांत: बिहतआसनवै
गये: मुनिकीनोइहांगूढमंत्र: सुरकाजसुधारन: करनकंसनिरबंस:
निषलहजबिधननिकारन: देवकीगरभतवजनमदिन: कलोमरमरि
षकंसकहं: पापिष्टसुनतउरपरजरे: मेलेघृतजनुअनलमहं॥१॥कारन
जिहिषलकंस: बिषमजदुबंसबिरोधौ: कोउकदेहतिकछुक: सबे
हजमंहलसोधौ: जरिपाइनजंजीर: रोषराजालेरोके: सबेपरेउर:
साल: सहतसोईरहतससोके: तवअंतकाजउदिमअषिल: करतज
थाकारनकुमति: बिधिलिषतअंकनरहररसुकबि: मिथ्याहोहिन
साधमति॥२॥बिषमयनुषमषबाज: तुमहिबोलेअतिआतुर: पाट
हसतिकुवलयापीड: रहिद्वारनिरंतर: महामल्लचाणूर: रंगभूमिर
हयै: अरुअनिष्टअनेक: सकलजहांतहांसजाये: बलदेवगोपनं
दाहिसब: जथाजोरसंगलीजीये: करिहैतवरक्षादेवकुल: कृष्णग
वनअबकीजीये॥छंदछोषरी॥यहसुनिकृष्णनंदपहआये: सबेअक्रू
रवचनसमझाये: बिषमकंसकेमरमबताये: अपनोहितअक्रूर
जआये: करियेगवनबिलंबनकीजै: जथाजोगआगेकरिलीजै: इहांन
दहजगोपबुलाये: सबेपयानमंत्रसमझाये॥कृष्णउ॥जातप्रया
नकरहुमुथराप्रति: जथाजोगकरिकरिसबसाजति॥कलिरुन
ईबातयहघोषअजाई: कहियतचलिहैंकवरकन्हाई: घेरुचलौ
सोरहिजमहयरघर: परमदुसहत्रीयसोचपरसपर: ऐसेहजबि
नताअकुलानी: बिषमदसासुनजातबषानी: सुषहिप्रतापउस
सनिमोचति: सोचमगनमनहीमनसोचति: कंपरिदयबिगलत
करकंकन: नीरअषंकुधारचलिलोचन: इंद्रीबिकलजरअकुली
नी: पेनपरसपरजातपिछानी: तारुअधरसोषिकंटकतन: अ
रुमतिजंगजरगतिअनअन: उपजीबिषमदसाकछुऐसी: ज
थासुकबिकहिजातनजैसी: कहिदुखादबिषादसकामौ: बि
यिकहंदोषलगावतिबामा: बिस्वउपाजकजगतबिसेषौ: दा
रुनकरमउदयहमदेषौ: महाप्रेमजुतऊतमिलावत: बिनुअ
जिलोषनयेबिछुरावत: कृष्णबदनछबिमोहकराये: अबय
हबिरहुसहउपजाये: साथकरमयेनाहिनस्वामी: जगतउ
पाजकअंतरजामी: जगअक्रूरनामलहिजैसो:

हकरीघनकैसो: हैयेमोहननेत्रहमारे: सोनजाकु लेदईसवारे: हमबि
चुनयनआंधरीकैहैं जगदिनरातिमृतकसेजेहैं: सबीपरसपरकहिक
हिसोचति: चषअषंकजलधारमोचति: निगमलोककुलकानिनसा
ई: करेरहहमकवरकन्हाई: पतिगतिनंदकुमारप्रवीनै: दासीजथा
प्रानतनदीनै: तेहमबिरहसिंधुकोतिरिहैं: कृष्णगवनजोमुथरा
करिहैं: कृष्णअनाथहमहिजोकरिहैं: तोहमअनमारेहीमरिहैं: क
रिसुधिरासबिलासकन्हाई: बिषमदसाहजबधूबिहाई: सो
ग॥अरनउदयअक्रूर: रामकृष्णबेगरिथ: सदादानपतिसूर
लैमुथरासनमुषचलौ॥॥जथासकटरथजोइ: मिलिमिलिनंदादि
कमहर: सुनउपहारसमोइ: ग्रहयहतैकीनेगवन॥॥सबेसषाच
लिसंग: बालबालगोपालके: पूरनतगतिप्रसंग: मिलेकृष्णम
हनैनमन॥॥छंदपधरी॥ ब्रजबधूकरतगदीबिलाप: उरहनतिक
रनिकरयसनिआप: ज्योंसाहकुदयिबूरेजिहाज: निधिमोहकृपनजेसे
निकाज: संग्रामपरानबपारसूर: मनिषोरपनगपरिसोकपूर: इहि
समयत्रीयनिकीदसायेह: दुषसिंधुमगनभईबिसरिदेह: अनदि
ष्टनयोरथध्वजअकास: अबलाअचेतआनीअवास: जसुदाअरु
रोहनिबिरहजोन: कबितासकहनसामरथकोन॥ इला॥रामकृष्ण
इहाहाकिरथ: अरकसुतातटआर: ब्रजसमूहबिलोकिबर: नये
गटेसतजार॥१॥बासदेवआग्याबिरत: नंदहिकरीनिहारि: क
रियेउपबनमांझकहै: बिधिबिश्रामबिचारि॥२॥ निसनेमक
रनियत: करिमंजनअक्रूर: ज्योंअवगाहतमतगज: पेठिजमन
जलपूरा॥ छंदपधरी॥मनसोचबूझिलैनीरमांह: निरधारक
कुग्रहरातजांहि: कहाबालकयेसुंदरकुमार: प्रतिजुधमहाबल
तनअपार: येसाथकरमनहीधरमअंग: सिसुजातलीयेकृबिव
स: दुषरसाजबेअक्रूरदेषि: बिस्वेसबिरदअपनोबिसेषि: सुनरा
मकृष्णसुंदरसरूप: अवलोकेसोईजलमहअनूप: अक्रूरदेषिपुनि
रथहिओर: कारनसुपेरथपरकिसोर: निरधारदानपतिजल
निहारि: तेईतहामदनमूरतिमुरारि: अवलोकितबेजलथलअनं
त: तनगोरस्यामउधारसंत: सुनसुलगपूरषलछनसुजान: स्याम
घनबसनतडितासमान: चारिभुजचारिआयुधसंचाल: बनि

विमलकमललोचनविसाल · वनिमाल विविधिउरमनिविकास : हिमनगमे
रूपनमदहास : नागेसअंकथितजदुनरेस : दानपतिदेषिसूरतिसुदेस : सनक
दिसिधपरिषदसमांन : असकृतिकरतसबआनआंन : ब्रह्मादिरुद्रवसुनागद
व : सबजयेमुकतसोईकरतसेव : अगिरातुष्टसोईपुष्टसंग : नवकीरतिकी
तिबिजयाअनंग : बिद्यासुसकतिमायाबिसेष : इमादिकरतसेवाबिसेष :
॥इहाइहादेषोअक्रूरप्रति · अद्भुतचरितअनंत : नयोबिस्वासमहामन
सातिकउपजोसंत ॥१॥ कृष्ण प्रभावसुनावकुल : देवीसकतिदुरंत · सोच
नइहांसंभावना : सबेमिटेभ्रमसाल ॥२॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदस
मस्कंधानुसारणे भाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितांश्रीकृष्णमथु
राप्रतिगमनं ॥ आदिपुरुषअब्ययअमर : नारायनजिनांम : तुमअ
नतमहिमाअतुल : संतरूपयेनसांम ॥१॥ छंद उघोराप्रभुनाविकुंठप्रभ
न : नीरोजउपजिनिदांन : जेब्रह्मबेदबिख्यात : तिहिअमलअंबुजतात
कीयब्रह्मजिहिसबलोक : सोबसतअपनेओक : जलअनिलअनलअ
कास : इथीसततप्रकास : मनमिलतइंद्रीयमांन : पुनिअर्थबेदप्रमा
न : तवअंगउतपतिभास : पुनिमहततप्रकास : तवरूपअगमअनंत : सु
नजानिबिधिसुरसंत : गुनतीनतैंगोपाल : तुमपरेपरमकृपाल : तुमपान
रूपगोबिंद : अनबिद्यनिसअनंद : कोउजप्रततप्रकार : कोउबेदपंथ
बिचार : कोउजपतपांनीपांन : कोउबिप्रमंत्रबिधान : सिवमंत्रकोऊ
साधि : आराधरहतउपाधि · अनेकभावअनंत : सबजजततुमकहंत
त : तुमएकरूपअनेक : बिसतारबिबिधिबिबेक : ज्योसघनबादलसा
जि : गिरगिरनिबरषतगाजि : तिहिचिलतसरितासोइ : हुगितटनिबाहरि
होइ · सबसरितनीरसुनाइ : येईमिलतजलनिधिआइ : सबजजत
मारगसंत : योतुमहिमिलतअनंत : अनेकपथअबिलेस : ज्योहोतपु
रहिप्रवेस : सुनकरमकरिकिरिसंत : सोतुमहिअरपितअंत ॥ छंदप
धरी ॥ सतरजमिलितामसप्रकृतिसंग : ऐस्वरीसगुनमायाअनंग : पु
निब्रह्मआदिदेवनिप्रजंत : येत्रिगुनमाहपोयेअनंत · साषीमनइंद्री
यपांनसार : नारायनतुमकहंतमसकार : गुनमांहअबिद्यापरिगु
पाल : सुरमांनवतिरजगसहतसाल : अपनेसोईबिद्याबलअनंत
सहिसुषदुषछूटतपरमसंत : तवसगुनरूपव्यापकसंसार : पुनिसु
नियेप्रकृतिनकेप्रकार : मुषअनलचरनइथीप्रमांन : द्विगसूरचंद्रआस
तनिदांन : अबिलेसनाजिसथलअकास : प्रतुअवनदेसआसाप्रक

सः पावनजुस्वरूपमसतकप्रकासः इनादिनुजाचवसुरसमानः परमो
षतवअकूपारः प्रभुप्रानपवनपृथीप्रचारः प्रतिलोकदेहकलिपतप्र
निः जलमध्यजथाजलनिधिजानि मसकाजोऊंबरफिलनिमाहि सब
कजथातवतनसमाहि तवरूपसीलअवतारएहः होदेवतकारनधरत
कोमीनप्रलयजलकृतबिहार हैग्रीवरूपमिलिअसुरमार मदरचलप
निधिथरिमथानः प्रभुकछपतनकीनोप्रमानः बाराहरूपकीनोबिनीत
रहअथरीपृथीपुनीत अवतारउग्रनरसिंघआपः प्रहलादराषिलीने
प्रतापः द्विजरामद्विजनुवलोकहीनः करिकोपछत्रीकुलछेदकीनर
त्यादिकरेअवतारआनः प्रभुरूपनयेजुगजुगप्रमानः दृजमांऊनयेतुम
वासदेवअवरामकृस्नअरिकरअजेवः अबदयारूपबोधावतारः कलकी
मलेछकुलनिधनकारः तवमायाकरिमोहितमुरारि संसारभ्रमतकाम
नुसारि छूटतनहीममतलहतछेहः अबपुत्रदारद्रव्यादियेहः कामोह
मकरिकरितकाजः सुषहेतसबेतेईसुषसमाजः अग्यानतिमरआर
तआपः पावननहीसकृतनवप्रतापः मायाप्रपंचजबछुटैमोहः अषि
लेससरनतवलहैओहः तवनमोनमोकरुनानिधानः पुरुषेसजगम
रतिप्रधानः ॥१॥ दो॥ सकतिअनंतअनादिसिधः अजितसुरासुरआप
स्वामीकृआयोसरनः प्रभुतवचरनप्रतापः ॥१॥ तुममोकहकृमबधैं
राषिलेकृद्वजराजः कबिनरहरबिनतीकरतः आतुरपतितअकाजः ॥१॥
इति श्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेभाषाबारहर
नरहरदासेनबिरचितेः अक्रूरस्तुतिकरनोनामः ॥४०॥ दो॥
कबिरुवाच॥ सुफलकसुतजलतेनिकसि बंदनकरेबिसेषः तव
प्रतापमहिमाअतुलः सकिनबरनिसुरसेष ॥१॥ जलमहरूपदि
षारज्योः हरिनयेअंतरध्यानः नाचतनावअनेकनटः प्रतिमाआदि
प्रमानः ॥२॥ जलअकासअथवअवनिः कछुदेषोअक्रूरः मनमहकु
तोजुमोहभ्रमः देवकस्योसोईकूरः ॥३॥ छंदः ॥ अषरी॥ चितवेगत
वरथहिचलायोः रहअक्रूरनिकटपुरआयोः जबअवसेषपहरदि
नजान्योः प्रभुअक्रूरमनमरमपिछान्योः ॥ कहलबाच॥ सुफलकसु
तअबयेहपधारोः सुषजुनमंजनबसनसवारोः कहोतहाअक्रूरजी
रिकरोअक्रूर॥ रामकृस्नचलियेमेरेघरः करुनानिधिपावनमो
हिकीजेः देवचरनममसंतकहीजेः करचनोदिकपरसकन्ह

ई: प्रभुसुरपितरपरमगतिपाई: भयेपुनिजलपदसंभावन: पुनिसोकर
तलोकत्रयपावन: प्रभुतवबोलेकृपापरायन: जदुकुलद्रोहीमारिदुष्टज
न: हितहरिसंकटसुषदेहन: अतिहितवमंदिरलैगे॥ कबित्त॥ इहा
अक्रूरकंसपहआये: सिधभयोकारनसमझायो: स्यामरामसिलिग्वाल
बालसंग अस्त्रनबेषबिराजितअंगअंग: सरितघाटपटरजकसकिल
त: मोटसवारिबांधिपुनिमेलत: माहीसमयकृष्णइहांआये: पटउजल
बहुरंगसपाये: धोबीतहांकंसकोधूरत: कृपापात्रअहधनकरिपूरित
कृष्ण उ॥ दिव्यबसनयेहमकहदीजे: लालचजपेमांगिकछुलीजे॥ र
जकबाच॥ राजगरबनहीसमयबिचास्यो: इहारजककछुबचनउच
स्यो: हैकछुऐसेबसननिहारे: राजबापकेबनबसवारे: उपजीर
जइबकीइछा: दइकवनतुहिऐसीदिछा: इनबसत्रनिइलारकत
ऐसो: कारोकुटिलरूपहैकैसो: अबजोराजपुरुषकोउऐहैं जनप
दमांझबांधिलेजैहैं॥ कबित्त॥ क्रीडाकीनीकृष्णसकारन: दुष्टरजकसि
रसंग्रोदारुन: जथाजोग्यपटजैसेपाये: पैसबग्वालबालपहराये:
धोबीनजेघाटलदेधुर: परीपुकारदुसहमुषरपुर: नगरद्वारआयेन
दनंदन: निरषतसोभाकुष्टनिकंदन: परिषाकोटकंगुरेपूरन: पोलिक
पाटतरलबनितोरन: महाअमूलिकसकेलाश्क: बसनबनाश्चलोलेब
श्क: दिव्यरूपतिहिबारकदेषे: बीरउभयछबिअतुलबिसेषे: पुनितिं
हिबसत्रजुगलपहराये: उभयमदनमोनकुबनिआये: देवहसतसूजं
सिरदीनो: कहिनिजभागकृतारथकीनो: सुंदरस्यामसषासंगसोहन
मालीइहांबिलोक्योमोहन: पुहपसुगंधहारकरिपावन: हेजुचलो
कंसहिपहरावन: मालीनामसुदामसोचिमन: पूरबकरमउदैभए
पूरन: हारकृष्णरामहिपहराये: पुनितिहिसबबांछितफलपाये॥१॥
इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधेभाषाबारहटनरहरदा
सेनबिरचितं॥ रजकबध॥४१॥ दोहा॥ निरषतसोभानगरक
स्यामचलेमषसाल: प्रतिद्वारेद्वारेप्रगट: मंडितितोरनमाल॥१॥ कन
ककलसध्वजदंडकरि: सोभितसबेसुदेस: चंदनपाटकपाटचिरुबं
नेउतंगबिसेस॥२॥ जालीमनिमयकाचजुत: प्रतिआकारप्रमान: बि
यिजुतबातायनबिमल: बारनदंतबिधान॥३॥ थंभप्रवालगवाषिथि
र: बिधिपरदाबहुबान: कहनसमथजुकवनकबि: बरनैनगरबषा
न॥४॥ छंद दोहा॥ मिलिमिलिबरनचारिमनमोहन: ॥

नेटलेकरतनगरजन: गौषगौषचढिचढिगजगामनि: मनमथरूपनिहा
रतनामनि: बिथरतपुहपकमलकरबामा: सुतमंगलगावतसुषसामा
कुबजानामत्रिबंकाकामनि: रूपमलयअधिकारनिलामनि: प्रतिदि
नयसिचंदनपहरावति: राजकाजकरिकंसरिझावति: पात्रतरेयसि
चंदनपूरन: गुंजतनाससुगंधसुधपगन: कुबजाआवतराजदुआरक
हं: ताहीसमयमिलेमोहनतहं॥ कृष्णजाकहाजातितूकौनकहाकी
तोपैकहोकहाबिधिताकी॥ कृष्णदेवपूछेयहकारन: चलीजातआतुरकू
बरतन॥ कुबजाउ॥ देवनरसकंसकीदासी: सेरंध्रीबरततसुषवा
सी: कंसकाजचंदनअतिहितकर: मैयहलीयेजातनृपमंदिर॥ कृष्णउ
जतुपतिकलोहमहिजोदीजै: जोकछुइछामांगिसुलीजै: प्रभुयह
तुमहीजोग्यपदारथ: करिअंगी कृतमोहिकृतारथ॥ कबिरा॥ चितअ
तिहेतसमरयोचंदन: बंछितकृपाकरीजगबंदन: पगसोपगचापे
सुषपायो: अरुकरयलवचिबुकउगयो: सुधाकरीषोचिसासुंदरि
महिमानईत्रिलोकमनोहरि: कामबिवसछबिगरबितकामनि
नावसहतपटपकस्योनामनि: कृष्णकृपायहमोपरकरियै: धाम
पुनीतहोइपगधरियो॥ कृष्णबाचा॥ ब्रासदेवहसिकलोबिचषन जो
हिकछुकाजबियताहैमन: काजसिधकरिजबेसकारन: पुनितव
करूमनोरथपूरन॥ कबिरा॥ धनुषसालजबधसेवकधर: अरके
दारदहाषलआसुर: असुरनिगेलिमध्यप्रभुआये: सषाग्वालग
नसंगसुहाये: लीलाचापउगारसुलीनो: करचढावटंकारवकीनो
ततछनयहिकरनाबधिताम्यो: तोअतिसबदसरासनतान्यो: रहो
गगनभरिधनुषभंगरव: दुष्टकंसउरपरेहाहरव: कंसकोपकरि
असुरहकारे: मोहनधनुषबंकसोमारे: धनुषतोरिआयेगिरवरधर
सुषदनंदआश्रमजहासुंदर: नंदचरनभेटेनंदनंदन: कृष्णकृपानि
धिदुरनिकंदन: दिव्यसुधाजसमतिसंगदीनो: कृष्णसबनिमिलिजे
जनकीनो: सुषसज्याबिश्रामसोमघन: बसेनिसानंदादिकउपबन
सोयोजदपिकंससज्यासुष: नावेनिद्रारहेदुसहदुष: दुरनिमतदेषे
अतिदारुन: तिहिछिनसीसनाहिउपरतन: ससिनछत्रप्रतिमादी
इहोइसम: दहकनकमयदीसतबिभ्रम: श्रुतिमूदेनहोतअनहद
सुर: आतमछाहसुछिद्राआतुर: दिष्टआपनेचरननदेषत: दहाक

छुनिसारहीअवसेषतः पुनिकंसासरनिद्रापाईः देषेस्वपनमहादुषदाई
षरासूहप्रेतनमिलिषेलतः मालाजपाकुसमउरमेलत। कंसतेतनम
दनकीनैं जहनिलकरतपापरतीनैं दुरनिमंतदुसपनयेदेषे बीतीरज
नीप्रातसपेषे प्रातकंसकरिपापसपूरनः दीनोगोषवेगिजतदरसव
इहासुनटमंत्रीसबआये बिहितजथाक्रममंचबनाये इहाबुलाये।
मल्लअषारोः निरनयकोतुकबेठिनिहारोः महाबीरजोधामहलेसुर
नगरनिवासीचतुरबरननरः बिहतइहारंगभूमिबनाईः अतिबलमल्ल
मंडलीआईः सभभूमिनिरनयकंसासरः महादुष्टबेगेबनिमंदिरः मुष्टि
मल्लचाणूरमहाबलः मुष्टिकक्रूटसंगसलतूसलः उपाध्यारनासक
युतआये सबमिलिकरतबिलाससहाये नंदबुलायेसहतगोपग
नः जथाजोगबेगेसबहजजनः बाजनलगेबिबिधिसुरबाजे गहर
मनकुअंबरयनगाजे।। कहा।।सिधतयेउरिमसकल कंसभूमोसि
रकालः आतुरपठ्येदासरहाः लैआवकुनंदलाल।।इति श्रीभाग
वते दसमसकंधेभाषाबारहटनरहरदासेनबिर्दितं।। रंग
भूमिरचनोनाम।।४२।।कहा।करेजथाबिधिनिसकृतः लोकबेदनं
दलालः मल्लअषारेकेमहाबाजतबजेबिसाल।।१।।रामकृष्णनदिबे
ररस बिकसेनयनबिसालः क्रोधहरषभ्रकुटीकुटिलः कंसोरूपष
लकाल।२।।छंदपधरी।।बाजित्रगहरजहुवसबीरः सुनिचलेसमरवि
जरीसधीरः अनभंगइहानृपद्वारआइः सबसंगग्वालमंडलसुना
इः कुबलयापीडकुंजरसकोपः आऊमगगदोकालआपः तहक
लोकलगजभूमहिटेरः रेरेकुजातिगजराजफेरिः हलिरोक्योमा
रगकवनहेतः जमसादनजेहोगजसमेत।।कबिरूकीयकोपब
चनसुनिकेकंगेरः इहापेलोकुंजकृष्णओरः गहिलेएतहातिलिग
जगुपालः करिक्रोधदसनचापेकराल दुवदंतमध्यरहिवासदेव
अरुचरनमांडनिकसअतेवः निअहेपूछषेओनिदानः पचीसधनु
षकुंजरप्रमानः मंडलाकारफेरोमतंगः इहाभयेसिथलसबअं
गअंगः गजछोडिदयोलीलगुपालः करिकोपबंकुरिआयोकरा
लः मारयोमतंगमुष्टासमुहः तहाभयेबिकलधरगएतुहः सोउआ
जबेहसतीसंचारिः पेलोसुबकुरिगजभूमप्रचारिः लीनेलपेटिगजसं
ठिलालः संकोचिअंगनिकसेसुदाल सोईसरोकुंडपरचंडसांम।।
स्रहिलयोबिलोकतसकलग्रामः बिचिगगनभ्रमायोबारबार।।
परक्योसंभूमिमानकुपहारः दुवबीरउषारेद्विरदंतः अबिले

सबदीसोनाअनंत संग्रामबिजतआरूढसंग मास्योतिनदंतसौ
मतंग ॥ दोहा ॥ बिहतबदीअतिबीरछबि बनेबसनरतबुंद इ
हाकुबलयापीड्यह गजनिहलोगोबिंद ॥ ॥ अतिप्रयाजिहि
मनजथा तेसेदरसेताहि येकरूपअनेकअंग अबिलोकत
जगआहि ॥ ३ ॥ छंद पधरी ॥ देषेअनुमल्लनिबज्रदेह सबगोपजुम
जनजुतसनेह नरबंदिदेषिनरबरनिदान बिनताबिलोकिमन
मथबिधान मानतअसाधसासनसमान पितमात्रपुत्रप्रतिमा
प्रमान दुषबदेकसमनमृतुदेषि बिदुषनिबिराटरूपीबिसेषि
जोगीनिजोगकोतनजानि पुनिजादवकुलदेवतप्रमानि दसरू
पप्रगटदेवाधिदेव सबरूतबिलोकतजथाभेव बिसेसकसे
बारनबिनास तहापरेकंसउरमहात्रास करिदंतमहाभुजकंध
कीन पुनिरंगभूमिआयेप्रबीन बनिसनाजथाकमलोकबंद
द अवलोकिकृष्णउपजेअनंद ॥ सजासद ॥ देवकीगरभअष्टम
दयाल कहीयेसुकृष्णयहकंसकाल बिषुकुचाआदिदुरजन
बिनास बनिकरेरासमंडलबिलास बेगेजुसनापुरजनबि
ष्यात तेकरतपरसपरकानबात ॥ कबित्त ॥ बाजित्रबजेचहुंय
बिसाल चापूरमल्लबोलोसचाल ॥ चापूर ॥ सुनिरामकृष्ण
तुमकहनिदान हमनिपुनमल्लबिद्यानिदान करिकृपाबुला
येइहीकाज यहअवसरअदभुतबनोआज रसरहेरिझाव
हुमहाराज उग्रपतिकितोबिपरीतआज ॥ श्रीकृष्णबाचदेवा
धिदेवबोलेदयाल कहिअचितबचनजोईदेसकाल तुममल्ल
नोजपतिकेबिष्यात बनबासीतहाहमकितकबात मलनि
सोसिसुनहीबलप्रमान संग्रामबनेजोपेसमान असमान
बिलोकेजुधआप परिषदकेकोतुकहोरपाप ॥ कबित्त ॥ ह
दसहजारगजबलदुगम कुतोहिरदजिहिमाहि सोतुममास्यो
मेलसो होबालकतुमनाहि ॥ ॥ सुष्टिकसोबलदेवमिलि बिधि
हमतुमहिबिरोध जानकुयहतोधरमजुध पोरुषनीतिप्रबो
ध ॥ ३ ॥ इतिश्रीभागवतेदसम सकंधेभाषायाबारहटनरह
रदासेनबिरचितेकुबलीयापीडबध ॥ ४३ ॥ छंद पधरी ॥
अतिरोषमल्लचाणूरआइ केतातरूपअरुमहाकाइ कुल

सोंआनिजूद्धोसकोप: उठ्यिअगकमातेगअेमे: बलवेकमुष्टि
कामल्लबाथ: सोजुस्वोआनिबलदेवसाथ: आघातवरनमुष्टी
अनंत: दारुनकोलाहलतोहिगंत: प्रतिअंगअंगप्राहारपूर: सुरअ
सुरजुरतसंग्रामसूर: मसतकसोमसतकहुसहमार: परिअस
असउरउरप्रहार: मुष्टिकमुष्टिउरआनिमेल: प्रतिमल्लबाल
नरीलपेल: घटघाउदाउअनेकघात: बिसतारमल्लबिद्याबि
ख्यात: कबुकालमल्लक्रीडाजुकीन: पुनिकृष्णसमयजानेप्रवी
न: रहाकंसनासयंटिकाजुआए: सोकालआनिबरत्योसुनार
सिरहनेमुष्टितनछुटिसधान: पुनिछुरेमल्लचाणूरप्रान: यहम
हामलमारेमुरारि: आकासअखिलजयजयउचारि: मुष्टिकआ
दिसबमलमारि: निसेषसेषकीनेनिहारि: रंगभूमिसबामिलि
कृष्णराम: योरचीमलतीलासकाम: यहचरितदेषिजनबढी
आस: तिहिसमयकंसउरपनीत्रास: नीसाननिवारेबजतनाद: स
गुष्टकंसकहिप्रगटसाद: हठिदुष्टबालयेकाढिदेहु: लानहुष्ट
जबासीलूटिलेहु: बांधहुगहिनंदहिदुसहबंध: कतबयरतोरि
बसदेवकंध: अरुउग्रसेननृपहतहुआज: सबआनिसुनतमंत्री
समाज: सुनिबचनकंसकेअवनपाल: चढिगयेमंचमोहनस
वाल: अखिलेसउचकिचढिगोषआप: परित्रासकंसयटतस्वो
पाप: धरिबज्रचरमआसुरसधार: बढिअतुलकोपसोमहाबीर
सिरतोकिरीटगिरमुकटसंग: रहाहईप्रथमथापटअंग: गहिकं
सकेसगादेगुपाल: सबगगनत्रमायोअमरसाल: थहरानोमेदि
रसप्रथान: प्रभुकारिदियोपृथीप्रमान: दीयकंपसंगतिहिबास
देव: उरपेगिस्वासरोकेअजेव: पापिष्टकंसकेगयेप्रान: रहानयो
सबदजयआसमान: पुनितरीपुहपबरषाप्रसिध: सिवब्रह्म
करतअसतुतिसिध: बसबयरकृष्णमूरतिबिनीत: उरकंसब
सीनिसदिनअजीत: देषीप्रतछिमूरतिदयाल: कोउकरमउदे
नोअंतकाल: कंसकेअनुजअयेसकाम: निग्रोधकंकघेबीरनो
म: सोजुरआनिदाऊसमान: प्राहारपरियतेदयेप्रान: करमफ
लपाइबलकंसक्रूर: सबमिलेआनिजदुबंससूर: पुनिकलोक्ष
लकरियेप्रमान: रतसहतकंसबिघिवेदमान: कु
सबउचितकीन: पुनिपूछिजथाएरद्विजप्रबीन:

य बलदेवराम: धरिधीरगये अवध धाम। मिलिबंदिमोष
कीय पिता मात: बिस्वेसनयो पोरुष बिख्यात: पितमातकुल
देवतप्रमान: जगकरनजरन अरुनासजान॥ दुहा॥ कंसो बिन
सजु कंसको: मात पिता यह मोष: मथुरामंडलमें महा: धरयर
मंगलघोष॥१॥ इति श्रीलागवते दसमसकंधेभाषाबारहहट
नरहर दासेनबिरचितं॥ कंस बधो नाम॥४४॥ दुहा॥ मोहि
बिलोकयो मात पित: देवतनाय निदान: कुललिख्यो तब चितक
रि: प्रगटभयो तब प्रमान॥१॥ तहदेवी माया उगम: प्रेरी परम कृपाल: मा
तपिता मम हम गन: तहां भये तत काल॥ ॥ कृष्ण बाच॥ छंद॥ पद धरी॥ ह
म हेतु सहु मदुष दुरंत: यह पिता मात सोक हि अनंत: बालक किसो
रब यसु बिख्यात: तुम लोह मारो कछु नतात: हम कुमि सुम
ता पिता हेत: सुनजो निलाठ संपति समेत: मैल योजन मत तब उद
र आइ: पितमात तब हित नेक पाइ: सुतजो निनही पितमात सुष देवे
सकष्ट मल महा दुष: चिंता यह उपजत दुहु चित: हम करन कहे हैं क
वन हेत: सब जाति जपे हम सापराध: सो छमा करहु तुम परम साध:
कबित्त॥ श्रेस्वरी द्विष्ट उपजो अनाव: भये तन जत मात पित मनुज भा
व: सुंदर बिलोकि मुष छबि सहास: पितमात जंत्र निमोह पास:
दुहा॥ तब मात यह चरन तें: बिषम संकल बाढि: उग्रसेन आनो र
हो: कारा यह तें काढि॥१॥ देसको सगज बाजि दल: बेसव राज बिचारि
उग्रसेन इह आपनें: सब सुष करहु सनारि॥२॥ कंस अपावन आपनो
प्रगट करम फल पाइ: मिलि अलोक सो लोक मह: भयो बिनास सुनाइ
॥३॥ देवदेव निदकु सर: पिता बिरोध सपाप: याते ताको सो कह
ब: उचित न करिबो आप॥४॥ छंद॥ द्विष्ट अघरी उग्रसेन फिरि बचन उचारे
बिषम काल लषि समय बिचारो॥ उग्रसेन जो मोहि न राज सकति
मन मोहन: गले गलानि अषिल इंद्रीगन: तुम सरब सरब मय स्वा
मी: जथा लोक त्रय अंतरजामी: कहो समर थ और प्रभु कोहे: स्वा
मी राज यह तुम कंस सो हे: पोषन नरन पुरुष तुम प्रगन: राजतिलक
लीजे बिजईरन॥ श्रीकृष्ण॥ तुम ही उग्रसेन सब जानत: पुरुष
कुल को धरम प्रमानत: नृप जजाति जो निसचय कीनो: देस राज सो
पुर कह दीनो: हम जदुबंस बिहत नहीं हमको: ताते राज उचित
यह तुमको: कृत यह उग्रसेन अब कीजे: लोक प्रसिध राज पद लीजे
आप नृप जाति अनुसरि हे: करहु राज हम सेवा करि हे

राजा हमकरि हैं तवरहा। साधु कुकारिज मांनु कुसहा॥ कबित्त। जादवग
येकंसनयजेते। तहां सबकुलबुलायेतेते। लोकबेदसबकेमतलीनें। क
मजुतउग्रसेननृपकीनें। बांहपकरिआसनबैगरे। सांमआपकरितिलकस
नौरे। सेतछत्रचामरतवसाजे। बाजेबिबिधिसमंगलबाजे। अपनीनृमिह
तिअयिकाई। पुनिसबहीजादवकुलपाई। महाधरमबरतेजुवमंडल। उग्रसे
नराजाआयंडल। बहुतमांनदेनंदबुलाये। जथाबचनकहिसुषउपजा
ये॥ श्रीकृष्णबाचा। पुत्रनावहमकहंतुमपोषे। सबबिधिलाडलकरसंतो
षे। सुमनसमरथसुपेकहिबेहित। नेमनेमजोकीनोतुमपति। पितानें
हतुमश्रेहपधारो। तहांसकलहजकेदुषटारो। इहांकरिकाजहमकुपुनि
श्रेहैं। देवजननिजनकहंसुषदेहैं॥ कबित्त। दिव्यबसनभूषनसब
दीनें। करिमनुहारिबिदातबकीनें। बसदेवकुलगुरगरगबुलाये। ब
हुतमांनदेदिगबैगयो। क्रमउपनेमआदिसबकीनें। परमधरमजेब
सप्रबीनें। देगोदांनदिव्यबहुदीनें। कुलगुरपुरद्विजहरषतकीनें। कृ
ष्णजननमसंकलपजुकीनो। सोबसदेवलहागउदीनो॥ सांदीपन अह
गमन॥ सबबिद्यापूरनसांदीपन। बसेउजेनपुरीसोबांतन। उह
सिषदसदिसकेआवे। प्रगटसुवंछितबिद्यापावे। आग्यागरगपाइ
हाआये। रामकृष्णसंगसबासुहाये। करिबंदनगुरपूजाकीनी। द्वि
जसांदीपनआसिकदीनी। उनमोसिधअनादिकुअहार। संध्यादइ
पटिकासुंदर। सबबिद्यापारंगतस्वामी। जथाजगतगुरअंतरजा
मी। तदपिलोकबिबहारहितपर। इहलकरतगुरअहनिरंतर। पु
निगुरबिद्यासकलपढाये। सेवासिषपरमसुषपाये। आतमबि
द्याधनुषउपासन। ब्रह्मग्यानपथन्यारप्रकासन। बेदधरमबि
द्याबिसेसर। राजनीतिसीषेराजेस्वर। राजनीतिसोईषटबिद्या
रस। बेदप्रणीतबिहतपोरुषबस। उचित संधि बिग्रह अरुआग्य
य। द्वैधानावजांनुआसनजय। पाटीएकसंधाजोपाई। तीनीपढिसु
नफेरिलिषाई। इकदिनएककलाअभ्यासी। बासुरगुरअहचोसवि
बासी॥ दोहा॥ दोइमासअरुचारिदिन। द्विजअहरहदयाल। गुरअ
वलोकेदेवगति। पूरनपुरुषकृपाल॥ गुरपतनीसोमंत्रगुरुअसो
कसोउपाइ। अपनोपुत्रजमतकवह। जाचोइनपहजाइ॥ श्रीकृष्ण
प्रभुहमसोपूरनकृपा। आपुनकरीअसेष। दयोसुरासुरकुलल
बिद्यादानबिसेष॥ ३॥ सेवकजनकरिसमझवे। हरषसहतमन
मोहि। द्विजमोगकुगुरदहानो। हमसोदेयहजोहि॥ छंद पधरी॥

पतनीगुरतनयहसमयपाइ: सोकीनी जाचेन्मांसुनाइ॥ गुरु लीषित
बारसमुद्रपरतासषेत: हमआयेतीरथजातहेत: बिप्रिलिषतहमारे
पुत्रबाल: कृतजोगमस्योसोरहीकाल: प्रनुयहेजुगुरदहनोप्रमानि
अबरामकृष्णउहदेकुआनि: सोईकरिप्रमानप्रभुधरमसेत: षिनअ
तरआइप्रभासषेत: उदधिसोकोपकीनोअनेत॥ द्विजरूपउदयिआ
योदुरेत॥ समुद्रबाच॥ नीरनिधिइहबोल्योनिदान: प्रभुआपकीजेमो
मान॥ श्रीकृष्णबाच॥ बांजनकोतोमहमस्योबाल: करिसोधआनिसोइ
हीकाल: पंचजननामआसुरसपप: इहासंषदेहउहबसतआपा॥ कबि
कहा॥ यहसुनतउतरिरथतेअनेत: जलमांकूदियेजयंत: पंचजनतह
मारेपछारि: फेरयोजलअंतरउदरफारि: पुनिआसुरउदरबालकनप
इ: इहाकृष्णदेवजमलोकआइ: जमराजकृष्णजगदीसजानि: पूज
अनेकअर्चाप्रमानि॥ यम आ आगमनहेतकहियेअजेव: दीजेसोईआ
ज्ञाहेवदेव॥ कृष्णउ॥ बांजनसांदीपनपुत्रबाल: कीनोतिहिषेत्रप्रभा
सकाल: वहआनिदेकुजमराजआज: करियेनबिलंबयाबिप्रकाज
प्रभुबचनधरमराजप्रबीन: द्विजबालकतबहीआनिदीन: इहा
मकृष्णउजेनिआइ: सुतदीनोसोगुरकहसुनाइ: पुनिबासदेवयो
कहिपुनीत: बिप्रकछुबोहोरिमांगकुबिनीत॥ गुरु बाच॥ दहना
सुतदीनोबासदेव: अबतोतुमअनरननयेअजेव॥ कहाबेदउबि
नगुरबिप्रबर: आसिकदयेअपार: कलोजथाबिधियेहकोकरिये
गमनकुमार॥॥ कबि कहा॥ रामकृष्णतबबेगिरथ: अहआयेगो
बिंद: मातपिताअतिहेतमिलि: उपजेउरआनंदा॥ इतिश्रीलगव
तेदसमसंधेभाषारहटनरहरा॥ दासेनबिरचितउग्रसे
नबंदिमोषन॥ श्रीकृष्णबिद्याप ढननोलीला॥ पेला लीलामो
अध्याइ॥४५॥ कहा॥ नीतिधरमबिद्यानिपुन: बचनचतुरहित
वंत: कृष्णलयोबुलाइ: इहां: संषआपनोसंता॥॥ रामकृष्णउप
वरहसि: बातेंकरतबिचार: कृष्णसंतारतप्रेमकरि: बृजजनमे
बिबहार॥ कृष्ण आहिंअतिकातरममबिरह: वेपितमातअधी
र: क्रमक्रमउपवबचनकहि: बिषमहरकुषबीरा॥ छंद॥ छोड़ो
षरी॥ गोपबधूगोकुलगजगामनि: त्रमतनिकुंजकुंजप्रतिनाम
नि: रासबिलासथलीअवलोकत: रहतउदासबिषयमगरो
कति: मोकहनैनप्रानअरपेमन: तजेसुगंधअसनकृषनतना

समहितनजेसकलसजासुष: मांननि हरसिंगारपांनसुष: बिबिधबस
नग्रहकाजबिसारे: बितजेलोकधरमबिबहारे: दसावावरीसीनरीकोल
त: बिकलकांनकांनकहिबोलत: जुवतीवृंदवृंदमिलिजैसी: तलफ
तिमीनहीनजलतैसी: गुरजनबचनत्रिसतिगजगामनि: जोंमृगराज
गजमृगनामनि: जथाधरमहितमुथराजैहैं: इहाकरिकाजबेगफिरि
औहैं: जबमेरोयहबचनसुनोजिहि: उनकेप्रांनबिस्वासरहतइहि: स
नासमयबिधिबचनसयानैं: जथाधरमतेतुमसबजानैं: करुप्रबोध
जाइहितकारन: महाप्रांनउपजैगोपीमन॥ कबित्त॥ अपनैंदयेबसन
आभूषन: सुकटकिरीटबेनबंछितमन: आरोहितअपनैंरथऊपर:
उपगवसुतबहुतैंकरिआदर: नांनअसतबेलामनजाये: इहांउधवबं
दावनआये: उडिगोरजआछादितअंबर: नाहिनजांनिपरतअपनैंप
र॥ इहांउधवकरेप्रवेसपुर: जनकाकुसुनजांनि: महरनंदकेबगर
मह: इहांछोरौरथआनि: ॥ छंद बेअषरी॥ इहांसंध्यागोधनकोआव
न: सुनियतसबदअनेकसुहावन: मोहितकामदृषभमदमातेग
रजतमहारोसरसराते: मिलनसमयगोबछसुषदसुर: पुनिमिलि
ग्वालबालनाषपुर: इयधारबाजतगोदोहन: मातहिंआनिदेतमन
मोहन: संध्याधरमसुदनप्रतिसाजत: बिबिधिकालरीयंटाबाजत
पुनिसुनियोषयोषकेसुदर: उधवअतिआनंदहृदयेउर: गोपबधू
मोहनगुनगावत: धरिधरिदुगधपात्रकरधावत: इहानंदऊधवपंह
आये: पकरिभुजानीतरपधराये: क्रमजुतआपनप्रजाकीनो: दिब्यउ
चितलेआसनदीनें: उधवजुकतअनेकजिवाये: बोहौस्योंसुषस
ज्याबेगये॥ नंद बाच॥ इहा॥ कुसलबातबसदेवकी: पुत्रनिसहत
प्रवीत: उधवकोंपूछीइहां: नंदमहरसबनीनि॥ छंद बेअषरी॥
कैसेंनासकंसकोकीनों: दुषटासोजादवसुषदीनों: गोकलबसिगोपा
लगुसाईं: चितहितबंछितधेनुचराईं: बृजअरिष्टउपजेजेबनबन॥
मारिबिनासकरतेश्रीमोहन: बृजकेबिघनअनेकबिनासे: प्रभुहमारेजतनप्र
कासे॥ जसोदाबाच॥ मातजसोदाउपजिमोहमन: पुनिइहाबोलीबचनप्रेमप
न: इहांछनरामकृष्नसुधिआये: छोहमोहनेंननिजलछाये: दरिजुगकुचनि
मधकीधारा: पूतपूतनहाकरीपुकारा: इतहिनंदलोटतअकुलावत: प्रेमथा
हजसुरानहीपावत: मगनभयेदुषसागरमांही: हेकछुरहीतिनहिसुधिनां
हीं: ऊधोदसाबिलोकीइनकी: तहांनरीगतिजैसीतिनकी: गयेकालक

बुमुरछाजागी। तयेसचेतनंदबमत्तागी। ऊधोइहाजुबचनउचास्यो। बेद
समृतकोधरमबिचास्यो। ऊधोबाच। जिनहरिसोंयहरतिउपजाई। महरनंद
कीधंमकुमाई। देहधरीकोधरमहिंबावत। बिधियहबेदपुरानबचावत
निसचयआहिकृष्णनारायन। परमपुरुषअरुजगतपरायन। उनकेप्री
यअप्रीयअपनोपर। उनेममयममनाहिनअंतर। सबनिसमानसदबिस
मी। जथाचराचरअंतरजामी। निरगुनरूपउनहिजगजानें। पेकिछुक
रनसगुनप्रमानें। वेहेंबसतसबनिकेअंतर। निकरप्रेमहितरहतनिर
तर। जोउनसोंअतिरतिउपजावे। प्रेमीजगतपरमपदपावे। अबवेसमय
पाइरहांअहें। हतसबनिमिलिहेसुषदेहें। करिहेंबचनप्रमानकन्ह
ई। मतुषकरकुजसोदामाई। देवमनुजतिरजगमयदेही। हेसबब्यापक
सरबसरबसनेही। मानकुउनकेपितानमाता। तिनकेकोउहतकनत्रा
ता। जनमनकरमकछुमतजानो। पेनसुतासुतभावप्रमानो। देहनर
स्वसुतासुतदारा। प्रकृतिपुरुषबहुरूपप्रकारा। सेस्रितरिष्याहेतसु
तासन। निरगुनसगुनहोतनारायन। सतरजतमत्रयगुनमयस्वामी।
कालवंधनकामअकामी। हेइनबिनसोपेसुधिनाही। बिलपतहेंतबु
नूतदृथाही। येहेंमतअपनीइछा। दुष्टनिदेतदुःखमयदछा। कबिकु
बातकरतहीस्यनिबिहानी। बोलेतमचरअपनीबानी। अहब्यापारकर
तनतईगोपी। अतिसुंदरसुंदरतनओपी। मांठेसदनसदनमथानो।
पाटनेतकरिरईमानो। नरिनरिआनिजथादधिनाजन। उदहितलेलै
गोपीअनगन। इहामथानकरतअनुरागी। लीलाकृष्णसुगवनलागी।
युमरिरहेमथानजथायन। सोनितहेसुंदरिसुंदरतन। बलीकरनि
वलियाबलिबाजत। नूपरधुनिकिंकनिरवराजत। देहीगोरअंचरा
ऊरे। उछरतहारजुउरनिउघारे। सुनिऊधवसोईघोषसुहाये। प्राहत
हउगेपरमसुषपाये। मिलेग्वालगोबछमिलावत। पेउहिउहिमंदिर
पुहचावत। द्वारनदथादोरथदेष्यो। बिनताआगमकृष्ण बिसेष्यो। सो
नितधजापताकासोई। हितउपजोमोहनरथहोई। गोपीबाच। इहां
चलीमोहनकहिआवन। सिधकरसोईबचनसुहावन। दिब्यबस
नजबऊधवदेषे। बिनतामनयतिक्रोधबिसेषे। बचनकोधगोपीतबबो
लत। छदमबाकिउधवउरछोलत। यहअकरूरफेरकतआयो। काको
रथपुनिकवनपगयो। रामकृष्णलेजाइलगाये। मथुराजइहिकंस
मराये। आयोदुष्टसबनिउरदाहत। हेअबकहाकीयोधोंचाहत।
करिप्रतुनासकीयाअबकरिहे। हेमअमिषपिऊजुधरिहे। सरि
ताकरिनिसकृतसुहाये। उधवहांनंदकेआये। इतिश्रीभागवते

दसम सर्ग धेनाभाव रहटंन र हर दासेन बिर चितं उधव घोषग
गम नोनाम ॥४६॥ कबित्त॥ दोहा॥ बिआकुल मन बसन वे: वेसी हीअ
नुहारि: अवलोकत गोपी अधिक: रही बिचारि बिचारि॥१॥ आनि बि
लोके निकट यह: बिनता करे बिचार: पत्री बाल्क रूप पे हे कोउ अति
हारा॥२॥ पहचानें उधव प्रगट: सबा कृष्ण को साथ: करि बंदन पूजा करी
अवर सबै आराधा॥३॥ अह यह ते गोपांगना: आनि नई एकत्र: अप
नें अपने नाव रहा: बातें करति बिचित्र॥४॥ छंद दोहा॥ जोगी जती त
पस्वी जोई: अंबा पितान बिसरत वोई: पूरन ग्यान जपे सिध पावत:
तेऊ कुरब जात रा आवत: सुत हि मात पित सत सनेही: देष फुन वहु रल
नये देही: हम सों स्वारथ हेत सगाई: सो तो कृष्ण नली समझाई: कुसम
लता जैसें मिलि मधुकर: पुनि रसलेय सबंध करे पर: अरुग निकाम यत्री
आराधे: स्वारथ प्रीति तब हि लों साधे: हित बिद्या लो सिध जु होई: स्वारथ
नये जाइ उ बिसोई: बसत प्रजा जो लों सुष बासी: अरथ बिनां उ फिजाइ उ
दासी: जथा जग्य आचार जजाई: पूरन नये दहना पाई: पंषी जो छाया फ
लपावे: बसे वृछ सो चित लगावे: स्वारथ यह सुनो रिसगाई: कंषर होर
तब हि उ फिजाई: जैसे अतिथ चले करि भोजन: तजि यह को ये हत त
छन: बन बिन हरित तब हि लों बासी: देषि दाह मृग जाइ उ दासी: लप
टमों पर त्री यचित लावे: पूरन कारिज कृ पिलावे: ऐसी गति स्वारथ आ
धीनी कृष्ण प्रीति गो पिनि सों कीनी॥ लेष बाच॥ लोक लाज तज जिन्हें
बिकाला: बाल्क चरित गावत ब्रज बाला: याही समय भ्रमर रक आयो:
काहू नारि चरन नीय रायो: तहां हसी गोपी हे तारी: उधव ब्रज सु बात
उचारी: भ्रमर धूत मोहन को जाई: सदा रहत तू निकट सषाई: मधुपक
गत वपु हपा कि माले: निमत कछु दीनि दलाला: माधव ज बकुब जो हि
मनावत: पाइन लगत प्रेम उपजावत: दासी के यह चरन निदानो: केउ
बारछीये को जानें: कुब्जा को सो रन कुच कुकम: हे यह लिप्त सु देषत
हैं हम: तांते हम हि छीये मत मधुकर: उपज तषे दूर हत उरअंतर: अवला
करन प्रसन जु आये: स्वारथ हित तुम बचन सुनाए: रहत उ हकुब जा पर रा
नी: निसप्रसन कर कृतु मग्यानी: अविरज महा हम हिय हआवे: कमला
हरि की प्रीया कहावे: यतो परम धूत है ऐसे: करत जु पे बिस वास जु कैसे
हम अग्यान श्रीया सी नांही: सदा तजत नही संग सजाही: करियुं जारक
लगुन गावत: बार बार ले हम हि सुनावत: सो कुब्जा कहजा रसुनावहु
प्यारे लगो दान कछु पावहु: त्रिभवन बिषे कवन सो तरनी: दुरलभ

रनहिंबिस्वकहिबरनी। बिसुचरनरजरमांबिसेषौ: तौहमकवनमात्र
किहिलेषौ। करितुमहतकरमहुषपावत हमहिकृस्नसोसंधिकरावत
देषकुबलिसरबसजोदीनो नियहराजछीनिकेलीनो, जदपिवेऐसे
होजानैं नैनरूपहमरहेनिदानैं। ऊधोबाचाकरियबिरहकुटिलकेकैसे
उनसंदेहकेलौहोऐसे॥ तथागोपी॥ बोहौस्यौहसिहजबनिताबोली
षरीगाडिउरअंतरषोली: जुगतिहमनकछुऐसीजानी: मुषउनहीसौंस
चीमानी: तुमजुहमहिबिसवासकरावत: मुषकहिमीठीबातमिलावत
हमबिनुकौउनकेत्रानांही मधुपबिचारकरुमनमांही। कविरुवाच
दोहा। ऊधोगोपिनिकोरहां देष्योप्रेमनिदान: रंगनिरंतरस्यांमरंग: पूर
नप्रेमप्रमान॥ ऊधवबाचा। अबउधवबोलिरहां: छांड्यौग्यानगुमा
न धंन्यधंन्यतुमयीरधर: धरतिकृस्नकोध्यांन॥ छंदहै। अषरी तातेती
नलोकपूजितुम: कृस्नभगतिकरितईजथाक्रम: जोगजग्यजपतपह
तसंजम: दानबिधानदेहइंद्रीदम सबरितुसहतकष्टतपसाधत: र
म्यादिकजोगेसअराधत: तिनहिकुजदपिदुरलभजो: तुमकहगोपी
सहजउपजिसो: सुतपतिसजनगेहसुतागी: लोकलाजतजिकृस्नहि
लागी: उनसंदेसकसौहैऐसो: तुमसोसबेप्रकासोंतेसो: हमतुम
कबहुबिजोगसुनांही: सोउरचषदेषतसतनांही: पंचततमयसूत
प्रमानौं: नियतमोहितबस्यापकजानौं: बुधिमनइंद्रीयततबिचारो
ऐयेहैसबेसरूपहमारो: कारनपारसरबमहब्यापक: उनबिनहैनां
हिनकोऊरकाजोपीबाचा। ब्यापकसरबसुउनहिबतावत: प्रांनीत
तोनासुकोंपावत। ऊधउ प्रांनीतुतबिकारहिपावै: हैवहरहतबिक
रकहावै: कृंग्यानतमसुधअगोचर: निरबिकारनिरनासनिरंतर
अथनितीनअवसथागारी: सुषपतिजाग्रतिस्वपनसुतारै: मायगुन
कितेदबुधानत: सोकहउनतेतिनप्रमानत: कहीयततुरीयअवस
थाकोई: सिधसरूपहमारोसोई महासरूपप्रानहमेरो हेतबिन
संदेहकोहेरो: तादहीकेषटगुनतेसे: जातसथितबरधतहैजैसे
धरहतअपषीयतबधांनौं: नासअवसथाछीयनिदानौं: कृंग्यात
मरूपीअबिकारी: नासरहतयहदेहनिहारी मारगतपदमसत्पजु
मानैं सोसबमोहीमांझसमानैं: अपगाजथागिरनतेआवति: सबेस
मुद्रहिमांझसमावति॥ गोपीबाचा संगुनसरूपसकलगुनसुंदर
महरनंदकेकवरमनोहर: चितबुरावतमांषनचोरत: दूदषाताद्यिनाज
नदोरत: तिनकोबिरहदुसहअतिदुसतर: कैसेअबलासहैसमधुकर

जेयहबिरहकरेअंगीकृत: तिनकुंजकुंदेकरिहितचित्त॥श्रीकृ
ष्ण॥ हेतवहिगतेहरिरहतहम: ताकोयहेनिमंतसुनकुतुम: श्रिष्ट
अगोचरतवमनमांही: हमतुमतहांबिछोहनांही: निकटरहेतवर
रिसनेही: करितहांअंतरनहीदेही: रासमयगोपीपतिरोकी: सोपह
लेहीमिलीससोकी: हमतेहरिजपेतुमकैहो: जथाभृंगकीटमिलि
जेहो॥गोपीवाच॥ अथवयरचरचाअसुहाती: छिनकनिवारकुंजारत
छाती: हमतोनोगपात्ररसनोगहि: जोगीनाहिजुसाधेजोगहि: अहितर्क
सजउमूलउपारे: सबेआपनेकाजसवारे: स्यामरामकोकुसलसुनावकु:
बोधआपनोगांठिबंधावकु॥किंच तगोपी॥ऊधोकबकुकुसलहजअहे
मीजिबोजिमांषनदधिषेहे: हितबनधेनचरावहिमोहन: ग्रेहकरहिसंध्या
गेदोहन: कबकुकहिहेकंवरकन्हैया: मोहिबकुतमांषनदेमईया:
बनहजबधूनिकरनिसिनिरमल: करिहेरासबिलासकतहल: पुनि
इकगोपीबोलिप्रबीनी: किहिजांनीजेमीउनकीनी: पकरिमहचांएर
रपछारे: मातुलिकंसबेलहीमारे: पुनिपर्यंगतबेनवपायो: सबेमि
लीजदुबंससुहायो॥१॥ कंन्यानृपतिब्याहुबकुकरिहे: सुषअनेकतिन
संगअनुसरिहे: मिलिबसदेवदेवकीमाता: भोगबिलासकरतदोऊ
भ्राता: बासदेवनयेजदुकुलबंदन: निषलबंसहितकंसनिकंदन: अ
बकहिकाजयोषमहआवहि: काहेकोनंदकुवारकहावहि॥२॥श्रीउन
केअरथंगपासुहरि: नगरजोबिताबकुतेनागरि: हमतोहजबनिताव
नबासी: येकहीगोधनहतउपासी: तिनकोंउरलनमिलबोताकी: ज
थानामसदसदनजाकी: अबनेरासमहासुषमानी: जथापिंगुलग
निकाजानी: कांमीबामीललोनकोई: पुनिगनिकासुषनिद्रासोई:
गनिकाहत्रत्रयकीनीगुर: वाहीसमयग्यानउपज्योउर॥३॥इहांएक
गोपीकहिअैसो: जथाबिलोकिकालगुनजैसो: जदिपकुलमहाजो
गेस्वर: ग्यानिधानगुरनिकुकेगुर: तदिपनरमातजतसंगतिनको
जांननिजदिपिपरमगुनजिनको: तोहमकवनमत्रहेमधुकर: असो
छबिदरसनछायेउर: निषलनिकुंजबिबिधिसरितावन: अनुपद
अंकितरूमिजुपावन: जहांजहांहरिपरतयेजोऊ: तिनकोबिरह
सतावतसोऊ: उनकोहासबिलासबिलोकन: मोहनमंत्रमनकुब
रततमन: उनकेरूपचरितअनुरागी: नईतनमयगोपीबकुनागी: अ
तिबिरहातुरबचनउचारति: स्यामसरूपअनूपसंनारति: हांहज

नाथदीनके बंधव: अबलापरी बिरहदुषअरणव: स्यामआपनो बिरह
संतारो अबलादेहरसनउधारो। मेकअनयबृजमेंबसिऊधो। सबहि
नकोदेष्योमनस्तधो: प्रेमनेममनसामनपूरन: कालबिहावतगावत
हरिगुन: निसचयपरमानंदनिरासा: उनकोतदपिनछूटतआसा। कृ
ष्णमहाजोगीजोगेस्वर: उनकेमोहनमायाअंतर: कृष्णबिलासजहा
जहाकीनो: नांमनिसंगप्रेमरसलीनो: नदीनिकुंजपुंजबननिरंतर
दुषहारकगिरवरबापीसर: चितहितसहतनहिंजोचाहत: दुषह
नयेतेईफिरिदाहत: गोपिनकेगुनउधवगावत: चरनरेनलेनालल
गावत: गोपीजबेकृष्णगुनगावहि: प्रेममगनतनमयतापावहि: ज
नबसबयकरिगरुवाई: सहास्यामकेमित्रसषाई: जदपिब्रजेबहुके
जाये: अरुगुरुपानप्रबोधनआये: गोपीप्रेमनेमअनुरागे: आपु
नउहिनकेपाइलागे। ऊधोबाचाधेनदेहरनगोपिनधारी। मन
बचक्रमकरिचितजतमुरारी: जोगीजतीतपीसिन्यासी: आतमदम
नबिरागउपासी: तेईयहनावजुबंछितताते: जगअघबंधनछूट
तजातें: कृतसंजमतपसानबकाई: प्राप्तिनकरमनिगमकुगाई
कृष्णकृपासबकाजसुधारे: अघअरणवकृतउधारे: गोपब
धूपसुपालकमनमत: दुष्टनावबिनचारहिदूषत: जिनकछु
कृष्णप्रभावअजानें: मनबचक्रमसुपतिमानें: जेअनजानिअ
मृतमुषजावे: प्रानीतदपिअमरपदपावे: गोपीकृपाप्रसादजुग
यो: प्रभुकोअीयानसुरत्रीयपायो: उनकेभागजुमहमांजोई।
कहनसमर्थनाहिकबिकोई: उनगोपिनसंगरासबनाये: प्रेम
नावमनबंछितपाये: अबतोयहैमनोरथमेरो: बृंदाबनमेंहो
ईबसेरो: त्रिनद्रुमगुलमलतौषधितेहु: ममउतपातिहोहि
यान्हमह: पदरजइनगोपनकीपावन: मेरेतनपरसैमनभावन
न। ऊधोबाचागोपिनसोंतहआग्यामागी: अबकुंवनतयोबक
नागी: मनबचउधवआग्यामागन: आयेनदजसोदाअंगन: गद
गदकंठसोकगहराई: काकुयेकछुकहिनजाई: दरसनयनअबि
रथ: पुनिद्रिगमूदिचलेमुथरापथ: कलेपानबिकलतनतारी
नानकुनाप्योहारिजुवारी: इहाजोगउपदेष्टाआये: गोपिन
सोसिषहोइसिधाये: प्रेमसमुद्रहियाहनपाये: इहांउधवमोह

नपहुआयौ॥ दोहा॥नंदजसोदामुषबचन:स्यामहिकेहसंदेस
कोटिकलपलगिराजकरि निधिनुवनजकुनरेस॥१॥इतिहमारे
चितकी:येकहीनवअसेस:जगजहांतहांथिरचरजनम:प्रनुमह
होकुप्रवेस॥२॥ नारिनउपदेसननिगुन:उधवगयेजुआप आ
मेगुनउपदेसले:ऐसोप्रेमप्रतापा॥३॥बिहसजुनंदादिकबचन
सुनिसुनिउधवसाध:मुथरांआयेमुगधकै:करिमोहनआराध
॥४॥कीनेबंदनकृस्नको:उरउपजेआनंद:नैननअयातनरूपरस
मोहनमंदनमुकंद॥५॥नेमप्रेमगोपागना:सुनपितमातसंदेस
नरहरप्रनुहितसोसुनें सोनुवचकनरेस॥६॥इतिश्रीभागवतेद
समसकंधेलषाबारहटनरहरदासेन बिरचितं उधवगो
पीसंबाद चमरगीत॥ ४७॥ कबिकु॥ दोहा॥समसरबगपसरब
तमा:सरबसब्यापकसिध:कुबजाकोअतहकरन:पायोप्रे
मप्रसिध॥१॥कारनकारिजस्पंधकरि हमकोहेतवग्रेह:बंछित
कुबजाकोबचन आगेदीनोयेह॥२॥ मेरंश्रीकेतिहिसमय
आयेसहतउछाह:प्रनुकेसीइछाप्रबल हेतबचननिरबाह॥
छंदउधोरा॥ बहहरषिसनमुषआइ:परिक्रमनकरिपरिपाइ:सं
गसबीजूथसुजानि:पुनिआनिग्रेहप्रमानि:अनेकसोजअनूप
सुषजथासमयसरूप:निजगंधबसननवीन:करकुसमसजा
कीन:तहबेठिकृस्नकृपाल:दुषहरनदीनदयाल:सुनपांनिमि
लियनसार:असुबिबिधिदिव्यअपार:सुनतनकचंदनसेव
दीयजथाबंछितदेव:कामनापूरनकीन:पुनिकसोकृस्नप्रबी
न॥श्रीकृस्नबाचा॥दोहा॥कुबजामनबंछितकछु:बोहोसोमांगि
बिचारि:करिकृपूरनकरिकृपा:मुषहसिकेहमुरारि॥कुबजा
बाचा॥कुबजाजोरेजोरिकर:तुमप्रनुबेदबिनीत:बासदेवक
कुकालबसि:पुरयहकरकृपुनीत॥१॥कृस्नबाचा॥यहयोही
हेअवसि:ऐसोबचनउचारि:कृस्नदेवकारनकरन:प्रनुनिजग्रे
हपधारि॥छंदपधरी॥यहदिवसप्रातबेलाअनंत:सतकरन
बचनसुषदेनसंत:संगसंकरषनउधवसनेह:गोबिंदआइअक्रू
रग्रेह:अक्रूरइहासनमुषआनि:पदबंदनकरिपूजाप्रमानि:प्र
नुरहामध्यमंदिरपधारि:धोयेसचरनजलसीसधारि:बेगूरि
ग्वितआसनबिनीत:पुनिकरतनयेचरचापुनीत:
वदीननिदयाल:षितिभारउतारनषलषयाल
बेतषलकेसमारि:तुमजादवकुलकोकष्टटारि

कको नो बिसेष : अबसुनियेपरमारथअसेष : सलपुरुषप्रानव्यापकप्र
सिध : सरबातमस्वामीसदासिध : आपनीसकतिनुमउचितआप : बिसत
रबिस्वमायाबियाप : उतपतिदेहकारनअनूप : रचिरेकहिषावतअन
तरूप : त्रिगुनमयरचितनुमलोकतीन : चवषानिचराचरचितचीन : हे
तुमनदेवपुनबंधहाथ : निरलेपनिगुननिरमोहनाथ : पावकपेथबेदकु
पुरानि : उपजतहैजबबाधाअमान : संसारहेतनुमस्वयंसिध : प्रनुध
रतदेहपावनप्रसिध : हितजयेआनिबसदेवग्रह : अवतारनारनुवहरन
येह : मुहिकरिकृतारथबेदमीत : पाधारेममंदिरपुनीत : तवसुकर
सेवमनक्रमसमेत : तिनकोतुमबंछितसरबदेत : ममकरतबाधमा
याअमान : करियेनिवरतकरुनानिधान ॥ श्रीकृष्ण ॥ प्रनुबोलेतु
मपित्रीपुप्रसिध : बेदनीयबिहतअरुबंसबृंध : हमहैतवबालकप
रमहेत : सोकरियेरक्षाधरंमसेत ॥ अक्रूर ॥ बैराग्यप्रनुनतुमकहबि
सेष : औदासनावतजियेअसेष : मर्यादबंसरषिकमहंत : सुरतीर
थसेतुमसाथसंत : सुरतीरथफलआराधसेव : तुमदरसनकृतफलद
तदेव ॥ श्रीकृष्ण ॥ दोहा ॥ तातेअबअक्रूरतुम : पुरमातंगपधारि : हित
हमारेहेतहा : ल्यावहुसोधसंतारि ॥१॥ पंचतुपायोपेहनृप : देवाधी
नदुरास : ताकेत्रीयसुतसोकजुत : नियतनयेनेरास ॥२॥ सुषबिल
सतधृतराष्ट्रसो : इथीबितवप्रनाव : पाडवअरुनिजपुत्रप्रति : न
हिसमदृष्टिसुभाव ॥३॥ तिहिकारनअक्रूरतुम : चलियेतहातुरंत
उनकोसुषदुषदेषिसब : बरनहुआनिकृतंत ॥४॥ पाछेसमझिबिच
रिषे : करिहैतिनकोकाज : आनिनयेऐकंत्रउहा : सबेअसाधसमा
जा ॥५॥ आपुनराजाआंधरो : पुत्रमहाधसपाप : ताबसबरतीहेतहा : इ
बिकलतआपा ॥६॥ कबिकाकरीबिहाअक्रूरकी : गजपुरकहेगोबिंद
सकरषनउधवसहत : आयेग्रहआनंद ॥७॥ इतिश्रीभागवतेदसम
सकंधेभाषाबीरहटनरहरा ॥ दासेनबिरचेता ॥ अक्रूर ॥ हत्तन
पुरप्रेषनोअक्रूरतालीसमोअध्याय ॥४८॥ कबिकाकृ ॥ दोहा ॥ बारनपुर
अक्रूरसह : आयेसहतअनंद : कारनआपाकलकी : गावतपुनगोबि
ंद : छंदपधरी ॥ अक्रूरइहांगजपुरहिआए : सबमिलेआनिकोरवसु
ताए : धृतराष्ट्रनीषमबिदुरधंध : पुनिमिलेकर्णकृपीप्रसंध : अरुबा
ली कराजाअनेग : सुतसोमदत्तसोमिलेसंग : दुरजोधनगोतमसर
ताज : द्विजद्रोणसहतमिलिसबसमाज : सुतपंचमिलेपंचोसधीर
अलपतथासंग्रामबीर : इत्यादिबिप्रछत्रीअनेक : मिलिबालबृध
नयबिबेक : सुनसनाआनिबैठे सुजान : परसपरकुसलपूछीप्र

मान: सबचरित जथा अवलोकि सूर: कछु मासरहे गजपुर अक्रूर: पांडव बल
पौरुष बुधि प्रमान: मनकौरव देषे असहमान: प्रजहित बिनय प्रतिपाल प्रीत:
निरलोभ निरंतर धरम नीति: सो देषि लोक पांडव सनेह: दुरजोधन दहत हृदय
देह: दुरजोधन दुष्ट चरन देषि: अक्रूर उपजि बिसमय बिसेषि: नीपमह
आदि कौरव कुनाव: दिन दिन प्रति सूचति दुष्ट दाव: इक दिवस बिदुर एकांत
आइ: सब कारन अक्रूर हि सुनाइ: आपनी दसा दुसह दुरंत: दहत कुंत बरनी
आदि अंत: सुत बालक मेरे बिनु सहाइ: अरु बास सत्रु सौ बनौ आइ: निसा
सउरथ जलदरतनेन: बदि रिदय कंप आवै नैन: मिलि मृगी जथा बृक जू
थ मांझ: सुष स्वास न पावत नौ रसांझ: कुंफू फीकु पिता बिनाहीन: दुरजो
धन परिनवस हत दीन: अषिलेस कृष्न माया अजेव: दैदीन बंधु देवाधिदे
व: इनकी सुधि लेहु केव कुआइ: हैसदा स्याम वेई सहाइ: जौगेस जग
त नावन जयंत: अषिलेस बिस्वपालक अनंत: उनही कौ हम कौ सरन
आहि: कहि कृष्न बिना अब कहै काहि: कबि कृ॥ अति दुषित देषि कुं
ताअधीन: दिदबोधक सो बिस्वासदीन: अक्रूर बिदुर अति सोच आप
जलधारनैन मुष कृष्न जाप: पांडव निपिता कहि कहि प्रनाव: नयो सब
हिन कौ सात्विक सुभाव: धृतराष्ट पासि अक्रूर धीर: बिचि परिषद बै
ठ्यौ नि बीर॥ अक्रूर बाच॥ पुनि कहत नयो सुनियै नृपाल: यह कहि
न बिचार कुकरम कौल: पंचतजबै नृप पंडपाइ: यह अवनि राज की
तुम हि आइ: नातै नरेस तुम सहत नेम: प्रनु पंडबाल पाल कुसप्रेम: सम
दिष्ट बिलोक कुसब निसूर: पुनि बदै बंस धन धरम पूर: निसेष अन्यथा
धरम नास: बिष्यात नरक इकवीस बास: सब भ्रात पुत्र बरतै कुसमान
प्रतिपालकरै कुरहा प्रमान: अपनै परजा नि कदापि आप: सहबासन
हीति न सो सताप: यह जथा देह आपनौ जानि: पुनि तात कुसो बिछुरन
प्रमानि: काकै कुटंब सुतबंधकौन: येकाकी जामन मरन जौन: करम
अकरम नागौ न कोइ: सुषदुष अकेलौ जैसो इ: प्रनु पुत्र सुतो बिता
पहार: पुनि करम सीन करत प्रकार: जलजंतु जथा जल संग जानि: प्र
तिछिन छिन सो षत जल प्रमानि: अपरम करि पोषित पुत्र आप: सो ईत
जैसै अंत उपजै सताप: चिरजीवी आपन उन हि चाहि: इक हाथ अथर
मेरे हि आहि: परजा कुटंब पोषन प्रयोग: सुपने की संपति को संजोग
संसार पुरुष सो ईस मान: समजानि सब निबरतै समान॥ धृत राष्ट
बाच॥ धृतराष्ट तहां बोलो स धीर: बिरतांत सुनै अक्रूर बीर: कल
नवती बानी अक्रूर: सुनि बिप्र अवनमानै न सूर: पै मरन सील जो
सुष पाइ: इहि भांति न मन मेरो अघाइ: संमत न नियत मम बल सु
भाव: भावी सो बरतत बिषम भाव: थिर चित न मम चंचल सुभाव

ज्यौतिष्ठि ततरकिघनमांऊजाइ: सोहल्लकरनकारनसमथ: हेदेवीमायाउन
हिहथ: प्रभुकीजेइछासोईप्रमान: अवलोपननांहिनसमथआन: मायप
पंचउनकोसमूल: सोनजानिसुरासुरसहतसूल: नारायनउनकोंनमस
कार: सोवासदेवरंनऊविहार: अवजानिनृपतिमनअतिप्राय: अकरूरप
रिमधुपुरीआइ॥रहा॥ इहधृतराष्टआदिदे: कौरवकुलकोकरम प
मजिजथात्रकरूरसुत: मोहनसोकहिमरम॥१॥ इति श्रीभागवतिम
हापुराणदसमस्कंधानुसारेभाषाबारहटनरहरदासनबि
रचितं॥ अथ धृतराष्ट्र प्रबोध॥ ऐकानपचासतमोअध्याय॥
४९॥ कबि रू॥ रहा॥ पुत्रीमागधराजकी: असतप्रतियहनाम: सोप
टरानीकंसकी: बिधिकृतविधवाबाम॥१॥ कोधायिकसोकोकलित
जरासंधिपहजाइ: कारनजोबधकंसको: सबेकलासमझाइ॥ जरासं
धबाचापुत्रीदुषसुनिकेपिता: सजिचतुरंगसधीर: अवनीकरोअजा
दवी: बचनप्रतंगपाबीर॥ कबि॥ अक्षोहनीसंभा॥ इक: द्विरद: रथ
इक: त्रयजुहयपंचपदातय: प्रथमपत्रियहनांमे: त्रिगुनकरिसिनांमु
षतय: तासत्रिगुनगनिगुलम: त्रिगुनतिहिगनजुगिनजय: नियतत्रिगुन
वाहनी: क्रमसुतिहिप्रतिनांकिजय: मानीसुत्रिगुनप्रतिनांचम: अक
तिहित्रिगुनअनीकनी: सोदसगुनकरिनरहरसुकबि: यहसंष्याअ
क्षोहनी॥१॥ छंदु॥ रा॥ अक्षोहनीतेईस: सजिचल्योमागधईस: ह
यहीसगयमदगजि: बाजित्रबीरसुबाजि: बेचढीपुरहतषेह: दिनब
योनिससंदेह: चतुरंगसेनसचात: करिगमनमगकछुकाल: अतिको
धमुथराआइ: सबनगरयेरिसुनाइ: तबरामस्यामसुतेत्र: मिलिकरत
बिजईमंत्र॥ बलदेव कृष्ण मंत्रा: रनषेतमागधमारि: इहासकलसेन
उबारि: कैमारिरनचतुरंग: इकबचेमागधअंग: हतिजरासंधहिहा
थ: अरुमारिसेनअनाथ: पुनिजुधतीनप्रकार: इहाकरेबीरबिचार
मिलिहैजुलोहसमारि: नरदेहुअवरबिमारि: मगधेससेनमिलाइ: यह
बहुरिलरिहैआइ: योंहूमिनार अमांन: निसेबहोइनिदांन: इहिह
तमैंअवतार: सुवलयोदारनतार: पुनियहैमंत्रप्रबीन: कृतनिय
तउहिमकीन॥ कबिरुवाच॥ यहसमयमगआकास: प्रभुबिजयह
तप्रकास: सनाहआयुधसंग: रथउनयआइअनंग: इहादईवर
छाएहु: सोईसुतआरसंदेह: सजिकवचआयुधसिथ: प्रभुरामकृष्ण
प्रसिथ: आरोहरथतिनआइ: इहाबिजयसंषबजाइ: तबपरीअ
रिस्तत्रास: बिपरीतदिनबिस्वास: मगधेसबोलिगुमांन: नहिबा
लजुधसमांन: तिहिकलछांकतोहि: मनहोतलजामोहि: मनरा

मजो उदमार: संग्रामले कुसंबाद: ममसरनिविधसरीर: बैकूंठजेहोवीर।
बलदेवबाचा बलनदकहितबबोल: तुममुषहिकहिनिजतोल: जोसमरच
रसमथ: कछुबकतनहिअकयथ: कहिबोसुमथामानि: पुनिकीयोसा
वसमानि: परिवेषमध्यसमान: कृतधनुषचक्राकार: प्रचुमोषिबानअ
पार: इहासुनटहयगजसीस: महिपरेलुग्तमहीस: चलिसरितआनीस
ग: तहंछग्तरोइतरंग: सोईसुरनटसुनकारि: हीयफटतनिलजनिहारि:
मगधेसकोदलमारि: अवसेबदेयबिकारि: रनजरासंधरसाइ: इहाकुल
सनमुषआइ: दुकुओरराखिदाव: घनघोषवजीयघाउ।। सरनिकरम
रिसंग्राम: रथतोहितहाजदुराम: जोबिरथमगधबीर: मारईदोषिरामसधीर
।।इहा।।जरासंधबलनदजब: बांधनलगेबिचारि: हसिकहिनेनहीसेनतह
नरहरप्रचुनिचारि:।। रूप ज्ञाकुलछिंकायेदीनकरि: मुषयोंकहिघनस्यो
म: हैयासोंकरनीहमहि: रनकीजावलराम:।। कबित्त।। पस्योषिसानोमग
धपति: सेनागरखनसाइ: चल्योतपसाकोतबहि: इहाजागलमिलिआइ:
।।१।। करिकरिनीतिप्रबोधकरि: धरिकरआनेधाम: मिलिसंकलपविकल
पमन: सोनलहलबिश्रामा।२।।कलदेवरनबिजयकरि: अहआयेगोबिंद
करीसुरनिबरषाकुसम: इंदनयोआनंदा।३।छंदद्वैअषरी।।याहीक्रममाग
धफिरिआयो: साजिसाजिचतुरंगसचायो: लैलैदलमुथरापुनिलाग्यो: नय
जुतबारसमदसनाग्यो: अष्टादसमजुधकोउदिम: करतनयोवकुस्यो
अमरयक्रम।।काल जवन प्रसंग।। इहिबिचकालजवनदकआसुर
पूछेनारदसोंअहमिनिपर. ताहेमुनिकृतहोतोसो: मोहचदिकरेदुद
जुधमोसो: बीरबतावकुकोउमहाबल: तुजाषुजातफिरतषोजनयल
मनअभिलाषजुपूजेमेरो: ताहेमुनिगुनमानेतेरो।।नारद।।निगमहेत
बोलेइहांनारद: बातनिबेरबिरोधबिसारद: जदुबसदेवदेवकीजा
यो: बासदेवयहनामबतायो: कहीयतकृष्णबरनतनकारो: पीतब
सननननकचयुधुरारो। ताकोअयजन्रातगोरतन: सबलछनसंगु
तसकरयन: अबहैपुरमुथरासोआये: धुरकृजनसेरथकेधाये: अति
बलसेतसुजुधउधारे: महामल्लमुष्टिकसोमारे: हेमुथरामेनीकेहेरे
तहामनोरथफलिहैतेरे: तुमसोंजुधजोग्यबहजानो: अवरनकोऊ
मनमहआनो।। काल जवन [illegible]।अतिजटसुनोंमहासुषपायो
मुछबजुधअमितदलआयो. मलिमलेछकोटित्रयमुख: प्रतिमा
पाकषदेहप्रचंड: घनरतनयोमथुपुरीघेरा: दिसिदिसिकरेउद
दलफेरा: अतिबलकालजवनजबआयो: पुरबासिनतबअतिदुष

पायो ॥ लोक बाचा ॥ इहि बिचि जरासंध जो ऐहै ॥ पुनि जादव दुख पावै ॥
अडिल्ल ॥ कालजवन आयो अति रिसि क्रम ॥ अब है जरासंध को आगम ॥ इस
बिचार मन बीमि लि कीनो ॥ नियत बसो यह कृष्न बीनो ॥ कबित्त ॥ राम कृष्न मि
लि मंत्र बिचार्यो ॥ निरभय गोर निवास निहार्यो ॥ बिसकरमा को आत बिचार
सिलपी बुष्टा नाम सलषना ॥ अडिल्ल ॥ कृष्न जुता कहँ आप कीनो ॥ निरभय न
गरी रचहु नवीनो ॥ बिहसहु गम सो गोर बिचारहु ॥ सुंदर मंदिर कोट सवारहु ॥
कबित्त ॥ श्री षामंड सतुष्ट आयो ॥ पुनि प्रतास षेत्र तहा पायो ॥ पुरी बिचित्र
रका पावन ॥ सागर मो ऊ सुरची सुहावन ॥ कृत परिबेष सकोट सकारन ॥ जि
हि परिकर मा द्वादस जोजन ॥ महा बिचित्र सुषद सुत मंदिर ॥ कनक रतन म
य संजुत परिकर ॥ दुरगम कोट चारि दिस द्वारा ॥ बज्र कपाट सल बिसतारा ॥
कपि सीर षप्र तिजे त्र तथा नक ॥ उपल अनल मय चलत अचानक ॥ बन उ
पबन अति सुषद बनाए ॥ सलिल जे त्र तहा चलत सुहाये ॥ मंदिर ध्जा प
ताका मंडित ॥ तारे हेम मय कलस अषंडित ॥ जदुकुल जथा देव देवालय ॥ मं
डित अह्य अह प्रतिमा मनिमय ॥ बरन चारि ब्यापार बिहत बर ॥ कारन निपु
न असेष कर मकर ॥ अंतहपुर मंदिर सो भ्राजति ॥ रुचिर जथा परिकर बंछि
त अति ॥ सभा सुधर मानो मसु हाई ॥ प्रभु सुष कारन रंग पगाई ॥ सभा मनु
ज तिहि बेरे सोई ॥ हानि मृत्यु ता कहँ नह होई ॥ पारिजात के छ्यास पावन
नोग जथा बंछित मन भावन ॥ अद्भुत सावकर्ण हय आए ॥ प्रभु तहा तिहि
त बरन पगाए ॥ दिव्य कुबेर अष्ट निधि दीनी ॥ क्रम जुत नगति कृष्न की की
नी ॥ अष्ट निधि नाम ॥ प्रथम पद्म अरु महापद्म पुनि ॥ कूरम ओ कम
छ नील सुनि ॥ संष मुकुंद नाम निधि मानी ॥ पुनि ये अष्ट रिष निप्र मानी ॥ जि
हि दिगपाल पदारथ जोई ॥ आनि समर पे हित जुत सोई ॥ इहा प्रभु देवी
सकति दिषाई ॥ बीचि निमष रचना सुबनाई ॥ इहा देव सुजादव आदि
दे ॥ लेमुथरा के लोग ॥ तिहि छन मह द्वारावती ॥ पग ए जोग प्रयोग ॥ ॥ ति
नरता बल तत्र तहा ॥ स्याम पगए संग ॥ कछु ऐसी इछा कृष्न ॥ अद्भुत स
कति अंतग ॥ ॥ कालजवन जो न्यो कछु ॥ लिष्यो न सो पुर लोक ॥ नेटारि
नरहर प्रभु ॥ कीने सबे असोक ॥ ॥ इति श्री भागवते द्वा सम सकंधे
नाम बार हृ दन र हर दासेन बिर चितो ॥ द्वारकापुरी रचनो
नाम बिचा समो अध्याय ॥ ५०० ॥ कबित्त ॥ इहा ॥ कीनो यह माया कृ
ष्न ॥ काल जवन बध काज ॥ आपर लो पुर घेरि हो ॥ महा मलेछ समाज
॥ ॥ रचना छन अंतर रची ॥ कस्यो दुसह सो दाव ॥ यह ऐसी इछा अ
तुल ॥ पूरन देव प्रभाव ॥ ॥ निसचर केदल सो निकर ॥ पुरते निकसे
प्रात ॥ काल जवन देषे कृष्न ॥ जथा परा मुष जात ॥ ॥ मुनि जु बतायो

होमरम॰ सुंदरस्यामसरूप॰ वेईगुनलछनअसमः प्रगटबसनसनरूप॰
॥२॥ कालजवननिरधारकरि॰ पायेकुलप्रमानः बिरथअससत्रबिले
किकें॰ उपजोहरयअमान॥ अहांअसुररथनेउतरि॰ अरुअससत्रकैग्र
प॰ पाछेहीधायोप्रबल॰ पूरनगरबप्रताप॥४॥ कालजवन॥ आपअसत्र
अससत्रअरि॰ बिरथहिबिरथबिधानः अबतोपोरुषधरमयह॰ हेप्रति
जुधप्रमान॥५॥ अथ कालजवनोपूर्वोतपति प्रसंग॥ कबित्त॥ छंद उथोर
कुकालअसुरकोरः जवनिइनामसजोरः कुजादवनिकेजारः परन्यो
सुकारनपारः यहकरेजरपिउपारः पुनिकछुनसंततिपारः गोसुसरकेतब
ग्रेह॰ सबमिलेरहतसनेह॰ इकदिवसपरिषदआह॰ सोसजनबेबिसुन
ह॰ कछुतर्कसालेकीन॰ हैतजपोरुषहीन॰ अविनयोनजितआप॰ तिहि
असुरउरवदितप॰ जवनिइगोतजिग्रेह॰ सबछांडिराजसनेह॰ रहिसय
नबनआराधि॰ सिवहेततपसासाधि॰ नएकइदेवदयाल॰ पुनिदरसदीयप्र
तिपाल॥ सिवबाच॥ हरकसोतवमनहोइ॰ सुतमांगिलेबरसोइ॥ कालज
वन॥ जवनिइजाचेजानि॰ प्रभुदेहुपुत्रप्रमानि॰ जिहिकरेजादवजाति
रनहोइअजयअराति॥ सिव बाच॥ सिवकसोदयासमान॰ तवहोइपुत्र
प्रमान॥ कबित्त॥ हवसाधिआयोग्रेह॰ सुषराजनजतसनेह॰ जवनि
इसुतरनजीत॰ नयोकालजवनअतीत॰ बरपाइआसुरवीर॰ सोरईक
रैराजसधीर॰ इहांजानिकुलअनंत॰ तहारचेमायातंत॰ जदुबंसउतप
तिजास॰ पुनितजोजातप्रकास॥ अथकालजवनदगधप्रसंग॥ छंद
दईनिसचरहाक॰ कहिबचनदुसहाक॰ पुरषतछांडिप्रमान॰ नहीबि
चैनीचनिदान॰ इहाअचलएकउतंग॰ सोईगगनपरसतअंग॰ तहादरीदु
गमदुरंत॰ मिलिअंधकारअनंत॥ अथ मुचकंदसयन॥ मुचकंदत
हमहीस॰ अतिअलसबिवसअंधीस॰ यहगुफासोयेआनि॰ एकांतथलज
नमानि॰ कलपांतबीतेकाल॰ मुनिजयेदेहसचाल॰ नयकालपातातंत
इहांआइकुलअनंत॰ पुनिकरेबिवरप्रवेस॰ तहासुसपारनरेस॰ रहिपीत
बसनउदार॰ जयेकुलअंतरतार॰ पदचिन्हदेषिसपापु॰ इहाधस्योनि
सवरआप॰ पटपीतबसनप्रमानि॰ इहाहसोतातअजानि॰ अनअवधि
जाग्योआप॰ मुचकंदरोषअमाप॰ दृगकोधअगनिदुरंत॰ तिहिजस्योअ
सुरअसंत॰ तनजवनमानकुतंत॰ सोजयोजसमसमूल॥ अथमुचकं
दसयनकारनउतपतिप्रसंग॥ छंदपधरी॥ बिप्रातजनमइक्ष्वाकवं
स॰ जुबनासपितामहजगप्रसंस॰ पितमयोमानधातपुनीत॰ मुचक
कनजोजिहिनपअतीत॰ सुतजयोनामसुचकंधतास॰ बिधिजुक

बेदबाचाबिसास: नवनूतहेतमुचकंदरूप: जगजेतपेधरधरमजप
सुरअसुरआदिबिग्रहसमाज: कीयदेवासुररनबिजयकाज: रहांइंद्र
इनुवलेकआप: मुचकंधमिलेमनहितअमाप सुरराजनृपहिजोचेसा
इ: अवनीसमिलोहममंफआर: सुरसमरजुरेमुचकंधसंग: जुवनयोप
राजयअसुरनंग: संग्रामबिजयपायोसुरेस: रहावजेगगनदुंदुभिअसे
सा॥सुक्रराज उ॥ सुरराज कलोतुमकीयसहार: अवनीसआपसुरलो
कआर: वीनेजुकालसमहरसधीर: वसरोसनजानेतुमफुबीर: जनमी
पपुत्रअरुबंधुजोर: नयेकालकलितनहीरलोकोर: नवअमरहेतए
तोअकाज: अवनीसउचितबरलेफुआज: सुधछांफिराजसंपतिसमा
ज: रहाजुहमारीकरीराज ॥कबित्त॥ सुनिसुपेबिरतिउपजीनरेस
रहानयोसोकआकुलबिसेस: बेराग्यनयोअतिबिरहबीर: सोका
धिकारसुधिगईसरीर॥मुचकंदउ॥चिरकालजग्योकुबिकलचित
हैनिरबाधतनसहेत अबहेतसेनरछाअपार: बरमांगफुयहपेवि
तबिचार: कफुआनिजगवेमोहिकोर: हतदेवदिष्टममनसमहार
कबित्त॥ रहानयोनसमअबअसुरयेह: दीयदरसदीनबंधूसदेह: जो
आदिरूपअपनोअनंत: सोईनृपहिदिषायोजोनिसंत॥मुचकंदउ॥
रहांपूछिराजअपनेंसुजार: तुमकोंनरहांकिंहितआर: ससिम
रअगनिकेधूसंताप: असुआहिकोउदिगदेवआप: बिधिबिष्णुरु
केधोबिचार: रहिबिवरनसायेअंधकार: अतितेजप्रकासितअंग
अंग: प्रभुक होदयाकरिनिजप्रसंग॥ पूर्ब पक्ष॥पूछफुकदापिमोक
हकृपाल: तुकोंनरहानयोकितककाल॥मुचकंदउ॥ रहवाकवा
नयोजनमआनि: ममपिंडमानधातप्रमानि: मुचकंदनामसुहिज
गतमानि: जुधजुस्योउचितमुरकाजजानि: केउकलपउजगरअल
सआर: पुनिरलोसोरइयहबिवरपार: आयोहोकालसजोगकोर
हानयोनसममदिष्टसोर: कोउदुष्टरहाआयोअकाज: तिहिमो
हिजगायोमहाराज: ममदिष्टअनलसोईबलसमूल: त्रिनहोतस्व
समज्योपस्योतूल: तुमदीनबंधुमोहिदरसदीन: करिकृपाकृतार
थजनमकीन: रहाजनमकरमगुनगोत्रआप: प्रभुकहोजथापूर
नप्रताप॥श्रीकृष्णउवाच॥ रहाकृष्णकसोतबबचनयेह: सुनिराजक
हतकृनिसंदेह: ममजनमकरमप्रतिमाअनंत: ऐकफुजपेकछुहो
रअंत: कनरेनबुद्धअनगनेकोर: हितजनमकरमसंध्यानहोर॥

त्रयकालजनमअरुकरमकोरः सुरसिधरुधजानैंनसोरः निहचैकछुकहि
कैंहतमानः पृथीप्रसिधबेदकुपुरानः भुवनईदुखितजबअसहारः की
यधेनरूपबिधिसोपुकारः तवजाचैंमाकीयकमलजातः बरबिप्रअनेदीनो
बिप्रातः इहिहेतलयेअवतारआनि जदुबंसजनमनरदेहजानिः देवकी
कुषउपजेअजेवः बिप्रातनामकंबासदेवः पूतनाआदिकंसहिसजेत
सबहतेदुष्टजेतेअसंत यहकालजवनसंजुतबिकारः तवदिष्टजस्यो
अतिदुराचारः करिदयातेहिमेदरसदीन पुनिइंछासोईमोगकुप्रबीन
मुच कंधउ॥ छंदहेषरी॥इहापरमपुरुषप्रभुजानोइहिः तहानगति
दुरलभजाचीतिहिः तहानगतिदुरलभजाचीतिहिः तबअसतुतिमुचक
धउंचारीयः भयोहरषअतिजोतिनिहारीयः यहभवतवमायाकरिमो
हितः हेकुटंबसोकरतमहाहितः जोसंपतिअपनीकरिजानतः पुनि ति
हिप्रानसमानप्रमानतः पुरुषत्रीयात्रीयपुरुषहिधरतैं पतिकोछांडि
बदावतिपूतैं मनहितबसेअहतिहिमांही नारायनकोंचीन्हतनांही
जनममनुषदुरलभलहिजावरः प्रभुतेबिमुषउपासतहैपर कामादि
कनुषसंकरकूकरः तेउरहतनिरतरततपरः भजेनमानुषजनमस
नावनः पैसोईसमझोनाहिअपावनः संपतिराजभजेमेयरसुषः मू
दरलोभबचरनपरामुषः जनमगयोनिःफलअबजांनो मेअपनो
तनमृतकप्रमांनो संपतिअहबंधबाधासब हैसोईजीयतकरतअ
तनमृतकप्रमांनो संपतिअहबंधबाधासब हैसोईजीयतकरतअ
पनोंहग कृमिबिष्टसमदेहकेकारनः संभातीनअंतजोसजनः पिंडदस
यैबेदप्रमानैं जीयतमरतअपोननजानैं सगहैपस्योमोहअहंकर
मायाबसनाचतजोमरकट नाम्पउदैमेरेसंभावनः प्रभुतवकृपाम
ईजबपावनः प्रांनीतगतिलहैमनबचपनः बिषमतबेछूटतभवबंध
नः राजदुषकोहेतनिरंजनः बकुस्योकोनपरेतिहिबंधनः बंधनराजभ
जेवकुतेरे मोहनदरसनाप्रभयेमेरे कृपासिंधममरक्षाकीजे देवचर
नसेवादिदीजैं प्रभुतवबोलेकृपापरायनः सगुनसरूपनिगुननार
यन॥अकृतबाचा॥ पैहोनगतिनृपतितुमपूरनः मेरोध्यानकरऊय
चामन॥ दूहा॥अषेटकहोअषिलःपसुबधकरेनपालः अघनास
नताकोअबैकरकुन्नमनबकुकाल॥दिवालेतीरथदुगमःपुनषेत्रजो
पाः पूजामंजनदांनपनः कैहोसुधसुनाइ॥क्रमजुतजोगअस्प
सकरिःतजिहोदेहपुनीतः हममहमिलिहोआनितव बिस्वबिष्मात
बिनीत॥३॥कालजवनकोदाहक्रम कस्योदिष्टमुचकंद पुनिमुधरा
नरहरप्रभु आयेजुतआनंद॥४॥इतिश्रीभागवते ... दस

मलकथानुसरलेना बाबा रहटन रहरदासेनबिरचितो। इतिमुचकंदविष
कालजवनबध। इहाखंडनमोअध्याइ॥५१॥ कबित्त। कृष्णहिबं
दनपरिक्रमन: करिमुचकंदअनेक। तबनिकसेताबिवरते: इहाकलपब
सिएक॥१॥ रतबिपरजयदेषिनव: नरपसुदुमतेनाहि: प्रतिमालयुथिर
चरप्रगट: बहुबिसमयजीयमांहि॥२॥ कलिजुगआयोजानिके: धरिमन
मोहनध्यान: चितहितउतरदिसचले: लषिबिपरीतिबिधान॥३॥ आइब
दिकाश्रमइहां: नरनारायनथान: करतनयेतपध्यानक्रम: परबतसुष
दप्रमान॥४॥ तहांगंधमादनजुगिर: अदभुतअगमउतंग: तपसाहि
तबेगोतबे: आसारहितअतंग॥५॥ छंद द्वेअषरी॥ इहाकृष्णबलमुथ
राआये: पुरअवरोधदेषिदुषपाये: कालजवनदलघेराकीने: पुरतेनि
कसेकृष्णप्रबीने: इहाबलदेवकृष्णरनआये: नषिलजवनदलमारिन
साए: निकरनारबाहकसबलीने: कसिसमसोजसुआगेकीने: इहिबि
धिजरासंधषलआयो: सजिषोहनितेईससवायो: सत्रहिबारजुनाग
समर: अष्टादसमसुआयोआतुर: इहाकृष्णतबमंत्रउपायो: षलकहं
मानुषनावहिषायो: आगेहोइनागेअषिलेसुर: पूछिलग्योयहलांछिपुर
धरतिरामकृष्णधरधावत: अरुषलपूछिलग्योहीआवत: परबतएक
जुनामप्रबरषन: जथाउरधएकादसजोजन: गोकलेसआयेतिहगिरव
र: आपुनचढेसिषरतिहिऊपर: आतुरजरासंधतहाआयो: परबतये
स्योसेनपगयो: जबहरियापरबतमेजोयो: पुनिषलदारुनमंत्रप्रमा
न्यो: गिरवरतिहिदवदाहलगायो: प्रनुतिहिसमयदावसोपायो: गि
रुतंगतेऊपेगिरधर: उतरेइरिसेनतेअंतर: जरासंधसोमरमनजानो
मोहनषेलकस्योमनमांन्यो: इहाकृष्णद्वारावतिआये: नयेहरषस
बहिनमननाये: जरासंधनिसचयकरिजानें: पिसनजरेदवदाहप्र
मानें॥ इहाबिजयनीसानबजाये: ॥ अथ श्रीबलदेवबिबाहबर
नं॥ इहा॥ राजारेवतदेसको: रेवतताकोनाम: ताकीकन्यारेवतीज
ईसिजग्याताम॥१॥ रेवतबाच॥ पूछोब्रहमासोंप्रगट: नृपरेवतसग्या
न: काहिदेउमसकनिका: प्रनुआग्यासप्रमान॥२॥ बिधिबाच॥ सुनिबो
ल्योबिधिनृपतिसों: सबनवनृतसमाज: तुमदेषेतिनमहतरा: रसो
नकोउराज॥३॥ कबित्त॥ ब्रहमाकेपरिषदबिहत: बेगेरेवतराइ: क
रुकारनतेतबे: कछुबिधिघटीबिहाइ॥४॥ बिधिबाच॥ रामकृष्णहैंन
रको: हैऊसुतबसरेव: कारनअंसअनंतको: येअवतारअजेव॥५॥ ति
नमहजेगेहैंतहां: रूपअतुलबलराम: ताकहंकन्यादेहुतु: करहु
सिधयहकाम॥६॥ कबित्त॥ तबवहकन्यारेवती: गुनलछनसं

कस्यो आकुबलन्नरकेः पूरनवेदप्रयोग॥७॥ अथ श्रीकृ
ष्ण रुकमनी बिवाह॥ जुवबिदरभदहनदिसा पुरकुंदनसपु
करतराजनृपनीषमकः विद्याविनयबिनीत॥८॥ पुत्रपंचइक
रुः सुतलछनगुनलाजः कुलसुधरमक्रीडाकरत संगसमान
॥९॥ छंदपधरी॥ कहिप्रथमबडोरुकमीकुमारः पुनिरुकमब
ताअपारः तीसरोरुकममालीसमर्थः पुनिरुकमकेसचौथोप्रसि
धः पंचमोरुकमरथअतिअनूपः रुकमनीपुत्रिकाश्रीयारूपः सुनल
छनगुनमहिमासमान नितप्रीतिनिगमबाचानिदानः गुनरूपसीलबु
धिबलसुभाव प्रतिमोप्रसिधदेवतप्रभाव सुनिबासदेवमहिमाअमा
न पेनियतबयोनीजोपुरानः रुकमनीउपजिओतनुराग नईदरसक
जइछासभाग सिवसिवाहेतनिहिकरेसेव दीजैबरमोकहरुलदेव पु
त्रीवरप्राप्तभईपेषि बदिपिताचितचिंताबिसेष नीषमकराजरुक
मीकुमार कुलवृधसाबनिकीनोबिचार॥ राजोवाच॥ नृपकलोकु
लकहंकरिनिदान दीजैयहकंन्यारतनदान बसदेवपुत्रजदुबंसबी
र सबअंगसुधसुंदरसरीर॥ रुकमनी॥ करितर्कबोलिरुकमीकुमार
बयवृधहोतकछुबुधिबिकार करितबेकुलनंदकुमार बुधिनृपबाध
कीयसोबिचार पुनिकलोकबरसोजगप्रसंस बिष्यातबीरअरुचेदिबं
स तहारुकमिसबनिसोकलोटेरि हमबहनदईसिसुपालहेरि क
रु अदिनलगिकबरकीनीउपाधि सिसपालहिपठयोलगतसाधि यह
सुनतनयोअवरनिउछाह दुष्टबडोरुकमनीचितदाह हाकुलकुलय
हबानिहोइ कछुनहीजानअबलबकोइ आपनीदसादुषतिष्योआप
सुराकृतकगदहितअमाप यासमयसाधइकबिप्रआइ पुनिताके
रुकमनिबेदिपाइ रुकमनीउ॥ द्विजजाकुबेगहारिकादेस स्यामहि
यहकहिबोहैसंदेस अरुदेकुपत्रिकाकरअनंत तोमांकुसबेममरु
दयतंत॥ कबि॥ कातबसोयोकुंदनपुरद्विजात पुनिजाग्योद्वारावती
प्रात द्विजआयोसोपेराजद्वार प्रभुअग्रकरेलेप्रतिहार इहाबास
देवएकांतआइ लीनोसबिप्रनीतरबुलाइ पुनिदयोपत्रतिहिकुल
पानि मुसकाइलयोमनहरषमानि॥ कुलजापुनिपूछिआपहितचि
तप्रमान द्विजकहोजथाआगमनिदान॥ बिप्रबाच॥ बिप्रबेसबोलि
देपकुबिचार याबीडीमेंसबसमाचार॥ कबित्त॥ तहाकगदहु
हरिकीन प्रभुप्रेमअकदेषेप्रबीन नवउपजितहासातिक
आनंदअस्वरोमांचअंग बाचेनपरेगदगदसुबानि

हिबिप्रपोलि॥ द्विजबचनरुकमनिबचनदीन॥ पत्रिकामोऊजोलिषिप्रव
ना॥ दो॥ श्रवननियुनलछनसुनें॥ सोईउरबसोसरूप॥ ततेमैंतनप्रानत
व॥ अरपनकरेअनूपा॥१॥ जोकहिहोकुलकनिका॥ उचितनयहआचारप
तिहिबरेजोआपनें॥ पूछेबिनुपरिवार॥२॥ रुक्म मंत्री के सबयजुगकनि
का॥ ऐसीकोनअजान॥ परमपुरुषकोपरहरें॥ अरुबरिहैनरआन॥
छंद पधरी॥ मैंबरेनाथमनकरिनिदान॥ मनहीकोकीनोंकृतप्रमान॥ मो
हिबीरनागोजानोबिस्वेस॥ नहिचेहिजोगत्रिभवननरेस॥ बलिसिंघज
पाजंबुकबिसाल॥ पावेनअंतकूरेकपाल॥ मैजनमजनमआगेसनेम
प्रभुकरेजग्यपूरनदानप्रेम॥ मोहिबीरनागगुरजनअराध॥ उयरेजलास
यसंगसाध॥ इत्यादिकरेसुनकरमओर॥ ठिककालपात्रअरुपुनिगेर
हीजेपूलताकोयहदेव॥ सरबथाकरोप्रभुचरनसेव॥ मनबाताकक
मीमदाअंध॥ समिपालसरसिमोहिकीयसंबंध॥ सोऊपुनिग्रेहसेन
साजि॥ निरितुमसोंजेहैंसमरनाजि॥ अबिकेदेवदेवलउतंग॥ पुरबाह
रिहैपूजाप्रसंग॥ उछाहदिवसतहाप्रथमआइ॥ सुनपूजाकरिकुसुल
इ॥ हरिमोहिकरोरादसबिबाह॥ दुष्टनिकेपरिहैंहृदयदाह॥ कहिहि
कहापिप्रभुनीतिकोइ॥ हमपेअनरथएतोनहोइ॥ सिसपालरूपगुन
ग्यातिसुध॥ पुनिचेदिबसपुहवीप्रसिध॥ थितचंदेरीतिहिरजथान
पुनिकवनदोषताम्हप्रमानि॥ प्रभुचरनरतबछिप्तप्रसिध॥ बिधि
रुद्रबिबिधिसनकादिसिध॥ अबयहदानदीजेअनेग॥ सबकालर
हुप्रभुचरनसंग॥ दो॥ यहजोपेनहहोइअब॥ सुनियेस्यामसुजा
न॥ कारनजिहितिहकष्टकरि॥ प्रभुत्यागोममप्रान॥१॥ कहोबा
चिद्विजपत्रिका॥ समाचारसमाइ॥ ऐसीगतिदेषीउहा॥ रुकमनि
जादोराइ॥२॥ इहजुकछुकारनउचित॥ करियेबेगकृपालदेव
लगनकेलीनहिन॥ पुनिआगमसिसुपाल॥३॥ इतिश्रीभागव
तेदसमसकंधेभाषाबारहटनरहर दासेनबिरचितेरुक्म
॥नीयनोलाम॥५२॥ कबिकबित्त॥ दो॥ स्यामप्रीयासंदेससुनिय
त्रीअकसप्रेम॥ उपजिउछाहबिबाहउर॥ नरहरप्रभुकृतनेम
॥१॥ द्विजवंहिरुक्मरीयेदुष्ट॥ मनकीयदोषमलीन॥ ब्याहुहम
रेकोबिघन॥ क्रमअछेपसुकीन॥२॥ महिपालनिकोमानमिलि॥ क
न्यालेउसकाज॥ जेसेंमंगलदाकमधि॥ सेनासुतरसमाज॥३॥ जोमोत
गवनजीकजब॥ सुंदरस्यामसुजान॥ हितकरदारकसोंकहो॥ प्रीयर
थसजकुप्रमान॥४॥ कबिकबीच॥ मेयपुहपसुयीवमिलि॥ सेनब

लाह्कसंग॰ कमचासौहयजुकतकरि॰ आंसोरथ्रनतंग॰॥ छंदपध
री॥ गहिताहिद्विजकोकरगुपाल॰ दिव्यरथआनिबेगेदयाल॰ आनरत
देसतेंचलिउदार आयेबिप्रतमहिमांअपार॰ जोसोरजनीसुघर यजयं
त॰ इहांप्रातसमयआयेअनंत॰ उपवनकहंउतरेआनिआपे॰ प्रभुदेव
सकतिपूरनप्रतापे॰ बसपुत्रनृपतिकीयमबिसेष॰ उछाहमाझकी
नोअसेष॰ करिदेराकोकनबिधिजुकीन॰ बिबिलरचंसपूजाप्रबीन
निसेयनगरसोभानिदीन॰ बाजेअनेकबाजित्रबिधांन॰ सुरपूजाबिप्र
निदानसाधि आपनेदेवदेबीआराधि॥ रहा॥ नगरचंदेरीकोनृपति
सोदमघोषनरेस॰ ताकोहैसिसपालसुत॰ दलबलपूरनदेसा॥ जरासं
धपेदुकजथा॰ बीरसत्वबिष्यात॰ देतचक्रतनपआदिदे॰ आयेबिद
तबरात॥२॥ कलोबधउवाआंनिकरि॰ प्रभुआगमसिसुपाल॰ आगे
कैलीनेंउमगि॰ कवरकुकमततकालो॥ जनवासोदीनोजथा॰ मनबं
छितमनुहारि॰ होनलगेमंगलहरष॰ सबेसंनारिसनारि॥४॥ संकरयं
नजबहीसुन्यो॰ कुलगवननिसिकीन॰ सेनाचतुरंगीसजे॰ पुहचेप्रातप्र
बीन॥५॥ छंदद्वैअ घरी॥ करतबिलपनमनमहकंन्यां॰ धीरनरहत
कहतयोधंन्यां॥ रुकमणीबाच॥ आयेबिप्रनमोहनआये॰ इहांकछु
कारनदेवउपाये॰ कबकुकरनऐतोकीनो॰ दीनहिदरसततछनदीनो
दीनजहांजहांदेषिदुखारि॰ पूरनपुरुषतहांपाउधारि॰ तेनमूरिधरिध्यां
ननिरंतर॰ लाजदुनाथस्यामघनसुंदर॰ वामनेत्रनुजफुरकेबामां॰ सो
ईबिसवासनयोउरमांमां॰ याहीसमयबिप्रसोआयो॰ पहलेजोरुक
मणीपगयो॰ कंन्याद्विजकहंबंदनकीनो॰ लछनदेषिमांनसुनलीनो
पुनितिहिबिप्रबधारीपाई॰ संपतिजोकछुचितसुहाई॰ कोऊवाकेबं
सकहावे॰ अजकुताहिदरिकुनआवे॰ रामकृष्णआयेसुनिराजा॰
करेबिघ्नराहितकाजा॰ दीनबंधुजिहिपुरजनदेषे॰ बरकंन्यासं
मजोगबिसेषे॰ सुपेपरसपरकहतसुनाए॰ येनृपअवरहृथाहे
आये॥ रुकमणीजीअंबिकापूजनप्रसंगा॥ पाइनचलीअंबिका
पूजन॰ नथासबीसंगलीनेपुरजन॰ सहजश्रंगारगंधतनसोभा॰
लीलादेवीपतिहितलीना॰ संगसेनांचतुरंगनिसाजे॰ बीरचलेब
हुबाजत्रबाजे॰ कस्योप्रवेसदेविदेवालय॰ सेवाफलबंछितउर
अतिसय॰ करिपूजाजाचंन्यांकीनी॰ नांमनिहाथजोरिरसलीनी
रुकमणीबाच॥ किंकरिजांनिकृपायहकीजे॰ देवीमोहिकृष्ण
बरदीजो॥ कबिरु॥ लयेप्रसादतिलकफललीनें॰ कंन्यापरम
महोछवकीनें॰ इहदेवालयबाहरिआई॰

हकजोआने प्रतिमामनकुपषानप्रमाने नावीजोगमोहप्राप्तनर सबै
रमायाकैसंकर याहीसमयकृष्णतहाआये साधसजनमनअधकम
हाये प्रीयकीप्रतिमादेषिप्रवीनी कैप्रांतनछविअरपनकीनी महा
हरषकरकरषिमुरारी हकमनिलैरथपरबैगारी मलेसबनिकेमद
मनमोहन प्रभुलैचलेकनिकापावन अपनीबलिधरिलेतअचानक
ज्योंमृगराजबिडारतजंबुक रहासिसपालकृकसुनिआरत महागरब
करिबोल्योंमरमतारहा॥ देषकुबालअहीरदे सूरमहामतिमंद करि
चोरीनपकनिका दुष्टपरजमफंद॥१॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे द
समस्कंधानुसारणेभाषाभारहटनरहरदासेनाबिरचितेकृष्ण
मनीहरनोनाम॥ त्रेपनमोअध्याय५३॥ कबित्त॥ रहा॥ औचक
रीपुकारयह यरयरपरेकयार आरसोकछुनोकछु ग्योदरयहग
ट॥१॥ कबित्त॥ सेनउनयकैसावधान सनोहजुसजीय बीरचित्र
बिकसीय गहरसुरत्रंबकगजीय हयहेषारवगजनिगाज नरमार
मारमुष परिकायरउरकंप सुरसुरलोकगमनसुष षैचदीषेहषु
रहतअषिल अर्कजोतितिहिअंतरीय॥ सिसपालसेनचतुरंगसजि
सुरसमरमुषसंचरीय॥१॥ सबलसेनसंक्रमीय धराधुरयातध
मंकीय कोलकमठकसमसीय चरचरचितचमकीय सेनसुरसम
हीय बीरहुंकारवजीय हयगयनरहलमलीय प्रीथपलचार
गरजीय रनतयेधनुषटंकारवन संषनादसजीयसघन माधवअ
नगसिसपालमिलि भूमिभारटरिहैनवन॥१॥ मारमारउचार म
हासंग्रामसुमचीय कृतकुंडलकोदंड षेषलगेगुनषंचीय सरत
रेनवसेन तासआयासहअंतर हयसमिलिषुरषेह नयोतमम
नयकर प्रतपनत्रासकृकमनिउराहि रोमउनतहाकंपतन त्री
यलषीकृष्णकातरतबिहि मोहनसंत्रमछारमन॥२॥ रहाबेत
अषिलेस नयननद्रेसंजावन अंधकाररजउडुन नियतयेसम
हरलछन कहुदुष्टतवकाज मानमर्दनरनमारो अबलसेनामि
सुपाल बीरसमसषाबिकारो संकरषेनमिलिसाधवसकल कवि
नबीनबरषाकरीय कुंडलकिरीटसंजुतमुकुट पिसनरथीसिर
उवपरीय॥४॥ सजिसारंगसारंगपानि समबैरसंनारीय समरव
नसधीन कविनमुकेनयकारीय उनिहयगयनरपरीय लोथि
परलोथिजुलगीय हयगयनरहलमलीय प्रीथपलचारगरजीय
पलचारप्रेतपायेत्रिप्त नारकोतुकरबयो सुरकाजसिधनरहर

सुकबि· जुवनतीनजसजयनयै॥१॥छंद द्वैअषरी॥जरासंधदेआरिजुआरे
सबेनृपतिससिपालसहाये· भाजेषेतछांडिजेजुवपति: उरहिनसाससमात
त्रासअति: भजतसेनससिपालकुनाग्पै· लसोचदेरीमारगलाग्पै॥१॥
समहरनाजेराजसब: आनिनयेएकत्र: बिषमजथापरिबातबस: तरवर
बिछुरेपत्र॥१॥देखोजबअतिहीदुचिता॥पोरुषहतसिसुपाल भागधताहि
सबोधमिलि: करतनयेतिहिकाल॥२॥मा ग धबाच॥चेदिनरहांचिंताउ
चेत· पुनितुमसमरप्रबीन· जथाप्रानकुजयअजय· निहचेदईआधीन·
॥३॥कारमरीजोपत्रिका: नरबसनचितनिरांन: समझोयोप्रांनीसबे: प्रभु
बसआहिप्रमांन॥४॥ सत्रहिबारसकेलिमैं· अहोहनितेईस: लेलेजाद
सोलस्यौ· अजयदयोतउईस॥५॥ आयोबारअगरईं· सोपेदलबलसा
जि· तबजादवमोसोंतहां· नयकरिनिकसेनाजि॥६॥अबतोकालबिसेसयह
हतेनृपतिमिलिआइ: लयुसेनासोंषेतलरि: प्रगटपराजयपाइ॥७॥कारनक
तप्रबोधकरि: समझायोसिसुपाल· अपनेअपनेग्रहरहो: पुनिसबगएनृप
ना॥८॥छंद दुउधोर॥ ससिपालपराजया॥करिकोपकुकमकुमार· बपुबीरर
बिसतार: सनाहकसिनूनीर· पुनिसकलआयुधपूर: अरनगरसुनिय
धाह: बरिकवरिराहसब्यह: पुनिप्रगटसुभटप्रबीन: कहिमुषप्रनंपाकीन
कुमबाचा॥सबमारिदुषनअसेस· पुनिकरुंत्रेहप्रवेस: इहाफेरिकंनाआनि
पुनिचेदिबाहिप्रमांनि· अतिक्रोधरथआरोह: संगसेनचढितनसोह: पलक
नकोंहतिषेत: समजानिसेनसमेति॥कबिरु॥ रथहांकिरुकमकुमार· अब
निकटआनिउदार· इहाहुषकहिदुरबाह: बपुजरतरोषबिसाद: इहाकुलसन
बुषआनि: पुनिसजोचापप्रमांनि· अबमांकिपगआनीर· किहिबेसउपजो
बीर· जेसंगनिसिबनजांहि· हैंगोपिकावेनाहि· सरनिकरबिधसरीर: नहिथि
निलुग्तअहीर: तैकवरितोलोंछांकि· ममसमुषकेपगमांकि· करिकपरजुध
कराल· कुकुबिजयपाइअकाल· अबतिहीधोषेआज: करिसमरमरिनआ
जा॥कबिरु॥करिकोपकुकमकुमार· सरतीनमुकीयसार: तहाकुलहति
थतास: कीयबिसषमारिबिनास: चवबानबेधीयवाजि· सोरीसतजु
सरसाजि: दिद्यजपताकोदंड: षलकरेत्रयसरषंड: वहिचापसजीयआ
ड: पुनिकुलछेदिप्रमांन: जोईदुसहसजिकोदंड· बिजिकुलकरतसुष
ड: पुनिपरियपट्टिसपांनि· असिसलजोपेआंनि· अरुसकतितोमुरआनि
पुनिकिनचरमप्रमांनि· अत्यादिआयुधऔर: सजिहतेकुलसबोर· इ
हांउतरियतेआप: धरिषगकीनाथाप: इहाकुलमपरजलिंग: परिजथा
दीपपतंग: पुनिषगचरमप्रबीन: कमकुलतिलतिलकीन: सिरकुकमछे
हतस्यांम: नयउपजिबोलीनांम: जोगेसतुमजगदीस: अप्रमेयअमर
अधीस॥कुकमणीउ॥यहत्रातमेरोआज·

चितयरुकमनिग्रोर: कछुहसेकवरकिसोर॥कबिकु॥इहोरुकमपाघउ
रि:दीयमोरबंधसुरारि॥दहा॥उरकंपतसुकतअधर:नहिआवतमुष
न:तयोबिलोकतभ्रातकों:चितरुकमनीअचैन॥छंदपधरी॥मुषम
छअरयअरुअरअमुंक:तिहिकसोमूंकिबिपरीतसुक:सबगयेसंगतजि
पुतटसाथ:इहबांधोरुकमीकरिअनाथ:इहिसमयइहोबलदेक
इ:सोछेहिबंधदीनोछुरा॥बलदेवबाचासंकरषनकीनोसमाध
न:दुषसुषकरमफललेहेनिदान:करियेनरुकमअबसोचकोइ:हो
सोइछांदियहेरा॥बलदेवबाचारुकमीप्रति॥पुनिकहोरुकमन
सोप्रमान:यहवत्रधरमदुरगमनिदान:संग्रामचढेमुहसमरसिध:
निहतेभ्रातभ्रातहिप्रसिध:त्रायकमितेजअहंकारहित:बलजानिहतेर
अमषेत:यहषत्रधरमदारुननिदान:पुनिहमहिदोषनाहिनप्रमान
मनमोहकरेमानुषमलीन:यहपेअनंतमायाअधीन:भ्रातकेहेतपति
सोकुलाव:सोत्रीयाधरमनाहिनसुभाव:उतपनसोकतवचितआनि
कैहेंबिग्यानकरिसहानि:प्रीयबचनसुनेजदपिप्रबोध:तउकुवरुक
मनहीछुरतक्रोध॥रुकमा॥बसरोषकवरबोल्योबिचारि:हुविगहे
प्रतेग्यातईहारि:अरुहेहसयहतरीआज:उरदहतइतेउपजेअका
ज॥कबिकु॥रनजीतिकृष्णजुबसरज:सबकुसलसंगसेनासमाज
रनषेतमोरुकमीकुमार:इहानगरबसायोअतिउदार:जोजकटव
योतिहिनगरनाम:धनबिरयिजथासुषधामधाम:सुनबसोतह
रुकमीनरेस:पुनिकरेनकुंदनपुरिप्रवेस॥दहा॥हुविकीनोरुकम
निहरन:जीतिसबेराजेस:कृष्णपधारेद्वारिकों:सोसुनसगुनतरेस
॥हनिअरिहरिजीतीजुरन:पांनियहनसपुनीत:मिलिसुषतीनोलो
कमहु:गावतउछवगीत॥२॥इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदस
मसकंधानुसारणीभाषाबारहटनरहरदासेनबिरचितोरु
कमलीपाणिग्रहनोजांम॥चोपनमोअध्याइ॥५४॥कबिकु॥क
बिता॥अबिलईसकोअंस:मदनयहनांममहाबल:नीयतपहा
कोउनाहि:दुगमचतुरंगनाहिदल:बिषमपुहपधनुबांन:महासुर
बीमिलिमधुकर:कृततथापित्रयलोक:बिजयचितबिकलचरा
चर:करिकिपटआइतपनंगकहं:सत्रुनावसाधोसमो:सोकांमरे
वनरहरसुकबि:नवदिगमंगलनसमतो॥१॥कबि॥दहा॥कामज
ोहरकोधकरि:अंगीनयोअनंग:कलपंतरबीतेकरुक:नयेएक
नसुअंग॥१॥कृष्णदेवइछाकरी:मायाईसरप्रमांनि:कारनजो

तिमनोजकी उरमहप्रगटीआनि॥१॥ नावीबसरुकमनिगरन्न: ३१औ
अंसअनग: प्रद्युमनिनामसुपरमप्रीय: अतिसुंदरअंगअंग॥२॥ कृतउ
छवबसदेवकुल: अहअहमंगलगान: जातकरमकीनोजथा: दीने
बिप्रनिदान॥३॥ आदिबिरोधजुसुरअसुर: संबरदैतसंहारि: हस्योव
लरसहिवसमरु: दयोउदयिसोकारि॥छंदपधरी॥ वहबालगिल्यो
कछुमछआनि: परिमछसुपेजालहिप्रमानि: कालंतरआगेजस्योक
म: बनितारतिनामातासबोम: पुनिआगेतिहिकेउजनमपार: इहि
जनमत्रीयाइकनईआइ: निहचैसोरमियावतीनाम: कृतनिपुन
सुनोजनकारिकोम: संबरकैसोपेसूपकारि: सबनोतिकरैनोज
नसंवारि: वहमीनसमरण्योकीरआनि: पुनिसंमरदीनोदासपोनि: मि
लितहाबिदास्योउदरमछ: परदमनितहानिकस्योप्रतछ: जबमाया
वंतीपुत्रजानि: वहिदयाजुकतदीयबालआनि: यहकरेबातरहाअ
नेक: वहआयोनारदसमयऐक: मुनिकीनोमायावतीमंत्र: तहासबे
बतायेसूदतंत्र॥ नारद॥ महबालकहेकोमावतार: रुकमनीगरन्नउ
पजोउदार: प्रदमनिनामयहकृष्णपूत: अरुअंगअंगसोनाअन्नूत: दैव
तप्रभावइहांसुनिनिदान: पुनिजयोदेहपूरनप्रमान॥ मायावतीउ॥ नाम
नीचितजरतारभाव: यहसाधसमकिधरमहिसुनाव: इकदिवसग्रह
बेगअपात: बिधिजुकतकरतइहासाधबात: करिहावभावदिगनेद
कीन: निरधारउपजिमायानवीन:॥ प्रद्युमनि॥ मायावतीउ॥ प्रद्युमनिकलोक
रिबुधिप्रचार: कछुआजबिलोकनिमहबिकार: इहांनोहिनसमझो
परतआज: कछुकहियेकारनजथाकाज॥ मायावतीउ॥ मायावतीउतर
दयोमूल: करतारभयेमोहिसानकूल: लैआदिजनमतेजथाजोग: पुनि
कहेसबैपूरबप्रयोग: तुमकृष्णपुत्ररुकमनिकुमार: अवतारसुमन
मथकोउदार: प्रद्युमनकुमोकरुरतिप्रमान: रिषमोहिकलोनारद
निदान: यहसंबरतेरोसत्रुआहि: तननंगकरकुअबबेगताहि: जन
मातरयारीदेहजानि: अबनोसंजोगबिधिलिषतआनि: उरजननित
बैपरजरतिऊक: कुररीबिहंगजोकरतिकूक॥ कूबिरु॥ पुनिसमयोम
यावतीपाइ: परदमनिकहबिद्यापढाइ: करिमरेजदपिउपचारकोइ
जिहिहेतजूतमायानहोइ: परदमनिइहाअवकासपाइ: संबरसोजा
चोजुधजाइ: निसचारवरनहतमनकुनाग: सोउग्रोगरजिआयास
लाग: करिकोपअसुरआयोकरूर: सिरप्रद्युमनिबाहीगदासूर: नि
सचारगदाबाजीनिघात: सोनयोप्रद्युमनिबज्रपात: बरबीरकवर

शैलवर्द्धिसेषः सोगदालंगकीर्त्तेः सुमनिगदाकीर्तोप्रहारः च
गयोगगनसंबरकुचारः गुलकपिसत्वगधरबगोनः श्रीरंगीराहा
रूप्रमानः इमादिकरीमायाअनेकः इहिंगोरकाजनहिसिद्धोयेक
उहिमहतत्वमानंदगः दुवलोकअसुरआयेअंगः करषगक
कडुमनिकुमारः कतसीसछेहसेंबरकुचारः दुत्करीकुसलक्ष्मा
कालः दुनिबजेदेवदुदुतेप्रकालः रतिरहेहअतरतेलः अमरे
नकतिकीछुक्रिअरूपः सेषदुमनिनतारगमुत्तरः उतसोअंदमु
मेकआरः दुवगदेअंगननोरदेषि तरीराजरतनिबिसमयबिंदे
समकलदेषिप्रमुनिसरूपः अरूपिवनमनवनअरूपः रलकपव
अंतरसोकअपः पुत्रहिमेतारिकीदेअलपः पुत्रनोवहूतिहिमिक
हुतधरनकसेंआपदेसुदरः अरअवनलगेकुचवुगधरः देहस
कीदेनबदिवरः सारंगधरप्रतिनंतनसरूपः देसीरीवितवदिछ
अरूपः कुमनमोनहमुतबालकालः सोसमरिहतमतवितमन
हुजीहतारमोकिकुकरतजोगः सोदेवगांतिकीनोंतजोगः अकअनु
जतदकुरतआजः कअसवितरेकतनकाजः सुतअसोपरतेजो
मनेः देवाबलुयेनिसदेः तकलपहिकतपनयोदितः दुवस
नहुतहितप्रेतिहितः हीनोंतवदरसवासदवः अंतहपुरआयेअकुम
नः ऐसापनिलबापकअनेतः कछुतदपिनबोलेरनाकेतः यगन
हुआरेसमयआरः सुतदरसहयेअपनेसुतारः नारदमुनिसबको
देहोनापरुमुनिहत्यतबरअतानः सोरतिहियोउपदेसुतारः
बोतरगसबहिनसुतारः हुगः अरुअपतनारहयोः सबबिरतो
सुतारः बालकालकबीकुसेः इहपरुमनिआरः मरुकायतर
नकतर्तः लयेपुत्रअरलारः मातपुत्रसनेनविलिः सविकवयेसुदा
कतबतदेवजुदेवकोः हितउवसुतहेतः कंसबिलोमेंतिर
रबयसनेतः रवमातोसबरअसुरः सबरपेसुरसेतः तरपे
कोअंहनवः उछकवयेअनेतः श्रीश्रीगनतेहसमसंकेक
हुरुरनरनरहसतबिरविरे प्रहमतेजनहा संकरः
बालपयः कोकेः हुरः सतिनामकेंआकुसुरः पुनिजादवप्र
पतः हितजामेंदपोनिग्रहः करिहैंकलकपालः छेदकेंप
जादवतानसत्रजिदेगोकोः तरनिजपासकहैंहतवकोः सेवहिं
मतबचकलकनीः दिनकरतविमरहमनिर्दनीः मनिकुसिमेंतक
नोहोनिरसलः हकेतेजअकोः सितकुतलः वहमनिलेसत्रजि
अंगोः इहिप्रभावसवहिनसिरनोयोः देवलमहराषीमविरे

दर॰ प्रतिदिनसेवेताहितगतिपर॰सोनेअष्टनारमनिआवे॰पैसे
ईनिससत्राजितपावे॰॥ ना र संभा कवि ता॰चारि॰ब्रीह॰इक॰वि
रम॰पंच॰गुंजापलपिषय॰पलसुअष्टक धरण॰धरलतेईकरय
बिसेषय॰कर्षचारिपलकहिय॰पलजुसतनतुलाप्रमानीय॰बिस
तनतुलामिलिबिहत॰ प्रगटयहनारप्रमानीय॰ कर्णादिआदिरज
जुकालि॰कनकदृयेतिहिकितिकहे॰कहिगिनतजथानरहरसु
कवि॰ऐकनारप्रमानयह॥१॥छदऐअरीरहेजहाय्यहमनि
अधिकारीय॰जुवतहाकैअरिष्टनारीय॰दुरतहमरीसरपच
यहरुन॰आदिबाधिनिसअसुननिवारन॰मनियहतहनब
पेमाया॰देवजोगहेसबसुषदाया॰ कृष्णहिदीनीनहिसकारन
यातेउपजतअसुनअकारन॥बसदेवबाच॥हाबसदेवकह
योअैसो॰जोजिहिजोगपदारथजैसो॰जोमनिउग्रसेनकहीजै॰
करिजनीतिधरमयहकीजै॰मनिकेगरबबचननहीमानो॰जथाअस
नआगमनहीजानो॰सत्राजितकेअनुजसहोदर॰सुपेप्रसेननामअति
बंदर॰निरनयऐकदिवसतिहिलीनी॰कंठबांधिमनिनूषनकीनी॰अ
वउपायो॰आषेटकहितकनयनआयो॰पकरिकंध
रस्यो॰मिलिमृगराजप्रसेनहिमास्यो॰मारियाहिलेच
तहाकंठबांधीसोपेतिणि॰आरनिल्योहरीछअन्वांन
जेटनयोनक॰जामवंतजोथाजरजीरन॰इहासियसे
॰मनिलेपेगेमहाबिवरमह॰जामवंतकोअहुतोजह
हितजारी॰सोमणिलेपलनालटकाई॰इहासत्राजित
रमनिसहतप्रसेननपायो॰असहमानियहनवधस्यो
नकृष्णलीनीमनि॰नगरमाहयहबातप्रमानी॰जह
जानी॰कृष्णबिचारतबैयहकीनो॰दुसहदोषकृष्ण
मोहिदीनो॰गलोचितचिंताबढिगादी॰कृष्णतहापदृपधतिकादी॰
जादवदृधसंगतीनेजेन॰तहांजदुनाथजुआयेतनछन॰इहाप्रसेनम
तकहयपाये॰सबहिनकेमनसंत्रमछाये॰चरनचिन्हलेचलेसचेत
न॰तहासियसोलसोमृतकतन॰पुनिपस्त्रंकरीछकेपाये॰अब
सबबिवरद्वारमिलिआये॰दुरगमतहाबिलोक्योकिंदर॰तामहो
।जनिहारिनिरंतर॰गरतप्रवेसकरोनिहिगिरधर॰हरिजादवजनर
षेवाहर॰आपकृष्णतहाधसेअकेते॰षेत्रषेलअैसोवहियेते॰प
लनासोबाधोमनिपाई॰कादिलईसोकवरकन्हाई॰

पौरुषबिसेषः सोगदानंगकीअसेषः प्रदुमनिगदाकीनोप्रहार चा
गयोगगनसंबरकुचार गुलकपिसाचगंधरबगोनः औरंगीराहस
अप्रमानः इत्यादिकरीमायाअनेकः इहिंगोरकाजनहिसस्यौयेकः
उहिमहततबमानतंगः नुवलोकअसुरआयोअतंगः करयगकति
प्रदुमनिकुमारः कृतसीसछेदसंबरकुचारः सुरकरीकुसमबरषाअ
कासः पुनिबजेदेवदुंदुभिप्रकासः रतिरहादेहअंतरसरूपः अरुदे
सकतिकीछबिअनूपः सोप्रदुमनिननमारगसुतारः उतस्योअंतहपु
मोरुआरः दुवगदेआंगनमाहरेषि नरीराजरमनिबिसमयबिसेषि
समहलहरेषिप्रदुमनिसरूपः अरुपीतबसनदूषनअनूप रहारुकमनि
अंतरसोकआपः पुत्रहिसंनारिकीनोप्रलापः पुत्रनोनष्टतिहिसुधिनपा
सुतध्यानकस्योअपनेसुनारः धरअवनलगेकुचदुगधधारः बेदस्ती
कीनोतबबिचारः सारंगधरप्रतिमोतनसरूपः वैसोही चितवनिछबि
अनूपः कहुनयोनष्टसुतबालकालः सोसमरिहोतममचितसाल
हजीवतरलोकिकुकरमजोगः सोदेवआनिकीनोसंजोगः अरुबोमनु
जाममहुरतआजः कछुसूचितहैकल्यानकाजः सुतध्यौगरनमेजोरी
सनेहः देवरबालयहैनिसंदेहः महाकलपबिकलपनमयोचित सुनसयु
नहोतहितप्रीतिहेत दीनोतवदरसनबासदेव अंतहपुरआयेप्रभुअंगे
वः हैआपविस्वब्यापकअनंतः कछुतदपिनबोलेरमाकंतः यहोनार
दयाहीसमयआरः सुनदरसदयोअपनेसुनारः नारदप्रसंगसबकहि
निदानः परदुमनिहस्योसंबरप्रमानः ज्योंरतिहिदयोउपदेसजारः सो
बातहासबहिनसुनारः ॥ दूहा॥ अहअपनेनारदगयोः सबबिरतांत
सुनारः बालकालकोबीछुस्योः इहापरदुमनिआरः॥१॥ महलागतहा
रुकमनीः लयोपुत्रउरलारः मातापुत्रसप्रेमामिलिः सातिकलयेसुनारः
॥२॥ कृतबसदेवजुदेवकीः हितउछवसुनहेतः कमलबिलोक्योसुंद
रबधूसमेतः॥३॥ रनमास्योसंबरअसुरः सबहरषेसुरसंत नरहरप्रभु
केग्रेहनवः उछवभयेअनंतः॥४॥ इति श्रीभगवतेदसमसकंधेभाषा
बारहटनरहरदासेनबिरचितप्रद्युमनिजनमः॥ संबर॥ हेत
बधः॥५॥ कबिक॥ दूहा॥ सातिनामाकोआरुसुष पुनिजादवप्रति
पालः हितजामोतीपानियहः करिहैकृपलकृपाल॥१॥ छंद द्वैअषरी॥
जादवनामसत्राजितजाकोः तरनिउपासकहैसुततताकोः सेवातिहि
मनबचक्रमकीनोः दिनकरताहिमहामनिदीनोः मनिजुसिमंतक
नामोनिरमलः ताकेतेजप्रकासितभूतलः वहमनिलेसत्राजित
आयोः इहिप्रभावसबहिनसिरनायोः देवलमहरषीमनिसु

दर॰ प्रतिदिनसेवेताहिनगतिपर॰सोनेअष्टनारमनिआवे॰पैसे
ईनिमसत्राजितपावे॰॥ नार संभा कवि ता॰चारि॰ब्रीह॰इक॰वि
रम॰पंच॰गुंजापलपिषय॰पलसुअष्टक धरण॰धरणतेकिरप
बिसेषय॰कर्षचारिपलकहिय॰पलजुसततुलाप्रमानीय॰बिस
ततुलामितिबिहत॰ प्रगटयहनारप्रमानीय॰ कर्णादिआदिरजा
जुकलि॰कनकदयेतिहिकितिकहे॰कहिगिनतजथानरहरसु
कवि॰ऐकनारप्रमानयह॰॥१॥छद॰ऐअबीरहेजे हायहमनि
अधिकारीय॰सुवतहऐअरिष्टनारीय॰दुरतहमरीसरपत
यहकन॰आदिमाधिनिसअसुननिवारन॰मनियहतहनब्ज
पेमाया॰देवजोगहेसबसुषदाया॰ कुलहिदीनीनाहिसकारन
यातेउपजतअसुतअकारन॰॥बत देवबाचा॰इहाबसदेवकह
योअैसो॰ओजिहिजोपपदारथजैसो॰जोमनिउग्रसेनकहदीजे॰
करिजनीतिधरमयहकीजे॰मनिकेगरबबचननहीमान्यो॰जथाअस
नअगमनहीजान्यो॰सत्राजितकेअनुजसहोदर॰सुपेअसेननामअति
बंदर॰निरनयऐकदिवसतिहिलीनी॰कंठबांधिमनिनूषनकीनी॰अ
[illegible]वउपायो॰आषेटकहितबनयनआयो॰पकरिकंध
[illegible]स्यो॰मिलिमृगराजप्रसेनहिमास्यो॰मारियाहिलेच
[illegible]तहाकंठबांधीसोपेतिणि॰आरमिल्योहरीछअचंन
[illegible]जेटतयोनक॰जामवंतजोथाजरजीरन॰इहासियसो
[illegible]॰मनिलेपेगमहाबिवरमह॰जामवंतकोअहुतोजह
[illegible]हितजारी॰सोमणिलेपलनालटकाई॰इहासत्राजित
[illegible]रेमनिसहतप्रसेननपायो॰असहमानियहनवधस्यो
[illegible]नकुलनीमनि॰नगरमाफयहबातप्रमानी॰जरो
[illegible]जानी॰कुलबिचारतबेयहकीनो॰उसहदोषकु
मोहिदीनो॰अलोचितचिंताबढिगादी॰कुलतहापदपथतिक
जादवबृधसंगलीनेजंन॰तहांजदुनाथजुआयेतछन॰इहाइसे
तकहयपाये॰सबहिनकेमनसंत्रमछाए॰चरनचिन्हलि
न॰तहासियसोललोमृतकतन॰पुनिपस्अंकरीछके
सबबिवरद्वारमिलिआये॰दुरगमतहाबिलोक्योकिदर
जनिहारिनिरंतर॰गरतप्रवेसकरेतिहिगिरधर॰
षेवाहर॰आपकुलतहाथसेअकेते॰षेत्रषेत
लनासोबांधीमनिपाई॰कादिलईसोकवरकन

तत्रीयापुकारी: नयोतहाहाहारवनारी। इहिछनजामवंतइहां
यो: बड़ोबिरोयछोहमनछायो: जादवनाथप्रनावनजोएपो: इ
केउप्राकृतपुरुषप्रमाएपो। इकुमिलिकस्यौजुधअतिदारुन: या
राउतहानयेसथलतन: परेसचोनजथापलऊपर: सप्तचोकबा
रनयोसमहर: कृस्नरीछमुष्टहतकीनो: केगयोदे हसिथलबल
हीनो: जामवंतनारायनजोएपो: प्रतिमापूरनपुरुषपिछाएपो: कृ
स्नदेवकरताकेकरता: होतुममहाकालकेहरता: रमेहोरावनरन
मारे। अबतुमकृस्नदेवअवतारे। दीननयोपरिकरमादीने: कृम
मनबचसुबंदनकीनें: मोनिरयालनयेतबमोहन: ताकोपांनिप
रसकीनोंतन: नयेबिथागतयाउनयंकर: कृस्नदेवपरसेजबनि
जकर: कृस्नहिनहांबिवाहीकंन्या। धरैसुछबिजामोतीधंन्या: कृम
जुतसुताबिराजबकीनी। दिब्यदाइजेवहमनिदीनी॥ इतिजा
तीबिवाह॥ छदसदिवसरहेमुषकंदर: धनअलसबसगएऊ
यर: इनहिदेवकीपूछनआई: कहोकहांकवरकन्हाई: इनत
समाचारकहिअैसे: पेहगिकृस्नबिवरमहपैसे: स्यामकंदरामाहि
सिधाये: अबलोंबाहरफेरिनआए: इहासबेहासीनउचारत: ते
ईसत्राजितकहंयिकारत। अबबसदेवदेवकीआतुर: स्यामक
सलहितआवतहैसुर: देवीनामचंद्रनागदिन: पूजतताकहंकी
यैनगतिपुन: येदेवीमोहनजबअैहैं: हमऐसोकछुतुमहिचदेहैं
अष्टबीसदिनउहांअतीते: जुधक्रीडलबमोहनजीते। इहांकंदरा
बाहरिहरिआये। येतेईसंगीतहानपाये: लछिअसुलहनिसं
नें: कृस्नप्रवेसयारकांकीनोंकबिरु॥ वहमनिलेमोहनघरआ
बाजेमंगलकलसबदाये: उग्रसेनराजापहआपन: मनिसोलो
आये मोहन। बेरेजादवसनाबनाये: इहासबतहासत्राजित
आये। कृस्नदेवजोमनकोकारन: नपजनसबसोकस्योनिवे
दन: प्रगटसबनिकहिकृस्नदयापर: सत्राजितहिदईमनिसुदर
अपनोमिथ्याकलंकनसायो: अनुजजुनाथपरमजसपायो।
सत्राजितताहापस्योबिसानो: अतिलजाउपजीअकुलानो: इह
आतुरअपनेघरआयो। पुनिसबसोंमिलिमंत्रउपायो॥ सत्रा
नेताक्रमअपराधहरितोकीजे। जोयहकंन्याकृस्नहिदीजे॥
ब्रसरूपनामसतिनामो। स्यामहिकरीसमरपनस्यामो॥

जथाबिबाहबेदबिधिसंजुत करेसबेमंगलजोकुलकृत कुलहिज
[illegible] दिब्यसुमनिसेगदाएजदीनी॥ दोहा॥ सतजा
[illegible] पूरनप्रेमप्रसंग नरहरप्रभुरछानियत रलोजथा
रसरंग॥१॥ कृष्णवहमनि हेतकरि पूरनप्रीतिप्रमान तनछनदीनेम
रितव सत्राजितहिसुजांन॥२॥ इति श्रीभागवते महापुराणे दसम
स कंधानुसारणेभाषाबारहट नरहरदासे नबिरचेतो॥ जामोनी
सतिभामाबिबाह बरननोनामाप६॥ कबित्त॥ दोहा॥ कीनोलाघ
यलकपट दुरजोधनदुरबोध कारनपंकवदाहक्रम स्यामलनोपु
निसोधन॥१॥ घटघटब्यापक स्वामयन त्रिकालरूपकरतार इहातदपि
करिबेउचित बिदितलोकबिबहार॥२॥ छंद द्वेअषरी॥ इहाहसतना
पुरप्रभुआये सबहिनरामकृष्णसुषदाये जीबमद्रोणबिदरगंधारी
मित्रिस्यादिकसबनिमुरारी द्वारावतीकृष्णबिनुदेषीय कृतबरमां
अक्रूरदावकीय इहापरसपरमंत्रउपाये प्रगटबिरोधसमयजब
पायेपा अक्रूरासतिभामांपुत्रीसत्राजित हमहिदईहीमांनिपरमहि
त दुहितासोकृष्णहिलेदीनी कछुहमारीसंकनकीनी बैरतासअब
कृष्णहबधारो मनिकृष्णेकुसत्राजितमारो॥ कबित्त॥ सतधनवाहन
प्रेरिपगयो अरधरैनिसोछलकरिआयो महानिसासत्राजितमा
स्यो बीरधरमनहिचिंताबिचारयो मनउपजीतहाबुद्धिमलीनी
लोभहेतमनिबोजिजुलीनी राषितेलमहपिताकलेवर अतिदुष
सतिभामांनईआतुर इहाहसतनांपुरसोईआई सबेकृष्णसोवा
तसुनाई रामकृष्णतबहीबैगेरथ पुनिसोईहाकोद्वारावतिपथ
इहाजदवसतधनवाआयो आगमरामकृष्णआकुलायो॥ सत
धनवा॥ कृतबरमांसोंनेहजुकीनो अबकृतबर्मकरिनयाअधी
नो मेंतवहितसत्राजितमारयो नियतनिहारोबैरनिकारयो अ
बतोरामकृष्णरोउआये सकोनरहिइहिबिनासहाये कृतबर
मांअक्रूरत्रासकरि हैंनहिजुधसमांनहमहिहरि जिनसोंजरास
धनिरिसिगयो लेअहोहनिमुधरालाग्यो जगकरताहरताहरि
जांनो नाहितिनसोंहमजुधप्रमांनो सातबरषकेबालकसुंदर
राषोलघुअंगुरीपरगिरवर छिनककुद्रिष्टजगतजिहिछीजै तिन
सोंकलहहोसनहीकीजै॥ कबित्त॥ सतधनवाहमनिलेसुंदर
अक्रूरहिदीनीहैआतुर नयकरितबसतधनवालाग्यो अहुनेहतजिमारा
लाग्यो जबजुतअस्वगयोसोजाजन तहागिस्यातबसकतियटीतन इह
बलकृष्णद्वारिकोआये पुनिसतधनवासुनेपलाये ली

गे परम बिचित्र बैर रस पागे। दुष्ट जबे माधव रथ देखो। बिकल छाँडि दयगयो बि
सेखो। रिक्ष सुरथ बलदेव हिरीनो। कृष्ण उतरि तिहि पाछो कीनो। प्रभु पु
ष्टचेय हसन मुख आयो। चक्रपाँनि तब चक्र चलायो। सिर काटो असुर बस
त्र संवारे। लहि मनि बिस्वेस बिचारे॥ अडिल्ल॥ संकरषन सो कहो कहा
पिसन हसो मैं मनि नहीं पाई। इहा बलभद्र कुमार बभास्यो। इन मनि लीस
तधन वामास्यो। कृष्ण कह्यो हम सो छल कीनो। सति नाम हि मनि दै हैं सोई
वाके पितकी बहन निआही। नातें सो अब दै है ताही॥ बलदेव। इहा बलकलो
रोष जुत अंतर। रनजय की यतु मक्ष्य जाऊ पर। हम बिदेह नृप सो मिलि आई है
प्रीतम नातें कछु रे है॥ कबित्त। इहा उतरि मिथुलापुर आये। पुनि बिदेह कौ
मिलि सुख पाये। संकरषन तहा रहे सुनाये। याही थल दुरजोधन आये। तहा
कृतिवर्मा मिलि आई। सो मिलि षेलत संग सषाई। गदा जुध बिद्या जोग
ई। पैन्न पजनक सुइन हि पढ़ाई। सो षेदर जोधन संकरषन। अनगराज पढ़ बि
द्या आपन। सतधन वाको मारि महारन। मिले आनि सति नामो मोहन॥ अ
डिल्ल॥ तेरे पितको हमो बिहंता। तातें नाम मनि तजि यें चिंता। षोज कस्यो षलम
रि मूल षंनि। मैं वह पाई नहीं तहा मनि। कृष्ण हि सति नाम रिस कीनो। सम
नाम मनि तुम सहीं अब जहि दीनो। नाथ हम हि सो कपट बनाये। इहा तुम
षाली हाथ नि आये॥ कबित्त॥ कृष्ण सुसर को मृतक कीनो। दाह कलेवर
को लेहि दीनो। हमो जबे सतधन वारन हरि। कृतबरमा अक्रूर त्रास करि। तथते
छाँडि द्वारिका नाजे। कासी गये जीय के काजे। सो मनि पूजित प्रतिही रावे। अष्ट
रकंचन नित्य आवे। सब षर चे अक्रूर सुहाये। तातें नाम दान पति पाये। जब अ
क्रूर खाँहे जाँनो। पुनि सब हि नियह कपट प्रमानो। जादव बात करत यो जन
जन। मनि है काढ़ि दयो सो मोहन। इहा यन सो मसो च कीय ऐसो। यह उपजो
अपबाद अनेसो। माया ऐसी प्रेरी मोहन। दुसह होत अरिष्ट जो दिन दिन। देव क
सारीरक अति दारुन। उपजित को उ मानसिक अकारन। उग्रसेन की मतो
कहिन। जादव बृध सबे मिलि पुरजन। उन हि कृष्ण तब पूछे ऐसो। असुर हो
तकारन यह कैसो। पुनि तहा बोले बृध पुरातन। अनावृष्टि कासी वरी असन
न। प्रभु कासी नृप यह सुधि पाई। जादव सुफल्क लीयो बुलाई। पुत्री अपनी प
रम प्रीति पन। नाम गादिनी सरब सुलछन। सुफलक को ब्याही सो सुंदरि। कछु
काल तहा बसे हेत करि। घर घर आनंद बरषे अतियन। दुरत भयो अरि
ष्ट दिन दिन। सुफलक को सुत साध सुनारी। लीजे अब अक्रूर बुलाई। पुनि
सब हि नमिलि रत पठायो। इहा अक्रूर द्वारिका आये॥ छंद॥ इहा
बासदेव बोले बिहसि। अहो दानपति आज। सबके तुम आवत सरे। करि
रे अकाज॥१॥ सतधन वा तुम कहे समझि। मनि दीनी करि मोह। सबके
तिहि कारन असह। छन छन बाढ़त छोह॥२॥ अब अक्रूर सुमनि इहा

सबके देयतदेऊ: मिथ्याउपजो हैंजुमन: सोनासे सदेऊ॥१॥ महासिमंतक
नोममनि · प्रतिरविजो निप्रकास: दीनीकारिसुदीनपति: सबनिजयोविस्व
स॥१॥ ऋमित्रथसेनावनो पेमनिहोइप्रमान · कृष्णकसोतिहिंप्रगट · नासक्र
नरथनिदान॥२॥ यहआख्यानजहेनकरि · पढैगुनैसुषपाइ: ताकोकुलकलंक
तब सोनिरमूलनसाइ॥३॥ कारनलीलाकृष्णकी · अस्तुतअगमअपार: कही
जथानरहरसुकवि · अपनीबुद्धिअनुसार॥४॥ इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधे
नजाबार हटनर हरहसे नबिरचितो सतथनवामनिप्रगटनो॥५७॥
कबित्त॥ सोरठा॥ एकसमयअखिलेस: महामुनिपांडवमिलन: करवा
नीनरेस: इंद्रप्रसथआयेअबे॥ छंदद्वेअषरी॥ इहांपांडवसुतसनमुषआये:
जेरेप्रभुहिजथामनभाये · जुधथानादिकजादवजेते: तहांमिलेजोथाहितेते
पुनिकृतीकेयेहपधारे: कीनेनिमसकारहितकारे: पूछीकुसलकृष्णसुषपाये
सबकृतावृतांतसुनाये॥ कृतावृ॥ प्रभुजबहीअक्रूरपगयो: नयोकुसलतबे
तेमनभायो · तुमसमदिष्टसबनिकेस्वामी: जगजंगमअंतरजामी: उर
तनजोगनिकुजोदरसन: पेतुमदयोप्रतछिसुपावन: होतपुराकृतउदय
हमारे: प्रभुइहिअहआपपाउधारे · कृष्णकृपाओरूअबकीजे: दिनकछु
रहिजेदरसनदीजे॥ कबित्त॥ बरषएककोरहनबिचास्यो: सबहिनकौ
अतिलाषसवास्यो: एकसमयगिरधारीअरजन · प्रभुनिकसेबनक्रीडापा
वन: मोहनरथहांकतमनमानें: पारथबैठेमध्यप्रमानें: निजगांजीवधनु
षकरलीनें · नियतकसेतूनीरनवीनें · बनबनघनआखेटबिहारे · महाजतदेष
सोईमारे: मृग · चित्रक · बनमहिषमनोहर: बगीससकमृगापिपसूकर · जलन
चारगनेकोजेते · तहांतयेआखेटकतेते · प्रबलदिष्यजेतेकछुपाये: पुनिते
राजापहपुहचाये: इहाअमितसरितातटआये: सुंदरबनयनदेषिसुहाये
दिव्यतहारकर्मादेषी · बिहतपसाकरतबिसेषी! पुनिअरजनकहेकृष्ण
पगयो: नेदतेकुयाकोमनभायो: ध्यानकरतइंद्रीदमधर्मा: कोधोयह
कांकीहेकर्मा: अबअरजनयाकीटिगआये: पूछतनेदसमयसुषपाये॥
अर्जुन॥ तहाअरजनपूछीगतिताकी: कोतुमआहिकर्मकाकाकी · इहक
होसुरकवनअराधति: सोकिहिहेतइतोहवसाधत॥ कालिंदी॥ पारथक
सूर्यकीपुत्री · पुनिकालिंदीनामपवित्री: कृष्णचरनहितपसाकीजत
छनछनकालसुदुर्लभछीजत: कृष्णबरनकोनिसचयकीनो: लोकप्रसि
धयहेवृतलीनो · यहजमनातटबसतस्वइछा: प्रभुदरसनकीकरतप्रतीछ
कबित्त॥ इतकिरिपथकृष्णपहआये: सबकर्मकेमरमसुनाये: नियतकृ
ष्णसोकरधरिलीनो · कर्मारथआरोहितकीनो: इंद्रप्रसथताकहलेआए
धरमसुवनकहमरमसुनाये · बिसकरमाकहोतबतायो: वासदेवरक
नगरबसायो: कर्मारोषितहासकरनो: अस्तुतइछादीनउधारनो॥ यां
ऊ बबन प्रसंग॥ सक्रबिपनकृतलइकसुंदर · उदनिजषांनिअमिल

तिहिअंतर: बिहतनामताकोषाम्ववन: पुनितहासकलओषधीपावन: बान्ति
हदेषोषाम्ववन नयेमनोरथताकहनहन॥ म्य प्रत्ं ग॥ प्रथमजुगोतरस
नकुप्रकार: असुरहिरनकसिपअवतार: दैतनयोंआषकलदाहन: करीश्रष्टि
तिहिनईसकारन: करमजुकतिहिहिगपतिकीनें: निसचरराषेहिगननवी
नें: मयनामायकरयंतमहाबल: बिस्वकरमपदहीनोनिसचल: षंडबनमा
बसेसुषेचर: सहतकुरंबनजेसुषसुंदर: पुनिरकहिनषंडबनपावन: जग्ये
अनलसोलग्योजरावन: याहीसमयसुयनमिलिआये बुंदमुसलजलअ
गनिबुझाए: ज्वालानलउहिमकीयजेते: तिहिबनदहनफुरतनहीतेते: क
रिकरिथकोमनोरथमंगल: बल्योनषांडवचल्योनाहिबल: इंद्रप्रसथ
नबकुतनुकआयो: पारथजच्योसमथजुपायो: धनुतनीरपथतबधारे: पुनि
तिहिबनरथबैठिपधारे: महाबिपनपतिकोमनमांगे: जाचेनाहितसुपेन
जांगे: इहांअरजनषंडबनआये: सरपंजरबंनसीसबनाये: जितितिहुस
हदवानलजाग्यो: लगीषुध्याअतिजारनलाग्यो: क्रोगयोरंदतहांउहिमहत
सघननीरबरषेपनसंजुत: दाहहोतबनमांकुषारे: पुनितहामयकेपुत्रपु
कारे: आरतबचनसुनेजबअरजन: जरतराषिलीनेआसुरजन: बान्ति
रेचकुओरदाहबन: मिटीषुध्याअतिलाषफलेमन: नयोसंतुष्टअगनिमं
नयो: बिहतपथसोहितबदायो: अहयनिषंगदिअधनुदीनें: निरस
कवचजुचरमनवीनें: सेतबाजिजुतरथअतिसुंदर: पथहिदीनेअनलग्ये
पर: इहांजबमयषंडबनआयो: पुनिपरिवारकुसलसोपायो: नयोअ
जनसंतुष्टसुआसुर: दिअसनारीनीतहासुंदर: नवजलथलतिहिंति
नहारस्त्रम: कारनबकुतबिलोकतक्रमक्रम: येसबलेअरजनअह
आयो: नयोहरषमाधवमनभायो: अरजनसजानपहिअवधारी:
हेअरजुनसोसबनिनिहारी: कृष्णद्वारिकाआयेजयकरि: संगलायेक
लिंद्रासुंदरि: दिअलगनसुनबिप्रनिदीनें: कालिंद्रीसोंआकुसकीनें
कृतबसदेवदेवकीकीनें: नियतनयेउछाहनवीनें॥ छंद पधरी॥ एकन
गरअवंतीकोनरिंद: बिहतिहिनामबिंदानुबिंदु: तिहिबहनमित्रष्ट
हाबिनीत: पैनरीसयानोसोपुनीत: सबपूछिनिपतिहितकुलसंतार
आकुकोकृष्णसोंकीयबिचार: बिंदानुबिंदकोमहामीत: आगेहोदरजो
धनअनीत: सबयकृष्णसोंतिहिअसाध: बातेंबनाइयलकरोबाध: पु
निरचोस्वयंबरसमेपाइ: अनेकनृपतहांमिलेआइ: प्रनुकृष्णकरेति
हिपुरप्रवेस: निसंकसतबेगनरेस: बामांसुबिलोकतअखिलबीर
धरिबाहकृष्णलेचलेधीर: नृपनिकोकीनोंमानभंग: इहांकृष्णयेहआ
येअनंग: सुनलगनपूछिमिलिकुलसमाज: कृतबासदेवतिहिआज
काज:॥ इतिमित्र बृंदाआ॥ अवयेसनगनजितनासनांम: धन

विपुलसबिलसैधराधाम:पुत्रीतिहिसत्यानोमपाइ:सुदरसुनलछनगुन
सुनाइ:नृपलयोनगनजितयहनिदान:कोउसातहृषनननाथ हिसुजोनव
सकरेहृषनगहिएकवार:सोबरेकवरिसतासुदार:पनकस्योस्वयंवरज
गप्रसिध:सबमिलेआइनृपसमरसिध:हरिहेसबेनृपमेलिहाथ:नाह
नसत्रथकोउहृषननाथ:बिधिसुनोजबेयहवासदेव:इहांआइनगरक
सीअजेव सुनिवासदेवआगमनरेस:बिधिजुकतकरीप्रजाबिसेस:कृ
सहिबिलोकिसोनृपकुमारि बरबंछाकीनीचितबिचारि:नृपकलोनग
नजितयहनिदान:तुमपरमपुरुषबेदनिप्रमान:पनकस्योप्रथममेयस
प्रमान:देषनकहंछत्रीबलनिदान गहिहृषनसातजोरिकसंग एकी
वारनाथेअनंग कंसाय हताकेतातकाल बरमालकंवलेलेबिसाल
प्रभुबाधिपातपटकरिपुनीत:अषिलेसउग्रेअंतरअनीत धरिहृषनसात
तनसातधारि:मायाअनंतनाथेमुरारि कंसावरमालाहरयकीन पह
राइवासुदेवहिप्रवीन:रसरीतिवेदबिधिफासिराज:करिसलाकवरीब
ऊकाज कासीनरेसहाइजोकीन:दससहससवछाथेनदीन:दीनीप्रवी
नत्रयसहसहासि बनिबसनकनकनषनबिलासि.नवसहसतरन
मदमत्तनाग: बनितिनतेनवगुनरथबिभाग:बदिरथतेसतगुनहयबि
थार:चलितिनतेसतगुनचरनचार:बरनीबरराजतरथारोह:सबअंग
अंगरितिमदनसोह:निसेषषिसानेनयेनरेस:पुनिआनिपंथरोक्योज
वेस इहानयोजुथतिनसोअपार:सबगयेनाजिकोउनयेसंघार:सम
रकरिबिजयजदुकुलनरेस पुनिकीनोंद्वारावतिप्रवेस:हितनयोनगर
घरघरउछाह:दुरयोधदुष्टउरपरदाह:॥इतिसत्यबिबाह॥ इहांकै
केदेहनरेसकी:पुत्रीपरमअनूप:भद्रानामांतामनी:पूरनतनगुनरू
प॥१॥कंसादीनीकृष्णक हं:बंछितनयोबिबाह:क्रमजुतगायेदारिक
ऊवयरघरउछाह॥२॥इतिभद्राबिबाह॥मंद्रदेसकोमहपती:बिद्या
बिनबिनीत:लछनपूरनलमनां:पुत्रीतासपुनीता॥३॥कस्योस्वयंबर
कलिका:मंद्रसुरहितमानि:देसदेसकेनृपतिदल:इहामिलेसबसोनि॥४
एकाकीरथचढिइहां:आयेमद्रउदार:हरिसबबिचिकंसाहरन:कृष्णक
सकुमार॥५॥कंसाआंनीदारिको:इहानयेउछाह:कृष्णसुतासोक
सो:बिधिराहसीबिबाह॥६॥अतिदुरतमायाअतुल:जोरेयमागमनी
नि:अषिलसुरासुरकृअगम:नरहरप्रभूनिहानि[illegible] रुकमनिजा
मोतीरमनि:सतिनामसबिसेष:कालिंदीहृदकरिहितासत
मेष॥८॥मिलिचद्रअकलछमनां:लछनगुन[illegible]
गेप्रगट:कृष्णदेवहितकाज॥ इतिश्री[illegible]
पांवारहटनरहरदासेनविरचित[illegible]

बाह॥ ५८॥ कबिरु॥ ब्रह्मक्रीडा थानकइंद्रको॥ मनियरबतयहनाम॥ वि
बिधिजलासयसघनबन॥ सोभसुषबिसराम॥ छंदपधरी॥ नरकासुरनो
मानिसाचार॥ अतिसयअनीतअरबलअपार॥ इंद्रसोंलस्योसहिगेरआनि॥ पु
निअसुरबिजयपाईप्रमानि॥ हरिलीनेकुंडलछत्रहेत॥ सुरपतिकेमनिपरख
तसमेत॥ इहांजयोपराजयइंद्रआप॥ सोआयोद्वारावतिसदाप॥ सतिभा
केतिहिसमयसोम॥ मिलिदंपतिबैठेधरमधाम॥ तिहिसमयइंद्रआयेसची
त॥ प्रनुकरेजथाआदरसप्रीत॥ वृतांतकलोबासवबनाइ॥ जोप्रबलअ
सुरसोअजयपाइ॥ सुनिजयोगरुडआरूढसोम॥ नांमनिसंगलीनेसतिभा
म॥ पुरअसुरप्रागजोतिषप्रसिध॥ स्वामयनआइतहासमरसिध॥ अष्टकोट
वन नी॥ गिरअसत्रसलिलमंगलसमूल॥ करिपवनपासजोधानुकूल॥ इहिना
तिसमअवरनयेह॥ रिधपुरीकोटदुरगमअरेह॥ रनकोटबिदारनपेजरोप॥ इहास
लदेवआयेसकोप॥ गिरदुरगगदाहतकृतगुबिंद॥ निसेषजंत्रबाननिनिकंद
आवरनअनलजलबांनअंत॥ जलकोटअनलसोप्रोजयंत॥ पुनिमरुतबिद
स्योचक्रमारि॥ दुरगमनपासबिसषहिबिदारि॥ प्राकारगदाहनिचक्रपानि
अषिलेसरलागेनिकटआनि॥ आकासअवनिअंतरअमांन॥ नरिरसोसबदु
मलनयांन॥ सुरनामदैतइकुरुमूल॥ सिरपंचतासआयुधत्रिसूल॥ निकसे
सोजलतेनिसाचार॥ पुनिकस्योसूलगरुडहिप्रहार॥ मुषपंचकहेसोमारमा
र॥ परिसबदत्रासथिरचरअपार॥ सिरचक्रछेदकीनोसधीर॥ रनहतोकुल
सोमहाबीर॥ सुतबलीबयरपितकेसंतारि॥ मुरुचदेकुलतलयेमारि॥ तिसव
रसेनांपतिपाछिनांम॥ सोजुस्योमारिलीनोसंग्राम॥ सेनासमूहचतुरंगसंग॥ इ
हानिकस्योनरकासुरअंग॥ बिचिसमहरदेषेकुलबीर॥ सतघनीसकल
बाहीसधीर॥ जाजुलिमिलेसबसेनजुध॥ करिसत्रअसत्रप्रहारक्रुध
प्रनुबानचलायेजबप्रचंड॥ षेवरहतिकीनेषंडषंड॥ नरकासुरगजआरो
हनिसंक॥ कुलसोजुस्योषलआनिकंक॥ कुलहित्रिसूलबाहेकराल॥ सोवि
सषमारिछेद्योबिसाल॥ बसदेवकवरहतिचंदबाल॥ नरकासुरसिरकटे
निदान॥ कुवनरकासुरयरहाइहार॥ सुरबरषिपुहपदुंदुभिबजाइ॥ इहा
नागसुरासुरजहनर॥ किंनरगंध्रबकेरि॥ कंनांआनीबलकरषि॥ धरमल
रषीषेरि॥ १॥ सतउपरसोरहसहस॥ एकएकअनूप॥ पलपलबादतिगु
नप्रतषि॥ प्रतिमलछनरूपारा॥ छंदपधरी॥ इंद्रादिअमररिषमिलेआनि
बहिसतुतिकहाजयजयतिबानि॥ इंद्रसोंजुस्योआगेअनीत॥ जयपायोन
रकासुरअजीत॥ इंद्रकेजयाभवनअसेष॥ करिबिजयछीनिलीनेबिसे
ष॥ पुनिआइभवनतेइंद्रपाइ॥ बंछितनोजयदुंदुभिबजाइ॥ उपजोजुत
मिकेगरबआइ॥ पुनिनोमासुरयहनामपाइ॥ नरकासुरताकोद्वितीय
नांम॥ किंकारनकेधूकछूकांम॥ इहिहेतकहिमिथतिहेआइ॥ तेजुक

त्रसूल
दान॥
कासुरह

तिकरीबिनतीसुनाइ: नरकासुरसुतजगदंतनाम: सोइ थीमेल्यासरनसाम
प्रभुचरनलगायोतुवपुनीत: जगदंतनामपोतीसनीत: प्रभुसीसनासकरथ
रिप्रबीन: तबदीनबंधुनिहिअनयदीन: अखिलेसतबेरनिवासआइ: संपति
सुपदेयेतहांसुनाइ: सतएकसहसषोडससरूप: अवलोकीतसकंन्याअ
नूप: सुरअसुरनागकंन्यासुदेस: बयलछनगुनसोनाबिसेस: बलकरषिजु
आनीअबलबाल: चितप्रबलनजानीकालचाल: बिधिपानिग्रहनकंन्याबिच
र: सोकरतरलोउहिकुमार: कोउकरसउहितनोइहांकराल: लेगयोवीच
हीरुपटिकाल: अखिलोकीदेवीछबिअनंत: कंन्यातिनमांनीकृस्नकंत: सबि
काअरोहकरिकरिअसेष: बिनतासोपवरीअहबिसेष: सुनचतुरदंतअरु
सेतअंग: मदमतपवयचोसगिमतंग: इहांकृस्नपधारेइंद्रलोक: आनूपनइ
द्रहिदयेशोक: कछुवारदअगेकिकुकाल: सुनपुहपपारिजातिकबिसाल
द्विजपुहपसुकृस्नहिआनिदीन: प्रभुरुकमनिग्रहबेप्रबीन: नारदकहंपव
योपूजिनथ: हितपुहपपदयोरुकमनीहाथ: सोदेषिसतनामांसुजान: मो
हनसोकीनोतबेमान: कांमनीउनयअरुपुहपऐक: बिस्वेसरपातारसबि
बेक: श्रीकृस्नउ: माधवकहिबीयसोंबचनमांनि: याकोतोहिदेकृष्ट
आनि: कबिरु: नरदेहइंद्रपुरआइनाथ: सुदरिसतिनामफुतीसाथ
द्रुमपारिजातितिहिबेरदेषि: बनितासुधिकीनोंबरबिसेषि: सोबछिच
लेहरिसधार: बिहंगेसपृष्ठिधरिमहावीर: कतपंथरोधमिलिअमर
क्रुध: जाजुल्पकृस्नसोंकरेजुध: ६हा: महासुरनिकेमांनमिलि: द्रुम
आनोंजउदेव: कृस्नसुरोप्याहेतकरि: नामधामसचेव: बोउससहं
अकंन्याबिबाह: सुभमंगलमफुरतसुदिन: अरुबेदिकआचार
कृतबसदेवजुदेवकी: जथाबंसबिबहार: २: क्रमतोरनचोरीकल
सरचेबिबिधिबहुरंग: कारनजेतीकंनिका: ऐतेथांनउतंग: ३: कृ
स्नकवरदेवीसकति: यहअदभुतअपार: नरहरप्रभुसबकंनिका: ब्या
हीयेकहीबार: ४: येकलगनछिनऐकदिन: इहाधरिदेहअनंत: प्रभु
नरहरअसीप्रबल: नवइंछानगवंत: ५: सबहिनकेअभिलाषसुष
भरनकरेप्रमांन: नावहावबिलसतनएं: नरहरप्रभुनिदांन: ६:
इतिश्रीभागवतेयदसमसकंधेभाषाबारहटनरहरदासेनबिर
चितं: नरकासुरबध: बोउससहस्रएकसतकंन्याबिबाह:
५९: कबिकु: सोरठा: एकसमयअखिलेस: बेदरनाकेयेहबनि
बेगेसेजबिसेस: करतपरसपरहासिक्रम: १: छंदपधरी: इहावा
सदेवकहितकबात: सोरुकमनिउरनाहिनसमात: षितजाम

चंदेरीराजथान: पुनि बैसबहिगपालनिप्रमानि· सुनलछनगुनत
नवयसरूप· अतुलितप्रतापप्रतिमाअनूप· बरबीरधीरसोचेहि
बस: ससिपालनृपतिहृथीप्रसंस· जाम्बोयहन्नातादईजाहि· तुम
बस्यौनहीकिहिदेषताहि· वहछांडिबस्योतुममोहिआनि· जुबस
कहाअधिकारजोनि· नृपतापदहमकहनहिनिदान· पुरुषाजजा
तिकीनोप्रमान· पुनिजरासंधतयंत्रासपाइ· इहाबसेसिंधुकेसा
नआइ· राज्यानिषेकनहीराजथान· तुवत्रमतरहतअतिहीनथान·
जिनकेनहिमारगजानिजाहि· हमतोनलोकबिबहारमाहि· प्रतिमाग
नबरजितबयप्रमान· निसग्रहहमहिजानैनिदान· बिबहारमित्रत
बयरबाद· करियेसमानसोतजिप्रमाद· निकामनिगुनकोनजे
नारि· पेनहिनमनोरथचढेपारि· आचारउचितछत्रीनियेह· सोतु
मकुजानतनिसंदेह· दुष्टनिकोदछादकरेहि· हठिचढेस्वयंबरजीति
लेहि· कारनमेतिहितयहरनकीन· हेदुष्टकरेसबमानहीन॥ क
बिसबाचाबल्लतमुषतेसुनिअप्रीयबैन· इहाउपज्योकुकमनिचितअ
चैन· अथबदनचरनतुवलिषतआप· परिनीरनयनअंतरसताप·
चढिउरथस्वासमुधिरहीनचीर· उरकंपरोमउठीयअधीर· इहपाइ
यामनअतप्राय· अकुलाइकुललीनउगाइ॥ श्रीकृष्ण लबाचा॥ कछु
कहेबचनहमहासिकाज· अपराधछमासोकरहुआज· यहउ
चितग्रहाअमधरमआहि· जनकालाछेपनकरतजाहि· पुनिज
हिहासिकुकमनिपुनीत· बिधिजुकतबचनबोलीबिनीत॥ रु
क्मनीबाचा॥ तुमअंतरब्यापकहोअनंत· तिहिजानतसबकेहृद
यतंत· बिधिबिलसरूपमहिमाबषान· सबकेतुमरीसरहोसमा
न· ऐसीअभागकोत्रीयअग्यान· अबिलेसतुमहितजिबरेआन·
श्रीकृष्णबाचा॥ तनयंसतिहारेसुनहुबाम· कीनोजुकलोपूरन
सकाम॥ इहा॥ कीनोत्रातबिरूपक्रम· मारिसेनमानतदपि
तुमहमसोतहां· मननहीकस्योमलान॥१॥ कारनकरनसम
थकीय· प्रेमकलहसुषपाइ· प्रनुनरहरइछाप्रबल· सुरनिअ
गम्यसुता॥ इतिश्रीभागवते॥ दसमस्कंधे नाम्नाबारह
ट नरहर दासे नाबिरचितं॥ ८ श्रीकृष्णस्य कमनीसाथिमोध
रा॥६०॥ कबिकु॥ इहा॥ गनीआम्पटरागनी· बयगुनरूपब
षान· सोरसहसअरुयेकसत· पुनियेबरीप्रमान॥१॥ येकपे

कन्नीयकेउदर: दसदसपुत्रसुदेस: इहिक्रमसंततिकोउदय: जदपिहै
जोगेस॥१॥ग्रेहसथितगजगामनी: येतीजदपिग्रनूप: मोहनकेजीतनम
नहि: लोनसग्रंथसरूपा॥२॥ग्रथम रुक मनीकापुत्रबर्नन॥छंदपद्धरी॥प्रदु
मनिबरुबिद्याबिनीत: पुनिद्वितीयचारुदेसनपुनीत ऊवचारुदेस ग्रूच
रुदेह: पंचमसुचारुग्रकृतग्रदेह: हैचारुगुप्तपुनिचंद्रचारु: नहचारुचं
द्रसुबिचारुचारु: यहक्रमजुरुकननीपुत्रयेह: दसजानकुकबिजननिसं
देह॥ ग्रथ जमोनीपुत्र॥ इकनयोसांबरुजोसुमित्र: पुरजितपुनसतजि
तबिग्रेबिचित्र: कहिबिजयसहसंजितचित्रकेत: बसुमानद्विएकुतुर
नविजेत॥ सतनांमपुत्र॥ नोप्रथमनांनरुजोसनांन: सुरनांनग्रगटचा
थोप्रनांन: मांनकुसुतपंचमभानुमांन: ननिषधसयवकमचंद्रनांन:
नरब्रनांनरतिनांनरूप: श्रीनांनदसमप्रतिनांनरूप: मुरुकमसत
नांमांपुत्रग्रांन: पंडितकबिजांनतसबप्रमांन॥ कालिंदीकापुत्र॥ग्रयो
नांनसुचंद्रसुसीलरूप: ग्रकुबेगवांनचित्रगग्रनूप: वृष संकु ग्राम ब
सकुतिवीर: सुतकालिंदीकेदससधीर॥१॥मित्र वृंदाकापुत्र॥ सुति
प्रथमसुतीय कबि हकबीर पंचमसुबाहुरनसहबीर: मिलिसांनदरसग्र
रुपूरनमास: पुनिसामकदसमेजगप्रकास॥ येसत्याकापुत्र॥ पहिलोम
योबगनिगात्रबांन: बलप्रबलसिंघउरधगसुजांन: महसकतिउरजस
हसहतमांन: ग्रपराजितदसवोबलग्रमांन: सुतसत्याकेयेतेसुजांन: प्र
तिमासरूपबिद्याप्रमांन॥ नग्नकापुत्र॥ हकग्रारकग्रनिलनलबंस
बीर: धुरंधमलनदबरधनसधीर: महिसियबनिपुनिपवननांम: पुनि
कतपुत्रनग्नासनांम॥लछमनाकापुत्र॥ सुतनोसंग्रामजितदहत
सेन: संग्रामसूरप्रहरनसुषेन: ग्ररिजीतसुनप्रजयधामग्राइ: ग्रकुजोनि
दसमसातिकुसुनाइ: लछमनापुत्रऐतेसुलछि: प्रतिमाप्रनावपूरनग
तछि: उनसोरसहसमहमुषिऐक: रोहनीनांमबिनताबिबेक: सब
हिनकेदसदसनयेसुजांन: इहिनांतिपुत्रसंततिप्रमांन: ऊवयेक
लाषइकसहिजार: क्रमजुकतग्रसाऊपरकुमार: परदमनिकबु
रुकमणीपूत: ग्रनुरधपुत्रताकोग्रकूत॥१॥ग्रथग्रनरधबिबाहजा
चंसाकीनीन्नातजांनि: मनग्रपनेरुकमनिहेमांनि: रुकमीतबपु
त्रीसुंनसरूप: ग्रनुरधहिदीनीग्रतिग्रनूप: सनमधनिकरजदिपस
मांन: पुनितथाबचनकीनोप्रमांन: रनकूमिनगरकीनोरसाल: बं
निनामनोजकटग्रतिबिसाल: बिधिजुकतरचनताकोबिबाह:
ग्रारसोरुकमीग्रतिउछाह: बिबहारबंसकीनोबिसेस: घारिको
लगनपठयोसुदेस: ग्रनुरधबसतसाजीग्रनूप: नवमिलेसुजादव

चंदेरीराजथान: पुनि बैनबहिगपालनिप्रमानि: सुनतछनगुनत
नवयलरूप: अतुलितप्रतापप्रतिमाअनूप: बरबीरधीरसोचहि
बस: ससिपालनृपतिहृथीप्रसंस: जाम्योयहन्त्रातादईजाहि: तुम
बसौजाकिहिदेषताहि: वहछांडिबसोतुममोहिआनि: जाउबस
कहाअधिकारजोनि: नृपतापदहमकहंनहिनिदान: पुरुषाजजा
तिकीनोप्रमान: पुनिजरासंधतयंत्रासपार: इहाबसेसिंधुकेसा
नआइ: राज्यानिषेकनहीराजथान: चुवत्रमतरहतअतिहीतंयान:
जिनकेनहिमारगजानिजाहि: हमतोनलोकबिबहारमाहि: प्रतिमाग
नवरजितबयप्रमान: निसग्रहहमहिजोनैनिदान: बिबहारमित्रत
बयरबाद: करियेसमानसोतजिप्रमाद: निकामनिगुनकोतजे
नारि: पेनहिनमनोरथचढेपारि: आचारउचितछत्रीनियेह: सोतु
मकुजानतनिसंदेह: दुष्टनिकोदछाडदेहि: हचिचेदस्वयंबरजीति
लेहि: कारनमेतिहितवहरनकीन: हेदुष्टकरेसबमानहीन: क
बिसबाचाबल्लतमुषतेसुनिअप्रीयबैन: इहाउपज्योकुकमनिचितअ
चैन: अधबदनचरनचुवलिषतआप: परिनारनयनअंतरसताप:
चढिउरयस्वासमुघिरहीनचीर: उरकंपरोमउठीयअधीर: इहपाइ
यामनअंतआय: अकुलाइकुललीनउगाइ: श्रीकृष्ण बाचा: कछु
कहेबचनहमहासिकाज: अपराधछमासोकरुआज: यहउ
चितअहासअधरमआहि: जनकालाछेपनकरतजाहि: पुनिज
हिहासिकुकमनिपुनीत: बिधिजुकतबचनबोलीबिनीत: रु
क्मनीबाचा: तुमअंतरब्यापकहोअनंत: तिहिजानतसबकेजद
यतंत: बिधिबिलसुहमहिमाबषान: सबकेतुमरीसरहोसमा
न: ऐसीअभागकोत्रीयअग्यान: अषिलेसतुमहितजिबरेआ
श्रीकृष्ण बाचा: तनयमतिहारेसुनुकांम: कीनोजुकलोपूरन
सकांम: ॥ इहा ॥ कीनोत्रातबिरूपकम: मारिषेनमान: तदपि
तुमहमसोतहां: मननहीकस्योमलान ॥१॥ कारनकरनसम
थकीय: प्रेमकलहसुषपाइ: प्रचुनरहरइछाप्रबल: सुरनिअ
गम्यसुनाइ ॥ इतिश्रीभागवते ॥ दसमस्कंधे ताबाबार ह
टनरहरदासे नबिरचितं ॥ ८ श्रीकृष्णतकमनीकोसाथिमो
ह ॥६०॥ कबित्त ॥ इहा ॥ गनीआम्पटरागनी: बयगुनरूप
षान: सोरसहसअरुयेकसत: पुनियेबरीप्रमान ॥१॥ येक

कन्नीयकेउदर: दसदसपुत्रसुदेस: इहिक्रमसंततिकोउदय: जदपिहै
जोगेस॥१॥ग्रेहसथितगजगामनी: येतीजदपिअनूप: मोहनकेजीतनम
नहि: लोनसत्रयसरूपा॥२॥प्रथम रुक्मनीकापुत्रअनंतछंदपदारी॥प्रदु
मनिबकोबिद्याबिनीत: पुनिद्वितीयचारुदेसनपुनीत: ऊवचारुदेस: अरुच
रुदेह: पंचमसुचारुग्रालुतग्रेह: हैचारुगुप्तपुनिचंद्रचारु: नहचारुचं
द्रसुबिचारुचारु: यहक्रमजुरुक्मनीपुत्रयेह: दसजानकुकबिजननिसं
देह॥ ग्रथ जम्बोनीपुत्र॥ इकजयोसांबरुजोसुमित्र: पुरजितपुनसतजि
तबिग्रेबिचित्र: कहिबिजयसहसंजितचित्रकेत: बसुमानद्विएकुतुर
नबिजेत॥ सलनांप्रापुत्र॥ नोप्रथमनांनरुजोसनांन: सुरनांनप्रगटचो
थोप्रनांन: मांनकुसुतपंचमभानुमांन: जनिबहुमयपकमचंद्रनांन:
नवब्रनांनरतिनांनरूप: श्रीनांनदसमप्रतिनांनरूप: मुरुक्मसत
नांमांपुत्रग्रांन: पंडितकबिजांनतसबप्रमांन॥ कालिंदीकापुत्र॥ जयो
नांनसुचंद्रसुसीलरूप: अरुबेगवांनचित्रगग्रनूप: वृष संकु ग्राम बि
सकूतिबीर: सुतकालिंदीकेदससधीर॥१॥ मित्रबृंदाकापुत्र॥ श्रुति
प्रथमदुतीय कबि वृकबीर: पंचमसुबाहुरनजखबीर: मिलिसांतदरसग्र
हपूरनमास: पुनिसामकदसमेजगप्रकास॥ येसत्याकापुत्र॥ पहिलोम
योबगनिगात्रबांन: बलप्रबलसिंघउरधगसुजांन: महसकतिउरजस
हसहतमांन: अपराजितदसवोबलग्रमांन: सुतसत्याकेयेतेसुजांन: प्र
तिमासरूपबिद्याप्रमांन॥ नग्नकापुत्र॥ वृकग्ररकग्रनिलनलबंस
नीर: धुरधमलनादबरधनसधीर: महिसियबनिपुनिपवनांम: पुनि
कतपुत्रनग्नासनांम॥ लक्षमनाकापुत्र॥ सुतजोसंग्रामजितदृढ़त
सेन: संग्रामसूरप्रहरनसुषेन: अरिजीतसुनप्रजयधामग्राह: अरुजोनि
दसमसातिकुसुनाह: लक्षमनापुत्रऐतेसुलछि: प्रतिमाप्रनावपूरनग
नछि: उनसोरसहसमहमुषिएक: रोहनीनामबिनताबिबेक: संब
हिनकेदसदसतयेसुजांन: इहिभांतिपुत्रसंततिप्रमांन: ऊवयेक
लाषएकसहिहजार: क्रमजुकतअसाऊपरकुमार: परदमनिकबु
रुकमणीपूत: अनुरधपुत्रताकोअकूत॥ ग्रथग्रनरधबिबाहजा
वंताकीनीन्नातजांनि: मनग्रपनेरुकमनिहेतमांनि: रुकमीतबपु
त्रीसुनसरूप: अनुरधहिदीनीग्रतिग्रनूप: सनमधनिकरजदिपस
मांन: पुनितथाबचनकीनोप्रमांन: रनजूमिनगरकीनोरसाल: बं
निनामतोजकटग्रतिबिसाल: बिधिजुकतरचनताकोबिबाह:
ग्रारसोरुकमीग्रतिउछाह: बिबहारबंसकीनोबिसेस: घारिको
लगनपठयोसुदेस: अनुरधबसतसाजीग्रनूप: जबमिलेसुजादृ

नृप नृप मिलि रामकृष्ण रुकमनि समेत : बनिकवर प्रद्युम्न निरुद्ध बिजेत
रहौ न जब हितौ रन हि आए : सब जाति करी प्रजा सुजाए : हित जुक्त तजयो
न्या बिबाह : अरु करे बेसघर घर उछाह : कालिंगराज आयो प्रकास : जुत
पति देस कलिंग जास : समदंत बक्र राजा असाथि : पुनि करी बैर बसमिलि
उपाथि : मन कपट रुकम सो करे मित्र : तिन सबै बताये मरम तंत्र ॥ दंत ब
क्र आय हरि यत संकरषन अनंत : दुर बिसन द्यूत यक हंदुरंत : मिलि
कर कुअह क्रीड़ा कुमार : सब रन के जीते सो जसार ॥ कबि कबाच ॥ बलदे
व रुकम छल बल बिधान : मिलि कर तद्यूत लीला समान : सत प्रिय सब
कीनो समेत : पुनि सहस अयत रूपक प्रजंत : तहां रुकमी जीतो रुवतीन
कालिंगराज हसि तरक कीन : करि सकरषन मन महा रुषाए : लष कोटि र
व कीने लजाए : जीतो सुदाव बल नद्र जानि : रुगरुकमी तब ही कपट गनि ॥ स
कल मबाच ॥ उहफ्रेग बोलि कीनो उपाउ : देखो यह मेरो पस्चो दाउ ॥ कबि स
पुनि कस्यो कोप मन महा बीन : दसको टि दाव बल नद्र दीन : पुनि यह
व बल देव पाए : रुकमी सु कपट बोहे स्यो रचाए ॥ रुकमी ॥ निहचै सदा
मेरो निदान : पहुंचि सा बिदेकीय प्रमान : जब सनामो रुय रुकपट जा
नि : बस धरम नद्र आ कास बानि ॥ आकास बाणी ॥ यह बोलत है रुकमी
अम्पाउ : है देव साषि बल नद्र दाउ ॥ कबि ॥ नन बानि तहां कीवे निदान
पै करे नाहि रुकमी प्रमान : पुनि हसे सबै मिलि हसे सबै मिलि के कुपात्र मां
नो बल देव हितु छमात्र : कहि तरक बचन दुरबाद कीन : मुषि नीति धरम म
न महमलीन : बिधि ससत्र असत्र मिलि अहसंग : ये आहि राज बिद्या अन
ग : तुम गए स्वरावु बन निबास : नव नाहि राज बिद्या अभ्यास : यह दुष्ट ब
चन रुकमी उचारि : रिस करी मूरु मूसल निमारि : बल नद्र बिजय नयेक
रबान : पुनि कवर रुकमत हृदये आन : तेई दंत बक्र के तोरि दंत : सो ई ह
स्यो कुंतो जिन करि असंत : अनेक दुष्ट जे मिले आए : पुनि गये सबै नृपति पलाए
रुकमनी कछु न बोली रिसाए : पुनि प्रगट बंध को कपट पाए ॥ रुहा ॥ कस्यो
बिजय मास्यो रुकम : सहित बंधु दल साज : कुल प्रधारे हरि को : राम सह
त जदुराज ॥ ७ ॥ इति श्री भगवते महा पुराणे सकंधे भाषा बार हटनर हर
हासे न बिरचितं श्री कृष्ण लं तति कथनं ॥ अनरुध बिबाह ॥ रुकमी ह
मार्ब ध्या ॥ ६ ॥ कबि ॥ रुहा ॥ बरो पुत्र बलि राज को : बानासुर तिह
नाम : कुली दैत रुकस हसकर : सुर जीते संग्राम ॥ ७ ॥ हर आगे नाचे हरष
तु जाउ गए अनीत : बाजित बावे सो बिधि : अरगावे हर गीत ॥ ॥ रुद्र
बाच ॥ छंद पधरी ॥ हर कहो तहासु प्रसन होइ : कहि मांगि अबै बर दान
कोइ : ॥ बोल ॥ हर हे कुनगर मम हेरु धार : प्रभु कर कुंत हार हा प्रवा

कविरु॥ पुनि कस्यो रुद्रसो ईश्रमन्त्र: निसि दिवस करत रक्षा निदान॥ बाणउ
हरसो बाणासुर जो रिहाथ गरब बस करी इक बहु रिगाथ: हैनाथ हाथ मेरह
जार: तब मो कहँ तिन को लगत नार: जग मह समर थके उ मैं न जान: अति बली
जु रे मो सो जग आनि: दिग्गज समेत दिगपाल देव: भय भागि गये मुझ जानि नेव
हत चूरन मैं परबत अनेक: कालुन हकीन लै कटेक: जग दीसत तिनु महि
जुध: प्रनु लरहु आनि मो सो प्रसिध: भुज हे भुजात मुहलगत नार: अब क
रहु देव आप उदार॥ सिव बाच॥ हरस सेत बेषल गरब दे षि: बिस्वस बच
न बोले बिसेषि: तब ग्रेह धजा गिर अकसमात: तब जानियहु सुभ बात: करि
ये प्रमान तब सिध काज: उपजो जुध करता को उ कराज॥ कबिरु॥ पुनि करेष
तीछा धजपात: बासुर निसि बंछ्यो यह बात: सब भयो रुप को जनम जानि: प
रिग्रह समात ग्रह धज प्रमानि: बाणासुर के सुंदर सरूप: इक उषा नाम पु
त्री अनूप: निसि अरध स्वपन सो वत नवीन: अनुरध स्वपन देषो अचिंत: सु
षसयन पुरुष देषो सरूप: अति लछन गुन प्रतिमा अनूप: उन रीय रोम उरक
पराइ: सो स्वपन दरस सो तिक सुनाइ: इहो जागि उठी देषो न और: इह रात न
हीं जीयक कुठौर: इक भयो कहत चाहति दिगंत: रेकह गयो तब ही कंत: बि
बरन कपोल तन छीन बाम: बिरहातुर उर मन्य बिराम: कूंतांकुनाम मंत्र
धिकार: पय बाणासुर को चित प्रकार: मंत्री की कंन्या उषा मित्र: तिहि नाम
चित्रलेषा बिचित्र: सो रहै निरंतर उषा संग: उर उपजी चिंता दे षि अंग: चि
त्रलेषा॥ सुरकानी चंपक मन कुमाल: है उषा देहु तब कवन हाल: य
वलो कि दसा यह उषा अंग: पूछेजु चित्रलेषा प्रसंग॥ उषा बाच॥ कुनिसा उ
रध सो वत निसंक: प्रतिरंग पुरुष पसज्या प्रजंक: वहि समय स्वपन मैं उ वि
अनेक: अबिलोकी सुंदर पुरुष एक: करि जतन नि हारे धाम कोन: कित
गयो न जानो कुतो कौन: आजानबाहु अनवरन अंग: अति दिष्य नैन मनु
छबि अनंग: बन माल कंठ उरब निबिसाल: भुज बाल दंग उतंग काल: य
हि प्रतिमा मैं देषो जु आहि: तब ते मन रहत फिरत ताहि: पाऊं कैं ता कहुं कि
हि प्रयोग: कै समर दसा दसमी संजोग॥ चित्रलेषा॥ इह कलो चित्रले
षा जु एह: सषि छाडि अबै मन को संदेह: है पुरुष जु ये त्रय लोक माह: ब
लछल करि अनोपक रिबाह: सषि करि कुतव अनिलाष सिध: पै वचन
मानि मेरो प्रसिध॥ कबिरु॥ जग कुतेजित जदुवंस जाति: नवलिषे चित्र
प्रतिमा सजाति: नृप उग्रसेन बसदेव नाम: सुत गोरद हू बलन रस्याम:
प्रद्युमन सिंग अनरध पूत: इत्यादि बीर चित्रे अनूत: ये चित्र उषा कहुं दे
षे आनि: पुनि कलो सषी या महा पछानि: सब चित्र उषा देषे सुनार:
प्रद्युमन चित्र यत्न सुपार: अनुरध हि देषो जु बे आनि:

प्रतिमांप्रमानि: वसप्रेम चित्रलेषा विसेस: पथगगनचारिका कीपुरवेष
पुनि सोतसयनअनुरधपार: इहि जोगसकति आन्यो उगए: रतिगरनप
रहमनिसुतअरेह: अनुरधनानसाषिलेकुरेकु: वसप्रेमकस्यागेयरवस्या
कु: इहाकरउषामनहीउछाकु: रसरीतिउतेजोवनाकुर: अरधरसमुने
वाकरेगुद: करिरूपतासमोहितकुमार: वीतेजुकालसोनहीविचा
स्कसमेगोषतरहरअनान: पुनिपरपुरुषपतादूरपान: कचुकिनिसुरर
योकुवेस: पुनिकीयप्रमानवहानरप्रवेस॥ कचुकीवाच॥ प्रभुकवत्यि
हनोतनप्रकार: सबमरमकंचुकीकहिविचार: कवि सुनि: पुनिकैनाह
यनअसुरईस: वससोचचितहाधुन्योसीस: अकुलाएपुत्रिकायेहअ
पुनितहावसतअनुरधपार: सोकामपुत्रताप्रसमसरूप: अवलोकिअलोकि
कछबिअनूप: विसमोहकस्योतवचितविचार: सुनथाननहमासुतमं
चार: बांणबाचा: पुनिकुलोदत्तनिगहितेकुपाप: यहसुनतउग्रोअनुर
धआप: कबिकु॥ लेपरियप्रहारेसुनरसूर: चितनंगनजेकोउदवे
रिवधनअनुरधकारेकैयोदुरगमवीर: उषाकरतिअतिसोकउर
उपारनओर॥१॥ इतिश्रीभगवतेदसम सकंधेभाषाबचनिका
रहरदासेनाविरचितेअनरधअवरोधवर्णनंनाम॥ कबिकु॥ हरिअनु
रधहिबीजतअसुर: तहांचवमासबितीत: कछुनपायोसोधकछुन
देचितनयनीत॥ आयेमुनिनारदहरहि: बिद्याबिनयबिसेस: वि
कालगपतपसअतुल: कीनोपुरहिप्रवेस॥ छदउग्रेरा॥ द्विजआवि
हरसनदीन: प्रभुपूजिचरनप्रवीन: इहबेग्रिकलअजेव: द्विजमु
गमिलिजुदेव॥ श्रीकृष्ण॥ अनुरधगोअपात: तिहिसोधसोकी
नात: कहिरिषहिकृष्णकुमार: यहचितसोचअपार: अबमातच
रिबिहार: पुनिकछुसोधनपार: तुमतेनकछुअपात: तिहिकवा
गवनतुरंत: तहाकहेरिषहतंत॥ नारदआछदहेअषी॥ श्रीकृष्ण
रपतनएकसुंदर: राजदयेतकरेबानासुर: बलिकेपुत्रअनीतमत
बल: दुरगमथानसंगआसुरदल: रिसकरिबिहिअनुरधहिरोक
बिषमकरमजबकवरविलोक्यो: हैअनुरधओणितपुरमांही: ना
कोनहप्रवेसजुनांही॥ कबिकु॥ देजुजधानआदिदेजादव: बल
वरनसाजेरथअतिजव: संगबलदेवस्यामघनसुंदर: प्रद्युमनिम
मजयजुधपरिकर: चलीप्रबलसेनाचतुरंगन: बलषयालहदस
अहोहनि: प्रातआनियेस्योआणितपुर: बलदलसाजिउग्रोवाण
सुर: निकस्योकोटयारतेनिसचर: सजियाकोटिसग्रायेसकर॥

बषनचरेकरुवरुबजावत· फावतरोसत्रिसूलफिरावत· रणप्रतिन
रलोचनरोषारुन· दुंदुभुधजटतनयेदारुन· रुद्रकुलसोनयेमहार
न· मुहचदिकारतकेयअरुप्रद्युमनि· सातिकजादवअरुबाणासुर· स
बकुवारबाणसुतसमसर· येकरतैबलदेवजुओपे· कूपकरनकुंभांकस
कोपे· इहिक्रमयोरजुधनोअैसो· जगतविरोधसुरासुरजैसो· इहांअजत
रुद्रगनआये· इनहिबिलोकिअमरअकुलाये· ऋतपिसाचप्रथमगरुघ
कगन· कूषमांडवेतालसकारन· राक्षसब्रह्मविनाइकरेरव· धातुय
नडाकनिकरिठेरव· इत्यादिकसंजुगनअद्भुत· जथासरूपदुष्टअ
यसजुत· जुधसारंगधनुषहरिसाजे· नवगनसहिनमाररनभोगे· संजु
ब्रह्मबानसमुहायो· बिष्णुबानसोकुलबचायो· नवजबमारुतबा
नसंजास्यो· नियतकुलगिरबाननिवास्यो· अगनिबाननतेसचलाये·
बास्यिानकरिकुलबचायो· रुद्रबानतबसंजुसंजास्यो· बिष्णुबाण
सोंकुलनिवास्यो· तहांजंभासारकहरितांस्यो· यातेसंकरअतिअल·
सांस्यो· निहत्योप्रद्युमनिपेदलनाइक· सांमकारतककोतनसारक· घ
ल्लनयोमयूरसहतघन· तबसेनानीजाजिबजोतन· कूपकरनकुंभ
रुसकारन· बलमूसलहलहतेमरेरन· रक्षसमंत्रीउनयसंघारे· ज
गिसंगीसोनसंजारे· सातिकजादवअरुबानासुर· प्रतिजटजिरतज
जुतेपरसपर· जुगमंत्रीजरुजगजोने· इहांबानासुरअतिअकुला
नि· सातिकमुहछांडेबानासुर· इहाकुलमुहचयोसुआसुर· तहासत
पंचबानसरसजीय· गहरसबहआसुरगतगजीय· इहाकुलइकबान
चलायो· वहसबधनुषकाटिफिरिआयो· सरुजोमोंब्योवसदेसुत· सा
रथरथबेधोहयसंजुत· समहरविरथनयोबाणासुर· इहारनवासकू
कपरिअतुर· मायानिपुनबाणकीमाता· बिद्याअसुरबिबेकबिष्मा
ता· इहारनरुमिनगनसिरआई· प्रनुअवलोकीलजापाई· नयेपरा
सुपकुलनयंकर· इहिबिधिबाणललोकछुअंतर· पुनिअवकासअस
रजवपायो· इहांनाजिअरुजीतरिआयो· इहाउसजुरुद्रउपाई· चतुर
बाहुजुरसीतचलाई· जुरहीजुरहुविग्रहगांस्यो· माहेस्वरीपरानवम
स्यो· आनिसरनहरिग्रसोआतुर· जथाप्रकारकरेवदनजुर· कृपानि
धानसरनहितकीनो· देवअनयनवजुरकोदीनो· आपकुलदूरी
तवअैसो· तपजुरसीसमानिलरैतैसो· यहप्रसंगजुसुनेसुनवे· पे
सोईचुरुषनजुरनयपावे· अबबानासुरबकुस्योआयो· साजिसुर
थरनरोषसवायो· इहजोईसजेनिसाचरआयुध· जथाचक्रतक
ईसुजाजुध· स्यामचतुरनुजकीयबाणासुर· सहसनुजा·छ·

समहर: कटनलगे जबे दोऊकर: सेवक हित आये तब संकर: कृष्ण
जबनेव प्रणपति कीने: देव अनय आसुर कहदीने॥ श्री कृष्ण जाच
आगे होप्रहलाद उधास्यो: मेताके हित या हिन मास्यो: अति हीगरब
आसुर उर: कारन तिहि कटे या के कर: बिग्रह इन तुम सो जब थास्यो
तातें तुज हति नारउ तास्यो॥ दो॥ कबिरु॥ नारथराषे चारि तुज:
सचर सहसन सार: दीनबंधु दुष्ट निदमन: सब दिन संतु सहार॥
देऊ अनुग्रह गम अगम: सब बिधि सामसमथ: कटे हाथ जु बानके
रिदीनो सिर हथ॥ कंसा संग अनुरथ कवर: आनि दयो असुरेस: पे
त्रबधू लीने प्रगट: प्रतु कीय ग्रेप्रवेस॥ आतसमे ग्रिय हपरख:
चे सुने बिसाल: कहुन पराजय होइ कछु: कृष्ण कृपा सब काल॥
यति श्री जगतेह सम सकंधे नाषा बर हरनर हरहसे नाबिरचि
अन रथ बहे मो बन॥ बाण सुरजु ध बरण जो नाथ॥ ६३॥ कबिरु॥
दो॥ कृष्ण देवके देक वरा॥ अरु जादव सुत आन॥ करत जथा कमरी
तिकुल: बन आषेट बिधान॥ त्रमत त्रमत अति श्रमत थो: महा
घन बन माह: आनि नये ऐक त्रह: हे दादु मछाह॥ २॥ षोजत जि
तलित जल अषिल: पीउत नये जु प्यास: इह देष्यो अति कारुक: कृ
पमाऊ कृकलास॥ छंद पधरी॥ इह सुनत मात्र सब बाल आर: कृ
कलास बिलोक्यो महा कार: इह कलो पर दमनि बचन यह: हा
सर कृपते कादिलेहु: बसदया बाल उदिम बिचारि: दिदर जु कूप
के मध्य डारि: तन बांधि सरर के रजु तानि: नहि निकसो सब हिन
हारि मानि: इह बाल छांडि तिहि ग्रेह आर: सो मरम कनेक कृष्ण हि
सुनार: यह सुनत कृष्ण आये अजेव: दीनके बंधु देवाधिदेव: पुनि क
दनके उदिम प्रमानि: प्रतु गहो सरर सो बांम पानि: इह छुवत मा
त्र कृकलास यह: तन पलटि भयो सो दिव्य देह: पहलो सरूप पाये प
मानि: प्रतु अगे गहे जोरि पानि॥ श्री कृष्ण जाच॥ हसि कृष्ण देव पूछे
जुताहि: यह देह कहा तुम को न आहि॥ नृप जा सुनिये मम प्रेरबना
मस्याम: इह्वा कबंस नृगराज नाम: आतमा रूप सब के अनंत: तुम
तेन कछू हे दुस्यो तत: कहि हो तथापि कारन कृपाल: तुम दया सिंधु
ननि दयाल: मिलि सयन बुरन षित्रमेन: रजक निकाजे तेन मिरेन दीनो
मे ऐती थेन दान: सुंदर सब छप रिकर समान: इक समय दई मो द्विज हिग
इ: सो चले हा किलेय ह सुनार: इह पथ जात को उ बिप्र आनि: पुनि क

रीधेनअपनीप्रमांन: द्विजमेरीमेरीकरेदोर: करिस्वांतिनवरतैनहीकोर:
गादसोबिप्रदोइलीयेगार: त्रैगरतमेरेद्वारआर: गहिलायोबिप्रजुवीच
गार: सोकारनमैंप्रगौसुनार: तिहिबिप्रकसौपूरबवृतंत: मुहिदईगार
तुमपुनिनिमंत्र: ग्रहलीयेगयोकृयहेगार: पुनिछुरीतबैआरपिलार: य
हपहचांनीसेसुपेआज: धरिलयोकृराजाधिराज: गहिदीजैमोकहंयहेगा
र: मैंप्रथमकालहीदानपार॥ नृपउ॥ अनजांनियहैहमदईआज: अपरा
धछमऊममकैअकाज: द्विजदेवधेनयहछांडिदेऊ: हमतजकुलसर
कअवरलेऊ: बसक्रोधपरेहविदोऊबिप्र: छिटकारगारगयेऊछिछिप्र
मिसिरहीसुरनिकेऊथमाहि: निहचैमैसोऊलिषीनाहि: धरमगतिआ
हिप्रभुषगधार: सोकरैदपतिछनछनसंतार: पुनिकरमजोगनावीप्र
मान: प्रभुअवधिपारमैलजेप्रांन: लैगयेकृतमोहिदेतमार: दुषसहत
गयोजमराजदार॥ धर्मराजउ॥ हितबचनधरमकहिप्रसनहोर: दु
षसुषहैप्रांनीसहतदोर: पुनिहौदिघअरुअलपपाप: इनमहकहानु
जिहोप्रथमआप॥ राजोउ॥ निरधारकस्योमेयहनिदान: पहलेकृनजे
कृअघप्रमान: उहाकरमजोगउतपनऐऊ: देवतहालहोकृकलासद
ऊ: मैरलोअबयिलकूपमांऊ: सुषजांन्योनाहिनोरसांऊ: कोउउ
हितनयेसमकरमकाजे: अबिलेसकस्योउधारआज॥ श्रीकृष्ण॥ अब
पापअतआयोप्रमांन: सुरलोकधरमबिलसऊसुजांन: अबिलेसक
लोजबबचनयेह: सुरपतिबिमानलायोसनेह: करिबंदनप्रभुकहेन
मसकार: आरोहबिमानकीनोउदार: सबहिनसुनाईयोकलोसांम:
ब्रहमअंसमहादुरजराबिमांन: अपातनजेजोब्रहमअंस: निरयगतहीन
पुरुषानिसंस: करिबिलजोसुगतेअंसकोर: सोईहोनहारदसपतनहो
ई: सबमांनिलेऊधरमोपदेस: ब्रहमअंससदाबरजितबिसेस॥ रुहा॥
सोसबहीदेषोसुमोः यहनगकोआप्यांन: करमधरमउपदेसकीयः
नरहरप्रभूनिदांन॥१॥ इतिश्रीभागवतेदसमसकंधेभाषाबारहदन
रहरदासेन बिरचितं नगआप्यान॥ ६४॥ रुहा॥ बरनगोरनूमन
बसन: संकरषनतनसोह: कारनगोकलनदकेः आयेरथआरोह:
मिलिहितनदादिकमहर: इहाजुकमजुनआर: जथानयनआनंदज
ल: नयरोमांचसुनार॥१॥ छंदपधरी॥ इहबैमेंदिरसुषदआनि: पुनि
कुसलपरसपरकहित्रमांनि: गोपिकाआरसबग्रेहग्रेह: हसिपूछ
तिनईमनकोसंदेह: गोपीजापुरबनिताबहुतचरितबोम: सुधिकर
तुहमारीकबऊसांम: पितपुत्रतजेकुलग्रेहकाज: जिहितलोकव

थिवेरुलाज: सोगयोहमारोहांतिसंग: त्वजथाकंचुकी विषकुंग:
नकोजोकालवितीतहोइ: सोजोनतग्रानसाविसोइ: कहिकृष्ण
तिवचनकहिकहिग्रंत: समझहोगोपीपरमसंत: मिलिउनेवबृ
वोम: नहिमोहनजिनकोसमोनोस: इहाप्रगटनहीगोपीग्रनप: वृज
मांहसुलछनगुनसरूप: बलदेवकरतितसांवीलास: रमरीतिविवि
धिविधिहासरास: इहारवेरुनग्राग्रसेपग्राकनीरततरतरवि
सेष: पवनचदिगंधविहिकीयप्रचार: बलदेवकरतजिहिवनविहार
बलतनग्रारतहोगंधगांन: पुनिकरतगोपिकासहतपांन: बनिग्रवर
येकबुंदतविसाल: मिलिगंधपुहपवनतिमाल: गोपिकासहतकरि
रासगांन: ग्रमनयोतहरपतिसमांन: प्रमेरवुरतनोप्रकास: बार
लीविवसलोचनविसाल: इंछाजलक्रीडानुरग्राए: बलदेवसंजन
नोबुलाए: सरितानहीमांसोवचनसोए: हलकरग्रनादरगरवहोए: उत
रतवजमनारीयग्रजांन: मदमतवचननाहिनप्रमांन: सोतपोवचन
बलहरयमत: मतधारकरुजमनोमत्त: बलदेवकोपकीनोक
रात: हलग्रग्रनेदिग्रोनीविहाल: सोदेखोकिंपतसारि: इहोग्रा
निचनलगीग्रथाग: जनु नाउ बसदेवसुवनसेषावतार: तुममरा
वाफुचरजितविकार: ब्रह्मकधरिहनग्रग्रवार: सुनमेग्रनावजासो
मधीर: ग्रपराधछमाकरियेग्रनंत: समनावसदातुमसवनिमंत॥
कवित्त॥ नरहरग्रनुयादिनतेनवांन: कालिंदीकरयननोमकीन: हु
लीजावारिविहारकरि: ग्रमुदासहतप्रमांन: सुंदरग्रालपनवमन
हरांकमलादयग्रांनि॥१॥ नदीवितीतविनावरी: बनवनकरतविला
स: नरहरप्रभुलीलानिरषि: सुरमुनिनयेमहाम॥२॥ इतिश्रीम
गवतेदसम सकंधेभाषाग्रनुनरहरदासेनविरचितं बलदेव
कालंदीनेदनोनाम॥१५॥ दोहा॥ देसकरुषग्रमेषदल: कामी
पुरीमकांन: राजकरेतहाविजयरन: नृपयोदकयुनांम॥१॥ दिनपल
योपगयोग्रहिन: ग्रकुनदीबुधिग्रहत: पुनितिहिद्वारवतिपुरीपु
रुषपएमत॥२॥ चक्रादिकग्रायुधचिह्न: धरिहरिकेग्रनधोष: क
मीराजग्रग्रनकरि: षयकारकतनरषे॥३॥ छंदकग्रषी कासिराज
जोबचनकहायो: यहसुनिकतवारिकोग्रायो: उग्रसेनकीयपरि
षदउतम: कलदेवजुमिलेजथाक्रम: चर्चाधरमप्रसंगचला

ये याही समय रुतते आये: कासिराज के बचन सकारत: तहां कृष्ण से
कहे रुतते न ॥ पौंड्र कवाच ॥ नारायन के चिन्ह जु निरमल: वालबु
धि तुम धरत कौन बल: जैसे बकु मिलि बाल समाज: रमत करत क
कौ राज: जथा चिन्ह राजा के जानत: ताकहं मन बच करम प्रमानत
: अवधि पाइ ते सिसु ह्वाये: वृथा नये नृप चिन्ह बनाये: यो ही
तुम नृपता अभ्यासत: पुनि नारायन नाव प्रकासत: यह सब छांडि चर
नम आवहु: पूरन कितो करम फल पावहु ॥ कृष्ण जाता कहे कृष्ण द
यो हसि उत्तर: पेलवक कथ मंत्री पर: बल उनके बल चढि चढि बो
लत: लघु चीटी जो नन्नक हंतो लत: बलति हि कुल सहित फूटे चष
नयो चहत है स्वानस्यालनष: सजे दल बल सुपे सुहावत: ये हमतु
मपाछे ही आवत ॥ कबिक्ष य हसुनि रुतस्वामि पै ह्वाये: सबे कृष्ण
के बचन सुनाये: बासदेव सबसे नवनाये: अति सक्रोध कासीपुर
आये: पौंड्रक को अति बल सेनापति: मित्रसुदरसन नाम महामति
वह आयो तैत्रेय अहो हनि: कुवडे सेन ऐक त्रैबक हनि: कासिराज जे
चिन्ह जथा क्रम: करि करि कपट बनाये कृत्रम: संख चक्र अरु गदा
परम सन: तहां सारंग पीत बासन तन: मनि मुकुल ताकंठ बनमाला: बन्यो ग
रुड तहां ध्वज बिसाला: कृतम चिन्ह बिलोके कांन्हर: बेष अनेक करत जो न
टवर: कृष्ण हसे ति हि देषि अचानक: वृथा चिन्ह अरु गेवांनक: धरि ध
रिय ते आयुध सब धाये: सुपे अबाहुत निरत सवाये: हनि हनि असत्र स
त्र सब हारे: मोहन रनते रतन टारे: इहां कृष्ण राजनु हसु ह्वाये: पुनि म
थव अति ही सुख पाये: कासिराज के ह्यरथ कारे: पुनि हति बांन ध्वजा उ त
पारे: सम हर बिरथ नयो कासेसुर: स्यामचक्र धारा छेद्यो सिर: मसतक से
बानन सो मास्यो: उ मरा रुक्ष ते तहपुर रास्यो: पटरानी पति सिर पहचां
नो: प्रलय कार सो काल प्रमानो: कस्यो नास कासेसुर कंदल: मित्रसुदरस
न सहत महाबल: भरि हरि चिन्ह सम रति धारी: पौंड्रक मति सारूप सपारी
रहा कृष्ण द्वारावति आये: बिजय सुघरिय रिब जे बधाये: कासिराज को पुत्र
कीयाकर: नाम सुदक्षन नयो नरेसुर: परयागत संपति ति हि पाये: नृमिछ
त्र चामर मनन नाये: पाइराज ति हि बयर प्रकासे: अति करि क्रोध जु रुद्र उपासे
करी उग्र तप साहित संकर: पुनि नये संतुष्ट्यो लरयापर: मांगि जु पै रुद्र ताम
नमानी: बोले रुद्र दयाय ह्वानी ॥ सुदक्षन बाचा नये सुप्रसन्न जु पै रुद्र ते सु
र: बिस्व बिदित मांगत होय ह्वर: अनुतुमतीन काल गति पावै: पिता हतक
बयजत न बतावै ॥ सिव बाच ॥ सिव कहि हो मजथा बिधि साधो: करि अति
नगति अग निआराधो ॥ कबिक्ष नृपति हि अग निहोत्र वृतलीनो: कस्यो

होमहिजहोताकीनो॰ अगविकुंडतैं निकस्यौ ऐसो॰ जगदाहकप्रलयानलजैसो॰ तप्ततामृतनसिषातीनतस॰ भृकुटितिरेषबिसेषरोषवस॰ ममतक धुनतमूरकाढीमुष॰ राजितदंतकुदालकालकष॰ चाबतअधरनिरमनि सचाला॰ क्रूरदृस्याअतिरूपकराला॰ तेजवंतअतिधरनिकंपावत॰ जिहिय चितवतदृसाजरावत॰ इनद्वारावतिओरचलायो॰ अतिरिसमुपेजरावे तआसो॰ तपतपवनआगमतयोताको॰ जिहितनलगतस्फुरतसतजाके जाहिंत्रोहिपुरलोकपुकारे॰ मृगजोत्रिसतदवानलमारे॰ हाहासबदसुनो ममसोहन॰ अनयदयोतयेषगआरोहन॰ कुलबिलोक्योअनलकराला जितितितनईगगनगतज्वाला॰ प्रनुतहाकारनअगनिपिछानी॰ मनरोईक्ष स्याय हमानी॰ कुलसुदरसनचक्रचलायो॰ धरिअगेतिहिअनलथकायो॰ इहाकेरिकासीपुरआनो॰ जास्योनगरसुरासुरजानो॰ दाहिपुरीसो चक्रसुदरसन॰ प्रनुपहआयोकरिपूरनपन॰ यहप्रसंगजोसुनेसुनावे॰ प पनसैसोपुनिफलपावे॰॥ दहा॥ नामकस्योकासेसुनप॰ दुगमपुरीकृतद हपाइबिजयनरहरप्रन॰ अमरनिनयेउछाह॰॥ इतिश्रीभगवतेदसम सकंधेभाषाबारहटनरहरहासेनबिचित्रपोद कराजोबधोनाम ६६॥ कबित्त॰ दहा॥ कपिमंत्रीसुग्रीवको॰ नामद्विबिदबलवान॰ सोनरक सुरकोसषा॰ नातमयंदनयान॰॥ बलनरकासुरकोअनषि॰ प्रीतमब यरप्रमानि॰ द्विबिदिदुष्टद्वारावती॰ करेउपद्रवआनि॰॥ छंद॥ ऐसरीजहां तहांग्रामनगरलेजारे॰ दिष्यसिलाऊपरगहिमारे॰ सागरपैगिउछारतजलअ म॰ महादुष्टबोरेरिषिआश्रम॰ बैसानरजलमेलिबुझावे॰ आश्रमआनिअनति उगवे॰ लैकुलबधूनिदूषनलावे॰ जहांतहांकपिग्रहीलजावे॰ पुनिरैवतनाम एकपरबत॰ पूरनकृजमहसोनापावत॰ इहिपरबतबलनदुआये॰ संगह जबिनतालीयेसुहाये॰ बलकोजानिअकेलोबानर॰ तिहिपरबतआयोअतिग तुर॰ सुपेप्रमतनहासंकरषन॰ गानकरतमिलिमिलिगोपीगन॰ निकटचद्रात रसाषनबीनै॰ कपितहासबदकिलकिलाकीनै॰ सबदअचानकसुनिसंकरष न॰ पुनिअतिक्रोधचलायोपोहन॰ बानरकूदिसुउपलबचायो॰ आनिबारनीक लसनसायो॰ नारिबसनआकरषोबानर॰ इहाकृजबिनताकूकीआतुर॰ संक रषनहलमुसलसंभारे॰ इहाकपिपादपसालिउपारे॰ चंचलकपितरसालिचल ये॰ बीचमुसलहनिसेषबचाये॰ कपिनप्रहारपरसपरकीनै॰ नटदोऊमहाबी ररसभीनै॰ बानरजोईजोईकृछ चलावे॰ नियतमारिबलदेवनसावे॰ जब निरवृछनयोबनजानो॰ पुनिकपिबाहुजुधप्रमानो॰ साषामृगतहांसिल सेंतारी॰ देवसुपेचूरनकरिमारी॰ पुनिकपिबलउरमुष्टिप्रहास्यो॰ कपिहलक रषिमुसलसिरमास्यो॰ प्रानगयोजयेदेहपरायो॰ इहाषलमस्योसबनिसुष

बानमारि करिकोपस्यामहनबिरथकीन पुनिछंदधनुषरथ
औरआनिसेसुनरचारि गहिलियोस्यामकोगरबगारि कैरवनिस्यामकोसे
टिकोनि अरथोमंदिरगदआनि इहानारदद्वारावतीआइ सोयहप्रसंगकु
लहिसुनाइ बिधिसुनीजबेयहवासदेव अतिकोपकैरवसोअजेव बलदे
वलिभोबिग्रहबिरुध जादवअकुकैरवउपजिजुध हसतनपुरगयेतबसातहि
न संकरषननिजआवधसमेत पुनिआगेदीयउथवपुगइ तिहिसंकरषन
आगमसुनाइ यहसुनतमिलेधृतराष्टआनि पुनिबद्रोहरषअतिहितप्रम
नि कीयप्रजाअरथाबहुप्रकार सबबेउकोरवमिलिसुदारा बलदेवउ
बलदेवकहतछत्रीबिधान नृपउग्रसेनयहकरिनिदान तुमकौनधरमय
हजुधकीन नरबारिबालइकपकरिलीना कैरवाकरिकोपकहतकौरवकुवे
न निहचैबिरोधआरकतनैन नहिजानिकालगतिकिछुनिदान पुनिचरनलग
सिरपरउपान हमकीनोराजपंकमाहु इनकेतबघरयरनयेउछाहु सोग
नतनाहिसगपनसनेहु हमसेअबसमताकरनयेहु अहिपानुदुगधबिषहि
इअनतसोतजैनाहिबलताअसंत जोकरतहमारोदीयोराज येआएहमसो
लरनआजा बलदेवआबलदेवकसोहसियहबोल मुषकरतआपनोआपमो
ल दुसीलरसाइनकेदुरंत अबकुनहीउपजेसांतअंत अतिगरबदिष्टज
ईअग्यान पुनिआहिहुइकोप्रधान अखिलेसकृष्णअवतारएह दुष्टएगिन
तिहिमनुजदेह रजचरनउपासतजहमरुइ सोकृष्णदेवकुनासमरु
योकहतनिनहिकोरकअधीस समदतराजलहिनयेमहीसा कबिकानिसे
षकहेदुरवादनोम धृतराष्टगयोउठिआपधाम येसरयपाइनयेमहअंध
सोमानतहैकछुनहिसमंध चितरोषइहासमयोबिचारि धरनीधरकहिह
लमुसलधारि नहिकोरवकरिष्टयीनिदान पुनिजैकुरावतिप्रमान पल
बोरिगंगजलमारिघेत सबकैरवहसतनपुरसमेत दिषनहिसिचांमोस्ल

उरंत। उतराय ओरअरे औ अनंत : इक ओर लयो जब पुर उगर : कृष्ण ये ह्येहत
बहाइ हाइ : जब लगे नगर जल माँझ जान : तब छुटे सब निके बल समान
करि स्याम अग्र सो नृपकुमारि : बलदेव सरन आये बिचारि : करजोरि स
जोधन प्रनित कीन : मुषनये स्वेत अति मन मलीन : यह प्रभु प्रभाव जानि
नअंत : अपराध छिमा करिये अनंत : पुनि पस्यो सजोधन आनि पाइ : इह
दयो अभय लीनो उठाइ : हतमान भये असुर कंप हीय : दुरजोधन इह हाहा
जोरीय : बरसहस दुरद अरु रथ प्रबंध : पुनि बाजि अयुत द्वादस प्रबंध : दी
यो एक सहस दासी अनूप : रसरातिनि पुन अंगारूप : संग पुत्र बधू जय जस
समेत : आये बलजी तिप्रनास षेत : चेष्टा जथा कैरव कुचाल : सब कही जादव
निसो सुदाल ॥ रुला ॥ हरि कैरव कुल गरब हति : बिजय पाइ बलदेव : स्याम
लेइ लवल सहत : आये ये अजेव ॥ ९ ॥ अद्या बधि उतर दिसा : पुर है धसो अ
पार : दिषन दिसि ऊचो दुगम : सब देष तसंसार ॥ २ ॥ इति श्री भागवते दस
सकंधे जाषा बार हजार हर ॥ दासे न बिरचित ॥ स्याम दरजोधन कन्या बि
वाह ॥ दुहा ॥ नरकासुर को नास करि : पुर घर धन अपनाइ : सोरस हस अ
रु एक सो : आनी तरनि छुराइ ॥ १ ॥ कह्यो सब निको करयहन : एक हीलग
न अनंत : यह देवी इछा अतुल : सब बिसमत सुर संत ॥ २ ॥ छंद ॥ अषी ॥ कृष्ण
एक अरु अगनित कामनि : भोग बिलास जुबंछित नामनि : महा जोग जोगेस
रमोहन : पुनि कौ होत मनोरथ पूरन : इहा नारद मन संत्र मछायो : येक समे म
रावत आयो : पद्म आकास अरु अंत हपुर : स्याम सरूप हृदय धरि सुंदर : अ
चुरहा कृत बिलास हासपर : मोहन बेदरनी के मंदिर : दयानिधान बिलोके
नारद : ब्रह्म पुत्र अरु बुधि बिसारद : अषिलेसर उगि सन मुष आए : लै अति
प्रीति सुकंठ लगाये : चरन प्रछालि बिप्र चरनोदिक : माधव लेधारे तेमसत
क : पूजा करी जथा सुष पाए : बहु स्यो मुनि आसन बैठाए ॥ कृष्ण उ ॥ माधव
तब पूछे अति हित मन : करिये मुनि आगमको कारन : जथा देव रिष आग्या
दीजे : काज मनोरथ पूरन कीजे ॥ नारद उ ॥ तुम अवतार पुरुष अषिलेसर : बलष
कार सहस साथ सुर : कृष्ण आयो प्रभु कंस हनि हित : चाहत जो ब्रह्मादिक हित चि
त : दयानिधान दान यह दीजे : कृष्ण चरन थित मम उर कीजे ॥ कृष्ण ॥ पुनि नार
द इहो अति सुष पाये : आग्या मांगि अवर यह आये : नियत तहां ते कृष्ण निहारे
कीन अछि करत हित कारे : कयो सहत सुसन मुष आये : बिधि जुत पूजा करि बै
गये ॥ कृष्ण ॥ प्रभु पूछो मुनि कब पाउ धारे : कहे पुरा कृत उदित हमारे
कबिक ॥ बिप्र बिलोकि उ ग्रोय हबानक : अवर त्रीया यह गये अचानक : रहे
निहारि चकित पतरोके : बालषिलावत कृष्ण बिलोके : यह अवलोकि अवर
यह आयो : पुनि मोहन तहां मंजित पायो : अवर नारि यह आये अतुर : अग
नि होत्र साधत अषिलेसर : इत्यादिक देषी लीलायह : यह व्यापार करत प्रभु
यह यह : मोहन महिला मंदिर मंदिर : आदि अंत अवलोके ईस्वर : ये ह्येह

वसुनगावत: प्रेमत्रिपतनयेआनंदपावत सुंदरिसुंदरिग्रेहसिधाये पाही
नारदफिरिआये रुकमनिकेमंदिरग्रवरेषी हिमवहेरकमूरतिदेषी दे
कुल हसिबोलेनारद बिसरेतनअतिबुधिबिसारद नारद उ जगतईसमे
सवेजानी प्रभुतवमायाप्रबलप्रमानी जामहजलिरहेजोगेस्वर चारिपंच
अखिलचराचर महाबिलोकीइईबीमाया मैहवेजिहिसुरअसुरनच
ध्यानसरूपकुलउरधारे पुनिनारदनिजग्रेहपधारे ॥ दहा ॥ कृतचरित्रय
कुलके अवलोकेग्रहजन मायाजिनकीमोहनी भूतजगतग्रवधूत ॥ १ ॥
श्रीनारायुते दसम सकंधेनाषाजार हटनर हरदासेन बिचेत ॥ नारदघे
सम सकंधेनाषाजार हटनर हरदासेन बिचेत ॥ नारदघे
निरिषराजग्रबोध अखिलेसुरनिहवेइहा सबेपंकसुतसोध ॥ छंद उधारो
इकदिवसकुलदयाल उठिकवरप्रातहकाल निमकृतहितजुतकीन दि
जदानसुरनीदीन धरिबसनग्रसुधधारि पुनिसनामधपधारि यहसमय
सातिकग्रार प्रभुदरसउधवपार अनेकजादवग्रस बनिजथाछत्रीयबंस ॥
मिलिसुतमागधसंग प्रभुहोरकृतप्रसंग ॥ छंद पधरी ॥ इकरहाग्रपूरबरूत
ग्रार सोलयोतबेनीलरिबुलाय कुलबाचा किंहिपग्येहोतुमकवनकाज
ग्रतसंकलिवेदोसुपेग्राजे कृतहियोपूछतकुलदेव जवकहेजथाग्रागमन
नेवा कृत उ ॥ इकदेसमगधधनदधधाम तहलगरबसतगिरवजनाम उह
जरासंधराजाग्रजेव हेउपम हादेवाधिदेव जगकेजिहिराजाजीतिजीति दे
ग्रयनबंदिमेलेग्रनीत गिरयेकगुफाडुरगमगभीर तिहिमांझस हतसेदु
सरीर पग्येउनमोकहंदेवपाइ ग्रबग्रंतग्रवसथानिकटग्रार उनदपति
हायोबचनग्राप प्रभुसुनियेतुमपूरनप्रतप तुमग्रप्रमेयग्रातमग्रनंत
णागतनिरलयदानसंत तुमदीनबंधुदेवाधिदेव ग्रखिलसग्रखिलमाय
जेव निग्रहनदुष्टदलनवनिदान पुनिकरतदीनरक्षा प्रमान ग्रवतारल
इहितियेहु देवाधिदेवधरिमनुजदेह प्रभुकरेजुग्राग्याग्रप्रमान जग
बलसुरासुरकोउनजान तुमदीनबंधुदेवाधिदेव यहबिरदतिहारोज
जेव कोउदीनग्रवरहमतेदुष्यार जगवंतकरतनालिसंतार ग्रबग्र
वसथानिकरग्रार सरनागतहितकरियेसहार ॥ पूर्वपद ॥ जिले
मफलग्रापनरूप पाछेसुधिलेहुजोरसरूप बिस्वेसरकरिहेयु
र पुनिकाहिकरहुरुषसंधुपार यहग्रयतहसलिषतबलग्रसा
रुकरतदुष्टदिनदिनउपाध करिप्रभुसोंसमताबिजयकाम
बारनाग्रासंग्राम यहजरासंधग्रागेग्रनंत किहुकारननिकसे
प्रभुयेकबारहिबिजयपाइ यातेहेनादोगरवग्रार ॥ कबिसा
नीसनार यानिचिमुनिनारदहोग्रार प्रभुकरीजथापूज
श्रीकृष्ण। त्रयपुरतुमगमनो

तुमतेअगम्यनहीजगवृत्तंत सुनकहो बिचरिपांडवसमाज कहिनातिरहतकाज
रतकाज॥ नाथ॥ तुमतेनदुखोकछुहेदयाल करुनानिधानबेत्रिकाल क
हिकृतथापिजोसुमोकाज धरिचितसुनकुराजाधिराज राजसूजग्यतबहेतर
ज कृतउहिमकुलपांडवसकाज उछाहहोतयरयरअपार बिस्वसयहेउन
केबिचार नवआहिजितेनुवचकरूप संपनराजसंपतिसरूप सोजीति
नीतियहजरासंध बकुसोदीपकाराग्रहबंध राजसूजग्यनहिबिनाराज
उनकोहेएतीकरिनआज॥ कहाजातेकरकुसहास्तुम प्रनुनहाचलकुप
नीत सिधहोहिसाधनसबे तोउनकेपषमीत॥१॥ कहीअवसथानृपन
की कृतनिसबेसदेस रिषिनारदउपदेसकरि पुनिग्रहकरेप्रवेस॥२॥
तिश्रीभागवतेदसमसकंधेसाषाबारहनरहरदासेनबिर्चितं॥
जरासंधबंदिग्रहराजानकृतश्रीकृष्णप्रतिआगमनउ॥ कहा॥ सुनि
सुनिकतसंदेससब अरुनारदउपदेस मोहनजादवबृधमिलि करुत
मंत्रबिसेस॥ छंद॥ बैठेअघरी॥ माधवअपनोअभिप्रायमन ऊधवसोपूछे
तहआपन मोहिगतबआहिपंडवयह अरुनृपमोषनद्वितीयकाजयह
पहलेकहाचलैसुप्रमानकु होतुमबृधसबेबिधिजानकु॥ ऊधव॥ पहलै
पांडवग्रेहपधारकु स्यामतहासबकाजसुधारकु मागधबुधकेहैनृपमो
षन पुनिहोरराजसूयमषपूरन अयतमतंगमहाबलओरै साधनसत्र
तोहनिसोरै प्रनुहैजरासंधकेयहपन जाच्यानंगहोतनहीजाचन यद
मरमवाकोपुनिगाऊ सुपेरेवउपतिसुनाऊ मगधदेसकेअधपतिमानो
जरासंधकोपितजगजानो पूरनताकेकुलबलसंपति सोनआसपूजित
हकसंतति पुत्रनहोतमहादुष पावै उरदाहसोकहतनआवै सोनृपकरु
हेतनपसाधे आतमदमनकरेआराधे महादेवतवसेवामानी नवदीयदर
सनसहतनवानी पुनिबोलेहरहयाप्रमानै मांगकुनृपतिजुपेमनमानै नृप
आहिवनसंततियहमहादुष सबेग्रहमेरेसंपतिसुष कहिकाताहिएकफ
लहयोकहतब यातेकाजसिधिकैहैअब इहानृपतिफललेग्रहआयो प
टरानीकुवचहफलपायो नारिनअरधअरधफललीने करिजुगनागसुन
हनकीने तहाकवनिकेनहीगरनथित पूरनअवधिहरैवगतिप्राप्त
जुगमषंडुवमातजाये पेषिसबनिमनअविरजपाये कौउजरानोमर
नकेकुल बिनतानहीजोगमायाबल आनिफारदोऊअवलोकी यहक
छुइछादरैवअलोकी जराजबेकरपरसनकीने निकटआनिद्वेषंडनवी
ने सोमिलिगयेदेहअतिसुंदर नामनयोतिहिजरासंधनर दसहजारह
सतीबलदुरधर अपनेदलएकबीरबकोदर प्रनुसमताप्रतिजुधप्रमंत
कु जथाजोगयेदोऊजानकु बीरनीमद्विजबेषबनावकु बीचिताहित
नसंधिबतावकु जाचोदरजुधयहजाई पुनि

निबहरेकुपरमसुषपाई: तुमप्रभु अपुनरहकुनिकटतहो: जथाकाजकी
सिधहोइजहो: अरुजेनपतिबदिहैकाके: तिनसुधिकरिरोवतसिसुताके
श्रेह्यहेत्रीयतनयुनगावहि: अरुबालकनिअनयउपजावहि।नृपत्री॥
मतरोवहुरेदुषकेमारे: हेरसकयनसामहमारे: दुष्टमारितवपिताछिनेहो
पुनिहमपुत्रपरमसुषपेहे: जहांजहांसंकटपरिजाको: तहांतहांहोतसहाय
कताको: तबनारदहोमंत्रबताया: थिरकरिसबहिनयहेथपायो: आपाक
रीत्रयांनकुलअब: तहासुतलेआयोरथतब: अवरोजथाजोपरथआये: र
कचटिचटिजुचलाये: उगेसेनबलदेवप्रछिअब: ततछनरथआरोहि
कुलतब: बाजतबिबिधिअनेकसुबाजे: सुनतजथाकमचटिचटिसाजे
तुरंगनिहसेनचलाये: पंथजथाबिधिसोनापाये: प्रभुआगेदेहन
पगाये: येहमतुमपाछेहीआये: ननमांरगआगेपालहिनारद: बिबुधलो
कगयेबुधिबिसारद: इंलअनंतहिसिहिससमदाये: सोबीजमहुमंमसु ह
ये: पुनिकुरषेतदेसतजिपावन: इहांनयोपंचालयुआवन: पुरपत्तनगिरन
दसुषपाये: इंद्रप्रसथअतिसुषहीआये: पांडवसनमुषआरत्रीतिपर: सब
हिनमिलेजथाक्रमसुंदर: बोमांकुसमसोंधचढिबरषत: हितकरिक्रम
दरसमनहरषत: पुरबासीइहादरसनपावन: बिनलाय हअहकलसबद
वत: बिबिधिनातियहहाटवनाये: अवलोकलनृपमंदिरआये: इहाजेप
वत: बिबिधिनातियहहाटवनाये: अवलोकलनृपमंदिरआये: इहाजेप
तीकुंताआई: लेतलोनहरषतउरलाई: पुनिसबराजलोकअंतहपुर: अ
निमिलेअतिहरषबढेउर: पूजाकरीजथाबिधिपावन: भोजनपातसेज
मनभावन: नियतजथाक्रमकेरादीनें: प्रगटबंधुसुतसुनदप्रबीनें: ह
हयेकयेककेअयरहो: आयेदासअनेक: तहासबकीसेवाकरत: बिधि
बिधिसंतबिबेक॥॥ अतिहितनयोसमजरहो: अरुआनंदउरुओर
करतबिबिधआषेटक्रम: सबमिलिराजकिसोरा॥२॥ कुंतासुतकेह
तकरि: स्यामरहेकेउमास: बनबिहरजलकेलिबिधि: बंछितबित
बिलास॥३॥ इतिश्रीभागवतेदसमसंकंधेनाबाबारहदनरह
रादासेनबिरचितराजरासंधबधइंद्रप्रसथआगमन
॥ दहासनाबिराजितधरमसुत: ततमंत्रीतटरूप: तहाआये
त्रयलोकपति: अंगअंगकुलअनूप॥ जुधिष्ठरजोछंद ।इत्यादि
देवासदेव: अषिलेसअषिलमायाअजेव: करजो
: प्रभुपरमपुरुषपूरनप्रबीन: मषराजसत्यकारनसहत: अब
महिआहिइछाअनंत: सोईसिधहोइप्रभुकेसहाय: इहिगोरओरना
हिनउपाइ: यहमंत्रबिचारोजनलोआप: पुनिबढेकितअतुलप्र
सुरसिधराजसबहीप्रसंग: इककरतसबेइछाअनंग:

रूचबैबिसेष: संनारसारकृतमषअसेष: उतपनअंसरिगदेवऐह सोमहाब
रधरमहिसनेह: इनतेकछुकरनहिनआज: रनबीरपगवकुअनुजराज:
नुवचककरहिहिगबिजेयनृप: मायिहैकाजजैसोसरूप॥ कबिकु मिलि
सबनिकुलकोबचनमानि: पुनियहैमंत्रकीनोंप्रमान सहदेवपग्यद
हनदिगंत: पुनिनिकुलबीरपछिम प्रजंत उत्तरदिसिअरजनचलेआप
पेनीमपूबदिसिबलअमाप चास्योदिसिपग्येबंधुचारि: बिष्यातबी
रपोरुषबिचारि: बसुमतीदिब्यराजाबिसेष: इनचारिदिसाजीतेअसे
ष: सोरसोअजितरकजरासंध: अतिबलीकपटजुतमहाअंध: सोसुने
जबैपांडवनरेस: स्यामसोमंत्रकीनोसुदेस: जोकलोप्रथमउधवप्रमा
न: सोरकिरुअबैजदुपतिसुजान: इहानीमसेनअरजनअजेव: द्विजरू
पकरेअनुबासदेव: अतिथकालयेतहांआए: पुनिजरासंधियेकांत
पाए॥ अरिल्ल॥ बाचा॥ बैरेसकहेमत्रयोबिप्र: प्रनुदरसहरितेअरु
छिप्र: जाचेंमोअरथीकबिप्रजानि: पुनिदेहुदानकुलकृतप्रमानि
कुकरेजाचनानंगकोइ: क्षेछत्रीअरुसामथहोइ: नरकपदलहैसोइ
निदान: महप्रगटबेदबाचाप्रमान: कछुअदातब्यछत्रीनआज: जाचेहं
मराजानपुत्रराज: सिवरिहरिसचंदअरुबलिनरेस: ब्याधाकपोतदेषहु
बिसेस: इसादिकजेराजाअनेक: बिष्यातसुजसवसुधाबिबेक: अप
अवसरीरदलबलअषेम: पुनिधरमहियुवजानकुप्रचेम॥ जरासंध
बिचारा॥ आकारबचनजाचकनएह: सोनयोनृपतिमागधसंदेह: क
रमूलसबब्रणअरुनयनकेप: अंगुष्टप्रतिचाचिन्हअप: प्रतिमानबि
प्रलछनप्रसिध: येछत्रीयहैकोउसमरसिध: अबतोयेतहाकनये
आनि: जाचेंमांनगनधरमजानि: बलिराजछलेबामनबिष्यात: बि
थरीकिन्तिनयलोकबात: अंवरोधकरेगुरहानिअंग: नवनरपनकी
नोंबचननंग: निरधारकरेमागधनरेस: अनिलाषबिप्रजाचकअसे
स॥ नीप बाच॥ इहाकलोबिकोरबचनएकु: हिमानिइदजुधहमहि
देकु॥ अरिल्ल॥ इहिबीचिकुलबोलेअजेव: यहनीमपथकुबासदे
व: करिहरषजुआएजुधकाज: रनरंडापूरकुमहाराजा॥ जरासंधउ
मागधहसिबोल्योसुनकुसाम: समतानमोहितुमसोसंग्राम: धनध
मछाकिमुधराअधीर: तेषारसमरकेबसोतीर: बयतुलनअरजु
नबलबिधान: सोपेनजुधमोसोसमान: प्रतिबीरसमरमेंनीमपथ
योंकहतमात्रदोउजुरेआए: रनमनकुबजआयातबीर समयाउगद
जरजरसरीर: मिलियाउदाउदोकुसमान: नोमहाजुधनृतलनयोन
रारनकीयषकुबकुतदाव: पेमरेनषलकाकुउपाउ: मोहनसुधिक

मेमूलमंत्रः तब कहेजु उथवगदतंत्रः ध्रुवकरनिकरषित्रिनवासदेवः अस
नीमश्रोरचितयेअजेव त्रिनतहाफारिकस्योअनंतः यहलिषीसमस्तानी
मश्रेतः बलमरमकलोऊथवसुषेन सोपेसुयिकीनोंभीमसेनः मगधे
सकंगहिमोनमारिः पुनिभीमसेनसोधरपछारिः पगएकचापिपगसो
प्रबीनः करचरनद्वितीयगहिसद्दकीनः बलफारिउत्तयतनकरषेकः
प्रतिमाजुसेधिजानीअचंकः अवलोकिजुराकवसंधिआरः सोउ बहुलि
साधिलीनेसुनारः सोरजिरासंधसंग्रामसूर परसपरनिरतपोरुषसप्त
र. पुनिउसहफारिकस्योसकोपः अरथकृतकाजकरपत्रओपः उवषंकनी
मरनअजिरफारि पुनिग्रसेधरनिमूधेपछारि इहाजस्योकस्योकरपुरस
आरः पेमिलेनाहिकीवेउपारः धरपरेषकमिलिजरासंधः सबछुटेदह
देहसबंधः अषिलेसरअरजनमिलेआरः लीयभीमसेनकहेकेवलास
महाडुगमसतारसदिनः समहरानिस्योसमांनः मगधराजकरभीमके
प्रतिजुधदीनेप्रांन॥१॥ इहामगधकोपुत्रएकः सुपैनामसहदेवु
गलोसरनगोबिंदकोः मनछांकेअहमेवा॥२॥ देसमगधकोराजदल
पथीअछत्रप्रजंतः कृष्णधस्योतिहिसीसकरः दीनोंअभयअनंत॥३॥
जरासंधकोबधसुजसः पायोभीमप्रकासः प्रभुनरहरकीनीकृपाः सु
पेकुतोनिजदासा॥४॥ इतिश्रीभगवतेदसमस्कंधेभाषाटीकायां
रहरदासेनविरचितो जरासंधबधभीमविजयो॥७२॥ इहासम
हसबीसअरुआगसे नियहबंदिनरेसः कठिनपरेगिरकंदरा सेवत
दुषअसेसा॥१॥ छंदपधरी॥ तनमलिनबसनलनछुधात्रासः पुनिसहत
महापरिनवप्रकासः रदछदनसोषउरबलसरीरः उरकंपअषिल
अंतरअधारः तबमनकुलगनपंजरमयांनः निकसतअनेकपंषीनि
दानः साहिदुषजयानिकसेनरेसः कृतबंदनदरसनआरकेसः येबंदि
मोषकीनेअनाथः निजदरसदियोबिसुनाथः भुजचारिचारिआयु
धअंगः अंबुजदललोचनस्यामअंगः कुंडलकिरीटउरमनिबिका
सः कटिसूत्रकनकबनिपीतबासः अद्भुतसरूपदेषोअनंतः सोरु
बेदबतावतपरमसंतः दुसहकृतपरिनवगएदुषः सबहिनकुंउपज
अमितसुषा॥ नृपउ॥ करजोरिकहतकरुनाप्रकासः तुमदीनबंधुहम
दीनदासः सरणादिकरदकसयनस्यांमः कृतमोषहमारोप्रभुअकां
मः हमनयेराजमदअंधराजः कछुलषोनाहिकाजकुअकाजः मारनी
महामायमुरारिः सोपरीबीचिप्रभुनहीसंभारिः नयेराजनृपमदमांन
नंगः अबनरीसबेसुधिअंगअंगः अषिलेसकरकुउपदेसयेकुः जिहि
कृपाकृलसोअभयकीनः

गनिदीन॥ कृष्ण ने नृपनजकु मोहिकै सावधान पुनिकरकुलोकरहा
प्रमान सुषदुषलातअरुहानिसंग इनकोसमानदेषकुअनंग निहकाम
करकुसबधरमनेम पुनिमोहिअंतमिलिहोसप्रेम करिजथाजोगअहर
अनंत तहाकलोबचनयहरमाकंत हैधरमसुवनकेजगपधाम सबतहा
आनिमिलियेसकाम करिकृपानृपतिसबबिदाकीन देवाधिदेवतहाअ
नयदीन येराजाअपनेगेहआए सोतजतनथेस्यामहिसुनाए सबनीमप
थमिलिकलसंग इहाइंद्रप्रसथआयेअनंग दीयुबिजयसंष पुनिबासदे
व अतिहरषनयेग्रहग्रहअमेव॥दोहा॥कृष्णजुधिष्टरकोकरे बंदनचरन
बिसेष जरासंधपोरुषजथा सोसबकहेअसेष॥१॥कुंतीसुतकरजोरि
कहि राजाबचनरसाल यहतुमहीकरिहोइहा कारिजसिधकृपाल॥
॥२॥कस्योनृपनिकोमोषक्रम छंनमहबंदिछुडाए प्रभुनरहरअसीप्र
कृति सराअनाथसहाए॥३॥इतिश्रीभगवते दसमस्कंधेभाषाबा
हुनरहरदासेनबिरचितेबीसमहस्रराजाबंदिमोषनोनाम॥७३॥
दोहा॥जरासंधकोबधजथा पुनिसुनिकृष्णप्रभाव रूपधरमसुतकेत
यो उरआनंदअमाव॥१॥कलोजुधष्टरजोरिकर प्रगटसमयजबपाए
कस्योचहतहमजगपक्रम सोप्रभुकरोसहाए॥२॥ हरिहसुनतप्रसन
कै आगाकीनायेकु करियेजगपारंभक्रम सबहीछाकिसनेकु॥३॥छंदपद
री॥ द्वैपायनगोतमनरदवाज कीनेबसिष्टअरुसकाज मिलितहाअसि
तअरुद्विजसमेत मैत्रेयचिवनअरुचितमहंत द्विजकवषकपवमि
लिबामदेव मुनिबिस्वमित्रअतिपअजेव पुनिसुमतिपरासुरगर
गपाए अरुबामनकृतजुतपउलआए द्विजबेसपाएनधोमदेव अ
रुपरसरामतपबलअजेव कसिपअथर्वआसुरकृपाल द्विजबीत्रहोतमधुछ
दयाल समअकृतबरनअरुबीरसेन सोकीनेषिरपजसुषेन द्विजप्रेमकृपाक
रिजसकाज नीषमधृतराष्टसुतसमाज पुनिबिदरसहतअनेकरूप सबमिलेअ
निअपनेसरूप करिजथाजोगिबिकुवारकाज रसरीतिसहतसबकरतराज क
नकहलजोतिनुवसोधकीन हिरदेवआदिब्यापारदीन सोबरनजगपआगेबि
सेष इंद्रादिअमरआयेअसेष गंधरबसिधचारनसुगान मुनिउरगजहरा
हसप्रमान सुरकंन्याकिनरसबरागसिध सांगीतनिपुनबाटकप्रसिध न
वमिलेसकलसुवचक्रनूप अरुसहतराजरमनीअनूप बिधिजथाजोगिगु
रजनबिचारि सबहिनकहकारिजदीयसंभारि अषिलेसकृपासबजुरी
आनि पूरनतापाकवअहप्रमान कृतहोनलगोआरंतकाज सुरसिधबि
हतराजासमाज पुनिजथाबेदबिधिअवधिपाए सुतजगपनयोपूरनस
नाए॥कवित्त॥मषअंतउचितपूजासनेस दृथीसुरपूजोसहतप्रेम यहजो
गपकहोयोकवनआज किहिकरेप्रथमपूजासकाज॥कबिस॥ मुषचाहिर
हेसबरिषनरेस सोदयोनउत्तरकिहिबिसेस॥सहदेवबाचा॥कवित्त॥अ

ब्रह्मअखिलेस बिस्वरूपी बिस्वंभर · सर्वदेवमयदेह · धर्मोतिनंदु
ाजधर · कृस्न छांडि कारुण्य · करनकारनसमयकलि · हांजोगिकोत्र
र · मषजपूजाकरियेमिलि · तसमतकरकृष्नजषे षतुम · बासदेवकहु
देहबिधि यहकसोबचनसहदेवरहो · सबेकरीजिहिजग्यसिधि ॥ कवि
क ॥ छंद द्वैत्रषरी ॥ यहसबहिनकोंमंत्रसुहायो · परिषदसुनतपरमसुष
पायो · कृस्नदेवरहोपूजिसकारन · मिलेजथाअभिलाष सकलमन · च
रनधोरजलसीसचढावत · पूजाकरतपरमसुषपावत · बिहतकृस्नअधि
कारबिलोक्यो · सत्रुचयो सिसुपालससोक्यो · उठिगदोतहांनुजाउगई · म
हाक्रोधनहिउरहिसमाई · बोलोदारुनबचनमहाबल · सबानसुनाइबेदि
त्रयचषषल · जथाउरसनमायाजानी · अतिउरबाढकस्त्रनिमानी ॥ सिस
पालउ · जानिनजाइकालगतिजैसी · अनुचितकरीदुषजनत्रैसी · प्रगटछांडि
रिवनपप्रबीनें · क्रमअनषेषबालकहकीनें · जाकहकहतनदकोजायो ·
प्रगटअहीरबंसपदपायो · जथाजोग्यकृस्नहिमतजानहु · निंदतकाकहुषष
नहानहु · हैत्रअमबरनहिकुलहीनो · कृतनिरगुनकहप्रजितकीनो · नयोज
जातिबंसमहरूपति · उनकुनराजदयोइनकोंग्रति · छांडिपवित्रनमिकीनो ॥
ल · बारसिंधुतअहबसोषल · तातेजोग्यनपूजाताकों · अबतोउचितका
हिबोयाकों ॥ कबिक ॥ सज्जनसतदुरबादसुनाये · पूरनबचनकृस्नदुषपा
ये · याकेबचननयोनहिआदर · जथासपालकेबचनमृगेसर · निंदकृस्न
सुनेजोईनिर · होसोईसिरबधरमतेबाहर · सुनतपंकसुतरहांसंनारे · नैन
सेंनसोईकृस्न निवारे · आपचक्रनुजचक्रचलायो · वहसिसपालमारिफि
रिआयो · काग्रोसीसनयोकोलाहल · उसहकालतिहिजागिगयोहल · निक
जोतिहंतेनिरमल · कस्योप्रवेसकृस्नमहग्रनकल · कृस्नचितवनबेरजावक
क्रोधपोतनमेंसुपेबिषेहरि · सांगनयोजबजग्यसपूरन · इहस्तयेत्रपयोसब
न · सबहीबिधिसबकोंसंतोषे · पूजादानमांनद्विजपोषे ॥ कहा ॥ नृपसबलि
सुषनयो · अरयरयरउठाह · दृषिसपूरनजग्यदिन · दुरजोधनउरदाह ॥
सचरित्रअनतक्रम · निग्रहमोषनरेस · कबिनजुधसिसपालको · अरबध
बिसेसा ॥ ॥ कीउरनजदुनाथकी · करिहिंगावेकोर · कबिनरहरतिहि
कीअतनबधाहोयाशेइतिश्रीभागवतेदसमसकंधेजषाबार हुट
रदासेनबिर्चिते ॥ राजसूजज्ञसपूरनससिसपालबध ॥ ७४ ॥
कस्योप्रसनसुषदेवसो · इहपरीक्षतराइ · नृपसबनिकोंसुषनयो
रनतापरा ॥ १ ॥ ऐकहिदुरजोधनउरहि · जथायरलगिलोंन · जल
हीपरजस्यो · यहधूंकारनकोंना ॥ २ ॥ तहकहेसुषदेवतब · पूरब
र · अमरसिंधनपआगमन · बिबिधिजग्यअपारा ॥ ३ ॥ छंद पध
सहग्रंथनाधिकार · पुनिपथसजनसेवाप्रकार · दुरजोधनधनग
ीत · पुनिकरनदानकारिजप्रबीन · संतारसाधनोनिकुलसा

गतिदीन॥ कृष्ण बचन नृपनजकुमोहिक्षे सावधान: पुनिकरुलोकरक्षा
प्रमान: सुषदुःषतानअरुहानिसंग: इनकोसमानदेषुअनंग: निहकाम
करुसबधरमनेम: पुनिमोहिप्रेतमिलि होसप्रेम: करिजथाजोग्यआदर
अनंत: तहाकलोबचनयहरमाकंत: हेधरमसुवनकेजग्यधाम: सबतहा
आनिमिलियेसकाम: करिकृपानृपतिसबबिदाकीन: देवाधिदेवतहाअ
नयदीन: येराजाअपनेगेहआए: सोतजतनयेस्यामहिसुनाए: सबनीमप
थमिलिकृष्णसंग: इहाइप्रसथआयेअनंग: दीयबिजयसंषधुनिबासदे
व: अतिहरषनयेग्रहअहमेव॥६॥ कृष्णजुधिष्टरकोकरे: बंदनचरन
बिसेष: जरासंधपोरुषजथा: सोसबकहेअसेष॥७॥ कुंतीसुतकरजोरि
कहि: राजाबचनरसाल: यहतुमहीकरिहोइहां: कारिजसिधिकृपाल:
॥३॥ कस्योनृपनिकोमोषक्रम: छंनमहबंदिछुडाए: प्रनुनरहरअसीप्र
कृति: सदाअनाथसहाए॥१॥ इतिश्रीभागवते दसमस्कंधेनाथाबा
हट नरहरदासेनबिरचित॥ बीससहस्रराजबंदिमोषनोनाम॥७३
दूहा॥ जरासंधकोबधजथा: पुनिसुनिकृष्णप्रभाव: रूपधरमसुतकेन
योः उरआनंदअमाव॥१॥ कहोजुधिष्टरजोरिकर: प्रगटसमयजबपाए
कस्योचहतहमजग्यक्रम: सोप्रभुकरोसहाए॥२॥ हरियहसुनतप्रसन
भे: आग्याकीनीयेहु करियेजग्यारंभक्रम: सबहीछाडिसनेहु॥३॥ छंदपध
री॥ द्वैपायनगोतमनरदवाज: कीनेबसिष्टअरुसकाज: मिलितहांअसि
तअरुद्विजसमेत: मैत्रेयचिवनअरुचितमहेत: द्विजकवषकपवमि
लिबामदेव: मुनिबिस्वमित्रअतितपअजेव: पुनिसुमतिपरासुरगर
गपाए: अरुबामनकृतजुतपउलआए: द्विजबेसपायनधोमदेव: अ
रुपरसरामतपबलअजेव: कसिपअथर्वआसुरकृपाल: द्विजबीत्रहोतमधुछ
हदयाल: समअकृतबरनअरुबीरसेन: सोकीनेषिरत्पजसुषेन: द्विजदेणकृपाच
रिजसकाज: नीषमधृतराष्टसुतसमाज: पुनिबिदरसहतअनेकरूप: सबमिलेआ
निअपनेसरूप: करिजथाजोगिबिकुवारकाज: रसरीतिसहतसबकरतराज: क
नकहलजोलिचुवसोधकीन: दिगरेवआदिब्यापारदीन: जोबरनजग्यआगेबि
सेष: इंद्रादिअमरआयेअसेष: गंधरबसिधचारनसुगान: मुनिउरगजक्षरा
क्षसप्रमान: सुरकन्याकिनरसबरागसिध: सांगीतनिपुनबाटकप्रसिध: ज
बमिलेसकलजुवचक्रनृप: अरुसहतराजरमनीअनूप: बिधिजथाजोगिगु
रजनबिचारि: सबहिनकहकारिजदीयसंभारि: अबिलेसकृपासबजुरी
आनि: पूरनतापांकवग्रहमान: कृतहोनलग्योआरंतकाज: सुरसिधबि
हतराजसमाज: पुनिजथाबेदबिधिअवधिपाए: सुतजग्यनयोपूरनसु
नाए॥ कृष्णउ॥ मषअंतउचितप्रजासनेस: पृथीसुरपूछोसहतप्रेम: यहज
ग्यकहोधोंकवनआज: किहिकरेप्रथमप्रजासकाज॥ कबिरु॥ मुषचाहि
हेसबरिषनरेस: सोदयोनउत्तरकिहिबिसेस॥ सहदेवबाचा॥ कबिता॥ अ

मग्रबिलेस बिस्वरूपीबिस्वेस्वर सर्वदेवमयदेह धस्वीतन
धर कृस्नछोकिकारुप्य करनकारनसमयकलि रहांजोगिकोत्र
मषजपूजाकरियेमिलि तसमातकरकुग्रजषेषतुम वास
विधि यहकसोवचनसहदेवरहो सबेकरीजिहिजग्पसिधि॥ क
छंद द्वेग्रषरी॥ यहसबहिनकोमंत्रसुहायो परिषदसुनतपरमसुष
यो कृस्नदेवरहोपूजिसकारन मिलेजथाग्रलिलाषसकलमन
नभोरजलसीसचदावत पूजाकरतपरमसुषपावत बिस्तकृस्नग्रषि
कारबिलोक्यो सतुचयो सिसपालससोक्यो उठिगदोतहांनुजाउगई म
लकोधनहिउरहिसमाई बोलोदारुनबचनमहाबल सबानिसुनाएवैरि
त्रयचषषल जथाउरतनमायाजानी अतिउरबाढकरिग्रभिमानी॥ सिस
पालउ॥ जानिनजाएकालगतिजैसी अनुचितकरीरुधजनग्रैसी प्रगटछा
रिषत्रपप्रबीनै क्रमग्रजषेषबालकहकीनै जाकहकहतनहकोजायो
प्रगटग्रहीरबंसपदपायो जथाजोग्पकृस्नहिमतजानकु निंदत
नहानकु हैग्रग्रमबरनहिकुलहीनो कृतनिरगुनकहपूजितकीनो न
जातिबंसमहलपति उनकुनराजरयोइनकोग्रति छांडिपवित्रन
ज बारसिधुतज्ञारबसोषल तातेजोग्पनपूजाताकौ ग्रबतोउवि
दिबोयकौ॥ कबिक॥ सग्रजबंसतदुरबाढसुनाये पूरनुभवनकुलदु
ये याकेबचनभयोनहिग्रादर ग्रथासपालकेबचनमृगेसर निदाकृस्न
सुनेजोईनर होसोईसिरबधरमतेबाहर सुनतपंकसुतरहोसंनारे नैन
सेनसोईकृस्न निवारे ग्रापबत्रनुजचक्रचलायो वहसिसपालमारिफि
रिग्रायो काग्रोसीसनयोकोलाहल उसरकालतिहिजागिगयोहल निकसी
जोतिहितेनिरमल कृस्नोप्रवेसकृस्नमहग्रनकल कृस्नबितवनबेरजावकरि
ग्रोगयोतनमेसुपेबिषेहरि स्वांगनयोजबजग्पसपूरन इहसनग्रग्रथीसबकर
न सबहीबिधिसबकोसंतोषे पूजादानमानद्विजपोषे॥ कहा॥ नृपसबनिको
सुषनयो ग्रग्रयरग्रउछाह रुषिसपूरनजग्पदिन दरजोधनउरदाह॥ छ
लचरित्रग्रनतक्रम निग्रहमोषनरेस कविनजुधसिसपालको ग्रखधन
बिसेसा॥ क्रीजरनजदुनाथकी करिहिगावेकोइ कविनरहतिहिप
कीग्रतनबाधाहोग्रग्रो इतिश्रीनागबतेदसमसकंधेनृपसबनिकोसुषनयेरुम
रदासेनबिर्चिते॥ राजसूजहसपूरनससिमपालबध॥७४॥
कस्योप्रसनसुषदेवसो इहपरीक्षतराइ नृपसबनिकोसुषनयेरुम
रनतापाइ॥१॥ एकहिइरजोधनउरहि जथाघासलगिलोनि जलन
हीपरजस्यो यहधूंकारनकोनाइ॥ तहाकहेसुषदेवतब पूरबज
र ग्रमरसियनृपग्रागमन बिबिधिजग्पग्रपाइ॥३॥ छंदपधरी
मइहग्रनाधिकार पुनिपथसजनसेवाप्रकार दरजोधनधनग्रि
हीन पुनिकरनदानकारिजप्रबीन संतारसाधनोनिकुलसाध

वअषिलनृपनिअराध: द्विजचरनसोचकरकृलदेव: आपहीलसेअषिकरे
व: सअषानृपरमनीसुनाइ: पंचालीयहअधिकारपाइ: राजाबिराटजुजधो
नरूप: आताभितिनूरीअवानृप: इत्यादिकजेराजाअपार: कीयजथाजे
पधरमाधिकार: मषराजसयपूरनप्रमान: बनिजथाबिबिधिमंगलबिध
न: इहाबजेदेवदुंदुभिअकास: पुनिकरीपुहपबरषाप्रकास: अबमंजनकी
यसुरसुरीआइ: नुवनृपराजरमनीसुनाइ: अजिलाषजुधिष्टरचित्तआन
नयेकृसकृपापूरनप्रमानि: रथबेगिइहत्रयपुरुषराज: मंगलजुतआये
अहसमाज॥ अथमयदयतसभा॥ मयदयतसभाअजनहिमल: सोई
इहाबनाईसानकूल: बिसतारबिबिधपरिषदबनाइ: इहाराजजुधिष्ट
रबेगिआइ: सबभ्रातपुत्रमिलिसजनसंग: अबआनिजथाथितनयेअ
नंग: जालीगवाषिमिलिजुवतिजाल: गवतनहामंगलगुनयुपाल: पुर
लोकआनिबेगेकृपाल: कुषसतप्रगटदेषतसंसार: बिधिजुकतबसन
भूषनबनाइ: चितमानिजथासोरनचलाइ: इहादरजोनपायोअदेष:
संगहृयसजनभ्रातअसेष: यहसभासजलथलभ्रमअपार: दुरगमनजथा
प्राकारद्वार: थलदेषितयोभ्रमजलअथाग: लीनेउगरतबबसनलाग: ज
लगहरवोरथलबिमलजानि: पुनिहयेछलितहाबसनपानि: जलकुकमाह
भूकेअजान: पुनिलगेनिचोरनबसनपानि: सोदेषिकृलतबकरीसैन: नि
संकहस्यातहानीमसैन: लहिसमयहसेतबलोकलोक: अटाहिहासिकरि
ओकओक: इहानईषिसाहरषलहिआनि: पटफिरयोनिचोरतबसनपा
नि: करितहासीसनीचोकुचार: अपनेयहआयोदुषअपार॥ इहानारउ
तारतनूमिकोकुलकेरवषयकार: नारथकोसयारनूर: वयोबीजाइन
बार॥१॥ संपतिपंठवराजसुष: पूरनजगपुत्रतप: सभाइषिकिकुकरम
बस: पस्योकिसानेआप॥२॥ दारनउपजेरोइदुष: दरजोधनहिदुरत
नवतातेअमरषनयो: तेमेईमिलितंत॥३॥ अतिमनसुतसुकदेवश्री:
कीनोप्रसनप्रबीन: याकेउचितबिचारइहा: द्विजबरउतरदीन॥४॥ इति
श्रीभागवतेदसमसकंधेभाषाबार हदनरहरदासेनबिरचितोम
ज्ञकरि: अरुआयेगोबिंद: इनृपजुधिष्टरकेजयो: इहापरमआनंद॥५॥
अबकीनेउछाहअति: कृसनगतिकेकाज: इतपगयेद्वारिका: बोले
सजनसमाज॥६॥ छंदधरी॥ अषिलेसकृसबलनप्रताप: प्रतुभग
तिबिछतपूरनप्रतप: देसाधिकारप्रदमनहिदीन: करुनानिधानतव
गवनकीन: इहाइंद्रप्रसथआयेअनंत: सबमिलेआनितहासजनसंत
दिनकछुकरहेदेवायिदेव: इहाकरतधरमचर्चाअजेव: जबइंद्रप्रस
थकृसजानि: पेडुसहयातपूजीप्रमानि: पनबाधिसालषलसम
यपाइ: अबहेरीद्वारावतीआइ: महपतीसालसिसपालमित्र: तिहि

कुरुकमलिवरित्र वहसमयआरनमहाग्रंथ: हमाल
हासालप्रतंग्पाकरीयेह सिपालसषाबधसुनिसनेह रनमारिसव
तराज अवनीनिरजाहवकरोआज प्रथीसअतंग्पाकरिप्रचंड:
ीयतपअबंड: मुष्टिकामात्रआहारमूल करिरहेरनकासानकूल त
नबरषहिनोबितीत सबसहयामजलबिषमसीत: नतेसनेये
नृप: प्रबुदीनेहरसनदयारूप करजोरिसालतहप्रनितकीन:
अंतरगतिप्रबीन: मोहिहेकुरुक्षेसोबिमान मनतेजोसतगु
सुरअसुरनागनरजहसंग गंधरबनिराहसकरिअंग: सोजाहव
हअहयसूल तासोंकोऊबाहनकरिनतूल नवकीयप्रमोननृपबित
ब: हीयमयकोआग्यामहादेव मयहीनोंकरितेसोबिमान जलगग
नगमनजहबिनजोन॥ सालउधरिबिसालप्रखबिरोध: करिआ
रावतीक्रोध: घेस्योसुनगरकरिदुसहघात: बिसतरेसेनचकु
ष्यात सिलसर्पबृष्टिबरषेअसाथि: इत्यादिकरेदुसहउपाथि:
खतहपुरमोऊहेह: सुतकृष्णप्रदुमनिसुनोसोह: इहास्या
कसधीर बनिअनुजसहतअक्रूरबीर: इत्यादिकजेजाहवअंग
मिलेआनिपरद्युमनिसंग: सनाथबंधअयुधसजाह इहारथारोहरन
नृमिआह करिसजधनुषटंकारसूर: परद्युमनिबानसाधेकरूर सा
सोनयोजाहवसंग्राम: देवासुरजोआगेहुगाम: इहकरीसालमा
प्रकास सरमारिपरद्युमनिकस्योनास सालकोसेननाएकस
सरपवपंचबेधोसरीर: परद्युमनिकस्योपोरुषप्रकास: प्रतिसुन
हबानहसरसप्रकास: बिसतरेसालमायाबिसेष एकतेरचेक्रियह
ासेष आकासबिषेगिरकबकुआह: दिष्टपथकबकुकबकुहार
जलमधकबकुगिरसिषरजोनि: जलमुकाचक्रजोस्त्रमतआनि: ये
करतसालमयाअपार: बहुबिबिधिबानबिषमुषबिकार: सालको
मुषिमंत्रीहुमंत सोजुस्योपरद्युमनिसोहुसंत: परसपराहाकीनेप्रहार
मिलिहाउयउमुषमारमार परद्युमनिसोसमंत्रीप्रहार सोमुरछागतस
स्योसेनार इहानयोपरद्युमनिजबअचेत: रथहितेगयोतजिसतबे
परद्युमनिजेबेकछुचेतपाइ: सारथसोंबोल्योअति
साह: हेजीयतछुकायोबेतमोहि: नातेअसाधिकारतोहि: कुलज
हवनाहिनयोकोइ: हमछांडिपरामुषसमरहाइ॥ साथीनाख
होआसोतुमहिचेतअति मतियहउपजीमोहि: इहानकरि
सोचअबु ताकोदोषनतोहि॥१॥इतिश्रीभगवतेद्वसमसंकी
सालमुषरअवरो

प्रद्युम्न जुध ॥३६॥ इहांपरद्युम्नसुतसों: ऐसोकहोरिसारः जहां
मंतमंत्रीदुसः अबतहांमोपुहचारः॥ कबित्त॥ छंदपधरी॥ सेगयो
तहांरथहांकिसुतः इहांतयोमहासमहरगजतः रनकवरचलायेबानच
रि: मंत्रीकेचास्योंग्रस्वमारि: इकबाणसारथीछेदिग्रेग: उनयकरिधनु
ग्रसाइकग्रतंग: मास्योसंग्राममंत्रीदुमंत: इकबानकस्योसिरछेदग्रंत
प्रदुमनितबैरनबिजयपार: कहिसाधसाधसुरनरसुनार: दिनरातिसप्त
बिसतदुरंत: इहांतयोजुधहयसुतग्रंत: यहसमयधरमसुतग्रेहग्रा
प: प्रभुकृतेकृष्णपूरनप्रताप: दुरनिमतदेषिनिसिसुपनदेव: इहांन
योचितबिसमयग्रमेव: इहांतहीबिग्रतावितग्रचैन: नृपग्राग्पाली
नीकमलनैन: उम्चिलेसेनसंजुतग्रनंत: बिष्मातबीरजुधजोतवंत: ग्र
षिलेसरद्वारावतीग्राइ: संग्रामहेतिदेषोसुनाइ: बलनप्रनगरर
हाबिधांन: धरिरहेसुग्रायुधसावधांन: इहांकृष्णग्राइसंग्रामग्रेर:
जयहेतसालसोपरीजोर: षलदेषिकृष्णकहसमरषेत: सुतकहसक
तिबाहीसचेत: रनबिजयबानमोषोसुरारि: मथिषंडकरीसोसक
तिमारि: पुनिबानकृष्णबेधेप्रकास: सोतरथत्रमनलाग्योग्रकास
हगिसालबिसषहनिकोपहोइ: स्यामकेबामतुजलग्योसोइ: पुनि
गिरेभूमिसारंगचापः ग्रषिलेसकेरिलेसज्योग्रापः इहांत्रमतगग
नरथसहतग्रापः दुखाहसालबोल्योसदापः पृथीसमोहिसिपालप्री
तिः ताकीत्रीयग्रानीयहग्रनीतिः नृपसत्रामोकुसोईहतिनरेस: बिधिष
पेनाहिपोरुषबिसेस: ग्रबतोहिपरेकृतहग्रंत: इहांग्रवनहोइनफि
रिग्रनंत॥ श्रीकृष्णबाच॥ हसिकलोकृष्णतबबचनयेह: रेदुष्टराषि
ग्रापनोदेह: कृतग्रधनदेषतहम्योकाल: करिकोपसीसकुपरकरा
लः जेमहाबीरतुवचक्रमाहि: निहचेसुकरतकृतकहतनाहि॥क
बित्त॥ इहांकृष्णगदाहतकस्योयेह: दुष्टउरलगीतोबिकल
देह: पुनिदंडमात्रफिरिचेतपार: सोरचतनयोमायासुनार: षल
कस्योसालतनकृतबेष: बसकपटइहांग्रायोबिसेष॥कवित्त॥
च: यहबचनकृष्णसोकलोग्राइ: मोहिपग्योकृदेवकीमाइ: सुत
करकुसालसोसमकिसांधि: बसदेवहिलेगोबलीबांधि: पसुसत्र
जथालेजातपाप: इहिनातिपितातवग्रलोग्राप: मुक्तकुसंग्राममम
मबचनमांनि: ग्रबपिताछुगावकुबेगग्रांनि: यहसुनतनयोसंत्र
मग्रसेष: बिधिकपटकृतहिषीयतबिसेष: बलनप्रबीरपुरमहबि

नावनायहेवात॥ सालउ॥ इहिवीचसालिरथ
पबाध्योबितइ: ईस्वरीदेहतेजयेग्राप: बधतहोराक्षिग्रपनोबाप
हितहाकृतमसरूप: इहकारिदयोहलमहग्रनूप: तिहिदेषिनय
कसचिंत: करिमनुजनावतहारमाकंत: धरिजोगध्यानकहिकथ
षेनसीसताहिनसरीर: देषोनिहारितबबासेव: वहबेगेहेरथम
जेव: मास्योसुगदाकरिहरिबिमान: निसेषतोरिकोस्योनिहनेजल
पस्योरथसोतजाइ: इहसालगदालेसमुषग्राइ: उवनुजाछेदिउ
नदेव! ग्रकुचक्रसुदरसनसिरग्रजेव॥ कहा॥ मास्योसातसंग्राममि
:माधवतोरिबिमान: सुरहरषेबरषेसुमन: दुंदुभिदयेनिहनेन॥१॥
तिश्रीभागवतेमहापुराणे हसमसकंधानुसारणे तषावारहट
रहरहासेनबिरचितं॥ सालबधेनांन सतेतरिमिग्रधाइ॥
७॥ कबिकाउसोरग॥ प्रथमहसोसमियाल: पोढकराजासाल
नृप: कृततिहिवयरकराल: दंतबक्रबिरुरथरुवो॥१॥ छीदृद्वेग्रषर
हिहोउमहासेनसजिग्राये: बिग्रहवयरनिरोधनदाये: सोमुनिकृष्ण
देषचदिसमहर: पुरुषबचनतहाकहतपरसपर॥ दंतबक्रजाइ
बक्रबोल्योउरग्रतिदुष: मेमेममित्रहतकरेजोमुष: यहममगदा
कारा: ग्रोकुतुमकहीयतग्रवतारा॥ कबिका॥ दंतबक्रकोगदाजु
रुन: कृष्णदेवकेसगीसकारन: कोमोरकीगदाबज्राकृत: इहीकृष्णसोहु
सोक्रोधग्रति: कृष्णप्रहारकस्योमाधवरन: छूटेग्रानसनुकेतिहिछंन: मा
स्योदंतबक्रग्रतिमांनी: स्याममोकवहजोतिसमांनी: दंतबक्रकोग्रातवि
रथ: सोपेवयरजानिमनसमरथ: धरिग्रसिचरमरोषकरथायो: इहो
कृष्णकेसनमुषग्रायो: पुनिसोकृहरिचक्रप्रहास्यो: महासंग्रामबिर
रथमास्यो: दंतबक्रग्रसुसहबिरुथ: रनसनमुषकेमेरमहारथ: दे
गनदुंदुभीदीनी: किन्नेसिधचारनगनकीनी: ग्रादिपूतनाउषजुएते
हांनासकरेप्रतुतेते: इहग्रनतदेवग्रहग्राये: बजेवारिकानगरव
धाए: महकेरवपांडवजुधउदिम: तयोसवनिकेंचितबद्रेस्त्रम: मुनि
रथउदिमसंकरषन: महाबिभादृजयोमनहीमन: इहिदिसिकृष्ण
रषनउहिदिसि: सोउबिचलेतीरथजात्रासिसि: महामित्रदृरजोध
नमाग्यो: इहिदिसिकृष्णग्रातउरग्रांमो: तहाबलदेवनिकसिगयेतांमे
जुधदुसहसहिजातनजाते: उहग्रजासप्रथमहीग्राये: ग्रकुपछेसर
स्वतीग्रन्हाये: पृथोदिकबिंदुसरपावन: त्रितकूपग्रकुसुषदसुंदरसन
तीरथबिधि: सरितागंगनमनमंजनसिधि।

इहानेमबारप्पजआये: पुनिजजतसनकादिकपाये: इहाद्विजऋषिसवनि
दयोआदर: ब्यासमिषइकरोमहरषवर: यातेसोनउग्रोअकुलाई: इहाबल
देवमहारिसिआई॥ बलदेव उ॥ अरेद्विजोधमअहमितिआई: इनतेतोहिक
हाअधिकाई: ब्यासमिषसोषेविद्याबर: यातेगरबबढ़ोतेरेउर: सोनहीउचि
तबिप्रकोरेसब: हेतनीतिछाडैमोहेहब: कीयमेमनुजदेहइहिकारन: पाप
कनिकोदुरुअचारन: इहासंकरषनकरतचलायो: तिहिप्रहारद्विजपंचत
पायो॥ ऋषिबाच॥ द्विजयहहमब्यासमनदीनो: बोचतनिसपुरानननवी
नो: याहिनउचितऋषिबोयातें: तवअपराधकरीनतातें: तुमअनरथयह
कीनोतेसो: इहब्रह्मबधउपजेआसो: प्रायासतिकरियेअनुपावन
नियतब्रह्मबधपापनसावन॥ बलदेव उ॥ सपबचनऋषितुमहिं
सुनाऊ: जोगसकतिकरिबिप्रजिवाऊ॥ ऋषि बाच॥ इहांबिचारकर
ऊअनुआसो: तवकुआसत्रसतिहोइतेसो: बेदबचनयहबिप्रबतावे
पुत्रपिताकीसमतापावे: उयअवाहेंपुत्रजुवाको: ताहिदियोब्यास
मनताको॥ बलदेव उ॥ निहचेफेरिकलोसंकरषन: मांगऊजोअ
जिलाषबिप्रमन: मनसंतापनिवेदोमुनिवर: इहाबल्वलनामोर
कआसुर: इल्वलकोसुतमहाबलीअति: पापीदानवबहुतदुष्टपति
सूत्रपुरीषसुराअरुआमिष: करतजग्यबिगरतदेदुष: पूरनजग्यहो
ननहीपावत: सोदानवषलहमहिसतावत॥ इहा॥ असुरकरऊनिर
मूलवह: सुरमुनिरेजुसाल: याकोप्रायास्चितयहे: करियेरोम
कृपाल॥१॥ जितेकतीरथजानिबे: तरतषंऊमहरूप: क्रमजात्र
तिनकीकरऊ: सोतुमपुनिसरूप॥१॥ इति श्रीभागवतेमहापुराणे
दसमस्कंधानुसारणेभाषाभारे हटनरहर दासे नबिरचितं॥
लोमहर्षणबधा॥ बलदेवजीतीरथजात्रागमनं॥७०॥ क
बिरुबाच॥ इहा॥ कीयआरंभजुजग्यको: सोनकआदिरियेस: करन
लगेतरुदुष्टक्रम आसुरआरंभसेसा॥१॥ छंदद्वैअषरी॥ दिव्यसथूल
देहअतिदारुन: कृष्णबरनअरुकलहअकारन: कपिलकेसअरुदंत
कुहाला: भ्रकुटीकुटिलकरूपकराला॥ ऐसेजग्यसालषलआये: ग
पीदेषेबिप्रपलाए: मुनिकोलाहलतबसंकरषन: जग्यसालआ
रेष्यकजन: कोपिमुसलहलसुमिरनकीने: आनिंतयेतिबचनअथ
नें: इहागगनचढ़िगयोसुआसुर: उरपरित्रासतयोअतिआतुर: इ
हहलअयसुओचिउतरयो: मसतकफोड़ोमुसलकरिमारयो: द
येप्रांनदानवतिहिदारुन: रिषजयजयतिउचारिमहारन: आ

पामांगीकौसिकआये: आगे सरयू सरितअन्हाये: आइ प्रीयगपु लहके
आश्रम: करिमंजनगोमतीगलिकाक्रम: प्रभुबिपासाओनगयापुनि सु
नकृतमालताप्रपरनसुनि: अद्भिमलयकुंजकेआश्रम: दृहनअरणव
आइ दुष्टदम: कंसादेवीदरसनहितिकर: बिहरेफलगूपंचसरोवर देवीस
तद्वैपाइनदरसन: सूर्यीरकगोकरनसनातन: अथतथेनइहांनगतिआ
धीन: देवजथाबिधिबिप्रनिदीनी: अबतापीरूपयोलीआयेन: निरबि
द्याबिहरेरेकवन: रेवामहषमतीमनुतीरथ: फिरिप्रभासआयेपश्चिम
पथ: नयोमहत्तारथरूकेनट: सोपेइहासुन्योरनसंकट: बिरुतनीरथ
नरषबितीसो: इहामहत्तारथअतीसो: रोषचढ़ेइतनीमबिजयरन:
इहजुधवहियोदरजोधन: अजहूआपआपअकुलाये: सोपेरूतहि
जनसुनाये: इहबलदेवसोचकरिआपन: चलेनेमकरितिनहिनि
वारन: इहाकुरवेतहांकिरथआए: पेदोउजिरतमहत्तटपाये: महाबि
रोधबिजयबंछामन: रोषचढ़ेनहीहोतसांतरन ॥ बल देव बाचाइ
हबलदेवबचनकहिऐसो: तुममहयाहिनहीकोउतैसो: सिष्यब
लदरजोधनसाथन: अरूतनबलअतिजीमअराथन: कलहयद्योतुमम
हनहकोऊ: हुतजिबीरनिवरतकहोऊ ॥ कबिकोमहबेरतिहिबच
नमानौ: उरनरामकोआदरआनौ: तहांबलदेवबिचारीतैसो: इन
कीयहलावहिंऐसो: इहानेमपारन्पजुआये: मत्रीसहतकरिपुनिसु
हाये ॥१॥ कहा ॥ करिकैतीरथपरिक्रमन: जरतबंकनपाल: तबआ
येबलदेवतहां: द्वारावतीदयाला ॥१॥ करमचरितबलदेवकौ: करि
हेसुमिरनकोइ: कालतीनमनबचकरहि: हरिसोबहुतनहोइ ॥२॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारणेभाषाबार
हटनरहरदासेनबिरचितो ॥ गुणासकेअध्याइ ॥७२॥ कबिक
वह: अरूहतनाग्पअग्रदा ॥१॥ इहीअर्थबिरागवह: मननिसचपनि:
काम: जथालाभसंतोषजग: छीनबसनतनमांमा ॥२॥ छेदूपधूरी ॥ सुपअध
रअतितनमलीन: उपपरितबनाजनबचनहीन: जोकरैसुउहिमअफलजा
इ: पैकहुचितथिरतानपार: पतिबृतासपतनीसप्रेम: निसकरैतगति
सेवासनेम ॥ मत्री यो ॥ कहित्रीयाबचनतुमसुनहुकंत: इकबिपति
हसिरेअलसवंत: श्रीकृष्णसषाजिनकेसमथ: अग्पानसहतइतदुयम
वथ: सांदीपनकेतुमपढ़ेसाथ: ऐईबासदेवअनाथनाथ: इहांनिकट:
द्वारिकाबसतआप: अरिचितधारपतिकरुधाप: पुनिबिप्रमंत्रकीनो
प्रमान: उनकोकछुदीजेनेटआनि: बसत्रकेपरुवांयेबिचारि: निस

चेतहांतंदुलबिप्रनारि॥ बांतनसोचावरगांबिधि॥ करलोराघरी॥ अस्यैकोधि॥ उम्चिहसोसोकरतआस॥ बसदेवकवरकोउरबिसास॥ यहबिप्रदारिको
नगरआइ॥ सबपेरिलांघिनीतरिसिधाइ॥ अंतरपुरहेतबकृष्णआप॥ परो
नीयहपूरनप्रताप॥ अनिवारतआयोबिप्रएकु॥ दुरबलपटफाटेमलिनदेकु
कषितदरिद्रमुषबचनदीन॥ पहचांनोप्रभुदेषतप्रबीन॥ उठिकृष्णतहांसा
मुहैआइ॥ लषिसषामिलततिहिकंठलाइ॥ धरिपांनिअंनिकरुनांनिधान
परजंकदयेआसनप्रमांनि॥ पटपीतझारिरजबिप्रपाइ॥ भगवंतचरनधोये
सुभाइ॥ सोधयोचरनजलअपसीस॥ मनमुदितकरासेवामहीस॥ प्रभुबेठि
आपत्रयतवनरूप॥ अरुकरतचरनमरदनअनूप॥ बेदरतीदेरतबिज
नबात॥ बिधिजुकतकरीपूजाबिषात॥ सत्री उ॥ इहांआइराजरमनीजुओ
र॥ गदीसहपूछतिगोरसोर॥ पाडुनोकोनयहकिहिप्रसंग॥ अवधूतछीनप
टमलिनअंग॥ दारिद्ररूपयहषीनदेह॥ सजावेगसोकरिसनेह॥ श्रीकृष्ण
करिहेतसुदामाबालकाल॥ सांदीपनकीहमपढेसाल॥ मेरेगुरुभ्रातायहस
हेत॥ यहनामसुदामाबिप्रसंत॥ कुसलातकृष्णपूछतकृपाल॥ बलबीरसंत
वहमित्रबाल॥ अबतागिहमारेग्रेहआइ॥ सुनदयोसाधदरसनसुभाइ
पदिबिछुरेहमतेजबपुनीत॥ तबआज्ञतयोकियुनाहिमीत॥ देयोयत
अकामसेद्विजदयाल॥ हेदसाकोनयहकोनहाल॥ सुधिआवतहैवहदिन
सनेह॥ गुरपतनीपठयेकाजयेह॥ ईंधनकोहमतुमगएआप॥ बनमांझबि
षमतहासीतबाप॥ वहिसमयतईबरषाअकाल॥ जलपूरिमहामिलि
जलदजाल॥ कृतनिसगगनघनअंधकार॥ सोपंथलहतनाहिनसंचार
पुनिरहेषुधारथसमयपाइ॥ बनमांझबिषमरजनीबिहाइ॥ कृष्णपोजत
पोजतप्रातकाल॥ द्विजगरुलहेहमकोदयाल॥ गुरबाचालीनेसप्रेमत
वकंठलाइ॥ हमहेतपुत्रतुमकष्टपाइ॥ कृतसेवाहमअतितुमसकाज॥ या
नेतुमऊरनतयेआज॥ बिद्यामेदीनीजोबिसेष॥ सोफललहतुमकोअ
सेष॥ सुदामाबाच॥ प्रभुहेतजपेबनकष्टपाइ॥ सोईनयोहमेस्वारथ
सुभाइ॥ इहांतबआयेगुरग्रेहतुम॥ सांदीपनकेसंग॥ इहांगुरपतनीलि
रउर॥ उपजेसुषअंगअंग॥१॥ कृष्णसहारकदीनके॥ सोयहबिरदसंवा
रि॥ मोहिदरिद्रीकोमिले॥ प्रभुसामहेपधारि॥२॥ सोर॥ धरिकर
लेउरधार॥ केसवमहिमाबिरदकी॥ बेदनसकेबताइ॥ सेषबषानत
सुषसहस॥१॥ नरहरप्रभुगावतनिगम॥ यहेरावरीरीति॥ पतितउधारन
परपुरुष॥ पूरनप्रेमप्रतीत॥२॥ कहोपिछानेओरको॥ प्रभुतुमबिनगु
पाल॥ मोहिदरिद्रीमूढको॥ दीनानाथदयाल॥३॥ रतिश्रीजगजतेन
हपुरा॥ [illegible]

नविरचितं ॥ अथ कोधाइ ॥ ८० ॥ कबित्त ॥ दोहा ॥ कारनगुरुअहकीकथा
अपनीदसाअनंत : कृष्णसुदामासोंकहो : नगतिहेतजगवंत ॥ १ ॥ छंदपधरी
पाथेयमित्रपतनीप्रबीन : द्विजलावकुजोकछुहमहिदीन : हमयेकतावथा
हीअषेर : नवनूरिअतपलगनहीतेर : तुलसिकापत्रफलफूलतेर : हेत
करिलेतसुप्रसनहोइ ॥ कबित्त ॥ चकिरसोविप्रतहथरनिचाहि : येचांव
रमुष्टीमात्रआहि : इनकोकहादेहुंप्रभुहिआज : लोकापवादअरुहोतल
ज : बिसेसबिस्वआपकबिसेष : द्विजकोतहांअंतरतावदेषि : अचलो
किगांठितंदुलअनंत : करषोलिलयेतहारमाकंत : मुष्टीनरिमेलेमुष
मंकारि : पुनिमाधवहूजेकरपसारि : सोहथगलोकुकमनिमुनाइ : प
नुअबतोइहिद्विजसंषेपाइ : तोजनमनबंछितद्विजहिदीन : करित्रि
प्रतहानिहिसियनकीन : इहप्रभसमयमोहनउदार : कीयबिदाविप्र
करिनमसकार : जाओनसुदामाकछुजनाइ : निसेषकृष्णहारिदनसा
इ : इहाविप्रसुदामांग्रेहआइ : पेपरनकुटीअपनीनपाइ : षितनहग्रेह
नषेसप्रथांन : अतिऊंचसर्वसंपतिसमांन : इहाफिरतदासदासीअने
क : बनिबसनकनकभूषनबिबेक : निरथारविप्रचकुयांनिहारि
बिसमयपरिसोचंतनोबिचारि : इथीपतिकाकुअहमांनि : कुंदहां
भूलिआयोअजांनि ॥ कबित्त ॥ द्विजरलोतहाग्रदेहुबिंत : क
मनिपहचांनोआपकंत : नगजटितकनकभूषननिदांन : पटबस
नबरनसोजप्रमांन : आवरितसंगसहचरिअनूप : सोधतेंउतरिआई
सरूप : करिधूपदीपकलसाधिकार : चितमुदितमहामंगलाचार : धरि
नुजाकंतमंदिरपधारि : मोछावरिकीनीविप्रनारि : बाजित्रगीतमृछ
वबिसेषि : द्विजइंहाइंद्रकोबिनोदेषि : सबसंपतिसुषमंदिरसंगेर
ऐकुलबिनाकोदेयओर : प्रभुनृपाबिभूतिछनमांझपूरि : दुरनभकरे
जोंइंदरूरि : मुहिजनमदरिद्रीदीनजांनि : अहवाहरिकेसबकरिगलांनि
पहचांनिमोहिदेसमुषपाइ : लेमिलेआपतहाकंगलाइ : प्रभुकरीप्रीति
मोसोंप्रमांनि : जोगेससिधसोपेनजांनि ॥ कबित्त ॥ इहांपाइइंद्रसंपति
असेष : विप्रसोनयोबितसतबिसेष : पंचतलसेतिहिअवधिपाइ :
वहविप्रकुलमंहमिलोआइ ॥ दोहा ॥ बिप्रसुदामाकीबिपति : प्रभुन
रहरकीप्रीति : कृपासिंधुजदुवंसकी : राजनीतियहरीति ॥ १ ॥ कृपाच
रित्रजुकृष्णकी : करिहैसुमिरनकोइ : करमबिषादरिद्रको : हतन
कबहुहोइ ॥ २ ॥ कबित्त ॥ नरहरमनबचकरम : करियेतजनत्रिकु
लः कारनबंधनकरमके : जथाछुटहिजिमजाल ॥ ३ ॥ इतिश्रीभाग्व
तेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारेलीलाषावारहटन

रहरहसेन बिदरखत॥ सुहमाचरित्र व्यासी कैअधाइ॥५॥कबिकु
लीच॥६॥ कालजुसूर्यग्रहनकै॥ आगमबरसौआनि॥ क्रमजात्राकुरषे
त्रकी॥ पुनिसबदेसप्रमानि॥७॥ कालतरसुकब्यासकहै॥ रहसिपरीछ
तराइ॥ कारनयहपूछीकथा॥ प्रेमसहतसुषपाइ॥८॥ वृजगोपिनतैबीछ
रे॥ वृंदाबनबलबीर॥ पुनिकाहूअवसरकहू॥ बहुरिमिलेजदुबीर॥९॥छंद
द्वैअषरी॥ उग्रसेनराजाचलिआपन॥ संगबसदेवकवरसंकरषन॥ कृष्णपर
द्युमनिसामसकारन॥ गदसुचंद्रसंमिलिसुकसारन॥ बिनताचालकुरंब
बिराजे॥ सिंहनसिवकाबाहनसाजे॥ इत्यादिकजादवसबआये॥ देसनग
रपुरजनसमदाये॥ अनुरधकृतबरमाअधिकारी॥ राषेनगरदेसरषवारी
करीनछित्रपृथीनृपनंदन॥ तिनकेरुचिरकरेतहातरयन॥ श्रोणीदहत
हन्तरेसपूरन॥ बिजयजग्यकीनैंतहाबनबन॥ वहिपवित्रथलकृष्णजु
आये॥ उत्तमकुरुसुषेतअन्हाये॥ द्विजनिसुरनिबहुदानजुदीनै॥ क्रम
जुतजहांतहांहेराकीनै॥ मछउसीनरकोसलकेरे॥ पुनिबिदरभपुरदेस
जुप्रेरे॥ अंजयअरुकंबोजसुकेकय॥ मंद्रकूतकेरलधरहितमय॥ न
रषहकेजेतेनृपति॥ इत्यादिकआयेसेनाअति॥ घोषघोषकेगोपन्
थयन॥ महानंदसंगआरहरषमन॥ अवरसकलवृजजनचलिआए॥
सहतकुटंबनिसकटसजाए॥ उहाकुरषेतपरबसिआवन॥ नयेम
हरहेरामनभावन॥ इहाकुटंबहितजबकृष्णकहै॥ इहामिलतस
बआनि॥ सेवाहितसबंधयुष॥ पूरनप्रीतिप्रमानि॥१॥ कृताइहांबस
देवकी॥ सुषमिलिबहनासंत॥ अषिलदसआआपनी॥ कहतभए
एकंत॥॥ कृताबाचाछंदद्वैअषरी॥ महाअवसथापरिहममांही॥
निसचयतुमसुघिलीनीनांही॥ दैवहोइप्रतिकूलजुउरदिन॥ अप
नेकीसुघिलीजेआपन॥॥ बसदेवबाचा॥ इहबसदेवदयो फिरिउत्तर
बहुबहनतमातसमोसर॥ तातेदोषहमहिनिहिताको॥ जथाकरुअ
बकारनजाको॥ आनीअमतदेवकोत्रेस्यो॥ फिरपुत्रिकाजोनट
फेस्यो॥ दुष्टकंसकेतयअतिदासन॥ तातेहमनभिजथावातत्रिन॥ अ
बरहादेवजोगतेआये॥ सजनमिलेसकुटंबसुहाये॥ अरुहमसहीबि
पतिजुअैसी॥ तुमहीसुनीहोगीतैसी॥ उग्रसेनदेआदिबंधुअब॥
सहतत्रीयानिमिलेकृतासब॥ इहाकृष्णनेटनकहआये॥ सबकेर
वसकुटंबसुहाए॥ नीषमद्रोणाचारिजरनतर॥ धराअधीसनृपति
धृतराष्ट्र॥ रानीपतिबरतागांधारी॥ पुत्रसबैसंगमिलनपधारी॥
अंजयबिदुरकृपाचारिजसम॥ कृतवोजनीषमकजथाक्रम॥ न
पतिजहाबैराटनगनजित॥ हैतहाथष्टकेतमेथलिहित॥ जुधाम

नुदमयोषमाप्रजहा: हितजुतवाम्हीककेकयतहा: संगसुसरमाजपसु
हाये: इत्यादिककैरवमिलिआये: मातदेवकीरामकृष्णसम: कीनीअतिम
नुहारिजथाक्रम: इहानंदादिगोपगनआये: संगगोपीसकुटंबसु हाये: मि
लिसकलजादवमनमाने: हेतप्रीतिकरिअतिहरषाने: इहबसंदसनंदमि
मिलिआपन अरुबेवअतिहितएकासन: उबकेसबसदेवहिदीनो
कमकलेसनिवेदनकीनो: कृष्णप्रवेसनंदअहकारन: चितप्रसंगसो
लगेचितारन: वेहिनसषाउ ऊनिसुधिआये: छिनतिहिनयनप्रेमजलछ
ये: याहीसमयकृष्णनयेआवन: लेपितमातलगेउरलावन: मनतनमं
तकआंतलहितैसे: इहउपजेसातिकरसअैसे: जथाहरषबढिकंगनरेज
ल: बोलिनसकतरहतकरिकरिवल: तहानयेउऊंयेसुषतेसो: जाइ
नकलोबिधातजैसो: रोहणिमातदेवकीराणी: हेतजसोदामिलिहरष
लीपा देवकी॥ कहैदेवकीबचनसकारन: महरिजसोदाधेमहेतमन
पथकुचषानप्यारेपोषे: सोहमनिनुतुमआतिसंतोषे पुनिकीयरिष्ट
जथानैनपल पांनबसनसोगंधनिपलपल: इहाकृष्णउठिकैजब
आये: पुनिगोपिनएकांतसुपाये: रूपमगनआनंदजरोवत: जथा
चकोरचंदमुषजोवत: बिछुरीनियिपाईजनुबामा करतबिलोक
नबदनसकामा: प्रभुपूछतभयेप्रेमपरायन: निरविकारजोगीन
रायन: सषासतबहमसोजेसुंदरि: कबकुमनआवतहेसुधिकरि: क
त्योगमनमथुराकिहिकारन: मोषनसजनदुष्टगनमारन: तातेकृतय
नमोहीजानत: मायादेवीताहिमानत: प्रेममिलतबिछुरतहेप्रानी:
पेयहरछादेवप्रमानी: बातबिधूतमिलतपुनिबिछुरत: जलदल
लत्रिनरेनाजितत्रित: बरतजोगबिजोगकरमबसे: पेलवनूलस
हतहैपरहस: होसबमध्यसबनितेबाहरि: आदिमध्यनितअंत
निरंतर: करेध्यानमेरोजोमनक्रम: मुकतिहोइसोमिलेमोकुमम
हा॥ अध्यातसउपदेसयह: करिगोपिनगोपाल: कृतेतबेवनमा
कुम: नंदग्रेहनंदलाल॥१॥ हेप्रभुदीनानाथहरि: अंबुजचरन
अनूप: सुपेहमारेउरबसहि: सुंदरस्यामसरूप॥२॥ ब्रजलील
हरिछबिबिमल: पुनिगोपिनकेप्रेम: नरहरमांगतनजननित:
यहनिरंतरनेमा॥३॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमसकं
धानुसारणेभाषाबारहटनरहरदासेनविरचितो कुरुषेत्र
मात्राआगमनाबर्णनोनामअध्यायोदा॥ कबित्त॥ इहापे
रवआयेकृष्णपहि: जथातगतिहितजानि: मनबंछितजिनक

मिले: पूरनकृपाप्रमानि ॥ छंद पधरी ॥ इहांपांडुपुत्रसबमिलेआ
नेगेसुधरमपरिषदबनाइ: कुसलातकृष्णपूछीकृपाल: सुतधरमदये
उतररसाल: तवचरनकमलपूरनप्रताप: सुनिबेदवचननिसचेसु
नाव: पुनिसाधसुषनिसुनियेपुरान: बिस्वासहतमानेप्रमान: अषिले
सकुसलतिनकेअनंत: निसमंगलयहबरतेनिरंत: तवकृतहेतकृष्ण
हरनहार: तुमतयेदेवमनुजावतार: केरवअरुपांडवजदुकलत्र
एसईसबेसबहरएकत्र: कमजुकराराजरमणीअनेक: बिषिकह
तबातपूछतबिबेक: सोलहसहस्रासतएकसंग: येआवपटरानी
प्रसंग: येकृष्णदेवबिनताअनूप: सुनलछनजोबनगुनसरूप: त
हांदुपतसुतापूछेबिषात: बिषिकहोआपनीआपुबात ॥ रुक्मि
मनी ॥ इकत्रातरुकममममदाअंध: ससिपालसरसिकीनोसब
धः सेनाअनेकराजासहार: इहांचेदिराजससिपालआर: तुवप
तीसबेकरिमानतंग: गहिबासदेवलायेअनंग: अजजरथमध्यतें
सिंघआर: जीयमानेताकहलेयजार: इहिभांतिमोहिआनीअनंत
दुरषलबकृतकेतोरिदंत ॥ जामोतीबाच ॥ अतिबलीपितामो
हिजामवंत: जरजरितदेहजुधनिजयंत: हैबसतरीछगिरिबिवर
माहि: नरअमरतहांकिऊगमिनाहि: दिनएकआरतहांकृष्णदेव
इतजामवंततहांनिरिआजेव: एकबीसअहोनिसितरेआनि: प्रभु
कोप्रभावनाहिनपिछानि: इहांबासदेवजानेअनंत: सेगदरी
मोहितहुआहिसंत ॥ सतिभामाबाच ॥ ममपिताबंधबंधकी
यबिरोध: सोसियहस्योपवेनसोध: मनिसेजुतताकोबयरमानि
वहस्योकृष्णकहदोषआनि: निरदोषकृष्णमनतोमलीन: कृतमृग
यातहबनगमनकीन: पुनिषोजिजथाक्रममनिसुपाइ: इहिस
त्राजितकहदईआइ: इहस्योदोषनिरदोषअंत: इवसाषबयर
जांबोतुरंत: इहांपितामोहिउरवासआनि: पुनिदईआहिप्राणिस
षांनि ॥ ३ ॥ कालिंदीबाच ॥ मैस्यामचरनकोसरनमानि: अबिला
षचित तपकरेआनि: प्रभुअंतरतवपाइ: हितकस्योसोम
मेरोसहार: पुनिपग्यसषअरजनप्रबीन: करुनानिधानकरय
हनकीन ॥ नग्नउबाच ॥ कृतआपुकाजपितसानकूल: मोहि
हेतस्वयंबरस्योमूल: इहादेसदेसकेनृपआनि: पुनिजथाजोग
जेगेप्रमान: यहबीचतबेअषिलेसआइ: आकरषीधरिथपरउ
गाइ: इहिभांतिमोहिनिजअंगआनि: प्रभुकस्योआपुहरषस

प्रमान ॥ सखा बाच ॥ नगनजितराजमम पितानाम: कीयनेमयष
नाथनसकाम: प्रभुकस्वीतहासो वृतप्रमान: बियिजुकतब्रा
ह्मंगलबिधान ॥ ॥ मित्र वृंदवाच ॥ मम पितालगनहिन सुनप
गए: अपिलेसविवाहीमोहिआशा ॥ लक्ष्मन बाच ॥ वृतवृहत
सेनकीयमछबेध: सबआए नृपतिअतिबलसमेध: जदपिकीयउ
रिमनृपसमाज: काहूनकरेऊषबेधकाज: जदुनाथइहानिजमरम
रमजानि: तहामछबेधकीयबानतानि: बरमालतबेकंग्रा हि
बिसेसचलेमोकहंबिवाहि: राजानसबेमदगतरिसाइ: इहदुष्ट
निरेक्षोपथआइ: सारंगधनुषगुनबानसंध: काटेसबहिनकेजु
आकंध: पापिष्टदेषिसोत्रासपाइ: पुनिगयेसेषकतरपलाइ:
संग्रामजीतनहासत्रुसाल: प्रभुमोहियेहलायेकृपाल ॥ सेषस
खीबाच ॥ नरकासुरनामअसुरएक: वहिजीतिजीतिराजाअनेक: हम
कंनाओनीहरिहरि: घरमाऊसुराषीघेरिघेरि: पुनिसुनेतिहाहम हरिस
नाव: सबहीनतयोयहवृतसुनाव: अभिलाषहमारेचित्तएहु: श्रीदेवह
महिबरकृष्णदेहु: प्रभुसबहिनकोमनभावपाइ: इहानरकासुरवधक
स्वोआइ: येकन्यासबआरिकाओनि: पुनिऐकलगनआहीप्रमानि: अ
भिलाषतयेपूरनअनेक: यहअछोहमनमांऊऐक: बियिसोयराजाच
नवारबार: जबनवहमपाव हियहत्रतार ॥ ॥ सबहिनके सनाव
सो: मनमोहनतनमांऊ: चितवतचंदचकोरतो: संध्यादिवसरुसांम
॥ कहीद्रोपदीसोकथा: बिमिजुतहसिहासिबांम: उग्रसेनपायेरह
हमबरसुंदरस्यांम ॥ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमसकंध
नुसारेनाभाषाबारहटनरहदुदासकबिरचेतो द्रोपदीहरनु
कमणीआदिबिवाहकथनोनाम ॥ ८३ ॥ कबिकाछंदपधरी
पंचालीप्रछोहसिसप्रेम: निसेषकसोकमनिसनेम: कमजथा
आऊश्रीकृष्णकीन: पुनिकहेसकलबिनतांप्रबीन: कुरषेतजितेमु
निपरबकाज: सोआइकृष्णदरसनसमाज: द्वेपायनानारदचिवन
देषि: अरुबिस्वामित्रदेवलबिसेषि: द्विजसतानंदअरुनारदराज:
सुनपरसरामगोतमसमाज: गालवबसिष्टभृगुरिषसमान: पुनिमि
लिपुलसतिकसिपप्रमान: पुनिअत्रिवृहसपतिहाआइ: अरुद्वि
जमृकंडसुतमिलिआइ: येकत्रद्वितीयअरुतितीयये: अंगिराअग
सतिद्विजबामदेव: अरुजागवलकश्यादिआइ: सबतजसुध
बलसुनाइ: अवलोकिइनहिमिलिकृष्णराम: पांऊ

प्रनाम: द्विजबरतबअरघासन दीन: प्रभुकलोतरामाथवप्रबीन
रहादयोदरसतुमदेवआज: क्रमनयेहमारेसफलकाज: जलमंर
हैंरथसकलजानि: प्रतिमासुदेवपाथरप्रमान: सोफलतकरहबिर
कालसेव: द्विजदरसमात्रहेसफलदेव॥ रिषि बचनसुमईस्वरअगुन
अरूपआप: पुनिधरतरूपपूरन प्रताप: अरुतीनधरमपालकअषंम
दुष्टनिकोदेदेमहादंड: अखिलेसअगममायाअपार: कारणपरूपतु
मनमसकार॥ कबिक॥ मिलिबैसिजातबरिषसमाज: कृतहोतय
रमचर्चासकाज: बसदेवरहापूछेबिचार: तुमत्रिकालग्यबरजितबि
कार: नवहोतकरमकिहिकरमजोग: प्रभुकहोप्रगटअबसेप्रसंगा॥
र दीजोच॥ मुनिबोलेतहानारदरिषेस: निरधारबेदमतयहनरेस:
मुनिकलोतहानारदनिदान: सिधांतसुनहुजदुबरसुजान: जगपतिक
रतहैंकरमजाल: बिधिजुकतपएपूरनबिसाल: धरिदेहपुत्रतवबासु
देव: हैंदिमरूपदेवाधिदेव: इनहोतअखिलईस्वरअनंत: तुमपूछ
नजोपेहमहितंत: भगवंतहिजानतपुत्रभाव: पुनिप्रबलदेवमायाप्र
भाव: हैंनिकटअनादरतासहोइ: जलजथाएंगतजिआनजोइ॥
कबिक॥ करिजग्यजतनआरंभकीन: पुनिमिलेसबेमुनिबरप्रबी
न: भगवंतहेतकरिमषसुभाइ: जगदीसजजनकरिअसुजाइ:
पुनिभयेजग्यपूरनप्रमान: निरघोषबजेमंगलनिसान: रामइ
दआनिबसदेवराइ॥ समत्रीयाकुटंबअपनेसुभाइ: मषअंतकरेम
जनमहीप: सुनदानमानमुनिवरसमीप: सबदेसदेसकेलोकसिध
अनिलायभयेपूरनप्रसिध: बसदेवनंदमिलिकरतबात: पृथीप्रसिधमै
त्रीपुन्यात॥ बलदेवबाच॥ प्रीतमसुरतयहमोहपास: जोगेससिधप
रित्रमनजास: तचप्रीतिनकरनजयेत्रात: तिहिकारनअबबिछुरौ
नजात: प्रथमहमकंसकेत्रासपाइ: असमरथभयेसुनमिलिआइ: पु
निभयेराजमदहमहिमित्र: तिनकेसुभावदुसतरचरित्र: प्रीतमच
षअबिरलजलप्रवाह: थकिरहेनपावतप्रेमथाह: परसपरप्रीति
पूरनप्रमान: तहारहेमासत्रयहेतमानि: पुनिभयेकोमपूरनप्रमा
न: मिलिदईबिराकरिदानमान: इहानंदादिकबृजयोषआइ: सु
मिरतसबप्रीतमहितसुभाइ॥ इहा॥ इहाबरषारितआगमन: क
रिजात्रामुरषेत: कीनोआवनद्वारिका: जादवथरमबिजेत॥१॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधानुसारणेभाषाबारह
ट नरहरदासेनबिरचितेबसदेवजीकूरषूजग्यकरनोग

मांम ।। चौरा सीकोध्याय ।।८४।। कबिरुबाच ।।दूहा।। येकदिवसबारावं
मी बनिबेरेबसदेव : तबसेकरषनकृष्णतहां : आयेपुत्रअजेव ।।१।। देषि
पितातबपुत्रदिसि : कुवसमरनक्रमहेत : कृतप्रनावगुनकृसनके रिषि
निकहेकुरषेत ।।२।। छंद पधरी ।। बसदेवकसोतबविमलबोनि : तुम
परमपुरुषबेदनिप्रमोनि : बिस्वातमहोतुमबासदेव : नवरचतबिना
सतआपजेव : जेअरकआदिदेजोतिवंत : उनमांहतुमहीनासतअनंत
थिरउरनीषंम्पागिरबिथार : क्रमनदेबरनअरुउंकार : नवजतमहा
इंद्रीसुजाव : पुनिबासदेवसोईप्रभुप्रनाव : सातिकजतामसगुनस
रूप : तबमायाकलपतनवनरूप : अरुसुष्यमगतिप्रभुकीअनंत : अग
ननजानतआदिअंत : क्रमबंधक्रमतनवजतकेइ : याहीतेआवागव
नहोइ : स्वारथहितनरकतसिंधुसात : ताहीतेजनमजुहथाजात : संपति
कुटुंबअरुजससमेत : हेमतामांनतकुबुधिहेत : सोपासबंधतिनकेस
नेह : छकिरलोनपावतकरमछेह : पोसोनपुरुषनिरगुनप्रसिध : सुतनां
हिनमेरेस्वयंसिध : नवजारबिनासनहेतरूप : रविचक्रधस्योतुममनुज
रूप : बरहानपुत्रमोहिदयो बीर : सोईतोप्रमानसुंदरसरीर ।। श्रीकृस्न
।। सुनिकृस्नतहाबोलेसुनाइ : पितमहातनतुमयहेपाइ ।। कबिरुपु
निमातपितातबप्रानपाइ : सुतआदिब्रहमजानेसुनाइ : इनदयेबिप्र
केपुत्रआनि : जगदीसजथाजमलोकजानि : हेअप्रमेयआतमअनंत : ई
साममहाजोगेससंत ।। बसदेव बाचा।।आगेतुमगुरकेपुत्रआनि : पुनि
दयेहुनागुरप्रमांन : करिबयरनावमपुत्रकंस : सोहतेबालबयर
हितसंस : मेरेसुतदीजेआनिमोहि : तातेअबजाचतपुत्रतोहि : अषि
लेसकृस्नतबसुनिउदार : कृतसुततगमनबसदेकुमार : बलिराजप्रभु
कोतबपिछानि : अतिजगतिकरदंडवतआनि : पुनिदेतराजप्रभुको
पिछानि : सकुटंबउदिकसोईसीसधारि : प्रभुकरीजयापूजाप्रबीन
करजोरिरीनकैप्रनितकीन ।। बलिबाच ।। नमोअनंतमहंतरूप :
कृस्नब्रहमनिजकाइ : सांषिजोगसाधतसगुन : संम्रितबेदसहाइ
।। प्रतिमाराजसंतमप्रकृति : प्रानीहतकप्रमांन : प्रभुदरसनपावे
नप्रगट : ऐसेकोरीयआनि ।।१।। आगमकारनजोउचित : कहियेक
मलाकंत : हितजुतसेवकजानिमुहि : आग्याहेकुअनंत ।।३।। श्री
कृस्नवाच ।। छंदपधरी ।। मुनिअतुलतेजमरीचनांम : बनितातिं
हिउर्णीधरमबांम : तिहपूबजनमषटपुत्रपाइ :

मसुनार इकदिवसपितातिनकेनुआप पुत्रीतनचितयोदिष्टपाप सोह
सिजुउग्रसेनेसुनाइ दुसहसकोपतबआपदीन रिषजोमरीचतहामन
मलीन पापिष्टजानितुमअसुरपार जुगजथाकरमअनुसरफुजाइ येहि
रनकसिपकेउदरआनि पुनितयेपुत्रक्रमजुतप्रमानि पुनिमरेजोगमा
यप्रनार अवतरेदेवकीगरभआइ तेक्रमक्रममारेदुष्टकंस निरद
ईसिलापरकेनृसंस पुनितिनहिपुत्रअपनेप्रमानि उरबदतसोच
देवकीआनि तबलोकमांझदेवसुतत्र मोहिदेहुआनियहमूलमंत्र
अथ षट पुत्र नाम इकनामसमरउरीथआन परिषपतंगसुयेप्रमा
न छुद्रतुकपृथीयेषटसरूप इहातयेजोनिअसुरअनूप इहादयंत
रजसोदयेआनि मोहनतहाआनेमोदमानि बलिराजकरेलेअबाल
देखिकिहिआनिदीनदयाल इहामितेजबेषटपुत्रआनि माताकुचआ
वतिमोहमानि प्रभुकेपुनीततनपरसपार येबालतयेसदशतिहिआ
इ ॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणे दसमसकंधानुसारणे भाषाबारह
टनरहरदासेनाबिरचितं ॥ कंसहतदेवकीपुत्रआनयोनाम
॥८५॥ सुकहिपरीछतमानिसुष बिधियहपूछिबिचारि पथसुनरपा
नियहकहियेजथाप्रकार ॥१॥ एकसमयअरजनअनय करितीरथ
हतकाज आयेषेत्रप्रनासइहा सबमिलिबिप्रसमाज ॥२॥ संकरषन
कीसोदरी सुनीसुतइनाम प्रतिमालछनरूपगुन बईसजग्यानाम
॥३॥ दुरजोधनकहदेनकोकीयबलनइबिचार काहुनपूछतओरक
हं अपुनीबुधिअनुसार ॥४॥ सोइहाअरजनबातसुनि उपजोचित
अदेस किहुजतनयहकनिकपाऊबुधिप्रवेस ॥५॥ छंद देषि षर
कस्योरूपसन्यासकारन धरिउरकपटबिरंगधारन अरजनतबेष
रिकोआयो बंचकबेषबिरागबनायो पूजतयाहिसबेबासीपुर ग
हतग्यानउपदेसजथापुर कस्योनिमंत्रणभोजनकारन महपुरुषब
लदेवजानिमन इहाबलदेवअहजबआयो बिहतमध्यआसनबेग
यो इहापरसपरकंन्याअरजन अनोअसनयेअवलोकन याते हेर
गरागबढ्योलहा उपजीप्रथमअनंगदसायहा इहारहेसंबतइकअरज
न नाकतछिद्रकपटभोजनतन किहुनिमंतसनइकुमारी पूजनदेवस
आपधारी अतिहितरथआरोहिचलीइहा तकतयातबनिअरजनकी
तहा धरिगांजीवधनुषकरधायो अरजनपाछेलागोआयो समयपाइ
पूजेजबस्वारथ रथतिहिबेराकूदिमहारथ कंसाहरनपथतहाकीनो
निरषतसकलकुटंबप्रबीनो सोबेसदेवकुलकेसमत इहप्रसथलायो

उलअरचुत:रहाबलनरकोधबकुकीनों:पुनितहाबरजेकुसप्रबीनों कर
कुन्नातअबमारहिकैनैं होतदरीबसजोकछुहोनैं:दुहितअतसकारुदेहो
लोकमांऊअपलोकतलैहो:संकरषनतबबियेसमऊये:योंकहिकुसमा
नउपजाये:अरजनअरेहसुतदाआनी:धरमराजसुतत्तरांरजधानी:॥दुह॥
॥ हठिआनीकंसांजुहरि:अरुबकुनयेउछाहु:अरजनसुनदाकोइ
हो:बरीजुराहसमाऊ॥॥इतिसुनदाबिबाह॥ मिथलापुरबकुलासन्न
प:हैंहाबसतबिदेह:मनसाबाचाकरमनो:सततकुसलसनेह॥२॥छंद
धरी॥ श्रुतदेवनामदकद्विजसग्यानं: सोवसतपुरीतामहप्रमानं:जगजथ
लाभसंतोषजानि:यहकरतकालबंचनांआनि:पुनिताकेकुसचरित्रप्रेम:
निसकरेनजननिसिदिनसनेम:अनिलाषकुसदरसनअनंत:लोभाइराज
द्विजकरतसंत:प्रभुताकोअंतरनावपार:अबिलेसरहारीयदरसआर:इह
नारहादिरिषबरअनंत:मिलिकुसंगसोचलिमहंत:आनरतधन्यकुरदेस
आर:अरुजोगतरकरिमछिजाइ:पंचालकूलमधुकयप्रवेस:सुनकोसल
केकयलंघिदेस:प्रभुउनकोअंतरनावपाइ:अबिलेसमिथलापुरीआइ:ब
कुलासनृपतिश्रुतदेवबिप्र:प्रभुसनमुषआयेतहाछिप्र:पूजाअनावकरि
लगेपाइ:सुनदुकुनिमंत्रणकरिसुनाइ:देवाधिदेवधरिमनुजदेह:सबरिष
निसंगसंजुतसनेह:दुकुअंहकरिजोजनदयाल:करुनानिधानरेकहीकाल:
उनकरीतबेअसतुतिअनेक:आतमासाषितुमपुरुषरेक:दीननिकोसाधव
दरसदेत:हैकोनजाहिनहिचरनहेत:सबजातिकरेतिनसमाधान:धरिहे
थसीसकरुनानिधान:अबिलेसद्वारकोपुरीआइ:सुषकरतजयेदीननि
सहाइ:॥ इतिश्रीभगवतेमहापुराणेदसमसकथानुसारणेनामबार
हटनरहरदासेनबिरचितं॥ अरजनसुनदाबिबाहप्रसंग॥रजबकु
लासुतदेबिप्रप्रसंग॥ ८६॥ कबिक॥दुह॥कह्योप्रसनजुगजोरि
कर:रहापरीछितराइ:बेदनिकीउतपतिजग:सुकमुनिकहोसुनाइ॥१॥
छंदधरी॥मुनिनारदकसमयसांतमन:करतरथीपरजटनसकार
न:रहांनरनारायनपहुआये:त्रमतबदिकाश्रममनभाये:नरतषंकके
सकलरिषेस्वर:बेदसत्रबिलोकेबुधिबर:तिनमहनरनारायनतेसें:उम
गनमधनिसाकरअेसे:जोतुमबातमोहिपूछीजद:नरनारायनप्रतिसोई
नारद॥ नारायन॥अगेकिकुसमयकालतर:मिलिजनलोकसनासबमु
निवर:ब्रहमग्यानचर्चाबिसतारी:नयेब्रहमरिषहरषतभारी॥ रिषबा
चा॥सबनिकसोमिलिअहोसनंदन:प्रभुतुमआहिबुधिबयपूरन:बेदतकी
उतपतिबतावकु:स्वामीआदिअंतसमझावकु॥सनंदनउ:महाप्रल
यतबभयोमहीतल:जहांतहांथलपूरिरहेजल:पुरुषअनादिसिधसा

मानी: सबेश्रुतिताउदरसमानी: सोरहेजलअंतरस्वामी: जगतउपाजक
अंतरजामी: प्रभुपोदेतबअवधिसपूरन: इछानरीअष्टिउपराजन: प्रथम
स्वासचवनिकसेपावन: बेदनयेसोईधरमबदावन: जगतईसयेबेदतिजा
ने: महअसतुतिकीनीसोने: जोतिसरूपबेदधुनिजागे: पुरुषप्रसिधजगति
रसपागे: ओबेदीजननपहिजगावत: बोलतबलेबिरदबदावत: निरगुन
सगुनरूपनारायन: पुनितिनबरननकरेसहतपन: प्रभुकोवारपारनहीपा
यो: नेतिनेतिहबेदबतायो॥ कबित्त॥ निगममरमयहमुनिकेनारद बि
दानयेतबबुधिबिसारद: द्वैपायनकेआश्रमआये: पुनिबेदतहिआदरप
ये॥ नर नारायनउ॥ नरनारायनबचननिरंतर: आसहिकहिजथाबिधि
बिसतर: पिताप्रसंगयहेद्वैपायन: महसुकपरमततजोपायो: सुपेपरी
छतनृपहिसुनायो॥ दहा॥ सुकहिप्रछिअतिमसुसुत: नृपनिगमकोतेर
आसजथाबिधिबरनयो: बिहतजुकारनबेद॥१॥ इतिश्रीभागवतमह
पुराणेदसमस्कंधानुसारेतामाजारहटनरहरदासिनबिरचित॥
बेदउतपतिबर्ननो नाम॥ ८॥ दहापरीछतएकु: अरथजुपूछिएक
दिन: सुकमहमनसंदेह: सोतुमहीमेटनसमथ॥१॥ पावतरिधअपार:
नवजेसंकरकेनगत: नियतअथननिरधार: कमजुतप्रजतबिसुके॥२॥
श्रीसुकबाच॥ छंदपधरी॥ सिवसकतिसगुनरूपीसंजोग: गुनतेबिक
रहोईअप्रयोग: हेबिसुसदानिरगुननिरदोन: प्रभुप्रकृतपुरुषतेपरप्रमा
न: इनतजेसुनिरगुनताहिपाइ: जननिरधननिरगुनमाहिजाइ: नृपकु
तोजुधिष्टरजगनरेस: बरबीरपितामहतवबिसेस॥ जुधिष्टर॥ हयमेध
जयोपूरनप्रमान: नृपपूछियहेकलहिनिदान॥ श्रीकृष्णबाच॥ बि
तिकरोंकृपाजासोंबिसेष: सबहरुतासंपतिअसेष: जबवाकोसंप
तिछीनिजाइ: सकुटंबताहिछोडेसुनाइ: जोकरेसुउदिमअफलजाइ: वा
कोतबउपजेबिरतिआइ: जोहोइकामनारहतजीव: दुषसुषनिवरतध्या
वेदईव: करिब्रहमध्यानसोपेअकाम: महिहोइमुकतिमिलिपरमधाम: ह
रिअवरदेवकोजगतहोइ: सरकबहुमुकतिपावेनसोइ: अवरसुरदेहिसं
पतिअसेष: उनकेबसनाहिनमुकतिएक: मुकतिकेदातनगवानमानि:
पुनियहेबेदबाचाप्रमानि॥ श्रीसुकबाच॥ सिवदेवबृकासुरबरसमा
प: वाहीकेसंकरपरआप: बृकनामअसुरएकमहाबीर: सकुनिकेपुत्र
समहरसधीर॥ बृकजा वहिपूछेनारदरिषिआइ: कैबेगप्रसनसुरसे
बताइ: बिधिबिसुरुद्रकिबाबिनीत: पुनिसबहिनतुमजानतपुनीत॥
नाहेजा॥ हेदुराराध्यबिधिबिसुदेव: सोफलेनवाचिरकालसेव: हरसेव

बेगहीप्रसन्नहोइ करिक्रोधकदाचितहेतकोइ: बरपाइहोइप्रानीप्रसन्न तिहि
करैअनादरकुमतिरत्न बरबंछाहैजोबेगबीर: सिवहेतकरोतोतपसधीर;
कबिक॥पुनिअसुरबचननाईप्रमोन: धितनयोआइकेरारथान: करिअग
निकुंडदीपतिसकोम: निजमांसजुहोमतरुद्रनाम: क्रैप्रसनरुद्रतपउग्रहेत
सोनिकसिअगनितेतनसमेत करकरषिनिवारनअसुरकीन: पुनिकरोहे
मपूरनप्रबीन॥श्रीसिवउ॥जिहोमकस्योतैंबिषयजीत: वृकमांगहुबर
सोबिधिबिनीत॥वृकउ॥किहुसीसकरोंकरहेतकोइ: असुरासुरनरसोईव
समहेसो॥कबिक॥प्रभुरुद्रकरेसोईप्रमांण: वृकपायोबरबंछितबिधान:
सोअसुरभयउहिदुष्टसाथि: पापिष्टकरीकारनउपाथि: यहदेवजोगबरदा
नदीन: मनभयेरुद्रपीछेमलीन: आसुरयहदुरमदघटीआइ: भयोदिष्टसि
वापरकामभाइ: सिवसीसहथमेल्हनसुनाइ: आसुरमनचिंतोयहउपाइ
भवलिभोअसुरकोचितजेइ: बिसिचलेनाजिअंतरसषेद: आतमकृतअप
नोदोषओनि मनमाहिरुद्रतबत्रासमानि भवनजेजातअंतरभयान: यह
असुरपीछोधावतअपान: तबत्रिमोरुद्रजहांतहांसंतप: पथदिष्टजाइधुह
चेनपाप: दुषभयेअमितनहरुद्रदीन: करुनानिधानकोध्यांनकीन: अ
तरगतिव्यापकप्रभुअनंत: कीयसिवारूपतहारमाकंत: अषिलसुरगदिमध्य
आइ: वृहिगतभयेसिवगयेपलाइ: करिमोहबिवसयहचरितकीन: प्रभु
कपटरूपबोलेप्रबीन॥बिलउ॥तूकोनभयोअतिअमितआज: किहिको
रनधावतहैसकाज॥वृकबाच॥मांननिजोपूछतहैतमोहि: तबहेतनम्मो
अबलहीतोहि: ममयेहचलकुअबप्रीतिमांनि: करिअभयचितसबछांडि
कान्म॥सिवारूप बाच॥सिवारूपकहिअसुरसो: तोपोबरिहोतोहि
करजुगसिरधरिनमकरि: हसेरिकवेमोहि॥५॥स्वामीनितिप्रतिहरषसो: त
जिनाटकनांति: कमजुतमेरेचितकी: तबहीपूजतभांति॥२॥सोअसुरछल
बचनसुनि: मायाबसभयोमूढ: कस्योसुमोहितरूपकरि: अंगीकारअग
ढ॥॥३॥सिरऊपरकरआनिसो: नाओअसुरअपान: ताहीकेकृतकरितहां
नसमकस्योभगवांन॥४॥संकटटास्योसंतुको: नासकस्योनिसचार: है
नरहरअरुदीनहित: ऐसेकृतउदार॥५॥तातेसकरकोचरित: करिहितग
वेकोर जनमजनमताकोजथा: हेतनसंकटहोइ॥ इतिश्रीभगवतेमहापु
राणेदसमसकंधानुसारणेभाषाबार हटनर हर दासे नबिरचित॥
वृकासुर बधनाम॥८८॥ कबिक॥ दूहा॥ सरसतिसरितातटबसे
मिलिरिषिराजसमाज: जथाबेदबिधिजपजजन: करतब्रह्मकृतकाज
तर्ककरोइकसमयतहां: द्विजबरनिगमनिदांन: महापुरुषत्रयलोकमहो
सोईकरोप्रमांन॥१॥छंद पधरी॥ तहबलसुत्रनृगुनपप्रताप: याकहेम

निसबहिनकलोआपः रघुकरकुजारनिरणयअतीतः तुमपरमपूजिप्रतिमापु
नीतः बिधिलोकगयेरघुजुतबिचारः कीनोनपिताकहनमसकारः अपराधज
निसुतकोअसेषः बिधिकस्योनकछुआदरबिसेषः याहीक्रमतबकेलासआ
इः सिवउगिमिलनआयेसुनाइः करउतथरुद्रतहाअथकीनः पुनितथेपल
है रघुप्रबीनः संकरतहारिसकरिधरित्रिसूलः लषिकोपसिवाअहिचरनमू
लः रघुचलेनाजि तबमनसतीतः पुनिबिष्णुलोकआयेपुनः सुषसेजसय
नकमलासमानः निरबसहेकरुनानिदानः अनिवारततहारघुबिरआनि
जगदीसहमेउरलातजानि: अवचितउरेप्रतिमाउदारः करजोरिकरेतहान
मसकारः पदबिप्रपलोरतआपपानि: बिस्वेसबोलिमुषबिमलबानि॥ श्रीरा
मजाचा॥ मतिबिथानईहोरचरनमूलः ताते उरहैममबज्रतूलः हेबिप्रच
रनपूजितबिसेषः अघनासकपोतीरथअसेषः तवचरनचिहनपावनप्र
सिधः सबकालरहुममहृदयसिधा॥ कबित्त॥ प्रभुकरीजथाअजाप्रब
नः देवाधिदेवद्विजबिहादीनः मुनिआरजहारिषवरसमाजः कारनसबबि
नयोतहासकाजः मुनिकीयप्रमानसबरिषसमाथः निरधारबिलुत्रैलोक
नाथः इनतेनबडोकोउअमरआनः पैयहैनिगमआगमप्रमान॥ इतिदे
व प्रतीछा॥ दोहा॥ बिप्रएकद्वारावती बसतजुरहतबिकारः जथालाभसं
तोषजुतः अषिलब्रह्मआचार॥१॥ छंद पद्धरी॥ इकपुत्रतयोत्रीयउदरआ
इनः सोजात्रमात्रमरिगयोजानि: द्विजगयोमृतकतजिराजद्वारः बिलपतअति
रोवतबारबारः सोसनामध्यबोलतससोकः लषिताहिदुषितसबसुनतलोक
बिप्रउबाचा॥ हेलोनीद्विजदोषीबिषयलीनः मूरषमहीपनिस्चितमलीनः कृ
तअसेषत्रीअयकरालः यहबालमस्योमेरोअकालः हिंसाबिहारकृतबिकलक
इः यहनजिनरसुषपात्रहोइ॥ कबित्त॥ द्विजछाडिमृतकगयोराजद्वार
कमजुकतपुत्रनवइहिप्रकारः इकसमयबिप्रसोसनाआइः पुनिकरिबिल
पसबहिनसुनाइः उठिबोलेइहाअरजनअनेगः प्रतिपालनीतिपोरुषप्रसंग
अर्जुनबाचा॥ सबधनुषधरतषत्रीसुजानः पुनिहोतनमयरहाप्रमानः तेउ
दरनरषत्रीनआहिः जनदुःषसहतहैरहतजाहिः पुनिहोइपुत्रजोअवधि
पाइः सोकहोमेरहिकरिकुसहाइः यहहोइनजोरषाअसेसः पुनिकरिकुतन
मंगलप्रवेस॥ बिप्रबाचा॥ यहसुनतबिप्रबोलेसधीरः बलदेवकृष्ण
परदमनिबीरः इनकुनकस्योजेजतनआजः जगतुमतेसरिहैकहाकाजा॥
अरजुन बाचा॥ कुरामकृष्णबाहिनिदानः गोजीवधरनअरजनसग्या
नः इकत्रबकतोषनमंत्रआहिः हैसाधिमोहिकुनजतताहि जीतिकुमृत
कबलतासजानि: अरुदेकुतेरेपुत्रआनि॥ बिप्रबाचा॥ बिदसमपुत्रकी
प्रसवकालः कहिअरजनसोद्विजतातकालः सोसुनतमात्रअरजनसधीर

बुविप्रयेज ग्रामंजनसरीरः द्विजग्रेहआइअरजनदयालः संभानवानकीयस
नुसाल अथउरथस्तिकियेहआनि पारसचकुरहाप्रमानि करितहासरापेज
र कराल दैरहातहागदेदयालः कालगतिप्रबलजानेनकोइ सुतजातमात्र
मरिगयोसोइ द्विजअरजननंद्याकरीदेषि बहुतनयोइहामिष्याबिसेष
इहांअरजननवमृतलोकआइ पेतहाबिप्रबालकनपाइ पुनिइंद्रअगनि
नेरतिप्रमानि अरुअनिलदेषिईसानआनि पुनिबरनरसातलननप्र
जेतः द्विजमृतकपुत्रषोजेदिगेत पैबिप्रबालकऊनहिनपाइ इहाअरजन
द्वारावतीआइ अवलोकलोकलोकनिअसेस पुनिकरनलगेमंगलप्रवेस
श्रीकृष्णबाचा प्रभुकलोकमयल्लेदपाइ सूचेनमरनकरिकुसहाइ
कबिरा प्रभुतयोसंगअरजनप्रवीनः इहाकृष्णरथहिआरोहकीनः हरिहू
पलोकतीरथिनिहारि परबतगयेलोकालोकपारि गोबिंदआइपछिम
दिगेत अथास्तहांदेषोअनंतः नवनयेअस्वगतिजेगजानि पावेनृप
अतितमप्रमानि जोगेसकृष्णयहदेषिजोग प्रभुनिजप्रभावबिसोप्रयो
ग प्रेस्योसुंदरसनचक्रपानि इहांकरेअषिलतमनासआनि पुनितहांच
क्रकीनोप्रकासः नवपथतापनहीसलोतास पुनिसलिलमांझकीनोप्रवे
सः देषोइकमंदिरतिहिप्रदेस सहसफनसेषमणिजुतसतेज जिहिमनिके
ऊपरसुषदसेज ईस्वरीजोतिप्रतिमाअनूप राजतितिहिऊपरअतुलरूप
सप्रसनबदनतनसयनसांम कुंडलकिरीटमनिरतनदाम सुनलछनतन
लोचनबिसाल मनिलसतिउरसिबैजंतिमाल तनपीतबसनतुलअ
ष्टतास अतिअंगअंगसोभाप्रकास पारषदसकलगदेपुनीत अनमा
दिसिधआयुधअनीत करिकृष्णपथजुतनमसकार अरुहाथजोरिगदे
उदार अषिलेसपुरुषहसिकेअनंत पुनिपूछिकुसलआगमप्रजंता पु
रुष। येब्रह्मपुत्रमेरेहांआनि प्रभुदरसनतवकारनप्रमानि श्रीकृष्ण
बाचा हेदेहधरयोहमधरमहेतः मनुजावतारअमरनिसमेतः भगवंतउत
योभूमिभारः अबआवतहैंहमकुउदार बुहबा हेकृष्णआहितुमपू
रनकामः अषिलेसरहतइछाअकामः तिहिपुरुषपुरुषमहिमाप्रमा
निः वेबालकदीनेइहांआनि ॥ हहा ॥ वेबालकआनेइहां द्वारावतीद्यालः
करधरिदीनेबिप्रकोः प्रभुअंसेप्रतिपाला ॥ ॥ जरतअगनिराषेअजनिः क्रमपन
पूरनकीनः दुष्टनिहाताहुकेः देवसहाइकदीना ॥ ॥ करमपराक्रमकृष्णके
कहनसमथनहीकोइ कहेजथानरहरसुकबि संतबतायेसोइ ॥ इति
श्रीभागवतेमहापुराणे दसमसकंधानुसारेणभाषाबारहटनरह
रदासेनबिरचितं ॥ द्विजपुत्रआन योनाम ॥ ८९ ॥ कबि फा ॥

॥ कल्पजथा बिधिद्वारिका: करतबिलासअनेक: बेनवबिहतबि
हारबन: बिद्याबिजयबिबेक॥१॥ व्यासपरीछतसोंबिचरि: कहतदस
मअधिकार: नवतारनतागीतकौ: सुनऊअवनपुटसार॥१॥ छंद
पधरी॥ पुरबसतबरनचास्यौपुनीत: बिधिजुकतबिनवबिद्याबिनी
त: चतुरंगचलतआअगपाअधीन: पुनिसचिवधरमअतुहितप्रबीन: ग
जमत्तछरिसयूमतअगान: प्रतिमासरूपपरबतप्रमान: अतिबिकटबंठ
संनवपवंग: अतितेजरंगआकृतउतंग: बापिकाअरुउजलबिसाल
जलकेलिजलासयकमलजाल: बनबनबिचित्रमृगीयाबिहार: अ
बेरनेटकोतुकअपार: जलथलबिहारबिचारजंत: सियादिबिरहप्र
नीअसंत: बिनतासमूहबंछितबिहार: प्रतिदिवसबेलनवनवप्रक
र: अनेकजातिनाटकअनूप: गतिनेहतालसुरत्रीयसरूप: गंधरब
नरीकिंनरीगान: दिनदिनहिरीजिसोलहतदान: दसषष्टसहसस
नएकगान: पटरानीअष्टोतरप्रमान: प्रतिमहिलादसदसपुत्रपा
इ: सबहिनकीसंष्यायहसुनाइ: इकलषसहसइकसठिअनूप: सु
नअसीनयेसुंदरसरूप: पुनिमहारथीतिनमहप्रमान: अष्टादसबु
धिबलआनआन: ज्ञानिनानबिदुअरुहृदतान: पुक्रिअरुनानिपु
षकरप्रमान: अतिदेवसुनंदनबेदबाह: बनिचित्रबरुहिअतिकबिउ
छाह: निसचयबिरूथनिओधनाम: पैबऊप्रद्युमनिधरमधाम: अनु
रधनयोताकेअजीत: जोबज्रनाभसुततिहिबिनीत: सोबज्रनाभर
जमाऊबीर: धरहितछत्रराषेसधीर: प्रतिबाहुनयोताकेप्रसिध: ता
केसुबाहुनयोसमरसिध: सुतउपजोताकेउग्रसेन: श्रुतसेननयोता
केसुषेन: याहीक्रमजोबिसतारबंस: पृथीप्रसिधजादवप्रसंस: कु
लतामहनिरधननहिनकोइ: अलपायुअधरमीसबछिजोइ: निरबीज
निलजषलनिसंतान: पुनिबदेबंसइहिबिधिप्रमान: त्रयकोटिसहस
मिलिआअआन: सतएकअसीऊपरसुजान: पुनिआचारजऐतेप्रक
स: तहापदेबालचटसालतास: कऊकवरसिष्यसंष्यानकीन: नि
सपदतउगतबिद्यानवीन: यहसुनीबालसंष्याअषंड: पायोनपारज
दवप्रचंड: निसचारकरननिरमूलकाज: रविचक्रसुजादवनयेराज
याहिकारिजिउपजेअमरआइ: पृथीपतिजादवसमयपाइ: देवकी
गरनसंभूतदेव: यहबिस्वबिदितहैबासदेव: अषिलेसइहअवतरे
आइ: परब्रहमपुरुषकोउहेतपाइ: सबदुष्टअसुरकीनोसंघार

भगवान उतारे भूमि भार: अवतरे धरम के हेत आइ: चव बरन नीति मा
रग चलाइ॥ दोहा॥ कृष्ण चरित्र जु दसम को: कहे सुनै जन कोइ: नव सा
गर दुतर नगत हित पार गत होइ॥१॥ कहे दसम नर हर सुकवि जथा बु
धि संजोग प्रभु सो जाचे परम पद: पूरन जन प्रयोग॥२॥ कृष्ण देव क
रन करन: कम पूरन मन काम: पुनि मागत नर हर पति: भजन देहु
तव नाम॥३॥ इति श्री भगवते महापुराणे दसम स्कंधानुसार
भाषा नर हर दास नर हर दास नबिरचितं॥ निवेदे अध्याइ॥१०॥
श्री दसम सपूरण॥ एकादस कअध्याइ बर्नन॥ कबित्त॥
दोहा॥ नियत [illegible] दिदे प्रतना: राम कृष्ण हरि राज: कंस निअरिष्ट
बिनास करम करे जथा सुर काज॥१॥ कृष्ण सुत के देष करि: क
रम अनादर कीन: हरि कीने तेमांन हत: निग्रह प्रांन नवीन॥२॥
छंद पधरी॥ बिषमोद कला प्राय हबिधान: कम दूत कपट त्री
सब सत्रतांन: इत्या हि ग्रवग्पा कीय असेष: बिधि बिधि बैर बिग्र
ह बिसेष. बिस्वेस कस्स कीनो बिचार: नव धरे देह लुव हरन नार मैद
रेज दपि अप्रमांन: निसेष जयो नां हि निदान: येछ पनकोटि जादव:
अंग: सब बरत तज बलो हम हिसंग सब नाति रन हि मेरो सहाइ: उपजे
नास को कु उपाइ: बाटे बिरोध इन मर बिसेष: आप कृत बपे तो ये असेष
दुस्ताधि बेन बन होन दाह: उपजे आतम कृत दुष अथाह: मसि आप आप
मह बंस यात: जे ज्वालानल जलि अलेजात: इन नाति काज करि दुरत
मे पे हेत बहीनास अंत॥ परीक्षत बाच॥ इहा कहे परीछत बचन यह
सुनि सुनि उपजत है इक सेदह॥ दोहा॥ ब्रह्म नगत दाता बिहत: कुल
गुर सेवत कोइ: तिन हिन आप संभावनो: हेत न कब कुहोइ॥१॥ ब्रह्म
करम गुत बेद बित: अरु बिद्या बल आप: यहे असंभावित इहा: सोपे
हेत न आप॥२॥ श्री सुक बाच॥ छंद पधरी॥ सुक कहे बचन तहां फेरि
संत: अवतरे भूमि मानुष अनंत: प्रभु तहां बलाये धरम पंथ: संसार
हित हेत नीति संथ: बिसतार कित्ति जग बिमल आनि: पुनि जथा बर
न आतम प्रमानि: निज धरम मगन इछा निधान: प्रभु जथा अवधि
पूरी प्रमान: यह करी तहां लीला उदार: नव नूत हेत नव नट रिचार॥
ये देव जोग रिसि राज आइ: तप सिध सबे अपने सुभाइ: दुरबासा बिस
वामित्र रेषि: अरु असित कल्प कसिप बिसेषि: अंगिरा अगस तिन
गुरु आइ: संग बामदेव नारद सुभाइ: संमिलि बसिष्ठ द्विज अत्रि
सिध: इत्यादि कआये बय सद्ध: तप सिध साध सब बिदित संसार

द्विज आये द्वारावति उदार: मिलि षेलत हे जादव कुमार। विप्र निबेदो कि
अंतर विकार उपजी कुबुधि नाबी अधीन: कमजोगत बेय हचरित की
न: सुनहु तुम कहे नाबैन सिध: परसपर कहत हसि हसि प्रसिध। अब
करहु सबे मिलि मंत्र येह: हित किहु प्रतीछा द्विजन लेहु। सुत हुल सा
मनां मास रूप पुनि बनेअंग अंग निअनूप। त्रीय वेष बनायो तबे ता
पर ग्रंथ करी ले अप्रकास: गरभ थल बांधि सो ग्रंथि गूढ: मिलि चलि बा
लब सब दिन मूढ। बनि बालक सब तहां त्रीया बेष: इन रिषि निवास
आये असेष: करजोरि बाल छल प्रनित कीन: प्रभु त्रिकालग्य तप साध
बीन: यह बालगरभ थित अब घिराइ: सो करत पुत्र इछा सुनाइ: ब
सल जा बोलत नहि बाल: करजोरि कहत स्वामी कृपाल: याके गर
भ सिथत अनूत प्रभु कहे हे पुत्री कि अपूत: रिषि तबे जोग बिद्या नुसार
पायो सब इन को छल प्रकार॥ दुर बासा॥ दुर बासा तह बोले सा
दप: याते तुम पे होना सआप: याके जुगरभ उपजे अरिष्ट: निःसेषक
रे जदुबंस नष्ट: सुनि बालय हे जब दुसह आप: उर कंप बदीन्त्य चकि
त आप: बस त्रासत जे तब त्रीया बेष: अयमय सो मूसल लये असे
ष: वह गिरे मुसल उतरे अनूत: पुनि पलटि बेष जदुबंस पूत: समग्र
दच सब नृप उग्रसेन: सजि धरम सभा राजत सुषेन: इहि बीच तहां वह
बाल आइ: सब कहे मुसल कारन सुनाइ: सुनि दूत तहां आए पानरेस: य
ह मुसल रेति करो असेस: पुनि करी नृपति अपो प्रमान: सो लयो मुसल
चूरन समान: बारिधि महि डारे तिही बेर: उपजे यह बांते तह ऐर: वहर
हे मुसल अवसेष सार: सो उदधि माझ डारे असेष: जब गिले सफरवह
नहु जानि: पुनि लयो उदर गत वस्त मानि: मेले जल जाल सु मीन मारि
सकुटंब मछ बांधे सुदारि: सो मीन उदर फारे सुनाइ: अवसेष लोह वह नि
कसि आइ: किहु हेतर हे जहां तहां प्रकास: निहचे निहल्ल पाहो इनास: रा
जरा नाम इक वसे आय: सब जंत प्रानघातक असेष: सो मुसल बंक अव
सेष सार: कर बाध चटक काहु प्रकार: कमजुक तब हे नछत्र काकीन: सो रि
दारुन लेसर अयहीन: सुनि कृष्ण मुसल कारन समूल: नवत ब्रहत सा
ईपरी नूल॥ इहा॥ करतु अकरतु जग्रन्यथा: कारन समथ कृपाल:
तदपिय हे इछा अतुल: प्रभु नर हर प्रतिपाल॥१॥ इति श्री भागवते रे का
हसस्कंधे नाम बारह हट नर हर दासे नबिरचित॥ जदुबंस
आपे नाम॥१॥ प्रीहृ तबाचा॥ इहा॥ कमपूछे सुषदेव सो: रहसि परी
छत राज: करी बिहा उधव कृष्ण: कहा करे पुनि काज॥१॥ छीदृ पथ री॥ उ

पातहीनलागेअकाल: इहिसमयगगनअंतराल: अनमितदेषितहांक
आप: पुनिकरतसोचअंतरअमाप: इकदिवससुधरमासतांआनि: प्र
बेठेसबजादवप्रमानि॥श्रीकृष्णउवाच॥ क्रमहुष्टउपद्रवयेकराल: अन
दृष्टदिष्टआवतअकाल: द्विजवरजोतुसहआपदीन: पुनिआगमसूत्रतय
प्रबीन: इहिगेरनरहिबोउवितआज: करियेप्रयानइहिछेनसकाज
पेपग्येसंबोधारआप: कृपबालद्वैधअंतरसताप: मिलिकरेमंत्रसव
हिंनप्रमान: नहिजानतकोउनवितानिदान: तहांआएकुलप्रतासबेत
तातेमिलिजा[illegible]कुलसमेत: सुनयानथानपूजासनान: जोदानआदि
यमहादा[illegible]मपुरुषमायाप्रबीन: कृतकारनइछायहकीन: पु
निकरेतहा[illegible]: उतपतिअमंगलचरितआन: इहिगेरबिरुधबा
हेअसाध: उ[illegible]तनवनवउपाधि: कुवतहाप्रमतमतिजिहिहोर: क
छुगिनतनाहि[illegible]बधकोइ: करिक्रोधजुधउपजेकराल: रहानिरतमर
तजोधाअकाल: इहासमअंतरतरुअनंत: अवसेषरहेनहआरअंत
उपजेयहकृत्यावीर्यऐर: कुवपत्रजुधाराबडगहेर: सोलेतसूरकरिप
त्रसोध: करउलयअबाकृतमहाक्रोध: बिबिधकहोतजिहिलगतबाउ
सोऐरपत्र[illegible]: सासुवाउ: प्रतिसुनटनिरतपोरुषसपूर: तहांबाजतदि
सिहिसिबिजयतूर: अदुमनिस्यामिमिलिजुधप्रमानि: अक्रूरजोज
बकुमिलेआनि: अनुरधरसातिकआपआप: दुवहोतजुधउरअतिस
रापजूरेसतरसंग्रामजीत: जुरिसतजितसमहरसहसजीत: गद
मिलेसुदारनअंगअंग: जिरितहासुमित्रसुरथीअंग: याहीक्रमआह
वलोअपार: सेष्यानसूरसमहरसंघार: अनोननिरेइहिक्रमअजीत
जगजेतसुतरसंग्रामजीत: जानेजामवुलबाटिबीर: पितपुत्रनिरेउ
रनाहिपार: त्रिजसोपित्रीयत्रातत्रात: मिलिपातिप्रातिसबेधसात: गो
पातिअरहसोदासआनि: पुनिजोजदृष्टअंधकप्रमानि: सातताप्यूर
मिलिसमान: पुनिसूरसेनमाथुरसुजान: अरुकृतिबिसरजनु
तेनिरेसमरतीरथनिसंक: इसोरिपातिजादवअनेक: [illegible]
ऐक: आयुधछतीसतरुअपार: पुनिकरेमुष्टितताप्रहार: [illegible]
युधअनंग: तबकरतऐरप्राहारअंग: बिल्लुहैकरजरे[illegible]
पिचिरतकरिबैरनाउ: पुनिरामकुलदोषसुभाव: [illegible]
रनआनि: जगवंसउतारनमित्रार: सबको[illegible]
सेषतयोजदुर्वसनास: जिरिसमरहो[illegible]
तिउपजीविसेषि: अवलोकिनारा[illegible]
स्यार: वससोकजुदरनासन[illegible]

बैकुंठपधारेप्रभुप्रबीन: बलदेवगमनअतिदुषबियाप: यातेनयेसोकाक
लितआप: पुनितहारकपीपलद्रुछपाइ: अषिलेसकृष्णतिहिछोआइ
प्रभुधरेचतुरभुजदिव्यरूप: इहाकवलनयनप्रतिमाअनूप: मकराक
तकुंडलतुलसिमाल: बनिब्रहमसत्रकिंकिनि बिसाल: इत्यादिकल
षनअंगअंग: अतिसोभालछनगुनअनंग: सुभपीतबसनतबरनसो
भ: संषादिकआयुधकरसकोम: वहजरानोमतहाब्याधआइ: अहिफ
णाकारप्रभुचरनपाइ: क्रमजानउपरप्रभुचरनकीन: परमासनतह
बेठेप्रबीन: नषजोतिहोतिमनुमनिसमान: नरनारायणकलकृनानिधा
न: कृष्णाबिसेषनलकोकराल: कीयतहाबोनसंबुछासुत: बिस्वस
चरनसिरहनेब्याध: ईस्वरीअतुलमायाअगाध: यतदिषावत
कछूकाज: धरिसगुनरूपराजाधिराज: अबलोजिगबिघक्रादिअंक
हानिकरब्याधआयेनिसंक: येदेषिचतुरभुजरूपआप: प्रतिमाअ
नूपपूरनप्रताप: बसग्यानकहेवहिजराब्याध: प्रभुआहिमहाकृपाप
राय: अबदेहुनाथमोहिप्रानदंड: अषिलेसधरमपालकअषंड: प्रभु
दंडपात्रजुनदंडपाइ: जनपुनिअनृथकोउकरेजाइ॥श्रीकृष्णउवाच॥ इहि
गोरनक्रोधबिरोधआज: करिदयाकृष्णबेलेसकाज: इहइहलबमेरीअ
षंड: दाताकेजाचकआनदंड: आग्यायहमेरीब्याधयेह: दिव्यलोकजा
हुतुमदिव्यदेह: मैहतेबालिरामावतार: पुनिबदलोलेतुमनएपार॥कलि
प्रभुकृपादरसआग्यप्रताप: वहचढिबिमानगयेस्वरगआप॥६॥ इहाद
रकरथतेउतरि: आगेगढोआनि कीजेआग्यामोहिकछु: माधवजोमनमानि
॥७॥ पाइजथामननाचप्रभु: गोबेकुंठबिमान: तहांयेहनचतबता: प्रभुइ
छापरचोन॥८॥ कलोकृष्णतबसूतकहे: अबेवारिकोजाइ: इहानरहिबोहेउ
चित: सोकहिसबनिसुनाइ॥९॥ लोयेगोलहरीरवन: यहमरजादअनंग: इ
ऊप्रसथजिनजाहुअब: सबअरजनकेसंग॥१०॥ कीयद्वारकतहांपरिक्रमन
बंदिचरनबहुबार: तहांआयेद्वारावती: पुनिकहिसबेप्रकार॥५॥ इ
ति श्रीभागवते रे का द स म स कंधे भाषाबारहनर हरदासे
नबिरचितो बलदेवप्रयान॥ द्वारकसंत॥ द्वारावती आगमनो
नाम द्वितीयोअध्याइ॥२॥ परीक्षतउवाच॥ इहापरीक्षतनृपति
अब: आसहिपूछिबिचार: कृष्णगवनबैकुंठकहे: कीनोकवनप्रकार
॥श्रीसुकोवाच॥ छंद॥ अषरा॥ ब्रहमादिकइंद्रादिकमुनिवर: देवपित
रगंधरबप्रजेसुर: चारनसिधबिद्याधर: रादसजक्षमहोरग
किंनर: सुरकन्याद्विजराजसुहाये: येसबहरसहतमिलिआये: सबके

हअनिलाषसुहवन: प्रभुममलोककरुअवपावन: बरषतपुहपीडु
नीबाजत:सुरकंमांमिलिनरकसजत:दिष्टसुधासबहिनसुषदीनो:ह
मरहोद्दिगमिलवनकीनो:निमचैकाऊनदेवनिहारे प्रभुसदेहबैकूंवसि
धारे:पैयहगतिकाऊनहिपाई:जलरनेहिओंतडितजाही:सतधरमधीरज
धृतसंपति:क्रमजुतसंगगयेतहकीरति:ओंचपलगतिमनुजनजानत:पुनि
सुरकुलहिगतिनपिछानत:बिधिकरजोरिसबविकीयबंदन:करतनरे
जुसतुतिषलकंदन ॥ अपश्रीकृलो अ सरकब न न ॥ छंद त्रोट क
जयनावनदेवकीगरभनरे निजरूपअनूपदिषारनये:क्रमतातहिमात
प्रबोधकरे [illegible] य:जेसुदापयपानजथाजननी:अरुदधनयेजुरछा
वंतअनंत [illegible] ल बिहारकरे हगिमांबनअधदहीजुले करअधर
अपनी: क [illegible] मयबालगुमानहस्यो:ज्यालानलमुजारनिजरे कल
धरधाइयस्यो [illegible]
सुदधानतपान करे मदमलअ अहिमानमलो बलबैनलयोदहतेजु
लो:सिसपालदेआदिनरेससबे जुरिआरस्वयंबरहेतजबे:सुरतानि
कीपतिगतिगई:अवनीसुतातहाछीनिलई:जोईओनिसुरासुरजु
जुरे हतप्रानभयेकेउमानमुरे:जवनासुरजेजुबलोफजयो:नगबे
रिजितेनसमभयो:ईछाकछुबितथहेउपजी:नुवषारसमुद्रकीज
नजी:क्रमजुकतनहारजधानिकरी:अनुधारको:नंमबिचत्र
नुवनारजुकारकउपजए:जगदीसनहानसिसरबजये:कंमाये
जुआनिकरी:बिनताहतिजोमसबेनुबरी:नगवंतअनंतजुमीनन
रणछिहतेलषिनेहलये:करुनानिधिकउपरूपकरे:हितसिंधु
हारतनहरे:कृतकारनरूपनृसिंघकीयो:हिरनाकुसमारिबिद
यो:नगवानजुबामनरूपभये:बलिनोधिपतालतहांपठये:न
महाद्विजरामभयो:द्विजरीननिको:नुबचकदयो:नुवरामके
मग्रानिनजो:तिहिहेतबिनीषनसबतजो:नगवंतकृपातेसि
दसकंधहतेगदलंकदई:नगवंतअबेतेरीकुलभये:जगउपदि
मारिजये:अवतारजुकै हैबुधअबे तेधरमअहिंसापालतबे:बि
बकारनरूपकरे:हठिमारिमलेछअसेषहरे:करुनामयकृलभ
हितकोंनसमथसुरासुरहे:रसमग तिहहाहमादिरये:सुनगा
सुधांमगये:॥ छंद द्वेअषरी॥ गहिमनबांचकस्युनगजे:पेषोई
दृपावे:दारकसुतद्वारिकाआयो:सबहिनकस्सकलेतुसुगायो:ज
देवसुनतउर दारुनुपठयोअतिउरधर:दहानवासलेतसबआ
जहावयकुरसिधाये:पुनिबसदेवसुमृतलप्रनी:रोहनिसहत
[illegible] सुपेदहतजिस्सरासिधाये:दहावसदे

आई: सोरहसस हगमनसिधाई: जादवअमरअवतरेजेते: तजितनलोकलोक
येतेते: नियतपतिहताजोईजोईनारी: सतीजईपतिलोकसिधारी: मिलिह
देवकृष्णकीबामा: कीनोअगनिप्रवेससकामा: अरजनआदिसोकआधीने
मजुतजहामृत्सकृतकीने: इहासमुद्रसेततजिआयो: बोरिनगरजलमांझ
रायो: तहांनयेजलबिंबनिरंतर: रहेकृष्णरुकमनिकेमंदिर: इहानिरंत
अंतरजामी: सदाबिराजिनत्रिभवनस्वामी: अद्याबहिरजधानीओई: सा
संतअवलोकतसोई: पुनिअवसेषइहांजोपाये: बालवृधत्रीयकरमबच
ये: इंद्रप्रसथतेआनेअरजन: जथाजुकतसोबसेतहांजन: इहापुनिअर
नमुथराआये: अवलोकतपुरदिगछाये: कृष्णबिनायछेछासाकेयो: रह
तनप्रानकिऊबियिरोकेयो: बज्रनाभसिरतिलकबनाये: [illegible] धरिचमरच
लाये: कमअनषेषजथाबिधिकीनो: देसराजपरजागतबजोगछोफिरिइंद्रप्र
सथतबआये: सबेअमंगलमरमसुमाये: अंतरगतबेसतनयेअब: जथ
मसोनतयेमंदिरजब: स्यामबिनालागतजगसूनो: देषिदेषिदुषउपजतह
नो:॥ इहा॥ इहाजुधिष्टरआदिदे: पांडवसकलपुनीत: करपरीछतकोति
लकु: बेनचराजबिनीत॥१॥ देसबिनवपोतहिदयो: सबेधरमसमझाइ
मनचिंतापछलीमिटे: अगलिहकरतउपाइ॥२॥ कीयोप्रयांनप्रमानकरि
कृष्णमिलनकेहेत: सबेछाडियहइंद्रपुष: तहांद्रोपदीसमेत॥३॥ करमज
॥४॥ कहेजथानरहरसुकबि: कृष्णचरितसुनकाज: मनक्रमबचजाचेत
सुकति: दोराजनिकेराज॥५॥ कबित॥ कल्पकल्पसतकोटिकोटि अजुह
नकुपेसंपाआवे: कृष्णचरित्रबिचित्र: पारतिनकोकोपावे: नाषेजुआससु
थानरहरसुकबि॥६॥ इति श्रीभागवते ऐकादसमस्कंधेभाषाबा
रहरनरा॥ हरदासेनबिरचितं॥ श्रीकृष्णबेकुंठगमनत्रितीयो
अध्याइ॥३॥ श्रीरामेजयति अथ श्रीबुधअवतारबरनन॥ कबि
त॥ असुरबाच॥ समयरकअसुरेस: असुरमिलिमंत्रउचारीय: तबपूछे
गुरसुक्र: नयोसंदेहजुतारीय: जबदेवासुरजुध: होतसुरनिरतनिरंतर: त्रि
आपिपासारहत: रहतसनमुषआयुधकर: कबहुनजातनोजनकरन: बसतु
नहनहीसंगबहत: कबिकहुसुपेकारनकवन: रिष्टपुष्टसबदिनरहत
॥७॥ सुक्र बाच॥ दीयउतरतबसुक्र: प्रसनतुमकरबुधिपर: अगनिहो
त्रहिजअवनि: बसतहोमतप्रतिबासुर: अरुअनेकजतवरत: होममष
करतसुरनिहित: सुरमुषअनलप्रसिध: तहांमेलतपेचामृत: हयमेधआ

ईकरीयंतहवन-गंधहारसुरसंग्रहतः निहिंकलसिधसिधांतयह सदाव्रि
सुरगनरहत॥ अ सुर आयहप्रसंगआसुरसमूह जबसुनेसुक्रपह
सुरहिजोनिसुप्रसनः कहेकरजोरिंतवतह सोईजग्यसबिसेष कृपाक
रिहमहिकरावहु जबमषपूरनहोइ तहप्रसुदछिनांपवहु सुरकाटिदै
हितबस्वरगते होहिवफलबिजईय कहुगोप्रसादगुरदेवके सबेम
नोरथसिधईय॥२॥ सुक्राचारिजकीयप्रमान असुरनिउछाहकीय
सबेसिधसंभार सारउहिमआरंभीय बेदअथरबनसोधि सोधिलीय
मंत्रअसुर[illegible]हिंसहयहवात तबहिसुरलोकमुनीसुर उतपनचि
तचिंता[illegible] बिबुधगुरग्रहतब आरंभजग्यअसुरनिकरे अंत
रथिरन[illegible]॥३॥ मुनीब्रहसपतिसबे अमरचिंताउतपनीय
इंद्रादिकमु[illegible] कविनतईबुधिजुकिंतीय सबमिलिगयेससोक
विस्वजितहाविस्वंतर कारनआगमकहु प्रगटप्रभुपूछिदयाप
र जगदीससरनपंजरबिजय जीयनकहुगहरातजब करजोरिंदुष
कारनहुसह लागेकहनसुरेसतब॥४॥ सहआसुरगुरसुक मंत्रसंजी
वनिसाधत अखिलजिवावतअसुर बिबुधसंग्रामजुबाधत प्रगटजग्य
बलपाइ अजयजोकेहेआसुर छुधापिपासारहत सुकोतिनजीति
समरसुर जयधरमसदाजानहुअमर अलजेहैनिजदोषप्रय सुरग
जकरहुतुमस्वरगसुष अखिलईसरीनोंअलय॥५॥ श्रीहरिवाच
तह॥ हरितबकहेप्रसनकै सुनसुनिदेवपुकार करिहुंरक्षाबुधिकरि
कैबुधअवतार॥६॥ कबिकुवाच॥ अतयपारईआदितहां सबेगएस
सथान दीनसहारकजिहिबिरद ह्येसुरनिबरदान॥८॥ सुधादनिम
तासुतीं जिनतयेपिताअजेव धरेबुधअवतारतहां हरिदेवनिकेदेव
॥धा॥छंदपधरी॥ प्रभुकरेबुधबुधहप्रकास श्रीपूजिसूरिसंग्पास
हास सबतुकमुकुलुंचितसरीर धरिरूपकरेकचनासधार कीनोंसके
सनिरमूलकाज बपुबसनसेतसुछिमबिराज परग्योपटआसनप्र
सिध सुरासि एकोरितेतीससिध कप्तपात्रनालिकेरीअनेक करिली
नेऔघएकएक कीयएकपानआहारकाज बपुपुष्टनगनमुद्राबिरा
ज ग्रंथितकरपल्लवपंचग्रास आहरउदिकरेकेअग्रास पुनिआ
निबिराजितसूरिपट थितहोतसिंघश्रावकथट पाषंडवेषपुसतक
प्रचार मषबाधहोतचर्चाविचार निस्कथाजग्यपातकनिदान ध
नियनमूदिअरिहंतध्यान सबश्रावकपासादिवससाधि सुपपटीकुध

आरंभउपाधि: सिरधोलिकेसलबिनससोह: महिमासुजपालीसुत्रमोह:
श्रावकीआरसुदरिसमाज: बपुपटकूलबिधिबिधिबिराज: नगजटितहेमन
बनअनेक: बकुमुखिबिबिधबानकबिबेक: अतिनगतिसुचितवतपूजि
और: चाहतसप्रेमसौंसासिचकोर: कृतजथाबेषपरिकरअनेक: अरु
नजतअहिंसाधरमऐक: मतथपतपृथकपाषंडमान: परचारग्रंथनूतन
प्रमान: मबबिबिधकरतपंडनमजाद: बिपरीतबेषसचकबिबाद: अ
बकासंगअनेकसाध: बोलतसुबोलजिहिनिगमबाय: सिवपरमलोपकी
नेसहास: पाषंडधरमपृथीप्रकास: सबषंडिअथिबेकि[illegible] पार: आयु
धनिग्रंथकीनेअपार: इहिबुधिअमरउदिमअकाज[illegible]ग्रआरंभ
साज: सोअसुरबोधमतग्रहसार: सबचलेऐक[illegible] सुरसत्र
चितजयेमोहसंग: परहरेजगपकारनप्रसंग: जगजोगदिरायुधअसु
रजाति: इंद्रादिअमरजयरिअराति: यहअतुलदेवमाधवजीत: अगपत
अषिलआसुरअनीति: अबलोपिजगपसाधनअनेक: अनुसरअहिंसा
धरमऐक: ॥ कबित्त ॥ अतुलबुधिबलरीस रूपअद्भुतअवरेसो: प्र
गटरूपपाषंड देवकुसुमोनरेसो: असुरमोहउपजाइ निगमसषकी
नेषंडन: ऐकअहिंसाधरम बिदितसुरसोकबिषंडन: सुरसिधकरेज
यजयसबद: किन्निसुकबिनरहरकरीय: अषिलसअमरकीनेंअजय:
बोधधरमजगबिसतरीय ॥ ॥ इति श्रीद्वितीयबीसमअंश बुधअवता
रचरित्रसंपूरन ॥ नाथाबार हटनर हरदासे नबिरचित ॥ अ
थश्रीचतुरबीसमअंशकिलकीअवतारबरनन ॥ ॥ कबि
रुवाच ॥ ईसअनंतनवष्यअव: किल्किनामकरतार: धरमबिप
रजयहोइकलि: तबहुहैंअवतार ॥ ॥ जबहुहैंयेचिन्हजग: कह
तसुनिगमनिदान: तबजानहुनिरधारतुम: प्रगटेकलिजुप्रमान ॥ ॥
छंदबेताल ॥ जबब्रह्मकरिहैंवेदबिक्रय: असुरसेवअनुसरे: गा
इत्रीमंत्रपढाइबरननि: द्रिब्यलेलेअरनरे: पुनिसमत्रधारकयामजा
रक: संमानसंध्यापर्हरे: बिनुबेदनेदकुदानलेलै: करमनिरितकृषि
करे: सोईपात्रजापेआमजचक: दानसबकेआचरे: यवनादिकेग्रहबे
गिनिरजय: बेदसाखाबिसतरे: सत्रमत्रजुबिप्रताबो: आचारसृष्टिअ
नेक: क्रीयाकरमसंतोषसंजुत: अनेकमहकोउएक: अनपढेलेलै
घोरपतिग्रह: अनतद्रिब्यउपाइहैं: देब्याजकरिकरिएककेसत: के
धबसबिबढाइहैं: छितिमांझप्रगटकहाइछत्रीय: करमचोरकरावे

सुनिपथमारहिल्लहिश्रांनी: धारिदसदिसिधवही:उपराजिश्रंनश्रनीति
श्रय: कुटंबकेपोषनकरे: जिहिनिहिप्रकारउपाजिश्रनहि: उदरद्वितिहिश्र
रे: श्रनुश्रहतिसंततधंनपरायन: श्रजापीडनतपरा: जनदुष्टजातिजम
जहांतहां: निकटबरतिनिरंतरा।। श्रनदोषबलीश्रबलीनिसोकरि उत्किन्न
उतारिहैं।। तिहिश्रंसनिदिक्श्रानिनिसत्रति: श्रपमुखिश्रहारिहैं।। सोद्विजा
नतपितासंपति: जगबसप्रसन्नयो।। विहिगरबकरतप्रसिधपौरुष: देवपस्या
गतदयौ।। नीचसोमिलिमंत्रपूछहि: वहेमतलेश्रनुसरो। नीतिधरमहिछांकि
निस्तय: श्र[illegible]जसलेऊरो। मंत्राधिकारपाइमंत्रीय: नीतियहबिसतारि
हैं।। साथ [illegible] तिहिछिन: निरपराधहिमारिहै।। चोरकौंकरिसाऊस
वो: श्रांनि[illegible] हैं।। तिहियासिलेबऊदिश्रताके: सबेकाजसुधारि
हैं।। श्रापनैं[illegible] तपर: स्वामिकेहितकोगनैं।। राजकाजबिगारिनि
रलज: काल[illegible] श्रापनैं।। प्रजाकोनपुकारलगिहैं: मारिद्वारनिकासि
यो।। कृषिश्रंसचाखौंजागलेलै: श्रषिलदेसउजारियो।। सनथससत्राश्र
सत्रधारहि: सरसुनटकहारहैं।। मरनकेनयसत्रुसोंमिलि स्वामिकाज
नसारहैं।। बऊदिश्रदेहैं मंत्रवादिन: बीरबिद्याबिसतरो। करिबिवस
निहिनिहिदाउ स्वामहि: मंत्रकेबलबसकरे: प्रजुश्रगरछिकनिकट
बरती: सहश्रनरथश्रस्वासिहैं।। स्वामिकोरिपुमित्रकरिहैं: बिषश्रयेगत्रकासि
हैं।। बांनपांनबिस्वासबिद्रा: कछुनश्रंतरजानिहैं।। बिस्वासद्रोहीमहपा
पी: स्वामिघातसुगानिहैं। कृषिकरमकृषीश्रक्रमकरिकरि राजश्रंसचु
रवही।। तिहिदोषजांहिसमूलनष्टति: करमकेफलपावही।। कलिक
तसूद्रसुविप्रकरमनि: सिषासूत्रहिधारही।। व्राषानकरतपुरांनव
त: वेदश्रथविचारही।। सबंधकोदैविप्रश्रगनित: जरठकेसांवऊ
रे।। करिसूद्रजातिविरुधकरमहि: ब्रह्मविद्याबिवहरौं। ब्रह्म
रीचरिदृतश्रस: बानप्रसथश्रहाश्रमी।। संन्यासलैहैनीचजातिसु: सम
रकश्रजमी: ओहारततपरचोरगतिरत: द्रव्यलोलुपरीसता।। श्रस
रासीगोपिमृगत: पाग बिनुहीपंकिता।। मदजंत्रचूवतनिसादिनम
जवाठकश्रानियो।। मरमांऊलेकरिश्रसुरमंत्रनि: बधबिधांनबध
सोईहोतजोजनचेटिकासंग: सुरापांनसुसाधही।। मुनिबहतसंत
मुद्र: यहसंन्यासश्रराधही।। नषकांषबालबिसालजटधर: श्रस
त्रश्रन्यासही।। करश्रेहऊंचश्रवासउजल: बिबिधिसुषनिबिल
सोगधतेलतंबोलबिनुते: कालछेपननहीकरौं।। श्रापश्राप
रष: क्रोधदृष्टिनिपरजरौं।। जबबलतस्वामीतीरथजात्रा: श्र
[illegible] बऊदिसिसतनिवेला: बिबिधिनानकबि

सनाथ दुंदुभि नेरिसींगा बनेबाजत बाजहीं॥ मातंग जिम मदमत्त अनमिलि ओ
मग्रामनि गाजहीं॥ तहां बैठि अष्टासन हि स्वामी बीचि सिंघासन बिराजहीं॥ बनि
बेष जोग संजोग संजुत स्वांग अद्भुत साजहीं॥ चलकुटिल भ्रकुटी अरुनलो
चन चोप अमल चढाउ॥ बजरंग काछ सुलोहकी बनि मिलित सिंघ उमराउ
सबकहत स्वामी धन्य साधन सधे एक सरीर॥ आपार जोग बिराग बैसव बन
तनृपत बीर जरत सो अभिमान ज्वाला रोमरोम निरोध॥ आमतैलये दाम
गनि गनि नये सातसै तोष॥ सबकाल भ्रकुटि बिलास संजुत बसत माटुक से
वहीं॥ मिलि करत जुध जमाति तीरथ येक येक निजे बहीं॥ धरि [illegible] पात्र सुगंध
सज्या बसत्र बहु सुधा रिहैं॥ चढि अस्वरथ गज करनि सिवक [illegible] गरबि हरि
हैं॥ करि अलंकार अमूलि नग मय अवनि कर कंगन [illegible] जाति जम
तिजुत जित आपथापी अनुसरै॥ संन्यास बर्जित बस [illegible] जोग [illegible] ते सुषहि
तेते सेवहीं॥ ऐस्वर्य जुत नये आपहीं स्वर द्विजन मान [illegible] जती जोग
साधत बांधि आसन क्रीयापसु पति की करै॥ चतुरंग छि [illegible] केलि चकुदि
सि सतनि चेला बिसतरै॥ अहि फेन नृंगी सुरा आमिष कनक बीज चढाइ
हैं॥ चमरत मुद्रन सम मेषल कल्प सिध कहाइ हैं॥ कलि साध सतमहंत
कहिबे बसन स्छि मबासिहैं॥ पुनि बेद्रि अस्थल अमल ऊपर प्रेम कथ
प्रकासिहैं॥ सतजूथ नारि सिंगार संजुत सेवहीं नित सुंदरी॥ करि हावभाव
कटाछि केवल नगति हित अति सुनरी॥ सबजाति दैहि महातसहा कामप
ग्यसावहीं॥ गुरदृस्ना तहातनन की सुत प्रेम संजुत पावहीं॥ जनछाडि ग्रेह
कुरंब अपने बस बिदेस बिहारहैं॥ अरु दृध काल सुतात मातहि छांडि
छे हरिषारहैं॥ निजबाहु बल उपराजि बितहि सासु सुसर निपोषिहैं॥ रिस
वास पुत्री य पुत्र बांधव साहु साला तोषिहैं॥ त्रीय पंच बरषा के प्रसूता बिबि
धि बेस बदारहैं॥ तन छीट बहु फल आहार अतिसय बंचि षनषनषारहैं॥ दस
नबरष नु आयु के हैं चिरजीवी जानिहैं॥ निसि दिवस मूसति ग्रेह संपति क
लहपति सोगनिहैं॥ जो ईहो स्त्रीय अति पति हि प्यारी अधिक कामन सो क
रै॥ बहुरहे मंत्र अराधत तपर बसत्रु के पुतला करै॥ तिहि संधि संधि नसू
चि कादि जतन सो तिहि लेधरै॥ पति मरे के तो हो स्त्र अपाहत तबे रोवे दिन
नरै॥ रति करे पति तजि आपइछा अंग बिक्रय कारनी॥ थिरचित हे पति वृत
थोरी बहुत सी बिचारनी॥ पुनि लोक धरम मजादछांडै उदर के हित अ
पनै॥ तिहि काज वृत्ति अनेक आश्रय करम कुकरम को गनै॥ बाचाल कहि
बे महापंडित कबिसु जो मिथ्या कहैं॥ चतुर जो पर चित बंचक उदर जरपे
रुषवहै॥ कच वृथ सो ईलावन्य कहिबो सूरता मृगीया सही॥ कृषि करम
थानि निवानपु कर फोरि नीर निकासही॥ पसु काज काटत हरित पीप

नकनआनिहैं॥ द्विजमारिकरिचामालरहा· मनहिपोरुषमानिहैं॥ सि
क्रयबेसकरिहै· बलीअबलनिमारिहैं। पुनिवहैबेद्विजुबीचपंचनि
रमूंछ संवारिहै॥ परब्रह्मदारादेहतपर· जनअलोकनलाजिहैं॥
सघातविसेषवंचक· स्वजनमैत्रीसाजिहैं॥ जगवंचकहैंजटीजाग्र
ति विसारिहैं॥ बैराग्यलेअनुरागबिहवल· बिबिधिनोगबिहारिहैं॥
दिअलेलैं मुनिमहंतजु· पुहुतनकरिपेषिहैं॥ हरगनिछीनिग्रहसपलै
शिकोअतिरोषिहैं॥ सुरअंसलेलैकरेसंचय· येअधर्मउपाइहैं॥ तिहि
पअपर· तुत· जगसमूलसुजाइहैं॥ जबधेनअजाप्रमानकैहैं· नेष
जन· समाचरछनिरुधकैहैं· छिनकमैत्रीमानियै॥ नरना·
रिजिहि· के· सोतहरतिमानिहैं॥ कुललाजबेदअजादतजि
के· बिप्रपूजिबिधानबेमुष· जपनतीरथजानियै
हैं॥ बिप्रपूजिबिधानबेमुष· जपनतीरथजानियै॥ बनिनीचबेगतऊंचप
रिजिहि· बंधित· पुनिनहीपहचानियै॥ बनिनीचबेगतऊंचप
के· सोईमु· निसकरहिनयेनये· इस
रतबंकबे· तीनये॥ पाषंडकपटसुरंतअंनी· निसकरहिनयेनये· इस
स्त्रीकतअनरथअबिहित· बिबिधिलोकहिबिसतरै॥ बितिनासकैहैमे
घवर्षी· पृथीजलबुंदनपरै॥ रविचकहोरदुरनहरोरव· बुधमारोगप्रक
सिहैं॥ त्रिबनअपाउतिलोकतिहिदुष· बसतनगरबिनासिहैं॥ फलफूलमूलसुलचाप
नपरअतजाइबसिबसि· अरुअकासनिहारिहैं॥ बरषासुबिघ्रतमानकैहैं· तदपिआसनघूटि
सुख· जथालबधअहारिहैं॥ संबंधदारापितासुतसों· मोहमैत्रीपूरिहैं· गहिजातिहाहाकरतकैहैं· नू
हैं॥ तुषनवकरतजे॥ पृथीसुपापाक्रांतिपीडित· नेवतिरिहिजिहिहरिनजो॥ बि
परीतकैहैंधरमकीबिधि· बिगतिकरमबषानियो॥ हिगबिजयकालकरा
दुसह· येचरितकलिजानियो॥॥ दूहा॥ द्विहिबिधिकलिमहधरमसब· जब
हैंबिपरीत· तहाकल्किअवतारहरि· अनुधरिहैंसुपुनीत॥१॥ छंदपधरी
सुनथानसुसंतलनामयोम· द्विजबसतबिप्रुजसधरमथोम· वहिग्रह
निग्रवतरहिदेव· अद्वयअनंतकलकीअजेव· कलिकालअंतसतजुगप्रवे
ओरोहखेतवाजीसुरेस· बिसतारधरमपापनिबिकार· बितिषुगधारग
स्वयार· सुनसतसंगलजपतपसहास· पूजासनेधरमहिअकास·
पसोचरतदानसंग· आराधसाधसंगतिअनंग· द्विजसुरजितुलसिती
देव· सबतावसहजसरधासुसेव· बिप्रोनपोनतवोबितग· न
देवलहिजपतग· नजिब्रह्मअब्रह्मबिद्याबिधान· सुनडिक्रि
यसुजोन· निजबेससरनिजकरमनेम· पसुपालकृषीसेवासप्रे
मयधरमबिनतासुसाधि· पतिरतासतीबरजितउपाधि· निज
नचवसावधान· बिद्याबिबेकसंजुतबिधान· दिढतगतिदय

गध्यान: संसरकंपटबरजितप्रमान, गुनचासकेरिष्टथीपदेस: परिक्रमनक
लिकरिहैंप्रवेस: सामूलदुष्टअसुरसंघारि: सुरहृदकरहिरहासंन्नारि: प
रिक्रमनकलकिकरिहैप्रमानि: इहिहेतलेहिअवतारआनि: आगेंनवषिअ
वतारयेह: सुनधरमसेतकिलकीसदेह:॥ कबित॥ धरमधामसंतलसु
आम: बिआमसुषदबर: तहाबिसुनसबिप्र: प्रगटबसिहैंजुधरमपर॥
तिहिसुग्रेहअवतार अषिलनुवनारउतारन: कलिप्रनावनिरमूल अव
निगतधरमउधारन: निकलंकनीतिकिलकीनिपुन: नुवलषिपाल
नि: कलिजुगबितीतनरहरसुकबि: महत्तवषअर्थ॥७॥इ
तिश्री किल्कीअवतार चरित्रसपूरन॥ अथ [illegible] व
रनोमब रनन॥ कबित॥ बिसरअदिषारादह [illegible] दिकसो
मी: तथाजग्यअवतार: नरजुनारायननोमी: कपिलमुनि [illegible] रिषनअ
वष्टथुहयग्रीव: कूरमसफरनरसिंघ: द्विजजुबामनहरहि [illegible] फबहुमनु
नतरथनंतरिह: जोमहगनिजगभासजय: रघुनाथकृष्णअरुबोधप्रभु
नुवयेतेअवतारनय॥१॥ बिदितनीनअरुबीस: नयेअवतारअगंजी
य: सतत्रेतापुरसंजोग: कारनसरूपकीय: अबकलिजुगकेअंत: हेत
अवतारसुहैहै: धरमकरममषध्यान: जवेनिरमूलनसेहै: नवतब
पुनिअवतारनुव: हग्रिसेषजवनेस हति: अषिलेससेतहयअरुहि
त: प्रभुकिल्कीत्रयलेकपति॥२॥ यहप्रकारअवतार: नयेनवतबअन
यनुव: चितानंदचोईस: हेतअदभुतदेहनुव: दुष्टदीनदमदयारूप:
रसरोषसुरजिय: नईभूमिनाराकाति: तबहिनुवतारसुनजीय॥ दि
जबेदसहाकधर्मद्वि: हितत्रिलोकबंदित हरे॥ सुनसाधसुकदआन
मसकति: कबिनरहरबंदनकरे॥३॥ सतरहसेतेतीस: नियतसंबत
उतरायन: रितथीषमआषाढमास: पषकृष्णसुपावन: बनिआतेति
थअमिबार: सिधजोगसुमंगल: पुहकररम्यप्रसिध: मध्यपूजितनु
वमंकल: अवतारचरित्रचोईसयें: बिजयसुजसजगबिथ्यें: कबि
दासदासनरहरसुकबि: कृतउधारअपनोकस्यें॥४॥ छंदकपेतालं॥
अवतारगीताईस्वरी॥ करिनगतिकबिनरहरकरी॥ महमुगतिमारग
मानियो॥ सोपानसुरगसुजानियो॥ यहसतसरथाउचरो॥ पुनिसोनन
वनंधनपरो॥ सुमसाथजोबांचेसुनो॥ अतिप्रेमनमहिआपुनो॥ सोईस
वजोतिसमाहहो॥ येपुनरजनमनपाइहो॥ दहा॥ सोरसहं
सअरुआगसो॥ इकसग्रिपरआन॥ छंदअनुष्टपकरिसकल: पू

रनप्रथप्रमान॥१॥ मेजोईसुनेपुरानमहा॥क्रमसोईबरननकेन्ह
तापाकहेतसें॥पावेनगविप्रबीन॥२॥ इतिश्रीपौरुषेयद
वतारचरेत्रेपुआरहटनरहरदासेनबिरचितं॥ इतिश्रीभ
पूरन॥सुभमस्तु॥कल्यानमस्त॥राजमहाराजधिराज
श्री७सग्रामसिंघजीजागीरीमाहाराजिधिराजमाहाराजिश्री
जीराणावत
सेधे॥लिखतंवचोथरीमयारामजा
सी॥बांचेर
रामबांचज्यो॥मितीमासोतमनसे
मासेसकल
४सनिवासुरे॥संबत१९८८॥बुधे